मुद्रक और प्रकाशक
जीवणजी डाह्याभाई देसाई
नवजीवन मुद्रणालय अहमदाबाद – १४

पहली आवृत्ति ५ १९५७
दूसरी आवृत्ति ५

श्रद्धाके फूल

पूज्य दादीजी माताजी और पिताजीके श्रीचरणोंमें
जिनके परिश्रमी और सस्कारी जीवनसे मुझे
परम पूज्य बापूजीके चरणोंमें रहने
योग्य शुभ सस्कार मिले।

बलवंतसिंह

सेवककी प्रार्थना

हे नम्रताके सम्राट्!
दीन भंगीकी हीन कुटियाके निवासी!
गंगा यमुना और ब्रह्मपुत्राके जलोंसे सिंचित
अिस सुन्दर देशमें
तुझे सब जगह खोजनेमें हमें मदद दे।
हमें ग्रहणशीलता और खुला दिल दे
तेरी अपनी नम्रता दे
हिन्दुस्तानकी जनतासे
अेकरूप होनेकी शक्ति और अुत्कंठा दे।
हे भगवन्!
तू तभी मददके लिअे आता है
जब मनुष्य शून्य बनकर तेरी शरण लेता है।
हमें वरदान दे
कि सेवक और मित्रके नाते
जिस जनताकी हम सेवा करना चाहते हैं
अुससे कभी अलग न पड़ जायें।
हमें त्याग भक्ति और नम्रताकी मूर्ति बना
ताकि अिस देशको हम ज्यादा समझें
और ज्यादा चाहें।

वर्धा १२-९-१४ मो॰ क॰ गांधी

मेरी अेक सलाह

मेरे वचनोंको प्रमाणित न माना जाय। ये सब अीश्वर प्रणीत नहीं हैं। अुनमें कुछ अनुभव हैं कुछ बुद्धिवाद है। अैसे वचनोंकी कीमत जितनी ही है जितनी हर किसी वचनकी। अर्थात् मेरा जो वचन बुद्धि और हृदय कबूल न करे, अुसका सर्वथा त्याग किया जाय। अैसा करोगे तो मेरे वचनोंका संग्रह करनेकी आवश्यकता नहीं रहेगी।

पृथ्वी गोल है, जिस वस्तुके लिअे किसीके वचनोंका संग्रह करनेकी आवश्यकता रहती है क्या?

२१-७-१८ बापू
(अेक पत्रसे)

*

आश्रमवासी अुसीको कहा जाय जिसका माता-पिता जित्यादि रिश्तेदारोंसे कोअी आर्थिक अथवा दूसरा भौतिक सम्बन्ध नहीं है और जिनको अन्न-वस्त्रादि छोड़कर और कोअी हाजत (जरूरत) नहीं है और जो अहिंसादि अेकादश-व्रत पालन करनेमें तत्पर रहता है। किसी वास्ते जिसको कुछ भी बचानेका रहता है वह आश्रमवासी कभी न माना जाय।

१२-९-१५ बापू

प्रस्तावना

बड़े वृक्षके नजदीक या अुसकी छायामें जमाये हुअे छोटे पौधेकी वृद्धि कुंठित हो जाती है। यह मिसाल लेकर अक्सर कहा जाता है कि बड़े पुरुषोंके आश्रयमें छोटे बढ़ नहीं सकते। बात सोचने लायक है। ये बड़े कौन जिनके आश्रयमें छोटे बढ़ते नहीं? यह भी अुस वृक्षकी मिसालसे मालूम हो सकता है। बड़े वृक्षके आश्रयमें छोटा पौधा क्यों नहीं बढ़ता? अिसलिअे कि छोटे पौधेको मिल सकनेवाला पोषण यह बड़ा वृक्ष खा जाता है। दूसरोंका पोषण खा जानेवाला बड़ा पुरुष याने बड़ा स्वार्थी या बड़ा महत्त्वाकांक्षी। अुसके आश्रयमें दूसरा कौन किस तरह पनपे?

बड़े पुरुष भिन्न हैं और महापुरुष भिन्न हैं। महापुरुष महत्त्वाकांक्षी नहीं होते। वे महान ही होते हैं। वे दूसरोंका पोषण खानेवाले नहीं होते बल्कि दूसरोंको पोषण देनेवाले होते हैं। अुनको मिसाल वत्सला गायकी दी जा सकती है। गाय बछड़ेको अपना दूध पिलाकर पोषण देती है, तो बछड़ा दिन-ब-दिन बढ़ता ही जाता है। महापुरुषोंकी यही आकांक्षा होती है कि अुनसे सबकी अुन्नति हो, सबको अूंचा अुठानेमें वे मददगार बनें। यहां तक कि जैसे बच्चेको अूपर अुठानेको मां झुक जाती है वैसे दूसरोंको अूपर अुठानेके लिअे वे अपने महत्त्वको भुला देते हैं। महत्त्व ही अुनका अिसीमें होता है कि वे झुक जायं और दूसरे अूपर अुठें।

वृक्ष-गुल्म-न्यायकी मिसालें दुनियाभरमें कभी मिलती हैं। गो-वत्स न्यायकी मिसालें भी कुछ मिलती हैं। बापूके जीवनमें हमने अुस मिसालको देखा है। अुनका आश्रय जिन्होंने लिया या जिनको अुन्होंने आश्रयमें लिया वे अगर छोटे थे तो बड़े बन गये, खोटे थे तो खरे बन गये, कठोर थे तो कोमल बन गये, डरपोक थे तो निर्भय बन गये। बापूके साथके अपने सम्बन्धकी बातायें जो भी लिखने बैठेगा वह अिसी अनुभवको प्रकाशित करेगा। कविने लिखा है, जिसके आश्रयमें रहनेवाले पेड़ पौधे वैसेके वैसे रह जाते हैं, चाहे वह सुवर्णगिरि या रजतगिरि क्यों न हो हम अुसका गौरव

नहीं करते। हम अुस मलय पर्वतका गौरव गाते हैं जिसके आश्रयमें सामान्य वृक्ष भी चन्दन बन जाते हैं। जिसीलिअे भारतीय हृदय राजा-महाराजाओंकी महिमा नहीं गाता पर सत्पुरुषोंकी महिमा गाते अघाता नहीं। शंकराचार्यका वचन विश्रुत ही है

क्षणमिह सज्जन-संगतिरेका।
भवति भवार्णव-तरणे नौका॥*

बलवन्तसिंहजीकी किताबमें महापुरुषोंके जिस कीमियाका कुछ दर्शन पाठकोंको होगा अैसा मुझे विश्वास है।

कोअीमुत्तूर जिला
१-९-५६

* अिस संसारमें क्षणभरके लिअे भी सज्जनकी संगति मिल जाय तो वह संसार-सागरसे पार होनेके लिअे नौकाका काम देती है।

दूसरी आवृत्तिका निवेदन

आज बापूजीके स्वर्गारोहणका वार — शुक्रवार है। रिमझिम पानी बरस रहा है। सामने साबरमती कलकल करती हुआी वेगसे बह रही है। आश्रमके हृदय-कुंजमें बैठा मैं ये पंक्तियां लिख रहा हूं। यहींसे बापूजीने दुनियाको प्रेम और अहिंसाका सन्देश दिया था और यहीं अुन्होंने अपनी प्रखर तपस्या की थी। अिस पवित्र मकानकी पुरानी स्मृतियां हृदयके तारोंको झंकृत कर रही हैं। अब तो यहां बापूजीके केवल चित्र सजे हुओ हैं। लेकिन मेरा हृदय भर आता है अुन दिनोंकी असंख्य स्मृतियोंसे जब मुझे बापूजीके चरणोंमें बैठकर हृदयकी अनेक ग्रंथियोंको सुलझानेका अमूल्य अवसर प्राप्त था। यह कहनेमें मैं कोअी अतिशयोक्ति नहीं कर रहा कि यही भूमि मेरे पुनर्जन्मकी पवित्र भूमि है। यहीं बापूजीने मुझे आध्यात्मिक दूध चमचीसे पिला-पिला कर घुटनों चलना सिखाया था और फिर सेवाग्राममें आत्मा और शरीर दोनोंको कटोरों दूध पिलाकर पाला-पोसा और दौड़ना तक सिखा दिया। और अन्तमें जैसे पक्षी अपने बच्चोंको पंख निकल आने पर अुड़ना सिखाकर अुनकी ममतासे मुक्त हो जाते हैं अुसी प्रकार बापूजी मुझे पंख देकर खुले आकाशमें अुड़ते रहनेका आदेश और आशीर्वाद देकर चले गये।

जिमि जिमि दूरि अुड़ाअु अकासा ।
तहं हरिभुज देखअु निज पासा ॥

अिसी प्रकार बापूजीकी मीठी मीठी थपकोंकी स्मृति मेरा पीछा ही नहीं छोड़ती। यह लिखते हुओ अुनकी प्यारभरी मुसकानकी स्मृतिने मेरे हृदयको भर दिया है। आंखें अिस ठंडी हवाके स्पर्शको भुलानेके लिओ अुमड़ रही हैं और मैं लिखना चाह रहा हूं दूसरी आवृत्तिके निवेदनके दो शब्द।

मोहि भरोस मोरे मन आवा ।
केहि न सुसंग बड़प्पन पावा ॥

जनता-जनार्दनने मेरी तोतली देहाती भाषामें लिखी अिस पुस्तकका जैसा आदर किया है और मित्रोंने मुझ पर अिसके कारण जो स्नेह बरसाया

है, अुसके बोझसे मैं दबा हुआ महसूस कर रहा हूँ और अभिमानसे बचनेके लिये मुझे सतत जूझना पड़ रहा है।

पू. विनोबाजी अेक दिन बोले कि आपकी पुस्तक अिसलिये अितनी अच्छी लिखी गयी है, क्योंकि आप अंग्रेजी नहीं जानते। आपने तुलसीदासजीके जैसा काम किया है, जब कि प्यारेलालजीने वाल्मीकिजीके जैसा। तुलसीदासजीने रामकी गुणगाथा लिखी थी। वाल्मीकिजीने अुनका अितिहास लिखा था।

पू. रविशंकर महाराज कहते हैं कि देखो हम दोनों ही बिना पढ़े लिखे किसान हैं। अिसलिये आपकी पुस्तक मुझे बड़ी प्रिय लगी है। कविवर मैथिलीशरणजी गुप्त श्री काशिनाथ त्रिवेदी श्री प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी आदि सज्जनोंने अिस पुस्तकके प्रति बड़ी ममता व्यक्त की है।

जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं।
सो श्रम बादि बालकबि करहीं॥

मुझे कल्पना नहीं थी कि अिसकी दूसरी आवृत्ति अितनी जल्दी निकलेगी और अिसका गुजराती और अंग्रेजी अनुवाद भी प्रकाशित होगा। गुजराती अनुवाद प्रकाशित हो चुका है। अुसका अुठाव हिंदीसे भी बढ़कर है। गुजरातीके अनुवादक मेरे मित्र श्री मणिभाअी देसाअी कहते हैं कि अितनी जल्दी मैंने यह अनुवाद किया अुतनी जल्दी दूसरा कोअी अनुवाद नहीं किया था। अिस अनुवादमें मेरे हाथ भले थके हों लेकिन दिल और दिमाग कभी नहीं थके। बापूजीकी महान मानवताका दर्शन करके अनुवाद करते समय अनेक बार मेरे प्रेमाश्रु बहे हैं।

अंग्रेजीके अनुवादक मेरे परम मित्र स्व. गोपालराव कुलकर्णी अिस पुस्तक पर मुग्ध थे। मुझे अितना बड़ा दुःख है कि अनुवाद पूरा करनेके पहले ही वे भगवत्-शरण हो गये। नहीं तो अंग्रेजी अनुवाद पिछली जनवरीमें पाठकोंके हाथोंमें पहुँच गया होता। लेकिन अब अंग्रेजीका शेष अनुवाद शीघ्र ही पूरा होने जा रहा है।

दूसरी आवृत्तिके लिये संशोधन और परिवर्तन बहुतसे हुअे हैं और अुन्हें करते समय आश्रमके अपने पुराने साथियोंके साथ बैठकर अुनकी बहुमूल्य सलाह-सूचनाका लाभ मैंने लिया है। भाअी मुन्नालालजीने बड़ी बारीकीसे पुस्तकका अवलोकन करके जो सुझाव दिये हैं अुनसे यह नयी

आवृत्ति सुन्दर बनी है। भाओी अुपमदासजी रांकाने निसर्गोपचार आश्रम अुरुलीकांचन (पूना) में लगातार १८ दिनका समय अिसके लिये प्रेमसे दिया था। भाओी कृष्णचन्द्रजीके संग्रहमें से बापूजीके अन्तेवासियोंको लिखे गये पत्रोंमें से कुछ चुने हुअे वचन अिसमें बांटे गये हैं। अुनमें से कुछ तो अैसे हैं जिन पर अलग-अलग पुस्तक लिखी जा सकती है।

कहँ रघुपतिके चरित अपारा।
कहँ मति मोरि निरत संसारा॥

सचमुच ही कहाँ बापूका अगाध चरित्र और कहाँ मैं दिहातका कोरा किसान? जितना भी जो बन सका है वह बापूजीकी नयी तालीम और अुनके सत्संगकी महिमासे ही हुआ है।

तात स्वर्ग अपवर्ग सुख धरिय तुला अेक अंग।
तूल न ताहि सकल मिलि जो सुख लव सतसंग॥

बापूजीके लंबे सत्संगसे जैसा अलभ्य लाभ जिसको मिला अुसको और क्या चाहिये?

हृदयकुंज प्रार्थनाभूमि
साबरमती आश्रम
बुधवार, ४–९–१९५९

बलवंतसिंह

पहली आवृत्तिका निवेदन

मुझे सेवाग्राम आश्रमके व्यवस्थापक श्री चिमनलालभाओ तथा अन्य मित्रोंने कभी बार कहा कि मैं सेवाग्रामके संस्मरण लिखूं। कमसे कम बापू सेवाग्राम कब आये और कैसे सेवाग्राम बसा अुसका थोड़ासा वर्णन यहां आनेवाले दर्शकोंके लिअे तो जरूर लिख दूं। मैंने अुस दृष्टिसे थोड़ा लिखा भी था जो पू. मीराबहन द्वारा संशोधित करवाकर श्री चिमनलालभाओके पास भेज दिया था। लेकिन पूरे संस्मरण लिखनेमें मेरे सामने कभी कठिनािअयां थीं। अेक तो मुझे लिखनेका अभ्यास नहीं था। दूसरे, सेवाग्रामकी खटीमें मैं अितना फंसा रहता था कि अुसमें से लिखनेके लिअे समय निकालना मेरे लिअे कठिन था। तीसरे, यह विचार भी था कि अगर लिखना ही है तो हम जो लोग सेवाग्राममें थे वे सब मिलकर लिखें तो चीज परिपूर्ण हो। पर वैसा हो नहीं सका। मेरे मनमें यह दुविधा रही कि बापूजीके बारेमें अितने अधिक लोग लिखनेवाले हैं तब मैं क्या लिखूं? मुख्य शंका मेरे मनमें यह रही कि बापूजीके बारेमें लिखनेका मेरा क्या अधिकार है? सच बात तो यह है कि बापूजीका जीवन लिखकर बतानेका है ही नहीं, आचरण करनेका है। वह स्वयं अितना प्रकाशित है कि अुनके बारेमें कुछ भी लिखना सूर्यको दीपक दिखाने जैसा ही है। बापूजीके स्वर्गवासके बाद अुनके विषयमें लोगोंने अखबारोंमें अपनी श्रद्धांजलियोंके रूपमें बहुत कुछ लिखा और भाषण दिये। अुनको पढ़कर मुझे यह चौपाओी याद आती थी

सब जानत प्रभु प्रभुता सोअी।
तदपि कहे बिनु रहा न कोअी।

फिर मेरा और बापूजीका बहुत निकटका संबंध था। कोअी अपने पिताके विषयमें कुछ लिखे तो आत्मश्लाघा जैसा ही होता है। मैं अिस कारणसे भी हमेशा डरता था कि लिखने लगूं बापूजीका और लिख बैठूं अपना। स्थिति अैसी है कि मैं कितना भी बचाअूं तो भी अपने बारेमें जब तक कुछ न लिखूं तब तक बापूजीका जिस प्रकारका दर्शन मुझे हुआ है अुसका मैं स्पष्ट नहीं कर सकता। बापूजीके बाद मेरे चित्तकी अवस्था अैसी हो गअी है कि जब अुनके बारेमें कुछ लिखनेका प्रसंग आता है तो मेरा

हृदय अुनके स्मरणसे अितना भर जाता है कि मेरी कलम काम नहीं देती। मूक अगर गुड़का स्वाद बता सके तो मैं भी बापूजीके विषयमें कुछ लिख सकूं। कुछ लिखना भी चाहूं तो कहांसे शुरू करूं यह प्रश्न भी मेरे सामने था।

मेरे लिखनेके विचारको अधिक वेग मिला भक्त-हृदया मदालसाबहनसे। जब मैं सेवाग्रामसे राजस्थानके लिये आ रहा था तो अुन्होंने बड़े प्रेमभरे आग्रहसे कहा कि आपको सेवाग्रामके संस्मरण लिखने ही चाहिये। अुनके आग्रहका मेरे अूपर गहरा असर पड़ा। अुनको तो मैंने कहा कि देखूंगा लेकिन यह बात मेरे मनमें चलती ही रहती थी। ईश्वरकी कृपासे मुझे लेखक और शिष्ट भावनामें प्रेरक श्री ब्रह्मदत्तजी जैसे साथी मिल गये। गोसेवाश्रमका वायुमंडल भी अिसके अनुकूल था। मेरे मनमें विचार आया कि थोड़ा-थोड़ा समय निकालकर कुछ लिखना चाहिये। जब मैंने यह विचार श्री ब्रह्मदत्तजीको बताया तो अुन्होंने अिसे पकड़ लिया और मेरे लेखक बननेकी अपनी तैयारी बताअी।

अिसके फलस्वरूप ता. २१-११-५ को सुबहकी प्रार्थनाके बाद पूज्य जमनालालजीकी पवित्र जन्मभूमि सीकर (राजस्थान) में गोसेवाश्रमके पवित्र और शान्त वायुमंडलमें बैठकर जब मैंने अिन पवित्र संस्मरणोंका आरम्भ किया तब मुझे कोअी स्पष्ट कल्पना नहीं थी कि क्या और कितना लिख सकूंगा। मैंने सोचा था कि थोड़े दिनोंमें थोड़ासा लिखकर रख दूंगा जो कभी सेवाग्रामके विस्तृत संस्मरण लिखनेवालोंके लिये अेक विचारसामग्री होगा। स्वतंत्र पुस्तकके रूपमें छापनेकी कल्पना तो स्वप्नमें भी नहीं थी। लेकिन जब अिन लेखोंने कुछ रूप लिया और अुन्हें मैंने अपने पुराने साथियोंको दिखाया तो अुनकी पुरानी स्मृतियां ताजी हो गयीं और अुन्होंने अिनके साथ बड़ी ममता बताअी तथा मेरा अुत्साह बढ़ाया। अिन्हें छपवानेका प्रेमभरा आग्रह भी किया। मुझे अुनकी सूचना पसन्द आअी। तो भी यह काममें लम्बा समय गुजर ही गया। मैं कोअी लेखक तो था नहीं न टाअिप आदिके साधन मेरे पास थे। अिसके लिये जब जिससे सुविधाके अनुसार जितनी मदद मिल सकी अुतनीसे ही मुझे संतोष मानना पड़ा।

मैं थोड़ेमें बापूजीके साथके अपने ही संस्मरण लिखनेकी दृष्टिसे बैठा था। लेकिन अन्य जिन संस्मरणोंका बापूजीके साथ अविच्छिन्न संबंध था अुनको

लिखना भी मैंने जरूरी समझा। अगर मेरे मनमें पहलेसे ही अिस रूपमें प्रकाशित करानेकी कल्पना होती तो या तो न लिखे ही नहीं जाते या अिनका कोअी दूसरा रूप होता। जब मने अिन लेखोंको पूज्य काकासाहब कालेलकरको बताया और कहा कि लोग अिनको छपवानेका आग्रह करते हैं तो क्या अिन्हें फिरसे लिखूं? काकासाहबने अेक सुन्दर दृष्टान्त देकर मुझे संतोष करा दिया। वे बोले देखो भगवानने अर्जुनको गीताका अुपदेश दिया। थोड़े दिनके बाद अर्जुनने अुसीको फिर सुननेकी अिच्छा प्रगट की। भगवान बोले अर्जुन अब वह तो नहीं सुना सकता हूं क्योंकि मेरे चित्तकी भूमिका वह नहीं है जो महाभारतके समय थी। भगवानने अर्जुनको 'अर्जुन-गीता'के नामसे थोड़ासा संवाद सुनाया। तो भी मैंने अिन संस्मरणोंको व्यवस्थित रूप देनेका प्रयत्न तो किया ही है। पाठकोंको अिनमें कहीं कहीं अतिशयोक्ति पुनरावृत्ति आत्मश्लाघा बापूजीके सामने अुद्धतता आदि दोष दिखाअी पड़ना संभव है। लेकिन आखिर तो जैसा रूप होगा वैसा ही चित्र भी आयेगा। मैं जैसा था और जिस रूपमें मने बापूजीका दर्शन किया अुनके कथनका मैंने जो अर्थ समझा अुस पर किसी प्रकारका रंग चढ़ाये बिना सामने ले आकर रखनेका नम्र प्रयत्न अिसमें मैंने किया है।

अिन लेखोंके सिलसिलेमें बापूजीका चिन्तन जितना सतत और गहराअीसे चला अुतना मेरे विचारोंका स्पष्ट करनेमें और मनके मैलको धोनेमें काफी मदद की। और मेरे समझ पतना बापूजीके चिन्तनसे बढ़कर और क्या हो सकता है? अगर अिससे जनता-जनार्दनको भी बापूजीके अपार स्नेह अनकी सहनशीलता अुनका धैर्य तथा अुनकी दूरदृष्टिका कुछ दर्शन मिल सका तो मैं अपने अिस प्रयत्नको धन्य मानूंगा।

अिसमें रही भूलें और दोष जो भाअी-बहन मुझे सुझानेका निःसंकोच कष्ट करेंगे अुनके मैं अनन्त आभार मानूंगा। और अगर अिसकी दूसरी आवृत्ति छपने लायक कदर हुअी और तब तक मैं जिन्दा रहा तो अवश्य ही अुनमें सुधार करूंगा।

पूज्य विनोबाने मेरे अिस बाल-जैसे प्रयासको जो ममतावश गौरव दिया अुसके आनन्दको प्रकट करनेके लिये मुझे कोअी शब्द नहीं मिल रहे हैं। अिसके लिये मैं अुनका आजन्म ऋणी हूं।

जिन मित्रों और शुभेच्छुकोंने बापूजीके पास तक पहुंचानेमें मेरी सहायता की जिन साथियोंने ये संस्मरण लिखनेकी मुझे प्रेरणा दी और जिनके लिखनेमें सक्रिय सहायता की अुनका भी मैं हृदयसे आभार मानता हूं। नवजीवन ट्रस्टका तो मैं अुपकृत हूं ही जिसने प्रेमभावसे मेरे जिन संस्मरणोंको प्रकाशित करनेकी तत्परता बताओ।

मेरे जिस प्रयासमें जो कुछ सफलता मिली है वह बापूजीके पवित्र स्मरण और अुनके आशीर्वादका ही प्रताप है। जिसमें जो खामियां हैं वे मेरी अपनी खामियोंकी सूचक हैं।

यह दैवयोग ही कहा जायगा कि आज बापूजीकी कुटियामें ही बैठ-कर अुनकी मासिक पुण्यतिथि पर अपने जिन पवित्र और मधुर संस्मरणोंकी अंतिम पंक्तियां मैं लिख रहा हूं। बापूजीके प्रति तो अपनी नम्र श्रद्धांजलि मैं जिन्हीं शब्दोंमें अर्पण कर सकता हूं

त्वमेव माता च पिता त्वमेव
त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।
त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव
त्वमेव सर्वं मम देवदेव।

बापू-कुटी सेवाग्राम
३ -११-५६

बलवन्तसिंह

स्वपरिचय

अपना परिचय देनेमें मुझे संकोच हो रहा है। लेकिन जब मैं किसीका लिखा लेख पढ़ता हूं तो सहज ही लेखकका परिचय जाननेकी मेरी अिच्छा हो जाती है। मेरे अिन संस्मरणोंको पढ़कर पाठकोंको यह अिच्छा होना स्वाभाविक है। बापूजी कहते थे कि नअी तालीम माके गर्भसे आरम्भ होनी चाहिये। अिस पर मने विचार किया तो मुझे लगता है कि माके गर्भसे नहीं बल्कि दादी और नानीके गर्भसे होनी चाहिये। और यह वहींसे आरम्भ होती है। भायके मसक-सुधारमें भी मुझे यही अनुभव आया है। मुझ जैसा साधारण व्यक्ति बापूजी जैसे महान पुरुषका दुलार प्राप्त कर सका जिसका दर्शन जनताको मिल सके अिस लोभसे थोड़ासा अपना परिचय देना मुझे अनिवार्य लगा है। बापूजीके हृदयको किस हद तक ग्रामीण भारतने घेर लिया था तथा किस हद तक वे अपनी अमूल्य शक्ति अपार सहनशीलता तथा धीरजके साथ अेक देहातीको अूपर अुठानेका प्रयत्न कर सकते थे जिसका मर्म पाठक यों कर समझेंगे यदि मैं संकोचवश यह भी न बताअूं कि मैं करीब करीब अेक निरक्षर देहाती किसानके सिवा और कुछ न था। जितना-सा आवश्यक लिखनेमें भी यदि किन्हीं पाठकोंको आत्मश्लाघा जैसा लगे तो मैं अुनसे नम्रतापूर्वक क्षमा-याचना करता हूं।

मेरा जन्म विक्रमी संवत १९५५ की फाल्गुन शुक्ल द्वितीयाको तदनुसार २१ मार्च १८९९, सोमवारको अेक छोटेसे गांव समसपुर (तहसील खुर्जा जिला बुलन्दशहर, युक्तप्रदेश) में अेक साधारण जाट-परिवारमें हुआ। परिवारका धंधा खेती था। पिताका नाम भागमलसिंह तथा माताका नाम ज्ञानोदेवी था। मेरे पिता चार भाअी थे। सबसे बड़े मंगलसिंह, दूसरे मेरे पिताजी तीसरे चाचा दयारामसिंह और चौथे चाचा रणजीतसिंह थे। दादाका नाम पूर्णसिंह और नानाका नाम बलेरामसिंह था। दादाजी और ताअूजीको मैंने नहीं देखा। कनिष्ठ चाचा रणजीतसिंहजीकी थोड़ीसी याद है। मेरे दादा और नाना दोनों ही बड़े गोभक्त थे। नानाजीको गाय चराते मैंने देखा है। मुझे लगता है कि मेरे दादाजी और नानाजीकी गोभक्तिका वारसा मुझे मिला है।

पिताजी और माताजी दोनों ही सीधे-सादे और परिश्रमी थे। मेरी माने पुत्रकी अिच्छासे बड़े कठोर व्रत-अुपवास किये थे। वे कहा करती थीं कि तेरे लिअे मैंने पांच बरस तक बरसातमें न जाकर ओसरीमें खाना खाया था। मैं करीब दस सालका था तब पिताजीका स्वर्गवास हो गया। मुझसे छोटा भाभी पदमसिंह और बड़ी बहन रघुबीरकौरके पालन-पोषणका भार भी माताजी पर ही आ पड़ा। मेरी दादीजी तुलसादेवी जिन्दा थीं। वे मेरे चाचा दयारामसिंहके साथ अलग रहती थीं। मेरे जन्मके पहले हमारे घरकी स्थिति अच्छी थी। लेकिन पिताजीके मर जाने पर हालत यहां तक बिगड़ी कि माताजीको पिसाअी करके हमारा पालन-पोषण करना पड़ा। माताजीका शरीर मजबूत था। वे १५–२ सेर मक्का प्रतिदिन पीसनेकी शक्ति रखती थीं। मेरे मामा बड़े सज्जन पुरुष थे। वे हमारी बहुत मदद करते थे। मैं अधिकतर अुनके पास ही रहता था। दुर्भाग्यसे माताजी भी हमें छोड़कर जल्दी ही चल बसीं। तब हमारा भार दादी और चाचाजी पर आ पड़ा। हमारा सारा ही परिवार निरक्षर था। चाचाजीने थोड़ीसी हिन्दी सीख ली थी। मेरी दादी बड़े संस्कारी परिवारकी थीं। अुनको रामायण और महाभारतकी कथायें तथा और भी बहुतसी कथायें याद थीं। मेरा बहुतसा समय अुन्हींके सान्निध्यमें बीता। अुन्होंने मुझे न जाने कितनी बार ये कथायें कहानीके रूपमें सुनाअी होंगी। यही मेरी सच्ची तालीम थी जो मुझे बापूजीके जैसी महान विभूतिके पास खींच कर ले गअी।

जहां रोटियोंके भी लाले हों वहां पढ़नेका तो सवाल ही नहीं था। हमारे पास जमीन काफी थी लेकिन कोअी कमानेवाला नहीं था। अिसलिअे गरीबी थी। मेरी पाठशाला तो दादीके आसपास थी या अेकान्त जंगलमें ढाकके वृक्षोंकी छायामें थी। अुसका आरम्भ अेक रोज अिस तरह हुआ। हमारे अेक खेतमें चने बोये थे। अुसकी रखवालीके लिअे चाचाजीने मुझे वहां बिठा दिया था। दिनभर खाली बैठे मन भी तो कैसे लगता? मैंने चाचाजीसे पहली किताब और लिखनेकी पट्टी मंगवा ली थी। अुस समय पहली किताब अेक पैसेमें आती थी। पट्टी पड़ोसीके लड़केसे मांग ली थी। अिस तरह मेरी पाठशाला बिना शिक्षकके सिर्फ अेक विद्यार्थीकी पाठशाला थी। मैं किताबसे पट्टी पर अक्षरोंकी नकल करता रहता और जब शामको घर लौटता तब रास्तेमें जो भी लिखा-पढ़ा मिलता अुससे या घर जाकर चाचाजीसे अुन

अक्षरोंके नाम पूछ लेता। रातको सोते समय और सुबह भुठते समय खाटमें पड़ा पड़ा भुन अक्षरोंको बोलता रहता। सुबह अपनी रोटी किताब पट्टी आदि लेकर फिर खेत पर पहुंच जाता। रास्तेमें कोभी पढ़ा-लिखा लड़का या आदमी मिल जाता तो अन्य अक्षरोंके नाम पूछ लेता। धीरे धीरे मैंने बारहखड़ी पूरी की। जो विषय मुझे याद होता भुसे पुस्तकमें पढ़ता। मेरी याद अक्षरोंकी सड़क पर चलती। जिस प्रकार मैं कुछ पढ़ने लगा था। जब मैं छोटा ही था तब मेरे अेक चाचाने मेरी मातासे कहा कि यह लड़का ठाला रहता है। क्यों न मेरे ढोर चराया करे? मैं सुन रहा था। भुनकी बोली मुझे भितनी प्यारी लगी कि मैंने मांसे स्वीकार करा लिया कि मैं भिन चाचाजीका काम करूंगा। और फिर अेक साल तक सवा रुपया मासिक लेकर मैंने भुनके ढोर चराये।

१८ वर्षकी अवस्थामें २५ जनवरी १९१७ को मैं फौजके घुड़सवारोंमें २६ नंबर रिसालेमें भरती हो गया और मार्च १९२१ में समरी कोर्ट मार्शल (फौजी अदालत) द्वारा दो मासकी सजाके बाद नाम काटे जाने पर घर आ गया। जिसका जिक्र पुस्तकमें आ चुका है। दादीजी १९१७ के अगस्तमें चल बसी थीं। २२ वर्षकी अवस्थामें चाचाजीने मेरी शादी कर दी और खुद संन्यासी बनकर भगवानके भजनमें लग गये। यहां तक कि फिर भुनके दर्शन भी न मिल सके। मेरी पत्नी जानकीदेवी बड़ी सरल सुन्दर, भुदार और समझदार थी। लेकिन भुस बेचारीका और मेरा साथ अधिक न रहा। होता भी कैसे? विधाताका विधान तो दूसरा ही था। भिसलिये वह मुझे लगभग तीन वर्षमें ही मुक्त करके चली गयी। बचपनसे ही मेरी मनोवृत्ति साधु-सन्तकी थी। हमारे जिलेका गंगा-किनारा गंगाजीके सारे बहावमें सर्वश्रेष्ठ व रमणीय है। और वहां पर बड़े बड़े साधु-संत साधना करते थे। जब भरसे फुरसत मिलती मैं गंगाके किनारे भुनके सत्संगमें १५—२ रोज जाकर रह आता। भुन दिनों वहां पर बुढ़िया बाबा हरि बाबा भोले बाबा शोभारामजी (अच्युत स्वामी) शंकरानन्दजी निर्मलानन्दजी भुमानंदजी आदि संतोंसे मेरा परिचय और सत्संग हुआ। बुढ़िया बाबाकी मुझ पर खास कृपा रही।

नारि मुभी घर संपति नासी मूड़ मुंड़ाय भये संन्यासी। भिस न्यायसे कपड़े रंगनेका विचार भी मेरे मनमें आया। लेकिन भिक्षाका अन्न खाना मेरे स्वभावके अनुकूल नहीं था। भिसलिये वह रंग मुझ पर न चढ़ सका। और पूर्वजन्मके कुछ पुण्योंके प्रतापसे मुझे कर्मयोगी बापूजीकी छायामें

पिताजी और माताजी दोनों ही सीधे-सादे और परिश्रमी थे। मेरी माँने पुत्रकी अिच्छासे बड़े कठोर व्रत-अुपवास किये थे। वे कहा करती थीं कि तेरे लिये मैंने पाँच बरस तक बरतनमें न खाकर ओखलीमें खाना खाया था। मैं करीब दस सालका था तब पिताजीका स्वर्गवास हो गया। मुझसे छोटा भाजी पदमसिंह और बड़ी बहन रघुवीरकौरके पालन-पोषणका भार भी माताजी पर ही आ पड़ा। मेरी दादीजी कुन्दनदेवी जिन्दा थीं। वे मेरे चाचा दयारामसिंहके साथ अलग रहती थीं। मेरे जन्मके पहले हमारे घरकी स्थिति अच्छी थी। लेकिन पिताजीके मर जाने पर हालत यहाँ तक बिगड़ी कि माताजीको पिसाजी करके हमारा पालन-पोषण करना पड़ा। माताजीका शरीर मजबूत था। वे १५-२ सेर मक्का प्रतिदिन पीसनेकी शक्ति रखती थीं। मेरे मामा बड़े सज्जन पुरुष थे। वे हमारी बहुत मदद करते थे। मैं अधिकतर अुनके पास ही रहता था। दुर्भाग्यसे माताजी भी हमें छोड़कर जल्दी ही चल बसी। तब हमारा भार दादी और चाचाजी पर आ पड़ा। हमारा सारा ही परिवार निरक्षर था। चाचाजीने थोड़ीसी हिन्दी सीख ली थी। मेरी दादी बड़े संस्कारी परिवारकी थीं। अुनको रामायण और महाभारतकी कथायें तथा और भी बहुतसी कथायें याद थीं। मेरा बहुतसा समय अुन्हींके सान्निध्यमें बीता। अुन्होंने मुझे न जाने कितनी बार ये कथायें कहानीके रूपमें सुनाअी होंगी। यही मेरी सच्ची तालीम थी जो मुझे बापूजीके जैसी महान विभूतिके पास खींच कर ले गयी।

जहाँ रोटियोंके भी लाले हों वहाँ पढ़नेका तो सवाल ही नहीं था। हमारे पास जमीन काफी थी लेकिन कोअी कमानेवाला नहीं था। अिसलिये गरीबी थी। मेरी पाठशाला तो दादीके आसपास थी या अेकान्त जंगलमें ढाकके वृक्षोंकी छायामें थी। अुसका आरम्भ अेक रोज अिस तरह हुआ। हमारे अेक खेतमें चने बोये थे। अुसकी रखवालीके लिअे चाचाजीने मुझे वहाँ बिठा दिया था। दिनभर खाली बैठे मन भी तो कैसे लगता? मैंने चाचाजीसे पहली किताब और लिखनेकी पट्टी मंगवा ली थी। अुस समय पहली किताब अेक पैसेमें आती थी। पट्टी पड़ोसीके लड़केसे माँग ली थी। अिस तरह मेरी पाठशाला बिना शिक्षकके सिर्फ अेक विद्यार्थीकी पाठशाला थी। मैं किताबसे पट्टी पर अक्षरोंकी नकल करता रहता और जब शामको घर लौटता तब रास्तेमें जो भी लिखा-पढ़ा मिलता अुससे या घर आकर चाचाजीसे अुन

अक्षरोंके नाम पूछ लेता। रातको सोते समय और सुबह बुठते समय खाटमें पड़ा पड़ा बुन अक्षरोंको बोलता रहता। सुबह अपनी रोटी किताब पट्टी आदि लेकर फिर खेत पर पहुंच जाता। रास्तेमें कोबी पढ़ा-लिखा लड़का या आदमी मिल जाता तो अन्य अक्षरोंके नाम पूछ लेता। धीरे धीरे मैंने बारहखड़ी पूरी की। जो विषय मुझे याद होता बुसे पुस्तकमें पढ़ता। मेरी धार अक्षरोंकी सड़क पर चलती। बिस प्रकार मैं कुछ पढ़ने लगा था। जब मैं छोटा ही था तब मेरे अेक चाचाने मेरी मातासे कहा कि यह लड़का ठाला रहता है। क्यों न मेरे ढोर चराया करे? मैं सुन रहा था। बुनकी बोली मुझे बितनी प्यारी लगी कि मैंने बुसे स्वीकार कर लिया कि मैं बिन चाचाजीका काम करूंगा। और फिर अेक साल तक सवा रुपया मासिक लेकर मैंने बुनके ढोर चराये।

१८ वर्षकी अवस्थामें २५ जनवरी १९१७ को मैं फौजके घुड़सवारोंमें २१ नंबर रिसालेमें भरती हो गया और मार्च १९२१ में समरी कोर्ट मार्शल (फौजी अदालत) द्वारा दो मासकी सजाके बाद नाम काटे जाने पर घर आ गया। बिसका जिक्र पुस्तकमें आ चुका है। दादीजी १९१७ के अगस्तमें चल बसी थीं। २२ वर्षकी अवस्थामें चाचाजीने मेरी शादी कर दी और खुद संन्यासी बनकर भगवानके भजनमें लग गये। यहां तक कि फिर बुनके दर्शन भी न मिल सके। मेरी पत्नी चानणदेवी बड़ी सरल सुन्दर, बुदार और समझदार थी। लेकिन बुस बेचारीका और मेरा साथ अधिक न रहा। होता भी कैसे? विधाताका विधान तो दूसरा ही था। बिसलिबे वह मुझे लगभग तीन वर्षमें ही मुक्त करके चली गयी। बचपनसे ही मेरी मनोवृत्ति साधु-संगतकी थी। हमारे जिलेका गंगा-किनारा गंगाजीके सारे बहावमें सर्वश्रेष्ठ व रमणीय है। और यहां पर बड़े बड़े साधु-संत साधना करते थे। जब घरसे फुरसत मिलती मैं गंगाके किनारे बुनके सत्संगमें १५–२ रोज जाकर रह जाता। बुन दिनों वहां पर बुड़िया बाबा हरि बाबा भोले बाबा बोलतरामजी (अच्युत स्वामी) शंकरानन्दजी निर्मलानन्दजी बुधानंदजी आदि संतोंसे मेरा परिचय और सत्संग हुआ। बुड़िया बाबाकी मुझ पर खास कृपा रही।

नारि मुबी घर संपति नासी मूंड़ मुड़ाय भये सन्यासी। बिस न्यायसे कपड़े रंगनेका विचार भी मेरे मनमें आया। लेकिन भिक्षाका अन्न खाना मेरे स्वभावके अनुकूल नहीं था। बिसलिबे वह रंग मुझ पर न चढ़ सका। और पूर्वजन्मके कुछ पुण्योंके प्रतापसे मुझे कर्मयोगी बापूजीकी छायामें

पहुँचा दिया बहुतेरे बहुत छटपटाने पर भी मैं भाग नहीं सका। शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते अिस वचनके अनुसार मेरे अपने कोअी पुण्य न था नहीं भगवान जाने। परन्तु मेरे पूर्वजोंके पुण्यप्रतापसे शरीर रहते हुअे भी पूज्य बापूजी जैसे श्रेष्ठ पुरुषके घर मेरा पुनर्जन्म हुआ और मेरा मानव-जीवन कृतार्थ हो गया।

मैंने साबरमती आश्रममें कताअी और बुनाअी सीखी। साबलीके खादी उत्पत्ति-केन्द्रमें बुनाअी सीखी। और सेवाग्राम आश्रममें खेती और गोसेवाका काम सहज ही मुझ पर आ गया। किसान होनेके नाते बापूजी अिसे मेरा स्वधर्म कहा करते थे। वहीं बापूजीकी छत्रछायामें रह कर अुनके पवित्र संकल्प और आशीर्वादके प्रतापसे मैं अिस स्वधर्म के पालनमें थोड़ा कुशल बना।

विनोबाजीके आदेशसे राजस्थानमें बैठकर पिछले ५ वर्ष तक सीकर केन्द्रमें मैंने गोसेवाका कार्य किया। और पिछले १ वर्षसे दुर्गापुरा कैम्प (जयपुर) में गोसेवा-संघका कृषि-गोपालन तथा संवर्धन केन्द्र चला रहा हूँ। बापूजीके आशीर्वादसे राजस्थानके समस्त रचनात्मक और राजनीतिक कार्यकर्ताओंका प्रेम और सद्भावना प्राप्त करनेका सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है। अब विनोबाजीने मुझे यह आदेश दिया है कि मैं गोसेवाकी सीधी जिम्मेदारीसे मुक्त होकर केवल यह काम करनेवालोंका मार्गदर्शन करूं और साथ ही आध्यात्मिक वृत्तिकी साधना करके जीवनको समृद्ध बनाअूं। अब अिसी दिशामें बढ़नेका मेरा प्रयत्न चल रहा है। तुलसीदासजीने कितना सुन्दर कहा है

प्रभु तरुतर कपि डार पर ते किये आपु समान।
तुलसी कहूँ न रामसे साहिब सील निधान॥

अिन वचनोंका मैंने अपने जीवनमें प्रत्यक्ष अनुभव किया है। सत्संगकी महिमा सुन्दरदासजीने बड़े सुन्दर शब्दोंमें बताअी है

मातु मिले पुनि तात मिले सुत भ्रात मिले युवती सुखदाअी
राज मिले गजबाज मिले सब साज मिले मन वांछित पाअी।
लोक मिले सुर लोक मिले विधि लोक मिले वैकुण्ठ हु जाअी
सुन्दर और मिले सबही सुख संत समागम दुर्लभ भाअी।

अैसा दुर्लभ सत-समागम मुझे बापूजीके चरणोंमें बैठ कर सहज ही प्राप्त हुआ। अब अिससे अधिक और मैं भगवानसे क्या चाहूँ?

बलवन्तसिंह

अनुक्रमणिका

प्रस्तावना — विनोबा — ७

दूसरी आवृत्तिका निवेदन — ९

पहली आवृत्तिका निवेदन — ११

स्वपरिचय — १७

१ पूर्वभूमिका — ३

२ बापूका प्रथम दर्शन — ८

३ सविनय प्रतिकारका प्रथम पाठ — ९

४ निकट सम्पर्क और सन्देहका अन्त — १२

५ साबरमती आश्रममें — २२–५८

पाखाना-सफाई २२ दिनचर्या व भोजन २३ कुछ परिश्रम २१ पू. माताजीके बोध ३ बापूजीके साथ साथी विद्यार्थियोंके प्रश्नोत्तर ३४ १९३२का आन्दोलन और जेल-यात्रा ३६ बापूजीके जेलसे लिखे गये बोधपत्र ४ आश्रमकी प्रार्थनाके सम्बन्धमें ४३ विचार और प्रवृत्ति ४४ जेलमें अभ्यास ४४ ईश्वरके विषयमें ४४ निष्काम कर्म तथा अन्तर शुद्धि ४५, जेलमें मिलनेके विषयमें ४५, अनशनकी मान्यताके विषयमें ४५, भिन्न भिन्न धर्मोंके विषयमें ४५, अनासक्तिके विषयमें ४६, जेलमें बापूजीका उपवास ४९ जेलयात्राके अनुभव ५१ प्रोफेसर कर्वे ५३ सत्याग्रह स्थगित ५५, चिरञ्जीव बन बैठा। ५५, समाजवादियोंके साथ प्रश्नोत्तर ५६।

६ वर्धाको प्रस्थान — ५८

७ मगनवाड़ीके प्रयोग और पाठ — ६१–८८

कार्यारम्भ ६१ १ पहला पाठ ६३ २ भगवान कृष्णका स्मरण ६५, ३ पहले गुरु फिर दूसरे ६७ ४ किफायतशारीका अनोखा नमूना ६८ ५ जीवनका कार्य और आशीर्वाद ६९, ६ मातापिता ७० ७ त्यागका पाठ ७१ ८ काम करो तो खाना मिलेगा ७४ ९ रसोईघर और सफाई ७५, १० भजनका किस्सा ७६, ११ विचित्र प्रयोग ७९ १२ बापूके मनकी

सेवका ७९ ११ सहिष्णुता और बापू ८ १४ फूलसे भी कोमल बापू ८१ १५ गुरुकी महिमाका स्वागत ८१ १६ अपनेको सबसे बुरा समझो ८१ १७ गांवमें हम भिक्षुक बनकर न जायें ८४ १८ कुछ महत्त्वके प्रश्नोत्तर ८४ १९ मौनका महत्त्व ८६ २ सब मिट्टीके पुतले हैं ८७।

८ विनोबाजीके निकट परिचयमें ८९

९ कुछ और संस्मरण १ १–११२

१ भाजकीका किस्सा १ १ २ बापू तो बापू ही थे! १ ५, ३ नम्रताके सागर बापू १ ७ ४ लोगोंका भ्रम दूर करनेका अुपाय ११ ५ बापूजीकी अक्षर-निष्ठा १११ ६ हम भक्तनके भक्त हमारे ११२।

१ स्नेहनिधि बड़े भाभी पू किशोरलालभाजी ११५

११ सेवाग्राम आश्रमकी नींव १५९

१२ कार्यका आरम्भ और विस्तार १६०–२ १

बापूजीका कैंप्रम्प १६ रोगियोंका अुपचार १६१ प्रार्थना १६३ कुअेमें खोलनेके काम १६४ बापूकी कंजूसी और अुदारता १६५, बापूकी कुटी १६६ नुकसान सहनेकी अद्भुत शक्ति १६९, प्राणियोंकी मूकोंके लिये समानुभूति १६९, मन्हार दासीका किस्सा १७ मनोखा समभाव! १७१ गुरुबोगी महाराज १७२ व्यवस्थापकके रूपमें १७६ प्रार्थनामें रामायण १७७ कामका विस्तार १७८ वात्सल्यमूर्ति बापू १८ गोकुशी कैसे बन्द हो? १८ अहिंसाकी सूक्ष्म व्याख्या १८१ मनो-रंजनमें किया आशीर्वाद १८१ श्रेष्ठ तो अेक औश्वर ही है १८३ अहिंसाका व्यापक क्षेत्र १८४ बापूका सर्टिफिकेट १८४ ज्वरका प्रकोप १८५, माकी तरह बीमारोंकी सेवा १८६, अहिंसा तथा अन्य विषयोंकी चर्चा १९ बापूजीकी बीमारी १९२ मेरी बीमारी और बापूका आश्वासन १९४ परस्पर सम्बन्धकी आवश्यकता १९८ आश्रमवासियोंसे बापूकी अपेक्षा १९९ ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी प्रश्नोत्तर २ स्वावलम्बनका पाठ २ ।

१३ गोशाला और उसका परिवार २ २–२१

बापूका मौन २ २ मिट्टीका चमत्कार २ २ शुभ भावनाओंका सिंचन २ ३ गोशाला और खेतीके लिये नियम २ ५, वर्षाका कष्ट २ ६ गोपरिवारकी वृद्धि २ ७ गायकी समझदारी और स्नेह २ ७।

१४ आश्रमका विस्तार २१ –२२१

आश्रम-परिवारमें वृद्धि २१ नयी तालीम २११ बापू-कूप २१५, आश्रममें विवाह २१६ बाका महत्व। २१७ कुछ और सदस्य जुड़े २१८ आश्रम-परिवारके दिल पर गहरी चोट २२ ।

१५ सेवाग्रामसे सम्बद्ध कुछ विशिष्ट व्यक्ति २२१–२४५

पू जमनालाल बाजी २२१ काशीबा २२२ बाबा खानसाहब २२२ बालकोबा २२८ मूक सेवक रामदासजी गुलाटी २३४ अप्रकट सत्याग्रहीके अेक मोती २३६, बापूजीके बेनाम साथी २३८ अनोखा महापुरुष २४१।

१६ बापूके विविध पहलुओंका दर्शन २४६–२६

हिमालयकी तरह अटल २४६, अजीब मांगोंकी पूर्ति २४६, कभी नहीं हारना २४८ ब्रह्मचर्य और सन्तानोत्पत्ति २४९ छोटी-छोटी बातों द्वारा बापूका उपदेश २५१ गोशालाका कार्य लिया २५४ राजकोट प्रकरण और बाका पत्र २५७ लाहौर जानेकी तैयारी २५९।

१७ मेरे गोसेवा-सम्बन्धी प्रवास २६१–२७१

मुझसे बापूजीकी आशायें २६१ लाहौरकी गोशालाका अनुभव २६४ मॉडल टाउनमें मेरी प्रवृत्ति २६६ शुद्ध दूधकी व्याख्या २६७ अेक मस्त बहनसे भेंट २६८ अेक आदर्श गोशालाके दर्शन २७ बापूजीसे भेंट २७१।

१८ विविध प्रसंग २७१–२९७

अेक सीखपाठ २७१ छोटी बातके लिये बड़ा कदम २७५, कोई लोपियन सेवाग्राममें २७६, होड़ बदना बुरा है २७७ हृदय-परिवर्तन २७८, सच्ची सलाह न माननेका फल

२७८ फाका छिपानासे अरुचि २७९ नाम यहां है यही रहेगी २८ सन्तिक हैजेका किस्सा २८२ आश्रम ख़तम नहीं होगा २८३ जमीनका झगड़ा २८५, मौनका आदेश और मुनका लाभ २९ मर्माणके विषयमें बापूजीके विचार २९२ गोशाला-सम्बन्धी सूचनायें २९२ मजूरी मरीजोंका धर्म है २९३ जमनालालजी और गोसेवा २९४।

१९ बापूके चौथे पुत्रका स्वर्गवास — २९७
२ मामासाहेब विनोद और मेरी बेचैनी — १ २
२१ सेवाग्राम आश्रमके गृहोद्योग — ११२–१२८
१ मजूर-गुड़ और नीरा ११२ २ कुम्हार-काम ११४ ३ चर्म-गृहोद्योग ११६, ४ मधुमक्खी-पालन १२२।
२२ चरखेका चमत्कार — १२८
२३ बापूजीका हृदय-मन्थन — ११४
२४ भगस्त-आन्दोलन और आश्रमवासी — १४
बापूजीका अुपवास १४६।
२५ बाका स्वर्गवास और बापूजीकी बिमारी — १४८
२६ महादेवभाजी और पूज्य बाके पुण्य-स्मरण — १६
२७ कुछ महत्त्वकी बातोंमें बापूकी सलाह-सूचना — १६६
२८ सेवाग्रामके सेवकोंके लिये — १८
२९ धर्मानन्दजी कोसाम्बी — १८८
३ विविध प्रसंगोंमें बापूजीका रूप — १९९
३१ शांतियज्ञमें प्राणार्पण — ४ ५
३२ बापूके अमूल्य विचार — ४१२
३३ बापूके अन्तेवासी विविध सेवाक्षेत्रोंमें — ४२
३४ अुपसंहार — ४२९
परिशिष्ट — १
मेरी अभिलाषा — ४३१
परिशिष्ट — २
१ बापूके समयकी आश्रमकी प्रार्थना — ४३८
२ वर्तमानकालीन प्रार्थना — ४४१

किशन बापूजीको गायका नया पैदा हुआ बच्चा दिखा रहे हैं।

२७८ फोटो खिचवानेसे अरुचि २७९ गाय कहां है यही रहेगी २८ सस्तिक टैंकका किस्सा २८२ आश्रम खतम नहीं होगा २८३ जमीनका झगड़ा २८५, मौनका आदेश और भुभका काम २९ समर्पणके विषयमें बापूजीके विचार २९२, गोशाला-सम्बन्धी सूचनायें २९२ मजूरी गरीबोंका मुख है २९३ जमनालालजी और मोसेका २९४।

१९	बापूके पांचवें पुत्रका स्वर्गवास	२९७
२	भागाभाई विछोह और मेरी बेचैनी	१ २
२१	सेवाग्राम आश्रमके उद्योग	११२-१२८
	१ मजूर-गुड़ और नीरा ११२, २ कुम्हार-काम ११४ ३ चर्म-उद्योग ११६ ४ मधुमक्खी-पालन १२२।	
२२	भरनेका चमत्कार	१२८
२३	बापूजीका हृदय-मन्थन	१३४
२४	अनन्य-आश्वासन और आश्रमवासी	१४
	बापूजीका उपवास १४९।	
२५	बाका स्वर्गवास और बापूजीकी रिहाई	१४८
२६	महादेवभाई और पूज्य बाके पुण्य-स्मरण	१६
२७	कुछ महत्वकी बातोंमें बापूकी सलाह-सूचना	१६६
२८	सेवाग्रामके सेवकोंके लिये	१८
२	धर्मानन्दजी कोसाम्बी	१८८
३	विविध प्रश्नोंका बापूजीका हल	१९९
३१	शान्तिप्रसमें प्राणार्पण	४ ५
३२	बापूके अमूल्य विचार	४१२
३३	बापूके अन्तेवासी विविध सेवाक्षेत्रोंमें	४२०
३४	उपसंहार	४२९
	परिशिष्ट — १	
	मेरी अभिलाषा	४३१
	परिशिष्ट — २	
	१ बापूके समयकी आश्रमकी प्रार्थना	४३८
	२ वर्तमानकालीन प्रार्थना	४४३

बापूकी छायामें

तो हम कुछ जानते नहीं थे। अिसलिअे आपसमें यह चर्चा करते थे कि जो दो-चार अंग्रेज अफसर हैं अुनको खतम करके हम तुर्कीके रास्तेसे हिन्दुस्तान निकल चलेंगे। १९२ की जनवरीके लगभग मैं हिन्दुस्तान वापिस आया। झांसीमें मैं फौजी अस्पतालमें बीमार था। अुसी समय बापूजी और मौलाना शौकतअली झांसी आये थे। जब अैसे प्रसंग आते थे तब शहर फौजकी हदसे बाहर कर दिये जाते थे और कोअी फौजी आदमी वहां नहीं जा सकता था।

मेरा अेक मित्र अेक अंग्रेज अफसरके यहां अरदली था। वह किसी तरह झांसीकी अुस सभामें पहुंच गया। अुसने वहांका सब वर्णन मुझे सुनाया तो मनमें लगा कि मैं भी वहां गया होता तो अच्छा होता। अुसने मुझे कहा कि वहां लोग वन्देमातरम् बहुत बोलते थे। अुसका क्या अर्थ है? अुसका यथार्थ करके मैंने अुसे समझाया। वन्देमातरम् में जितनी भावना छिपी है, अिसका अुस वक्त मुझे पूरा ज्ञान नहीं था। अुस वक्त तो मैं अितना ही समझता था कि बापूजीने अंग्रेजोंसे लड़नेके लिअे हिन्दुस्तानियोंकी अेक स्वतंत्र फौज बनाअी है, वे सदाचारका प्रचार करते हैं, मांस और मदिराके विरोधी हैं और खादी पहननेके लिअे कहते हैं।

अिस बीच हमारी फौज पेशावर चली गयी थी। जनवरीके अन्तमें मैं भी पेशावर पहुंचा। यह सन् १९२१ की बात है। मैं अिन चीजोंका फौजमें प्रचार करने लगा। क्योंकि फौजमें शराब भी पी जाती थी, मांस भी खाया जाता था और नैतिक जीवन भी कुछ अूंचा नहीं रहता था। फौजके अूपर कड़ा प्रतिबन्ध था। वहां न तो कोअी अैसे अखबार पढ़ सकता था जिनमें कांग्रेस-आन्दोलन और बापूजीकी किसी तरहकी खबरें हों, न शहरकी किसी सभा या जुलूसमें भाग ले सकता था और न फौजमें कोअी अैसा आदमी प्रवेश ही कर सकता था। लेकिन तो भी हमारे जरिये बहुतसे समाचार फौजमें पहुंच जाते थे। हमारी अेक विशिष्ट टोली थी जो अिस प्रकारके सात्त्विक जीवनके लिअे छटपटाती थी। सब लोग मुझसे कहते थे कि तुम डिस्चार्ज लेकर बाहर जाओ और गांधीजीकी फौजमें हमारे लिअे भी स्थान निश्चित करके हमें खबर दो तो हम भी आ जायेंगे। अेक विचार यह भी चलता था कि कहीं पर अेक आश्रम बनाया जाय। अुसमें [illegible] लोग काम करें और रातको अेकसाथ मिलकर प्रार्थना करें

भोजन करें और स्वाध्याय करें। जिसके लिये वे लोग मुझे ही अगुवा मानते थे और मुझे गांधी नाम दे रखा था। मेरे अन्दर भी छटपटाहट काफी ही थी। लेकिन पैसे और फौजकी शानका मोह था। जिसलिये जिस्तीफा देनेकी हिम्मत नहीं होती थी। मनमें लगता था कि किसी तरहसे नौकरी छूट जाय तो अच्छा हो।

अुसी समय मुझे कुछ धार्मिक ग्रंथ पढ़नेका शौक लगा था। अेक रोज पहरे पर कुछ पढ़ते पढ़ते नींद आ गयी और मुझे सोते हुअे अेक सार्जेन्टने पकड़ लिया। रातके बारह बजे मुझ कैद करके कोर्ट-गार्ड में भेज दिया गया। सुबह होते ही फौजमें यह खबर बिजलीकी तरह फैल गयी। मैं अुस्त सिपाही माना जाता था और आज तक अैसी कोअी भी गलती मुझसे नहीं हुअी थी जिससे मुझे किसी भी अदालतके सामने जाना पड़ा हो। लोग मिलनेके लिये मेरे पास आने लगे। अैसे मामलोंके लिये फौजमें दो अदालत होती थी। अेक तो सिर्फ बयान लेती थी जिसको सजा देनेका कोअी अधिकार नहीं होता था। दूसरी समरी कोर्ट मार्शल करनेवाली होती थी जो जन्म-कैद या फांसी तककी सजा दे सकती थी। और अुसके आगे कोअी अपील नहीं होती थी। अुसके पांच सदस्य होते थे। अेक कमांडिंग अफसर और चार दूसरे अफसर होते थे जिनमें हिन्दुस्तानी अफसर भी रहते थे। जिनमें अेक मुसलमान अफसर भी था जो पहले मेरा मास्टर रह चुका था और मुझ पर बहुत प्यार करता था। वह मेरे पास आया और दुःखके साथ मुझसे सब बात पूछी। जब अुसने मुझसे यह पूछा कि मैं कोर्ट मार्शलके सामने क्या बयान दूंगा तो मैंने कहा कि घटना जैसी कुछ घटी है वैसी ही सच-सच कहूंगा। अपने बचावके लिये कोअी झूठ नहीं बोलूंगा यह मेरा निश्चय है। यह सुनकर वह अफसर बहुत खुश हुआ और मेरी पीठ ठोककर चला गया। मैं कोर्ट मार्शलके सामने गया और सारी घटना जिस तरहसे घटी थी वैसी ही मैंने बता दी। अुसमें मेरे बचावके लिये अेक बड़ा मुद्दा यह था कि मैं तीन रातसे बराबर पहरा दे रहा था और आंखोंमें नींद भरी थी। जिसलिये जमीन पर बैठा भी नहीं था लेकिन दीवारसे सहारे खड़े खड़े नींद आ गयी थी। और अगर मेरे गार्डका अफसर गलत बयान नहीं देता तो मैं साफ छूट सकता था। लेकिन जीश्वरको अैसा ही मंजूर था। मुझे दो महीनेकी सजा हुअी और फौजसे मेरा नाम कट गया। अुस समय

सारी फौजमें अेक तहलका-सा मच गया और अैसा प्रतीत होने लगा कि विद्रोह हो जायगा। मैंने निकटके मित्रोंको समझाया और शान्त रहनेको कहा।

अुस समय पेशावर छावनीका मोर्चा समझा जाता था और मोर्चे पर सोनेके अपराधमें गोलीसे मारने तककी सजा दी जा सकती थी। लेकिन मेरे पक्षमें अैसे कारण थे जिनसे मुझे दो महीनेकी नाममात्रकी सजा देकर ही अदालतने अपना रोष रखनेका सन्तोष माना। मैं पेशावर सेंट्रल जेलमें भेज दिया गया। बापूजीके पास पहुंचनेकी जो धीमी धीमी आग मेरे मनमें सुलगने लगी थी अुसका पहला पाठ मुझे जेलमें मिला। मुझे जेलका अनुभव करानेमें अीश्वरका ही हाथ था अैसा जेलमें जाकर मैंने अनुभव किया। मैंने भगवानको धन्यवाद दिया कि जिस मोहमें मैं फंसा था अुससे अुसने धक्का मार कर मुझे छुड़ा दिया। करूं सदा तिनकी रखवारी जिमि बालक राखे महतारी। यह कथन मेरे लिये सार्थक सिद्ध हुआ।

अुन दो महीनेके जेल-जीवनमें जो कठिन परिश्रम मुझे करना पड़ा और जो शुभ विचार मेरे मनमें आये, वह सब सुनाने बैठूं तो अेक लम्बा किस्सा हो जाय। जितना ही कह सकता हूं कि जेलके अुस कठिन जीवन और शुभ विचारोंसे मेरा मन और तन जितना निर्मल हो गया था कि फिर मुझे सत्याग्रहके जेल-जीवनमें किसी प्रकारकी अड़चन महसूस नहीं हुअी।

मैं अपने अन्तरमें यह तो महसूस करता ही था कि भगवानने जो कुछ किया है अच्छा किया है, मगर यह स्पष्ट खयाल नहीं था कि बापूके पास पहुंचनेकी पहली शर्त जेलकी तैयारी और अन्तर-शुद्धिका प्रयत्न है। जेलमें मेरा कांग्रेसके कुछ राजनीतिक कैदियोंसे भी परिचय हुआ। जेलसे छूटनेके बाद मैं पेशावर कांग्रेस कमेटीके सदस्योंसे मिला। घर आते समय लाहौरमें पंजाब-केसरी लाला लाजपतरायसे मिला। राजनीतिक क्षेत्रमें मुझे पहला शुभमंत्र लालाजीसे मिला माना जा सकता है। अुन्होंने मुझे आशीर्वाद दिया और कहा कि तुम अपने यहां जाकर कांग्रेसके कार्यकर्ताओंसे मिलो और जैसा वे कहें वैसा काम शुरू कर दो। अीश्वर तुम्हारी मदद करेगा।

लालाजीके दर्शन और आशीर्वादसे मुझे बहुत ही आनन्द हुआ। और मैं १९२१ के मार्च मासके अंतमें घर पहुंच गया। हमारे गांवके पास सीकरा गांवमें विश्वबन्धुजी तिलक राष्ट्रीय पाठशाला चलाते थे। अुनसे मेरा परिचय हुआ। अुन्होंने मुझे बापूजीके लेख और भाषणोंका संग्रह — महात्मा गांधी

नामक पुस्तक पढ़नेको दी। जुसे पढ़कर मुझे बहुत ही शांति मिली क्योंकि मेरा मन आर्यसमाजके सत्यार्थप्रकाश आदि कुछ ग्रंथ पढ़नेसे तर्क-वितर्कके दलदलमें फंस गया था। बापूजीके लेखोंसे मुझे प्रकाश मिला। मैं हिन्दी नवजीवन का ग्राहक भी बन गया। मैं खुद पढ़ता और दूसरोंको सुनाता। जुसके ग्राहक भी बनाता। साधु-संगत स्थानमें और बापूजी तक भेजनेमें विश्वबन्धुजीने मेरी बहुत मदद की। ये बड़े त्यागी और विद्वान पुरुष हैं। जिनको बापूजीके पास खींचनेकी मैंने कोशिश की लेकिन सफलता नहीं मिली। शुरूमें कांग्रेसके कार्यकर्ताओंसे परिचय करके मैं कांग्रेसके काममें लग गया। लेकिन जो लोग आध्यात्मिक दृष्टिसे बापूजीके भक्त थे जुनसे मेरा विशेष परिचय और प्रेम बंधा। प्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी जुनमें से अेक थे। ये संस्कृतके विद्यार्थी थे। श्री राधाकृष्ण संस्कृत पाठशालामें पढ़ते थे और कांग्रेसका काम भी करते थे। सीकरकी पाठशाला भी जिनकी ही कृति थी। बापूजीके परम भक्त थे। और मेरे गांवमें कांग्रेसका काम जमानेमें भी जिन्होंने ही मदद की थी। विश्वबन्धुजीका हाथ तो था ही। आज तो प्रभुदत्तजीको काफी लोग जानते हैं। जिन्होंने भक्ति पर अनेक ग्रंथ भी लिखे हैं। झूसीमें आश्रम बनाकर वे साधना करते हैं। खुशीकी बात यह है कि हम दोनों ही आमरणान्त साथी अपने अपने ढंगसे सेवाकार्यमें लगे हुओ हैं।

जिस प्रकार शुरूमें हमारा अेक सत्संगियों और बापूजीके भक्तोंका मण्डल था जो अेक-दूसरेको आगे बढ़ानेमें दिलोजानसे मदद करते थे। पत्थर मारिसकी अेक चोटसे ही नहीं पहलकी अनेक चोटोंके परिणामसे टूटता है। जिस प्रकार मनुष्यको अूपर अुठानेमें अनेकोंका हाथ होता है। भगवानने गोवर्द्धन पर्वत भी तो ग्वालबालोंके बलसे ही अुठाया था। अुनमें कविकी कल्पना यही रही होती कि किसी बड़े कामके लिअे कोअी अकेला आदमी अभिमान न कर बैठे। अुनमें अनेकोंका हिस्सा होता है। मैं तो पद पद पर जिसका अनुभव करता हूं कि मुझे बापूजीके पास पहुंचानेमें प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूपसे न मालूम कितनोंका हाथ रहा है। जिसलिअे मेरे मनमें बापूजीके पास जाने और रहनेका अभिमान कभी पैदा होता ही नहीं बल्कि साथियोंके प्रति कृतज्ञताका भाव ही बना रहता है।

२

बापूका प्रथम दर्शन

मेरा खयाल है कि १९२१ के अगस्तका महीना था। बापूजी विलायती कपड़ेका बहिष्कार करवानेके लिये हिन्दुस्तानका दौरा कर रहे थे। अुसी समय अुनके अलीगढ़ आनेकी खबर मिली। जब यह खबर मुझे मिली अुस समय मैं अपने अेक चाचा और चचेरे भाअीके साथ खेतका बांध बना रहा था। हमारे यहां अेक छोटीसी नदी थी जिसका पानी बढ़ रहा था और खेतमें पानी घुस जानेकी आशंका थी। अिसलिये हमारा काम जोरोंसे चल रहा था। मेरे सारे कपड़े कीचड़से भरे थे। हमारा खेत स्टेशनके पास ही था। अुसी समय अलीगढ़ जानेवाली अेक गाड़ी आ रही थी। मैंने अपने चाचा और भाअीसे पूछा कि मैं गांधीजीके दर्शन करने जाअू? वे मेरे अूपर बिगड़े और बोले देखते नहीं हो अगर कभी यह बांध नहीं बंधा तो रातको सारा खेत पानीमें डूब जायगा। मेरा दिल दुविधामें फंस गया। अिधर अिन लोगोंका भय था और अुधर बापूके दर्शनका आकर्षण था। अन्तमें मैं काम छोड़कर स्टेशनकी ओर चल दिया। ज्यों ज्यों गाड़ी नजदीक आती गयी त्यों त्यों मेरा दिल बापूकी ओर खिंचता गया और मैं अुन लोगोंसे दूर हटता गया। मैंने सोचा कि अगर मैं भागकर गाड़ीमें बैठ जाअूं तो ये लोग मुझे पकड़ नहीं सकेंगे। गाड़ी आकर खड़ी होना ही चाहती थी कि मैंने फावड़ा फेंक दिया और कहा को मैं तो चला।” और दौड़कर गाड़ीमें बैठ गया। टिकट लेनेका न तो होश था न पास पैसे ही थे।

रातको लगभग सात बजे अलीगढ़ पहुंचा। भीड़ तो बहुत थी। बापूजीको जो जगह भाषण करना था। मस्जिदमें स्त्रियोंके लिये प्रबंध था और बाहर पुरुषोंके लिये। बापूजीके साथ मौलाना मोहम्मदअली और स्टोक्स साहब भी थे। मैंने मंचके नजदीक पहुंचनेकी खूब कोशिश की और अैसी जगह पहुंचा जहांसे बापूजीको स्पष्ट देख सकूं। बहुत बड़ी भीड़ और कोलाहल था। आसमानमें बादल थे और डर था कि पानी बरसेगा। सबकी प्रार्थना यही थी कि पानी न बरसे और बापूजीका भाषण सुनें। यही हुआ। बापूजी मंच पर आये और अुन्होंने लोगोंसे शान्त रहनेको कहा। सब लोग

शांत हो गये। बापूजीके अुस भाषणका सारांश करीब-करीब मुझे याद है। अुन्होंने कहा था

" भाअियो और बहनो

" गुलामीसे छूटनेका सबसे बड़ा हथियार है स्वदेशी-धर्मका पालन। स्वदेशीका धर्म है कि जो चीज हमारे देशमें बनती हो वह परदेशसे न लायें जो हमारे प्रान्तमें बनती हो वह परप्रान्तसे न लायें जो हमारे जिलेमें बनती हो वह दूसरे जिलेसे न लायें और जो हमारे गांवमें या घरमें बनती हो वह बाहरसे न लें। चरखा तो घर घर चलाया जा सकता है। गांवका जुलाहा बुन सकता है। तो हम क्यों विलायती कपड़ेके मोहमें पड़ें? विलायती कपड़ा तो जहरके समान है। कोअी भी अपने घरमें जहरको या सांपको नहीं रख सकता। मुझे जला देना चाहिये। लोग कहते हैं कि खादी मोटी और बदसूरत होती है। मैं पूछता हूं कि अेक मांका बच्चा काला और बदसूरत है और दूसरीका गोरा और खूबसूरत है। अगर पहली मांसे कहा जाय कि तुम दूसरीके बच्चेसे अपना बच्चा बदल लो तो क्या वह बदलेगी? हरगिज नहीं बदलेगी क्योंकि अपने बच्चेमें वह अपना ही रूप देखती है। किसी तरह हम खादीको छोड़कर विलायती या देशी मिलके कपड़े कैसे पहन सकते हैं? अगर सब विदेशी कपड़े और दूसरी वस्तुओंका सर्वथा त्याग कर दें तो मेरे जो अेक सालमें स्वराज्य दिलानेकी बात कही है अुसमें सन्देह करनेका कारण नहीं रह जायगा। सबका असर पहनावे पर निर्भर है।

मौ. मोहम्मदअली भी बोले लेकिन वह मुझे याद नहीं है। बापूजीने लोगोंसे विलायती कपड़े मांगे। बातकी बातमें कपड़ोंका ढेर लग गया और अुसकी होली जलाओी गओी। अुस समय बापूजीको मंच पर देखकर असा लग रहा था मानो वे अपने ही आदमी हैं और अुनके अधिक नजदीक जाना चाहिये। लेकिन जिस तरह मैं बापूजीके पास पहुंचा अुसकी किसी स्पष्ट कल्पना या भावनाका वर्णन अुस समय मुझे नहीं हुआ था सिर्फ मनकी अेक जिज्ञासामात्र थी।

१

सविनय प्रतिकारका प्रथम पाठ

अपने गांवमें मैंने ग्राम कांग्रेस कमेटी बना ली थी। बादमें वह सक्रिय कांग्रेस कमेटी हो गयी थी। आसपासके गांवोंमें कांग्रेसका असर बढ़ रहा था। मुझे कअी साथी भी मिल गये थे। यद्यपि हम थे तो गिने-गिने ही तथापि सब निष्ठावान और सत्याग्रहके विश्वासी थे। अेक दिन गांवमें कुछ नाचनेवाले आये। मेरे परिवारवालोंने अुनका तमाशा करानेका निश्चय किया। मुझे दिनमें ही अिसकी खबर लग गयी थी। मैं अिस कार्यक्रमके प्रति अुदासीन रहना चाहता था। लेकिन मेरे घरके सामनेसे तमाशा देखनेवाले आ-जा रहे थे। मेरे कअी साथी मेरे पास आकर बैठे और जब वे चलने लगे तो मैं भी अुनके साथ हो लिया। अिससे अुनको आश्चर्य हुआ। लेकिन मैंने सफाअी कर दी कि चल कर देखें तो सही वहां क्या हो रहा है। जब हम वहां पहुंचे तो कुछ लोग प्रसन्न हुअे और कुछ चौंके। चौंके अिसलिअे कि आखिर हम लोग वहां किसलिअे आये हैं। मैंने हंसकर अपने चाचासे जिनके यहां यह तमाशा होनेवाला था पूछा कि तमाशेमें कितनी देर है। वे खुश होकर बोले बेटा लड़के सज रहे हैं अभी आते हैं। तब तक मेरे मनमें नाच बन्द करानेका विचार नहीं आया था। मैंने सहज ही कहा चाचाजी अिसमें सजनेकी क्या जरूरत है? यों ही नाचना होने दो न? वे बोले बेटा बिना सजे रौनक कैसे आयेगी? मैंने कहा कि लड़कोंसे कपड़े पहनाकर रौनक करना ठीक नहीं है। अिससे वातावरण गन्दा बनता है। अुन्होंने मेरी बात नहीं मानी। मैंने कहा कि यह नहीं हो सकेगा। वे बिगड़े अिससे मेरे मनमें अुस नाचको बन्द करवानेके लिअे सत्याग्रहकी भावना जागी। मैं तथा मेरे साथी वहांसे चले आये। और मैंने अपने सबसे मजबूत साथी चोखेसिंहको बताया। वह बोला क्यों नाहक झंझटमें पड़ते हो गांववाले हमारी बात मानेंगे नहीं और झगड़ा बढ़ेगा। मैंने अुसे अुत्साह दिलाया कि भाअी अभी तो यह अेक छोटासा काम है। यहां सिर्फ दो-चार गालियां या दो-चार थप्पड़ों तक ही नौबत आनेवाली है। अितनेमें ही यदि हम हिम्मत हार गये तो

अंग्रेजोंको निकालना कैसे सम्भव होगा जिनके पास तोप और बन्दूक है और जिनके साथ लड़नेमें जानका पूरा खतरा भी है। अंग्रेजोंके खिलाफ सत्याग्रह करनेके लायक हम हैं या नहीं जिसकी परीक्षा आज हो जानी चाहिये। पहले तो हम समझौता करनेका यत्न करेंगे अर्थात् नाचके कपड़े न पहनकर वे केवल भजन करें तो करने देंगे। नहीं तो हम सत्याग्रह करेंगे।

योजना बनाओ गओ कि वह साथी पहले जाकर लोगोंको समझाये कि हमारे गांवमें कांग्रेसका काम होता है जिसलिये यहां नाच कराना शोभा नहीं देता। दूसरे, हमारी बहन-बेटियोंके सामने हम गन्दी बातें सुनें तथा गन्दे हावभाव देखें यह शर्मकी बात है। जितने पर भी न मानें तो हम नाचके स्थानके चारों ओर खड़े होकर गांधीजीकी जय भारतमाताकी जय के नारे लगातार लगाते रहेंगे। अैसा करनेमें हमें गालियां मिलें तो सुन लें। किसी पर मार पड़े तो अुसे बचानेका यत्न न करें। मार खाते खाते जब तक गिर न पड़े तब तक हर कोओ जय जयकार करता रहे। हमारी ये बातें चल रही थीं तब तक और भी कओ साथी अिकट्ठे हो गये। हमारा साथी मोहल्लेमें वहां गया और जब अुसके समझानेका कोओ परिणाम नहीं हुआ तो अुसने हम लोगोंको बुला लिया। हम लोग जय-जयकार करते हुओ वहां पहुंचे। और कओ मुसलमानी लड़के भी हमारे साथ हो गये। गांवका मुखिया मेरे चाचाका बेटा था। वह घटनास्थल पर पहुंचा और सब हाल जानकर अुसने कहा कि यह सक्रिय मदद तो नहीं करेगा लेकिन हमारा विरोध भी नहीं करेगा क्योंकि हमारा काम अच्छा है। हमारे वहां पहुंचते ही सन्नाटा छा गया। हमने नाचनेवालोंको घेर लिया और बिना अिधर-अुधर देखे जय-जयकार करने लगे। मेरे चाचाने कहा कि नाच तो जिन लोगोंने पिटनेका लिया है। परिवारका अेक दूसरा व्यक्ति बोला कि यदि यही बात है तो जिनकी अच्छी मरम्मत कर दो। लेकिन जितना आगे कोओ कुछ न बोला। धीरे धीरे नाच वहांसे खिसक गये। कुछ बहनें गालियां देती जा रही थीं आये बड़े गांधीवाले। आज तो नाच बन्द करा दिया कलको ब्याह-बरात भी बन्द करा देंगे। जिनका सत्यानाश हो। दूसरे गांववालोंने ताना मारा कि आज अपने गांवमें तो तमाशा बन्द करा लिया है कल हमारे गांवमें बरात आना। मारते मारते कचूमर निकाल देंगे। हमने दूसरे दिनके लिये भी वैसा ही कार्यक्रम बना लिया था। लेकिन

तमाशा करनेवाले ही राजी न हुअे और गांवसे चले गये। फिर तो आस पासके गांवोंमें भी स्वांग बन्द हो गये।

मेरे अेक दूसरे चाचा तथा गांववालों पर अिस घटनाका अच्छा ही असर हुआ। वे कहने लगे कि देखो अिन लड़कोंने जब राजको केवल भय दिखाकर सारे गांववालोंको भगा दिया तो अंग्रेजोंको भगा देनेमें भी निश्चित ही ये सफल होंगे। हमारे दिलोंमें भी अिस घटनाके बाद निर्भयता तथा आत्म विश्वास बढ़ा।

४

निकट सम्पर्क और सन्देहका अन्त

सन् १९२१ से १९२८ तकका समय जिस तरहसे बीता अुसका सब वर्णन लिखने बैठूं तो अेक बड़ा पोथा ही बन जाये। अिसलिये अुसको टाल देता हूं। अितना ही कह सकता हूं कि मेरी गति सांप-छछूंदर जैसी थी। अुधर मैं बापूजीकी तरफ खिंचता जा रहा था और अिधर परिस्थिति मुझे घरमें बांध कर रखना चाहती थी। मैंने आन्दोलनमें काम किया खूब घूमा। बापूजीका हिन्दी-नवजीवन भी पढ़ता रहा। अुनकी आत्मकथा भी पढ़ी। लेकिन बापूजीके पास पहुंचनेका कोअी मार्ग नहीं सूझा।

जहां तक मुझे याद है १९२९ के मार्चकी २९ तारीखको नयी दिल्लीमें वहीं भारतमाके अम्मत स्व. विट्ठलभाअी पटेलके बंगले पर कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी मीटिंग थी। मुझे पता चला कि बापूजी वहां आ रहे हैं। मैं अपने अेक चाचा ठाकुर टोडरसिंहजीकी सिफारिश लेकर गांधी-आश्रमके व्यवस्थापक श्री विचित्रभाअीके पास गया। अुनसे मैंने कहा कि वे मुझे गांधीजीसे मिला दें। मैंने अुनको पत्र बताया। अुन्होंने मेरे ठहरने आदिकी व्यवस्था कर दी। बापूजीसे मुलाकातकी व्यवस्था तो वे नहीं कर सके पर स्व. विट्ठलभाअीके बंगले पर जहां बापूजी ठहरे हुअे थे अुन्होंने मुझे पहुंचा दिया। दूसरे मित्रगण भी मेरे साथ थे। हम स्व. विट्ठलभाअीके बंगलेके मैदानमें जाकर बैठ गये। वर्किंग कमेटीकी मीटिंग चल रही थी। हमने पर्ची पुर्जे बापूजीसे मुलाकात मांगनेके लिये भेजे लेकिन वे अुन तक पहुंचे ही नहीं। मैं छटपटा रहा था कि मुलाकात कैसे होगी। तब अेक मोटर ड्रायवरसे कारमें पत्र

लिखाकर भेजा। वह पत्र मौलाना आजाद साहबने पढ़कर बापूजीको सुनाया। बापूजीने कहा अुनसे कहो कि ठहरें मैं अभी नीचे आता हूं। मैंने बापूजीका अुत्तर सुना तो बड़ा आनन्द हुआ।

शामको वर्किंग कमेटीकी मीटिंग खतम हुआी और बापूजी नीचे आये। बापूजीके साथ अुनके पुत्र देवदासभाओी भी थे। मैंने बापूजीके चरणोंमें प्रणाम किया और पूछा मनुष्यको अपनी आध्यात्मिक अुन्नतिके लिये क्या करना चाहिये?

बापूजी बोले सच्चा बनना चाहिये। आध्यात्मिक अुन्नतिका यही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है।

दूसरा प्रश्न मुझे सूझ ही नहीं रहा था और बापूके पास जितना समय भी नहीं था। श्री विचित्रभाओीने मुझे कहा भी था कि तुमको जो कुछ पूछना हो लिखकर ले जाओ क्योंकि गांधीजीके सामने जाकर लोग होश-हवास भूल जाते हैं और कुछ पूछ नहीं पाते। लेकिन मैंने तो सीधे ही प्रश्न पूछना ठीक समझा। सोचा अुस वक्त जो सूझेगा पूछूंगा। मेरा प्रश्न सारे शास्त्रोंका निचोड़ था। जितने निकटसे बापूका दर्शन मेरा प्रश्न और अुनका अुत्तर! अुस समयके आनन्दका वर्णन करना मेरी शक्तिके बाहर है। न तो मैं घबराया और न होश-हवास ही भूला। बापूजी प्रेमभरी मुस्कराहटसे मुझे आह्लादित कर दिया।

अुस समय बापूका घूमनेका समय था। बापूके साथ श्री अबुलकलाम आजाद और प० मदनमोहन मालवीयजी थे। बापू घूमने चले मैं भी पीछे पीछे चला साथमें मेरे दो साथी और थे। जिस प्रकार अेकान्तमें बापूजीके साथ घूमनेका जो अवसर मुझे मिला अुसके लिअे मैं ओीश्वरको अनेक धन्यवाद दे रहा था और अपने आपको कृतकृत्य मान रहा था। अुनकी आपसमें क्या बात चल रही थी यह तो मुझे याद नहीं है। लेकिन बापूकी आवाज सुनकर मुझे बड़ा आनन्द होता था। बापूके लौटने तक मैं अुनके पीछे ही घूमता रहा। मुझे पता नहीं था कि घूमनेके बाद बापू प्रार्थना करते हैं। जिसलिअे अुनके बंगले पर लौटनेके बाद मैं वापिस दिल्ली चला गया। बादमें पता चला तो प्रार्थनामें शामिल न होनेका मुझे बहुत दुःख हुआ।

सन् १९२१ से १९२८ तकके समयमें मेरे विचारोंमें अनेक प्रकारके अुतार-चढ़ाव आते रहे। मेरा मन कुछ संन्यास-वृत्तिका होता जा रहा था

और राजनीतिसे मुझे कुछ बुदासीनता-सी होती जा रही थी। परन्तु बापूके दर्शनसे जादूका-सा काम किया और मेरा मन फिर कांग्रेसके आन्दोलन और बापूकी तरफ जोरसे खिंच गया।

सन् १९२९ में बापूने यू. पी. में खादी-प्रचारके लिये दौरा किया था। अुसी सिलसिलेमें अुनका अुधर आनेका कार्यक्रम भी था। अक्तूबरका महीना था। मैंने भी कुछ साथी कार्यकर्त्ताओंको अिकट्ठा करके किसानोंकी ओरसे बापूको अभिनन्दन-पत्र और अेक थैली भेंट करनेका प्रबन्ध किया। किसानोंके पाससे अेक अेक पैसा मांगकर कुछ रुपये अिकट्ठे किये। अेक अभिनन्दन-पत्र भी लिखा। वह बापूजीको भेंट किया। अभिनन्दन-पत्र अिस प्रकार था

ॐ

सत्यमेव जयते नानृतम्।

श्रीयुत पूज्य महात्मा गांधीजीको

श्री कृषक कांग्रेस कमेटी समसपुर, जिला बुलन्दशहरकी तरफसे

श्रीमन् वन्दे।

आपकी प्रशंसाकी गंधसे हम कृषक भी महक अुठे हैं। गंध वाणीका विषय न होनेसे हम ही क्या सभी आपकी प्रशंसा करनेमें असमर्थ हैं। भारतवर्ष ही नहीं सारी दुनिया अमेरिका अित्यादि देश भी आपकी प्रशंसाकी गंधसे सुगन्धित हैं। जब जब हम आपके अुपकारोंको याद करते हैं तब हमको अीश्वरकी करुणाका अनुभव होने लगता है। आपके हृदयमें भगवानके अहिंसा सत्य त्याग धीरतादि गुणोंका पूर्णतया प्रादुर्भाव हो गया है, जिसलिये हम आपके आदेशको अीश्वरका ही आदेश समझते हैं। जब भारतके पूर्वज महान पुरुषोंके कीर्तिपुंजका अितिहास विलायती सभ्यताके अंधकारमें मलिनताको प्राप्त होने लगा तब आपने अपने चारित्र्यबल और सौजन्यके प्रकाशसे अुस आधुनिक सभ्यताके तमपुंजको छिन्नभिन्न कर ऋषि-मुनियोंकी कीर्तिपुंज गाथाको अुज्ज्वल बना दिया।

हे समयके अवतार! जब तेरी अफ्रीका जैसे असभ्य देश-संबंधी सत्याग्रहकी घटनाओंका स्मरण होता है तब प्रह्लादका चरित्र आंखोंके सामने खिंच जाता है और विश्वास होता है कि दुष्ट हिरण्यकशिपुके शासनकी भांति आधुनिक दुःशासनको आप छिन्नभिन्न कर देंगे। जब आपका यह वाक्य

जिसका अीश्वरके सिवा और कोअी अवलम्ब नहीं वह जानता नहीं कि संसारमें पराभव भी कोअी चीज है। याद आता है, तो अैसा साहस होता है कि बड़ेसे बड़ा तिरस्कार भी सत्याग्रहीको नहीं झुका सकता। हे प्रेमावतार! तूने अपना तिरस्कार करनेवालोंकी रक्षा की। तेरी दृष्टिमें सब देश अेक समान हैं अिसलिये तू दुनियाका प्राण है। संसारमें तुमको ही लोग सबसे बड़ा महान पुरुष समझते हैं। आध्यात्मिक विषयमें तो आपके वाक्योंको पढ़कर ही हम बस बन जाते हैं। आपके ये वाक्य हम स्वार्थ लेनेको पैदा नहीं हुये हैं। हम अपने बनानेवालेको पहचाननेके लिये ही जीते हैं। यह शरीर हमको किरायेपर मिला है, अिसलिये किरायेके बदले अुसकी प्रार्थना करनी चाहिये और अन्त समयमें जैसा मिला है वैसा ही मालिकको सौंप देना चाहिये। जब हम याद करते हैं तो संसारके विषय-भोग नीरस प्रतीत होने लगते हैं और हृदयमें अीश्वर प्रेम अुमड़ने लगता है। जब जब मत-मतान्तरोंकी शंकाओंसे हम दुःखी होते हैं तब आपके अिस आनन्ददायक वाक्यका स्मरण होता है कि राम न रामायणमें है, कृष्ण न गीतामें है, क्राअिस्ट न बाअिबलमें है खुदा न कुरानमें है, किन्तु ये सब मनुष्यके चरित्रमें हैं चरित्र नीतिमें है नीति सत्यमें है, सत्य है सो ही शिवरूप है। जिसके स्मरणसे हम जिन मत-मतान्तरोंके झगड़ोंसे अलग रहते हैं। जब हमारी आंखें आधुनिक भौतिक अुन्नतिको देखकर चौंधिया गअी और हम अपने प्राचीन रीति-रिवाजोंको भूलने लगे तब आपने ही हमको समझाया कि यह अुन्नति मनुष्योंको बेकार और निकम्मा बनाती है, वास्तविक भौतिक अुन्नतिकी अुतनी ही आवश्यकता है जिससे हम जिन्दा और नीरोग रह सकें।

आपने संयमको ही हमारा ध्येय बतलाया और यह भी बतलाया कि ज्यों ज्यों हम संयमी बनते हैं त्यों त्यों अीश्वरके समीप पहुंचते हैं। हम अपनी वेष-भूषा खान-पानको भूल चुके थे। परन्तु आपने हमको अज्ञानकी और विलाससे बचाया और चूल्हे चक्की चरखेको ही जीवनका मुख्य महायज्ञ बतलाया। हम लोगोंने बारीक विलायती कपड़ोंको पहनकर अपनेको भुला दिया था और अपने पूर्वजोंको हम असभ्य समझने लगे थे। परन्तु आपने हमको शुद्ध खादी पहनाअी और पूर्वजोंका आदर्श पुनर्वार जागृत कर दिया। आप रातदिन हमारी अुन्नतिके लिये चिन्तित रहते हैं तथापि आप प्रसन्न-चित्त हैं। आपसे हमारे दुःख नहीं देखे जाते। हम लोग परतंत्रताकी बेड़ीमें

जकड़े पड़े हैं। अुस बेड़ीके काटनेमें आप ऐसे लगे हैं कि अब कोअी सन्देह नहीं रहा कि वह कटनेवाली है। आपकी यह भारतयात्रा भारतका पुनरुत्थान करनेके लिये ही है। यह हमारा बड़ा भारी सौभाग्य है कि बिना प्रयासके ही आज आपके दर्शन प्राप्त हो रहे हैं। आपके दर्शनोंके आनन्दमें हम सारे दुःख भूल गये हैं।

हमारे अन्दर जो छूतछातका मिथ्याभिमान था अुसको आपने अपने चरित्रबल और पवित्रतासे दूर कर दिया है। क्योंकि चरित्रवान ही सबसे बड़ा और पवित्र मनुष्य है। जो दुश्चरित्र है वही अछूत है यह शास्त्रका सिद्धान्त है। आप हम दीन-दुःखी कृषकोंके प्राण हैं। हम आपके अूपर निछावर हैं। बारडोलीके कृषक आपके अुपदेशामृतका पान करके ऐसी बड़ी सरकारको नीचा दिखा सके यह आपकी ही असीम कृपा थी। चम्पारनमें आपने कृषकोंको महान कष्टसे मुक्त किया। कहां तक आपके गुणगान करें? रौलेट ऐक्ट, जिसको अक्षेपेट कानून कहते थे अुसका विरोध आपने ही किया। अिस दीनहीन भारतके लिये अीश्वरने आपको भेजा है। हमें पूर्ण विश्वास है कि आप अपने सामने ही हमको स्वतन्त्र कर देंगे।

हममें कोअी शक्ति नहीं कि हम कृतज्ञता प्रगट कर सकें। हम आपके अुपकारोंको कहां तक याद करें? आपकी गोदीमें हम सब कृषक विराजमान हैं। आपके आज्ञानुसार हम प्रायः सभी कांग्रेस कमेटीके मेम्बर बने हैं। जब हम पहली आपके दर्शनोंको गये थे तो आपने यह कहा था कि मैं किसानो सच्चे बनो यही अुत्तम मार्ग है। सो हमारी रातदिन प्रभुसे प्रार्थना है कि हम महात्माजीके अुपदेशको कभी न भूलें और अुसे अपने कार्योंमें परिणत करके दिखलावें। अब आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप हम अपठितोंके अिस साधारण अभिनन्दन-पत्रको स्वीकार करें।

१-११-२९ विनीत
कृषक कांग्रेस कमेटी समसपुर

पैसे तो थोड़े ही थे। वे ही पत्रपुष्पके रूपमें हमने बापूजीको भेंट किये। अुसीकी मीटिंगमें बापूजी सिर्फ हमारे ही अभिनन्दन-पत्रके अुत्तरमें बोले। अुन्होंने कहा

मैं सन् १९ ८ से अपने आपको किसान मानता हूं। जन्मसे मैं किसान नहीं हूं लेकिन कर्मसे किसान बननेका पूरा पूरा प्रयत्न कर रहा

हूं। आज किसानोंकी जो दुर्दशा है अुसे देखकर मुझे दर्द होता है। न अुनको पेटभर खाना मिलता है, न अुनके शरीर पर कपड़ा है। किसान और अुनके बैल हड्डियोंके पिंजरमात्र रह गये हैं। अुनमें मांस और रक्त तो दीखता ही नहीं है। और अुनके कंधों पर जितना बोझा है कि जिसको संभालना अुनके लिये असंभव हो रहा है। शहरोंके धनी लोग और सरकार अुनके कंधों पर ही चढ़ रही है। अगर वे अपना कंधा हटा लें तो वे दोनों ही गिर जानेवाले हैं। किसान अन्न पैदा करता है, सबको खिलाता है, पर खुद भूखा रह जाता है। अुसके घरमें कपास होती है, लेकिन कपड़ेके लिये वह दूसरोंका मोहताज रहता है। अपने घरमें सूत कातकर अपना कपड़ा तो वह बना ही सकता है। आज परदेशी सल्तनत हमारे सिर पर बैठी है। जिससे हमारा बहुतसा पैसा विदेश चला जाता है। चरखा हमारा बहुतसा पैसा बचा सकता है।

अुस समय बापूजीके साथ पू बा भी थी लेकिन अुनके दर्शन मैं नहीं कर सका।

दिसम्बरमें लाहौर कांग्रेस हुई और अुसमें पूर्ण स्वतंत्रताका प्रस्ताव पास हुआ। सत्याग्रह शुरू करनेकी रूपरेखा बनानेका काम बापूजीने अपने जिम्मे लिया। मैं बड़ी अुत्कण्ठासे हिन्दी-नवजीवन की राह देखता रहता था। मैं यह जाननेके लिये अुत्सुक था कि बापूजी किस तरह लड़ाईका कार्यक्रम बनाते हैं। आखिर अुन्होंने नमक-सत्याग्रह करनेका निश्चय किया। बापूजीने आश्रम छोड़ते समय जो भाषण दिया था अुसमें अुनकी जिस प्रतिज्ञाका मुझ पर बड़ा असर हुआ कि मैं स्वराज्य लेकर ही आश्रममें लौटूंगा नहीं तो मेरी लाश समुद्र पर तैरेगी। मेरी भी अिच्छा थी कि बापूजीकी टोलीमें शामिल हो जाअूं। लेकिन बापूजीने लिख दिया था कि बाहरसे कोअी आदमी यहां आनेका प्रयत्न न करे। मैं वहां पहुंचनेका रास्ता भी नहीं जानता था। अिसलिये ६ अप्रैलको अपने अपने स्थान पर नमक-कानून तोड़नेका जो कार्यक्रम रखा गया था अुसमें मैं शामिल हो गया और मैंने यह भी निश्चय किया कि स्वराज्य मिलने तक घरमें नहीं बैठूंगा। नमक-सत्याग्रह आरम्भ होने पर अुरई तहसीलको प्रथम स्थान मिला। तहसीलके तेरह सत्याग्रहियोंमें से पांच हमारे गांवके ही थे जिनके नाम ये हैं

१ पंडित जगन्नाथ हमारे पुरोहित।

२ श्री कमलसिंह, मेरे ताअूजात भाअी और बालमित्र।

३ श्री मूलेसिंह, मेरे चाचाका पुत्र जो बड़ा होकर कांग्रेस कमेटीका मंत्री व खजाञ्ची रहा।

४ पंडित हरकनलाल गांवके पासकी रामसभाके रहनेवाले।

५ मैं स्वयं।

अिस तरह सत्याग्रहियोंके जत्थेके नायक श्री बशीरभाअी पठान थे, जो प्रतिष्ठित पठान खानदानके व्यक्ति थे। अुनकी त्याग तथा सादा जीवन बड़ा अनुकरणीय था। श्री बशीरभाअीके पकड़े जानेके बाद जत्थेका नायक मैं बना। रोजाना नमक बनाया जाता था और पुलिस देखती रहती थी। कुछ लोग हुल्लड़के शौकीन थे। अिसलिअे तय किया गया कि तहसीलके सामने नमक बनाया जाय। तहसीलके सामने घासकी पत्तियां लगी थीं। और पुलिस किसी न किसी गैर-कानूनी अपराधमें हमें पकड़नेकी फिक्रमें थी। अिसलिअे मैंने तहसीलके सामने नमक बनानेसे अिनकार कर दिया। अिससे डिक्टेटर घबराये कि अुन्होंने अैलान कर दिया है, अब नमक न बनानेसे नाक जायेगी। मैंने कहा कि यदि आसपास भीड़ जमा न हो और घासकी गंजियोंमें आग न लगने देनेका प्रबन्ध कोअी कर ले तो मैं नमक बनानेको तैयार हूं। डिक्टेटर भी आगन्तुकोंकी विस्मित राजी हो गये। पुलिसने भी अजीब तैयारी कर रखी थी। जब हमने तहसीलके सामने चूल्हा बनाया तो पुलिसके सिपाही चूल्हेमें पैर रखकर बैठ गये। अिससे मुझे बड़ा आनन्द हुआ। क्योंकि हमारा ही हथियार अुन्होंने अपनाया। लेकिन हमें तो नमक बनाना ही था। हमने दूसरे स्थान पर आग जलाअी और वहीं चूल्हेका आयोजन करके नमक बनाया। पुलिसने वहां भी अहिंसाका बरताव किया। जब अुन्होंने अुबलती हुअी कढ़ाअी अुलटनेकी कोशिश की तो अुबलता हुआ पानी मेरे हाथों पर गिर जानेसे मेरे हाथ जल गये लेकिन और कोअी दुर्घटना नहीं हुअी। अिससे अहिंसामें मेरा विश्वास और भी बढ़ा।

दूसरी घटना मेरी मानसिक अहिंसाकी कसौटीकी दृष्टिसे अूपरकी घटनासे विपरीत ढंगसे घटी। अेक दिन थानेदार और डिप्टी कलेक्टरने मिलकर शहरमें कलेक्टरका जुलूस निकालनेका प्रोग्राम बनाया। वे दिखाना चाहते थे कि कांग्रेस मर चुकी है। जब हमको अिसका पता चला तो हमने कांग्रेसका जुलूस निकालनेका निश्चय किया। हमारे साथी सबके सब जेल जा चुके थे। सिर्फ दो

चार बज गये थे जो पुलिसकी आंख बचाकर अपना काम कर रहे थे। मेरी और श्री बालचन्दजी शीतलकी अेक टोली पैदल दूर-दूर देहातोंमें घूम रही थी। हमने देहातोंमें से काफी लोगोंको जुलूसके लिये तैयार कर लिया था। जब यह समाचार थानेदारको मिला तो अुसने अेक चाल चली और हमारे अेक कमजोर साथीसे मिलकर कहा कि मैं कलेक्टरका जुलूस मुल्तवी कर देता हूं आप कांग्रेसका मुल्तवी करवा दें। अुस समय वे भाअी सुर्वा कांग्रेसके अध्यक्ष थे। जब अुन्होंने अपना प्रस्ताव हमारे सामने रखा तो हमें जंचा नहीं और हम अपने निश्चय पर अटल रहे। हमने लोगोंको समझा दिया था कि शामको छह बजे बाजारमें अिधर-अुधर सौदा लेनेके बहाने दुकानों पर बिखरे रहें और हमारे जय बोलने पर सब जमा हो जायं। मैं और बालचन्दजी ठीक समय पर अनाजकी मंडीमें पहुंचे। और जेबमें से झंडा निकाल कर हाथकी लकड़ी पर फहरा दिया। बस हमारे जय बोलते ही वानर-सेनाकी तरह हमारे साथी जमा हो गये। सभाका रूप बन गया। मैं पांच मिनट बोला। बालचन्दजीने अेक जोशीली कविता गाअी। बस फिर क्या था अेक बड़ा जुलूस बन गया। जब तक पुलिस आअी तब तक तो हमारा जुलूस बाजारके मुख्य मुख्य मार्गोंमें घूम चुका था। बाजारमें जोश पैदा हो गया था। अिसी बीच पुलिस आअी और हम ग्यारह जनोंको पकड़कर थाने ले गअी। थानेदार मुझे पहचानता नहीं था। अंधेरा भी हो चुका था। बालचन्दजीको कुरसी पर बैठाया और हम नीचे बैठे। अुनसे मीठी-मीठी बातें करके हमारा बहुत-सा भेद जान लिया। पीछे हनुमानदेवीके सत्तर साल बूढ़े पिताजीको भी पकड़ लिया क्योंकि हमें अुनके घरमें खाना और आश्रय मिला करता था। कांग्रेस अध्यक्ष भी हमारी लपेटमें आ गये।

जब हमारे नाम लिखे जाने लगे और मेरा नाम आया तो थानेदारके तन-बदनमें आग लग गअी। अुसके मनमें था कि यह मरा ही जान है। बस मेरे अूपर वह बाजकी तरह टूट पड़ा। वह मेरा गला पकड़ कर छाती पर चढ़ बैठा और चमार-चमार गालियां बकने लगा। वह दाढ़ीवाला मुसलमान था। अुम्र भी ढली थी। मोटा-ताजा खास अुसकर जैसा था। वह स्वरूपसे राक्षस जैसा ही लगता था। जब मेरे अूपर गुस्सेसे वह टूट पड़ा तो अुसका रूप और भी भयानक बन गया। बाकी लोग भिन्न दृश्यसे कांप अुठे। अुनको लगा कि यह राक्षस मेरे प्राण लेकर ही छोड़ेगा। मुझे न

मालूम किस शक्तिने अहिंसाका बल दिया। बापूजीका स्मरण तो चल ही रहा था। बापूजीके ये शब्द कानमें गूंज रहे थे कि सत्याग्रही मन वचन और कर्मसे अहिंसाका पालन करे। वचन और कर्मसे तो मैं हिंसा करनेकी स्थितिमें था ही नहीं। लेकिन मनको स्थिर रखना भी कठिन काम था। अुस राक्षसके मेरे अूपर प्रहार हो रहे थे और मैं नीचे पड़ा-पड़ा हंस रहा था। अुससे कह रहा था कि आप किस तरह कांग्रेसको खतम नहीं कर सकते। खुद ही खतम होनेवाले हैं। ज्यों-ज्यों अुसका गुस्सा बढ़ता त्यों-त्यों मुझे अुस पर दया और हंसी आती। आश्चर्यकी बात तो यह थी कि वह भारी भरकम काल अुछलकर मेरी छाती पर सवार था और अेक हाथसे गला दबाकर दूसरेसे मार रहा था। लेकिन न तो मुझे अुसका वजन महसूस होता था न कहीं मार ही लग रही थी। या तो वह अपना वजन अपने घुटनों पर साधकर मुझे मारनेका नाटक कर रहा था। या अुसके हाथोंमें दम ही नहीं था। या मेरी रक्षा कोअी दैवी शक्ति कर रही थी। दृश्य तो बड़ा ही भयानक था। मेरे मूल स्वभावके अनुसार अगर मेरे हाथमें बन्दूक आ जाती तो मैं अुसे गोलीसे अुड़ा देता। मैं अुससे बहुत अच्छा बन्दूक चलाना जानता था लेकिन मेरे मनमें हिंसाका भाव या क्षोभ तक नहीं था। मैं अन्त तक हंसता ही रहा। मेरे जीवनकी यह अद्भुत घटना कही जायगी। यह बापूजीकी अहिंसाकी ही नशा था। मनमें यह विश्वास था कि जाको राखे साअियां मार सके ना कोय। भाभी आनन्दजी अिस घटनाकी याद करके अुस गानेवालेकी तरह दांत पीसकर अुसका नाटक करके मेरी हंसी अभी भी अुड़ाते रहते हैं। लेकिन मैं मानता हूं कि अिसमें मेरा पुरुषार्थ नहीं था। बापूजीके स्मरणने ही मेरी रक्षा की थी। मुझे आज भी आश्चर्य होता है कि मैं अुस समय अितना शान्त कैसे रह सका।

आगे चलकर आन्दोलन कुछ ठंडा पड़ा जिससे मुझे सत्याग्रहकी लड़ाअीके सफल होनेमें सन्देह हो गया। मैं देहातोंमें घूम रहा था। अेक रोज अकेला अेक नहरकी पालाके किनारे बैठकर भगवानसे प्रार्थना करने लगा। मैंने फौजमें रहते हुअे अंग्रेजोंकी भारी फौजी ताकतको देखा था। मेरे सामने अुनके हथियार, अुनकी फौज और अुनकी किलाबन्दीका चित्र नाचने लगा। बड़े बड़े जमींदार, व्यापारी अफसर सब अंग्रेजोंके पक्षमें हैं। कांग्रेसमें बहुत थोड़े आदमी हैं जिनके पास न खाने-पीनेका ठिकाना है,

न लड़ाअीके कोअी साधन हैं। तो अैसी सल्तनत पर बापूजीकी विजय कैसे होगी? अिस सन्देहने मेरे मनको घेर लिया। परन्तु न मालूम किस शक्तिने मुझे सुझाया

रावन रथी बिरथ रघुबीरा। देखि बिभीषन भयअु अधीरा॥
अधिक प्रीति मन भा संदेहा। बंदि चरन कह सहित सनेहा॥
नाथ न रथ नहिं तन पदत्राना। केहि बिधि जितब बीर बलवाना॥
सुनहु सखा कह कृपानिधाना। जेहिं जय होअि सो स्यंदन आना॥
सौरज धीरज तेहि रथ चाका। सत्य सील दृढ़ ध्वजा पताका॥
बल बिबेक दम परहित घोरे। छमा कृपा समता रजु जोरे॥
अीस भजनु सारथी सुजाना। बिरति चर्म संतोष कृपाना॥
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा। बर बिग्यान कठिन कोदंडा॥
अमल अचल मन त्रोन समाना। सम जम नियम सिलीमुख नाना॥
कवच अभेद बिप्र गुरपूजा। अेहि सम बिजय अुपाय न दूजा॥
सखा धर्ममय अस रथ जाकें। जीतन कहँ न कतहुँ रिपु ताकें॥

महा अजय संसार रिपु, जीति सकअि सो बीर।
जाकें अस रथ होअि दृढ़ सुनहु सखा मतिधीर॥

सचमुच मेरी अधीरता बिभीषणके जैसी थी और मैंने रामके अुत्तरके सब गुण बापूमें देखे। बस मेरे मनमें निश्चय हो गया कि बापू अिस लड़ाअीमें विजयी होंगे। और बापूके आन्दोलनके प्रति मेरी निष्ठामें जो कमी आयी थी वह फिरसे दृढ़ हो गयी। मुझे अटल विश्वास हो गया कि बापूका जन्म अिस रावणशाहीका नाश करनेके लिअे ही हुआ है।

५

साबरमती आश्रममें

गांधी-अिरविन-पैक्टके बाद जेलसे छूटने पर मेरे मनमें विचार आया कि अब तो व्यवस्थित रूपसे रचनात्मक काममें जुटनेकी योग्यता प्राप्त करनेके हेतुसे मुझे साबरमती आश्रममें पहुंच जाना चाहिये। मैंने आश्रमके मंत्री श्री नारणदास गांधीको* पत्र लिखा और अुन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार कर ली। मैं १९३१ की ५ जुलाईको साबरमती आश्रम पहुंच गया और वहीं विद्याश्रममें दाखिल हुआ।

पाखाना-सफाओी

मैं आश्रममें ता० ५ को पहुंचा और ता० ६ को ही मुझे पाखाना-सफाओीमें सम्मिलित होना पड़ा। आश्रममें रहनेवालोंके लिये चाहे वे विद्यार्थी हों या स्थायी सदस्य सफाओीका काम स्वयं सीख लेना और करना अनिवार्य था। महान् दर्शकोंको भी जो तीन दिन आश्रममें ठहर सकते थे अेक बार अिस काममें सम्मिलित होनेकी सलाह दी जाती थी। अितना कर लेनेके बाद ही अुनका आश्रम देखना संपूर्ण माना जाता था। अपना पहले दिनका अनुभव यहां देता हूं। मेरे साथी अेक बिहारी भाओी थे जिनको सफाओीके काममें मुझे सहायता करनी थी अथवा यों कहें कि जिनसे मुझे यह काम सीखना था। वे कभी दिनोंसे सफाओी करते आ रहे थे और सिखानेकी योग्यता रखते थे। बाल्टियां मैलेसे मुंह तक भरी हुओी थीं। अुन्हें बांसोंमें लटका कर खेतमें ले जाया गया। वहां मुझे सारी क्रियायें बड़े प्रेमसे समझाओी गओीं। बदबू तो खूब आती। लेकिन कुछ तो अुन भाओीके समझानेका ढंग आकर्षक था और कुछ मेरे मनकी पूर्व-तैयारी थी जिसलिये मुझे पहले दिन भी मैलेकामसे घृणा नहीं हुओी। और सफाओी पूरी करके जब मैंने साबरमती नदीमें स्नान किया तब तो बड़ा ही आनन्द आया। फिर तो यह काम मुझे प्रिय हो गया।

---

* नारणदास गांधी बापूजीके भतीजे साबरमती आश्रमके तत्कालीन मंत्री। सारे आश्रमवासियोंकी जवाबदारी बापूजीके बाद अुन पर थी। आजकल वे राजकोटमें रहते हैं और सौराष्ट्रके सब रचनात्मक कार्योंके सूत्रधार हैं।

जब जब मेरा नम्बर आता तभी मनमें प्रसन्नता होती। यह विचार भी मनमें आता कि बाहरकी सफाओसे जब जितना आनन्द होता है तो यदि अन्तरको धोना पोंछना और स्वच्छ करना आ जाये तब तो न मालूम कितना आनन्द हो सकता है। वास्तवमें पाखाना-सफाओ आश्रमके जीवनका अेक अविभाज्य अंग है।

दिनचर्या व भोजन

आश्रममें वैसे ही विद्यार्थी या कार्यकर्ता टिकने पाते थे जिन्हें पाखाना सफाओके काममें जरा भी झिझक नहीं होती थी। शेष स्वयमेव चले जाते थे। पाखाना-सफाओ स्वतः किसीका भी पूरे दिनका काम नहीं था यह बारी रिक श्रमके दैनिक कामोंमें से अेक था। और सब लोगोंका बारी बारीसे जिसमें भाग लेना अनिवार्य था। आश्रमके पाखाने भी शहरोंके संडास जैसे नहीं थे। सफाओ करते समय क्वचित् ही मलमूत्रका हाथोंको स्पर्श हो पाता था। जिसमें मुख्य बात सिर्फ मनकी घृणा निकाल देनेकी थी। और मनसे यह घृणा निकाल देना आश्रममें रहनेकी अेक अनिवार्य शर्त थी। जो सिर्फ बातोंका काम सीखनेके लिअे आश्रममें आते थे अनुके लिअे भी यही नियम था।

आश्रममें भोजनका क्रम जिस प्रकार रहता था

प्रातः ६।। बजे — राब डबल रोटी दूध।

दोपहरको १०।। बजे — रोटी दाल साग चावल।

सायंकाल ५।। बजे — खिचड़ी डबल रोटी साग।

दूध-घीके कूपन खरीदे जाते थे और अनके बदलेमें जितना दूध जिसे आवश्यक हो मिल जाता था। खादी-विद्यार्थियोंको १२ रुपये मासिक छात्र वृत्ति मिला करती थी। भोजन-खर्च करीब ५ रुपये मासिक आता था। करीब २।। रुपये फुटकर खर्च होते थे। शेष दूध-घीके लिअे बच रहते थे। कोओी विद्यार्थी अस्वस्थ हो गया हो तो विशेष मात्रामें दूध-घीकी व्यवस्थाकी जाती थी। कोओी कोओी तो दूध-घीका त्याग करके अुस पैसे बचाते और अपने माता पिताकी सहायताके लिअे भेजते थे।

कुछ परिचय

पुराने आश्रमवासियोंमें से कुछका परिचय यहां दिया जाता है।

श्री सुरेन्द्रनाथ गुप्ता १९१६ में बापूजीके आश्रममें प्रविष्ट हुअे। तबसे अेकनिष्ठ आश्रमवासी रहे। साबरमती आश्रम छोड़नेके बाद वे गुजरातके खेड़ा

अिसके बोरियावी गांवमें ग्रामसेवाका काम करते रहे। आजकल वे समन्वय आश्रम बोधगया (बिहार) में काम करते हैं। अिनसे मेरा परिचय आश्रममें विशेष कारणसे हुआ। आश्रममें पानी पीनेकी प्रथा अैसी थी कि पात्रको मुंहसे अूंचा रखकर बिना ओठ लगाये पानी सीधा मुंहमें गिराते थे। अैसा करनेमें पात्र कभी कभी मुंहसे छू भी जाता था। अिसलिअे मैं सार्वजनिक बरतनसे पानी पीना पसन्द नहीं करता था। दूसरे, आश्रममें आम तौर पर गुजराती भाषा बोली जाती थी जिससे हिन्दीमें बातें करनेकी मेरी भूख पूरी नहीं होती थी। कोअी हिन्दी बोलनेवाला मिलता तो मुझे बड़ी खुशी होती। बरेलीके श्री शीतलसहायजी अेक बार आश्रममें आये। अुन्हें जब मेरी अुपरोक्त कठिनाअियोंका पता चला तो अुन्होंने मेरा परिचय श्री सुरेन्द्रजीसे कराया और कहा कि आप अपनी पानीकी प्यास और हिन्दीमें बोलनेकी भूख दोनों अिनके पास जाकर मिटा सकते हैं। तबसे हमारा परिचय दिनों-दिन बढ़ता गया।

मीराबहनका थोड़ा अधिक परिचय यहां देता हूं। वे ७ नवम्बर, १९२५ को बापूजीके पास आयीं और बड़े प्रेम और श्रद्धासे बापूजीको पिता ही नहीं वरन् अिस जीवनका मार्गदर्शक बनाकर अुनकी सेवामें तल्लीन हो गयीं। बापूजीने भी सगी लड़कीकी तरह अुनकी संभाल की। बापूजीके साबरमतीके निवास-स्थान हृदयकुंज के पासवाली नदीतटकी दो कोठरियोंमें से अेकमें वे रहती थीं। जब वे भोजनके समय अपनी कोठरीमें जातीं और मैं अुनके हाथों परसे दो पक्षियोंको जो अुनके पासवाले नीम पर रहते थे किशमिश खाते देखता तो मुझे सहसा प्राचीन कालके अुन आश्रमोंका स्मरण हो आता था जहां मनुष्य अन्य प्राणियोंके साथ भयरहित वातावरणमें रहा करते थे। मीराबहनका सेवाग्रामका हाल तो अिस पुस्तकमें आगे बहुत आया है।

आश्रममें दोनों समयकी प्रार्थना स्व० पंडित नारायण मोरेश्वर खरे कराया करते थे। वे संगीतशास्त्री थे और बड़े प्रेम व तल्लीनतासे भजन गाया करते थे। अेक दिन रामायणके पारायणके समय जो प्रात ५॥ बजेसे आरम्भ होकर रातके १ बजे समाप्त हुआ मैं भी अुनके साथ शरीक था। बीचमें सिर्फ १ घंटा आराम लिया था तथा १५ मिनट फलाहारमें लगे थे। मैंने अिस पारायणके समय अुनकी गहरी भक्ति और कोमल हृदयके भरपूर

दर्शन किये। बार बार प्रसंग आने पर अेकाध मिनट तक अुनका गला रुंध जाता था और आंखोंसे आंसू बह निकलते थे। अुनके पुत्र रामभाअू तथा सुपुत्री मथुरी दोनों संगीतमें प्रवीण निकले। पंडितजी पूज्य बापूजीके भक्त थे। हरिपुरा कांग्रेसके अवसर पर वे वहीं अचानक बीमार पड़ गये और अधि वेशन पूरा होनेके पहले ही अुनका स्वर्गवास हो गया।

पूज्य जमनालालजी बजाजका भी प्रथम परिचय मुझे साबरमती आश्रममें ही ता १ –७– ३१ को हुआ था। अुन्होंने हम विद्यार्थियोंको आश्रमसे सत्य अहिंसा त्याग सेवाभाव आदि सद्‌वृत्तियां सीखकर जानेकी सलाह दी थी।

पूज्य राजेन्द्रबाबूसे भी प्रथम परिचय यहीं हुआ था। अुन्होंने हमसे कहा कि वे अपनेको अुपदेश देनेका अधिकारी नहीं मानते बल्कि स्वयं हम जैसे बननेकी वृत्ति रखते हैं। अुन्होंने हमें यह सलाह दी कि जो कुछ हम यहांसे सीख कर जायें अुसे जीवनमें अुतार कर अुससे जनताको लाभ पहुंचायें।

पू गंगाबहन वैद्य मांकी तरह आश्रमकी बहनोंके स्वास्थ्यकी संभाल बड़े ही प्रेमसे करती थीं। अुनका स्वभाव बड़ा ही सरल और दयालु था। सच मुच वे गंगा मैया-सी शीतल और पवित्र थीं। सब भाभी-बहनोंको शीतलता पहुंचाती थीं। आज भी ७५ सालकी अुम्रमें वे गोमाताकी हाथसे सेवा करती हैं। अुनको गोसेवामें मगन देखकर सहज रूपसे अुनके चरणोंमें हमारा सिर झुक जाता है। अुनकी प्रत्येक बात और कार्यसे पग-पग पर बापूजीका स्मरण हो आता है। अुनका अुत्साह और कार्यक्षमता देखकर चित्तमें प्रसन्नता होती है। अीश्वर अुदार दिल और स्वस्थ शरीर प्रभु सबको दे यही प्रार्थना है।

आश्रमका दैनिक कार्य प्रातः ४ बजेसे रातके ८ बजे तक घड़ीकी सुअियोंके साथ चला करता था। अुसे करते हुअे रातको भी पटेकी चौकी देना मुझे अखरता था। मैंने आश्रमके मंत्री श्री नारणदास गांधीसे यह प्रश्न किया था कि अस्तेय-व्रतका पालन करनेवाले जहां रहते हों वहां चोरीकी आशंका क्यों हो? अुन्होंने बड़े प्रेमसे मुझे समझाया था कि आश्रमकी संपत्ति किसीकी निजी संपत्ति न होकर सार्वजनिक संपत्ति है। अुसकी रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। अिस प्रकारकी अनेक चर्चायें अुनसे हुआ करती थीं और वे बड़ी योग्यता और प्रेमसे हमारी शंकायें निवारण करते थे। वे अपना सारा बचा हुआ समय कताअीमें लगाते थे। अुनके यहां अुनके हाथकते सूतकी आंटीका ढेर

रूपा रहता था। सुना है कि अुनकी कताअीका क्रम कभी टूटा नहीं और आज भी वैसा ही जारी है।

महिलाओंमें अुल्लेखनीय परिचय कुमारी प्रेमाबहन कंटकसे हुआ था। वे अुस समय लड़कियोंके छात्रालयकी व्यवस्थापिका थीं और लड़कियोंको पढ़ाती भी थीं। अुनका स्वभाव रोब धाक-धाक सब फौजी अफसरके समान थे। अुनकी कठोरताके खिलाफ शिकायतें खूब होती थीं लेकिन बापूजी तथा श्री नारणदासभाअी अुनके तेज स्वभावको जानकर भी अुनकी शक्तिका विकास अपने ढंगसे करना चाहते थे। अिसलिअे विद्यार्थियोंको और प्रेमाबहनको समझाते थे। प्रेमाबहनकी बापूजी तथा नारणदासभाअी पर अत्यन्त श्रद्धा थी। अुस पर भी बापूजीके समझानेका परिणाम हुआ और अुनका जीवन आज अूंचे शिखर पर जा पहुंचा है। आजकल वे पूनाके पास सासवड़ नामक स्थानमें रचनात्मक कार्यका बड़ा सुन्दर आश्रम चला रही हैं।

अेक दिन शामको विद्यालयकी छुट्टी होने पर जब मैं बाहर आया तो देखा कि अेक मुसलमान आगन्तुक यह पूछ रहे हैं कि यहां अिमाम साहब नामके जो प्रसिद्ध मुसलमान रहते हैं अुनका घर कहां है। अुनकी बोलीसे मैंने जाना कि वे अुत्तरप्रदेशके हैं। पूछने पर अुन्होंने अपनेको लखनअूका वकील बताया और कहा कि मैं अिस वक्त नमाज़ अन्सारीको मौलमेज़ कान्फरेन्सके लिअे बम्बअीसे विदा करके लौटा हूं और आश्रम देखने यहां चला आया हूं। लेकिन अब अिमाम साहबसे मिलनेके लिअे वक्त कम रह गया है, अिसलिअे बिना मिले ही चला जाअूंगा। मैंने सोचा कि अपने मिलेका आदमी है अुसके काम आ सकूं तो अच्छा है। अिसलिअे मैं अुन्हें आग्रहपूर्वक हाथ पकड़कर अिमाम साहबके बंगले पर ले गया। अिमाम साहबने अुनका यथोचित सत्कार किया। मैंने भी अुनके प्रथम दर्शन किये। अुनके चेहरेको देखकर मेरे मनमें बड़ा आदरभाव पैदा हुआ। बातों बातोंमें खादीका प्रसंग छिड़ गया। वकील साहबने फरमाया कि यों तो खादीकी बात ठीक है लेकिन हिन्दुओंका राज हमारे लिअे अच्छा नहीं है। अितना कहना था कि अिमाम साहब बिजलीकी तरह तड़ककर बोले "खादीमें हिन्दू-मुस्लिमका सवाल कैसे अुठता है? क्या खादी हिन्दुओंकी बपौती है? अगर अैसा ही हो तो मैं क्या यहां तक मारनेको पड़ा हूं? खादी तो हिन्दू, मुसलमान सिक्ख अीसाअी सभीके लिअे अेकसी है। हिन्दू स्त्रियां तो बाहर निकलकर और भी काम कर सकती हैं लेकिन

मुसलमान पर्दानशीन औरतोंके लिअे तो चरखा रोजीका बड़ा अच्छा जरिया है। मुसलमान धुनते हैं और बुनते भी हैं। अगर हिसाब निकाला जाय तो खादीसे मुसलमानोंको पहुंचनेवाला फायदा हिन्दुओंसे कम नहीं पाया जायगा। आप जैसे पढ़े-लिखे लोग यह बात नहीं समझते और खादीमें भी हिन्दू-मुस्लिम सवाल खड़ा करते हैं यह अफसोसकी बात है। वकील साहबका मुंह अुतर गया। वे कुछ भी अुत्तर दिये बिना सलाम करके चलते बने। मैंने अिमाम साहब जैसे तेजस्वी और विवेकशील स्पष्टवक्ताके दर्शन करके अपने भाग्यको सराहा और साथ ही खादीका और भी अधिक महत्त्व समझा।

अिमाम साहब अपने परिवारके साथ जीवनभर साबरमती आश्रममें रहे और वहीं सेवामय जीवन बिताते बिताते अुनका अवसान हुआ। अुनकी मृत्युके विषयमें बापूजीने यरवडा मंदिरसे ता १-५-१२ के पत्रमें आश्रमवासियोंको लिखा था अिमाम साहबका अकेला ही मुसलमान कुटुम्ब अनन्य भक्तिसे आश्रममें बसा। अुन्होंने अपनी मृत्युसे हमारे और मुसलमानोंके बीच न टूटने वाली गांठ बांध दी है। अिमाम साहब अपने आपको खिलाफतका प्रतिनिधि मानते थे और अुसी रूपमें आश्रममें आये थे।

अुनकी पुत्री अमीनाबहन और जामाता श्री गुलामरसूल कुरेशी (कुरेशीभाओ) से मेरा आज भी घनिष्ठ संबंध है। दोनों साबरमती आश्रममें अुसी मकानमें रहते हैं। जब कभी मैं अुधर जा निकलता हूं तो वे मुझे अपने पास ही ठहरने खान-पीने वगैराका आग्रह करते हैं। मुझे भी अैसा किये बिना संतोष नहीं होता। जिनकिने जाते ही कह देता हूं कि यहीं भोजन करूंगा। कभी अुधर जाकर भी अुनसे मिलना न हो तो पता चलने पर वे दोनों दुःखी होते हैं। अमीनाबहनके सेवाभावका मेरे मन पर बहुत असर रहा है जिसे भुलाया नहीं जा सकता। अुनके जैसी सेवाभावी बहन मैंने आश्रममें दूसरी नहीं देखी।

पंडित तोतारामजी सनाढ्यने आश्रममें ही रहते रहते अपना शरीर छोड़ा। और यह लिखते मुझे आनन्द होता है कि अन्तिम दिनोंमें शारीरिक अभावमें जब अुन्हें सेवा तथा देखरेखकी जरूरत हुअी तब अमीनाबहनने ठीक वैसे ही श्रद्धा तथा प्रेमसे अुनकी सेवा की जैसे अेक पुत्री अपने पिताकी करती है। जिससे मेरे हृदयमें अिस बहनके लिअे गहरा आदर है।

पंडित तोतारामजी साबरमती आश्रमकी खेतीके संचालक थे। अुन्होंने खेतीके लिअे कितना कष्ट सहन किया था जिसका सही पता अुनकी पोथीमें

मेरे २१ वर्ष नामक पुस्तक पढ़नेसे चल सकता है। अुनके साथ मेरा परिचय तो तब हुआ जब १९३१ में मैं आश्रममें खादीका विद्यार्थी था। अुसी समय बंगालमें तूफानके भारी प्रकोपसे लोग संकटमें पड़ गये थे। अुनकी मदद करनेके लिये अेक देशव्यापी अपील निकली। आश्रमके पास अैसी कोअी पूंजी तो थी नहीं जिसमें से दान देनेका अधिकार आश्रमको हो। अिसलिये यह तय हुआ कि आश्रमवासी अेक रोज मजदूरी करें और जो पैसा प्राप्त हो अुसे अुनकी सहायताके लिये भेजें। काम खेती और गोशाला विभागमें करना था। दूसरे दिन सब आश्रमवासी काममें लगे और पंडितजीने सबको काम बांट दिया। काम ठेकेसे दिया गया था मुझे अेक कुअेंकी टूटी हुअी दीवारके मलबेसे औंट साफ करके अलग चट्टा लगानेका काम मिला था। अुस रोजकी मेरी मजदूरीके १ रुपये १ आने हुओ। मैंने अितना जी-तोड़ परिश्रम किया कि अुसकी थकानसे दूसरे दिन मुझे बुखार आ गया। आश्रमके मंत्री श्री नारणदासभी गांधीने अिसके लिये मुझे मीठा अुलाहना भी दिया था। पंडित तोतारामजी अुत्तरप्रदेशके फैजाबाद जिलेके थे। अुनकी और मेरी भाषा अेक थी अिसलिये भी अुनसे परिचय करनेमें मुझे देर न लगी। वे ठेठ देहाती हिन्दी बोलते थे। जब सन् १९३१ के आन्दोलनके समय बापूजीने सरकारको सौंपनेके लिये आश्रम छोड़ दिया और सरकारने भी आश्रम पर कब्जा नहीं किया तब अुसकी रक्षा पंडितजीने की थी।

अुनकी पत्नी श्री गंगाबहनकी मृत्यु पर बापूजीने लिखा था कि "गंगाबहनने आश्रमको अपनी सेवासे शोभायमान किया है। अुनके स्मरणोंको याद करते करते अब भी मैं थका नहीं हूं। वह लगभग निरक्षर होने पर भी ज्ञानी थीं। जो बच्चे अुन्हें मिले अुनकी सार-संभाल अुन्होंने अपने बच्चोंकी तरह की। अुन्होंने किसी दिन किसीके साथ तकरार की हो या किसी पर वे नाराज हुअी हों अिसकी जानकारी मुझे नहीं है। अुनको न तो जीनेका मोह था न मरनेका भय था। अुन्होंने हंसते-हंसते मृत्युको गले लगाया। अुन्होंने मरनेकी कला हस्तगत कर ली थी।

पंडित तोतारामजी कुशल किसान तो थे ही साथ ही बड़े सरल प्रेमी मिलनसार, लेकिन अपनी बात पर डटे रहनेवाले थे। वे कबीरको अपना गुरु मानते थे और अुनके भजन बड़ी श्रद्धा और प्रेमसे गाया करते थे। पंडितजीका कहना था कि दिन कामके लिये और रात भगवानके भजनके लिये है। तब

अुस ही वे रातका बहुतसा समय भगवानके भजनमें बिताते थे। अुनका कहना था कि काम पूरा करनेके बाद मेरे चित्त पर दिनके कामका कोअी भार या दबाव नहीं रहता है। मैं रातको बिलकुल मुक्त रहता हूं। जब वे भजन गाते तो आसपासका सारा वातावरण सात्त्विक आनन्दके भावोंसे भर जाता था। अेक भजन 'सभी संत कहें सुन देशकी मोह नदीसे पार करो' गाते गाते वे आत्म-विभोर हो जाते थे। जब मेरे मनमें किसी प्रकारकी बेचैनी होती तब अुनके पास जानेसे मनको आराम मिलता। वे कहते "अरे मना रहे दिल किनारेसे कभी तो जरूर जायेगी। तुम तो क्षत्रिय हो और फौजमें भी तो निशाना लगाना सीखा है। तो संयमकी कमान लेकर विचारके तीरोंसे अिन संसारके काम क्रोध लोभ मोह मद मत्सर पशुओंके सीनेमें ऐसे तानके मारो जो आरपार निकल जायं। तनिक हिम्मत क्यों हारते हो? बापूजीसे और सीखना ही क्या है। वा डोकराके पास और है ही तो क्या। बस रामनामकी लूट है लूटी जाय तो लूट, अन्तकाल पछतायगो प्राण जायंगे छूट। बगलमें ठोसा और भगवान्‌का भरोसा। वा मन रूपी मक्काकी रोटी खूब मसल डारो और वामें भगवान भजनको गुड़ डारि दो। अेक लो नामको भी छोड़ दो। बस मलीदा बनायके कालमें दबाय ल्यो। जब काम क्रोध लोभ मोहकी भूख सतावे तब अेक लो काढ़िके खाय ल्यो। जब थको तो सत्संगरूपी वृक्षकी छायामें थोड़ो सो विश्राम कर ल्यो। रामनामकी कथा रूपी पानी पीते चलो। और तुम्हें का चाहिये?" जब पंडितजी अपने अिन देहाती मंत्रोंका अुच्चारण करते करते गद्गद हो जाते तब मैं भी चित्रवत् अुनके अिन अमृत-वचनोंका पान करके आत्म-विभोर हो जाता था।

बापूजीके सिद्धान्तोंको पंडितजीने समझ-बूझ कर अपने जीवनमें अुतारा था। अुनके जीवनमें लेशमात्र भी आलस्य या अिधर-अुधरकी किसी चमक-दमकका दाग नहीं था। अुनका मन स्फटिक जैसा निर्मल था। आश्रमके किसी प्रकारके आपसी मनमुटावसे अुनका कोअी संबंध नहीं रहता था। वे भले और अुनका काम भला। जब मैं बापूजीके साथकी पुण्यस्मृतियोंका स्मरण करता हूं तो पंडित तोतारामजीके मेरे प्रति पुत्रवत् स्नेहको कैसे भूल सकता हूं?

पंडितजीने आखिरकी घड़ी तक आश्रमकी अमूल्य सेवा की और अपने क्षणभंगुर शरीरको भी आश्रमकी ही पवित्र भूमिको अर्पण कर दिया।

दान से अधिक दान कर डाला। अिस भावनासे मैं पंडितजीके चरणोंमें अपनी नम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

५. नाथजीके बोध

साबरमती आश्रममें आध्यात्मिक दृष्टिके लोगोंसे परिचय करनेकी मेरी सहज वृत्ति रहती थी। अैसे परिचयोंमें से प्रमुख परिचय पूज्य केदारनाथजीका हुआ। पूज्य नाथजी आश्रममें कभी कभी आया करते थे। पूज्य किशोरलालभाअी रमणीकलालभाअी सुरेन्द्रजी गंगाबहन वैद्य अित्यादि अुनके शिष्य हैं। मेरे आश्रममें रहते हुअे पूज्य नाथजी जब पहली बार आये तब सुरेन्द्रजीने अुनसे मेरा परिचय कराया और अुनके सत्संगके लिअे भी प्रेरित किया। मैं समय मांग कर अुनके पास जाकर अपनी आध्यात्मिक शंकाओंका निवारण करने लगा। अिसकी अति संक्षिप्त झांकी मैं पाठकोंको यहां कराता हूं।

प्रश्न तृण सम सिद्धि तीन गुण त्यागी अिसका आप क्या अर्थ करते हैं?

अुत्तर अिसका अर्थ अैसा नहीं समझना चाहिये कि किसी भी दशामें तीन गुणोंका नितान्त अभाव हो जाता है। यदि अैसा हो जाय तो वह अवस्था प्राप्त हो जाय। अिसलिअे त्रिगुणातीतका अर्थ तमोगुण और रजोगुणका अत्यन्त कम होना और सत्त्वगुणकी प्रधानता होना अितना ही है।

पूज्य नाथजीके सामने मैंने अपनी सारी दुर्बलतायें अर्थात् मनकी चंचलता क्रोध अभिमान अपमानकी असहिष्णुता किसी संस्था या व्यक्तिकी अधीनतामें न रह सकना नम्रताकी कमी अित्यादि ब्यौरेवार स्पष्ट शब्दोंमें रखनेका प्रयत्न किया तथा अुनसे कभी आध्यात्मिक प्रश्न अिस आशयके किये कि अीश्वर-प्राप्ति किस अवस्थाका नाम है अुसका साधन क्या है शान्तिमय जीवन जीनेकी कला कैसे हाथ लग सकती है, अित्यादि। अुनके अुत्तरोंका सार यहां मेरी बुद्धिके अनुसार देता हूं। पूज्य नाथजीका ज्ञान तो अगाध है। मेरी अिन पंक्तियोंसे कोअी पाठक वाद-विवाद अुत्पन्न न करें। केवल सामान्य ज्ञानके हेतुसे ही यहां मैं अुसे पाठकोंके समक्ष रखता हूं।

अीश्वर कोअी अैसी शक्ति नहीं है जिसे जानकर ही मनुष्य पूर्ण हो जाता हो। परन्तु यह अेक प्रकारका ज्ञान है। अीश्वरके साथ तद्रूप हो जानेकी कल्पनासे मानव-समाजका कल्याण होता हो अैसा भी नहीं है। जो लोग

अीश्वरको सर्व-शक्तिमान तथा सर्वव्यापी तो मानते हैं लेकिन पाप करनेसे नहीं चूकते अैसे लोगोंका कल्याण कैसे हो सकेगा? अीश्वरकी कल्पना और अुसकी प्राप्तिके नाम पर बहुतसा दम्भ और स्वार्थ दुनियामें चलता है। अीश्वर जगतको चलानेवाला परम तत्त्व है। अुसकी प्राप्तिकी या अुसमें तद्रूप होनेकी आवश्यकता ही क्या है? अीश्वरमें मिलकर जन्म-मरणसे मुक्त हो जाना अुसके स्वरूप-चिन्तनमें ही मग्न रहना ये दोनों बातें केवल कल्पनाके आधार पर खड़ी हैं। जो वस्तु या तत्त्व प्रत्यक्ष अनुभव या ज्ञानमें न आ सके अुसकी कल्पना करना अुसके लिअे प्रयत्न करना व्यर्थ ही शक्तिका व्यय करना है। जो ज्ञान पुस्तकोंमें अीश्वरका प्रतिपादन करता है वह कल्पनासे लिखा गया है। अीश्वर वह तत्त्व है जिससे जगतको चेतना मिलती है। अुसका भले-बुरेसे कोअी सम्बन्ध नहीं है। जगतका कार्य व्यवस्थित चले जिस तरहका हमारा जीवन होना चाहिये। जगतका कार्य तभी व्यवस्थित चल सकता है जब प्रत्येक मनुष्य अपना अपना कार्य ठीक रीतिसे करता रहे। काम क्रोध मोह लोभ इत्यादि — जो मनुष्यके प्रकृति-धर्म हैं — मर्यादामें रहें। अुनका समूल नष्ट होना असंभव है। अुनमें शुद्धि लानेका प्रयास करना चाहिये और अुन्हें सात्त्विक बनानेका भी प्रयत्न करना चाहिये। जैसे क्रोध दूसरेकी रक्षाके लिअे किया जाय तो वह सात्त्विक माना जायगा। कोअी भी गुण जब केवल स्वार्थके लिअे होता है अथवा मर्यादासे अधिक होता है तब हानि करता है। वस्तुका मूल्य अुसके अुपयोगमें है। जिस अन्न-जलसे शरीर पुष्ट होता है अुसीके अमर्यादित सेवनसे मृत्यु तक हो जाती है। विवेकसे काम लेना चाहिये। खुद कमसे कम कष्ट अुठाओ और दूसरोंको देना पड़े तो कमसे कम कष्ट दो। दूसरोंके लिअे अधिकसे अधिक परिश्रम करो। अपने प्रेमका घेरा सदा बढ़ाते रहो। किसीके साथ हुअे प्रेमको कम न होने दो अुसे बढ़ाते ही रहो। जैसे हम अपने शरीरकी चिन्ता रखते हैं वैसे ही कुटुम्बकी ग्रामकी देशकी मानव-जातिकी प्राणीमात्रकी जड़ चेतन संपूर्ण जगतकी यथार्थ चिन्ता करना अुसके साथ अेक साधना तथा अुसका रक्षण करना हम सीख जायँ तो आज जगतमें अव्यवस्थाके कारण जो दुःख व्याप्त है वे टल जायँ। दिनमें अेक या दो बार ही नहीं बल्कि प्रतिक्षण अीश्वरको सामने रखकर विचारपूर्वक बरताव करना चाहिये। यदि कोअी गलती हो जाय तो तुरन्त स्वीकार कर लेना चाहिये। और अैसा प्रयत्न करना चाहिये जिससे कभी

अैसी भूल न होने पावे जिससे फिर बादमें पश्चात्ताप हो। जीविकाका साधन शुद्ध, स्वाश्रयी और जगतके लिअे कल्याणकारी होना चाहिये। हम अपने अुद्योग द्वारा जो कुछ अुत्पन्न करें अुससे जगतका पोषण व श्रेय होना चाहिये। जैसे अन्न, वस्त्र, औषध, औषधालय इत्यादि। किसी प्रकारके मादक द्रव्य जैसे तम्बाकू, अफीम, शराब इत्यादि अुत्पन्न न करें।

ज्यों ज्यों सद्‌गुणोंकी वृद्धि होगी त्यों त्यों दुर्गुण मिटते जायेंगे। इसलिअे सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अपरिग्रह, प्रामाणिकता, क्षमा, करुणा, मैत्री, सरलता आदि सात्त्विक गुणोंकी वृद्धि करनी चाहिये।

गीताके निष्काम कर्म पर पूज्य नाथजीने विशेष भार दिया और कहा अपने कार्यसे जो संतोष मिल जाय वही सच्चा सुख है। जिसकी तुलनामें आत्मानंद, परमानन्द वगैरा सब कोरी कल्पनायें हैं। अपनेमें आकर्षण-शक्ति पैदा करनेकी आवश्यकता है। अुन्होंने नेपोलियन बोनापार्टका छूटती तोपके पीछे गहरी नींद लेनेका अुदाहरण देकर मनको अेकाग्र करने पर जोर दिया और कहा, समाजके संपर्कमें रहकर अपनी मनोवृत्तियां अंकुशमें रहें तब समझना चाहिये कि हमारा कुछ विकास हुआ है। अेकान्तमें शान्त रहना कोअी पुरुषार्थ नहीं है। लेकिन समाजमें मर्यादाओंमें रहना चाहिये। जो कार्य अंगीकार किये हों अुनको ठीक तरहसे पूरा करना चाहिये।

दूसरेकी बातका अच्छेसे अच्छा अर्थ लेना चाहिये। थोड़ीसी बात पर नाराज होकर किसीसे मिलनेवाले लाभसे वंचित हो जाना भूल है। गलतफहमी हो तो बात करके अुसे दूर कर लेना चाहिये।

सुबह शाम स्वस्थ चित्तसे बैठकर जिस तत्त्वसे हमें चेतना मिलती है अुस अीश्वर-तत्त्वका विचार करना चाहिये। अुसी तत्त्वसे मुझे शक्ति मिले मेरी शुद्धता बढ़े, मेरे कुसंस्कारोंका नाश हो अैसे शुभ संकल्प करने चाहिये। अपनी मनोवृत्तिका निरीक्षण करना चाहिये। और जो कमी ध्यानमें आये अुसको दूर करनेका निश्चय करना चाहिये। जिस प्रकारकी प्रार्थनाकी परम आवश्यकता है।

सन् १९ २में अेक प्रकारकी निराशा छाअी हुअी थी तब मेरे मनमें (पूज्य नाथजीके मनमें) अैसा विचार आया कि अैसी शक्ति प्राप्त की जाय जिससे राष्ट्रका कल्याण हो, मानव-समाज सुखी और व्यवस्थित हो। जिस अुद्देश्यसे घर छोड़कर मैं साधनामें लग गया। हिमालयमें तथा अन्य स्थानोंमें

कुछ ध्यान-धारणा तथा वेदान्तका अभ्यास किया। परन्तु अुससे कुछ विशेष लाभ नहीं हुआ। कभी साधुओंके पास अभ्यास किया। फिर जब प्राप्त किये हुओ ज्ञान तथा अभ्यासकी नींव पर मैंने स्वतंत्र विचार करना शुरू किया तब मुझे समाधान हुआ। मैंने जो समझा अुसका दूसरोंके साथ विचार किया। लोगोंको मेरा विचार पसंद आया। अब जिन लोगोंके साथ संबंध हो गया है अुनके आध्यात्मिक समाधान तथा सामाजिक कार्यके लिअे जिधर-अुधर जाता हूं। किसी खास प्रकारका अुद्देश्य नहीं है।

* * *

धीरे-धीरे पूज्य नाथजीके साथ मेरा संबंध जितना गाढ़ हो गया कि बापूजी मुझे नाथजीका आदमी समझने लगे। अब जब कभी मुझे समय मिलता है मैं अुनके पास जाकर दस बारह दिन रह आता हूं। मुझे बापूजीके पास टिकाये रखनेमें पूज्य नाथजीका बहुत हाथ रहा है। जब कभी मैं बापूजीके सामने अपना चले जानेका विचार प्रगट करता तब वे यही कहते जाओ नाथके पास। और मैं चला भी जाता। थोड़े ही दिनोंमें नाथजी मुझे समझा-बुझाकर बापूजीके पास भेज देते और कहते कि तुम्हारे लिअे बापूजीके सान्निध्यसे अधिक अच्छा स्थान और कहीं नहीं है। और अुधर बापूजीके समक्ष मेरी यह वकालत करते कि जिसका रोष क्षणिक होता है और आपके पास रहनेसे ही जिसकी शक्तिका सही अुपयोग हो सकेगा। पूज्य नाथजीका स्वभाव बड़ा ही प्रेमल है। अुनके अंतरमें भक्तिका झरना सतत बहता रहता है। प्रातःकालमें जब वे तुकारामके अभंगोंमें मग्न होते हैं और ज्ञानेश्वरीकी ओवियोंकी झड़ी लगाते हैं अुस समय महात्मा तुलसीदासजीकी यह चौपाओी याद आ जाती है

सत संगति मुद मंगल मूला।
सोअी फल सिधि सब साधन फूला।।

वे बहुत कम बोलते हैं और बहुत कम लिखते हैं। लेकिन जो कुछ वे बोलते और लिखते हैं वह 'मर्हाह सत्य प्रिय वचन विचारी' अर्थात् सत्य और प्रिय तथा विवेकयुक्त बोलते और लिखते हैं। अुनके जिन्हीं विचारोंमें से 'विवेक और साधना'* नामक पुस्तककी रचना हुअी है, जो आध्यात्मिक

* नवजीवन प्रकाशन मंदिरसे प्रकाशित। कीमत रु० ४ डाकखर्च रु० १.१९।

साधकों और विचारकोंके लिअे बड़ी ही मनन करने योग्य है। अुनका सहज झुकाव निवृत्ति-मार्गकी ओर है। लेकिन साथियोंकी मुश्किलें सुलझानेकी रोगियोंकी सेवा करनेकी और आजकल व्यवहार-शुद्धिकी बड़ी प्रवृत्तिकी जिम्मे-दारी अुन्होंने अपने सिर पर ले रखी है। पूज्य किशोरलालभाओी जैसे बुद्धिशाली अपने वैराग्यके हथियार जमीन पर रखकर अन्तिम श्वास तक सेवामय प्रवृत्तिमें डूबे रहे अुसमें पूज्य नाथजीका ही प्रभाव काम करता था।

* * *

बापूजीके साथ खादी-विद्यार्थियोंके प्रश्नोत्तर

जिस समयकी यह बात है अुस समय बापूजी आश्रममें नहीं रहते थे। बारडोली या बाहर रहते थे। जब कभी अहमदाबाद आते थे तो गुजरात विद्यापीठमें ठहरते थे। आश्रममें केवल बीमारोंको देखनेके लिअे ही आते थे। अेक दफा आये तब हम खादीके विद्यार्थियोंको मंत्रीजीके आग्रहसे अुन्होंने समय दिया। बापूजीने कहा कि कुछ पूछना हो तो पूछो। श्री अम्बालालभाओी[1] ने प्रश्न पूछा आप आसमानी और सुल्तानीकी बात बार बार किया करते हैं। आसमानीका अर्थ क्या है?

बापूजीने कहा "अंतरात्माकी आवाज ही आसमानी है। ज्यों-ज्यों तुम बाहरकी आवाजसे मनको हटाते जाओगे त्यों-त्यों तुम्हें आत्माकी आवाज सुनाओी पड़ेगी। समझ लो कि सारंगीकी आवाज मधुर होने पर भी ढोलकी खराब आवाजमें नहीं सुन पड़ती। अैसे ही अंतरकी आवाज सच्ची और मधुर होने पर भी सांसारिक विषयोंकी ढोलरूपी आवाजमें नहीं सुन पड़ती। बस यही आसमानीका अर्थ है। विषयोंसे मनको हटाते जाओगे तो आसमानी सुननेकी शक्ति पैदा हो जायगी। तुम अपनी निर्दोषतासे दूसरोंके दोषोंको दूर कर सकते हो।

अेक भाओीने प्रश्न पूछा क्या आप नाटक पसंद करते हैं?

बापूजीने कहा "यदि समभावबुद्धिसे किया जाय तो बच्चोंके खेलके बतौर करनेमें मैं कोओी हानि नहीं समझता।

---

१ श्री अम्बालालभाओी सौराष्ट्रके थे। आश्रममें आश्रमवासीके रूपमें रहकर खादी-विद्यालयमें खादी-शिक्षकका कार्य करते थे।

अुसी दिन आश्रममें अेक भाअीने सांप मारा था।[1] बापूजीसे अेक आश्रमवासीने पूछा कि क्या आश्रममें अैसा कर सकते हैं? बापूजीने कहा — हरगिज नहीं। परन्तु मैं रामदास[2] को दोषी नहीं कह सकता। क्योंकि मेरे मनमें सांपके लिअे अितनी दया नहीं है। सांपके काटनेसे किसी बच्चेकी मृत्यु हो जाने पर मुझे जितना दुःख होता अुतना सांपके मरनेसे नहीं हुआ। यदि मुझे सांपके मरनेका भी अुतना ही दुःख होता जितना बच्चेके मरनेसे होता, तो मैं रामदाससे कह देता कि तुम आश्रमसे भाग जाओ। परन्तु मैं भी अभी सांपसे डरता हूं फिर तुमको निर्भय कैसे कर सकता हूं? हां अैसा बनना जरूर चाहता हूं। वैसे तो हम और सांप सब संहाररूपी बड़े सांपके मुखमें पड़े हैं जिसको काल या मृत्यु कहते हैं। अैसी अवस्थामें हम किसीको क्यों मारें? मैं सांपको दुष्ट नहीं कह सकता क्योंकि अुसका तो स्वभाव ही अैसा है। हां मनुष्य दुष्टता करता है तो अपने शुद्ध स्वभावको छोड़ देता है। तुम अहिंसा और सत्यको समझो। जाओ जाओ।

विद्यार्थियोंके सामने प्रवचन करते हुअे बापूजीने कहा —

यह आश्रम ब्रह्मचर्याश्रम है। ब्रह्मचर्यका अर्थ है सब अिन्द्रियोंको वशमें करके ब्रह्ममें रमाना। यहां पर जवान लड़के-लड़कियां स्त्री-पुरुष सब रहते हैं। अिस विषयमें मुझसे कअी मित्रोंने कहा था कि अैसा कैसे हो सकता है कि स्त्री-पुरुष अेक जगह रहकर ब्रह्मचर्यका पालन कर सकेंगे। परन्तु मैंने तो अिस जोखिमको अुठानेका साहस किया। सफलता भी मिली है। मैंने

---

१ आश्रम पहले १९१५ में साबरमती नदीके पश्चिमी तट पर कोचरब नामक गांवके समीप बना था और बादमें साबरमती सेन्ट्रल जेलके समीपकी भूमि पर बनाया गया जो अब तक विद्यमान है और हरिजन-आश्रमके नामसे प्रसिद्ध है। पहले यह स्थान विकट जंगलमें था। अब तो वहां भी काफी बस्ती हो गअी है। यहां सांप अकसर निकला करते थे। सामान्य नियम यह था कि सांप पकड़नेके लिअे लाठीके अेक सिरे पर अेक छेद करके अुसमें रस्सी डालकर अेक फांस बना ली जाती थी। अुससे सांपको बिना मारे पकड़ लिया जाता था और आश्रमसे दूर चन्द्रभागा नदीके विस्तारमें छोड़ दिया जाता था। बहुधा अैसा ही होता था। सांपके मारे जानेकी यही अेक अनूठी घटना थी।

२ पूर्व बालवेषका अेक बाली-विद्यार्थी।

जिसका प्रयोग सबसे पहले दक्षिण अफ्रीकामें किया था। लेकिन वहां जितनी सफलता नहीं मिली थी जितनी यहां मिली है। स्त्रियोंके अभावमें कोओी पुरुष नहीं जा सकता। बीमार अवस्थामें सेवाके लिओ यदि मुसके संबंधी आना चाहें तो आ सकते हैं। जिस नियमका सब लोग स्वयं पालन करें और जो अैसा न कर सकें वे घर चले जायें तो मुनके लिओ और आश्रमके लिओ अच्छा होगा। अगर कोओी दोष हो तो सरलतासे बता दो।

मुस समय मैंने भी बापूजीसे कुछ पूछा था। आश्रममें मेरा मन नहीं लग रहा था और कुछ घरकी चिन्ता भी थी। मन यह सब बात बापूजीके सामने रखी। बापूजीने कहा "घरका मोह छोड़ो और निश्चिन्ततासे यहांके काममें ओेकरूप हो जाओ तो मुझे विश्वास है कि तुम्हें अवश्य शान्ति मिलेगी। यहांकी हवामें कोओी अैसी चीज जरूर है जो शान्ति देती है, अैसा मेरा खुदका अनुभव है। अब तो मैंने आश्रम छोड़ दिया है। लेकिन बाहर घूमते हुओे मुझे जब कभी अशान्ति मालूम होती थी मैं शान्तिके लिओ यहां दौड़ आता था और मुझे शान्ति मिलती थी।

१९३२का आन्दोलन और जेलयात्रा

बापूजी राअुंड टेबल कान्फरेन्समें जायें या न जायें जिसका निर्णय वािअसरॉयसे मिलने पर ही होनेवाला था। जिसलिओ बापूजी शिमला जा रहे थे। मुनके पास समय बहुत कम था। जल्दी समय दस मिनिटके लिओ वे आश्रममें आये। हम सब आश्रमवासियोंने भारी दिलसे प्रणाम करके मुन्हें विदा दी।

शिमलामें वािअसरॉयके साथ चर्चा होनेके बाद मुनका राअुंड टेबल कान्फरेन्समें जाना तय हुआ और वे सीधे शिमलासे बम्बओी गये। वहींसे विलायत रवाना हुओे। राअुंड टेबल कान्फरेन्समें जो चर्चा होती थी वह और खास कर बापूजीके भाषण हम लोग बड़ी मुत्सुकतासे व ध्यानपूर्वक पढ़ते थे। जिस तरहसे राअुंड टेबल कान्फरेन्सका अंत हुआ और समाचारपत्रोंमें जो खबरें आने लगीं मुनसे लगा कि बापूजी आते ही पकड़ लिये जायेंगे। बापूजी ४ जनवरीको सबेरे वर्किंग कमेटीके साथियोंके साथ पकड़ लिये गये।

यह नये प्रकारके आन्दोलनकी चेतावनी थी। आश्रममें खलबली मची। प्रातःकी प्रार्थनाके बाद आश्रमके मंत्री नारणदासभाओी गांधीने कहा कि जिन भाओी-बहनोंको आन्दोलनमें शामिल होना हो वे जा सकते

है, पर जो शामिल न होना चाहें वे यहां रहनेका पक्का निश्चय कर लें जिससे कि आश्रमके कामकी वैसी व्यवस्था की जा सके और यहां रहनेवालों पर निश्चित कामकी जिम्मेदारी सौंपी जा सके। जिसका जो विचार हो वह मुझे आकर कह दे। सत्याग्रहके लिये लोग अेक अेक करके जाने लगे। आश्रम धीरे धीरे खाली होने लगा। हिन्दी-भाषियोंकी अेक टोली अजमेर जा रही थी। अुसमें चलनेका अेक भाओीने मुझे अिसरार किया। लेकिन अुस समय आश्रम छोड़नेका मेरा अिरादा नहीं था और सत्याग्रहमें शामिल होना हो तो गुजरातमें ही होनेका निश्चय था। अिसलिये मैंने अिनकार कर दिया। मैंने अेक दो दिन तो मंत्रीजीसे कुछ भी नहीं कहा। श्री सुरेन्द्रजी मामाजी विश्राम तथा अुनकी धर्मपत्नी महालक्ष्मी बहन कराडी सत्याग्रहमें जानेको निकले तो मेरे मनमें डांडी-कूचमें शामिल न होनेका जो असंतोष था वह जाग्रत हुआ और मैंने मंत्रीजीको कराडी जानेका अपना अिरादा बताया। अुन्होंने बड़े प्रेमसे मुझे जानेकी अिजाजत दी। मैं सुरेन्द्रजीके साथ कराडीके लिये रवाना हुआ। हम लोग नवसारी स्टेशन पर अुतरे और हरिजन-आश्रममें पहुंचे जिसे हरिवल्लभभाओी और खत्रेरिया चला रहे थे। हमने आश्रमको हमारी छावनी बनानेका और कराडीमें सत्याग्रह करनेका तय किया। कुछ बहिनें और भी आ गओीं। हमने बारी बारीसे सत्याग्रही टोलियां जायें अैसी योजना बनाओी। नवसारी बड़ौदा राज्यमें था अिसलिये वहां तो गिरफ्तार होनेका खतरा ही नहीं था। लेकिन रेलवे लाअिन पार करने पर जहां अंग्रेजी राज्यकी हद लगती थी वहां कराडी पहुंचनेसे पहले पकड़े जानेका डर था। अिसलिये हमने रातमें कराडी पहुंचनेका निश्चय किया।

नवसारीसे कराडी ८–९ मील दूर है। हम लोग रातको ९ बजे नवसारीसे निकले। हमारे साथ महालक्ष्मीबहन मधुबहन शकरावती खंडेरिया शान्ताबहन पटेल और शीलावतीबहन आदि थीं। अंधेरा था और रास्ता भी अूबड़-खाबड़ था। शान्ताबहनके पैरमें मोच आ जानेसे अुनको कराडी ले जानेमें बड़ी कठिनाओी हुओी। हमने रातको कराडी पहुंचनेकी सूचना दे रखी थी। वहां लोग हमारी राह देख रहे थे। हम लोग जैसे तैसे सबेरे ४ बजे कराडी पहुंचे। बहनोंने चाय ली। और मैंने बापूजी १९३० के नमक-सत्याग्रहके समय जिस कुटियामें ठहरे थे अुसके दर्शन किये। बड़ी प्रसन्नता हुओी। यह अप्रैलकी चौथी ९ या ११ तारीख रही होगी।

जमना तो रातको ही अेकत्र हो सकती थी। जिसमें लोग खेतों पर कामके लिये चले जाते थे। शामको जुलूस निकालनेका तय हुआ जिसका नायक मैं होनेवाला था। नोटिसमें माधवजी भाअीने मेरे फौजमें होनेका भी अुल्लेख किया था जिससे पुलिसने अधिक सतर्कतासे तैयारी की थी। शामको अंधेरा होने पर १ -४ बच्चों और जितनी ही माअियोंका जुलूस निकला। पुलिसकी दो लारियां पहुंच चुकी थीं। पुलिसवालोंने अैसा मोरचा बनाया कि जुलूस पर आगे और पीछे दोनों तरफसे लाठी चलायी जा सके। कुछ पुलिसवाले आगे खड़े हो गये और कुछ रास्तेके दोनों तरफकी गलियोंमें छिपकर बैठ गये। जब जुलूस वहांसे गुजरा तो दोनों तरफसे लाठियां चलने लगीं। मैं और महालक्ष्मीबहन आगे चल रहे थे। मेरे हाथमें झंडा था। जब लाठी चलने लगी तो लोगोंको पता ही नहीं चला कि किधरसे लाठीचार्ज हो रहा है। दोनों तरफ कांटोंकी बाड़ थी जिसलिये लोग जिधर-अुधर जा भी नहीं सकते थे। लोगोंको काफी चोटें आयीं। और जुलूस तितर-बितर कर दिया गया। मुझे हलकी मार मारकर भगानेकी कोशिश की गयी। लेकिन मैं अपने स्थान पर ही खड़ा रहा। तब पुलिसने मुझे पकड़ कर लारीमें बैठा दिया। मैंने समझा कि मैं पकड़ लिया गया हूं। लेकिन जब सारा जुलूस बिखर गया तब पुलिस लारीके पास आयी।

पुलिसका मुखिया बरजोरजी नामक थानेदार था जो क्रूर और शराबी था। अुसने मुझे नीचे अुतारा और पुलिसके घेरेमें खड़ा करके मारनेका हुक्म दिया। चारों ओरसे मुझ पर डंडोंकी मार पड़ने लगी। मेरी तो आंखें बन्द ही हो गयीं। अेक लाठी सिर पर भी पड़ी जिससे मेरा सिर फूट गया। मैं चक्कर खाकर बेहोश जमीन पर गिर पड़ा तब अुस नर-राक्षसको भी दया आयी और अुसने पुलिसको मारनेसे रोका। मुझे कुछ देरमें होश आया। आंखें खोलकर देखा तो पुलिस मुझे घेरे खड़ी थी। मुझे होशमें आते देखकर अुसने मुझे भाग जानेको कहा। मैंने कहा कि जब तक आप लोग यहां हैं तब तक मैं हटनेवाला नहीं हूं। आप लोगोंको सूझ नहीं रहा है कि आप पापी पेटके लिये कितना द्रोह कर रहे हैं। मुझे वहीं छोड़कर पुलिस लारीमें बैठकर चली गयी। मैं बड़ी कठिनाअीसे अुठा। लाठी मेरी आंखके अूपर लगी थी और वहांसे खून बह रहा था। अुससे सारा शरीर कुचला गया था। रास्ता भी सूझ नहीं रहा था। मैं थोड़ी दूर

चला कि जितनेमें कराचीके जो लोग मुझे ढूंढ रहे थे वे आ गये। जितनी मार लगने पर भी मुझमें उत्साह भरा था। मैंने कहा कि 'क्षमा' की जाय। लेकिन लोग मुझे अेक दवाखानेमें ले गये जहां मेरे घावोंकी मरहम-पट्टी की गयी। उसके बाद मुझे मणिभाभीके घर ले जाया गया। वहां ज्यों ही मुझे बिस्तर पर सुलाया गया मैं फिर बेहोश हो गया।

जुलूसके साथ पीटा जाना अेक बात थी और अकेलेमें जिस तरह निर्दयतासे पीटा जाना जिससे भीतरी चोट पहुंचे बिलकुल दूसरी बात थी। जीवनमें पहली ही बार मुझ पर इतनी सख्त मार पड़ी थी लेकिन फिर भी मेरे मनमें शांति थी और मैं उत्साहसे भरा था। यह बापूजीकी तालीमका ही फल था।

श्री मणिभाअीकी दो पत्नियां थीं। दोनोंने रातभर मेरे शरीरकी सेंक की। दर्द असह्य था। परन्तु सेंकसे मुझे बड़ा आराम मिला। दूसरे दिन मुझे नवसारी ले जाया गया। वहां डॉ. खंडुभाअीने मेरा अिलाज किया। वहां कुछ दिन मुझे अस्पतालमें रहना पड़ा।

अच्छा होनेके बाद मैं फिर सुरेन्द्रजीके साथ कराची गया। महिलायें सब गिरफ्तार हो चुकी थीं। श्री जयरामजीको गिरफ्तार करके दो सालकी कैदकी सजा दी गयी। हम बापूजीकी कुटियामें ठहरे। जब पुलिसने यह सुना तो पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट जो अपनी क्रूरताके लिये प्रसिद्ध हो चुका था वहां अपने दलको लेकर आया और हमें धमकी देने लगा। अपमान और तिरस्कारके स्वरमें वह बोला "तुम सब बेकार लोग हो। वल्लभभाअी वकीलके नाते कामयाब नहीं हुअे अिसलिये वे आन्दोलनमें शरीक हो गये। गांधी अफ्रीकासे अपने देशमें आकर अच्छी कमाअी करके सुखसे नहीं रह सके अिसलिये अब वे बड़े नेता बन गये हैं और स्वराज्य लेनेकी बात कर रहे हैं। सिर्फ जवाहरलालने त्याग किया है और उनमें थोड़ी बुद्धि है। दूसरे सब धोखेबाज हैं दिखावा करनेवाले हैं। फिर मेरी ओर मुड़कर उसने कहा तुम यहां क्यों आये हो? यहांसे चले जाओ वरना मैं तुम्हारी हड्डी-पसली तोड़कर समुद्रमें फेंक दूंगा।" मैं हंसा और बोला आपमें कोअी विवेक नहीं है और आप बड़े बड़े नेताओंके बारेमें बेहूदी बातें करते हैं। आप भी मार कर मुझे पीट सकते हैं। मैं यहां अपनी हड्डियां तुड़वाने ही आया हूं।

अिसके बाद पुलिस सुपरिन्टेण्डेण्ट चला गया। मैं गांवमें अुन महिलाओंको देखने गया जिन्हें जुलूसमें चोट आअी थी। करीब १ महिलायें घायल हुअी थीं। अुनमें से करीब १५ अभी भी बिस्तरमें थीं। जब मैं अुनके कष्टके लिअ हमदर्दी दिखाने लगा तो अुन्होंने कहा — अिसकी क्या परवाह है? हमारे पति भी तो हमें कभी कभी मारते हैं। और फिर हमने अपने देशके खातिर मार खाअी है। हमें अिसके लिअ गर्व है। मैं अुन स्त्रियोंकी यह भावना देखकर बहुत खुश हुआ। अेक विधवा बहनने हमें अपने घरमें ठहराया और खाना खिलाया।

अुसी गांवमें श्री चाचाकाका भी थे। अुन्होंने सरकारको जमीन महसूलकी अेक पाअी भी नहीं दी थी हालांकि अुनकी सारी जमीन जब्त कर ली गअी थी। जब जब्त की गअी जमीन स्वराज्य मिलनेके बाद अुन्हें लौटाअी गअी तो अुन्होंने अपनी जायदाद वापिस लेनेसे अिनकार कर दिया। आजकल अुनकी अुस जमीन पर अेक खादी-केन्द्र चल रहा है। श्री चाचाकाका अुन थोड़ेसे सत्याग्रहियोंमें से थे जिन्होंने सरकारके साथ कभी समझौता नहीं किया। अैसे अडिग और दृढ़ सत्याग्रहियोंके कारण ही भारत स्वतंत्रता प्राप्त कर सका है। श्री चाचाकाकाने जायदाद जब्त हो जानेके बाद बुनाअी-काम करके अपना निर्वाह किया था।

दो दिन बाद १२ फरवरीको मैं और सुरेन्द्रजी कराड़ीके अन्य कअी लोगोंके साथ फिर पकड़ लिये गये। जलालपुरकी अदालतमें हम पर मुकदमा चला जिसमें मुझे ढाअी सालकी और सुरेन्द्रजीको दो सालकी कैदकी सजा दी गअी। कुछ समय तक हमें सूरतकी सब-जेलमें रखा गया। फिर साबरमती जेलमें ले जाया गया। अुसके बाद हमारी बदली दूसरे २ राजनीतिक कैदियोंके साथ बीसापुर कैम्प जेलमें हो गअी। बीसापुरकी आबहवा अितनी खराब थी कि कअी कैदी मोतीझिरेकी बीमारीसे मर गये। पीनेका पानी गंदा था। मैं वहां १७ महीने रहा और बड़े आनन्दमें मेरे दिन बीते। वहां कअी लोगोंके साथ मेरे अच्छे सम्बन्ध बंधे जो धीरे धीरे घनिष्ठ मित्रतामें बदल गये।

बापूजीको जेलसे लिखे गये [illegible]

अब तक बापूजीको न तो मैंने कोअी पत्र ही लिखा था और न अुनसे मेरा व्यक्तिगत परिचय ही हुआ था। सामान्य परिचय जरूर था। बीसापुर

जेलसे मैंने बापूजीको प्रथम पत्र लिखा। लेकिन वह गुम हो गया। अुसकी नकल मेरे पास थी जिसलिअे दुबारा लिखा। अुसका यह अुत्तर आया

सेंट्रल जेल
यरवडा पूना

भाओी बलवंतसिंह,

तुम्हारा खत मिला है।

१ गुरुमें स्थितप्रज्ञके गुण होने चाहिये। अैसा सर्वगुण-संपन्न कोओी मनुष्य मुझे नहीं मिला है। थोड़े-बहुत मात्रामें अैसे गुण तो कमियोंमें प्रत्येक देशमें मिले हैं।

२ सुख-दुःखमें मानापमानमें सम रहनेका तात्पर्य यह है कि अपमान होनेसे चित्त नहीं चमता मान मिलनेस फूल नहीं जाता। अपमानका अथवा दुःखका मिलाज न करना अैसा कभी नहीं है।

३ भक्तके गुण प्रयत्नसाध्य हैं प्रयत्न कैसे किया जाय यह भी अुसी अध्यायमें बताया गया है। लेकिन अुससे भिन्न प्रयत्नसे भी अैसे गुण प्राप्त हो सके तो रुकावट नहीं है।

४ निद्रा प्रयत्नसे निर्दोष हो सकती है। निर्दोष निद्रा अुसका नाम है जिसमें जागनेके पश्चात् निद्राके सिवाय और किसी वस्तुका ज्ञान नहीं रहता है और सुखका अनुभव होता है। यद्यपि गीतादिका पाठ किया जाता है तो भी अनजानपनमें अनेक विचार आते-जाते हैं। जब आत्मा गीतामय अथवा कहो भगवानमय हो जाता है तब शुद्ध निद्राका संभव होता है। जिसलिअे आज जो प्रयत्न गीतामय होनेका चलता है अुसीको श्रद्धापूर्वक कायम रखा जाय।

५ रामायण पर भी लिखनेका विचार तो रहता ही है किन्तु समयाभावसे रह गया है। यों तो अब कोओी आवश्यकता भी नहीं रही है। जो अनासक्तियोगका अभ्यास अच्छी तरह करेगा वह रामायणका अर्थ भी अपने-आप घटा लेगा।

६ रामायणमें यदि अितिहास है तो वह गौण वस्तु है, अध्यात्म प्रधान वस्तु है। अितिहासके निमित्तसे धर्मका बोध दिया गया है। जिस कारण रामको आत्मा और रावणको औश्वर-विमुख शक्ति समझकर

सारी रामायण पढ़ना। समझो राम कृष्ण हैं अनुका दल पांडव सेना है, रावण दुर्योधन है। महाभारत और रामायणमें अेक ही दृष्टि है।

गुरुमुखी ग्रंथोंका अभ्यास कर रहे हो सो भी अच्छा है। गीता कंठ करनेकी प्रतिज्ञाका पालन किया जाय।

भाभी फूलचन्दके पत्रका अुत्तर दिया गया है। आशा है यह पत्र मिल जायगा। हम सब अच्छे हैं।

५–२–३२ सबको
बापूके आशीर्वाद

१९३२ के आन्दोलनमें बम्बअी प्रेसिडेंसीमें वीसापुर कैम्प जेल खुला था। अुसमें करीब २ राजनीतिक कैदी थे। बापूजी अुस समय यरवडा जेलमें थे। हम लोग वीसापुर कैम्प जेलमें थे। यरवडा कैम्प जेलमें भी बहुतसे साथी थे। सब साथियोंके साथ बापूजीका पत्रों द्वारा लगातार संबंध रहता था। वे कितनी मधुरतासे हमारी खोज-खबर रखते थे जिसका आभास नीचे दिये गये अुनके पत्रसे मिलेगा। फूलचन्दजीको बापूजीने लिखा था

भाअी श्री फूलचन्द

आपका पत्र मिलनेसे हम सबको बहुत आनन्द हुआ। कैदी हैं जिस-लिये जितनी पकी पानी पीने दें अुतना ही पीयें। अैसा भी समय था जब कैदीको न पत्र लिखने देते न पढ़ने देते न पूरा खाना खाने देते,वे चौबीसों घंटे बेड़ियां पहिनाये रखते और घास पर सुलाते थे। जिसलिये हम तो जो कुछ भी मिले खुशीके लिये अीश्वरका अनुग्रह मानें। प्राण भले ही तब मर मिटें, देहको कष्ट मिले अुसे सह लें।

आप सब वहां सुखी हैं यह जानकर हमें आनन्द हुआ है। अन्तमें तो सुख-दुःख मानसिक स्थिति है। आप और मामा नियमोंका पालन करते हैं करते हैं स्वच्छता रखते हैं यह सब शोभा देता है।

मैं अुम्मीद रखता हूं कि वहां हरअेक भाअी समयका अच्छासे अच्छा अुपयोग करते होंगे। अैसा अेकान्त और अैसी फुर्सत बार-बार नहीं मिलेगी। पढ़नेकी सुविधा हो तो पढ़ना विचार करना तो है ही। और भी अनेक प्रवृत्तियां हैं। अुनमें से कोअी न कोअी ले लेनी चाहिये। अेक गंभीर भूल हम सब करते हैं। वह यह है कि

सरकारी समय और वस्तु कौन माने अपनी नहीं है अैसा समझकर हम मुन्हें भुड़ाते हैं। थोड़ासा विचार करनेसे मालूम होगा कि सरकारी वस्तु और समय प्रजाके ही हैं। अभी वे सरकारके कब्जेमें हैं अिसलिअे यदि हम मुन्हें भुड़ायें तो प्रजाका ही धन और समय भुड़ाया कहा जायगा। अिसलिअे हमारे पास जो कुछ आवे भुसका हम सदुपयोग करें। जेलोंमें हम जो कुछ भी भुत्पन्न करें वह प्रजाके धनमें वृद्धि करनेके बराबर ही है। सरकार विदेशी है अिससे अिस विचारश्रेणीमें कुछ अन्तर नहीं पड़ता। अब अिससे आगे जामूं तो राज्य-प्रकरण आता है और भुसमें हम कैदीकी भांति ही वर्तन कर सकते हैं। अिसलिअे यह बात मैं यहीं पूरी करता हूं।

आनेवालोंमें यहां कौन कौन हैं वह लिखना। अथवा जिसका पत्र लिखनेका समय आया हो वह लिखे। दीवान मास्तर नहीं हैं? आश्रमके मायबकाप यहां हैं? हम तीनों चल तो यहां मौज भुड़ा रहे हैं अैसा कह सकते हैं। खाने-पीनेमें हम संयम रखें। वही अंकुश सोने-बैठनेमें भी। कातना बुनना ठीक चल रहा है। पढ़ना तो चलता ही है। अखबार भी ठीक ठीक मिलते हैं। पुस्तकें तो रोजाना किसी न किसीके पाससे आती ही हैं। प्रार्थना नियमित चलती है। यही हमारा कार्यक्रम है। सबको हमारा यथायोग्य।

बापू

बापूजीके अन्य पत्रोंमें से नीचे लिखे भुद्धरण सर्वसामान्यके लिअे लाभकारी होंगे अिस दृष्टिसे यहां मैं भुन्हें देता हूं

प्रार्थनाके सम्बन्धमें

प्रार्थनामें साकार मूर्तिका निषेध नहीं किया है। लेकिन निराकारको प्रथम स्थान दिया है। सम्भव है अैसा नियम करना किसीको ठीक न लगे। मुझे निराकार ज्यादा जंचता है। पूजामें परिस्थिति या स्थान-विशेषका असर साकार पूजामें होता माना गया है। होना नहीं चाहिये क्योंकि आखिरकार भुसके पार जाना होता है। अनुभवके विषयमें अैसा नहीं है। अेक भुदाहरण शरीर तथा आत्माका लें। शरीर तथा आत्मा अेक-दूसरेके अत्यन्त निकट होनेसे बहुत कम्म आत्माका भास नहीं होता। शरीरको

भेजकर जिस ॠषिने आत्माका अनुभव किया और सर्व प्रथम यह अुद्गार किया कि नेति नेति अर्थात् यह शरीर आत्मा नहीं है अुस ऋषिसे अब तक कोअी आगे नहीं जाने पाया है।

विचार और प्रवृत्ति

मने बहुरामीसे विचार करके यह निश्चय किया कि जो विचार अमलकी कसौटी पर कसे न जा सकें वे निरर्थक तथा भारस्वरूप गिने जायें। दूसरे शब्दोंमें कहा जाय तो यह कि विचारके साथ प्रवृत्ति जरूर ही हो लेकिन केवल पारमार्थिक तथा निष्काम जय नहीं। यह बात औशोपनिषद्में चमत्कारिक रीतिसे कही गयी है। विद्या-अविद्या संभूति-असंभूतिका वर्णन किया है। जिनके अर्थके विषयमें बहुत मतभेद है। सुरेन्द्र (श्री सुरेन्द्रजी) से यह समझना।

जेलमें अभ्यास

वल्लभभाअीकी लगनका मैं कहां तक बखान करूं? संस्कृतकी सात बेलेकरकी पाठमाला तो चल ही रही थी। जिसमें गीताके १ श्लोक कण्ठ करनेका क्रम और जुड़ गया। कातना भी नियमित चलता है। ४ अंकका सूत वे कात रहे हैं। जिन सबमें विशेषता यह है कि ज्यों ही करारो काली हुअे कि संस्कृत मुठाअी मानो कोअी विद्यार्थी परीक्षाकी तयारी कर रहा हो। महादेवभाअी ८ अंकका सूत कात रहे हैं। मेरा भी परसों तक ४ अंकका निकल रहा था। परन्तु फिर बाअी कोहनीको आराम देनेके लिअे गांडीव चक्र छोड़कर मगन चक्र अपनाया है और अुस पर ४ अंकका कातना संभव नहीं है।

श्रीश्वरके विषयमें

जो सेवा करे या जो सेवा ले दोनोंको ही मैं अीश्वर मानता हूं। लेकिन ये दोनों अीश्वर काल्पनिक हैं। जो सच्चा अीश्वर है वह कल्पनासे परे है और वह न सेवा करता है, न लेता है। अीश्वर नहीं है यह कहना गलत है। यदि हम हैं तो अीश्वर है। यदि अीश्वर नहीं है तो हम फिर क्या हैं? अीश्वर हमारे अन्तरमें व्याप्त है, जिसलिअे हमें प्रार्थना करनी चाहिअे। *प्रार्थना अर्थात् स्मरण। ज्यों ही हमने स्मरण किया त्यों ही काल्पनिक अीश्वर* पैदा हुआ। आस्तिकता अन्तमें बुद्धिका विषय न होकर श्रद्धाका है।

निष्काम कर्म तथा अन्तर-शुद्धि

कोअी यह माने कि अन्तर-शुद्धि बाह्य कर्म करते करते नहीं आ सकती तो यह भ्रम है। अिससे ठीक अुलटी बात सच है कि बाह्य कर्म अन्तर-शुद्धि अर्थात् प्रतिक्षण अीश्वर-परायण बुद्धि जाग्रत रखे बिना निष्काम हो ही नहीं सकता। दोनों सहचर हैं। शम अर्थात् मनका नियम जड़ चेतन सभीको लागू है। मनुष्य निष्काम भावसे जिसके वश रहे, वही अुसका ज्ञान और विशेषता है। भगवान बुद्धकी मैं टीका नहीं कर सकता। मैं अुनका पुजारी हूं। मेरी मान्यता यह है कि बौद्ध साधु और भिक्षु संघ जिस नियमका असंयम करनेसे ही अर्थात् कर्मोंका त्याग करनेके कारण ही जड़वत् हो गये जैसे कि वे आजकल भी लंका ब्रह्मा तथा तिब्बतमें देखे जाते हैं।

जेलमें मिलनेके विषयमें

"यह शरीर मिट्टीका पुतला है। अिससे मिलना निरर्थक है। अिसके अन्दर जीव रम रहा है। अुससे मिलनेकी अिच्छा सबसे बड़ा मोह है, जिसे दूर करनेमें सभी श्रम भी कम पड़ेंगे। सच्चा मिलन तो मनका मनसे और हृदयका हृदयसे होता है और वे तो हजारों मीलके फासले पर होने पर भी अेक क्षणमें मिल लेनेकी शक्ति रखते हैं। परन्तु यदि मन नहीं मिलते हों तो मिट्टीके पुतलोंका तो आमने सामने तो क्या अंक भर कर मिलना भी निरर्थक होता है।

सन्तानकी योग्यताके विषयमें

हृदयमें पूर्ण सत्य तथा पूर्ण अहिंसा हो अन्तःप्रेरणा मिली हो विरोधीके प्रति द्वेष हृदयमें न हो हेतु स्वार्थी न होकर पारमार्थिक हो। अन्तर्नाद अुसके कान बिना संयमके नहीं अुपड़ते अिसलिये अत्यन्त तथा पूर्ण संयमी हों।"

भिन्न भिन्न धर्मोंके विषयमें

मैं हिन्दू धर्मको सत्यके सबसे निकट मानता हूं। यदि मैं अैसा न मानता होअूं तो मैं सत्यका पुजारी होनेसे जिस धर्मको सत्यके अधिक निकट समझूं अुसीमें चला गया होअूं। यह मान्यता मोहजन्य भी हो सकती है, लेकिन अैसा मोह क्षन्तव्य है। अन्य धर्मावलम्बियोंसे भी अुनके अपने धर्म सम्बन्धके

सबसे नजदीक होंगे। अनके जैसा माननेसे मुझे कोअी द्वेष नहीं है। सब धर्म मुझे समान प्रिय हैं। सर्वधर्म-समभावका मेरा विचार मौलिक है और अिसीसे मेरे लिअे यह संभव हुआ है कि स्वयं चुस्त हिन्दू रहते हुअे भी मैं अन्य धर्मोंकी भी पूजा कर सकता हूं और अनमें जो श्रेष्ठ हो अुसे निःसंकोच ले सकता हूं। और वैसा करता भी हूं।

अनासक्तिके विषयमें

अनासक्तिका अर्थ जड़ता नहीं है। निर्ममता भी नहीं है। चूंकि सेवा तो करनी ही होती है अिसलिअे दयाकी भावना तो और भी तीव्र हो जाती है। कार्यदक्षता तथा अेकाग्रता भी बढ़ती है। मेरी भावना जगतमात्रकी सेवा करनेकी है। अिसमें कुटुम्ब भी आ ही जाता है अर्थात् कौटुम्बिक सेवा रह जाती हो सो भी नहीं। अिसलिअे अनासक्तिपूर्वक सेवाकार्य अपना लेनेसे मैंने अपना कुछ भी नहीं खोया और मुझे बहुत कुछ मिला है।"

* * *

जेलमें बापूजीका अपवास

बापूजीने ता. २-५-३३ से यरवडा जेलमें २१ दिनका अपवास आरंभ किया। श्री सुरेशजी हमारे साथ वीसापुर जेलमें थे। अनके नाम बापूजीने हम सबके लिअे पत्र लिखा। मूल पत्र गुजरातीमें था। यहां अुसका अनुवाद दिया जाता है।

यरवडा मंदिर
१-५-३३

चि. सुरेश

रामदास कहता था कि जब अुसने तुमसे मेरा संदेशा कहा तब तुम्हारी आंखोंमें आंसू आ गये थे। मैं अैसा मानता हूं कि तुम्हारी आंखोंमें आंसू तो हर्षके ही होंगे दुःखके तो कदापि नहीं। यह अुपवास किये बिना कोअी चारा ही न था। और यह समय अुसके लिअे योग्य मुहूर्त था। यह मुझे बिलकुल स्पष्ट लग रहा है। अस्पृश्यता जैसे अयानक राक्षसका नाश मुझे अन्य किसी प्रकारसे असंभव लगता है। रावणके तो केवल दस सिर थे। अिस राक्षसके हजार मस्तक हैं। वे

मस्तक कैसे है यह तुम्हें समझानेकी जरूरत नहीं। जिस पातकका मूलसे नाश करना हो तो वर्तमान साधनोंसे नहीं हो सकेगा। जिसके लिये प्राचीन परन्तु विस्मृतप्राय अमोघ साधनकी जरूरत है। यह बात मुझे अुतनी ही सीधी मालूम हो गयी है जितना किसी प्रश्नका अुत्तर। करोड़ रुपये जिकट्ठे कर लें तो भी क्या सवर्णोंका हृदय पलटेगा? कुन्दन जैसे सेवकोंके बिना हमारा धन भी किस कामके? जिस आश्रमके द्वारा मुझे यह काम सिद्ध करना है, अुसी आश्रममें दरार पड़ी हुअी कैसे देखूं? हरिजन आजकल विक्षुब्ध हो गये हैं व भयभीत हैं। जिन्होंने भय छोड़ दिया है वे अुद्दंड बन गये हैं। अुनके क्रोधका रूप भीषण हो जाय जिसमें आश्चर्य ही क्या?

जिन सब अनिष्टोंका सामना कर सकनेके लिये ही अपनी सारी आध्यात्मिक पूंजी खर्च कर दें। जिसके अतिरिक्त कोअी चारा नहीं है। अीश्वर करे मेरे अकेलेके जितने ही अनशनसे काम चल जाय तो मेरे हर्षकी सीमा न रहे। परन्तु मैं यह नहीं मानता कि मेरे अन्दर जितनी अधिक पवित्रता है। अैसे सैकड़ों हजारों अुपवास जब हम करेंगे तब ही यह हजारों वर्षोंका प्राचीन पाप धुलेगा। सुमन और तुम्हारे ही जैसे दूसरोंसे जिस यज्ञमें बड़ी भारी आशा रखता हूं। परन्तु मेरे जिस अुपवासके दरमियान कोअी कुछ न कर शान्त रहें और मन वचन कर्मसे जितनी शुद्धता साध्य हो अुतनी साधें। यह पत्र महादेवने लिखा है। यह रोजाना जिसी प्रकार लिखता रहेगा और जब तक संभव होगा मेरे दस्तखत लेता रहेगा। सरकारकी आज्ञा मिल गअी है कि मैं रोजाना तुमको जिस प्रकारसे पत्र लिख सकता और तुम भी मुझे लिख सकोगे।

सबको
बापूका आशीर्वाद

बापूका यह पत्र हमको ८ तारीखको मिला। अुपवासकी खबर तो पहले ही मिल गअी थी और जेलमें काफी गंभीर वातावरण हो गया था। सब लोगोंने २४ घंटेका अनशन और प्रार्थना भी की थी। हम सबकी तरफसे भी सुरेन्द्रजीने बापूजीको यह पत्र लिखा

वीसापुर कैम्प जेल
८–५–३३

परम पूज्य बापूजी

आपका कृपापत्र आज मिला। सबने पढ़ा। खूब प्रेरणा मिली। यह गंभीर प्रसंग होते हुअे भी आनन्द हुआ। रामदाससामीने जब आपका रहस्यपूर्ण संदेश सुनाया तब हृदय भर आया। मेरे आनन्दाश्रुओंको किसीने न देखा होगा पर मुझे कबूल करना चाहिये कि वे दुःखसे सर्वथा मुक्त न थे। गत सात दिनमें खूब आत्म-निरीक्षण किया है। आपके अुपवासका समाचार मिला। अुसकी महत्ता व्यापकता और आवश्यकता मैं समझ सकता हूं और मैं मानता हूं कि यह अुपवास आपने मेरे लिअे मेरे समान सब साथियोंके लिअे किया है। आपके मिस दिव्य सूर्यके प्रचण्ड सौम्य शीतल प्रकाशमें मैं अपने अन्तरकी सभी गुप्त-प्रगट त्रुटियोंको देखता हूं। मुझमें हरिजनोंके लिअे वह अुत्कटता नहीं वह समर्पण नहीं वह कुशलता नहीं जैसी कि आपके सेवकमें होनी चाहिये। जैसा आदमी अेक क्षेत्रमें होता है अुससे भिन्न दूसरे क्षेत्रमें कैसे हो सकता है? मैं चमार बना। आपके चमारमें जो समर्पण कुशलता अुत्कटता होनी चाहिये वह मुझमें नहीं। अैसी अनेक बातें यहां लिख सकता हूं। आप मुझे मुझसे अधिक जानते हैं। आज सात दिनके मंथनके बाद प्रातःकालमें अुठते ही मैं प्रफुल्लित और शान्त था। बड़ा फामिल[1] से आनेके बाद आपका पत्र मिला। आपकी आशा मैं पूर्ण कर सकूं जिससे विशेष मुझे कोअी प्रसन्नता नहीं है। जिस बलिदानकी आप मुझसे आशा रखते हैं वह मैं आपके आशीर्वादसे अर्पण कर सकूं अैसी प्रभुसे प्रार्थना है। आपसे पू॰ मालवीजी मिल गये। अुनसे मिलनेकी अिच्छा है। मेरा आश्रमके पंडितजीके नाम लिखा पत्र आपको मिल गया? श्री फूलचन्दभाअीका ४–५–३३ का यहांसे लिखा पत्र आपको मिला होगा। वे अब जल्दी छूटकर नहीं आयेंगे परन्तु १७ तारीखको आपके पास आयेंगे और दर्शन करके वापस लौटेंगे। आज यहां १२ बजे सबने अपने अपने स्थान पर प्रार्थना की है और आत्म-संतोषके लिअे २४ घंटेका अुपवास किया है। हम वीसापुर मंदिरवासी

1 वीसापुर कैम्प जेलमें मजबूत आदमीके लिअे बड़े तोड़नेवाली टोली।

आपको आध्यात्मिक खुराक किस प्रकार भेज सकते हैं, जिस बारेमें मैंने ये सूचनायें की हैं

१ जेलमें आदर्श सत्याग्रहीका-सा जीवन व्यतीत करना।

२ संयमी और प्रार्थनामय जीवन पर विशेष भार दिया जाय।

३ धार्मिक साहित्यके अतिरिक्त आपके ही साहित्यका वाचन श्रवण मनन और चर्चा करें।

४ प्रत्येक व्यक्ति अपने पत्र सामाजिक जीवनका निरीक्षण करे और भविष्यके जीवनके लिअे सुन्दर संकल्प करे।

ये सूचनायें केवल दिशासूचक हैं। बाकी प्रत्येक व्यक्ति अुन पर अपनी रीतिसे विचार करेगा।

श्री गोकुलभाओ भट्ट श्री जेस के पाटील श्री फूलचन्दभाओ श्री रमणीकलालभाओ श्री मोहनलाल भट्ट श्री बरखारी साधु, श्री मोडबेजी श्री दीवान साहिब और श्री बलवन्तसिंहजी वगैरा सब आश्रमवासी और सब अन्य भाअियोंकी ओरसे आपको सादर प्रणाम। हम सब प्रभुसे प्रार्थना करते हैं कि जैसे भगवान कृष्ण कालियमर्दन करके हंसते हुअे बाहर निकल आये वैसे ही आप भी निर्विघ्न बाहर निकल आवें और आत्मशुद्धिके मार्गमें हमको लंबे समय तक मार्ग सूचन करते रहें।

आपका कृपापात्र
सुरेन्द्र

अेक-दो दिनमें ही बापूजीके अुपवासके सम्बन्धमें पूज्य माधवीका मराठीमें लिखा पत्र मिला। यहां अुसका अनुवाद दिया जाता है।

पूना
८-५-३३

श्री सुरेन्द्रजी

सप्रेम आशीर्वाद। मैं परसों यहां आया। पूज्य बापूजीसे मुलाकात हो गयी। यद्यपि मेरा अुनके साथ संभाषण नहीं हुआ तथापि अुनकी लिखी हुअी बातें तथा और लोगोंकी बातचीत सुनी। अुनका आज तकका जीवन अुनका ध्येय अुस ध्येयको प्राप्त करनेके लिअे अुनका

साधन-मार्ग आजकी अुनकी मानसिक स्थिति अित्यादि विषयोंकी जो कल्पना मुझे हुअी तथा अुस विषयमें मैं जितना चिंतन कर सका हूँ अुस परसे मुझे अैसा लगता है कि आज बापूजी जो कर रहे हैं वह अुचित ही कर रहे हैं। मुझे यह भी लगता है कि अुनके साधन-मार्गमें अिस अिक्कीस दिनके अुपवासके अतिरिक्त और कोअी अुपाय नहीं है। पिछले अुपवासके समय मैंने जिस प्रकारसे अुनकी विचारशैलीका चिन्तन नहीं किया था। जिससे अुनका अुपवास करना मेरी समझमें नहीं बैठा था। अुनका निश्चय सुनकर आप सब लोगोंके दिल अस्वस्थ हो गये होंगे। कारावासके बन्धनोंके कारण तो आप लोगोंका और भी ज्यादा अस्वस्थ बन जाना संभव है। लेकिन जब आप सब लोगोंने अपनी खुदकी तथा औरोंकी चित्तशुद्धिका यह महान कार्य आरम्भ किया है, तो अुनके अिस कामसे आप लोगोंको अस्वस्थ नहीं बन जाना चाहिये।

पूज्य बापूजीका स्वास्थ्य अच्छा है। अुनमें खूब अुत्साह है। जिससे लगता है कि वे अिक्कीस दिन पूरे कर सकेंगे। अुन्होंने आप सब लोगोंको अितना तो जरूर ज्ञान दिया है जिससे चिन्ताकी बात होते हुअे भी चिन्ता करना आप अुचित न मानें। अुपदेशक अुपदेश करता है तब श्रोता लोग सुनते रहते हैं लेकिन ज्यों ही अुपदेशक अुन्हीं अुपदेशोंके अनुसार व्यवहार शुरू कर दे त्यों ही यदि श्रोताओंको दुःख होने लगे तो यही मानना होगा कि श्रोताओंने अुपदेशको समझा नहीं। श्रोता और वक्ताकी अपेक्षा आप लोगों तथा पूज्य बापूजीके बीचका संबंध तो अत्यन्त निकटका है तथा हार्दिक है। हमी लोगोंने बुद्धि पूर्वक समझ कर जब अेक कामको अुठा लिया तो अुसे करते हुअे कभी मनको विचलित नहीं होने देना चाहिये यह तो आप लोग जानते ही हैं। न जानते हों तो अब जान लें। जिसके सिवा और कोअी चारा नहीं है। पूज्य बापूजी जब आज व्रत कर रहे हैं तब यह आवश्यक है कि आप लोग अपने मनोंको शान्त रखकर अुनके कार्यमें मानसिक सहानुभूति पहुंचायें। मनुष्य कैसी भी असह्य परिस्थितिमें पड़ा हो अितना तो वह जरूर कर सकता है।

आज यह पत्र मैं लिखनेवाला नहीं था लेकिन कल जब मैं काकाके यहां गया तो वहां अेक सज्जनने आपको पत्र लिखनेकी सूचना की।

जिसलिये लिखा है। श्री दरबारीजी बमबमसिंह गोकुलभाओ बोरसे सब परिचित मित्रोंको नमस्कार। श्री रमणीकलालभाओीको तीन चार दिन पहले पत्र भेजा था। मुझे नहीं लगता कि बापूजीके बारेमें अुनको लिखकर समझानेकी जरूरत है। वे खूब समझदार हैं और गंभीर हैं। अुनको यह पत्र दिखाना और आशीर्वाद कहना।

शुभचिन्तक
नाथ

जेल्यात्राके अनुभव

जितनेमें ही बापूजीको छोड़ दिया गया। लेकिन बापूजीके साथ हमारे पत्र-व्यवहारका बीसापुरके जेल-अधिकारियोंके दिल पर यह असर हो गया कि कहीं हम लोग बीसापुरमें भी अुपवास आरम्भ न कर दें। जिसलिये अुन्होंने अेक युक्ति निकाली। कहा कि हमको आश्रमवासियोंके नाम चाहिये क्योंकि हम अुनको कोओ जवाबदारीका काम देना चाहते हैं। नाम तो बहुतसे आये लेकिन अुनमें से ८ आदमी छांट लिये गये जो अुनकी दृष्टिसे अधिक खतरनाक थे और जिनके अुपवासमें भाग लेनेका डर था। मुख्य तो श्री सुरेन्द्रजी थे लेकिन चनेके साथ घुन पिसनेके न्यायके चक्करमें हम भी फंस गये। आठके नाम थे १ श्री दरबारी साधु, २ रमणीकलाल मोदी ३ माधोभाओ शाह, ४ विठ्ठल ५ पोद्दारजी ६ गोपालराववी कुलकर्णी ७ सुरेन्द्रजी ८ मैं। श्री तुलसीदासजी वाघेले (बीसापुरका अेक कार्यकर्ता जो पेचिशसे पीड़ित था) को भी हमारे साथ जकड़ दिया। यहां डॉक्टर जिलाज नहीं कर पा रहे थे जिसलिये हम सबको बीसापुरसे यरवडा जेलकी तरफ़का जब हुक्म मिला और बिस्तर बांधनेको कहा गया तब पता चला कि हमको कितनी बड़ी जवाबदारीका काम मिला है। बीसापुरसे पूना आते समय रास्तेके किसी स्टेशन पर मेरे पुराने फ़ौजी साथी मिल गये। अुन्होंने तो मुझे नहीं पहिचाना लेकिन मैंने अुन्हें पहिचान लिया। जब अुनसे बातचीत की तो वे भौंचक्के रह गये। कुछ करुणा और कुछ तिरस्कार मिश्रित भाषामें बोले "अरे आप किस अपराधमें फंस गये?" जब मैंने अुन्हें सब हाल बताया तो अुनके सिर शर्मसे झुक गये और बोले "भाओ हमसे तो गुलामीकी बेड़ी नहीं कट पा रही है। आपने देशके लिये बेड़ियोंका

सिकार किया है यह हमारे लिये गौरवकी बात है। तो भी आपको जिस रूपमें देखकर हमको दुःख तो होता ही है। अेक भाओी बोला "अजी भला कहीं जेल जानेसे अंग्रेजोंका राज्य टूट सकता है? जिनको हटानेके लिये तो सेर पर सवा सेर चाहिये। दूसरा बोला "तुझे क्या पता है? रामने रावणको मारा कृष्णने कंसको मारा तो गांधीजी जिस गवर्नमेंटको जरूर निकाल देंगे। देख तो सही जिन तीनोंकी अेक ही राश है। जितनेमें हमारी गाड़ी चल दी।

पूना स्टेशनसे यरवडा जेल तक करीब १४ मील हम कारोंको पैदल ही ले जाया गया। वहां अेकान्त कोठरियोंमें जो अेक ही लाअिनमें १२ थीं हमें बन्द कर दिया गया। वहीं अेक कोठरीमें पहलेसे बीमारीके कारण पूज्य अब्बासाहब तैयबजी भी थे। हमारी सेवामें वहां या निगरानीमें चौकमें छैंटकर क्रूरसे क्रूर सिपाही और वार्डर रखे गये। हम अेक-दूसरेसे बात भी नहीं कर सकते थे। घूमना हो तो अपनी कोठरीके सामने ही घूम सकते थे। काममें नारियलकी रस्सी बटनेका काम मिला जो मेरे लिये तो आसान था लेकिन मेरे साथियोंके लिये कठिन था। अगर मैं अुन्हें सिखाने जाता तो वार्डर चिल्लाता। जब तैयबजीको दवाखानेके लिये बुलाना होता तो दूरसे ही चिल्लाता जो तैयबजी चल दवाखाने जाना है। अुसकी यह बेहूदा बोल-चाल मेरे कानमें तीरकी तरह चुभती। कभी कभी अुससे अुलझ भी जाता तो तैयबजी प्रेमसे मुझे शान्त कर देते थे। हमारे पास न अखबार आता न अेक-सुपरिन्टेन्डेन्ट। न पुस्तकें न लिखने-पढ़नेका सामान न पत्र। अेक रोज अंग्रेज जेलरके साथ मेरा झगड़ा हो गया। फिर वह भी न आया। लेकिन हमें वहीं बहुत अच्छा लगता था। रातको पारी पर आनेवाला सिपाही अच्छा था और हमको बहुतसी खबरें भी सुना जाया करता था। अेक रोज अेका-अेक जेलके किवाड़ बन्द होने लगे तो अेक वार्डर आकर कह गया कि बापूजी फिरसे आ गये हैं। दूसरे रोज बापूजीकी प्रार्थना भी हमने सुनी। लेकिन बापूजीने फिर अुपवास किया और अुन्हें छोड़ दिया गया। अेक रोज मुख्य जेलर श्री कटेली हमारे पास आये जो रमणीकलाल मोदीके पहलेसे परिचित थे। अुन्होंने हमें देखकर आश्चर्य व्यक्त किया। रमणीकलाल भाओी बोले हमको यहां क्यों बन्द रखते हैं? अुनका यह कहना मुझे अच्छा न लगा क्योंकि यहां हम अेकान्तमें बड़ी शान्तिसे रहते थे। ध्यान करनेके लिये अच्छा

अवसर था। वहां मैं रातका बहुतों ध्यानमें बैठा रहता था। चिन्तन भी खूब होता था। बादमें तो पुस्तकें भी मिल गयी थीं। मेरे पास करीब १ पुस्तकें थी जो मुझे सबकी सब मिल गयी थीं। दूसरे दिन ही कलेक्टर साहबने हमें बैरकोंमें बांट दिया। मन विसका विरोध भी किया लेकिन जेलका कानून ठहरा। मैं जिस बैरकमें गया बुसमें विलायत बेक मुसलमान हकीमजी थे और वे कुछ लोगोंको बुर्दू पढ़ाते थे। मेरा बिस्तर बुनके साथ ही लगा। मैंने कहा "हकीमजी आप मुझे भी बुर्दू पढ़ा सकते हैं?" हकीमजी बोले "देखो भाजी मेरे छूटनेका १ माह बाकी है। जिसमें रोजमें आपको बुर्दू किताब पढ़ना सिखा दूंगा।" और सचमुच ही हकीमजीने मुझे १ मासमें ही पुस्तक पढ़ना सिखा दिया। मैं और गोपालरावजी कुलकर्णी अेक ही बैरकमें थे। हमारे बीच खूब घनिष्ठता बढ़ी जो अब तक वैसी ही बनी हुयी है। वैदमोमसे जिस पुस्तकका अंग्रेजी अनुवाद भी बुनको ही सौंपा गया है। चूंकि मेरा और बुनका निकटका सम्बन्ध रहा है, जिसलिये मेरी भाषाका भाव ठीकसे व्यक्त करना बुनके लिये आसान होगा। बुनका स्वभाव बड़ा ही सरल और मिलनसार है।

यरवदा जेलका पानी बहुत अच्छा था। बुससे तबीयत सुधरी। लेकिन खटमलोंने मुहमा ही खून पीकर बराबर कर दी। वहां पर स्वाध्यायका अच्छा कार्यक्रम बन गया था और लगता था कि १०-१२ साल तो जेलमें रहना ही होगा। २५ मास तक जेलमें बन्द रहनेके बाद १२ मार्च १९१८ को मैं यरवदा जेलसे छूटा।

प्रोफेसर कर्वे

जेलमें प्रोफेसर कर्वे साहबका आत्म-चरित्र पढ़कर बुनके प्रति मेरी बड़ी श्रद्धा हुयी और बुनसे मिलनेका आकर्षण पैदा हुआ। जेलसे छूटते ही मैंने बुनकी खोज की। श्रीधवर-कृपाने वे अकेले मिले और खूब दिल खोलकर बातें कीं। मैं आश्रमवासी हूं यह जानकर बुनको बड़ी खुशी हुयी। वे बोले "देखा महात्माजीने जिस देशकी सर्वांगीण सेवा की है। बुनका क्षेत्र विशाल है तो भी दलित वर्ग और स्त्री-जातिके प्रति बुनकी करुणा अपार है। बुनके मुकाबलेमें मेरे कामकी क्या गिनती? तो भी मुझसे स्त्री पुरुषकी जो सेवा बन पड़ी है बुससे गांधीजी मुझसे खुश हैं। अब तो मैंने

देहातोंमें प्रौढ़-शिक्षणका काम आरम्भ किया है। देहातोंमें पैदल जाता हूं और घर घरसे दो आने लेकर मुसी गांवमें पढ़ाओीका प्रबंध कर देता हूं। जिससे मुझे बड़ी शक्ति मिलती है। अब मेरी भुमर ८ सालसे भुपर है तो भी मुझे बुढ़ापेका अनुभव नहीं होता। मैंने पूछा जिसका कारण क्या है? कर्वेजीने कहा जिसका मुख्य कारण तो यह है कि मैं आयेपीछेकी चिन्ता नहीं करता हूं। जो आजका काम मुझे सहज भावसे मिला हो बुसे पूरा करके आरामकी नींद सो जाता हूं। षड्‌विकारों पर काबूकी भी मेरी कोशिश रही है और जिसमें मुझे काफी सफलता भी मिली है। जिन लोगोंने मेरा अपमान किया बुनको माफ भी मैंने भुला दी है। कोअी कुछ भी कहे मुझे जो ठीक लगता है सो मैं करता हूं और बुससे मुझे सन्तोष मिलता है। मैंने पूछा आध्यात्मिक दृष्टिसे आपकी क्या साधना चलती है? बुत्तर स्त्रियों और गरीबोंकी सेवा ही मेरा अध्यात्म है। जिसीमें मैं श्रीश्वरके दर्शन करता हूं। या यों समझो कि यही मेरा श्रीश्वर है। आप यहांकी संस्था जरूर देख जायें। जो कुछ सुधार सुझाना हो वह जरूर सुझायें। कर्वेजीकी सरलता नम्रता और स्पष्टवादिता देखकर मेरा सिर बुनके चरणोंमें झुक गया और नमस्कार करके मैंने विदा ली। अब जब कभी पूना जानेका प्रसंग आता है तो बुनका दर्शन भी मेरे लिये ओक बड़ा तीर्थ बन जाता है। अभी १९५७ में बुनसे मिला तो बालककी तरह खुश होकर वे बोले कि अब मेरे सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। मैंने पूछा "जितनी लम्बी बुमरका कारण आप क्या समझते हैं? बुन्होंने संयम षड्‌विकारों पर विजय चिन्तामुक्ति अच्छी नींद।

सचमुच ही बुनके सीधे सादे जीवनके ये अनुभव-मंत्र सुनकर किसे आनन्द न होगा? अैसे महान पुरुषोंकी आज हमारे देशको बड़ी जरूरत है।

ओक बार प्रो० कर्वे साहब अपनी सहधर्मिणीके साथ बापूजीसे मिलने सेवाग्राम आये। बापूजी और बुनके मिलनका दृश्य अद्‌भुत था। बुनकी छोटीसी सफेद दाढ़ीमें से बुनकी मधुर मुसकान बुनकी नम्रता बापूजीके प्रति बुनकी श्रद्धा बापूजीके प्रति बुनका आदर और प्रेम बिखरा पड़ता था। यह देखकर बुनके चरणोंमें सिर झुक जाता था। बापूजीसे बुनकी क्या बात हुअी जिसका मुझे पता नहीं है। लेकिन आश्रममें बुनके चरण पड़नेसे आश्रमकी शोभा जरूर बढ़ी थी।

सत्याग्रह स्थगित

बापूजीने सविनय सत्याग्रह स्थगित कर दिया था। अिस विषयमें मैंने बापूजीको पत्र लिखा कि म दुबारा जेल जानेकी तैयारी कर रहा था और आपने सत्याग्रह स्थगित कर दिया। अैसा क्यों किया ? बापूजी अुड़ीसामें हरिजन-यात्रा कर रहे थे। पुरीसे अुनका जवाब आया।

भाअी बलवन्तसिंह

तुम्हारा खत मिला। तुमको आहिस्ते आहिस्ते मेरे निर्णयकी योग्यता प्रतीत हो जायगी। तुम्हारे जैसे सरल सविनय भंग करने वाले काफी थे। *साथियोंकी त्रुटियोंसे भिन्न भी आध्यात्मिक कारण* निर्णयके लिअे थे। अनुभव नित्य बता रहा है कि निर्णय बहुत ही योग्य था। अब तुम्हारे सिर पर ज्यादा जिम्मेवारी आयी है। तुम्हारी रचनात्मक शक्तिकी तुम्हारी श्रद्धाकी और तुम्हारी दृढ़ताकी अच्छी परीक्षा होगी। नारणदास कहे वही करो। रचनात्मक कार्य करते हुअे कोअी कुछ बाधा डाले तो अुसका अुत्तर देना। फिर भी जेल जाना पड़े तो सहन करना। अनिवार्य कारण पैदा होनेसे सविनय भंग गम्य और कर्तव्य भी हो सकता है। मेरे जेल जानेके बाद तो बाहर वाले अपने मतके अनुसार करेंगे। अिसमें भी नारणदास कहे अैसा ही करना। अितना याद रखो कि जेल जानेका कोअी स्वतंत्र धर्म नहीं है और अुसके लिअे योग्यता प्राप्त करनी पड़ती है। मेरा स्वास्थ्य अच्छा है। वजनका पता नहीं है। मेरी पैदल यात्राकी कथा तो पुरानी हुअी।

पुरी ९–५–३४ बापूके आशीर्वाद

चिरंजीव बन गया !

बापूजी मुझे भाअी सबोधन करके पत्र लिखते थे। मैंने अिसके खिलाफ शिकायत की कि आप अैसा कैसे लिखते हैं। क्योंकि जिनको वे चिरंजीव लिखते थे अुनसे मुझे अीर्ष्या होती थी। अिस बारेमें बापूजीका जवाब आया

भाअी बलवन्तसिंह

भाअी अथवा चिरंजीव अथवा और कोअी विशेषणसे कुछ फर्क नहीं पड़ता जब तक भाव अेक है। मुझे जिनका ठीक परिचय नहीं है,

मिसकी शुभ मिरयादि नहीं जानता हूं मुसको प्राम' माकी मिला करता हूं। तुमको सुरेन्द्र अपने साथ रखे तो मुझको अच्छा लगेगा। नारणदास राजकोट है। वह कहे वैसा करो।

४-६-३४ बापूके आशीर्वाद

मिसके बाद मैं जबरदस्ती बापूजीका 'चिरंजीव' बन बैठा और फिर कभी बापूजीने मुझे 'माकी' नहीं लिखा।

समाजवादियोंके साथ प्रश्नोत्तर

मिसके पश्चात् मैं ता० '२९-६-३४ को साबरमती हरिजन-आश्रममें बापूजीसे मिला। बापूजीने मुझे राजकोट नारणदासभामीके साथ काम करनेकी सलाह दी। लेकिन वहां मुझे अच्छा न लगा और मैं अपने घर वापिस आ गया। १ जनवरी १९३५ को बापूजी हरिजन-आश्रमकी नींव डालने दिल्ली आये थे। मैं बापूजीसे मिलने गया और जब तक वे दिल्ली रहें तब तक मुनके साथ दिल्ली ठहरनेकी विच्छा मैंने प्रकट की। बापूजीने अनुमति दे दी और मैं वहां ठहर गया। वहां पर बापूजीको और निकटसे देखा। मुनके पास अनेक प्रकारके लोग आते थे चर्चा करते थे और मैं सुनता था। अेक रोज समाजवादी पार्टीके लोग बापूजीके पास आये और चर्चा करने लगे कि किसानों पर बहुत कर्ज है, मुससे मुन्हें कैसे मुक्त किया जाय। मुन्होंने यह भी पूछा ... कहके किसे गया बेचनेमें अधिक पैसा मिलता है, मुसमें कम। तब किसान क्या करें? स्वराज्यमें पूंजीवाद रहेगा या नहीं? आपके ग्रामोद्योगमें राजनीति है या नहीं?

बापूने कहा "किसानोंको कर्जसे मुक्त तो मैं आज नहीं कर सकता हूं। अगर आज स्वराज्य भी हो जाय तो मैं वैसी घोषणा नहीं कर सकता कि किसानों पर जो कर्ज है वह कम कर दिया जाय। लेकिन मैं तो किसानोंको आलस्यसे व फिजूलखर्चीसे बचानेका प्रयत्न कर रहा हूं। किसानों पर कर्ज क्यों होता है? कोआी कहता है मैंने शादी की थी कोआी कहता है मैंने पिताका श्राद्ध किया था। मैं कहता हूं आओ मैं तुम्हारा पंडित बन जाअूं श्राद्ध और शादी दोनों करवा दूं। मुसमें पैसेकी क्या जरूरत है?

१ सन् १९३४ में बापूजी हरिजन-यात्रा कर रहे थे और मुस दिन साबरमती हरिजन-आश्रममें आये थे।

किसानोंको गुड़ बनाकर अधिक पैसे लेने चाहिये, क्योंकि लोगोंको समझना चाहिये कि खांडसे गुड़ अच्छा है। खांडमें से सब तत्त्व चले जाते हैं और गुड़में वे सब रहते हैं।

"स्वराज्यमें भी कुछ तो व्यक्तिगत संपत्ति रहेगी ही। अैसा कोअी देश नहीं है जहां अैसा न हुआ हो।"

बीचमें अेक सज्जनने कहा कि रूसमें अैसा नहीं है।

बापूने कहा, "क्या तुम रूस गये हो?"

अुसने कहा, "हां जी।"

बापूने हंसकर कहा, "तब तो मैं हारा।"

खूब हंसी हुअी। बापूने पूछा, "क्या अेक भी समाजवादी अैसा है जिसके पास व्यक्तिगत संपत्ति कुछ भी न हो?"

सत्यवती बहनने कहा, "हां, मैं अैसी हूं।"

बापूने कहा, "यह शरीर तो तुम्हारी संपत्ति है ही।"

सत्यवती, "ना जी, शरीर भी समाजका है।"

बापू गंभीर हो गये और बोले, "देखो, संभलकर बात करो। अगर कोअी आदमी तुम्हारी तरफ बुरी निगाहसे देखे, तो तुम पिस्तौल लेकर खड़ी हो जाओगी न?"

सब लोग खूब हंसे और सत्यवतीबहन झेंप गयी।

चौथे प्रश्नके अुत्तरमें बापूने कहा, "ग्रामोद्योगमें राजनीतिक भावना लेकर कोअी कार्यकर्ता नहीं आयगा। लेकिन अुसका परिणाम तो वही आयेगा जो कांग्रेस चाहती है।"

* * *

अेक रोज अेक भाअीने बापूजीसे तत्त्वज्ञानके बारेमें चर्चा करते हुअे कुछ पूछा। बापूजीने कहा, "यह काम तो अीश्वरका है। अिसका ठेका तुम क्यों लेते हो? तुम करोड़ोंमें अेक क्यों बनते हो? करोड़ोंमें ही रहो। तत्त्वज्ञान अनुभवगम्य है और अुसके अनुभवसे आनेवाली अवस्था है। तुम तो सेवा करो। लोगोंको अच्छा गुड़, अच्छा आटा, अच्छा तेल, अच्छा चमड़ा, अच्छा चावल दो और अच्छा दूध पिलाओ। अगर अुसमें कुछ पाप हो तो मेरे अूपर छोड़ दो और पुण्य हो तो तुम लो।"

१ स्वामी श्रद्धानन्दजीकी पोती और दिल्लीकी अेक प्रमुख कार्यकर्त्री।

मे मेरे अेक मित्र थे। जिनके लिअे मैंने बापूजीसे समय मांगा था। बापूजीने मेरी तरफ गंभीरतासे देखकर कहा मेरे पास अैसी बातोंके लिअे समय कहां है?

६

वर्धाको प्रस्थान

अुर्आमें अुस समय श्री रामस्वरूपजी गुप्ता खादीकार्य चला रहे थे। अुनकी जिच्छा मुझे अपने साथ काममें ले लेनेकी थी। मैं बापूजीकी अनुमतिसे ही अपना काम निश्चित करना चाहता था। अतः हम दोनों अुनके पास गये। सारी बातें सुनकर बापूजीने कहा मुझे लगता है कि तुम मेरे साथ वर्धा चलो। जिसीमें तुम्हारा हित है। मेरी मानसिक तैयारी बापूजीके साथ जानेकी नहीं थी और मनमें आशा थी कि बापूजी यहां रहनेके लिअे आशीर्वाद दे देंगे। लेकिन ीश्वरको कुछ और ही मंजूर था। मेरी जितनी हिम्मत नहीं थी कि बापूजीके निर्णयके बाद कह सकूं कि मेरी वर्धा चलनेकी जिच्छा नहीं है। जिसलिअे मुझे अुनके साथ जाना मंजूर करना ही पड़ा। गुप्ताजीको बापूजीके निर्णयसे निराशा तो हुआी लेकिन क्या करते? मैं अेक रोजके लिअे अपने घर जाकर सामान ले आया और बापूजीके साथ हो लिया। २८ जनवरी १९३५ को बापूजी वर्धाके लिअे निकले और मैं भी अुनके साथ गया। अुस समय मेरे मनकी स्थिति अेक कैदी जैसी ही थी। जब आज बापूजीके अुस रोजके निर्णयका विचार करता हूं तो लगता है कि बापूजीमें कोअी अैसी अजीब शक्ति थी जिससे वे मनुष्यके अनेक दोषोंमें से भी अुसके थोड़ेसे गुणोंको परख कर और अुसे अपने निकट रखकर दोषोंका निवारण और गुणोंका विकास कर लेते थे। कितनी दूरदृष्टि कितना स्नेह कितनी अुदारता कितनी क्षमा मांकी तरह खुद कष्ट सहन करनेकी कितनी अटूट शक्ति अुनमें भरी हुआी थी!

वर्धा जाकर बापूजीने मगनवाड़ीमें अपना डेरा जमाया और वहांकी भोजनादिकी सारी व्यवस्था जो ग्रामोद्योग-संघके हाथमें थी अपने हाथमें ले ली। वहांका रसोअीघर नौकरोंसे चलता था। बापूजीने कहा कि अब

तो आश्रमके ढंगका रसोजीघर हमें अपने सहयोगसे चलाना चाहिये। असकी जिम्मेदारी हममें से कोजी ले ले। श्री महादेवभाजीके साथ विचार करके बापूजीने यह जिम्मेदारी मुझे देनेका निश्चय किया। मैंने कहा कि भोजना लयके लिये बाजारसे सामान खरीदना मेरे स्वभावके अनुकूल नहीं है। बापूजी गंभीरतासे बोले

अैसी बात क्यों करते हो? जो काम मिल जाय खुसीको कर्तव्यप्राप्त समझकर करना चाहिये। किसीको भगवानने गीतामें 'योग: कर्मसु कौशलम्' कहा है। किसी कामकी प्राप्तिकी लालसा भी न हो। मैं तुमको यही सिखा देना चाहता हूं कि किसी भी काममें तुमको संकोच न होना चाहिये। कार्य तो बाहरकी चीज है और अीश्वर अंतरकी चीज है। बाहरी पूजा तो भक्त कर सकता है और दंभी भी। परन्तु अन्तरकी पूजा तो भक्त ही कर सकता है। बस अगर हम अंतरके पुजारी बन जायं तो हमारा काम निबट जाता है।

बापूजीके ये भुद्गार प्रेम और सहृदयतासे ही सने हुये नहीं थे बल्कि अुनमें कल्याणकी कामना थी और वे जोखिम अुठाकर भी मेरा सर्वांगीण विकास करना चाहते थे। मुझे यह सुनकर खूब आनन्द हुआ और मैंने अपनी बातको वापिस ले लिया। लेकिन बापूजीने बाजारसे सामान खरीदनेका काम मुझे न देकर श्री बलकृष्णजी चांदीवाला[1] को दिया। बापूजीने आगे कहा "यह ग्राम-व्यवसाय मेरे जीवनका आखिरी धर्म है। जिसको सुशोभित करना मेरा धर्म है। जो लोग मेरे पास रहना चाहते हैं वे आश्रम-जीवन बितायें और जिस काममें मेरी मदद करें।

श्री सत्यदेवजी शास्त्री[2] से निष्काम कर्मके बारेमें बात करते हुये बापूजीने कहा कि कर्तव्यप्राप्त कर्म अपनको निमित्त मात्र समझकर करना चाहिये। जगतमें अनेक शक्तियां अपना काम कर रही हैं। हम तो अुन शक्तियोंमें से शुद्रसे क्षुद्र शक्ति रखते हैं। यह अहंभाव रखना तो मूर्खता है कि मैं करता हूं। बापूजीने मय और पांडवोंका दृष्टान्त दिया।

---

१ दिल्लीके अेक प्रतिष्ठ कार्यकर्ता।

२ साबरमती आश्रममें बापूके पास आये थे। अुस समय महिलाश्रममें शिक्षक थे।

मैं भोजनालयके काममें कड़ाओसे नियमोंका पालन करता था। अिसलिअे भोजनालयमें मेरा रहना कुछ आश्रमियोंको अखरता था। जब मैं भोजनालयके अिस कामसे अूबने लगा तब मैंने अपनी मनःस्थिति बापूजीके सामने रखी। बापूजीने कहा :

सच्ची पाठशाला तो पाकशाला ही है। साबरमती आश्रमके आरंभमें पाकशालाका काम मेरे, काकासाहबके तथा विनोबाके हाथमें रहा। यह काम कठिन तो है ही। परन्तु अिसमें लोगोंकी मनोवृत्ति पहचाननेका अच्छा अवसर मिलता है। मानापमान सहन करना ही तो बड़ीसे बड़ी साधना है। मेरा धर्म है कि तुमको हारने न दूं। अगर तुम भागना चाहो तो भागनेके लिअे स्वतंत्र हो, परन्तु तुम्हारा भागना मुझे अच्छा न लगेगा। और आखिर तो जहां जाओगे वहां भी मनुष्य ही रहते होंगे और अुनसे भी संघर्ष होगा तो क्या करोगे? मेरा मार्ग तो लोगोंके बीचमें रहकर सेवा करनेका है। पहाड़ोंमें जंगलमें भाग जानेका मेरा मार्ग नहीं है। और वह मुझे पसन्द भी नहीं है, क्योंकि अुसमें दंभ भी हो सकता है। यह जगत हिंसामय है। अिसमें अहिंसामय बनकर रहना ही पुरुषार्थ है। तुम गायके और सुरेन्द्रके पुजारी हो, यह समझकर ही मैंने तुमको अितनी जिम्मेदारीका काम सौंपा है। अिसीमें अीश्वरका दर्शन करना और हरअेक कामको लगनसे और सूक्ष्मतासे करना बहुत बड़ी साधना है। जब तक मेरे मनमें न आ जाय कि अब तुमको किसी गांवमें जाकर सेवाकार्य करना चाहिये या तुम्हारे मनमें निश्चयपूर्वक न आ जाय तब तक यहांसे तुम्हारा हटना मुझे अच्छा न लगेगा। मानापमानका सहन करना तो बड़ा तप है। तब ही हम गीताके बारहवें अध्यायको अपने जीवनमें अुतार सकते हैं। किसी बकरेको न मारना ही अहिंसा नहीं है, सबसे प्रेम करना ही अहिंसा है। तुम्हारे काममें मैं खुश हूं। तुम्हारा सब काम मेरी नजरमें है। तुम प्रसन्नतापूर्वक रहो और अपना काम करो।

* * *

सेवाग्रामके रसोअीघरका काम कुछ समयके लिअे श्री गोविन्द रेड्डीजीने किया था। अुनके नाम बापूजीने जो पत्र लिखा था अुसमें भी यही भाव व्यक्त हुअे हैं।

चि० गोविन्द रेड्डी

तुम्हारा पत्र मिला था। अुत्तर न दे सका। काम जो तुम कर रहे हो अुसे अभी तालीमका समझो। स्वामीका काम सबसे कठिन है ऐसा मान जाव। अनेक स्वभावके लोगोंको प्रसन्न रखना फिर भी नियम पालन करवाना आसान नहीं है। अिस कामके लिये शिक्षाक्रम चाहिये। यह कार्य कैसे करना सो तो मैं नहीं बता सकता हूं। अनुभवसे तुम सीखोगे। लिखा है, तुम्हारेमें अुदार दिल सहन शक्ति विचारशीलता चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

७

मगनवाड़ीके प्रयोग और पाठ

कार्यारम्भ

सन् १९३४ में बापूजीके मनमें जब ग्रामोद्योग-संघकी स्थापनाका विचार आया तो प्रश्न अुठा कि अुसका मुख्य केन्द्र कहां रखा जाय। जमनालालजीके मनमें बहुत दिनोंसे चल रहा था कि किसी तरह बापूजीको वर्धामें बसाया जाय। अब अिस अवसरका लाभ लेकर अुन्होंने तुरन्त हाथ फैला दिया और कहा कि अुसके लिये वर्धा सबसे अच्छी जगह है क्योंकि यह हिन्दुस्तानके मध्यमें है और ग्रामोद्योग-संघके लिये मैं अपना बगीचा तथा मकान और सब प्रकारकी सुविधा देनेको तैयार हूं। बापूजीने अुसे स्वीकार किया और जमनालालजीने अपना सुन्दर बगीचा और मकान ग्रामोद्योग-संघको समर्पण कर दिया। अुसका नामकरण मगनलालभाअी गांधीके नामसे मगनवाड़ी किया गया। अिसलिये मगनवाड़ी बापूजीका मुख्य क्षेत्र बना और ग्रामोद्योग संघको व्यवस्थित और लोकप्रिय बनानेकी दृष्टिसे बापूजीने अपना डेरा मगनवाड़ीमें डाला। बापूजी मगनवाड़ीमें करीब डेढ़ साल रहे। अितने समयमें ग्रामोद्योगोंके पुनरुद्धार, ग्राम-सफाई, भोजनके प्रयोग, रचनात्मक कार्यकर्ताओंके साथ हुई चर्चाओं — अनेक ऐसे प्रसंग हैं जिनसे बापूजीके मगनवाड़ी निवासका

अेक स्वतंत्र बड़ा ग्रंथ बन सकता है। अिन प्रसंगोंको सुन्दर ढंगसे तो महादेवभाअी[1] ही लिख सकते थे। शायद अुनकी डायरीमें से कुछ मिलें भी। कुमारप्पाजी[2] कुछ लिख सकते हैं। मेरा तो सिर्फ भोजनालयके कारण या वरेसू कारणोंसे बापूजीके साथ जो थोड़ा-बहुत सम्बन्ध आता था अुसीके बारेमें मैं कुछ अुदाहरण यहां दूंगा।

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है बापूजीने कार्यारंभ यहांके रसोअीघरका कार्य अपने हाथमें लेकर किया। अुन्होंने लोगोंको हाथ-पिसा आटा हाथ-कुटा चावल वालीका ठेक बिरयानि खानेका और अपने हाथसे ही रसोअी बनानेका पाठ देना आरम्भ किया। अिस प्रकारका रसोअीघर चलानेका मेरे जीवनमें यह पहला प्रसंग था। विविध प्रकारके लोग आते थे समय-बे-समय भी आते थे। अुन सबका आतिथ्य करना और अुन सबको संतोष देना बड़ा कठिन काम था। मगनवाड़ीमें भिन्न भिन्न रुचिके लोग थे। आटा सब लोगोंको बारी-बारीसे पीसना पड़ता था। खाना बनाने और बरतन मलनेकी भी बारी थी लेकिन अुसमें बहुत बाधायें आती थीं।

बापूने तेलकी घानी भी यहीं शुरू कर दी थी जिसकी व्यवस्था श्री झवेरभाअीने की थी। बादमें अुसका कार्य प्रकाशबाबूको दिया गया था जो ट्रिब्यून के सुपसंपादक थे लेकिन अुसे छोड़कर सत्संगके लिअे बापूके पास आ गये थे। लोगोंको रहनेके लिअे जगहकी भी तंगी थी। पश्चिमके दरवाजेके अुत्तरवाले कमरेमें सब लोग रहते थे। और अुसका नाम धर्मशाला पड़ गया था। कुछ दिन काकासाहब कालेलकर भी अुसमें रहे थे। मंसालीभाअी[3] का

---

[1] श्री महादेव देसाअी बापूजीके सेक्रेटरी।

[2] श्री जे सी कुमारप्पा प्रसिद्ध अर्थशास्त्री। अुस समय ग्रामोद्योग-संघके मंत्री।

[3] १ १० से साबरमती आश्रमके अेक प्रमुख आश्रमवासी। जिनका विस्तृत परिचय सेवाग्राम आश्रमके अुद्योग नामक प्रकरणमें आयेगा।

[4] श्री जयकृष्ण मंसाली। साबरमती आश्रमसे बापूजीके साथी। अुन्होंने १२ बरसका मौन लिया था। अुन्होंने कभी लंबे लंबे अुपवास व भोजनके विचित्र विविध प्रयोग किये हैं। सन् १९४२ के आन्दोलनमें अुन्होंने सबसे लम्बा अुपवास किया था जो ६१ दिन तक चला था। जिसका वर्णन अगस्त-आन्दोलन और आश्रमवासी नामक प्रकरणमें आयेगा।

कर्मयोग यहींसे शुरू हुआ था। जब वे भटकते भटकते बापूके पास आये तब अुनकी शारीरिक अवस्था बहुत खराब थी। पैर सूजे हुअे थे। दांत बिलकुल निकम्मे हो गये थे क्योंकि वे केवल कच्चा आटा ही घोलकर पीते थे। बापूने अुनको धूपमें सिकी हुअी रोटी खाने और चरखा कातनेको राजी कर लिया और वहीं रहनेके लिये कहा। वे रह गये किन्तु अुस समय वे बापूसे ही बात करते थे और बाकी समय मौन रखते थे।

छोटे-छोटे कामों पर भी बापू बहुत बारीकीसे ध्यान देते थे। मीराबहन बापूकी व्यक्तिगत सेवा करती थी। रसोअीघरमें नित-नये अैसे प्रश्न आते थे जिनके लिये मुझे बापूके पास जाना पड़ता था। मेरे खिलाफ शिकायतें भी बापूके पास काफी आया करती थीं। भोजनका क्रम यह था

सुबह — नाश्तेमें दलिया और १ तोला दूध।
दोपहरको — २ तोला दही या छाछ और रोटी तथा साग।
शामको — २ तोला दूध और खिचड़ी या चावलके साथ साग।

* * *

अब मैं यहां कुछ अैसे प्रसंग देता हूं जिनसे मुझे बापूके विविध पहलुओंका ज्ञान हुआ जीवनमें मैंने बहुत बहुत सीखा और अुसके प्रकाशमें अपने जीवनको गढ़नेका प्रयत्न किया।

१ पहला पाठ

अेक रोजकी बात है। दलिया खतम हो गया था। श्री तुलसी मेहरजी नेपालसे कुछ खानेकी चीजें लाये थे। अुन्होंने कहा कि सवेरे नाश्तेमें सब लोगोंको बांट देना। दलिया था नहीं और ये चीजें मिल गयीं अिस कारण मैंने दूसरे दिन नाश्तेमें लोगोंको दूध तथा मेहरजीकी लाअी हुअी चीजें दीं। शामको घूमते समय बहनोंने बापूके सामने बात निकाली कि आज सुबह नाश्तेमें दलिया नहीं बना था। बापू चौंके कि यह कैसे हो सकता है?

शामकी प्रार्थनाके बाद मेरी पेशी हुअी। बापूने पूछा क्या बलवन्तसिंह आज दलिया क्यों नहीं बना था? मैंने सब परिस्थिति और कारण बताया। अिस पर बापूने लम्बा भाषण सुनाया। कहा "देखो मन ग्रामोद्योग-अनुसार रसोअीघर जिस तरह चलना था वह बन्द कर दिया है और सबको खाना

खिलानेकी जिम्मेदारी अपने सिर पर ली है। अुनको मैंने बता दिया है कि मैं तुमको क्या क्या खिलाअूँगा और वह सब मैं तुम्हारे मारफत करवाना चाहता हूँ। मने अुन्हें खिलानेका जो वचन दिया है अुसमें अगर अुनकी अनुमति लिये बिना कुछ परिवर्तन करूं तो मेरे लिये यह अुचित नहीं है। तुम्हारी मेहरकी चीजें भोजनके समय या नाश्तेमें अूपरसे दे सकते थे लेकिन दलिया तो लोगोंको देना ही चाहिये था। दलियाके बदलेमें दूसरी चीजें देकर हम दलिया न बनानेका बचाव नहीं कर सकते। जो लोग दलिया ही पसंद करते हैं और दूसरी चीज नहीं लेते अुनके लिये तुम्हारे पास क्या जवाब है? अगर दला हुआ दलिया नहीं था तो मुझसे तो कहना था। मैं खुद दलनेमें मदद करता।

शिकायत करनेवाली बहनों पर मुझे गुस्सा तो आया पर बापूका कहना ठीक लगा। मैंने अपनी भूल कबूल की और कहा कि आगे जब कभी अैसा प्रसंग आयेगा तब आपकी मदद जरूर लूँगा पर आगे अैसी भूल नहीं होगी।

लोग ठीक समय पर अपने हिस्सेका आटा नहीं पीस पाते थे। अेक रोज आटा खतम हो गया तो मैं सीधा बापूके पास गया और बोला कि आज आटा नहीं है और कोअी पीसनेवाला भी नहीं है। मैं चाहता तो खुद पीस सकता था और कोशिश करके किसी दूसरेकी मदद भी ले सकता था। लेकिन मेरे मनमें तो अुस रोज बापूने कहा था अुसकी कुछ चिढ़ थी। अिसलिये मैं अुनकी परीक्षा लेना चाहता था। बापूने कहा "चलो मैं चलता हूँ पीसनेके लिये।" बापू आये और मेरे साथ चक्की पर बैठ गये। बस हमारी चक्की चलने लगी!

बापू मेरे साथ चक्की पीस रहे थे अिसलिये अेक ओर तो मनमें अिस बातकी खुशी हो रही थी कि मैं बापूको चक्की पर कैसे घसीट लाया आज बापू मेरे साथ चक्की पीस रहे हैं। परन्तु दूसरी ओर मनमें दया और शर्म आ रही थी। यह तो मैं भी कर सकता था। बापूजीको क्यों कष्ट दिया? अुस समय श्री काले जो अेक लाखके अिनामवाले चरखेका प्रयोग कर रहे थे वहीं थे। वे अेक कैमरा लेकर बापूजीका फोटो लेने लगे। मैं नहीं जानता कि वह चित्र कहीं आया है या नहीं या आया है तो कैसा आया है। लेकिन मेरे मनमें अुसे प्राप्त करनेकी अिच्छा सदा बनी रही है।

सचमुच ही मेरे लिअे यह बापूजीका दिया हुआ अेक बड़ा पाठ था। जगतके अेक महान पुरुषके साथ चक्की पीसनेका सौभाग्य मुझे मिला। बापूजीकी कर्तव्य-निष्ठाका और छोटे छोटे कामोंका भी वे कितना महत्व देते हैं अिसका ज्ञान मुझे अिस बातसे हुआ। थोड़ी देरमें मैं हारा और मैंने बापूजीसे कहा कि आप जाअिये मैं खुद ही पीस लूंगा। बापूजीके पास कामका तो पहाड़ पड़ा था। बोले "हां मेरे पास तो बहुत काम पड़ा है। और वे चले गये। अुस रोजसे मैंने अिस बातकी सावधानी रखी कि अिस प्रकारका प्रसंग कभी न आवे। लेकिन अैसे प्रसंग और भी आये जब बापूजीने कामकी भीड़में भी दूसरोंके काममें हाथ बंटाया।

२ भगवान कृष्णका स्मरण

अेक दिन बापूजीने अेक योजना निकाली कि सबके जूठे बरतन बारी बारीसे दो-तीन आदमी मलें और रसोअीघरके पकानेके बरतन दो आदमी बारी बारीसे अलग मलें। अिससे लोगोंमें आपसमें प्रेमभाव बढ़ेगा अेक-दूसरेके बरतन मलनेमें जो घृणा होती है वह मिट जायगी और सबका समय भी बचेगा। अुन्होंने अिसका महत्व मुझे समझाया। लेकिन अुनकी यह बात मेरे गले न अुतरी। मैंने कहा कि सबके जूठे बरतन अेकसाथ मलनेमें काफी अव्यवस्था होनेका डर है। बापूने कहा कि अव्यवस्थामें व्यवस्था लाना ही हमारा काम है। पहली बारी मेरी और बाकी। बस आको लेकर बापूजी बरतन मलनेकी जगह जाकर बैठ गये। सबसे कह दिया कि थाली यहां रख दो और हाथ धोकर चले जाओ। पहले तो लोग घबराये लेकिन बापूका रुख देखकर सब बरतन रखकर चले गये। बस बापू और बा दोनों बरतन मलनेमें जु॰ गये। मैं रसोअीघरके काममें था। मुझे वे बा नहीं कह सकते थे। अिसलिअे मैं अुनकी मददमें चला गया।

जब बापू और बा सबके जूठे बरतन साफ कर रहे थे तब मेरे मनमें भगवान कृष्णकी याद आ रही थी और मैं सोच रहा था कि युधिष्ठिरके यज्ञमें भगवान कृष्णने जूठन अुठानेका काम क्यों लिया होगा। मनमें आनन्द और लज्जाका द्वन्द्व चल रहा था। लेकिन बापूजी और बाको हम अुस काजसे कैसे विरत करें अिसका रास्ता नहीं सूझ रहा था। साथ ही साथ मनमें यह भाव भी पक्का हो रहा था कि जब बापू और बा भी अिस तरहका काम कर सकते हैं तो हमारे मनमें किसी भी कामके लिअे छोटे-बड़ेका भेद नहीं

रहना चाहिये। बीच बीचमें था और बापूका मनोरंजन भी चल रहा था। दोनोंमें होड़ लग रही थी कि देखें कौन अच्छा साफ करता है। बापूजी बरतन साफ करते जाते और कहते "क्यों बलवन्तसिंह, कैसा साफ हुआ है? तुम क्यों हिम्मत हारते हो? आदमी निश्चय करे तो दुनियामें कौनसा अैसा काम है जो वह न कर सके? आखिर हमारे घरोंमें क्या होता है? स्त्रियां ही घरके सब जूठे बरतन साफ करती हैं न? यह हमारा बड़ा कुटुम्ब है। और हमें स्त्री-पुरुषका भेद मिटाना है। अिसीलिये तो मैंने रसोअी-घरका चार्ज किसी बहनको न देकर तुमको दिया है। साबरमतीमें भी मैंने रसोअीका चार्ज विनोबाको दिया था। मैं मानता हूं कि स्त्री-पुरुषके कामोंके विषयमें जो भेद है वह हमारे आश्रममें तो रहना ही नहीं चाहिये। और खास तौर पर रसोअीघर तो पुरुषोंको ही चलाना चाहिये। मैंने अपने जीवनमें अिस प्रकारके अनेक प्रयोग किये हैं। और मैं अिस नतीजे पर पहुंचा हूं कि सामूहिक रसोअीघर चलानेमें जो कुटुम्ब-भावना बढ़ती है वह अन्य प्रकारसे नहीं बढ़ती। जो रसोअीघर चलाता है अुसकी जिम्मेदारी बहुत बड़ी होती है। सब चीजोंको व्यवस्थित और स्वच्छ रखना और जितने भोजन करनेवाले हैं अुनको भगवान समझकर प्रेमसे खिलाना यह आध्यात्मिक प्रगतिकी बड़ी साधना है। तुम अिसमें पास होगे तो मैं समझूंगा कि तुम सेवा कर सकते हो।

मेरे मनमें अेक तरफ तो यह चल रहा था कि जल्दीसे जल्दी बापूजी बरतन छोड़कर यहांसे चले जायं और दूसरी तरफ यह चल रहा था कि बापूजी जितनी देर तक यहां रहें अुतना ही अच्छा है। क्योंकि मुझे दोनों प्रकारके पाठ मिल रहे थे। अगर मैं चित्रकार होता तो अुस दिनका चित्र बनाकर लोगोंके सामने रखता। बापूका अिस प्रकारका चित्र मैंने अेक भी नहीं देखा है और शायद किसीके पास होगा भी नहीं।

यह लिखते समय मेरे मनमें जो भाव अुठ रहे हैं अुनको शब्दबद्ध करना मेरे सामर्थ्यसे बाहरकी बात है। बापू कहां और हम कहां? हमको अुन्होंने कितने कितने कष्ट सहन करके कैसे कैसे अुपयोगी और महान पाठ पढ़ाये! लेकिन हम पूरी तरहसे अुनके पाठोंको हजम नहीं कर पाये। अब मनमें आता है कि दो-चार सालके लिये बापूजी फिर आ जायें तो अुनसे खूब सीखें। परन्तु अब पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गयीं खेत? गया

समय हाथ नहीं आता। मेरे मनमें यह कल्पना आती ही नहीं थी कि कभी बापूजी हमसे अलग होनेवाले हैं। लेकिन जो सारी दुनियाका नियम है वही हम पर भी लागू हुआ।

३ पहले खुद फिर दूसरे

तेलघानी बापूजीके कमरेके पीछे ही चलती थी और तिल आदिकी सफाई बापूजीके सामनेके बरामदेमें होती थी। तिलकी सफाईका काम बा और दूसरी बहनें करती थीं। अेक रोज पूज्य बापूने मुझसे कहा "बलवन्त देखो यह तिल बहुत बारीक है और उसमें बारीक कचरा है। मेरी आंखसे नहीं दीखता है। तुम अेक भाअीसे सफाई करा दो न।" मैंने बड़े उत्साह और आनन्दके साथ हां कहा।

कुछ समय अेक बोरेकी सफाई करानेके लिये मजदूरनी दो या चार आने पैसे लेती थी। मैंने तुरन्त ही अेक भाअीको तिल साफ करनेके लिये लगा दिया और मनमें खुश होने लगा कि मैंने काफी मदद की। मुझे पता नहीं था कि थोड़ी ही देरमें आके और मेरे गालोंके ऊपर बापूका हंटर पड़नेवाला है।

बापू स्नानके लिये या अन्य किसी कामके लिये कमरेसे बाहर निकले। मजदूर भाअीको तिल साफ करते देखकर बोले "इस भाअीको किसने लगाया?" अब किसीके मनमें घंटी बांधनेका सवाल खड़ा हो गया। जवाब कौन दे?

मैंने डरते डरते धीरेसे कहा "बापूजी मैंने लगाया है।"

बापू बोले "क्यों? मैंने तो यह काम बाको और दूसरी बहनोंको सौंपा है। तब तुम उसके बीचमें क्यों पड़े?"

मैंने घबराते हुअे कहा कि तिल बहुत बारीक है और उसमें बारीक कचरा है। यह कचरा बाको नहीं दीखता है। फिर उनको सफाईमें बैठ भी ज्यादा नहीं सकेंगे।

बापू गंभीर हो गये और बोले "ठीक है तो दूसरा सब काम छोड़ कर मैं पहले तिल साफ करूंगा।" वे सूप लेकर तिल साफ करने बैठ गये। यह देखकर मैं तो पसीना पसीना हो गया।

पासवाले कमरेमें बा हमारा संवाद सुन रही थीं। शायद अुनके मनमें भी मेरे अूपर दया और बापूके अूपर गुस्सा आ रहा होगा। वे थोड़ी देरमें बाहर आयीं और दुखी मनसे बापूके हाथसे सूप छीनकर बोलीं — आप अपना काम करें। हम साफ कर लेंगे। बापू चले गये और बा दिन साफ करने लगीं। अुस समय मुझे भी यह सोचकर बापूके अूपर बड़ा गुस्सा आया कि छोटीसी बातके लिअे ये बाको कितना कष्ट देते हैं। लेकिन जिसको मैं छोटी समझती था वह बापूके लिअे बड़ी बात थी। वे तो गृह-अुद्योग और ग्रामोद्योगके लिअे ही यहां बैठे थे। अगर अुसको सबसे पहले बात न करते या खुद न करते तो दूसरोंसे करानेके लिअे कहनेका हक कहांसे लाते?

४ किफायतशारीका अनोखा नमूना

अेक बार मगनवाड़ी वर्धामें कांग्रेस वर्किंग कमेटीकी बैठक हुअी। बापूजीने भोजनके लिअे सबको निमंत्रण दिया। मुझे बुलाकर कहा कि देखो आज जितने मेहमान आनेवाले हैं। अुनके भोजनका प्रबंध करना है।

मैंने कहा — मेरे पास जितनी थाली-कटोरी नहीं हैं। वे बोले — बड़के पत्ते तोड़ लाओ और अुनकी पत्तलें बना लो। कटोरियोंके स्थान पर मिट्टीके सकोरे अिस्तेमाल करो। आखिर देहातके लोग क्या करते हैं? जब अुनके यहां मेहमान आते हैं तो क्या वे नये बरतन खरीदते हैं? हम भी तो यहां गरीबोंका व्रत लेकर ही बैठे हैं न? हम तवंगर तो हैं नहीं जो नये नये बरतन खरीदते रहें। और देखो जो मिट्टीके सकोरे हैं वे भी खानेके बाद फेंक देनेके लिअे नहीं हैं। अुन सबको धोकर, साफ करके फिर अग्निमें शुद्ध करके रख देना।

पत्तलकी बात तो मेरी समझमें आ गयी लेकिन मिट्टीके सकोरोंको काममें लेकर और अग्निमें शुद्ध करके फिर काममें लेनेकी बात मेरे मनको नहीं पटी। क्योंकि अुत्तर-प्रदेशमें तो यह रिवाज है कि मिट्टीका बरतन अेक बार काममें लिया और फेंक दिया। और यही संस्कार मेरे चित्त पर जमा हुआ था। अिसलिअे अुसे फिर काममें लानेसे मुझे घृणा थी। अिस पर बापूजीने अेक लंबा भाषण सुनाया।

बापूजीने कहा — देखो कुम्हार अुस पर कितनी मेहनत करता है! अुसे बनाता है, पकाता है, अुस पर रंग चढ़ाता है। और हम अेक ही बार अिस्तेमाल करके अुसे फेंक दें यह तो हिंसा है। सामानकी बरबादी तो है

हो। मुझे अब ठीक याद नहीं है, लेकिन पेरिनबहन या गोशीबहनका नाम लेकर बापूने कहा कि अुन्होंने मुझे बताया है कि अिस तरहसे मिट्टीके बरतनका अुपयोग हो सकता है और वे करती भी हैं। तो हम भी क्यों न करें?

बापूजीकी बात पूरी तरह तो मुझे नहीं जंची लेकिन मैंने प्रयोग करना कबूल किया। सकोरे दिल्लीसे हमारे साथ आये थे। अब सब लोग खाने बैठे तो मैंने सूचना की कि मिट्टीके बरतन कोओी फेंक न दें। धोकर अेक तरफ रख दें। अुनका फिर अिस्तेमाल किया जायगा। अिस पर राजेन्द्रबाबू चौंक कर बोले "अुन्हें फिर अिस्तेमाल किया जायगा?" बापू अुनके पास ही बैठे थे। अुन्होंने कहा "हां अिनको फिरसे अग्निमें तपाकर शुद्ध किया जायगा। तब दुबारा अिनका अुपयोग करनेमें कोओी हर्ज नहीं है।" बापूकी यह बात अुनको अटपटी लगी लेकिन वे कुछ बोल नहीं सके। मैंने सब बरतन अिकट्ठे किये और फिरसे अुन्हें अग्निमें तपाकर अुनका अुपयोग किया। अनुभव यह आया कि जिन बरतनोंमें दूध या दहीका अुपयोग किया गया था अुनकी चमक भी हो गयी क्योंकि अुनमें चिकनाओीका शोषण हो गया था और अिस कारण अुन पर रोगन-सा फिर गया था। पानीके बरतनोंमें कुछ फर्क नहीं हुआ और वे बिलकुल कोरेकी तरह निकले। तबसे मिट्टीके बरतनोंका अकसर मैं पानीके लिये ही अुपयोग करता था। और वे धूप कर लिये जाते थे। सकोरों-पत्तलोंका अुपयोग मगनवाड़ीमें अकसर होता था।

५ जीवनका काम और आशीर्वाद

मैं प्रारम्भमें अेक बात कहना भूल गया। जब हम वर्धा पहुंचे तब पहले तो बापूजीने मेरे साथ घूम कर मगनवाड़ीकी सारी जमीन मुझे बताओी और कहा कि बैलके बिना हाथ-पैरसे तुम जितना काम कर सको अुतनी जमीन ले लो और अुसमें हाथसे खोदकर सागभाजी पैदा करो। तुम तो किसान हो न? और सब किसानोंके पास बैल भी कहां होते हैं? हम तो गरीब किसान हैं। अिसलिये हमारे पास कुछ भी न हो तो भी हम अपनी सागभाजी कैसे पैदा कर सकते हैं यह हमें सीख लेना चाहिये।

मगनवाड़ीके कुओंके पास ही जमीनका अेक छोटासा टुकड़ा खाली पड़ा था। अुसे मैंने और बापू दोनोंने पसन्द किया और मैं फावड़ा लेकर

अुसमें जुट गया। आज सोचता हूँ तो ध्यानमें आता है कि बापूने अुस जमीनके टुकड़ेमें कार्यका आरंभ करानेके साथ साथ मेरे जीवनका कार्य और अपना आशीर्वाद दोनों ही मुझे दे दिये थे। महान पुरुषोंकी दृष्टि कितनी दीर्घ होती है, जिसकी कल्पना अुस समय तो नहीं हुअी थी। किन्तु आज हो रही है। लोग किसी बड़े कामका श्रीगणेश करानेके लिये और आशीर्वाद लेनेके लिये किसी बड़े आदमीको बड़े प्रयत्नसे बुलाते हैं। लेकिन मेरे कामका श्रीगणेश बापूने खुद आग्रहपूर्वक प्रेमभरा आशीर्वाद देकर कर दिया। बापूकी छोटी छोटी बातोंमें कितना रहस्य भरा था यह अुस समय ध्यानमें नहीं आता था। अब जब अुनका स्मरण आता है तो अेक अेक चीज स्मृतिपट पर चलचित्रकी तरह आकर सामने नाचने लगती है। जिससे आनन्द व दुख दोनों होते हैं। आनन्द जिस बातका कि भगवानने हमको अैसा सुअवसर दिया कि बापूजीके जितने निकट रहकर हमें सब सीखनेको मिला और दुख जिस बातका कि तब हमने अुस वस्तुको आजकी तरह क्यों नहीं समझा। सचमुच भगवान मनुष्यके जीवनमें कैसे कैसे खेल खेलता है? लेकिन हम अुनका रहस्य नहीं समझ पाते।

मैं अुस टुकड़ेमें रोज खोदता क्यारी बनाता खाद डालता और कुछ न कुछ सागभाजी लगाता। जब वह अुग जाती तो बापूको दिखाने लगता। बापू देखते और आनन्दसे मुक्त हास्य करते। कहते "मेरे खाने लायक कब होगी?" मैं अुतावला हो जाता और रात-दिन चिन्ता करता कि जल्दी बड़ जाय तो बापूको खिलाअूं। जब थोड़ी बड़ जाती तो मैं पत्ते लेकर जाता और कुछ धोकर बापूजीके सामने रख देता। अुस समय बापूजीको और मुझे जो आनन्द होता था अुसकी तुलना मां और बच्चेके पारस्परिक प्रेमसे ही की जा सकती है।

९. मामूकाका

बापूजीके आसपास पिताजीकी बरात तो थी ही लेकिन अुनमें मामूकाकामें तो सचमुच पिताजीके ही मुख्य गुण थे। वे कच्छके थे। बापूजीके प्रति अुनकी अपार श्रद्धा थी। अुमर ६० से अूपर थे। बापूजीके पास आये और बोले "मुझ तो आपके पास सेवा करना है। जिस कामको कोअी न करे अैसा काम मैं करूंगा और सबके बाद जो बच जायगा अुससे अपना गुजर कर लूंगा।" अुनके पास कुछ पैसा था। वह भी अुन्होंने बापूजीको

देना चाहा। असुसका क्या हुआ मुझे पता नहीं चला। बापूजीने कहा आप मगनवाड़ीमें चलनेवाले कामोंमें से अपनी अनुकूलताका काम पसन्द कर लें।" अन्होंने सफाईका काम पसन्द किया। सुबह झाड़ू और बाल्टी लेकर निकलते और मगनवाड़ीके कोने कोनेमें फिर जाते। वहां भी कचरा और गंदगी पाते वहींसे अपनी बाल्टीमें डालकर असे अुचित स्थान पर पहुंचा देते। जब सब लोग भोजन करके चले जाते तो मेरे पास आकर कहते "भाभी जो कुछ बचा हो मुझे दे दो। मैं अुनका ध्यान तो रखता ही था। लेकिन मगनवाड़ीमें मेहमानोंकी अितनी अनिश्चितता रहती थी कि कब कितने मेहमान आ जायेंगे जिसका कोअी ठिकाना नहीं था। जिसलिअे कभी कभी मैं कठिनाअीमें पड़ जाता था। लेकिन व तो अवधूत ठहरे। कहते अरे किसीका जूठा तो बचा होगा? और जूठन डालनेकी बाल्टीसे जूठन निकाल कर के खाते। मुझे जिससे दुःख और घृणा भी होती। कपड़ा मात्र लंगोटी रखते थे। ओढ़ने-बिछानेके बिस्तरका तो सवाल ही नहीं था। चटाअीका ही कोअी टूटा टुकड़ा लेकर अुसी पर पड़े पड़े रहते। और सारी मगनवाड़ीका समाचार बापूजीको सुना आते। अुनके भोजनकी जिस अव्यवस्थासे मुझे बुरा लगता। मैंने बापूजीसे कहा। बापूजी बोले "भानुबापा तो अवधूत है। अुसकी सादाअी और अलमस्तकी तो मुझे अीर्षा होती है। लेकिन अुसके भोजनकी अव्यवस्था मुझे पसन्द नहीं है। मैंने अुसे समझाया भी। लेकिन वह बेचारा भी क्या करे? अपनी आदतसे लाचार है। अुसकी सेवा और त्याग कितना बड़ा है! अूपर व्यवस्था भी अुसके जीवनमें आ जाय तो सोनेका आदमी है।

७. त्यागका पाठ

अुसी समय बापूजीके ज्येष्ठ पुत्र हरिलाल गांधी भी बापूजीके पास आ गये थे। वे कहते थे कि मेरी भूल मेरी समझमें आ गयी है और अब मैं बापूजीके पास ही रहूंगा। बापू तो महान पुरुष थे। म और हरिलालभाअी अेक ही कमरेमें रहते थे। अुस कमरेमें म पहलेसे रहता था जिसलिअे मैं अुस पर अपना ज्यादा हक समझता था। हरिलालभाअीने चाहा कि वह कमरा अुनके लिअे खाली कर दिया जाय और मैं कहीं दूसरी जगह चला जाअूं। मैंने कहा कि यह नहीं हो सकता। यह शिकायत बापूजीके पास गयी। अुस समय बापूका अेक महीनेका मौन चल रहा था।

बापूने मुझे बुलाया और पूछा "तुम्हारा और हरिलालका क्या झगड़ा है?" मैंने सब बताया। बापूने लिखा

"चि॰ बलवन्तसिंह

मेरे साथ रहना और मेरे साथ रहनेवालोंसे प्रेम और परिचय नहीं रखना यह कहां तक निभ सकता है? यदि यहां रहनेसे आनन्द आता है तो तुमको सब अच्छे लगने चाहिये और है भी अच्छे। मेरे साथ रहनेमें और सीखना ही क्या है? सबकी सेवा करना है, जिसलिये सबसे प्रेम करना है अैसा निश्चय करो। आप मले तो जग मला। अेकान्तवासके लिये कमरा कैसा? अेकान्तवास तुम्हारे लिये वृक्षोंके नीचे हृदयकी गुफामें है।

तुम मुझको कमरा दे दो क्योंकि तुम तो पेड़के नीचे भी पड़ सकते हो। तुम मुझे छोड़कर भागनेवाले नहीं हो लेकिन हरिलाल तो मुझसे दूर दूर भागता है। अब मुझके दिलमें तुम बैठा है और मेरे पास आया है, तो छोटी छोटी बातोंके लिये मैं उसको तंग करना नहीं चाहता हूं। अगर वह टिक जाय तो बहुत बड़ी बात होगी। सबसे बड़ा सतोष तो आको होगा। बाकी यह बड़ी शिकायत है कि मैं हरिलाल पर ध्यान नहीं देता। लेकिन मैं अपने ढंगसे ही ध्यान दे सकता हूं। मेरे मनमें मेरे और परायेका भेद नहीं है। जो मेरे रास्ते चलता है वह मेरा है। दूसरे रास्तोंसे चलनेवालोंका मैं द्वेष नहीं करता लेकिन उनकी मदद भी नहीं करता। जिसलिये तुमसे मैं त्यागकी आशा रख सकता हूं। हरिलालसे नहीं।"

४–४–१५ बापूके आशीर्वाद

मैं बापूकी बात समझ गया और वह कमरा हरिलालभाजीके लिये मैंने खाली कर दिया। उस दिनसे मैं सचमुच ही पेड़के नीचे रहने लगा। बापूजीने मुझे पेड़के नीचे रहनेके लिये क्यों कहा उसका मर्म मैं पेड़के नीचे रहकर समझा। वास्तवमें जिस चीजकी योग्यता मुझमें नहीं थी उसकी आशा और शुभ कल्पना मेरे विषयमें करके बापूजीने मुझे किस तरह प्रोत्साहन दिया जिस बातका जब मैं विचार करता हूं तो मेरा हृदय गद्‌गद हो जाता है और मेरा मस्तक बापूजीके चरणोंमें झुक जाता है।

बापूजीने मुझ आपाजी साधु श्री केशवभाजी[1] और श्री राजकिशोरी[2] बहनको हिन्दी पढ़ानेका काम सौंपा। केशवभाजी टूटी-फूटी अंग्रेजी तो जानते थे लेकिन वैसे जापानीके अलावा और कुछ नहीं जानते थे। मैं भी हिन्दी और गुजरातीके अलावा और कुछ नहीं जानता था। असलिओ भुसी पेड़के नीचे अिशारोंसे काम लेकर हमारी हिन्दी पाठशाला शुरू हुआी।

अिसी अनुसंधानमें बापूजीने अेक ही रोजमें दो पत्र और लिखे। मौजमातम्मका काम कितना कठिन था और मुझ पर क्या बीतती थी असका वर्णन अिन पत्रोंसे होता है

चि बलवन्तसिंह

१ शामके लिओे रोटी न रहे तो बेसनकी हमेशा थोड़ी बनानी चाहिये। कल जो हुआ वह हमारे लिओे शोभाप्रद नहीं था।

२ अब जो लकड़ी जलती है भुसमें और कुकरके पहले जलती थी भुसमें कुछ फरक है?

३ राजकिशोरीको आज वख्त था अेक हिन्दी सिखानेमें दे सकते हैं?

४ कालेवाले कमरेके बारेमें क्या है?

५. बड़े प्लाटमें भाजी होगी?

४-४-३५ बापूके आशीर्वाद

चि बलवन्तसिंह,

तुम्हारी अस्वस्थता अच्छी नहीं लगती है। यदि तुमको यहांका वातावरण् अनुकूल नहीं है और मन आनन्दित नहीं रहता है, तो मैं अकालतरसे रसोड़ेमें तुमको रखना नहीं चाहता हूं। कहो तो कोओी दूसरा काम दे दूं। सुरेन्द्रके साथ मशविरा करो।

---

१ आपाजी साधु जो बापूजीके परम भक्त थे।

२ श्री बाबू त्यागी मेरठ जिलेके निवासी थे और साबरमती आश्रममें बहुत दिनोंसे रहते थे। राजकिशोरीबहन भुनकी पुत्रवधू थीं।

अेकान्तवासके लिअे कमरा कैसे? अेकान्तवास तुम्हारे लिअे पृथ्वीके नीचे — हृदयकी गुफामें है। विश्वबन्धुजीका मिलना अुचित है। अुनका यहाँ आना निरर्थक समझता हूँ।

४-४-३५ बापूके आशीर्वाद

८. काम करो तो खाना मिलेगा

अेक रोज अेक नौजवानने आकर मुझसे कहा कि "मुझे दो तीन रोज ठहरकर यहाँ सब देखना है। बापूजीसे मिलना है। मेरे पास खाने-पीनेके लिअे कुछ भी नहीं है। यहीं भोजन करूँगा।" मैंने जाकर बापूजीसे कहा। बापूजीने अुनको बुलाया और पूछा कि वे कहाँके रहनेवाले हैं और किस समय कहाँसे आ रहे हैं। अुन्होंने कहा "मैं बलिया जिलेका रहनेवाला हूँ और कराची कांग्रेस देखने गया था। मेरे पास पैसा नहीं था अिसलिअे कभी गाड़ीमें बिना टिकट कभी पैदल मांगते-खाते गया और वैसे ही आया।" बापूजीने गंभीरतासे कहा "तुम्हारे जैसे नौजवानको यह शोभा नहीं देता। अगर पैसा पास नहीं था तो कांग्रेस देखनेकी क्या जरूरत थी? अुससे लाभ भी क्या हुआ? बिना मजदूरी किये खाना और बिना टिकट गाड़ीमें सफर करना चोरी और पाप है। यहाँ बिना मजदूरी किये खाना नहीं मिल सकता।" अुनका नाम जयदेव था। देखनेमें अुत्साही और तेजस्वी मालूम होते थे। वहाँकी कांग्रेसके कोअी कार्यकर्ता थे। अुन्होंने कहा "अच्छा मुझे काम दीजिये। मैं काम करनेके लिअे तैयार हूँ।" बापूजीने मुझसे कहा "अुनको कोअी काम दो। जो आदमी हृष्टपुष्ट है और काम मांगने आता है अुसको काम मिलना ही चाहिये। और अुसके बदलेमें खाना मिलना चाहिये। यह काम सल्तनत और समाज दोनोंका है। लेकिन सल्तनत तो आज परायी है। समाजका ध्यान भी अिस तरफ नहीं है। लेकिन मेरे पास जो आदमी आकर काम मांगता है अुसे मैं ना नहीं कह सकता। हमारे पास अैसा काम पैदा करनेकी शक्ति होनी चाहिये कि हम लोगोंको ना न कह सकें।" बापूने अुनसे कहा "अच्छा जयदेव तुम यहाँ काम करो। मैं तुमको खाना दूँगा और आठ आने रोजके हिसाबसे अूपर मजदूरी दूँगा। जब तुम्हारे किरायेका पैसा हो जाय तो टिकट लेकर घर चले जाना।" जयदेवजीने बड़ी खुशीसे कबूल किया।

मने अुनको रसोअीघरमें काम दे दिया। वे भाअी बड़े मेहनती और मद्रासी थे। मेरा खयाल है करीब डेढ़ महीना अुन्होंने खूब काम किया और टिकटके लायक पैसा हो जाने पर अपने घर चले गये।

९ रसोअीघर और सफाअी

बापूजी रसोअीघरके छोटेसे छोटे काममें खूब रस लेते थे। कभी कभी तो घंटों चक्की दुरुस्त करनेमें लगे रहते थे। चावल और अनाजकी सफाअी अुनके ही कमरेमें होती थी। वे सब लोगोंको अिकट्ठे करके काम करने और ग्रामोद्योगकी चीज़ें बरतनेका महत्त्व समझाते थे। रसोअीघरमें आकर सब चीज़ोंकी सफाअी और व्यवस्था देखते थे।

अेक दिन हम लोग बिना धुले आलू काट रहे थे। अितनेमें बापू आ गये। बोले "बलवन्त बिना धोये आलू काटना तुम कैसे सहन कर सकते हो? अुनमें चारों तरफ मिट्टी जम जाती है। पहले अुनको खूब रगड़कर धोना चाहिये और फिर काटना चाहिये।" मेरा तो अिसकी तरफ बिलकुल ही खयाल न था। मैं शरमाया और आगेसे धोकर ही काटनेका निश्चय किया।

अेक रोज बापू रसोअीघरमें आये और बड़े ध्यानसे चारों ओर देखने लगे। रसोअीघरके अेक कोनेकी छतमें मकड़ीका जाला लगा था। बापूने अुसे देख लिया। अुसकी तरफ अिशारा करके मुझसे कहने लगे "देखो यह क्या है? रसोअीघरमें जाला हमारे लिअे शर्मकी बात है।" मैं तो शर्मसे गड़-सा गया। मेरे मनमें कभी आया ही नहीं था कि अिस ओरसे रसोअीघरकी छत भी साफ करनी चाहिये। और यह भी नहीं समझता था कि बापू अैसी अैसी चीज़ोंको भी देखेंगे। मैं हैरान था कि बापू अितने विविध कामोंका भार अुठाते हुअे भी अिन चीज़ोंमें बारीकीसे अितना समय कैसे दे सकते हैं!

भोजनके अनेक प्रयोग चलते थे। बनानेका समय कैसे बचाया जा सकता है, खुराक अैसी हो जिसमें मजदूरी कम लगे और नुकसान न हो, क्या चीज बनानेमें समय कम लगेगा और पोषण भी पूरा मिलेगा — अिन प्रश्नों पर विचार होता था। अमृतलालभाअी नीम खाते थे और अुसकी बड़ी तारीफ करते थे। अिसलिअे बापूजीने खुद भी नीम खाना शुरू किया और दूसरोंको भी खिलाने लगे। अिमलीका प्रयोग भी चलता था। बापूके पास दस-चार बीमार तो बने ही रहते थे जिनका अिलाज बापू खुद करते थे। अुस समय चार मुख्य रोगी थे। महात्माजीके बापू पासमें हरजीवन कोटक और मुन्नालाल

प्रकाश। माबू पालऐके पैटवर्षका कारण ढूंढनके विचित्र प्रयोगका वर्णन मैं आगे करूंगा।

पू बा रसोईघरके बारेमें बापूजीसे भी अधिक व्यवस्था और सफाई पसंद करती थीं। जब रसोईघरमें बा आतीं तो दोष बतानेकी झड़ी लगा देती। यह ठीक नहीं है, यह ठीक नहीं है यह गन्दा है यह गन्दा है। अपने हाथसे भी काम करने लगती। यह मुझे अच्छा नहीं लगता था। मैंसा लगता था कि बा मेरी आलोचना कर रही हैं। अेक रोज मैंने बापूजीके पास जाकर शिकायत की। बापूजी खूब हंसे और बोले "बाकी वाणी जितनी सख्त है हृदय मुतना ही कोमल है। तुम जानते नहीं हो। अव्यवस्था और गंदगी बातें बिलकुल सहन नहीं होती। तुमको तो बाके कहनेसे अुपदेश लेना चाहिये और अपने कामको स्वच्छ और व्यवस्थित करना चाहिये जिससे बाको कहनेका अवसर न मिले। निंदक बाबा वीर हमारा कबीरका यह भजन जानते हो? आलोचना तो हमारे दोष बताकर हमें निर्दोष बनानेमें सहायक होती है।" जिस पर बापूजीने बाके और अपने पिछले जीवनकी लम्बी कथा सुना डाली।

बाके कहनेसे मुझे जितना दुःख हुआ था अुससे अधिक बापूकी सान्त्वनासे आनन्द हुआ। गुस्सेमें लम्बा-सा मुंह लेकर म बापूके पास गया था और हंसता हुआ लौटकर बड़े मुत्साहसे अपने काममें लग गया।

१ गन्नेका किस्सा

लगातार २५ मास जेलमें रहनेके कारण मेरे दांत खराब हो गये थे। डॉक्टरकी सलाह थी कि मुझे गन्ना हरी भाजी और दूध काफी मात्रामें लेना चाहिये। दूध और भाजी तो भोजनमें मिलते ही थे। गन्ना बापूजीके रहनेके लिये आता था जो बहनके हाथमें रहता था। मैंने अुनसे गन्नेकी बात की। अुन्होंने मुझे ४–५ रोजका बचा सूखा गन्ना दिया तो मेरे खाने-पीने जल गये और अुनका मुंह फिरते ही मैं गन्ना अुसी जगह पर रख आया। और सोचने लगा कि जिस संसारको तू छोड़कर भागा था वह तेरे आगे आगे चल रहा है। तब कहां जाना? कहीं भी माडमें तीरा नहीं है। मन ही मन मैंने काफी पीड़ाका अनुभव किया और सोचने लगा कि अैसी जगह रहना ही क्यों? भाग चलूं। अपने खाने-पीनेकी बात बापूजीसे भी कैसे करूं? काफी संयम रखनेका प्रयत्न करने पर भी मेरा विद्रोही मन नहीं माना और

सारा किस्सा मैंने बापूजीके सामने रख दिया। बापूजी गम्भीर होकर बोले "तुमने मुझे बता दिया यह अच्छा किया। मैं जानता हूँ। मेरे निमित्तसे आये हुअे फल आदि भी कितने खराब होने पर लोगोंको मिल पाते हैं। यह बहन तो मेरे लिअे चिन्ता रखती है। अुसका हेतु शुभ है। तुमसे अुसका द्वेष था अैसी बात नहीं है। लेकिन अुसका अज्ञान जरूर था। जिस फूल जैसा रस मेरे लिअे नहीं निकाला जा सकता है, वह तुम्हें कैसे दिया जा सकता है? अैसे रस तो थोड़े भूलनेका भी निकालनेमें हर्ज नहीं है। हां अुसके रसमें भी कुछ तो विकृति आ ही जाती होगी। लेकिन अुसके लिअे तो ताजा खाना ही अुत्तम है। भूलने पर अुसमें भी दांतोंका कष्ट होता है। अिसमें सत्य और अहिंसा दोनोंका सूक्ष्म भंग होता है। सत्य और अहिंसाकी डोरी बहुत बारीक है। अगर मेरे साथ रहनेवाले अिसको न समझ सकें तो दूसरा कौन समझेगा? प्रकृति देवी हमको जो चाहिये वह रोज पैदा करती है। तो हम संग्रह क्यों करें? अगर खाना भूलता है तो अधिक लेना ही क्यों चाहिये? अगर मेरे निमित्त अधिक आया हो तो भूलने पर भी अुसका रस मुझे ही देना चाहिये था लेकिन तुमको हरगिज नहीं। अब अिसमें दुःख माननेकी बात नहीं है। अिससे सबक सीखनेकी बात है। जो व्यवहार दूसरेका हमें पसन्द न आये वैसा व्यवहार हम किसीके साथ न करें। दूसरेके दोषोंके प्रति अुदारता और अपने दोषोंके प्रति कठोरता रखनी चाहिये। तब ही हम अूंचे चढ़ सकते हैं। अगर हम दूसरोंके दोषोंको देखते रहें और मन ही मन कुढ़ते रहें तो हमको शान्ति कैसे मिल सकती है? तुलसीदासजीने कहा है न कि जो दूसरेके पहाड़ जैसे दोषको रजकण जैसा और अपने रजकण जैसे दोषको पहाड़ जैसा देखता है वह अूंचा चढ़ता है। तुम तो रामायणके भक्त हो न? अब तुम अुसको कह दो कि मुझे तो ताजा ही खाना चाहिये। बासी नहीं रुचा। अगर गुस्सा करके खाना छोड़ोगी तो अपने शरीरको बिगाड़ोगी। शरीर तो भगवानकी दी हुअी अमानत है। जो अुसकी अुपेक्षा करता है वह भगवानका द्रोह करता है। हां स्वादके वश होकर हम कुछ भी न खायें। स्वादके वश होकर कुछ भी खाना चोरी और नाशका पंथ है। अिसकी पहिचान भी संयम और अुससे ही ध्यानमें आती है।"

बापूजीका प्रवचन सम्भाला ही था रहा था और मुझे लग रहा था कि फलोंकी बात बापूजीको बताकर मैंने बैर बाहर मार ली हो। अिसलिअे

बापूजीकी बात काटकर मैंने कहा — बापूजी ठीक है। अब मैं सब कर चुका। मुझे जो दुख पहुंचा था सो अब नहीं रहा है। मगर आपको न कहता तो शायद चुपचाप यहांसे भाग ही जाता और आपके सत्संगका लाभ भी खोता।

बापूजी फिर बोले — मुझसे कह दिया यह तुम्हारी सरलता है। इसीसे तुम्हारी रक्षा भी हो जाती है। बातको मनमें रखना भी तो चोरी है न? अब जाओ और उस बहनके प्रति मनमें जो रोष आया था उसे भी निकाल दो और आनन्दसे अपना काम करो। और गन्ना खाना कभी न भूलना।

मैंने बापूजीको प्रणाम किया और बापूजीका मीठा थप्पड़ खाकर उसका स्वाद लेते हुये चला आया।

मुझे सत्यके खातिर कबूल करना चाहिये कि उस बहनके उस व्यवहारकी जब भी याद आ जाती है, तब मेरा मन उत्तेजित हो उठता है। लेकिन उनके साथ मेरा बड़ा ही मधुर संबंध है। वे भी मुझ पर बहुत प्यार करती हैं। उन्हें तो इसका पता भी नहीं चला होगा और अपने इस व्यवहारका भान भी नहीं होगा। लेकिन मैंने उस प्रसंगसे काफी सीखा और अन्तमें तो सेवाग्राममें गोशाला और खेतीकी व्यवस्था मेरे ही हाथमें आयी। और गन्नेकी खेती खास तौरसे मुझे प्रिय रही। बापूजीको गन्नेके गुड़की अपेक्षा खजूरका गुड़ और नीरा पसंद था और मेरी गन्नेकी खेतीके खिलाफ बापूजीके पास शिकायत भी होती थी। लेकिन बापूजीने गन्नेकी खेती न करनेके लिये मुझसे कभी भी नहीं कहा। और मेरे चले जाने पर भी आश्रमकी भूमिमें आज भी गन्ना होता है। मैंने लोगोंको खूब गन्ना खिलाया खूब रस पिलाया। मेरे दांत जो काफी खराब हो गये थे गन्ना खानेसे फिरसे वैसे ही मजबूत हो गये। लेकिन बापूजीकी व्याख्याके अनुसार मेरे गन्नेके रसमें तबीयतका कितना और उसके रसका कितना रस रहा है यह कहना कठिन काम है। मनका बारीकीसे निरीक्षण करने पर स्वादका पलड़ा ही भारी उतरेगा यह नम्रतासे मुझे कबूल करना चाहिये। नहीं तो चोरीके अपराधमें सजा हुये बिना न रहेगी। हां यह भी कबूल करना चाहिये कि बापूजीके प्रेमके पुटके बिना अब यह रस नीरस जरूर बन गया है।

११ विविध प्रयोग

अेक रोज भामू पानसेने आकर बापूसे कहा कि मेरे पेटमें दर्द है। बापू विचारमें पड़ गये कि दर्द क्यों हुआ? अुनसे पूछा कि तुमने क्या खाया है? अुन्होंने भोजनमें खायी हुअी चीजें बताते हुअे गन्नेका नाम भी लिया। बापूने कहा "बस गन्नेसे ही दर्द हुआ है।" मैं पासमें ही खड़ा था। मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैं बोला — बापू, गन्नेसे दर्द कैसे हो सकता है?" बापूने कहा — गन्ना चूसते समय अुसके छोटे छोटे रेशे पेटमें चले जाते हैं और वे कमजोर आंतोंमें पहुंचकर चुभते हैं।" बापूजीकी यह बात मुझ अेक बच्चेकी-सी लगी और बिलकुल नहीं पची। मैंने आश्चर्यसे पूछा "भला गन्ना चूसते समय गन्नेके रेशे कैसे अन्दर जा सकते हैं?" बापूने दृढ़तासे कहा "जा सकते हैं। अिसकी परीक्षा करके मैं तुम्हें अभी बता देता हूं।"

भामूको बापूने अेनीमा दिया और मलको कपड़ेसे छनवाया। फिर मीरा-बहनको बुलाया और बोले — देखो मेरी तो नाक नहीं है, पर तुम सूंघकर देखो अिसमें कैसी बदबू आती है? मीराबहनकी नाक बहुत तेज मानी जाती थी। जब यह सारी क्रिया चल रही थी और बापूजी मीराबहनको मल सूंघनेके लिये कह रहे थे तब मैं मन ही मन हंस रहा था कि आखिर बापू सब क्या कर रहे हैं। बापूकी अिस बारीकीका महत्त्व मैं बादमें समझा और अिस घटनाको कभी नहीं भूला।

मीराबहनने मलको सूंघकर क्या राय दी यह मुझे याद नहीं है। बापूने मीराबहनसे कहा कि अिस मलको धूपमें सुखाओ और मक्खियां अुड़ाती रहो। जब मल सूख गया तो बापूने मुझे बुलाया और कहा "तुम कहते हो कि गन्ना चूसते समय गन्नेके रेशे पेटमें नहीं जा सकते। अब देखो।"

मैंने देखा तो सचमुच ही अुसमें गन्नेके रेशे थे। मेरे लिअे यह नयी बात थी। मैं खुद भी गन्ना चूसता था पर खयाल नहीं था कि पेटमें रेशे चले जाते हैं। अब ध्यान दिया तो मालूम हुआ कि अच्छे नरम गन्नेके कुछ रेशे पेटमें चले ही जाते हैं।

१२ बापूके मनकी वेदना

अिसी समय बापूजीने कार्यकर्ताओंसे ग्राम-सफाअी और सेवकोंके ग्राममें रहनेके बारेमें कहना शुरू किया।

बापूजी खुद भी पासके सिन्दी गांवमें सुबह सफाओके लिओ जाया करते थे। दूसरे लोग और मेहमान भी बापूजीके साथ जाते थे। वहांसे मैलेकी बाल्टियां भरकर लाते थे और मुसका मगनवाड़ीमें खाद बनाया जाता था। *सिन्दी जाते और आते समय अनेक प्रकारकी चर्चायें चलती थीं।*

अुस समयके बहुतसे प्रसंग मेरी डायरीमें अधूरे-से दर्ज हैं। आज जब सोचता हूं तो मन मसोस कर रह जाता हूं कि मने पूरे-पूरे प्रसंग क्यों नहीं लिख लिये। लेकिन अुस समय म न तो आजके जैसा लिखना ही जानता था और न मुझे जितनी समझ ही थी। मुझे आश्चर्य होता है कि मैंने जितना लिख लिया वह भी न जैसे लिख सका। साबरमतीमें जब मैं लोगोंसे कोचरब आश्रमके बारेमें सुनता था कि बापूजीने आश्रम कैसे शुरू किया और कैसे सब कामोंमें सबके साथ भाग लिया तो मेरे मनमें मलाल हुआ करता था कि मैं अुस समय क्यों नहीं रहा। लेकिन अीश्वरकी कृपासे मगनवाड़ीमें भी वही सब चल रहा था। दिनमें अेक बार तो मुझे बापूकी सलाह लेना और अुन्हें रसोअीघरका सब हाल बताना ही पड़ता था। अनेक बार औसे भी प्रसंग आते थे जब दिनमें कभी बार बापूजीसे पूछना पड़ता या बापूजीको रसोअीघरमें आना पड़ता। अेक रोज मैंने बापूजीसे कहा कि मेरी जिच्छा है कि मैं किसी गांवमें जाकर रहूं और वहां काम करूं। बापूजीने कहा "मैं भी तुमसे यही आशा रखता हूं और तुमको ग्राममें भेजनेका ही मेरा विचार है। तुम्हारी शक्तिका अच्छा अुपयोग ग्राममें ही हो सकता है। साबरमतीमें भी मैंने लोगोंको जिसी दृष्टिसे जमा किया था। परन्तु आज तो मैं देखता हूं कि आश्रमका प्रयत्न निष्फल ही गया। आज कोअी भी आश्रम वासी गांवमें जानेको राजी नहीं है, सिवा दो-चारके। सो भी मैं कहूं तब। जिसलिये अब तो मैं अपने पास औसे ही आश्रमियोंको जमा करना चाहता हूं जो बादमें ग्रामोंमें जाकर बस जायें। तुम्हारे लिये जब मेरे मनमें आ जायगा तो तुम्हें गांवमें भेज दूंगा। गांवका चुनाव भी तुम ही करोगे।

१३ लड़कियां और बापू

जिन दिनों शामकी प्रार्थना बापूजी महिलाश्रमकी लड़कियोंके आग्रह पर महिलाश्रममें ही करते थे। मगनवाड़ीसे महिलाश्रम काफी लंबा पड़ता था। अुस समय लोग भी काफी थे। महिलाश्रमकी लड़कियां बापूजीको लेने बजाजवाड़ी तक आ जाती थीं और वहांसे बापूजीके साथ महिलाश्रम दौड़

जाती थीं। बीचमें अनेक प्रकारकी चर्चायें होती थीं। अेक रोज किसी लड़कीने पूछा कि लड़के और लड़कियां अेकसाथ पढ़ सकते हैं?

बापूजीने कहा — नहीं।

लड़कीने पूछा — क्यों?

बापूजीने कहा — अब तक जो परिणाम आये हैं अुनसे मैं अिस नतीजे पर पहुंचा हूं कि जो स्वभाव-सिद्ध वस्तु है, अुसे संयममें रखना अुचित नहीं है। बड़े बड़े विचारक किसी निर्णय पर पहुंचे हैं कि जिससे कामके बदले हानि ही अधिक होती है।

लड़की — तब आप अेक ही संस्थामें लड़कों और लड़कियोंके अेकसाथ रहनेका समर्थन क्यों करते हैं?

बापूजी — यह कोअी बुरी बात नहीं है। अेक ही छप्परके नीचे हम सब रह सकते हैं।

लड़की — तब साथ पढ़नेमें ही क्या हर्ज है?

बापूजी — तो साथ कसरत करनेमें क्या हर्ज है?

खूब हंसी हुअी। किसी प्रकारकी बहुतसी चर्चा हुअी। बापूजीने अेक मजेदार किस्सा कहा अेक रोज मैं आठ आनेकी खर्चमें बरकी सब रोटी खा गया था। बापूजी और हम सब खूब हंसे।

१४ फूलसे भी कोमल बापू

बापू जहां भी रहते थे वहां वे आश्रमके सब नियमोंका पालन करानेका पूरा पूरा प्रयत्न करते थे। अस्वाद-व्रतका तो दिनमें तीन बार अनुभव करनेका प्रसंग आ जाया करता था। लेकिन जो लोग बापूजीको सूक्ष्मतासे नहीं समझे थे अुन लोगोंके मनमें बापूजीकी कअी बातोंसे दुविधा खड़ी हो जाती थी।

श्री ब्रजकृष्ण चांदीवाला कुछ अस्वस्थ थे और दिल्लीमें अुनका अिलाज चल रहा था। मुझे ठीक याद नहीं कि बापूजीने अुन्हें बुलाया था या वे खुद बापूजीके पास आना चाहते थे। लेकिन अैसा कुछ याद पड़ता है कि बापूजीने अुनको लिखा था कि दिल्लीमें तुम्हारा जैसा अिलाज चलता है वैसे अिलाजकी व्यवस्था यहां पर की जायगी। वे आ गये। बापूजीने अुनसे सारी बातें पूछीं। अुन्होंने बताया कि मुझे रोज कितनी दवाअी खानेकी डॉक्टर या वैद्यकी सलाह है। बापूजीने कहा तो बस यहां अुसका प्रबंध हो जायगा। तुम अेक कड़ाही लाकर बलवन्तको दे दो। वह अुसमें दूध गरम करके मलाअी

तैयार कर देता। लेकिन ब्रजकृष्णजी बेचारे संकोचके मारे मलाअी नहीं लाये क्योंकि आश्रममें मलाअी खाना अुन्हें ठीक नहीं लगा।

अैसे ही अेक दिन निकल गया। बापूजीने मुझसे पूछा — क्यों ब्रजकृष्णके लिअे मलाअी तैयार की?

मैंने कहा — बापूजी अभी तक मलाअी नहीं मांगी।

बापू — अच्छा ब्रजकृष्णको बुलाओ।

मैंने अुन्हें बुलाया।

बापूने कहा — क्यों ब्रजकृष्ण अभी तक मलाअी क्यों नहीं लाये? और तुम्हारे लिअे मलाअी क्यों नहीं बनी?

अुन्होंने कहा — नहीं बापू, आश्रममें अितनी खटपट करनेमें संकोच होता है।

बापूने कहा — यह तुम्हारी मूर्खता है। शरीरके लिअे जो आवश्यक है वह अुसको देना धर्म है। जाओ अभी जाओ शहरमें और मलाअी लेकर आओ।

वे बेचारे गये और मलाअी ले आये। अितनेमें शाम हो गयी। बापूजीने मुझसे कहा कि सवेरे ब्रजकृष्णको अितनी शायद २ तोला मलाअी मिलनी ही चाहिये।

मैंने मलाअीमें दूध चढ़ा दिया और धीमी आंचसे मलाअी बनाना शुरू किया। मेरा खयाल है रातमें तीन चार दफा जागकर मैंने मलाअी अुतारी और सुबह तक जितनी मात्रा जरूरी थी अुतनी तैयार हो गयी। यह देखकर बापूजीको बहुत आनन्द हुआ और ब्रजकृष्णजीको मलाअी खानेके लिअे कहा। फिर तो यह सिलसिला चलता रहा। अुस दिन करीब करीब मुझे सारी रात जागना पड़ा था। लेकिन बापूकी अिच्छाके अनुसार मलाअी तैयार कर देनेका मनमें अितना अुत्साह था कि अिस जागरणसे भी थकानका अनुभव नहीं हुआ। बापूमें जहां संयमके बारेमें पत्थरसे अधिक कठोरता थी वहां साथियोंके स्वास्थ्यके बारेमें फूलसे अधिक कोमलता और अुदारता भी थी।

संत हृदय नवनीत समाना कहा कबिन पर कहि नहि जाना।
निज परिताप द्रवहि नवनीता पर दुख द्रवहि सुसंत पुनीता।
कुलिसहु चाहि कठोर अति कोमल कुसुमहु चाहि।
चित्त खगेस राम कर समुझि परहि कहु काहि।

तुलसीदासके जिन वचनोंकी बापू साक्षात् मूर्ति थे। मुझे जिसका पद पद पर अनुभव हुआ था।

१५ तुर्की महिलाका स्वागत

मगनवाड़ीमें टर्कीकी अेक बहन खालिदेखानुम आनेवाली थीं। बापूजीने अुनके लिअे जो तैयारियां और खानगी आतिथ्यका प्रबन्ध किया था वह देखने लायक था। वे कहां बैठेंगी कहां सोयेंगी कहां स्नान करेंगी तथा अुनका कमोड कहां रहेगा — आदि सारी बातोंकी व्यवस्था बापूजीने अपनी आंखोंके सामने कराओ थी। वे आओीं। बापूजीने अुनका प्यारसे वैसा ही स्वागत किया जैसा कि कोओ मां बेटीके आने पर किया करती है। अुनकी छोटीसे छोटी बातका बापूजी ध्यान रखते थे। अपने पास बिठाकर अुन्हें खिलाते और बीच बीचमें पूछते जाते कि खाना कैसा लगता है। नीमकी पत्तीकी चटनी खिचड़ीकी लपसी कच्चा साग न मालूम छोटी छोटी कितनी वानगियां बापूजी अुनके सामने परोसते। नीमकी चटनी भले ही कड़वी हो लेकिन अुसमें बापूके प्रेमका पुट लगा रहता था। जिसलिअे वह बहन अुसे बड़े स्वादसे खाती। अुनकी बापूजीके साथ काफी चर्चायें होतीं। मैं अंग्रेजी नहीं जानता था जिसलिअे मेरी समझमें तो नहीं आती थी। लेकिन अुनकी आवाज जितनी नम्र और जितनी मधुर थी कि वे जब बोलती तब अैसा लगता था मानो अुनके मुंहसे फूल बरस रहे हों।

हमारे परिवारमें वे जितनी घुलमिल गओी थीं कि जब १०–१५ रोजके बाद वे जाने लगीं तो अुनको और हमको यह वियोग कष्टदायी मालूम हुआ। बापूजीके प्रति अुनकी श्रद्धा और भक्ति अद्भुत थी। आज भी वे तुर्किस्तानमें बापूजीकी दृष्टिसे काम कर रही हैं। आश्रममें वे अपनी मधुर स्मृतियां छोड़ गओी हैं। आज भी अुनकी यादसे चित्तमें प्रसन्नताका अनुभव होता है।

१६ अपनेको सबसे बुरा समझो

स्वामीपरती नटखट और कामचोरी छोटी छोटी शिकायतोंसे मैं जितना तंग आ गया था कि मनमें अनेक बार मगनवाड़ी छोड़कर जंगलमें भाग जानेका विचार आता था। अेक रोज बापूजीके पास जाकर मैंने कहा "मेरा यहांसे जंगलमें भाग जानेका विचार होता है। लेकिन आपके पास रहनेका लोभ भी नहीं छूटता। अब आपके आखिरी दिन हैं और सारे

जीवनके अनुभवका निचोड़ आपसे मिलता है। मुझे यह लाभ सहज प्राप्त हुआ है। जिसे कैसे छोड़ूं?

बस बापूने समझाना शुरू किया "तुम मेरे पास मौन धारण करके रहो। जड़भरत जैसे बन जाओ। जगतमें अपने आपको सबसे बुरा समझो। मेरा मार्ग जंगलमें भाग जानेका नहीं है। असको मैं अुचित नहीं मानता हूं। आज सच्चे संन्यासी तो गृहस्थोंकी तरह घरोंमें रहते हैं और सबकी सेवा करते हैं। अगर मुझे छोड़कर भाग भी जाओगे तो मुझे बुरा नहीं लगेगा। लेकिन यह तुम्हारी कमजोरी होगी। आनन्दसे रहो। तुम्हारा सब भार तो मैंने अुठाया है न?" बापूके प्रेमभरे वचन सुनकर मैं सब दुःख भूल गया।

१७. गांवमें हम शिक्षक बनकर न जायें

अेक रोज मैंने कहा "बापूजी अच्छा तो यह है कि ग्रामसेवक गांवमें रहकर अपनी आवश्यकताके लिअे कमा लें और बादमें कुछ सेवा कर दें। क्योंकि संस्था चलाना और असके लिअे अुन लोगोंसे पैसा मांगना जो अुन्हीं साधनोंसे पैसा कमाते हैं जिनका कि हम विरोध करते हैं ठीक नहीं है। दूसरे, ग्रामवासी गांवमें बसनेवाले सेवकको भाररूप समझते हैं। फिर, अिसमें यह भी डर है कि कुछ समयबाद भिक्षुओंकी तरह ग्रामसेवकोंका समुदाय भी कहीं जनताके लिअे भाररूप न हो जाय।"

बापू बोले "यह बात तो तुमने नया अवतार धारनेकी कही। सेवक अपने लिअे कमा लेना चाहे यह तो असका अभिमान है। अगर सच्ची सेवा करनेकी भावना सेवकमें होगी तो निर्वाहके लिअे ग्रामवाले अुसे देंगे। हां परिवारके लिअे नहीं मिलेगा। बुद्धके सेवकों और आजके सेवकोंमें अंतर है। वे लोगोंको ज्ञान देने जाते थे जब कि हम अुनकी सेवा करने जाते हैं। अगर ग्राममें हम गांववालोंके शिक्षक बनकर जायेंगे और अुनसे कहेंगे कि हमारे लिअे यह लाओ वह लाओ तो ग्रामके लोग हमसे अवश्य अूब जायेंगे। सेवक नम्र बनकर सेवा करता रहे और अपने निर्वाहके लिअे अुसी ग्राममें से मांग ले तो अुसको अवश्य मिल जायगा।"

१८. कुछ महत्त्वके प्रश्नोत्तर

बापूजी अेक मासका मौन लेनेवाले थे। मैंने कहा "बापू मेरे पास किसिट आनेके पास धरोहर हैं।" बापूने कहा "अच्छा गंगाबहनके पास जा जाना।"

मैं भोजनालयकी चौखट पर बैठ गया। बापूजीके आवाज देते ही हाजिर हो गया। मैं प्रश्न पूछता था बापूजी भुत्तर देते थे।

प्रश्न — आपने लोक और परलोक दोनोंका समन्वय किया है। सभी पुरुष लड़के लड़की अपने पराने सबको आप अच्छी तरह संभाल सकते हैं। बड़ीसे बड़ी कठिनाओं आने पर भी आप प्रसन्नचित्त रहते हैं। क्या जीवन्मुक्ति और अीश्वर प्राप्ति आपकी कल्पनामें जिससे भी आगेकी चीज है?

अुत्तर — हां मुझमें जो प्रसन्नता रहती है मुझे देखकर बहुतसे लोग चकित हो जाते हैं। परन्तु यह मैं भी नहीं जानता कि यह प्रसन्नता कैसे प्राप्त हुआी हां रहती अवश्य है। जीवन्मुक्ति और अीश्वर-प्राप्तिकी कल्पना तो मेरी बहुत आगे बढ़ी हुआी है। जीवन्मुक्तमें रागद्वेषकी गंध भी न होनी चाहिये। मैं देखता हूं कि मेरे अन्दर काफी राग है और जहां राग है वहां द्वेष तो है ही। और जब तक रागद्वेष है तब तक मैं अैसा दावा नहीं कर सकता कि जो कुछ प्राप्त करना था वह मैंने प्राप्त कर लिया या मैं जीवन्मुक्त हो गया हूं। हां मेरा प्रयत्न अवश्य है। कोओी भी मानव अैसा दावा नहीं कर सकता और अगर करता है तो यह अुसका अभिमान है।

प्रश्न — मनुष्य जितना अुन्नत हो सकता है अुतनी अुन्नति तो आपने कर ही ली है न?

अुत्तर — यह भी कैसे कहा जा सकता है? कोओी मनुष्य जिससे भी आगे जा सकता है।

प्रश्न — क्या जीवन्मुक्तिके निकट पहुंचकर भी मनुष्यके पतनकी संभावना रहती है?

अुत्तर — पूरी पूरी। (बापूने चटाओीके किनारे पर हाथ रखकर कहा) देखो अुस किनारेसे जो तिलभर जितर है वह जितर ही है। अुसका दूसरे किनारे तक लौट आना पूरी तरह संभव है। किनारेसे जो तिलभर भी पार गया तो गया।

प्रश्न — आपकी अीश्वरके बारेमें क्या कल्पना है? हमारे शास्त्रोंमें अवतारवाद और अव्यक्त दोनों प्रकारसे अीश्वरका वर्णन है। आपने लिखा है कि सत्य ही अीश्वर है। ये तीनों बातें किस प्रकार अेक-दूसरेसे संबंध रखती हैं?

उत्तर — तीनों ही सही है। हम सब ओीश्वरके ही अवतार हैं। जैसा कि गीताके ग्यारहवें अध्यायमें विराट् पुरुषका वर्णन है। और ओीश्वर अव्यक्त है यह बात भी सत्य है। क्योंकि उसको पूरी तरह जाना नहीं जा सकता। अव्यक्त तत्त्व जितना सूक्ष्म है कि शरीरधारी उसे पूरी तरहसे शरीर रहते हुओे प्राप्त नहीं कर सकता। ओीश्वर सूक्ष्मसे सूक्ष्म तत्त्व है। जो सत्य है वह है ही जितना ही कह सकते हैं। और जो है वही ओीश्वर है।

मैं जब कुछ और आगे बढ़ने लगा तब बापूने कहा — अरे, भीष्म पितामहकी तरह मैं मरता थोड़े ही हूं जो सारा तत्त्वज्ञान आज ही पूछने लग गये।

मैं — अेक मासके लिअे तो आप मर ही रहे हैं न?

बापूजी — (हंसकर) अरे, तो फिर अेक मासके बाद तो जिन्दा होनेवाला हूं न? बस अब जाओ। देखो दूसरे लोग गाली देते होंगे कि जिसने क्या तत्त्वज्ञान छेड़ दिया है। तुम्हारा ओीश्वर तो रसोीमें है। मैं तो टट्टीघरमें जाते समय भी ओीश्वरका ही दर्शन करता हूं।

मैं — हां जब जब मैं हारता हूं और मोक्षशास्त्रके कामको झंझट समझता हूं तब तब मैं हिन्दू धर्मके अुस मुख्य आदर्शका स्मरण करके मनको समझा लेता हूं जिसके अनुसार प्राचीन कालमें लोग ऋषियोंके आश्रमोंमें बारह बारह वर्ष तक धैर्यपूर्वक गाय चराने लकड़ी बीनने और गोबर पाथनेका काम करते रहते थे। अुसके बाद कहीं वे अुपदेशके अधिकारी समझे जाते थे। पर मेरा तो आप जैसे महापुरुषसे सहजमें ही जितना घनिष्ठ सम्बन्ध हो गया है।

बापूजी — हां जैसा ही समझना चाहिअे। मनको खूब प्रसन्न रखो और अपने काममें ही ओीश्वरका दर्शन करो। यही सच्ची साधना है।

बस मैंने बापूके चरणोंमें प्रणाम किया बापूका प्रेमभरा थप्पड़ खाया और मोक्षशास्त्रकी राह ली।

१९. मौनका महत्त्व

ता २१-१-४५ को बापूका मौन आरंभ हुआ और ता १९-२-४५ को खुला। अुस समय बापूजीने यह प्रवचन दिया

आज मेरे मौनको २९ दिन हो गये। जिसलिअे आवाज तो कुछ बैठ-सी गयी है। आशा है आज सारे दिनमें खुल जायगी। तब कोओी कुछ

सुननेकी शिक्षासे यहाँ आ गये हैं। यह मौन मैंने आध्यात्मिक हेतुसे नहीं लिया था कामके कारणसे ही लिया था। मुझे संतोष है कि मिन दिनोंमें मैंने अपना काम बहुत कुछ निबटा लिया। डाकका काम मैं रोज निबटा लेता था। मौन कामके लिये लिया था तो भी अुसका जो कुछ आध्यात्मिक लाभ होनेवाला था वह तो हो ही गया। जितने दिनके अनुभवसे मुझे मौनकी महत्ता मालूम हो गयी। जो सत्यका पालन करना चाहता है अुसके लिये मौन साधनामें सहायक अेक अमोघ अस्त्र है। मौनसे सत्यकी बहुत रक्षा होती है। मौनका अर्थ है चेष्टामात्रका न होना। मौनमें लिखना या लिखना भी नहीं होना चाहिये। सत्यके अुपासकको बोलकर अपना काम करने या विचार बतानेकी आवश्यकता नहीं है। अुसका तो आचरण ही दुनियाको अुपदेश रूप होना चाहिये। जैसे जो अच्छी पूनी बनाता है वह किसी अुपदेशके बिना ही अपने कार्यकी छाप दूसरों पर डाल देता है। जितने दिनोंमें मुझे कोओी दिन अैसा याद नहीं आता है, जब कि मेरी बोलनेकी जिच्छा हुयी हो। ज्यों ज्यों मौन छूटनेकी अवधि निकट आती जाती थी त्यों त्यों मुझे भार-सा लगता जाता था। मेरी बोलनेकी जिच्छा नहीं होती थी। मौनमें सबसे बड़ा लाभ तो यह है कि वह क्रोधको जीतनेका बड़ा अच्छा अुपाय है। मुझे भी गुस्सा तो आता है, मगर मैं अुसे पी जाता हूं। यों तो क्रोध चेहरेसे भी प्रतीत हो जाता है। परन्तु अुसका परिणाम बहुत कम होता है। क्योंकि मौनके कारण बहुत कुछ नहीं कह सकता और लिखते लिखते तो क्रोध शान्त हो जाता है। जिसलिये मैं जिसका यह सार खींच लेता हूं कि सत्यके अुपासकके लिये मौन बहुत ही आवश्यक होता है।

२ सब मिट्टीके पुतले हैं

भोजन परोसनेमें दो अन्य भाओी मेरी मदद करते थे। वे मुझसे पंक्तिमें बैठकर भोजन करनेका अर्थात् परोसते समय मेरी थाली भी परोसवानेका आग्रह करते थे। दो-चार बार मैंने अुनकी बात सुनी-अनसुनी कर दी। लेकिन अुनका आग्रह बढ़ता ही गया। तब मैंने अुनको स्पष्ट कह दिया कि भोज नालयकी जवाबदारी जब तक मेरी है, तब तक मैं पंक्तिमें बैठ नहीं सकता। क्योंकि यदि किसी दिन भोजन खतम हो गया और अेकाध व्यक्ति भूखा रह गया तो मैं अुसे क्या खिलाअूंगा। यदि भूखे रह जानेका प्रसंग आवे तो मुझे ही भूखा रहना चाहिये। मैंने सबके साथ खा लिया हो और बादमें किसीको

भूखा रहना पड़े तो यह मेरे लिअे धर्मकी बात होगी। अिन भाअियोंके मनमें सन्देह था कि मैं पीछेसे कुछ अच्छी चीजें खाता होअूंगा। यह बात मेरे कान पर आओी। अिससे मुझे दुःख हुआ। मैंने बापूजीसे कहा कि मैं तो समझता था कि आपके पास सब देवता बसते होंगे। अिसी आशासे आपके पास सत्संगके लिअे मैं आया था। लेकिन मैं देखता हूं कि यहां भी वैसे ही लोग हैं वैसे संसारमें अन्यत्र हैं। अुन भाअियोंको बुलाकर बापूजीने पूछा तो अुन्होंने अिनकार कर दिया। लेकिन यह सब अेक आश्रमवासी श्री भगवानजी-भाओीने सुना था। अुन्होंने बापूजीके सामने मेरी बातकी पुष्टि की।

अिस प्रसंग पर बापूजीने कहा "देखो मेरे पास आखिर तो सब मिट्टीके ही पुतले हैं। मैं खुद भी मिट्टीका पुतला हूं। मनुष्यमें जो कमजोरियां हो सकती हैं वे सब अिन लोगोंमें भी हैं। अिनमें से निकलनेका प्रयत्न करनेके लिअे ही तो हम सब अिकट्ठे हुअे हैं। दूसरेके गुण और अपने दोष देखनेसे आदमी अूंचा चढ़ता है। जो दूसरेके दोष देखता है अुसका अर्थ यह होता है कि वह अपनेमें अुससे ज्यादा गुण देखता है। यह दृष्टि खतरनाक है। मैं किसीको बुलाने तो जाता नहीं हूं। जो सहज रूपसे मेरे पास आ जाते हैं और मुझे रखने जैसे लगते हैं अुनको रख लेता हूं। मैं विश्वामित्र तो नहीं हूं कि रोज नयी नयी सृष्टि रचता रहूं। अिसलिअे मेरा तो अैसा ही चलता है। तुम सबके गुण और दोष देखनेका नियम करो तो मेरे पास रहकर कुछ पा सकोगे नहीं तो मेरा और तुम्हारा समय व्यर्थ जायगा। तुम्हारे मनमें जो आता है वह मुझे कह देते हो यह मुझे प्रिय लगता है। क्योंकि अिस परसे मैं तुम्हें कुछ कह सकता हूं। सबके साथ प्रेम करना सीखो और प्रफुल्लित चित्तसे रहो। हारनेकी बात नहीं है। जाओ भाग जाओ।

मैं बापूजीके पाससे चला तो आया लेकिन मगनवाड़ीके रसोअीघरकी व्यवस्था करनेमें पहलेसे ही अैसी खटपटोंके कारण मेरा मन अूब गया था। मेरे मनमें यह विचार धीरे धीरे घर करने लगा था कि मैं पढ़ूंगा और कहीं चला जाअूं। अिस अंतिम प्रसंगने मेरे अिस विचारको बिलकुल पक्का कर दिया और मगनवाड़ी छोड़कर चले जानेकी मेरी पूरी पूरी मानसिक तैयारी हो गयी।

८

विनोबाजीके निकट परिचयमें

बापूजीको छोड़कर चले जानेकी मेरी तैयारी पूरी हो चुकी थी। बापूजीने भी आज्ञा दे दी थी। लेकिन जानेके पहले विनोबाके आश्रमका अनुभव लेनेकी मेरी अिच्छा थी। मैंने बापूजीसे कहा तो वे बोले: "हां, विनोबाके आश्रमका अनुभव तो लेना ही चाहिये। अुनके पास बहुत कुछ सीखा जा सकेगा।"

बापूजीने विनोबाजीसे बात करके यह व्यवस्था कर दी कि जब तक मैं अुनके पास रहना चाहूं तब तक रह सकता हूं। विनोबासे मेरा परिचय भी करा दिया। ता० २१-४-३५ को मैं मगनवाड़ीसे नालवाड़ी गया। बीच बीचमें बापूजीसे मिलता रहता था और नालवाड़ीके अपने अनुभव सुनाता था। जब कभी मैं वहांके जीवनकी तारीफ करता तो बापूजीका मुख आता और प्रसन्नतासे खिल अुठता था। अुन्हें लगता होगा कि मैं अुनके फंदेसे तो छूट रहा हूं लेकिन यदि विनोबाके फंदेमें फंस जाअूं तो अच्छा हो। अन्तमें जीत बापूजीकी हुअी। संभव है कि विनोबाजीके सहवास और अुनके प्रवचनोंने मेरे भ्रमकी रस्सीके बलोंको कुछ ढीला कर दिया हो। नालवाड़ीके थोड़ेसे अनुभव पाठकोंके लाभके लिअे मैं यहां अुद्धृत करता हूं।

नालवाड़ीमें अुस समय ८-१ सेवक थे और विनोबाजी भी अुन दिनों वहीं रहते थे। अुन्हीं दिनों अुनका ८ घंटे सूत कातनेका प्रयोग भी चल रहा था। नालवाड़ी आश्रमका कार्यक्रम और दिनचर्या व्यवस्थित और मगनवाड़ीसे कुछ कठोर थी। प्रातः ४ बजेसे रात्रिके ८॥ बजे तकका समय कार्यक्रमसे ठसाठस भरा रहता था। चक्की पीसना, पानी भरना, पाखाना साफ करना, भोजन बनाना आदि सब काम आश्रमवासी ही करते थे। अेक विचित्र नियम यह था कि अगर कोअी सेवक किसी काम पर निश्चित समय पर न पहुंचे तो अुसे कुछ न कहकर आश्रमका व्यवस्थापक अुस दिन प्रायश्चित्तके रूपमें अुपवास कर लेता था। श्री बल्लभस्वामी (वल्लभस्वामी) आश्रमके व्यवस्थापक थे। मुझे अिस नियमका ज्ञान न था। अेक दिन म

मालूम किस कारणसे मैं किसी काम पर समय पर नहीं पहुंच सका। दोपहरको बल्लभस्वामीने भोजन नहीं किया। मेरे यह पूछने पर कि बल्लभस्वामीने आज भोजन क्यों नहीं किया जाननेवाले मित्र मेरी ओर देखकर हंसने लगे। जब मैंने हंसनेका कारण पूछा तो वे लोग और भी हंसे। लेकिन मेरी समझमें कोओ बात नहीं आयी। जब मैंने जाननेका बहुत आग्रह किया तो अेक भाओीने कारण बताया। यह जानकर मुझे दुःख और आश्चर्य दोनों हुअे। दुःख जिसलिअे हुआ कि मेरे कारण व्यवस्थापकको अुपवास करना पड़ा और आश्चर्य जिसलिअे हुआ कि ये लोग कैसे विचित्र हैं कि मुझे नियम बताये बिना ही अुपवास तक कर लेते हैं। मैंने कुछ दिन शामको भोजन नहीं किया। यद्यपि अुनका यह नियम मुझे अब तक समझमें नहीं आया है, तो भी कुछ दिनके बाद मैं हर काम पर समयसे पहले ही अुपस्थित हो जाता था। काम करनेका तो मुझे अभ्यास था ही। वैसेभीतरसे कुछ दिनों विनोबाजी प्रातः और सायंप्रार्थनाके बाद रोज ही कुछ न कुछ बोलते थे। और वैसेभीतरसे अुन्हीं प्रवचनोंमें से कुछ मेरी डायरीमें तारीखवार लिखे मिले हैं। अुनको आजकी पाठकोंके लिअे यहां अुद्धृत करता हूं। वैसे तो विनोबाजी सदा बोला ही करते हैं। लेकिन तब आसपासके मुट्ठीभर लोग ही अुन्हें जानते थे और वे मजदूरकी तरह ८ घंटे शरीर-श्रमका काम भी करते थे। विचार तब भी अुनके वैसे ही थे वैसे आज हैं।

२९-४-१९

सुबहकी प्रार्थनाके बाद विनोबाजीने कहा: भोजन स्वच्छ तथा प्रेमपूर्वक बनाना चाहिये। भोजन बनानेवालेकी भावना अैसी होनी चाहिये कि आज मेरे घर भगवान आनेवाले हैं और अुनकी सेवाके लिअे मुझे आजका ही अवसर मिला है। यदि भोजन करनेवालेके प्रति जिस प्रकार भगवद्-बुद्धि होगी तो भोजन अपने-आप ही स्वच्छ और प्रेमपूर्वक बनेगा। जिस प्रकार भोजन बनानेकी व्यवस्थामें अेक रुपयेसे अधिक खर्च नहीं आना चाहिये। कपड़ेकी भी हमको कमसे कम आवश्यकता होनी चाहिये। कूता होना आवश्यक है।

१-४-१९

आज मैं अेक बीमारको देखने गया था जिसलिअे देरसे आ सका। मुझे बीमारीकी हालतमें ही अुसके मित्रोंने अकेला रेलमें बिठाकर भेज दिया।

अुसको निमोनिया है। आजकी समाज-रचना जितनी बिगड़ गयी है कि लोग अेक-दूसरेकी चिन्ता नहीं करते। जिस समाज-रचनाको सुधारनेके विषयमें मैंने खूब विचार किया है। आज तक म निष्काम प्रेममें ही पका हूं। जिसलिअे मेरे लिअे यह कहना कठिन है कि समाज निष्ठुर है। परन्तु अुसमें जड़ता अवश्य है। यदि कोअी प्रयोग करना चाहे तो अपनी चिन्ता छोड़कर दूसरोंकी चिन्ता करके देख ले कि क्या परिणाम आता है। मुझे कैसे सुख मिले मुझे कैसे प्रतिष्ठा मिले मैं किस प्रकार विद्या प्राप्त करूं जित्यादि चिन्तायें छोड़कर दूसरोंकी चिन्ता करके देखो। अुसमें कैसा आनन्द आता है। जो अपनी चिन्ता छोड़कर दूसरोंकी चिन्ता करने लगता है, अुसकी भगवानको चिन्ता करनी पड़ती है। पुस्तकोंमें भी खर्च न होना चाहिये। जिसको जैसी पुस्तक चाहिये वह वैसी लिखकर अपने पास रख ले। मेरा प्रबल ब्रह्मचर्य पालनका है। यदि जिस जन्ममें सफलता न मिली तो चाहे १ जन्म भी क्यों न लेने पड़ें मैं धीरज नहीं छोड़ूंगा। यह बोलते हुअे विनोबाजी आत्म विभोर हो गये और हम लोग भी शून्यवत् होकर अुनके जिन अुद्गारोंका पान करते करते अघा नहीं रहे थे। फिर आगे बोलते हुअे अुन्होंने कहा जो अपनी चिन्ता करने लगता है मैं अुसकी चिन्तासे मुक्त हो जाता हूं। मैं ही सब काम क्यों प्राप्त कर लूं? जो दूसरोंके पास है वह भी तो मेरा ही है। अगर अेक जेबमें पैसे थोड़े हुअे और दूसरी जेबमें अधिक हुअे तो क्या हम घबराते हैं? दोनों जेबें हमारी ही तो हैं। जो ज्ञान दूसरोंके पास है वह हमारे पास भी होना ही चाहिये यह हमारी संकुचित वृत्ति है। अपने अपने शरीरकी चिन्ता बहुत लोग किया करते हैं। यदि वजन कम हो गया तो घबरा जाते हैं। वजन जाता कहां है? अगर मैंने आम और केले अधिक खा लिये तो बाहरका वजन मेरे अूपर बढ़ गया यदि कम खाये तो जितना भार कम अुठाना पड़ा। अेक मित्रने मुझसे कहा कि जवानीमें पैसे कमाकर बुढ़ापेके लिये रख लेना चाहिये। मैंने अुससे तो कुछ न कहा। परन्तु कौन कहेगा कि यह विचार योग्य है? जो जवानीमें सेवा करेगा अुसकी सेवा बुढ़ापेमें समाजरूपी परमेश्वर करेगा। अगर किसीको विश्वास न हो तो करके देख ले। सेवामय जीवन बितानेमें जो आनन्द है वह अपने लिये चिन्ता करनेमें नहीं है। माता अपने बच्चे पर प्रेम करती है। परन्तु वह प्रेम निष्काम नहीं होता। जिसलिअे अुसका अुदाहरण यहां नहीं देता हूं।

अेक मित्रने मुझसे कहा कि दूसरोंकी चिन्ता करना भी तो अेक प्रकारका मोह ही है। परन्तु अैसा नहीं है। मोह तो अपने शरीरके आसपास अपना डेरा डाले बैठा है। अगर अपने शरीरके आसपासके बन्धन तोड़ दिये जायं तो बाहर और बन्धन है ही नहीं। जिसकी शरीर पर आस्था है वह तो कगारके किनारे पर ही खड़ा है। अेक कदम आगे बढ़ते ही असका जीवन समाप्त समझिये। तुलसीदासजीने अपने अनुभवसे कितना सुन्दर लिखा है

परहित बस जिनके मन माहीं
तिन कहँ जग दुर्लभ कछु नाहीं।

यह बोलते बोलते विनोबाजीका हृदय भर आया और वाणी रुक गयी। हम सबके हृदय भी गद्‌गद हो गये। कितना पावन था वह दिन!

* * *

शामके भोजनके बाद मैं कन्या-आश्रममें बापूजीसे मिलने गया। बापूजी मुझे देखकर ही हंसे और अुन्होंने पूछा "क्यों यहां कैसा लगता है?" मैंने कहा "अच्छा लगता है।" बापूजीने कहा "हां अच्छा तो लगना ही चाहिये। गुड़ तो मीठा ही लगता है लेकिन रोगीको गुड़ भी कड़वा लगने लगता है न? अुसको तो मिर्च मीठी लगती है। ये लड़कियां भी तो मन ही मन कहती होंगी कि बापू हमको अुबली भाजी खिलाते हैं। मिर्चवाला साग देखकर अिनकी जीभ कैसे पानी डालती होगी?" यह कहते हुअे लड़कियोंकी ओर देखकर वे खूब हंसे और आगे बोले कि यह तो मैंने मजाक किया। लेकिन सच बात तो यह है कि मनका रोग शरीरके रोगसे भी भयानक होता है। शरीरके रोगका अिलाज करना आसान है। यदि कोअी रोगी दवा न खाय तो आजकल अिंजेक्शनसे भी काम चल जाता है। लेकिन मनके रोगीको दवा कैसे दी? अुसकी दवा तो अुसीके पास होती है। दूसरे लोग केवल थोड़ा सहारा लगा सकते हैं। मुझे आशा है कि विनोबाके साथ तुम्हें कुछ सहारा जरूर मिलेगा। अुससे तो मैं भी बहुतसी बातें सीखता रहता हूं। तुम दत्तात्रेयकी बात जानते हो? अुन्होंने कुत्तेको भी अपना गुरु माना था। यहां क्या कार्यक्रम रहता है? काममें तो तुम किसीसे हारनेवाले हो नहीं। लेकिन किसीके साथ झगड़ा नहीं करना और तबीयत अच्छी रखना। जब जब यहांसे छुट्टी मिले तब मेरे पास आनेकी तुम्हें छूट है।

मैंने प्रणाम किया और बापूजीकी अेक चम्मचकी मसारी लेकर चला आया। मनमें सोचता जाता था कि कहीं सचमुच ही मेरी हालत अुस रोगीके जैसी न हो जिसे दूध कड़वा लगता है और खट्टी छाछ भाती है। मैंने बापूजीकी आंखोंमें मेरे लिये ममता देखी। लेकिन न मालूम मेरा मन बापूजीके साथ रहनेसे क्यों अुचट गया है। देखें अीश्वर कहां ले जाता है।

दैवयोगसे विनोबाजीने भी अपने प्रवचनमें बीमारकी ही बात कही।

१–५–१९

प्रातःकालकी प्रार्थनाके बाद विनोबाजीने कहा: हम सूत भगवद्-बुद्धिसे ही कातते हैं। अिसलिअे अिसके साधन भी अत्यन्त व्यवस्थित होने चाहिये। हमारी धुनकी और तांत सितारकी तरह मधुर आवाज देनेवाली हो। तकलीकी गति बढ़ानेके लिये जो सुधार करने हों अुनकी खोज होनी चाहिये। धुनते और कातते समय हमारा आसन योगियोंका-सा होना चाहिये। पूनियां अितनी बढ़िया होनी चाहिये कि कातनेमें बिलकुल श्रम न पड़े। हमें आध्यात्मिक साधना और दैनिक कर्मयोगका समन्वय कर लेना चाहिये। जगतमें केवल कर्म और केवल साधना करनेवाले बहुत हैं। लेकिन दोनोंमें मेल साधनेका रास्ता हमें बापूजीने दिखाया है। यही वह मार्ग है जिस पर सब चल सकते हैं। यह आश्रम अैसी ही साधनाका अेक केन्द्रमात्र है और कुछ नहीं।

सायंप्रार्थनामें विनोबाजी अिस प्रकार बोले: जगतमें सेवा करनेके दो मार्ग हैं। स्वाभाविक रूपसे सेवाकार्य सम्मुख अुपस्थित हो जाय अुसे करना यह अेक मार्ग है। और दूसरा है संस्था खोलकर लोगोंको अेकत्र करके अुनकी सेवा करना। दोनों मार्ग श्रेष्ठ हैं। दोनों ही सुरक्षित हैं। लेकिन दोनोंमें धोखा हो सकता है। पिता अपनी संतानकी जवाबदारी जैसे संभालता है अुससे भी अधिक जवाबदारी संस्थाके संचालककी होती है। माता-पिता तो अिस बातसे संतोष मान लेते हैं कि अुनकी संतान शक्तिशाली और सुखसे अपना जीवन व्यतीत करनेवाली हो जाये। परन्तु संस्थाके संचालक पर यह दुहरी जवाबदारी आती है कि अैसी शक्ति किस प्रकार प्राप्त हो और प्राप्त होने पर वह अीश्वरार्पण कैसे हो। मैं दिनभर अिसी विचारमें रहता हूं कि किस सेवाकी कितनी प्रगति होती है। मेरा स्वभाव ही अैसा है कि जिस कामकी जिम्मेदारी मैं ले लेता हूं अुसके सिवा दूसरे कामोंके लिये मेरे पास समय ही नहीं बचता। गीताजी लिखते समय मुझे दूसरा विचार ही नहीं आता

था। अब अिस संस्थाकी जवाबदारी मेरे ही है तो पूरी शक्तिसे अुसे निभानेका प्रयत्न करना मेरा धर्म है। मुझमें आदर्श अधिक सेवक सम्भालनेकी शक्ति नहीं है। अधिक संख्या देखकर मेरा जी घबरा अुठता है। यहां जितने आदमी हैं अुन्हें प्रतिदिन आत्म-निरीक्षण करना चाहिये और यह देखते रहना चाहिये कि रोज कितनी प्रगति होती है। अेक-दूसरेके साथ प्रेम रखना और अेक-दूसरेकी प्रगतिमें सहायता करना सबका धर्म है। शक्ति प्राप्त करना और अुसे अीश्वरार्पण करना यह मूलमंत्र है। जितने दोष स्वार्थमें हो सकते हैं — जैसे काम क्रोध लोभ मोह मत्सर आदि — ठीक अुतने ही परमार्थमें भी हो सकते हैं यदि परमार्थ अीश्वरार्पण बुद्धिसे न किया जाय। बस यही सीखना है। सब लोग अिस पर विचार करें।

४-५-४५

मनुष्य तीन प्रकारकी खुराक सृष्टिसे लेता है: जीवसृष्टि वनस्पति और खनिज। जीवसृष्टिमें दूध वनस्पतिमें फल-साग तथा खनिजमें नमक आदि आते हैं। परन्तु अीश्वर-तत्त्व तो सर्वत्र भरा हुआ है। यह बात स्पष्ट है। जिसमें अीश्वर प्रत्यक्ष दीखता है वैसी ही जीवसृष्टि है। मुझे तो कभी कभी पत्थरमें भी अीश्वरका दर्शन होता है। जब पहाड़ों पर चला जाता हूं तो वहां मुझे स्पष्ट शिवरूपका भास होता है। अिसलिअे खुराकके विषयमें भी मनुष्यके सामने अहिंसाका प्रश्न आकर खड़ा रहता है। मनुष्यका शरीर केवल खनिज पर तो टिक नहीं सकता। परन्तु वनस्पति पर तो जरूर टिक सकता है। दूधकी कल्पना मांस छुड़ानेके लिअे ही हुअी है। अिसलिअे मनुष्यको जहां तक संभव हो खुराकके बारेमें अहिंसक बननेका प्रयत्न करना चाहिये। नमक शरीरके लिअे आवश्यक नहीं है। यह प्रयोग करके देखने जैसी बात है। यदि अिसे छोड़ा जा सके तो अपने अस्वाद व्रतको बहुत बल मिलेगा।

* * *

सच्चा अर्थशास्त्र यह है कि हरअेकको कामकी समान मजदूरी दी जाय।

*

शामको मैं बापूजीसे कन्या-आश्रममें मिलने गया। बापूजीने दूरसे ही देखकर पूछा "कैसा चलता है?" मैंने प्रणाम किया और कहा "ठीक

चल रहा है।” बापूजीने पूछा “तीन चार दिन क्यों नहीं आये?” मैंने कहा “यों ही छोटे-मोटे काममें लग जाता था।” बापूजीने कहा “हां काम छोड़कर मेरे पास आना ठीक नहीं है। विनोबासे कुछ चर्चा होती है?” मैंने कहा “आजकल अुनके प्रवचन बड़े अच्छे होते हैं। अुस दिन आपके पाससे गया तो अुन्होंने भी करीब-करीब वही बात कही जो आपने कही थी।” बापूजीने कहा “ठीक है। विनोबा जब बोलता है तब अपने आपको भूल जाता है और श्रोताओंके साथ अेकरूप हो जाता है। तभी तो अुसके आसपास अितने सेवक पड़े हैं। मैंने अनुभवसे देखा है कि विनोबा जैसा बोलता है वैसा आचरण करनेमें अपनी सारी शक्ति लगा देता है। हम जैसा बोलते हैं वैसा ही आचरण करें तो सारा प्रश्न ही मिट जाय।” मैं बापूजीको प्रणाम करके लौट आया।

१—५—४५

पहले जमानेमें अेक भक्तिपंथ और अेक सेवापंथ अिस प्रकार दो पंथ थे। सेवापंथमें हिंसा करना भी शामिल था। अेककी सेवाके लिअे दूसरेको मारने तककी नौबत आ जाती थी। अीश्वर-प्राप्ति करनेवाले अिस झंझटसे अलग रहते थे। परन्तु आज हमारा जो प्रयोग चल रहा है, वह भक्ति और सेवाका अेकीकरण करनेका प्रयोग है। अिसमें वीरत्व और साधुत्व दोनोंका समावेश हो जाता है। अनुभवसे जो कार्यक्रममें आ सके वही शास्त्र है। आजका शास्त्र यही है कि भूखोंको रोटी कैसे मिले अिसका विचार और अुपाय करना। खादीका अर्थशास्त्र अिसी विचारमें से निकला है। बापूजी अिसीको दरिद्र-नारायणकी सेवा कहते हैं।

८—५—४५

प्रश्न ब्रह्मचर्यके पालनके लिअे क्या-क्या साधन चाहिये?

अुत्तर *संक्षेपमें कहूं। खुली जगहमें शारीरिक श्रम करना, खुली जगहमें* ही सोना, सात्त्विक भोजन, अीश्वरका सतत चिंतन, सत्संग और जितनी देर स्त्रीका साथ मिले अुतनी देर अुसके लिअे पूज्यभाव रखना। स्त्री है ही पूजने योग्य। लोगोंने बुरी कल्पना करके अुसको भयानक स्वरूप दे दिया है। परन्तु वह वास्तवमें अितनी भयानक है नहीं। कुछ हद तक तो है, नहीं तो पुरुषार्थ ही क्यों?

प्रश्न — लड़कों तथा लड़कियोंको अेकसाथ शिक्षण देना आपके विचारसे कैसा है?

अुत्तर — जिस समय जैसी परिस्थिति है कि मैं कहूंगा कि अलग रखना चाहिये। परन्तु अेक जगह रखनेसे अेक-दूसरेको लाभ ही होगा। सायमें अेक जाग्रत और योग्य व्यवस्थापक होना चाहिये।

प्रश्न — क्या ध्यानयोग द्वारा मनुष्यकी पूर्णता हो सकती है? जिस विषयमें आपका क्या अनुभव है?

अुत्तर — पूर्णता तो नहीं हो सकती, परन्तु अेक अंशका विकास हो सकता है। मनुष्यके पास तीन शक्तियां हैं — कर्म करनेकी, बोलनेकी और विचार करनेकी। ध्यानसे विचारका विकास होता है। परन्तु कर्म तथा वाणी अधूरे रहते हैं।

प्रश्न — तब पूर्णता किस प्रकारसे प्राप्त होती है?

अुत्तर — चित्तशुद्धि योग्य कर्म तथा शुद्ध भाषणसे। जब चित्त शुद्ध हो जाता है तब ध्यानसे योगसिद्धि हुआी समझनी चाहिये। क्योंकि चित्तशुद्ध मनुष्य जिस कामको करेगा अुसीसे ध्यानयोग सिद्ध हो सकेगा। नम्रतापूर्ण सरल चित्तसे प्रभुकी भक्ति सबके साथ प्रेमभाव रखना यही अुत्तम मार्ग है।

सायंकालकी प्रार्थनाके बाद विनोबाजीका प्रवचन

आज हिन्दुस्तानमें या सारे जगतमें जो संस्थायें हैं वे सब बन्द कर देने योग्य हैं। कुटुम्ब-संस्था सगुण है। अन्य संस्थायें निर्गुण। जिस संस्थामें सगुणता नहीं है वह निकम्मी है। सगुणता अर्थात् आपसमें प्रेम अेक-दूसरेकी आत्माको पहचानना। अवगुण देखने हों तो अपने ही अवगुण देखो दूसरेके अवगुण न देखो। सूर्य भगवान कभी अन्धकारके दर्शन नहीं करते। आजकलके स्कूल-कॉलेज सभी निर्गुण हैं। मैं नहीं जानता कि कोअी भी प्रोफेसर किसी विद्यार्थीके जीवनके साथ परिचय करता हो। मुझे याद नहीं आता कि किसी शिक्षकका अच्छा असर मेरे मन पर हो। माताका अच्छा असर है। दादाका भी है। बापूका है, मित्रोंका है, विद्यार्थियोंका है, ज्ञानदेवका है। पर किसी शिक्षकका नहीं है। जिस प्रकारकी निर्जीव संस्थायें बन्द कर दी जानी चाहियें। मैं घर पर छोड़कर अेक दिन निकल पड़ा अुस दिनकी मुझे याद है। अुस दिन जैसा अनुभव हुआ वैसे बाघके मुखमें से शिकार निकल कर भागा हो और आनन्दका अनुभव करता हो। लेकिन कुटुम्ब-संस्था

फिर भी अच्छी है। यहां सब आपसमें प्रेमसे रहते हैं और अेक-दूसरेको वासम-विकासमें मदद करते हैं। रेलके स्टेशनके मुसाफिरोंकी भांति नहीं कि थोड़ी देर पास पास बैठे और फिर भिन्न दिशाओंमें चले गये।

* * *

अभिमान नौ प्रकारके होते हैं। १ सत्ताका २ संपत्तिका ३ बलका ४ रूपका ५ कुलका ६ विद्याका ७ अनुभवका ८ कर्तृत्वका ९ चारित्र्यका। परन्तु यह मानना कि मुझे अभिमान नहीं है, जिसके बराबर भयानक अभिमान दूसरा नहीं।

* * *

शामका भोजनके बाद मैं कन्या-आश्रममें बापूजीसे मिलने गया और अपनी दो कल्पनायें मुनके सामने रखीं। अेक खेती करनेकी और दूसरी खादीकी। बापूजीने खेतीकी कल्पना पसंद की और कहा दोनों ही काम पवित्र और अुपयोगी हैं। मुझे तो अेकसे अेक अधिक प्रिय हैं। लेकिन गीतामाता कहती है कि स्वधर्ममें मरना भी अच्छा है, और परधर्म अच्छा हो तो भी खतर नाक है। जिसका कारण यह है कि मनुष्य अपने स्वाभाविक कर्मको जितनी खूबीसे कर सकता है अुतनी खूबीसे दूसरा काम नहीं कर सकता। तुम्हारा स्वधर्म खेती है। खेतीके साथ गाय तो आ ही जाती है क्योंकि गायके बिना खेती हो ही नहीं सकती। आजकल लोग खेती मशीनसे करनेकी बात करते हैं लेकिन हमको तो घी दूध खादके लिये गोबर और चमड़ा भी चाहिये हाड़-मासका अुत्तम खाद भी चाहिये। क्या मशीन यह सब देगी? जिसलिये मैं कहता हूं कि हिन्दुस्तानको मशीन नहीं गाय चाहिये। तुमको मैं और क्या कहूं? तुम तो जन्मसे ही किसान हो। आज किसान गायको छोड़कर भैंसके पीछे भाग रहा है। गुजरातमें तो भैंसें तेजीसे बढ़ रही हैं और मुनके पाड़ोंकी हिंसा होती है। कहीं कहीं किसान खेतीमें पाड़ोंका अुपयोग भी करते हैं। लेकिन मोटे तौर पर यही कहा जायगा कि पाड़े अपने भाग्य पर ही छोड़ दिये जाते हैं। जिस प्रकार गाय या बैलका अुपयोग सर्वत्र होता है, वैसा पाड़ेका नहीं होता। जिसलिये मैं फिर कहता हूं कि तुम्हारे लिये गोपालनके साथ खेती अुत्तम मार्ग होगा। मैंने अनुभव किया कि महापुरुष कितने दूरदर्शी होते हैं। मैंने खादीका काम सीखा। बापूजीने मुझे खादीमें

शरीरके काममें लगानेकी कोशिश की। लेकिन अन्तमें पानी अपने ठिकाने ही आकर रुका।

११–५–४२

प्रेमके विषयमें बोलते हुअे विनोबाजीने कहा कि हम लोगोंमें प्रेमकी कमी है। अेक-दूसरेके साथ अेकरूपताका अनुभव होना चाहिये। जब तक हम यह मानते हैं कि हम तो काफी प्रेम करते हैं तब तक हमारा प्रेम कम है यह बात साफ है। जब हमको यह प्रतीत हो कि हमें जितना प्रेम करना चाहिये अुतना नहीं करते तब ही कुछ प्रेम समझा जाय। पूर्ण प्रेम तो शरीरके रहते हुअे हो ही नहीं सकता। पूर्ण प्रेम अर्थात् विश्वप्रेम अीश्वर-प्रेम। जब प्रेम पूर्णताको प्राप्त होगा तब यह शरीररूपी जेलखाना क्षणभर भी नहीं ठहर सकेगा। आत्मारूपी प्रेम तुरन्त ही सारे विश्वमें मिल जायगा। जब तक शरीर है और जब तक अहंभाव है तब तक प्रेम पूर्ण नहीं हो सकता। प्रेमका अुदाहरण देनेके लिअे हम राम-लक्ष्मणका नाम लेते हैं। आश्रमका अुदाहरण क्यों नहीं लेते? अहंकार सेवा करनेमें भी हो सकता है और सेवा लेनेमें भी। मैं सेवा करता हूं यह विचार तथा मैं बड़ा हूं मेरी सेवा होनी चाहिये यह विचार दोनों ही दोषपूर्ण हैं।

* * *

आश्रममें बाहरसे आनेवालोंकी कभी अुपेक्षा न होने पावे।

* *

पानीके विषयमें बोलते हुअे विनोबाने कहा कि जब कोअी मुझे पानी पिलाता है तब मैं पानीमें भगवानका स्वरूप देखता हूं। गीतामें कहा गया है, पानियोंमें मैं रस हूं।

१२–५–४२

आज बुजुर्गने मौन रखा है। यह मुझे अच्छा लगता है। मौन रखनेसे बहुतसी शक्ति खर्च होनेसे बच जाती है। मनकी वासनाओंसे लड़नेका अवसर मिलता है। वासना प्रतिक्षण चोरकी भांति हमारे अन्दर प्रवेश करना चाहती है। जिसलिअे जो सदा जाग्रत रहता है अुसीके घरमें वासनाका प्रवेश नहीं हो सकता। बहुतसे लोग कहते हैं मनमें वासनाका अुद्गम ही

तो अुसका भोग करना चाहिये। लेकिन मैं कहता हूं यह रास्ता गलत है। अुसका अर्थ तो यही होगा कि वासनाओंके सामने कायरोंकी भांति हथियार डाल दें। यदि मनुष्य शरीरसे बचा रहे तो मन भी सुधर जायगा। शर्त सितनी ही है कि जो विषय-विचार मनमें आये अुसे पोषण न मिले।

* * *

पूनीका दान अुत्तम है। मुझे जो पूनी मिलती है अुसमें मैं भगवानका दर्शन करता हूं।

* * *

मद्रासमें कोअी अेक कुटुम्ब थककर मर गया था। अुसके विषयमें विनोबाजीने कहा कि अिस प्रकार मर जाना हमारी गरीबीका चिह्न तो है ही। लेकिन अिसका अेक और भी कारण है मजदूरीमें अत्यन्त असमानता। कॉलेजोंमें प्रिन्सिपाल और प्रोफेसर १ घंटा प्रतिदिन और वर्षमें ६ मास काम करके मासिक १२ या १०० या ६ या ५ रुपये लेते हैं। परन्तु वे पढ़ाते क्या हैं? थोड़ीसी मेहनत करके मैं यही अुनसे भी अच्छा पढ़ा सकूंगा। अुनको अितने पैसे लेनेका क्या हक है? और पढ़ानेकी कीमत लेना तो स्वयं अपना अपमान करना है। सबको मेहनत करके खानेका हक है नहीं तो चोरी है। अेक संन्यासी हो अपवाद माना गया है। लेकिन वैसा संन्यासी मैंने अब तक कहीं नहीं देखा है। अुसकी तो हम कल्पना ही कर सकते हैं। हमें पहले अेक-दूसरेके कंधेसे अुतर जाना चाहिये। पीछे सेवाका नाम ले सकते हैं। नहीं तो सेम कहेगा कि भाअीसाहब पहले हमारे कंधेसे नीचे अुतरो फिर हमारी सेवा करना। हम अपने मनमें यह सोचें कि हम तो आपका अुपदेश देते हैं तो यह दम्भ होगा। आजका मुख्य पैसा नहीं प्रेम है। यदि हम आश्रमवासी अपना बोझ दूसरों परसे अुतार लें तो अुनके पापसे बच जायेंगे।

११-५-४५

प्रतिदिन माता जैसे बच्चेको जगाती है, वैसे ही प्रभु हमको जगाता है कि अुठो मेरा स्मरण करो और अपने काममें लग जाओ।

* * *

जैसे अपने लिये धन कमाना स्वार्थ साधना है वैसे ही केवल अपने ही लिये पढ़ना भी स्वार्थ है। हमारे पास जो ज्ञान हो वह अपने साथीको देना धर्म है।

*　　　　*　　　　*

सेवासे जो ज्ञान प्राप्त होता है वह दूसरे प्रकारसे नहीं हो सकता।

११–५–४५

कर्तव्य-त्रयी १ सत्यनिष्ठा २ धर्माचरणका प्रयत्न ३ हरिस्मरण-रूप स्वाध्याय। सत्त्वकी अपेक्षा सत्य श्रेष्ठ है। सत्यके अंशमात्रसे संत निर्माण होते हैं। ज्ञानी जो कर्म करता है वह तो करता ही है, लेकिन जो नहीं करता वह भी करता है। परन्तु कर्म-संन्यस्त पुरुष जो नहीं करता वह तो नहीं ही करता और जो कुछ वह करता है वह भी नहीं करता तब कर्म संन्यासी होता है।

*　　　　*　　　　*

मेरा नालवाड़ीमें रहनेका समय पूरा हो चुका था और दूसरे दिन मैं मगनवाड़ी बापूजीके पास लौट जानेवाला था। अिसलिये प्रातकी प्रार्थनाके बाद विनोबाजीसे मिलकर मैंने चर्चा की कि नालवाड़ीसे मैंने क्या सीखा और यहांका मेरे दिल पर क्या असर पड़ा। अिससे अुनको भी बहुत आनन्द हुआ और मुझे भी परम संतोष मिला। विनोबाजीमें मैंने अेक प्रखर विचारक, अुत्कृष्ट साधक, अूंचे दर्जेके वैराग्यनिष्ठ, अद्भुत श्रमशील तथा साथियोंको अूंचा अुठानेका सतत प्रयत्न करने और तीव्र जिज्ञासा रखनेवाले पुरुषके दर्शन किये। मुझे लगा कि बापूजीके बाद अगर कोअी कुछ प्रकाश दे सकता है तो वह यही पुरुष हो सकता है। मैंने अपने दिलकी सब बातें अुनके साथ करके रातको ही अुनसे विदा ले ली थी।

१७–५–४५

प्रातःकालकी प्रार्थनाके बाद प्रवचन करते हुअे विनोबाजीने कहा: बलवन्तसिंहजीने रातको जो बातें कीं अुनसे मुझे बड़ा संतोष हुआ। मेरा और अुनका सम्बन्ध जीवनभरके लिये बंध गया है। अुनकी बातें मुझे बड़ी ही प्रिय लगी हैं। अुन्होंने यहांसे बहुत कुछ लाभ अुठाया है और सबके साथ अच्छा परिचय कर लिया है। यह बात बहुत महत्त्व रखती है। मेरा

परिचय मिसी प्रकारसे होता है और वह सदाके लिये कायम हो जाता है। मैं चाहता हूं कि आश्रमका बिस प्रकारका लाभ अधिकसे अधिक लोग अुठा सकें। आश्रमके सब लोगोंको अपनी अपनी जिम्मेदारी समझनी चाहिये।

* * *

मैंने नालवाड़ीसे विदा ली और बापूजीके पास मगनवाड़ी आ गया। मैं तो बापूजीको भी छोड़कर जानेकी पूरी योजना बना चुका था तब विनोबाजीके साथ संबंध बांधे रहनेका तो सवाल ही नहीं था। लेकिन सत्पुरुषोंके मुखसे जो वचन सहज ही हृदयकी गहराअीसे निकल जाते हैं अुनके आगे-पीछेकी स्पष्ट कल्पना वे खुद भी नहीं कर सकते। तो दूसरा कोअी कैसे कर सकता है? सत्पुरुषोंके आशीर्वाद और अुनके वचनों पर हमारी जो निष्ठा है अुसके पीछे कोअी अव्यक्त शक्ति काम करती है यह अनुभवसे सिद्ध हो चुका है। विनोबाजीके बिस वचनको कहे अेक जमाना गुजर गया है। लेकिन सचमुच ही मेरा और अुनका संबंध दिनोंदिन बढ़ता ही जा रहा है और जीवनभरके लिये बंध गया है। बापूजीके बाद जब आश्रमका मार्गदर्शक नियत करनेकी बात अुठी तो मैंने ही विनोबाजीके नामकी सूचना की। आज यहां (सोकरमें) भी मैं अुन्हींके आदेशानुसार गोसेवाका पवित्र काम कर रहा हूं।

भले ही अुनके साथ मेरे कुछ विचारोंकी पटरी न भी बैठती हो और बापूकी तरह कभी कभी मैं अुन्हें भी कड़ी बातें कह देता हूं फिर भी अुनकी परिधिसे बाहर निकलनेकी शक्ति मुझमें नहीं है। मिलि न जाअी नहि गुदरत बनअी — ठीक यही दशा मेरी विनोबाजीके संबंधमें है। गोसेवासे छूटकर पूरी तरह अपने आपको मैं भूदानमें नहीं लगा सकता बिसका कारण मेरी गोभक्ति ही है।

* * *

अुसी दिन विनोबाजी कहीं बाहर चले गये थे। जब मैंने बापूजीको जाकर प्रणाम किया तो अुन्होंने हंसकर कहा "विनोबाको भगाकर भाग आये?" मैंने कहा जी हां। बापूजीने पूछा विनोबासे खूब सीखकर आये हो न? मैं संकोचमें पड़ गया। क्योंकि विनोबाजीने जो कुछ कहा और मैंने सुना अुसे अगर गीता हुआ माना जाय तो मेरा बापूजीको छोड़कर जानेका सवाल खतम हो जाना चाहिये था। लेकिन वह तो ज्योंका त्यों खड़ा था। मैंने बापूजीको अेक लम्बा पत्र लिखा। अुसमें बताया कि मैं

जानता हूं कि आपको मेरे जानेसे दुःख होगा, लेकिन अब तो मुझे जाना ही है। क्या करूं? मेरे भाग्यमें आपका सत्संग नहीं बदा है। अिसलिअे दुःख तो मुझे भी हो रहा है।

अेक रोज मैंने बापूजीसे पूछा : आदर्श गांवकी आपकी कल्पना क्या है? बापूजीने कहा : आदर्श गांवमें सब धर्मोंके लोग परस्पर प्रेमसे रहते हों, कोअी अछूत न समझा जाता हो, कुअें-मंदिर पर सबका समान अधिकार हो। सब खादी पहनते हों। ग्रामकी सफाअी आदर्श हो। हर प्रकारसे गांव स्वावलम्बी हो।

प्रश्न — ग्रामसेवकोंको ग्राममें होनेवाले भोजोंमें जो शादी या मृत्युके समय होते हैं शामिल होना चाहिये या नहीं?

अुत्तर — हरगिज नहीं। धार्मिक क्रियाओंके सिवा ग्रामसेवक किसीमें हिस्सा नहीं लेगा। धार्मिक क्रियाओंमें खर्चकी तो आवश्यकता होती ही नहीं।

प्रश्न — ग्रामसेवक कांग्रेसकी किसी समितिका सदस्य बन सकता है या नहीं?

अुत्तर — न बनना अच्छा है। क्योंकि अुसमें से रागद्वेष पैदा होता है और कार्यमें विघ्न पड़ना संभव है।

प्रश्न — क्या मैं कोअी संस्था बनाकर काम करूं?

अुत्तर — अभी नहीं। बिना संस्थाके संस्था जैसा कार्य करो। अगर संस्था बननेवाली होगी तो अपने-आप बन जायगी। सेवा करना अपना धर्म है।

अंतमें बापूजीने कहा कि अब जो विचार किया है अुसके अनुसार तुमको किसी गांवमें स्थिर हो जाना चाहिये। मेरा आशीर्वाद तो है ही। ग्रामवासियोंकी सेवा मनसे वचनसे और कर्मसे करो। अेकादश व्रतोंका पालन तो करना ही है। मेरे पास जब आना जरूरी लगे तब आनेकी अिजाजत है। लेकिन अितना समझ लो कि हमारा अेक भी पैसा रेलभाड़ेमें व्यर्थ खर्च न हो। जब तुमको स्थिरचित्तता प्राप्त हो जाय और असा लगे कि बापू ठीक कहते थे तो यह आश्रम तो तुम्हारा घर है। जब चाहो यहां आ सकते हो। यहांसे जो भी पाया है वह व्यर्थ नहीं जा सकता। भगवानका वचन है कि किया हुआ पुण्य कभी व्यर्थ नहीं जाता। जिसका अर्थ अगले जन्ममें भी हो सकता है। लेकिन जिस जन्ममें जब विचारका नया जन्म

हो तो किया हुआ या समझा हुआ शुभ कर्म या शुभ विचार काम आता है। वह नष्ट नहीं हो जाता। तो यहांसे सीखा हुआ तुम्हारे काम क्यों न आयेगा? लेकिन उसके लिये समय चाहिये। मेरा और तुम्हारा जो सम्बन्ध बन गया है वह टूट कैसे सकता है? तुम शान्त चित्तसे जाओ और वहां भी काम करो वहांके सब हाल लिखते रहो।

२
कुछ और संस्मरण

१ भाखरीका किस्सा

खूब प्रयत्न करने पर भी और बापूजीकी अत्यन्त प्रेमभरी होते हुये भी मेरा मन मगनवाड़ीसे ऊब गया था और मैं वहांसे भागना चाहता था। घर जानेका निश्चय हो चुका था। दूसरे दिन जानेकी तैयारी थी। अमतुस्सलाम बहनने रसोईघरका चार्ज ले लिया था। मैंने अमतुस्सलाम बहनसे रास्तेके लिये भाखरी बनानेकी बात कही। मैं तेल नहीं खाता था इसलिये मोयनमें घी डालनेको कहा। उन दिनों बाजारमें आम मिलते थे इसलिये भाखरीके साथ आम रखनेको भी कहा। अमतुस्सलाम बहनने मुझसे पूछा कि भाखरी कितनी चाहिये। मैंने कहा कि चौबीस घंटेका रास्ता है। दो समय खानेको चाहिये। उन्होंने चौबीस घंटेका अर्थ किया चौबीस भाखरी और बापूजीसे जाकर कहा कि बलवन्तसिंह २४ भाखरी चाहता है घीका मोयन डलवाना चाहता है और साथमें आम भी मांगता है। यह सुनकर बापूको धक्का-सा लगा। उन्होंने मुझे बुलाया और बोले तुम रास्तेके लिये २४ भाखरी मांगते हो? घीका मोयन भी चाहिये और साथमें आम भी चाहिये? मैंने हंसकर कहा "बापू, २४ भाखरीकी बात तो मैंने नहीं कही। हां घीके मोयन और आमकी बात जरूर कही थी। क्योंकि मैं तेल नहीं खाता और आम तो बाजारमें मिलता ही है। स्टेशनसे मैं कुछ खरीदता नहीं हूं। जेलसे छूटते समय कैदीको जो भत्ता मिलता है उससे ज्यादा मैंने कुछ नहीं मांगा।"

बापूने कहा — जितनेकी भी क्या जरूरत है? तुम तो नीमके पत्ते खाकर रह सकते हो। एक-दो दिन भूखे रहनेमें क्या है? मैं यहां किसीको

खाना नहीं देता हूं। और अेण्डूज साहब वगैराके कभी दृष्टांत मेरे सामने बापूने रख दिये।

मैंने कहा — मैं तो लोगोंको साथके लिये भी खाना देता था और जिसमें मुझे अपनी भूल नहीं लगती है।

बापूने कहा — ठीक है, अब तो मेरे पास समय नहीं है और मैं कल गुजरात जा रहा हूं। तुम भी कल मत जाओ। वहांसे लौटने पर बात करेंगे।

बापूजी करीब दस दिन गुजरातमें रहे। जिस बीच तीन-चार पत्र बापूजीके आये और मेरे गये। अुन्होंने लिखा

चि बलवन्तसिंह,

तुम्हारी २१ तारीखकी अस्वस्थता देखकर मैं परेशान हुआ। लेकिन अच्छा हुआ कि मैंने तुम्हारी जितनी निर्बलता जान ली। अब तुम्हें स्थिरचित्त होकर अपनेको समझ लेना चाहिये। किशोरलाल और काकासाहबसे बात करो।

बोरसद २१–५–३५ बापूके आशीर्वाद

दरअसल बापूजीकी मान्यता यह थी कि मैं कोअी धनी आदमी हूं और अपने ही खर्चसे आश्रममें रहता हूं, दिल्लीसे भी अपने ही खर्चसे आया था और अपने ही खर्चसे जा भी रहा हूं। लेकिन जब मैंने टिकटका पैसा मांगा तो जिन भाअीके हाथमें पैसेका काम था अुन्होंने भी बापूजीके सामने कुछ जिसी प्रकारसे कहा होगा जिस प्रकारसे अमतुस्सलामबहनने २४ तारीखकी बात कही थी। अुससे बापूजीको अेकदम धक्का-सा लगा और वे परेशान हो गये। अगर यह बात दिल्लीमें ही साफ हो जाती तो बापूजी परेशान नहीं होते। क्योंकि मैं तो साबरमतीमें ही अकिंचनके रूपमें दाखिल हुआ था और अुसी रूपमें अपने आपको देखता था। जिसलिये मुझे स्पष्टीकरण देनेकी जरूरत नहीं थी और मैं अपनी बात पर अड़ा था। अपना दोष मेरा मन कबूल नहीं करता था। तो भी बापूजीके दुःखके कारण मुझे भी दुःख तो हो ही रहा था। अपने मनकी यह वेदना मैंने बापूजीको लिखी तो बापूजीका अुत्तर आया

चि बलवन्तसिंह

तुमको जब दोष-दर्शन नहीं हुआ है तो क्लेश क्यों? भले ही कोअी महात्मा भी हमारा दोष बतावे। लेकिन जब तक हमको प्रतीति न

हो तब तक न सोच होना चाहिये न प्रायश्चित्त। मैंने तुममें असत्य नहीं पाया है लेकिन विवेकशून्यता पायी है। जब तुम्हें आश्रमके पैसेसे आना था तो आनेका कारण ही नहीं था। किस्सीसे आना भी अुचित था या नहीं यह सोचनेकी बात है। वैसे ही रोटी न आमकी बात है। लेकिन जिन सब बातोंमें दुःख मानने की बात नहीं है। सिर्फ समझनेकी बात है, मन पर अंकुश रखनेकी बात है। अधिक मिलने पर। अुम्मीद है कि ७ दिन जो मिल गये हैं अुनका तुमने पूरा सदुपयोग किया होगा।

तुम्हारा कागज वापिस करता हूं।

२७–५–३५ बापूके आशीर्वाद

मैं पैसेवाला नहीं हूं यह बात सुरेन्द्रजीने बापूजीके सामने स्पष्टतासे रख दी जिसलिये मुझे स्पष्टीकरण देनेकी जरूरत ही नहीं पड़ी और न बापूजीने ही जिस विषयमें मुझसे कभी कुछ पूछा। मुझे तो बापूजीके जिस विचारका भी सुरेन्द्रजीसे ही पता चला था। जानकर मुझे आश्चर्य हुआ कि बापूजीका यह विचार मेरे बारेमें कैसे बना? जिस डांटके बाद बापूजीने मुझ पर अुतना ही प्यार बरसाया जितना मां बच्चेको धमकानेके बाद मुझ पर बरसाती है। यह नीचेके प्रसंगसे स्पष्ट हो जाता है।

२ बापू तो बापू ही थे!

बापूको लगता था कि मने रास्तेके लिये खाना क्यों मांगा। और मुझे लगता था कि कलके कैदीको भी जो रास्तेका भत्ता दिया जाता है वह मुझे देनेसे बापूजीने अिनकार क्या किया? जब बापू गुजरातमें वापिस आये तो जिस विषय पर हमारी घनी चर्चा हुआी। लेकिन न तो बापूने ही मुझे क्षमा किया और न मैंने ही अपनी भूल कबूल की। बापूने निर्णय दिया कि अब तुम पर नहीं आ सकते। मने अपना निर्णय बताया कि अब मैं आपके पास नहीं रह सकता।

बापूने कहा — अच्छा मेरे पास नहीं तो मेरे आसपास रहो जिधार लालन बाग रहो, विनोबाके पास रहो और बीच-बीचमें मुझ मिलते रहो।

मैंने कहा — सत्यके लिये मुझ किसीके पास नहीं रहना है। हां कुछ काम सीखना हो तो अलग बात है।

बापूने कहा — क्या सीखना चाहते हो?

मैंने कहा — मेरा बुनाओी-काम अधूरा है। मैं बुनाओी सीखना चाहता हूं।

बापू बोले — अच्छा तो विनोबाके पास नालवाड़ीमें बुनाओीका काम भी अच्छा है और मेरे पास भी रहोगे। विनोबासे मैं बात कर लूंगा। मैं मानता हूं वहां तुम्हारा मन जम जायगा। विनोबा तो बड़ा संत पुरुष है।

बापूजीने विनोबासे बात की अुन्होंने कबूल किया और नालवाड़ीमें मेरे रहने और बुनाओी सीखनेकी व्यवस्था कर दी। अिस प्रसंगको याद करके मेरे हृदयकी क्या स्थिति हो सकती है यह पाठक समझ सकते हैं। कोओी मुग्ध लड़का मूर्खताभरे गुस्सेसे मांको छोड़कर भागता हो और मां अुसके पीछे पीछे दौड़ती हो यही मेरी और बापूकी स्थिति थी। मांका तो बच्चेके साथ कुछ निजी स्वार्थ भी होता है लेकिन बापूका मेरे प्रति शुद्ध वात्सल्य और प्रेमके सिवा दूसरा भाव ही नहीं हो सकता था। बापूके पाससे भागनेकी मेरी आकुलता और बापूका मेरे प्रति अथाह प्रेम और मुझे अपने पास रखनेकी छटपटाहट — जिसकी तुलना मैं किसके साथ करूं? भगवान कृष्णने गीतामें कहा है कि 'प्राप्य पुण्यकृतान् लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः। शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते। मैं नहीं जानता कि मैंने पिछले जन्ममें कुछ पुण्य किये थे या नहीं। लेकिन मेरा तो किसी शरीरस श्रेष्ठ पिताके घर जन्म हो गया। यह मैं प्रत्यक्ष अनुभव करता हूं। अिससे अधिक तो मैं क्या कहूं? लेकिन मांको प्रसवके समय जो पीड़ा होती है अुससे कम पीड़ा मुझे अपने पास पकड़ रखनेमें बापूजीको नहीं हुओी। मैं बापूजीको अपनी माता कहूं पिता कहूं गुरु कहूं — ये सब विशेषण मुझे फीके-से लगते हैं। जितना ही कह सकता हूं कि बापू बापू ही थे। अुनके जैसा प्रेम और अुदारता किसी भी शरीरधारीमें मुझे नहीं मिली। मुझे जिस पितृऋणसे अुऋण होनेकी भगवान शक्ति दे यही प्रार्थना है।

मुझे नालवाड़ीसे भागते समय किसीने शुभ हेतुसे रोकनेका प्रयत्न नहीं किया था। लेकिन मेरे खिलाफ अमतुस्सलामबहनने शिकायत की और मैं रुक गया। मैं अुनका मजाक किया करता हूं कि देखो तुमने मेरी रोटीके बारेमें बापूजीसे शिकायत की थी। वे भी हंसकर कहती हैं अजी अुसका तो आपको आभार मानना चाहिये। अुसीके कारण तो आप बापूजीके पास रहने लगे नहीं तो आप तो भाग रहे थे।

यह बात तो बिलकुल सच्ची है कि मैं मेरी रोटीकी शिकायत न करता तो न मालूम आज मैं कहां होता? ओीश्वर अपना काम अजीब ढंगसे करता है। क्योंकि अुस समय कोओी समझानेकी कोशिश भी करता तो मेरा मन किसी बातको समझनेके लिये तैयार नहीं था। सिर्फ यही ओक घटना असी घटी जिसके कारण मुझे अुस वक्त लाचारीसे रुकना पड़ा। अुस ओीश्वरको मैं कोटिश धन्यवाद देता हूं जिसने असे अनोखे ढंगसे अमतुस्सलाम बहनको निमित्त बना कर मुझे बापूजीके पाससे जाने नहीं दिया। फिर तो असे अनेक प्रसंग आये और गये। लेकिन ज्यों ज्यों मैं बापूजीके नजदीक पहुंचता गया त्यों त्यों मैं आश्रमके जीवनका महत्त्व समझता गया और अुत्तरोत्तर यह मेरा घर जैसा बनता गया।

३ मानवताके सागर बापू

बापूके साथ या बापूके आसपास रहनेका मेरा ओक सालका करार हुआ था। असीलिये नालवाड़ीको पसन्द किया गया था। लेकिन नालवाड़ीमें बुनाओीका काम व्यवस्थित नहीं चलता था अिसलिये किसीने मुझे सावली जानेकी बात सुझायी। तीसरे दिन मैं बापूजीसे मिलने महिलाश्रम गया। बापूजीने हंसकर कहा क्यों दिन गिनते हो? तीन दिन तो कम हो गये न?

मैंने कहा “अपील करने आया हूं।”

बापू — अच्छा करो।

मने बताया कि नालवाड़ीमें बुनाओीका काम व्यवस्थित नहीं है। मुझे सावली भेज दीजिये। बापूजीने कहा “ठीक है। जाजूजीसे बात करना।” जाजूजी साथ ही घूम रहे थे। बापूजीने अुनके साथ बात की और मैं दूसरे ही दिन सावलीके लिये चल दिया और वहां जाकर अपने काममें लग गया। बापूजीके साथ मेरा पत्रव्यवहार तो चलता ही रहा।

अक रोज बापूका चमत्कारी पत्र मिला

चि बलवन्तसिंह,

चार दिन हुअे पेट्याकास अनन्तपुर गये। अुनको रास्तेमें घीके भोजनकी मजदूरी चाहिये थी। स्टेशनसे वे कुछ लेते नहीं हैं। अमतुस्सलामने मुझे पूछा। मैंने कहा हां मजदूरी बना दो। तुम्हारा जिम्मा

याद आया। तुमको मैंने डांटा था। स्मरणने मुझे दुःख दिया। मैं जानता हूं तुम्हारा तो भला ही हुआ। लेकिन मेरा दोष मिथ्या नहीं हो सकता। मेरा हेतु निर्मल था लेकिन यह बात मुझे मुक्त नहीं कर सकती। क्षमा करना। ऐसा अपूर्ण बापू है। बाकी तो *किशोरलालभाईने लिखा है न?*

१५–८–१५ बापूके आशीर्वाद

बापूजीका अपना रजकण जैसा दोष भी पहाड़ जैसा लगता था तथा दूसरेके पहाड़ जैसे दोषको भी रजकण जैसा समझ कर अुसे क्षमा करके अपनानेकी अद्भुत अुदारता अुनमें भरी थी। मुझे अुन्होंने शुद्ध हेतुसे मेरे ही हितके लिये डांटा था। और अुस डांटने ही मेरे जीवनकी दिशा बदल दी। अुस डांटने मुझे घोर अंधकारसे बचानेमें प्रकाश-स्तंभका काम किया। आज मैं जो भी हूं वह अुस डांटका ही मीठा फल है। गीतामें भगवान कृष्णने जो यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम् कहा है, वह मेरे लिये सत्य सिद्ध हुआ। लेकिन मेरे और जेठालालभाईके बीचका भेद बापूजी सहन नहीं कर सके। यह बात चार दिन तक अुनके हृदयको व्यथित करती रही। अिसमें बापूको मेरे प्रति अन्याय लगा। भेदभाव अुनसे कैसे हुआ? अिस विचारने अुन्हें मुझ जैसेसे जो अुनका ही था क्षमा मांगनेको मजबूर कर दिया। अपना सूक्ष्मसे सूक्ष्म दोष भी अुनकी नजरसे ओझल नहीं हो सकता था। अुनका हेतु निर्मल होते हुए भी अुनको ऐसा लगा कि मेरे विचारों पर आक्रमण हुआ है, ऐसा करनेका अुन्हें अधिकार नहीं था। अिसी विचारने अुन्हें अत्यन्त दुःखी बना दिया। बापूजीका हृदय अितना निर्मल और मस्तिष्क अितना जाग्रत था कि अुसमें भेदभाव भी मैल या विकारकी छिपकली टिक ही नहीं सकती थी। जो अनीति कछु भाषौं भाई तो मोहि बरजहु भय बिसराई रामचन्द्रके अिस वचनके अनुसार अुनकी साधना थी।

किसीको लग सकता है कि अेक छोटीसी बातको बापूजीने अितना तूल क्यों दिया होगा? लेकिन किसी बाहरी यंत्र या औषधिके संयोजनमें बाल बराबर भी फर्क पड़ जाय तो सारी मेहनत बेकार हो जाती है तब हृदय-संयोजनमें यदि फर्क पड़े तो वह कैसे सहन हो सकता है? यह दृष्टि

बापूजीके सामने थी। अुनकी भावना दासानुदास बननेकी थी। अिस पत्रमें अुनकी महानताके साथ साथ मेरे प्रति जो ममत्वकी भावना छिपी थी अुसने मुझे अैसा जकड़ कर बांधा कि मैं बापूजीके चरणोंसे अलग हो ही नहीं सका। अिस प्रकारकी भावना विरले ही महापुरुषोंके जीवनमें देखनेको मिल सकती है। अेक छोटेसे बच्चेके सामने भी अपनी भूल कबूल करनेकी क्षमताने ही बापूको राष्ट्रका बापू बनाया और मेरे जैसे कितने ही लोगोंको प्रेमकी रस्सीमें अुन्होंने अैसा कस कर बांधा कि आज भी अुसके बंधन ढीले नहीं बल्कि और भी दृढ़ हो रहे हैं।

आज जो जब मैं यह पत्र पढ़ता हूं तो मेरा हृदय बापूजीकी अपार नम्रताके सागरमें डूब जाता है और मैं तुकारामकी ये पंक्तियां गुनगुना अुठता हूं

तूं मातुलीहुनी मवाळ। चंद्राहुनी शीतळ। पाणियाहुनी पातळ। कल्लोळ प्रेमाचा॥ देवूं कशाची अुपमा। दुजी तुज पुरुषोत्तमा। काही न बोलवी वाता। अुगाच चरणी ठेवितो माथा। तुका म्हणे पंढरिनाथा। क्षमा करी अपराध॥

— तू मांस भी प्रमल है। चन्द्रमासे भी शीतल है। पानीसे भी पतला है। और क्या कहूं तू प्रेमका कल्लोल है (सागर है)। हे पुरुषोत्तम तुझे दूसरे किसकी अुपमा दूं? कुछ न बोलकर अब मैं चुपचाप तेरे चरणों पर सिर रखता हूं। तुकाराम कहते हैं हे पंढरीनाथ मेरे अपराध क्षमा कर। (तुकाराम-गाथा अभंग ११९५)

अिस पत्रके जवाबमें मैंने अेक लम्बा पत्र बापूको लिखा जिसमें यह भी लिखा

"मैं जानता हूं कि आपका मेरे अूपर कितना प्रेम है। आप मुझसे कितन त्यागकी आशा रखते हैं कि मुझे रास्तेके लिअे अपने खाने वगैराकी चिन्ता भी न हो। मैं कितना भी संग्रह करके क्यों बचूं? मैं आपकी अिस आशाको पूरी नहीं कर सका और अपन हठके कारण अपनी बातको सही समझता रहा जिसका मुझे दुःख है।

बापूका अुत्तर आया

चि० बलवन्तसिंह

ओश्वरभाओीका खत मुझे दे दो कान्तिका कान्तिको। तुम्हारे खत मिले हैं हिसाब पढ़ लिया। पैसे तो हैं न? चाहिये तब लिखो। हिसाब अच्छा है। भाओी निरयादिकी खोज की सो अच्छा किया। मैंने माफी मांग ली वह तो आत्म-अभ्यासके लिये। अुसका असर तुम्हारे पर गहरा पड़ा यह समझकर मुझे आनन्द होता है। तुममें काम करनेकी शक्ति तो काफी है ही। सावलीमें तुमको स्थिरचित्तता प्राप्त हो जायगी।

वर्धा १-८-४५ बापूके आशीर्वाद

४ लोगोंका भ्रम दूर करनेका अुपाय

सावलीमें अेक विशेष दिन देवीके सामने बकरेकी बलि चढ़ानेकी विधि सामूहिक रूपसे होती थी। सब लोग गांवमें अेक अेक बकरा लेकर आते थे और देवीके निमित्तसे वहीं पर अुसे काटकर और अुसका मांस बनाकर खाते थे। अिसका पूरा वर्णन मैंने बापूजीको लिखा था। बड़ा भयानक दृश्य था। पेड़ पेड़ पर बकरे टंगे थे। दूसरी घटना भी अेक बहनकी। अुस बहनने कुछ चुरा लिया था और लोग अुसको सता रहे थे। गांवके कुछ बीज भी भेजनेके लिये मैंने लिखा था। अुसके जवाबमें बापूने लिखा

चि० बलवन्तसिंह

देवीके सामने बकरोंके भोगका बयान दुःखद है। हम अिन सदियोंकी भ्रमणाको क्षणमें दूर नहीं कर सकते। लोग समझ सकें अैसी सेवा जब तक हमने नहीं की है, तब तक हमारी बात सुननेके लिये अुनके हृदय तैयार नहीं होंगे। बुद्धिका विकास अिससे भी कठिन है। और अहिंसक प्रवृत्तिमात्र कम हृदयस्पर्शी है। हृदयस्पर्श निःस्वार्थ सेवासे बहुत जल्दी हो सकता है। अिसलिये आज तो हमें अिन देवियोंको बकरोंका भोग चढ़ानेवालोंमें सेवाकार्य करना है। और मौका मिलनेसे हम अुनका भ्रम दूर करायेंगे। याद रखो कि जो दृश्य तुमने अनपढ़ लोगोंमें देखा वही दृश्य पढ़े हुओे लोगोंमें कलकत्तेमें देखा जाता है — और वहां बहुत बड़े पैमानेमें।

पकड़कर आंसू रोकनेकी कोशिश कर रहा हूं लेकिन रोक नहीं पाता। रोनेसे दिल कुछ हलका हो जाता है। अिसलिअे रोना रहता पड़ता है।

६. हम मकसदके भक्त हमारे

१२ दिसम्बर, १९३५ से ८ जनवरी १९३६ तक नागपुरमें कांग्रेसकी पचासवीं जयन्ती मनाअी जा रही थी। अुसमें खादी-प्रदर्शनीके लिअे मैं सावलीसे बुनकर और कातनेवालोंकी अेक टोली लेकर वहां गया था। अुन दिनों बापूजी बीमार थे और अुनसे मिलने-जुलनेकी मनाही थी। मैंने पूज्य किशोरलालभाअीसे पत्र लिखकर पूछा कि मैं बापूजीके दर्शनके लिअे आ सकता हूं क्या? अुन्होंने मेरा पत्र बापूजीको दिखाया और बापूजीने आनेके लिअे कहा। पूज्य किशोरलालभाअीका पत्र पाकर मैं १-१-३६ को नागपुरसे वर्धा गया। बापूजी मगनवाड़ीमें मकानकी छत पर रहते थे। मैंने पूज्य महादेवभाअीसे कहा कि मैं बापूजीसे मिलने आया हूं। अुन्होंने इशारेसे कहा कि बापूजी तो बीमार हैं और अुनसे मिलने-जुलनेकी मनाही है। मैंने भी इशारेसे कहा कि यह तो मुझे मालूम है। आप तो मेरे आनेकी सूचना मात्र बापूजीको कर दें। अगर वे मुझे नहीं बुलायेंगे तो मैं खुशीसे वापिस चला जाअूंगा। महादेवभाअीके पास बापूजीको खबर दिये बिना कोअी रास्ता नहीं था। अिसलिअे बेचारे मन मारकर अूपर गये और मेरे आनेकी खबर बापूजीको दी। बापूजीने मुझे तुरंत ही अूपर बुलाया।

बापूजी बिस्तर पर पड़े थे। मैंने जाकर प्रणाम किया। बापूजीने मुस्कराते हुअे प्रेमकी अेक मीठी चपत लगाअी और बोले "तू आ गया यह अच्छा किया। अितने नजदीक आकर अगर तू मुझसे बिना मिले चला जाता तो पता लगने पर मुझे दुःख होता। तेरा बुनाअीका काम तो ठीक चल रहा है, अैसा तेरे पत्रोंसे पता चलता है। लेकिन तू बार बार बीमार क्यों पड़ता है?" मैंने कहा "बापूजी वहां मच्छर बहुत हैं और भोजनमें भी कुछ अव्यवस्था होती है। बुनाअीका काम अैसा है कि जिसमें कभी कभी भोजन करनेमें अनिश्चित समय चला जाता है और कभी बार बासी रोटी खानी पड़ती है।" बापूजीने कहा "यह तुम्हारी भूल है। तबीयत अच्छी रखनेके लिअे मच्छरदानीका अुपयोग करना चाहिये और भोजन तो समय पर ताजा ही खाना चाहिये। बासी तो कभी नहीं। गीतामाता कहती है कि सात्त्विक भोजन सात्त्विक पुरुषका आहार है। देखो १७ वें अध्यायका ८ वां श्लोक। अच्छा यह तो बताओ

कि तुम कुनैन भी लेते हो या नहीं?" मैंने कहा "बापूजी कुनैनसे मुझे मीर नहीं आती और कान बहरे हो जाते हैं अिसलिअे मैं अुससे बचता हूं।" बापूजी बोले "कुनैनके बुरे असरको मारनेका अेक तरीका है। वह मैं तुमको समझा देता हूं और अेक बार तुम्हारे सामने करके बता देता हूं। फिर किसी तरह कानोंमें तो कुनैनका बुरा असर नहीं होगा।" पासमें ही प्रभावतीबहन बैठी थीं। बापूजीने मुझसे कहा "प्रभा जा सोडा-बाअी-कार्ब नींबू और पांच ग्रेन कुनैन ले आ और अिसको मेरे सामने बनाकर पिला दे।" प्रभावतीबहन तुरंत ही सब सामान ले आयीं। बापूजीने कहा "अेक प्यालेमें पहले नींबू निचोड़ो और अुसमें पांच ग्रेन कुनैन डालो। अुसीमें सोडा डालो और मिलाकर अिसको पिला दो। चार-पांच खुराक कुनैन और सोडा अिसके साथ दे दो।" प्रभावतीबहनने तुरंत ही कुनैन तैयार करके मुझे पिला दी और मेरे साथमें भी दे दी।

बापूजी बोले "देखो सेवकके लिअे बीमार पड़ना गुनाह है। तुम्हारे मनमें आ सकता है कि बापू मुझे अुपदेश करता है और खुद बीमार पड़ा है। मैं भी अिस गुनाहका बचाव नहीं कर सकता हूं। हम जब तक प्रकृतिमाताके नियमोंका अुल्लंघन नहीं करते हैं तब तक बीमार पड़ ही नहीं सकते हैं। यह खूब सत्य है। कहीं न कहीं हमसे भूल होती है अुसकी सजा देनेके लिअे कहो या हमको सावधान करनेके लिअे कहो बीमारीके रूपमें प्रकृतिदेवीका संदेशा हमको मिलता है। तुम मच्छरदानी नहीं लगाते हो यह संकोच मैं समझ सकता हूं। क्योंकि अभी हम खादीकी मच्छरदानी जैसी चाहिये वैसी नहीं बना सके हैं। रामदासने कहो कि वह अिसका संशोधन करे। कृष्णदास भी कुछ सोच रहा है। बराबर मच्छर सुबह-शाम काटते हैं। अुस समय खुले बदन पर मिट्टीका तेल लगा लिया करो। और जब तक मच्छरदानी न मिल सके तब तक रातको सोते समय भी मुंह पर और खुले बदन पर तेल लगा लिया करो। बिलकुल हलका-सा लगानेसे कोअी नुकसान नहीं होता है। आसपास जो पानीके छोटे छोटे गड्ढे हों अुनमें थोड़ा थोड़ा मिट्टीका तेल डालनेसे मच्छर पैदा नहीं होते हैं। आस-पासकी सफाअी तो करनी ही चाहिये। किसी प्रकारकी गन्दगी होती है तभी अिस प्रकारके अुपद्रव पैदा होते हैं। हमें तो बाह्य और आन्तरिक दोनों प्रकारकी स्वच्छताकी भावना रखनी है।"

बापूजी बोलते ही जा रहे थे और मैं घबरा रहा था कि महादेवभाओ और दूसरे लोग मेरे अूपर नाराज हो रहे होंगे कि मैं बापूजीका कितना समय क्यों ले रहा हूं। सचमुच बापूजीका समय लेनेकी मेरी बिलकुल बिच्छा नहीं थी और मैं वहांसे अुठनेके लिअे अुतावला हो रहा था। लेकिन मैं क्या करता? तो भी मैंने साहस किया और बोला "बापूजी मैं सब समझ गया हूं। अब आपसे अधिक पूछनेकी बिच्छा नहीं है। मैं तो सिर्फ आपको देखने आया था। मैं सटसे अुठा और बापूजीके चरणोंमें प्रणाम किया। बापूजीने अेक चपत लगाओ और बोले अगर सचमुच समझ गया है तो अब मेरे पास बीमारीका समाचार नहीं आना चाहिये। मैंने कहा ठीक है। मैंने बापूजीकी आंखोंकी तरफ देखा तो अुनके चेहरे पर मुसकराहट और करुणामय प्रेमकी अेक अद्‌भुत रेखा चमक रही थी। मैं सटसे नीचे अुतर आया। बापूके शुद्ध प्रेममें मैं अपने आपको भूला-सा अनुभव करता हुआ नागपुर आया और मैंने बीमार न पड़नेकी पूरी पूरी सावधानी रखी। गीताके सत्रहवें अध्यायका आठवां श्लोक तो मेरे लिअे आशीर्वाद-रूप सिद्ध हुआ। मैं गीताजीकी दूसरी सिखावन मानूं या न मानूं परंतु अुस श्लोक पर पूरा पूरा अमल करता हूं। क्योंकि "आयु:-सत्त्व-बलारोग्य-सुख-प्रीति-विवर्धना। रस्या स्निग्धा: स्थिरा हृद्या आहारा: सात्त्विकप्रिया:॥" किसे प्रिय न होंगे?

१०

स्नेहनिधि बड़े भाओ पू० किशोरलालभाओ

सावलीमें रहते समय मेरा पूज्य बापूजीके साथका पत्रव्यवहार पूज्य किशोरलालभाओ ही किया करते थे और मैं भी अुनको बहुतसे पत्र लिखा करता था। यहां पू किशोरलालभाओका अत्यंत अल्प-सा परिचय कराये बिना तथा अुनके कुछ बहुमूल्य पत्रोंको प्रकाशमें लाये बिना आगे बढ़ना अशक्य-सा लगता है।

बापूजी तो मेरे बापू थे ही लेकिन पू किशोरलालभाओने मेरे आश्रम जीवनमें बड़े भाओका स्थान ले लिया था। जिस प्रकार मैंने बापूजीको सताया और बापूजीने मेरा दुलार रखा अुसी प्रकार बड़े भाओका जो धर्म

होता है अुसे किशोरलालभाओीने अंतकी घड़ी तक निभाया। और मेरी भी अुनके प्रति वैसी ही श्रद्धा बनी रही वैसी कि छोटे भाओीकी बड़े भाओीके प्रति होती है। मने अुनको बहुत नजदीकसे देखा। अुनके जैसी सहृनशीलता अुनके जैसा धीरज अुनके जैसा प्रेमल स्वभाव और शारीरिक पीड़ा होते हुअे भी अुनके जैसी प्रसन्नचित्तता मैंने अपने जीवनमें अन्य किसीमें नहीं देखी। जब १९३४में पू. बापूजीने मेरा परिचय किशोरलालभाओीसे कराया था तब कहा था कि देखो अुस घरमें किशोरलालभाओी रहते हैं। तुम बीच बीचमें अुनसे मिलते रहना। लेकिन अेक बातका ध्यान रखना। अुनकी तबीयत कमजोर है और अुनका स्वभाव अैसा है कि कोओी अुनके पास चला जाय तो अुसके साथ बातें करनेमें वे अपने स्वास्थ्यको भूल जाते हैं और जब तक मिलनेवाला थका न जाय तब तक बातें करते ही रहते हैं। मैंने पू. बापूजीकी अिस सूचनाका हमेशा ध्यान रखा। लेकिन कुछ समय बाद मैं अुनके साथ अितना घुलमिल गया कि मौका आने पर वे मेरे और बापूजीके बीचमें पड़ते थे। यहां तक कि मैंने भी अुनको बीचमें डालनेका अपना अधिकार-सा मान रखा था। मैं अुनके साथ मजाक तक करनेमें नहीं चूकता था और अुनका भी स्वभाव अैसा ही था। अेक बार अुन्होंने मेरे खराब अक्षर सुधारनेकी सूचना बड़े मनोरंजक ढंगसे की तो मैंने लिखा कि आपकी तरह मैं सफेदको काला करना भले न जानता होअूं लेकिन सूखी और बंजर जमीनको हरीभरी करनेमें मेरा कुदाल काफी सुन्दर रेखायें खींचना जानता है। आपकी काली रेखाओंके बिना मेरा काम चल सकता है, लेकिन मेरी रेखाओंके बिना आप भूखे ही रह जायेंगे।

विवेक और स्नेहके तो वे भंडार थे। वे अत्यन्त कठोर सत्य कह सकते थे लेकिन 'कहहिं सत्य प्रिय वचन विचारी' — अुनका वचन सत्य प्रिय और विचारयुक्त होता था। किसी साथीको कितना भी कठोर सत्य स्पष्ट कहनेकी अुनमें हिम्मत थी। अुनको जो समता था अुसे मनमें न रखकर सामनेवालेको वे सुना देते थे लेकिन अुसके प्रति स्नेहमें जरा भी फर्क नहीं आने देते थे। जिन्हें अुनका परिचय हुआ था वे सब अैसा ही अनुभव करते थे। वे जितने विचारक और गंभीर थे अुतने ही विनोदी भी थे। अगर मैं अुनके साथके मधुर संस्मरण लिखने बैठूं तो जैसी पू. नरहरिभाओीने बहुत मेहनतके बाद भेयाजीकी साधना लिखी है, वैसी अेक-दो पुस्तकें सहजमें लिख सकता हूं।

लेकिन अुनका और मेरा सम्बन्ध अितना घनिष्ठ था कि अुनकी मृत्यु पर सिवा पू॰ गोमतीबहनको अेक तार देनेके मेरी कलम ही अुनके बारेमें नहीं अुठी। तारमें मैंने लिखा था: "पूज्य गोमतीबहन भाअीके स्वर्गवासके समाचार सुने। अन्त समयमें अुनके दर्शन और सेवासे वंचित रहा अिसका मुझे दुःख रह गया। भाअी तो जीवन्मुक्त थे। हंसते-हंसते गये हैं।—बलवन्तसिंह।" अिससे भी बड़े दुःखकी बात यह थी कि बेचारी गोमतीबहन भी अंतिम क्षणोंमें अुनकी सेवा और दर्शनसे वंचित रह गयीं। वे किसी कामसे घरके अन्दर गयीं अितनेमें ही किशोरलालभाअीके प्राणपखेरू अुड़ गये।

बापूजीके बाद वे ही हमारी ढाल थे। वे भी जब अुठ गये तो रोनेसे क्या लाभ? लेकिन जब मैं बापूजीके साथके संस्मरण लिखने बैठ गया हूँ और कलमने बिजलीकी तरह अपनी पटरी पकड़ ली है तो सबसे बड़े संकलन पर किशोरलालभाअीके मधुर संस्मरणरूपी जोहड़का पानी पिये बिना कलम आगे कैसे चल सकता है? अुनके साथ मेरा जो पत्रव्यवहार हुआ और जो चर्चाओंमें हुआ अगर अुन सबका संग्रह मैंने संभालकर रखा होता तो अितनी बड़ी पूंजी बन जाती कि अुससे मैं अनेकोंका भला कर सकता था। लेकिन थोड़ेसे धन कंजूसकी तरह मैंने अपनी बुकचीमें छिपाकर रख ही छोड़े हैं। अगर मैं आज भी अुन्हें छिपे ही रखकर चला जाअूं तो कंजूसीकी हद हो जायगी और कितने ही लोग मूर्ख कहकर मुझे गालियां देंगे। सबसे अधिक गाली तो पू॰ गोमतीबहन ही देंगी। अुनसे भी छिपाकर रखनेका मैंने अति-लोभ किया है। जहां बापूजीके परिवारमें मेरे जैसे क्षणभरमें आपेसे बाहर हो जानेवाले लोग थे वहां किशोरलालभाअी जैसे हिमालयकी तरह अचल और शीतल रक्षक भी थे।

सम सीतल नहिं त्यागहिं नीती।
सरल सुभाउ सबहि सन प्रीती॥

शंभुके गणमें जहां वीरभद्र थे वहां गणेशजी भी तो बकरी थे। किशोरलालभाअीका स्वभाव जहां आकाशकी तरह खुला था वहां अपनी व्यक्तिगत सुविधा और सेवा लेनेमें संकोची भी था। मर्यादाका पालन वे कड़ाअीसे करते थे। अेक बार जमनालालजीने अुनके सामने गोमतीबहनको अिलाजके लिये विदेश भेजनेकी बात निकाली तो अुन्होंने कहा कि जो सुविधा मैं अपने व्यक्तिगत जीवनमें प्राप्त नहीं कर सकता अुसका लाभ सार्वजनिक जीवनमें

अुठानेका मुझे क्या अधिकार है? जमनालालजीका अुनके प्रति अगाध स्नेह था। वे अपनी बात कितने प्रेम और आग्रहके साथ रखनेकी योग्यता रखते थे जिसका सबको अनुभव है। वियेना जानेकी बात मेरे सामने ही चल रही थी और मैं दोनोंकि मुंहकी तरफ देख रहा था। मुझे लगता था कि वे अगर कबूल कर लें तो कितना अच्छा हो। पर किशोरलालभाओ बोले "देखिये अगर मैं वकालत करता तो अितना पैसा नहीं कमा सकता था कि गोमतीको वियेना ले जाकर अिलाज करा पाता। तो आज मैं कैसे भेज सकता हूं? आपका प्रेम और भावना मैं जानता हूं। लेकिन मुझे अपनी मर्यादाका भी तो भान है। आप किस किसको वियेना भेजेंगे? बिचारे जमनालालजी चुप हो गये।

अुनका धीरज और सहनशीलता तो गजबकी थी। यों तो वे हमेशा बीमार ही रहते थे लेकिन अुनकी बीमारीका अेक दृश्य मैं कभी नहीं भूल सकता। १९३८ की बात है। हरिपुरामें कांग्रेस हो रही थी। अुसमें मैं भी गया था। बापूजीके कैम्पमें ही ठहरा था। किशोरलालभाओको बुखार चढ़ा। बुखार १ ४ डिग्री था। अुधर गोमतीबहनको भी बुखार चढ़ गया। अब कौन किसकी सेवा करे? क्योंकि सेवक और डॉक्टर तो बापूजी ही थे। वे दोनोंकी संभाल करते थे। दोनोंकी खाटें अेक ही तंबूमें थीं। दोनों अेक-दूसरेकी तरफ देखकर हंसते थे। मैं सोचता था कि दोनों जानेकी तैयारी कर रहे हैं तो भी कितने प्रसन्न हैं। हरिपुराकी हवा अितनी खराब हो गयी थी कि वहां १ –१५ लोग मर चुके थे। साबरमती आश्रमके पं. नारायण मोरेश्वर खरे वहीं चल बसे थे। बापूजीको डर हो गया था कि कहीं अिनको भी वे न खो दें। अिसलिओ दोनोंको अुन्होंने बारडोली भेज दिया। अच्छे हो जाने पर मैंने अेक रोज किशोरलालभाओसे पूछा कि आप बीमारीमें भी अितने कैसे हंस लेते हैं? वे बोले देखो जहां चमड़ा कमाया जाता है वहां अगर तुम जाते हो तो कैसा लगता है? तुम नाक बन्द क्यों करते हो? लेकिन चमड़ा कमानेवालेसे पूछो। वह क्या कहता है? अिसी प्रकार बीमारी तो मेरी साथिन है। अेक रोज थोड़ी अधिक हुअी तो क्या और थोड़ी कम हुअी तो क्या? यह थी अुनकी सहनशीलता और धीरजकी पराकाष्ठा।

अुनके शरीरमें कितनी पीड़ा होती रहती थी जिसका पता अुनके ही
... शारीरिक सेवा लेनेमें

संकोच नहीं करना चाहिये। तब अुन्होंने लिखा : 'देखो मेरे शरीरको जितना दबानेकी जरूरत है अुतना दबानेवाला मुझे कोओी नहीं मिला, और न मिलनेकी आशा है। तो फिर थोड़ासा अुपकार लेकर ही मैं क्या करूं?' यह अुनका अंतिम पत्र था। जब अुनका स्वर्गवास हुआ तब मैं राजस्थानमें बांसवाड़ा जिलेके अकाल-पीड़ित क्षेत्रोंमें घूम रहा था और यह सोच रहा था कि बहुतसे समाचार अेकसाथ ही अुन्हें लिखूंगा। जितनेमें अेकाअेक मुझे अुनके चले जानेका समाचार मिला और मेरे दिलमें यह दर्द रह गया कि मैंने अुनको पत्र लिखनेमें देर कर दी।

अेक बार मैं कुछ नाराज-सा हो गया तो वे बोले : 'देखो अपने सुरेन्द्र और तुमको मैं जिसलिये कुछ सुना देता हूं कि तुम लोग मेरी बात सुनते हो।" अुस दिन मुझे पता चला कि अुनके दिलमें मेरे प्रति कितना स्नेह था।

अब मैं अुनके कुछ कीमती पत्रोंके नमूने पूर्वापर संदर्भके साथ यहां पेश करता हूं।

१

सावलीसे मैंने बापूजी और किशोरलालभाओीको पत्र लिखे। मगर तो खराब थे ही। सावलीमें दूध और घी मिलनेमें कठिनाओी थी। सागभाजी भी नहीं मिलती थी। बाबुलके सिवा नीमके वृक्ष भी नजर नहीं आते थे। वहांका पानी भी खराब था। मैंने ५ रुपये मासिकमें गुजारा चलानेका भी लिखा था। जिस पर अुनका विवेचनापूर्ण पत्र आया।

वर्धा ८—७—४५

भाओी श्री बलवन्तसिंहजी

मेरा पहला पत्र मिला था न?

पू० बापूका कलका पत्र मिला होगा। साथ मेरी चिट्ठी थी। पू० बापू आपका सब पत्र ठीक निकाल न सके थे। जिससे अुन्होंने वह मेरे पास फिरसे भेजा। बाद अपने पत्रकी पूर्तिमें यह पत्र लिखनेकी आज्ञा दी है।

जिधर-अुधर तलाश करनेसे दूधकी व्यवस्था हो जाना संभव है। कुछ धन दे करके अुसको प्राप्त करनेका प्रयत्न करें। पर्याप्त

दूध मिल जाय तो अुसका दही बना कर अुसमें से मक्खन आप ही तैयार कर सकेंगे। मक्खनका घी बनानेकी आवश्यकता नहीं है। ज्यादा दिन मक्खन रह नहीं सकता जिससे हम अुसका घीमें परिवर्तन करते हैं। परन्तु ताजे मक्खनकी अपेक्षा घीके गुण कम ही हैं। मक्खनमें जो प्राणतत्त्व रहते हैं वे घीमें नहीं पाये जाते। अैसा भी हो सकता है कि रोज तो दूध खायें और हफ्तेमें अक या दो दिन दूधकी छाछ कर डालें और मक्खन तैयार करें। थोड़ासा ज्यादा दूध मिल जाय तो कुछ दिन मक्खन निकाल कर केवल छाछका ही अुपयोग करें। और जिस सब झंझटमें से बच सकते हैं यदि काफी दूध मिला करे और अलग मक्खनकी जिच्छा ही न रखें। दूधमें वह प्राप्त हो ही जायगा।

जिन दिनोंमें खाद्यके बीचमें अनेक प्रकारकी भाजियां अपने आप पैदा होती हैं। अुनमें खाने लायक अनेक पत्तियां रहती हैं। अुनमें ढूंढी जाय तो आपको अवश्य भाजी प्राप्त होगी। देहातियोंमें अब तक भाजीकी आवश्यकता ही कम समझी है। वे मानते हैं कि भाजीकी आवश्यकता धनिकोंको ही रहती है। वह आवश्यक आहार नहीं है। जिसके सिवा यहां पर जो भाजी बेची जाती हो अुसीको वे भाजी समझते हैं। अपने-आप जंगलमें अुगती हो अुसे नहीं जानते। आप लोगोंसे तो जरूर मिलेगी।

नीमके वृक्ष यहां नहीं पाये जाते यह जानकर कुछ आश्चर्य होता है। सामान्यतः हिन्दुस्तानमें सब जगह नीम होता है।

पानी चाहे कितना ही गंदा हो अुसे २०—२५ मिनट अुबालकर, छानकर अुपयोगमें लाया जाय तो अुसमें जन्तु नहीं रहने पाते। घर साफ जाली हो तब अेक बरतनके अूपर चौदीमें तैल भरनेके लिये जैसा नलीदार फूल होता है वैसा फूल रखकर बरसातमें अुसमें छोड़ दी जाय तो पीनेके लिये स्वच्छ पानी मिल जाना संभव है। लाल दवाजीका अेकाध कण पानीमें छोड़ दिया जाय तो वह पानी जन्तुहीन हो जायगा। और निर्मलीका अेक छोटासा टुकड़ा पानीमें थोड़ी देर हिलाया जाय तो सब मैल जल्दी नीचे बैठ जायगा। फिर अूपरसे पानी दूसरे बरतनमें निकाल लिया जाय।

अिनमें से कअी सूचनायें मेरी हैं। कुछ पू० बापूजीकी हैं। अिन्हें पढ़कर कदाचित् आप यह महसूस करें कि अितना सब मैं करूं कौनसे समय? परन्तु संभव है धीरे धीरे यह सब व्यवस्था हो सकती है।

पू० बापूजीने लिखाया है कि स्वास्थ्यको बिगाड़कर पांच रुपयेकी मर्यादामें रहनेका आग्रह न रखें।

आप प्रसन्न होंगे।

आपका
किशोरलाल

२

मैंने अपने जीवनमें पहली बार सावलीके साप्ताहिक बाजारमें अितने अर्धनग्न स्त्री-पुरुषोंको देखा। अुतनोंको अेक ही जगह पर अितनी संख्यामें पहले कभी नहीं देखा था। वहांकी गरीबी, अपनी कठिनाअियां और संतोषका समाचार मैंने किशोरलालभाअीको लिखा था। अुनका अुत्तर आया :

वर्धा २१—७—'४९

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी

आपका पत्र परसों मिला। भाअी [illegible] आज सावली जा रहे हैं। अिससे अुनके साथ ही पत्र भेज रहा हूं। पू० बापूजीको आपका पत्र पढ़कर सुनाया। वे कदाचित् आज ही अुत्तर न दे सकेंगे।

आपका काम ठीक चल रहा है और आपको वहां संतोष है, यह जानकर खुशी हुअी। यहांकी अपेक्षा वहां जीवनकी कठिनाअियां ज्यादा हैं। परन्तु मानसिक अुत्साहके कारण वे आपत्तिरूप नहीं मालूम होंगी।

वहांकी गरीबीका वर्णन पढ़कर दुःख होता है। आजकल पू० बापूजी भी अिसीका विचार करते हैं। शीघ्र ही यहांकी कार्यप्रणालीमें परिवर्तन होनेका संभव है। जिसको अत्यधिक लिखना पड़ता है और जिसको क्वचित् ही लिखना पड़ता है—अिन दोनोंके हस्ताक्षर खराब हुआ करते हैं। पहले मनुष्यका दिमाग अितना जोरसे चलता रहता है कि हाथको बहुत वेगसे चलाना पड़ता है। जिससे हस्ताक्षर बिगड़ते हैं। दूसरेको बराबर लिखनेकी आदत न होनेके कारण आकृति

बिगड़ जाती है। इसीलिये रोज थोड़ा थोड़ा लिखनेका अभ्यास करनेसे अक्षर सुधर सकते हैं। अभ्यास करनेमें जितनी सावधानियां रखनी चाहिये (१) लकीरोंवाले कागज पर ही लिखना। (२) छपे हुए नमूनेके अनुसार ठीक आकृति निकालनेका प्रयत्न करना। (३) स्पष्टतामें अक्षर, एक-दूसरेसे जोड़े हुए अक्षरोंको कलम उठाये बिना लिखनेका आग्रह न करना। हाथका मुहावरा हो जाने पर स्पष्ट अपने-आप लिख जाती है। (४) स्पष्ट सीखनेमें सुन्दर अक्षर लिखने वालोंके हस्ताक्षरों पर ध्यान देना चाहिये। (५) आपको कदाचित् मालूम न होगा कि हस्ताक्षर और चरित्रका सम्बन्ध है। हस्ताक्षर परसे मनुष्यके चरित्र और स्वभावको पहचाना जा सकता है। जिससे हमारे मन और बुद्धिकी व्यवस्था और अव्यवस्था हमारे हस्ताक्षरोंमें भिन्न भिन्न तरहसे झुकती है।

श्री सुरेन्द्रजी पूज्य बापूजी और श्री गंगाबहनके पत्र २-१ दिनमें ही आये हैं। सब आपको याद करते हैं और खबर पूछते हैं। सुरेन्द्रजी आचार्य या पंडितजी बननेके रास्ते पर हैं।

मैं अभी तक बहुत परेशान नहीं हूं। गोमती भी साधारण ठीक है। पत्रमें अवकाशसे आज न लिखेगी। आपको प्रणाम लिखाती है।

आपका
किशोरलाल

२

मैंने अपने पत्रमें कभी बातें लिखी थीं जिनका सुन्दर उत्तर सुन्दरमें प्रयत्न किया था। मुझे बापूजीका पत्र मिलनेमें देर हुई थी। अगली बार मैंने अक्षर सुधार कर लिखनेकी कोशिश की थी। मगर अक्षरोंका कारण भी बताया था। दूसरे, मैंने लिखा था कि

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनुविधीयते।
तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि॥*

---

* विषयोंमें भटकनेवाली इन्द्रियोंके पीछे जिसका मन दौड़ता है, उसका मन वायु जैसे नौकाको जलमें खींच ले जाता है वैसे ही उसकी बुद्धिको जहां चाहे वहां खींच ले जाता है।

गीताके अिस श्लोकसे मेरा अनुभव अुलटा है। अुसमें मुझकी तरफ खींचने वाली शक्ति अधिक बलवान है। तीसरे, अिस मुल्कके बारेमें मैं सुनाती सीखता था अुसके घरकी मोरी बंदी थी। स्त्रियां अुसमें बैठकर स्नान करती थीं। मैंने सफाअी करके घास-फूसका स्नानघर बना दिया था। चौथे छावनीमें कुष्ठरोग बहुत ही फैला हुआ था। अुसका वर्णन लिखा था और बचनेका अुपाय पूछा था। पांचवें मुझे वहांके देहातियोंका सहज और स्वाभाविक जीवन प्रिय लगता था। छठे छावनीके पानी-अुत्पत्ति केन्द्रके कुओंके पास मने जो भाजी अुगाओ थी वह बापूजीके पास भेजी थी। अिसके अुत्तरमें किशोरलालभाअीने लिखा

वर्धा १०-८-३९

भाअी श्री बलवन्तसिंहजी

सप्रेम प्रणाम। आपका ता० ५ का पत्र मिला। पू० बापूजीका अेक भी पत्र आपको आज तक नहीं मिला यह आश्चर्यकी बात है। पू० बापूजीने मेरे सामने ही आपको अेक विस्तृत पत्र लिखा था अैसा मुझे और अुन्हें दोनोंको याद आता है। हां अभी थोड़े दिनोंमें आपको अुन्होंने पत्र नहीं लिखा है। मेरे खयालसे तो आपका जो विनय पत्र था वह अुन्हींके पत्रके अुत्तरमें था। खैर। यह पत्र अुनका और मेरा दोनोंका आप समझियेगा।

अिस समयके आपके हस्ताक्षर पढ़नेमें कुछ भी तकलीफ नहीं हुअी। पू० बापूजीने स्वयं ही सब पत्र पढ़ लिया। लिखनेका ढंग सुहावना होनेसे अक्षरोंमें सुन्दरता और लिखनेकी गतिमें तीव्रता कम रहती है यह बात ठीक है। परन्तु सुन्दरता और सुवाच्यता ये भिन्न गुण हैं। अिसमें सुन्दर न हों तो भी सुवाच्य अक्षर लिखे जा सकते हैं यदि अक्षरोंकी आकृतिका अच्छा परिचय हो।

लिखनेमें तीव्रता अभ्याससे ही आती है, तो भी तीव्र लिखनेसे अक्षर बहुत बिगड़ भी जाते हैं। अिसमें सुवाच्य अक्षर लिखते लिखते जितनी तीव्रता प्राप्त हो अुतनीसे ही संतोष रखना चाहिये।

परन्तु आप लिखते हैं कि दिमाग जोरसे चलता है और हाथ पीछे रह जाता है। यद्यपि अनेक लोग अिस प्रकार अपना अनुभव बतलाते हैं पर पू० बापूजी मानते हैं कि अिसमें दोष हाथका नहीं है

और मोनिकके डॉक्टरको भी आपने अच्छी तरहसे सिद्ध कर दिया।

महारोगका प्रश्न बड़ा विकट है। चारों ओर यह महारोग बन गया है। अुसको केवल जानगी संस्थायें हल नहीं कर सकतीं। न केवल सरकारी संस्थायें ही कर सकती हैं। दोनोंका और साथमें जनताका सहयोग होना आवश्यक है।

फिलहाल तो बापूजीकी ओरसे जितनी ही सूचना दे सकता हूँ

(१) महारोगियोंको दूसरोंके संसर्गमें न आनेके लिये सख्त समझाते रहना चाहिये। कुछ बुरा भी मान लें तो भी संकोच छोड़कर अुन्हें दूर रहनेका अभ्यास करा देना चाहिये।

(२) लोगोंको भी समझाना चाहिये कि वे खुदको और अपने बच्चोंको अुनके संस्पर्शसे बचाकर रखें।

(३) संयोग अुनके और समाजके लिये हानिकारक है यह अुन्हें बारबार समझाया जाय। यद्यपि यह बात समझानेसे ही अमलमें लायी जा सके जितनी आसान नहीं है। वीर्यको बन्धबीज करनेका अेक ऑपरेशन होता है। परन्तु जिससे केवल संततिकी अुत्पत्ति बंद कायी जा सकती है। दूसरे व्यक्तिको रोगी होनेसे बचाया नहीं जा सकता। और फिर वैसा मनुष्य प्रायः अधिक कामातुर बनता है, जिससे अनेक स्त्रियोंको अुससे चोखा होनेका डर रहता है। जिससे जिस अुपाय पर विचार नहीं बैठता। यदि वैसे मनुष्य अपनी खुशीसे नपुंसक बनें तो बात्म बात है। परन्तु वैसा करनेके लिये तैयार हो वैसा व्यक्ति मिलना कठिन है।

(४) नीमके तेलकी मालिश जिन रोगियोंके लिये अच्छी है, वैसा वैद्यक ग्रन्थोंमें कहा जाता है। पू॰ बापूजीको जिस विषयमें कोओी खास कारण तो मालूम नहीं है। परन्तु जिसमें कोओी दोष नहीं हो सकता जितना जरूर है।

(५) चोल मोगरेके तेलके अिंजेक्शन यह आयुर्वेदिक अुपाय है। जिसकी प्रशंसा बहुत सुनी गयी है। यूरोपीय डॉक्टर जिसीको आज अच्छेसे अच्छा अुपाय बता रहे हैं। जिससे रोग बिलकुल अच्छा हो जाता है यह तो नहीं कहा जा सकता। लेकिन रुक जाता है।

मौर जिसने यह भुपाय किया है भुसके द्वारा रोग फैलनेका संभव कम होता है। जिसमें ये जन्तु निर्बल हो जाते हैं। प्रारंभिक दशामें रोग-निवारण होना भी संभव है। ये जिंजेक्शन सरकारी अस्पतालोंमें कहीं कहीं दिये जाते हैं। वर्धा जिलेमें जिसके लिये कुछ प्रबन्ध है। बहुकि सरकारी दवाखानेमें तपास करनी चाहिये। जिसके अतिरिक्त पू बापूजीने डॉ महोदयको जिस रोगका विशेष अध्ययन करनेके लिये प्रेरणा की है। भुनके द्वारा स्थानिक कार्यकर्ताओंको जिसकी जानकारी देनेका प्रबन्ध होनेकी आशा है।

(६) कार्यकर्ताओंको अपने शरीरको संसर्गसे अवश्य बचा लेना चाहिये। जिसके लिये बापूजीने निम्न भुपाय बताये हैं

(क) मछुआरोंमियोंकि स्पर्शसे बचे रहें।

(ख) स्नानके पानीमें कान्डीका फ्लुअिड नामक जो औषधि आती है भुसके कुछ चम्मच डाल दिये जायें। भुकाव जैसा पानीका रंग हो भुतनी मात्रा आवश्यक है। भुस पानीसे स्नान किया जाय।

(ग) सूतको गंधकके धुमेंसे शुद्ध करके फिर बुना जाय। अेक चलनीमें सूत रखकर भुसको अेक बरतन पर रख देना चाहिये और भूपरसे ढांक देना चाहिये। बरतनके अन्दर थोड़ासा गंधक जलाना चाहिये और भुसका धुवां अच्छी तरहसे सूतमें फैलने देना चाहिये। यह सूत फिर जन्तुहीन हो जायगा। जिसके अतिरिक्त कार्बोलिक अेसिड अथवा मरक्यूरिक परक्लोराअिड नामकी दवाओंकी पिचकारीसे फुंकारनेसे भी जंतु मारे जा सकते हैं।

(घ) और अंतमें हमारा रक्त शुद्ध रखनेकी हर तरहसे कोशिश करनी चाहिये। शुद्ध रक्तमें जन्तुनाश करनेकी शक्ति रहती है।

आश्रमकी अपेक्षा यहांका वायुमंडल आपको अधिक सात्त्विक और शुद्ध मालूम हुआ जिसमें आश्चर्य नहीं है। यहां जो अच्छी या बुरी बातें हैं वे स्वाभाविक हैं। अच्छी बातको विशेष अच्छी बनानेका कृत्रिम भुपाय नहीं किया जाता न बुरी बातको ढांकनेका। सत्य बोलनेवाला स्वभावसे सत्य बोलता है। असत्य बोलता हो तो बिना संकोच असत्य बोलता है। आश्रममें अच्छी बातें भी हों तो वे प्रयत्नपूर्वक हैं। बुरी बातें न हों तो भी प्रयत्नसे हैं। यह जो

निष्कपट — नैसर्गिक — जीवन है यह आपको आनन्द दे रहा है। जब तक यही आपका अभिप्राय रहे तब तक अुसमें से आपको लाभ ही मिलता रहेगा।

आपकी भाजी तो मूलीकी ही भाजी है। पू० बापूजीने अुसका भोजन किया।

पू. बापूजीकी तबीयत अभी अच्छी नहीं है। पैरका दर्द कष्ट दे रहा है। मैंने यहां आनेके लिअे प्रार्थना की है, परन्तु वे निश्चय नहीं बता रहे हैं।

सुरेन्द्रजीका बोरियावीमें ठीक चल रहा है। अुन्हें सन्तोष है। गंगाबहन भी अपने काममें संतुष्ट हैं। रमणीकलालभाअीको अभी पूर्ण स्वास्थ्य नहीं प्राप्त हुआ है पर तो भी पहलेसे कुछ ठीक है।

गोकुलभाअी आपको हरअेक पत्रमें याद किया करते हैं।

अब और कामके कारण यहां पर ही बन्द करता हूं। कुछ रह गया हो तो फिर दूसरे समय लिखूंगा।

आपका सप्रेम
किशोरलाल

पुन: — आपने जिस पुस्तकके विषयमें लिखा है वह अब तक नहीं मिली है। शायद भी बाजार देना भूल गये हों या लाना भूल गये हों। गांधी-सेवा-संघका वार्षिक अधिवेशन आगामी मार्चमें सावलीमें ही रखनेका अिरादा है। तब आपका कैम्प सब लोग अच्छी तरह देख सकेंगे।

४

सावलीमें अेक त्यौहारके अवसर पर सब लोग अपने बकरे देवके सामने खड़े करके अुनकी पूजा करते, अुनका वध करते और अंतमें करीब करीब सारा गांव मांसाहारका वन-भोजन करता था। जिसका रोमांचकारी वर्णन मैंने पू. बापूजी और किशोरलालभाअीको लिखा था। और भी प्रश्न पूछे थे। अुनके जवाबमें अुन्होंने पत्र लिखा। बापूजीने भी लिखा था जो पीछे पृष्ठ ११ पर दिया गया है। किशोरलालभाअीका पत्र जिस प्रकार है

वर्धा २१-९-४५

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी

सप्रेम वन्दे। आपके सब पत्र बराबर मिले। मुझे अभी बिलकुल आराम तो नहीं हुआ है, लेकिन पहलेसे कुछ ठीक है। अभी थोड़ा थोड़ा ज्वर, थोड़ी खांसी वगैरकी शिकायत है। २-४ रोजमें आराम हो जानेकी आशा है।

बकरोंकी हिंसाका प्रश्न यों भी कठिन तो है ही परन्तु कदाचित् हमारी अिस प्रश्नके प्रति देखनेकी दृष्टिमें भी कुछ दोष होना संभव है।

जो मांसाहार नहीं करते परन्तु देव-देवीको भोग चढ़ानेमें मानते हैं और कुछ कामना सफल होने पर अमुक प्रकारका भोग देनेकी प्रतिज्ञा करते हैं, वे मानिये कि देवके लिये मिष्टान्न ले जायें तो आप अुन्हें मना करेंगे? क्योंकि हमारे वैष्णव-मंदिरोंमें भक्त लोग बड़े दिनों (त्यौहार) के रोज भांति भांतिके मेवा मिठाओ मिष्टान्नके भोग बनाकर ठाकुरजीके सामने रखते हैं। देव बकरा, हैला (भैंसा) आदि नहीं चाहता तो क्या मिष्टान्नोंको भी चाहता है? हजारों लोगोंको खानेको अेक समयका भी अन्न नहीं मिलता तब मंदिरोंमें कितना नैवेद्यके नाम पर व्यय किया जाता है? दोनोंमें से कौन ठीक करता है यह कहना मुश्किल है।

बात तो यह है कि यदि देवको कुछ भोग चढ़ानेमें हमको श्रद्धा हो तो वही पदार्थ हम ला सकते हैं जिसका आहार हमें विशेष प्रिय है। जो त्यौहार पर मिष्टान्न खाता है, वह मिष्टान्न बनाकर देवके आगे रखता है। जो मांसाहार करता है वह मांस लाता है।

जिससे मुझे तो यह लगता है कि यदि हम मांसाहार छुड़ा नहीं सकते तो हम प्राणि-बलिदान भी बन्द नहीं करा सकते।

हां यह हो सकता है कि हम लोगोंको कहें कि मांसाहार अच्छी बात नहीं है फिर भी यदि आप मांसाहार नहीं छोड़ सकते तो कमसे कम त्यौहारके पवित्र दिनको यह नहीं करना चाहिये। अैसे दिन निरामिष भोजनके व्रतके लिये रखना चाहिये। संभव है कि जिस पदार्थको वे स्वयं खा नहीं सकेंगे अुसका नैवेद्य भी न हो। यह भी

होना संभव है कि भोग तो दिया जाय और दूसरे दिन मुसे प्रसाद मानकर खाया जाय। अर्थात् बासी बनाकर खाया जाय वो विशेष बुरा है।

सारांश मांस-भोजन और मांस-बलिदान दोनोंको अेकदूसरेसे अलग नहीं कर सकेंगे।

बड़े राजा-महाराजा सहज दावतके लिये कितने ही प्राणियोंका कतल कर डालते हैं। ये लोग वर्षमें दो चार रोज दावत करते हैं। देवको बीचमें से हटा दें और खुशी दिन दावतके लिये कितने प्राणियोंकी हिंसा मान करें तो आपको क्यों आपत्ति नहीं मालूम होती? आप यही क्यों नहीं समझ लेते कि देव तो नाममात्र है, वास्तवमें यह भूखका बावतका दिन होता है। यह बात अेक विचारके लिये रखता हूं। सिद्धान्तके स्वरूपमें नहीं।

चोरीके मामलेमें आप जिस तरह पड़े वह ठीक न हुआ। मुझे डर है कि कबूली कथानेमें आपने अुस बाजीको खतरेमें डाल दिया है। पुलिस आपकी ही गवाही पर अुस बाजीका चालान कर दे यह संभव है। आपको पुलिससे यह कहना चाहिये था कि बाजीको मारना-पीटना बेकानून है, यह नहीं कर सकते। यदि अुस बाजीको अब छोड़ दें तब तो ठीक है नहीं तो आपको भी अुसके पीछे खराब होना होगा। खैर, जो हुआ सो हुआ।

पू० नाथजीका पोस्टकार्ड परसों आया था। अुनके पैरको, अभी ठीक आराम नहीं हुआ है। आज अुन्हें मैंने पत्र लिखा है। आपका पत्र भी भेज दिया है।

पू० नाथजीके पास आजकल मैं नहीं जा सकता हूं।

ची० गोमती आपको प्रणाम लिखाती है।

आपका
किशोरलाल

५

नालकी गांवमें तालाब पर स्नान कर रही अेक बहनकी दूसरी बहनने सोनेकी कोजी चीज चुरा ली थी। लोग अुसे सता रहे थे। मैं बीचमें पड़ा और अुसे समझाकर चीज वापिस दिलवा दी। जिस पर किशोरलालभाजीने

लिखा था — शामीस (आपने) चोरी कबूल करायी। अगर पुलिस मुझको फंसानेमें आपकी ही गवाही दे तो? लेकिन अैसा कुछ नहीं हुआ। यह भी मैंने अुनको लिख दिया था। मांसाहारका प्रश्न तो था ही रहा था। अिस पर अुनका अुत्तर आया

वर्धा १२-१-४५

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी

आपके सब पत्र मिले हैं। परन्तु बहुत दिनसे आपको अुत्तर भेज नहीं सका। मेरी तबीयत अब पहलेसे अच्छी तो है फिर भी दमेकी शिकायत अभी बन्द नहीं हुअी।

अुस चोरीके विषयमें पकड़नेसे कुछ खतरा नहीं हुआ यह जानकर खुश हुआ। शुभ निष्ठासे किये हुअे कामका फल शुभ हुआ यह ठीक ही है।

जो लोग स्वयं मांसाहारी न होते हुअे भी मांसका बलिदान चढ़ाते हैं वे कम हैं। अुन लोगोंमें कुछ ही समयसे मांसाहार छोड़ा हुआ रहता है। अुनकी २-३ पीढ़ीके पूर्वज मांसाहारी रह होंगे। जिन लोगोंसे मांसका बलिदान छुड़ानेमें कामयाबी प्राप्त होती है। मैं मानता हूं कि मांसका बलिदान छुड़ानेके पहले मांसाहार छूटनेकी आवश्यकता है। और मांसाहार छुड़ानेकी हम चेष्टा न करें तो बलिदान छुड़ानेमें विशेष सफलता न मिलेगी।

आप अपना बगीचा खूब अच्छा बना लें। हम आयेंगे तब हमको शाकभाजी खिलायेंगे न?

बम्बअीमें गजाबहनके भतीजे श्री मधुभाअी बहुत बीमार हो गये थे। ऑपरेशन करना पड़ा था और स्थिति काफी गंभीर थी। दूसरे पुरुषका रक्त भी भरना पड़ा। समाचार है कि अब वह भयमुक्त हैं अैसा डॉक्टर मानते हैं। गजाबहन बम्बअी गअी हैं। पू. नानजी भी आया करते हैं।

श्री सुरेन्द्रजीका आपके नामका पत्र बहुत दिन पर आया था। साथमें भेज रहा हूं।

साथका पत्र भाअी दीनबन्धुको दीजियेगा।

मोमतीका प्रणाम स्वीकार करें। बहुत करके यह महीना खतम होते ही मैं अेक-डेढ़ महीनेके दौरे पर जाअूंगा। पवनार और वायनाड ये दो निश्चित हैं। बीचका समय जहां जा सकूं वहां ही सही।

आपका
किशोरलाल

६

मेरा कुटीजीका काम पूरा हो चुका था। बुखारके कारण मुझे कमजोरी थी। मैं सावलीके बारेमें अपने पत्रोंमें सन्तोष प्रगट किया करता था। अुस परसे बापूजीको लगा कि सावली मुझे प्रिय है, अगर सावलीमें ही रहनेकी मेरी व्यवस्था हो जाय तो मुझे पसंद आयेगी। अिसलिअे अुन्होंने अिस प्रकारका प्रबन्ध करनेका विचार किया और मुझे भी लिखा कि तुमको सावलीमें शांति मिले तो वहां रहनेका प्रबन्ध किया जा सकता है। अिसका अर्थ मैंने यह किया कि बापूजीके मनमें मेरे प्रति असंतोष है और वे मुझे अपनेसे दूर रखना चाहते हैं। बापूजीके आसपास १ साल रहनेकी बात भी पूरी होने जा रही थी। अिस परसे मैंने बापूजीको अेसा पत्र लिखा था। अुसका जवाब किशोरलालभाअीने दिया

वर्धा १-४-३९

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी

आपका पत्र कल मिला। आज श्री रामदासभाअीका पत्र भी मिला है। मेरे पहले पत्रसे आपको बहुत शोक हुआ यह जानकर कष्ट हुआ। मैं मानता था कि पू. बापूजीके पत्रसे आपका समाधान हुआ होगा और आप सावलीका काम पूरा करके आपकी अनुकूलतासे वहांसे निकलेंगे। पर श्री रामदासभाअीके पत्रसे मालूम होता है कि पू. बापूजीके पत्रसे आपका असंतोष हटा नहीं है और अुस पत्रके पीछे पू. बापूजीका या मेरा आपके विषयमें कुछ असंतोषका भाव है अैसा आप मानते हैं।

अिस विचारमें भूल है। पू. बापूजीने जो कुछ लिखा है और मैंने भी जो कुछ लिखा था अुसके पीछे आपके विषयमें किसी प्रकारका असंतोष अविश्वास या प्रेमकी न्यूनता नहीं है। बल्कि आपकी शक्तियां और विचार-पद्धतिको मान्य करके ही पू. बापूजीने सावली

छोड़नेकी बात मंजूर की है। आपने तो मुझे लिखा था न कि मैं पू॰ बापूजीसे आपकी ओरसे वकालत करूं? मैंने ओरसे आपकी वकालत तो न की पर सिद्धान्त रूपसे पू॰ बापूजीने आपको सावलीमें रहनेकी जो सूचना की थी अुसका विरोध किया था। जिसमें मैंने यह मान लिया था कि पू॰ बापूजी अपनी ही ओरसे आपको सावलीमें रखना चाहते थे। पर पू॰ बापूजीकी मान्यता थी कि आपको सावलीमें समाधान और संतोष प्राप्त हुआ है जिससे यदि सावलीमें रहनेके लिये प्रबन्ध हो जाय तो आपको बहुत हर्ष होगा। जिससे अुन्होंने अुस तरहकी सूचनायें दीं। आपकी तबीयत वहां नादुरुस्त हुअी है सही पर पू॰ बापूजीका अुस विषयमें जितना ही ख्याल पहुंचा था कि वह अेक प्रासंगिक बीमारी है। कुछ दिनमें ठीक हो जायगी। आपको वहांका जलवायु अनुकूल नहीं है, जितना पू॰ बापूजीके ख्यालमें नहीं आया था। मैंने जो पू॰ बापूजीके पास दृष्टि रखी थी वह केवल स्वधर्माचरणके विचारसे। मेरा अुनसे यह निवेदन हुआ कि सावलीका जलवायु अनुकूल भी हो फिर भी आपका अपने प्रान्तमें काम करना विशेष रूपमें स्वधर्म है और आपका पहलेसे अैसा विचार भी था। तब आपको सावली रहनेकी सूचना करना अयोग्य है। पू॰ बापूजीने जिस बातको मान लिया है।

मतोपमें आप बिलकुल अैसा न समझें कि आपको सावली छोड़नेकी जिजाजत देनेमें किसी प्रकारका पू॰ बापूजीके मनमें असंतोष है। मैं तो अुसको कलाप-सा ही मानता था और मैंने आपसे अैसा कहा भी था। पू॰ बापूजीको आपसे संतोष है जिसलिये अुन्होंने लिखा है कि मेरा आशीर्वाद लेकर जाओ। पू॰ बापूजीके पत्रसे पता लगता है कि आपको सावलीमें ही रहना चाहिये अैसा अुनका स्वतंत्र अभिप्राय न था बल्कि आपको प्रिय मालूम होगी अैसे ख्यालसे ही वह सूचना की थी। आपका अपने मावके प्रान्तमें काम करना अुनको बिलकुल पसन्द और प्रिय है।

आशा है जिससे आपका समाधान होगा। आप सावलीसे वापस अपनी अनुकूलतासे निवृत्त होकर यहां पर आजियेगा। यहांसे पू॰ मामाजीके पास जाजियेगा। या पू॰ बापूजी यहां आवें तब तक

यही ठहरियेगा और फिर अुनका आशीर्वाद प्राप्त कर बम्बअीमें पू नानाजीसे मिलकर अुनका आशीर्वाद प्राप्त कर अपने गांवको और जाअियेगा। मनमें से सन्देहका भाव निकाल दीजियेगा। आपके पत्र तो पू बापूजीके पास रह गये हैं। पू बापूजी कांग्रेस तक यहां न आयेंगे और यहां भी थोड़े ही दिन ठहरकर पंचगनी जायेंगे।

आपके पत्रसे हमें कोअी आघात नहीं पहुंचा। पू बापूजीको अितनी-सी बात पर आघात पहुंच ही नहीं सकता। आपने अैसी कोअी बुरी बात तो कही ही न थी न दुराग्रह भी बताया था। केवल अत्यंत संकोचपूर्वक नम्रतासे अपनी कठिनाअियां बताअी थीं। क्या बापू जैसे अुदार पुरुषको अितनेसे ही आघात लग जाय अैसा हो सकता है? आप तनिक भी अिसका विचार न रखें और अिसे मनमें से निकाल ही दें।

पोमतीका प्रणाम स्वीकारियेगा। आपका अेक पत्र है पर पत्रका अुत्तर देना तो अुसके लिअे आसान बात नहीं है। यह तो कहेगी कि आयें तो आयेंगी फिर सब ठीक हो जायगा।

पू नानाजीको भी आज पत्र दिया है। आपकी ओरसे लिखा है।

आपका
किशोरलाल

७

बापूजीको कष्ट देनेके कारण मुझे भी कष्ट और ग्लानि होती थी। अिसलिअे मैं अपने पत्रोंमें पश्चात्तापकी भावनासे अपने लिअे कुपात्र आदि विशेषण लिखता था। मैं अपने प्रान्तमें जाना चाहता था यह तो पुरानी बात थी। बापूजीने तो पहले भी कहा था और अब भी लिखा लेकिन मुझे संतोष नहीं हो रहा था। अपने मनका सारा हाल मैंने अुनको लिखा था। अुसके अुत्तरमें किशोरलालभाअीने लिखा

वर्धा ७-४-३६

प्रिय भी बलवन्तसिंहजी

आपका पत्र मिला। पू बापूजीको अुसका पत्र अभी नहीं भेजता। वे नासिकके कार्यमें बहुत निमग्न होंगे जिससे अुन पर

अधिक भार डालना योग्य नहीं है। और आपको पत्नी भी नहीं है। आप शान्त भी हुजे है।

शान्त हुजे है यह जानकर सतोष हुआ। पर अभी आपकी भुलझन मुलझ गयी हो अैसा मालूम नहीं होता है। पिछले पत्रके बाद आपको कोजी प्रश्न नहीं भूठना चाहिये था। छावनीकी आबोहवा आपको अनुकूल नही आती है यह आपने जो बताया है, वह केवल कल्पना ही है अैसा किसीका अभिप्राय नहीं है। जिस कारण आपको वहां रहनेमें क्या तकलीफ है, जिसका यदि आपने जिक्र किया तो मुझमें आपकी कोजी भूल नहीं है। वह स्पष्ट रूपसे बता देना योग्य ही था।

पर जिसके बजाय आपका जो मूल संकल्प अपने प्रान्तमें अपने वतनके पास ही कार्यमें लग जानेका था भुसे मैं तो स्वधर्माचरण ही मानता हूं। पू. बापूजी भी अैसा ही मानते हैं। तब आपकी वहां जानेकी जिच्छा होना धर्मानुकूल है। वहां जानेके लिये पू. बापूजीकी संमति ही है। जब संमति है तब भुनका आशीर्वाद भी है, और अपने समीपसे दूर करनेका भाव नहीं हो सकता है। आपसे किसी प्रकारका असंतोष पू. बापूजीके दिलमें मैंने नहीं पाया है, न मेरे मनमें भी कभी आया है।

मैं जो आपको लिखता हूं वह आपको दोष देनेके लिये नहीं लिखता हूं। आपके गुण और श्रद्धाको अधिक बलवान करनेके लिये लिखता हूं। आप अपने पत्रोंमें सदैव आत्मनिन्दा किया करते हैं। खुदके लिये दुर्बुद्ध कुपात्र आदि तिरस्कारक शब्द लगाया करते हैं। यह नहीं होना चाहिये। भुसकी जरूरत ही नहीं है। जिस आदत जिससे हमारा पुरुषार्थ कम हो जाता है। किसी विषयका अपनी बुद्धिसे निश्चय करनेकी ताकत ही चली जाती है। हरअेक विषयमें दूसरेकी तरफसे आज्ञा सूचना मार्गदर्शनकी अपेक्षा की जाती है। हम सदैव पराश्रयी पराधीन रह जाते हैं। प्रायः हमारे धर्मगुरु भी शिष्योंमें अैसी वृत्तिका पोषण करते हैं। अपने शिष्य अपने ही पर हमेशा निर्भर रहें अपनेको बिना पूछे कुछ भी न करें अैसी वे जिच्छा रखते हैं। पू. बापूजी या पू. नाथजीका यह अभिप्राय नहीं है।

जिसीसे तो मैं किसीको अपना शिष्य नहीं बनाते हैं। मुझको साथी कहा करते हैं। शिष्य हरअेक बात गुरुको पूछ कर ही करे, यह मुझको जिच्छा नहीं है। पर समझने योग्य हो वह समझ लिया पूछने योग्य पूछ लिया सलाह ले ली — फिर अुस पर विचार करके अपने-आप निर्णय कर ले अैसा गुरु-शिष्य-संबंध होना चाहिये। गीतामें भी तो श्रीकृष्ण द्वारा अुपदेश दिलाकर आखिरमें यही कहा है कि जिस प्रकार मैंने तुझे गुप्तसे गुप्त सब ज्ञान दिया। अब तू जिस पर गौर कर और फिर जैसा ठीक जँचे वह कर। आज्ञा देनेके प्रसंग हमेशा नहीं होते हैं। जहाँ आज्ञा देनेसे शिष्यके द्वारा कोजी महत्वका कार्य होता अथवा शिष्यका किसी बड़ी आपत्तिसे रक्षण होता या किन्हीं दूसरे कारणोंसे साथ अपनी आपत्ति निवारण होना संभव हो वहाँ आज्ञा भी दी जा सकती है। वरना मौके पर धर्म अथवा व्यवहारकी सामान्य राय देकर शिष्यको स्वतंत्रता देना यही गुरुका धर्म होता है। अैसा विवेक न करें तो गुरु और शिष्य दोनोंके लिये बड़ी आफत हो जाती है। आपमें आत्म-विश्वास बढ़ानेके लिये और विचार करनेके लिये यह लिखता हूँ। आप जिस पर दुःख न मानें। अपनी अयोग्यता न मानें। आत्मनिन्दा न करें।

श्री रामदासस्वामीजीकी तबीयत खराब हो गयी यह सुनकर रंज होता है। अुपचार करते ही होंगे। मुझे अभिवादन।

आपका
किशोरलाल

* *

मेरा कुनाजी-काम करीब करीब पूरा हो चुका था लेकिन सावलीमें गांधी-सेवा-संघका प्रथम अधिवेशन २९ फरवरीसे ६ मार्च १९३६ तक होनेवाला था। अुसमें बापूजीकी तबीयत ठीक रही तो अुनके आनेकी पूरी आशा थी। जिसलिये मैं अुनके आनेकी राह देख रहा था। कार्यालयके कुअेके पास जमीनका छोटासा टुकड़ा पड़ा था जिसको खोद खोद कर मैंने अुसमें साग-भाजी पपीता केला आदि लगाकर सुन्दर बगीचा बना लिया था। अुसकी भाजी सावलीमें चर्खा चलानेवालोंके साथ बापूजीके लिये भी मैं भेजा करता था और मनमें सोचा करता था कि जब बापूजी यहाँ आयेंगे तो अुनको अपने

बगीचेकी भाजी खिलाअूँगा। भाजी खाकर और मेरा बगीचा देखकर बापूजीको कितनी खुशी होगी और बापूजी कैसे हँसेंगे अिस प्रकारकी कल्पनाओंसे मेरा दिल भरा रहता था। जो आनन्द अिन्तजारमें है वह मिलनमें नहीं है क्योंकि अिस वचनका अनुभव होता ही रहता था। सचमुच ही अगर भगवान मनुष्यको मिल गया होता तो अुसका सारा रस ही सूख जाता। आखिर जब २८ फरवरीको बापूजी आये तो सारा वातावरण खुशीसे भर गया। मेरी खुशीका तो पार ही नहीं रहा। जब मैं प्रणाम करने गया तो बापूजीने हँसकर कहा "आखिर तुमने मुझे यहाँ बुला ही लिया। अच्छे तो हो? अब तुम्हारी भाजी खानेको मिलेगी न? लेकिन मुझे अकेलेको खिलानेसे काम नहीं चलेगा। सबको खिलानी होगी। मुझे तो बकरीका दूध चाहिये लेकिन दूसरोंको गायका दूध देना होगा। सुनता हूँ कि दूध चांदासे और भाजी नागपुरसे मंगानेवाले हो। यह क्यों? तुम तो किसान हो न? तो यहाँके किसानोंको तुमने सागभाजी पैदा करने और गाय पालनेका तरीका क्यों नहीं बताया? तुम कह सकते हो कि मैं तो तालीमका विद्यार्थी हूँ लेकिन तालीम क्षेत्रमें तो सब कुछ समा जाता है। तालीमका अर्थ है हमारे देहातोंके समग्र अुद्योग-धन्धे। अगर यह नहीं होगा तो अकेली तालीम जिन्दा नहीं रह सकेगी। मेरा तालीमका विद्यार्थी तो देहातकी सारी जरूरतों और अुनके सारे जीवनको स्पर्श करेगा। अिसीमें स्वराज्यकी चाबी छिपी है।"

अितनेमें ही वहाँ पूज्य राजेन्द्रबाबू आ गये तो बापूजी अुनसे मेरा परिचय कराते हुअे बोले — अिसका नाम बलवन्तसिंह है और यह मेरे साथ रहता है। अब यहाँ बुनाअी सीखता है। जब यहाँ आया था तो मुझे लिखता था कि यहाँ सागभाजी नहीं मिलती है दूध भी नहीं मिलता है। अिसने तो नीमके साथ मिल्लम भी अिनकार किया था। लेकिन अब अिसने अलग निकले तो सब व्यवस्था कर ली है। अपने बगीचेकी भाजी मुझ तक भेजी है। लेकिन यहाँ पर नागपुरकी भाजी और चांदासे दूध लाकर सब लोगोंका देखभाल है। मुझे तो अपनी भाजी खिलायेगा। मेरे लिये तो बकरी भी एक छोड़ी होगी। लेकिन मेरा काम जिनमें थोड़ा ही निपटने वाला है।

बापूजी बातें करते थे और मैं अुनके प्यारे वचनोंमें बहा जा रहा था। मेरा पहली ही बार बापूजीने जिनसे परिचय कराया हो तो वह

पूज्य राजेन्द्रबाबूने कराया था। मैं चुपचाप प्रणाम करके अुनके सामनेसे खिसक गया। क्योंकि पाजामा-सलवारकी व्यवस्था मेरे ही हाथमें थी और अिसलिअे बापूजीके कमोड आदिकी सफाअीकी व्यवस्था सहज ही मुझे करनी थी। अुन दिनों बापूजी ९ बजे रामायण सुना करते थे। मैं भी अुस समय रामायणमें हाजिर रहता था। अुस समयका भक्तिभावका वातावरण बड़ा ही मधुर रहता था। पूज्य राजेन्द्रबाबूके साथ अुनके व्यक्तिगत मंत्री भी मथुराबाबू तो जो रामायणके बड़े ही भक्त थे अपने आप पर काबू ही नहीं रख पाते थे और हर प्रसंगके अनुसार अुनके हावभाव देखने लायक होते थे। बापूजीकी गम्भीर मुद्राको देखकर सारा वातावरण गम्भीर बन जाता था। ७ रोज तक बापूजीका यह सत्संग अेक अद्भुत प्रसंग था। दूसरे दिन प्रदर्शनीके अुद्घाटनके बाद बापूजीके दिलमें ग्रामोंके लिअे जो प्रेम भरा था वह सारा अुंडेलते हुअे अुन्होंने कहा : लोग देशके भिन्न भिन्न भागोंसे प्रदर्शनीमें रखनेके लिअे जो चीजें लाये हैं अुनका महत्त्व मैं समझ सकता हूं। लेकिन मैं आप लोगोंको बता देना चाहता हूं कि आप लोगोंका तो अुन्हीं चीजों पर जोर देना चाहिये था और अुन्हींको प्राप्त करनेका प्रयत्न करना चाहिये था जो यहांके आसपासके देहातोंमें मिल सकती हैं या बन सकती हैं। जब कहीं कोअी प्रदर्शनी की जाय तो अिस बातका पता लगाना ही चाहिये कि यहांके देहातोंमें क्या चीजें मिलती हैं और क्या बन सकती हैं और अुन्हीं चीजोंको प्रदर्शनीमें महत्त्व देना चाहिये। अिस बातका भी ध्यान रखना चाहिये कि प्रदर्शनी वस्तु-संग्रहालय न बन जाय। हमारे जीवनसे लुप्त हो जानेवाली प्राचीन वस्तुओंका भी अपना महत्त्व है, लेकिन हमारा काम तो अैसे अुद्योग-धन्धों पर ही जोर देना है जो फिरसे जिन्दा किये जा सकें।

"अेक बातका और ध्यान रखना चाहिये कि जिनके बीचमें हम सम्मेलन और प्रदर्शनी कर रहे हैं अुन गांववालोंकी कितनी भलाअी करेंगे। मुझे जब यह बताया गया कि हमारे लिअे बाहरसे गायका दूध और आसपाससे साग-भाजी आती है जो यहांसे १२ मील है तो मुझे बड़ा दुःख हुआ। भला अिस तरह हम गांववालोंकी क्या सेवा कर सकेंगे? क्या अिन चीजोंके बिना हम अपना काम नहीं चला सकते थे? सादगी हमें नहीं दे सकता और अगर अुसके बिना हम काम न चला सकें तो हमें

सावली आना ही नहीं चाहिये था। सावली तो गांवोंका अेक नमूना है। ये कठिनाअियां हमारे अधिकांश गांवोंमें मौजूद हैं। हिन्दुस्तानमें गायकी पूजा की जाती है लेकिन हमारे अधिकांश गांवोंमें गायका घी-दूध मिलता ही नहीं है। अैसी पूजाका क्या अर्थ है? यहांकी आबोहवा अैसी है कि हर देहातमें सागभाजी पैदा की जा सकती है, लेकिन हमारे बहुतसे गांवोंमें ताजी सागभाजी मिलती ही नहीं है। लिखने-पढ़नेके सामानकी तो बात ही क्या कहें? अुनके पास अितने पैसे नहीं हैं कि वे लिखने-पढ़ने और टिकट आदिके लिये अितना खर्च कर सकें। गांवोंमें तो निरक्षरताका ही राज्य है। अिस बातकी छानबीन करनेसे कोअी लाभ नहीं है कि हिन्दुस्तानके गांव पहलेसे अैसे ही थे जैसे आज हैं। अगर अिससे अच्छे वे कभी न रहे हों तो यह हमारी अुस प्राचीन संस्कृतिके लिअे लज्जाकी बात है जिस पर हम फूले नहीं समाते हैं। अगर वे कभी भी अच्छे नहीं रहे होते तो सदियोंसे जिस पतनको हम देख रहे हैं, जिसका सावली तो सिर्फ अेक नमूना है, अुसमें वे टिक ही कैसे पाते?

"प्रत्येक देशसेवकके सामने यह सवाल है कि वह अिस पतनमें किस प्रकारसे रुकावट डाले या अुनका पुनर्निर्माण किस प्रकार किया जाय जिससे वहां रहना हरअेकके लिअे सुलभ हो जाय। जैसा कि शहरोंमें समझा जाता है यह संभव है कि गांवोंकी हालत सुधरनेके काबिल ही न रही हो। ग्रामीण सभ्यताके दिन बीत गये हों और सात लाख देहातोंको सात सौ सुव्यवस्थित शहरोंमें बदल जाना पड़े जिनमें १ करोड़ ही नहीं बल्कि ३ करोड़की जनसंख्या हो। लेकिन हिन्दुस्तानकी किस्मत यही बदा हो तो वह भी अेक ही दिनमें नहीं हो जायगा। असंख्य गांवों और अुनमें बसनेवाले ग्रामीणोंका लोप होकर अवशेषोंको शहरोंमें बदलनेमें कुछ तो समय लगेगा ही। लेकिन जिनका गांवोंके पुनर्निर्माणमें विश्वास है अुन्हें तो किसी खयाली बात पर विश्वास करके बैठे रहनेके बजाय सचाअी और युक्तियुक्त रीतिसे अपने कार्यक्रम पर अमल करना ही होगा। सावलीके अनुभवसे अुनकी आंखें खुल जानी चाहिये। किसी भी गांवकी अितनी शक्ति तो होनी ही चाहिये कि १ स्त्री-पुरुष अुसमें सुविधापूर्वक टिक सकें। अुन्हें ताजी खुली हवा हरीभरी जगह स्वच्छ आवास बढ़िया दूध और साथ साथ ताजी भाजी तथा फल भी मिल सकें। जिसमें मैं अगर

कोओी चीज गहराईसे बारीक कर मथानी पड़े तो समझना चाहिये कि मूलमें ही कहीं खराबी है। हमारे पास असी जादूकी लकड़ी तो नहीं है कि जिसे फिराते ही यह सब परिवर्तन हो जायगा। हां धीरजके साथ हम काममें लगे रहें तो कोओी विशेष कठिनाओीके बिना कामको आगे बढ़ाया जा सकता है। लेकिन यह तभी हो सकता है जब लगनशील तथा अुत्साही कार्यकर्ता ठीक ढंगसे अपने गांवोंका पुनर्निर्माण करनेके दृढ़ निश्चयके साथ अपने गांवोंमें जाकर बैठ जायं। जब तक असा नहीं होगा तब तक कुछ भी नहीं होगा।

सम्मेलनमें पूज्य विनोबाजी भी गये थे। अुसी मौकेका लाभ अुठाकर सावलीके बुनकरोंने मजदूरी बढ़ानेका अेक असंतोषजनक वातावरण निर्माण कर दिया था जिनको शांत करनेका काम पूज्य विनोबाजीने बड़ी खूबीसे किया था।

पूज्य बापूजीने मुझे चरखा-संघमें खादीकाम करनेकी भी सूचना दी थी। अुनको असा लगा था कि सावली मुझे पसंद है। लेकिन वहांकी आबो-हवा मेरे लिये बिलकुल ही अनुकूल न थी और नौकरके रूपमें किसी भी संस्थामें काम करनेकी मेरी बिलकुल तैयारी न थी। अिसलिये मैंने साफ अिनकार कर दिया। और सम्मेलनके थोड़े दिन बाद ही मैं मगनवाड़ी (वर्धा) आ गया।

* * *

बापूजीके आसपास मेरे रहनेका करीब करीब अेक वर्ष पूरा हो चुका था। और अब मुझे कहां जाना चाहिये यह प्रश्न मेरे सामने था। लेकिन मेरे मनकी गति बड़ी विचित्र थी। बापूजीको छोड़ना मनको चुभता था और रहनेकी अिच्छा भी नहीं होती थी क्योंकि अुनके काममें मेरे मनको शांति नहीं मिलती थी। अिसलिये कहां जाना यही चर्चा बापूजीके साथ चलती थी। मैंने देखा कि बापूजी मुझे छोड़ना नहीं चाहते थे। अूपरसे तो मुझे कहते थे कि जहां जाना चाहो जा सकते हो लेकिन मेरे जानेसे अुनके मनमें पीड़ा होती है असा मुझे लगता था। अिस पीड़ाको न तो बापूजी प्रगट कर सकते थे और न मैं ही अपनी दुविधा अुनके सामने रख सकता था। बापूजी मुझे विचार करनेके लिये कहते थे और मैं अुनको कोओी निश्चित जवाब नहीं दे सकता था। अुन्होंने किशोरलालभाओीके साथ बात

करनेके लिअे कहा। मैंने अुनके साथ बात की। मेरी बातोंसे अुनके दिल पर अैसा असर हो गया कि बापूजी तो मुझे खुशीसे अिजाजत देते हैं लेकिन जब मेरे सामने यहांसे गया तो कल रोटी कहां मिलेगी अैसा प्रश्न होनेसे मैं अिधर-अुधरकी बहानेबाजी करता हूं। जब अुन्होंने मुझे यह बताया तो अुनकी बातसे मुझे धक्का-सा लगा और मैं अुनके पाससे चुपचाप चला आया।

"क्यों किशोरलालके साथ मिलकर क्या फैसला किया?" बापूने पूछा।

मैंने कहा, "मैं आपसे अेक प्रश्नका अुत्तर चाहता हूं, जिसके बाद मेरा फैसला हो जायगा।" मैंने किशोरलालभाभीका शक अुनको बताया और कहा कि अगर आपके दिलके किसी कोनेमें अैसा थोड़ा भी शक हो कि मेरे सामने रोटीका सवाल है तो मेरा फैसला है कि अिसी वक्त यहांसे चला जाअूंगा। मैं तो सिर्फ अिसलिअे हिचक रहा हूं कि आप मुझे प्रसन्नतापूर्वक अिजाजत नहीं दे रहे हैं और आपको अप्रसन्न करके जाना मुझे जन्मभर दुःख देगा। अिसलिअे आपको छोड़कर जानेकी मेरी हिम्मत नहीं होती। मेरा हित किसमें है अिसे आप भलीभांति समझते हैं और अुसी दृष्टिसे आप विचार करते हैं। आपके अिस प्रेमके कारण ही मैं दुविधामें पड़ा हूं। अगर मेरे मन पर यह असर हो जाय कि आपके मनमें भी किशोरलालभाभी जैसा विचार आया है तो मैं आपके पास अेक रात भी नहीं रह सकूंगा।

बापू खूब जोरसे हंसे और बोले:

"हां मुझे भी किशोरलालभाभीने कहा है। लेकिन तुम्हारे बारेमें मेरे मनमें अैसा ख्याल भी तक नहीं है। मैं तो यही देख रहा हूं कि अभी तक तुम्हारा चित्त स्थिर नहीं है और तुम यहांसे जाओगे तो दो महीने भी बाहर शांतिसे नहीं रहोगे। या तो गांवके काम आओगे या मेरे पास। अिसलिअे मैं चाहता हूं कि तुम स्थिरचित्त होनेके बाद मेरे पाससे कहीं जाओ तो मुझे निश्चिन्तता रहेगी। जितना तुमको मैं पहचानता हूं अुतना किशोरलाल नहीं पहचानता।"

अिस प्रकारका शक मेरे दिलमें था वही बापूने दिलसे निकाला। मैं खुद अपनी अस्थिरता समझता रहा था और अिसीसे बापू परेशान हैं यह भी समझ रहा था। बापूका अितना प्रेम देखकर भला मैं अुनको छोड़नेकी

हिम्मत कैसे कर सकता था? तो भी मुझवाने मुझे जितना घेर रखा था कि मैं कोअी साफ निर्णय नहीं कर पाता था। बापूने कहा "सोचो और निर्णय करके मुझे बताओ।

पू॰ किशोरलालभाअीकी रोटी न मिल सकनेकी बात मुझे जितनी चुभी कि मैने अुनको अेक भिनभिनाता लंबा पत्र लिखा जिसमें कहा कि मुझे अब तक पता नहीं था कि धर्म आप जैसे साधु पुरुषको भी जितना नीचे ले जा सकता है। अुसके अुत्तरमें अुन्होंने लिखा

दिनांक १९–९–४१

प्रिय श्री बलवन्तसिंहजी

आपका पत्र कल शामको मिला। मेरे शब्दोंसे आपको बड़ा दुःख हुआ है। अिस दोषके लिअे क्षमा कीजियेगा। मेरे मनमें जो विचार आ गये वे रख दिये। वे विचार मनमें आने पर भी आपको कह न देता तो और भी अधिक दोष हो जाता। अैसे विचार करनेमें आपके प्रति अन्याय हुआ हो यह संभव है। मुझमें है अुससे अधिक साधुताका आप मुझमें आरोपण न करें। अैसा करनेसे ही आपने मेरे अभिप्रायको ज्यादा महत्त्व दिया और दुःखित हो गये। खैर। अब शान्त हो जाअियेगा। पू॰ बापूजीकी आज्ञाको अुठाते रहनेमें संतोष रखियेगा। जैसा वे चाहें वैसा ही करते रहियेगा। श्री मीराबहनको प्रणाम। गोमतीने आपको प्रणाम लिखाया है। दोनों कुशलसे प्रवास कर रहे हैं। आज श्री मथुरादासभाअीके मधुबनी आश्रमकी ओर जा रहे हैं।

आपका
किशोरलाल

* *

पू॰ किशोरलालभाअी स्पष्टवक्ता थे और कठोर सत्य कहनेकी क्षमता रखते थे। लेकिन अुनका हृदय स्फटिक जैसा निर्मल था। सरलता और नम्रताकी वे मूर्ति थे। जिसे वे कठोर सत्य कहकर तिलमिला देते थे अुसके प्रति अुनकी सहानुभूति और स्नेहमें जरा भी अन्तर नहीं पड़ता था। मेरा और अुनका सम्बन्ध सगे भाअीसे भी अधिक घनिष्ठ था क्योंकि वे जानती

सुबह करते करते कभी कभी तीव्र मारामारी कर लेती हैं किन्तु शामको अुसका वे कुछ स्मरण नहीं रखतीं और अेक-दूसरेको प्रेमसे चाटती हैं। मैसी हमारी स्थिति होनी चाहिये। मैसे हम सब होंगे तभी हमारे सब तेजस्वी होनेवाले हैं।

होशियारीबहनको चिट्ठी भेजी सो ठीक किया। अुनका अुत्तर आने पर अधिक विचार कर लेंगे। मनुष्यके मनमें सुस्ती कभि नहीं होता। मौका आने पर वह प्रवेश करता है। और फिर अुसके सामने अमुक तो टिक ही सकेगा अैसा किसीके लिये यकीन दिया नहीं जा सकता। नल राजाकी कथामें कहा है न कि सध्यापाठ करते समय वह पैर धोकर पोंछना भूल गया। अुस वक्त कलिने पैरोंके दरूजे द्वारा अुसमें प्रवेश कर लिया। ग्रीक पुराणमें कथा है कि वीर अखिलीज (अेकिलीस) का सारा शरीर वज्रमय था सिर्फ पदतल नहीं थे। अुसे मारनेके लिये अुसके पदतलमें बाण लगे तब वह मरा।

संभव है गोसेवाके प्रकरणके सिलसिलेमें आपका यहां आना हो जायगा तब मिलना भी होगा ही।

सप्रेम
किशोरलाल

* * *

किशोरलालभाईकी कठोर सत्य कहनेकी अद्भुत कला और हिम्मत स्पष्टवादिता तथा सूक्ष्म निरीक्षणका परिचय सेवाग्रामके सेवकोंके सामने *दिये गये अुनके नीचेके प्रवचनसे मिलता है*

"आज कुछ छोटी-छोटी बातें करनेका विचार है। वे देखनेमें तो छोटी हैं लेकिन गौर किया जाय तो बड़ी भी साबित हो सकती हैं। जिसका मुझे खेद है कि मुझे पूज्य बापूके साथियोंसे ही टीकाका आरम्भ करना पड़ता है। लेकिन यह कोओी न समझें कि ये टीकायें सिर्फ अुनके बारेमें लिये ही नहीं हैं औरोंके लिये नहीं हैं। वास्तवमें ये सब हमारे प्रजाकीय दोष ही समझिये।

बम्बओी फैजपुर और हरिपुराकी कांग्रेसोंमें मुझे अुनके कैम्पमें रहनेका प्रसंग आया। तीनों समय अुनके कैम्पमें बहुत ही अव्यवस्था बेपरवाही अविचार और अपनी ही सुविधा देखनेकी वृत्ति मेरे देखनेमें आयी। और यह

साढ़े चार तक दोपहरके जलपानकी कतार चलती थी और बादमें रातके भोजनकी जो कभी कभी रातके दस बजे तक भी होता था। मक्खनके तीन तीन डिब्बे खोले हुअे यहाँ थे। मालूम नहीं कि अेक खतम होनेके पहले ही दूसरा क्यों खोला जाता था? अेक तरफ तो पूज्य बापूजी जितनी किफायत करते हैं कि अेक या चिट्ठियोंके लिफाफेमें अेक तरफ कोरे पड़े हुअे कागजोंको काममें लाते हैं और अुनके लिफाफे भी बनवाते हैं। और दूसरी तरफ हम जो अुनके साथ दरिद्र-नारायणकी प्रतिध्वनि गुंजाते हैं फिजूल-खर्चालू होते हैं। मैं यह नहीं कहना चाहता कि कुछ काम निकल पड़ा तो कोअी कलेश स्वीकार कर लेता था। पर सबमें यह समझ नहीं दीख पड़ती थी कि अेक जगह हमको आठ-दस दिन ही क्यों न रहना हो तो भी वहाँ हमारा अेक घर बन जाता है। अुसमें अुसी तरह व्यवस्था, समय-पालन और सबकी सहूलियतका खयाल किया जाना चाहिये जैसा अेक अच्छे संस्कारी परिवारमें होता है।

लेकिन अिस प्रकारकी तालीम ही हम लोगोंको नहीं मिली। दूसरोंकी सुविधाका खयाल हम बहुत ही कम करते हैं। कअी बार हमें अतिथि बननेका प्रसंग आता है। जिसके यहाँ हम ठहरते हैं वह हमारा आतिथ्य करके अपना कर्तव्य बजाता है। लेकिन अतिथिका भी अपने यजमानके प्रति कुछ कर्तव्य है या नहीं? हमारा फर्ज है कि या तो हम अुसे यह कहें कि हमारा समय-पत्रक अिस तरह बना है, अतः कृपया अुसके अनुसार आप नहाने खाने पीनेकी व्यवस्था करें अथवा अुससे यह पूछें कि आपकी यहाँके खाने-पीने वगैराका आपका अपना समय बताअिये जिसके अनुसार हम अपना कार्यक्रम तैयार करें। मगर साधारणतया हम लोगोंमें अैसी आदत नहीं होती। घंटों तक यजमान और अुसके परिवारकी स्त्रियाँ और नौकर बनी हुअी रसोअीको गरम किस तरह रखा जाय अिसकी चिंता और अतिथियोंकी प्रतीक्षा करते बैठे रहते हैं।

अिसी तरह पड़ोसियोंके आरामका खयाल भी हममें नहीं है। अिस लापरवाहीका बड़ा ही कष्टकर अनुभव हुआ करता है। मैं तो बचपनसे अेक बड़े परिवारमें पला हूँ और बम्बअीके सरेआम रास्तों पर रहा हूँ। शोर आवाजके बीचमें भी अपना काम कर लेता हूँ और आज तक नींद भी ले सकता था। अब तो मुझे भी परेशानी होती है और जिनकी ज्ञानेन्द्रिय तेज

होती है वे तो बीमार-से ही पड़ जाते हैं और मीदसे अेकाअेक जाग जानसे छातीकी धड़कन अनुभव करते हैं। कभी लोग रातमें जब अुठते हैं तब अितने जोरसे पैर पटक कर चलते हैं कि दूसरे सबको जगा देते हैं। कभी भाअियोंको आधी रातमें प्यास लगती है। वे अपने गिलास और बरतनको बिना जोरसे टक्कर मारे अुठा या रख ही नहीं सकते। कभी भाअी रातको देरीसे सभा या सिनेमा आदिसे लौटते हैं। आते हैं तब सब पड़ोसियोंकी नींदको तोड़ देते हैं। बिना आवाज किये आना दरवाजा खोलना और बन्द करना अुनको सिखाया ही नहीं गया। शायद हम मानते हैं कि जब तक हम जागते हैं तब तक किसीको सोनेका अधिकार नहीं है और जब हम जाग गये हैं तब दूसरे क्यों सोते रहते हैं!

जिस चीजके लिये हमें दाम नहीं देने पड़ते हैं, अुसके प्रयोगमें भी हम किसी तरहकी लापरवाही रखते हैं। अगर हमारे मकानमें बिजली या पानीका नल हो और स्वतंत्र मीटर हो तो हम अुसका अुपयोग बड़ी सावधानीके साथ करते हैं। पर अगर अुसकी कीमत निश्चित ही हो तो हम अुसका अधिक व्यय ही नहीं नाश भी करते हैं। मुझे यदि ठीक याद है तो कुरानमें अेक जगह कहा है सब चीजें खुदाकी हैं अुनको हिफाजतसे अिस्तेमाल करो। यह बोध हमें याद रखना चाहिये। मेरे खयालसे किसी चीजका अपव्यय करना अपरिग्रह और अस्तेय-व्रतको न माननेसे भी ज्यादा खराब है।

लेकिन अपव्ययके विषयमें मुझे यह भी कह देना चाहिये कि बड़े बड़े नेता भी बहुत दोष करते हैं। वे छोटे कार्यकर्ताओंको अुड़ाअुपनकी आदतें सिखाते हैं। अेक जमाना था जब अेक या दो पैसेमें पोस्टकार्ड और चार आनेमें तार भेजा जा सकता था। पर अुन दिनोंमें धनिक लोग भी तार नहीं भेजते थे। अुससे कहीं अधिक तार हम लोग आजकल भेजते हैं। बड़े सार्वजनिक मामलोंके लिये जो तार देने पड़ते हैं अुनकी बात मैं नहीं कर रहा हूँ। सब काम जितने महत्त्वका नहीं होता है कि पोस्टकार्डसे नहीं किया जा सके। लेकिन अुसे छोड़ दें। मगर नेता लोग खानगी तार भी बहुत बड़े प्रमाणमें करते हैं। और गरीब कार्यकर्ताओंसे भी आशा रखते हैं कि वे तारसे प्रत्युत्तर दें। अेक-दो मिसालें दूँ। यह माना जा सकता है कि अेक आदमीकी बीमारी चिन्ताजनक हो तब अुसकी खबर सब रिश्तेदारोंको तारसे देना आवश्यक है। कुछ मित्रोंको अुसके मरनेकी खबर भी तारसे पहुँचाना

आवश्यक हो सकती है। लेकिन आश्वासन देनेके लिये हमेशा तार ही क्यों भेजना चाहिये? अधिकतर तार तो शिष्टाचारके ही होते हैं। तो भी फौरन तार ही भेजा जाता है। और। यह तो मृत्युका नाजुक प्रसंग होता है। अगर नेताके पास पैसा है तो वह खर्च करे। लेकिन मानो कि जमनालालजीके यहां शादी है। आपको आठ दिन पूर्व अुसकी खबर मिल चुकी है। तो फिर क्यों आप अुसकी बधाजी पत्रसे नहीं भेजते हैं और तारोंकी बरसात करते हैं? अथवा स्वयं नेताका भी विवाह कौनसे सार्वजनिक महत्त्वका अथवा आकस्मिक अुत्पन्न हुआ काम है? मैं तो अितना बेसमझ हूं कि मुझे साधारणतया अैसी बात सूझती ही नहीं है। अेक बार सूझी तो वह देव दासभाजीके विवाहके प्रसंग पर जेलमें। मेजर भंडारीने परवानगी तो दी, लेकिन दो चार बातें भी सुनाजी।

अभी मैं हरिपुरा गया तो काकासाहब मुझसे झगड़े कि मैंने वर्धासे निकलते ही सभीको तारसे खबर क्यों न दी? मुझे तो यह बात सूझी ही नहीं थी। और न बापूजीकी सूझी जो मुझसे अधिक अनुभवी बूढ़े और बड़े कार्यकर्ता हैं। गाड़ियां चलती थीं मोटरें चलती थीं। यही और हरिपुराके रास्तेसे मैं अनजान तो था ही नहीं और मेरी अपेक्षा थी कि वहीं पर भी परिचित स्वयंसेवक मिल ही जायेंगे। फिर क्यों तार दूं? अब स्वयंसेवक न मिले और रास्तेमें ही मेरी पत्नीको बुखार आ गया तथा मोटर निवास-स्थानसे बहुत दूर पर खड़ी रखी गयी ये तो सब आकस्मिक बातें हुजी। ये तो तार करने पर भी होनी संभव थीं जैसा बिहारमें मुझे अेक बार हुआ था। अिन तारोंसे गरीब कार्यकर्ताओंको जो मुश्किल होती है अुसका नेताओंको शायद पता ही नहीं है। अुदाहरणार्थ समझिये कि श्री शंकरराव देव जैसे नेता बीमार पड़े हैं। वे हैं तो बड़े नेता लेकिन साथ ही हैं दरिद्र-नारायण। अुपचारके लिये खर्च करनेमें भी अुन्हें विचार करना पड़ता है। और अिस परिस्थिति नेताओंकी अुन पर यह अनुकम्पा होती है कि आप सब अुनकी खबर तारसे पूछते हैं। और कोअी जवाबी तार तो भेजता ही नहीं है। शिष्टाचार कहता है कि अुनका कर्तव्य है कि आपकी चिन्ता वे तारसे दूर करें। अन्तरका दरिद्र-नारायण कहता है कि अच्छा होता आपने भी आनेका तार किया अुसकी अपेक्षा अेक आनेका खत भेजते और बचे हुअे आठ आनेके टिकट अुनको भेज देते। वे

आपको अेक आनेका बचाव देते और सात आने अुपचारके लिअे अुपयोगमें लाते। लेकिन अब वे तार देनेके लिअे पैसे कहांसे निकालें? अैसी परिस्थितिमें मेरे जैसा आदमी तो तार करनेकी अनिच्छा कर भी सेता है। सब वैसा नहीं कर सकते। फिर वही बात होती है जो आम लोग कहते हैं। अगर अेक धनिक किसान अपने घर विवाहमें पांच हजार रुपये खर्च करता है तो अुसके पड़ोसीको भी अुतनेमें शिष्टता मालूम होती है। फिर वह जमीन-घर गिरवी रखकर भी अुतना खर्च करता है।

"बात यह है कि हमारे नेताओंने चार खर्चीले व्यसन पोस हैं और वे ये हैं अपने बारेमें तार देनेमें किफायत न करना, अपनी हलचलकी खबर हमेशा प्रेसको पहुंचाना और अपनी तस्वीर तथा हस्ताक्षर मांगनेवालों पर सदैव मेहरबानी करते रहना। अकसर मध्यम और छोटे कार्यकर्ताओं पर यह असर होता है कि बड़े नेता बननेके लिअे अिन चार साधनोंका अुपयोग करना जरूरी है। बड़े नेताओंसे मेरी अर्ज है कि वे किसीको तार देनेके पहले अुसकी आर्थिक परिस्थितिका हमेशा खयाल रखें स्वयं भी बेमतलबके तार और खरीते (मेसेजेस) भेजनेमें संयम रखें और लड़कों जवानों और समवयस्कोंमें फोटोग्राफ मांगनेका जो व्यसन बढ़ रहा है अुसे प्रोत्साहन न दें।

खर्चीले शिष्टाचारों (फार्मेलिटीज) के बारेमें हम छोटे कार्यकर्ताओंको बहुत विवेकपूर्वक चलना चाहिये। हमने अपने पुराने पेशे छोड़ दिये हैं। हमारी आमदनीको हमने अपनी खुशीसे घटा दिया है। अुसमें बढ़नेकी गुंजाअिश नहीं है। अुल्टा अगर पिछले बीस सालका अितिहास देखा जाय तो हममें से अनेकोंने तो केवल घटनेका ही अनुभव किया है। दूसरी ओर हम जिन ग्रामोद्योगोंको बढ़ाना चाहते हैं अुनके कारण हमारी आवश्यकताओंकी कीमत धनके रूपमें ज्यादा देनी पड़ती है। जब हम सेवाधर्मके जीवनमें नहीं थे तब रिश्तेदारोंके साथ सामाजिक लेन-देनके व्यवहारोंके सम्बन्धमें हमारे कुछ नयामात बने हुअे थे। मीठे भोजनोंमें अतिथि-सत्कार करना विवाहादि अवसरों पर भेंट देना घरके शुभ अशुभ प्रसंगों पर जातिभोज ब्रह्मभोज आदि करना बहन-बेटियोंको सौगात देना तीर्थों आदिमें दान करना वगैरा वगैरा रिवाजोंका हम अपनी प्रतिष्ठाकी दृष्टिसे पालन करते थे। अब तो हमने अुस प्रकारका जीवन छोड़ दिया है। फिर भी हमने परिवारको नहीं छोड़ा है। घर अुजाड़ नहीं दिया है। आज भी हमारे यहां ये सब प्रसंग आते ही हैं।

तब अुन व्यवहारोंमें हमें विवेककी किस मर्यादासे काम लेना चाहिये ? फर्ज कीजिये कि मेरी लड़कीकी शादी है। जमनालालजी मेरे पुराने मित्र हैं। वे भेंट देते हैं। पूर्व-जीवनमें अिसको स्वीकार करनेमें मुझे कोअी दुःख नहीं होता क्योंकि अुनके यहां अैसा प्रसंग आने पर मैं भी अुसके अनुरूप कुछ करनेकी अुम्मीद रखता। अब मैं कहता हूं कि सेठजी अितनी बड़ी भेंट न दीजिये। लेकिन वे कहते हैं कि यह मेरी लड़की है मैं क्यों न दूं? और वे आग्रह करके भेंट देते हैं। फिर अुनकी लड़कीका विवाह आता है। अुनकी लड़की मेरे लिये भी पुत्रीवत् है। तब मुझे क्या करना चाहिये? पचासकी न सही तो क्या मैं २ रुपयेकी चीज अुसे दे सकता हूं? अुतनी रकम तो तीन महीनोंमें भी नहीं बचा सकूगा। अैसी परिस्थितिमें मैं प्रतिष्ठा और मेरी लड़कीको मिली हुअी भेंटका खयाल करूं? अकसर हम लोगोंमें प्रतिष्ठा और योग्य प्रति-व्यवहार (बदलेमें व्यवहार) का खयाल आ जाता है और कभी बार कर्ज करके भी हम अैसा खर्च अपने अूपर अुठा लेते हैं। मैं अिसे ठीक नहीं समझता। मेरी दृष्टिसे तो मुझे यही विचार करना चाहिये कि अैसे व्यवहारों या लोकाचारोंको ठीक ठीक प्रतिष्ठित रूपमें चलानेका जीवन मैंने तभी छोड़ दिया जिस दिन मैं सेवाकार्यमें लग गया। अब तो अधिकसे अधिक मैं अपनी अेकाध पुस्तककी प्रति अथवा अपने सूतकी खादीका टुकड़ा या मोल लेना पड़े तो चार-आठ आनेकी चीज ही दे सकता हूं। अगर अितनी छोटी भेंट देनेसे जमनालालजी या अुनके परिवारके लोगोंको बुरा लगे तो मुझे समझना चाहिये कि यह अुनकी बेसमझ है जिसमें मैं क्या करूं? वे बुरा मानेंगे तो दूसरे मौके पर मैं अुठा सकूं अुससे अधिक भार वे मुझ पर नहीं डालेंगे। यह तो बड़ी योग्य बात ही मानेगी।

अिसी तरह दूसरे कअी शिष्टाचारोंमें भी हमको अपनी मर्यादा तय बांधनी चाहिये और परस्पर अेक-दूसरेको सावधान भी करते रहना चाहिये। आप जानते हैं कि बंगालका रसगुल्ला बहुत स्वादु होता है। और फर्ज कीजिये कि मुझे प्रफुल्लबाबूके यहां ठहरना है। क्या मैं यह अपेक्षा कर सकता हूं कि प्रफुल्लबाबू मुझे रसगुल्ला खिलायेंगे? और मैं अैसी अपेक्षा करूं भी तो प्रफुल्लबाबूको क्या करना चाहिये?

"अकसर मित्र लोग अितना विवेक हमेशा नहीं रखते हैं और इस लिहाजमें पड़कर अपनी शक्तिसे अधिक दिखावा करते हैं। अभी मैंने अेक

बात सुनी है। अेक सेवकके मित्रका विवाह हुआ। वे सेवक बड़े खानदानके हैं और अेक जमानेमें बड़े धनी भी थे। पर आज तो वैसा मैं और आप हैं वैसे ही वे हैं। विवाहके बाद वह मित्र अुन्हें मिलने आया और अुसने कहा कि आपने मुझे कोअी भेंट नहीं दी है। कार्यकर्ताने पूछा आप क्या चाहते हैं? अुसने कहा कि यह जो अपनी शाल आप ओढ़ डालना चाहते हैं वही मैं चाहता हूं। अब वह शाल सौ-डेढ़सौकी कीमतकी अेक बढ़िया चीज थी। और सेवकने अुसे अपने कर्जकी सफाअीके लिअे बेचनेको निकाली थी। यह जानते हुअे भी अुस मित्रने अुसे मांगा और खानदानके संकोचके कारण वे हमारे भाअी अुसके अविवेकको न रोक सके। अर्थात् वह मित्र शाल ले गया। अैसे प्रसंगोंमें अनुचित मांगोंका जिनकार करनेकी हिम्मत हममें होनी ही चाहिये और यह हिम्मत तभी आ सकती है, जब हम अपने जीवन-परिवर्तनसे ठीक अेकरूप हो गये हों।

अेक और बात विशेषतः तरुण कार्यकर्ताओंसे मैं कहना चाहता हूं। पूज्य बापूजी राजेन्द्रबाबू सरदार आदि हमारे अधिकतर सदस्योंसे अुमरमें बहुत बड़े हैं। फिर भी वे कितने कर्मशील (ॲक्टिव) हैं और कितना परिश्रम अुठा सकते हैं? मैं तो अुतना काम करनेकी शक्ति अपनेमें नहीं पाता हूं। दिन-प्रतिदिन वयसे मेरी शक्ति कम हो रही है। लेकिन मैंने तो पूरा स्वास्थ्य कैसा होता है जिसका अनुभव सारे जन्ममें शायद ही किया हो। फिर भी जब मुझसे तरुण कार्यकर्ताओंकी ओर मैं देखता हू तब कुछ बेचैन हो जाता हू। शरीरसे अच्छे दीखनेवाले और व्यायामकी शिक्षा प्राप्त किये हुअे जवानोंमें भी गर्मी-सरदी वगैरा सहन करनेकी क्षमता कम है। कार्योत्साह भी कम है। दो-चार दिनके कार्यक्रमको तो वे पूरा कर सकते हैं पर दिन प्रति दिन किसी कामको स्थिरतासे करते रहनेमें मुश्किल महसूस करते हैं। नये नये काम सीख लेना सीखे हुअे कामोंमें अपनी कुशलता बढ़ाना — जिसके लिये जब मैं २५ या ३ सालकी अुमरके तरुण-तरुणियोंमें अनुत्साह देखता हू तो मुझे खेद होता है। जिसका कारण खोजता हू तब अधिकतर यह पाता हूं कि अुन्हें बचपनसे अिन्द्रियोंका परिश्रम करने और शीतोष्णादिकी तितिक्षा करनेकी आदत नहीं डाली गयी है। मने कितने ही अनिपढ़ स्त्री-पुरुष देखे हैं। अुनके शरीरमें तो सिवा हड्डीके कुछ भी नहीं रहा है। वे मुश्किलसे अुठते और फिरते हैं। फिर भी सुबहसे रात तक कुछ न कुछ काम किया ही करते हैं।

बेकार मुनसे बैठा ही नहीं जा सकता। अलबत्ता अनुके काममें वेग नहीं होता है। वे धीरे धीरे काम करते हैं। लेकिन अपना काम स्वयं करनेका आग्रह रखते हैं। आंखें अच्छी हों और पढ़े-लिखे हों तो वे कुछ न कुछ पढ़नेका भी मुत्साह रखते हैं। यह जो मुनसे होता है अुसकी वजह यह नहीं है कि अुनके स्नायुओंमें अब तक ताकत रही है या अुनकी बुद्धि तेज है। मगर जिस प्रकार अेक चक्रको त्वरासे गति देकर छोड़ दिया जाय तो वह प्राप्त किये वेगसे फिरता रहता है, अुसी तरह जिन्होंने सारा जन्म अेक प्रकारका परिश्रम करनेमें बिताया है, अुनकी अिन्द्रियोंको अैसी आदत ही हो जाती है कि वे मृत कामको बिछौना पकड़ने तक कर सकते हैं। हमारे शरीर और अिन्द्रियोंको अैसा वेग प्राप्त होना यह अेक मूल्यवान सम्पत्ति है। यह बचपनसे परिश्रम करनेके मुहावरेसे ही प्राप्त होती है।

"आपने अनुभव किया होगा कि कभी लोग बीमारीके बाद भी यद्यपि अुनका शरीर अभी दुर्बल ही होता है काम पर चढ़नेकी शक्ति अपनी महसूस करते हैं और कभी लोग शरीर पूर्णतया भर जाने पर भी ताकत महसूस नहीं करते। बच्चे कसरतबाजोंकी भी अैसी हालत होती है। जिसकी वजह मेरी रायमें सिर्फ पूर्वाभ्यास — मुहावरा है। स्वामी रामदासने कहा है कि जवानीमें बरछम-बास करो। मतलब कि तारुण्यमें शरीरको नाजुकपनका अभ्यास नहीं बल्कि कठिन जीवनका अभ्यास कराना चाहिये। सहूलियत होने पर भी गर्मी-सर्दी सहन करने और परिश्रम करनेका मुहावरा कर लेना चाहिये। विद्यार्थियोंके लिये व्यायामकी शिक्षाका प्रबन्ध करनेकी जरूरत पर आजकल जोर दिया जा रहा है। यह ठीक है। फिर भी यह याद रखना चाहिये कि सिर्फ व्यायाम द्वारा शरीरसे नित्य परिश्रम करनेकी या शीतोष्णादिको बरदाश्त करनेकी ताकत नहीं आती। और न यह कभी कभी अेकाध सप्ताहके स्कौअुटिंगके कार्यक्रमकी योजना करनेसे अुत्पन्न होती है। यह तो बचपनसे रोज-ब-रोज नित्यके कठिन काम करते रहनेसे पैदा होती है और फिर यह शरीर तथा अिन्द्रियोंका स्वभाव बन जाती है। मैं तो मानता हूं कि बच्चोंको न केवल बुद्धिमय अुद्योग ही सिखानेकी आवश्यकता है पर जड़श्रमका मुहावरा करानेकी भी जरूरत है। अगर आप अपने बच्चोंकी बाल्यावस्था और अपना तारुण्य शरीर-परिश्रमपूर्वक बितायेंगे तो अुनकी और आपकी वृद्धावस्था कम पराधीनताकी होगी।

"कार्यकर्ताओंकी दूसरी दो त्रुटियाँ भी मुझे बार बार अखरती हैं। समय-पालनका आग्रह हमारे स्वभावमें नहीं है। अतः किसी कामको समय पर करनेकी चिन्ता हमें कम होती है और काम न हुआ तो अुसका दुःख भी कम लगता है। अुलटे अगर कोअी अुसके लिअे हमें कुछ कहे, तो वह नाहक दाव निकालनेवाला मालूम होता है। अिसी तरह मुंशीगिरीके कामोंमें हम निश्चितताकी बहुत परवाह नहीं करते हैं। अिस दोषका मुझे बहुत अनुभव हुआ है। अतः अब मेरा यह स्वभाव ही बन गया है कि दूसरेके लिखे हुअे कागज पर बिना पढ़े मैं सही करना नहीं चाहता। अिसमें यह अविश्वास नहीं होता है कि लिखनेवाला मुझे धोखा देगा लेकिन मैं अिसे नामुमकिन नहीं मानता कि अुसने लिखनेमें कुछ गलती या बेपरवाही न की होगी। फिर भी नासमझी या दूसरे कारणोंसे असावधानी और गलती हो ही जाती है। और जब अैसा होता है तब मुझे कष्ट होता है। लेकिन मुझे अनुभव है कि गलती करनेवाले अितना कष्ट महसूस नहीं करते हैं। आपको अनुभव होगा कि पूज्य बापूजीके पत्रोंमें कभी कभी अिशारा होता है कि 'फिरसे नहीं पढ़ा'। यानी साधारणतया वे अपने पत्र दुबारा पढ़ लेते हैं। लेकिन कुछ कार्यकर्ता अभिमानपूर्वक यह बताया करते हैं कि वे कभी अपने लिखेको दुबारा नहीं पढ़ते हैं। अुनको दो प्रकारका आत्म-विश्वास होता है। अपनी लेखन-शक्तिका और गलती रह गयी तो वाचककी अुसको ठीक कर लेनेकी शक्तिका। मेरी राय है कि अैसे मिथ्याभिमानी स्वभावके कारण हम कुशलता प्राप्त नहीं कर सकते हैं और हमारा विकास भी थम जाता है। कभी कभी मैं महसूस करता हूँ कि हमारे बहुतसे तरुण कार्यकर्ताओंके लिअे यह नियम होना चाहिये कि वे अेक वर्ष किसी बड़े मोदीकी दुकानमें और अेक वर्ष किसी बैंकमें या सॉलिसिटरकी पेढ़ीमें अनुभव लेने जायें और परिश्रम व सावधानीकी आदतें सीखें।

कार्यकर्ताओंके जीवन-व्यवहारमें अेक और भी महत्वका विषय मुझे सोचना है पर अुसके लिअे आज समय नहीं है। मौका मिला तो दूसरे समय मैं कहूँगा।

मैं नहीं जानता कि वह दूसरा समय कभी आया या नहीं लेकिन हम अितनेको भी पचा सकें तो बहुत है।

११

सेवाग्राम आश्रमकी नींव

अिन्हीं दिनों (सन् १९३६) यह तय हुआ कि बापूजी मगनवाड़ीसे जाकर सेगांव रहेंगे और मीराबहन पासके दूसरे गांव वरोड़ामें अपनी कुटिया बनाकर रहेंगी।

मीराबहन बापूको सेगांवमें बसानेकी व्यवस्था करने लगीं। बापूजी सेगांवको देखना चाहते थे। वे वहां १ अप्रैलको जानेवाले थे। रातको मगनवाड़ीकी छत पर मैं सो रहा था। मुझसे श्री अमृतलालजी नाणावटीने आकर कहा "आप बापूसे बात करना चाहते थे अिसलिअे अब बहुत अच्छा मौका है। बापूजी कल सुबह पांच बजे सेगांव जा रहे हैं। अिसलिअे रास्तेमें आपसे सब बात हो जायगी।" अिस कार्यक्रमका मुझे बिलकुल पता नहीं था। बस मैं बापूजीके साथ हो लिया। बापूजी जब वर्धासे गुजर रहे थे तो जमनालालजीके पुरोहित पं॰ रूपमलजी मिले। वे पहले जमनालालजीकी मगनवाड़ीकी खेती संभालते थे और बादमें सेगांवमें जाकर अुन्होंने अपना काम जमाया था। बापूजी अुन्हें देखकर हंसे और बोले "आज सेगांव जा रहा हूं।"

रूपमलजीने कहा "मगनवाड़ी तो छीन ली अब सेगांव भी ले लीजिये।"

बापूने कहा "मेरा और काम ही क्या है?"

अुस समय जमनालालजीके मुनीम श्री चिरंजीलालजी बड़जाते बापूके साथ थे। और लोग भी थे। गाड़ीका साधारण रास्ता था तो भी हम भूल गये थे। साथमें बैलगाड़ी तो थी लेकिन बापू पैदल ही गये।

मीराबहनने बापूजीके लिये कुंअेके पास अमरूदके बगीचेमें बांसकी चटाअीकी अेक झोंपड़ी चलता-फिरता अेक पाखाना और चार खंभोंके आसपास बांसकी चटाअी लपेटकर स्नानघर बनाया था। अेक बकरी भी रखी थी। मीराबहनकी अेक गाय और अेक घोड़ा भी था। घोड़ेका नाम सवीला था। अेक बिल्ली और अेक कुत्तेका बच्चा भी अुन्होंने पाल रखा था। बापूजीके पहुंचने पर अुनके लिअे अेक पेड़के नीचे चटाअी बिछा दी। अुस पर अुनका सब

सभाके बाद सेगांवके दो सज्जनोंने बापूजीके अिस निश्चयका हार्दिक स्वागत किया और सहयोगका वचन दिया। परन्तु बूढ़े पटेल श्री कालीदासने खड़े होकर कहा "महात्माजी आप यहां आये हैं अिससे हमें आनन्द होता है। आपकी सब बातें हमें कबूल हैं लेकिन हरिजनोंके साथ मिलनेकी आपकी बात हमको कबूल नहीं है।" बापूजी खूब हंसे और बोले "धीरे धीरे आपको सब बात समझमें आ जायगी।"

अुसी दिन गांवमें अेक फौजदारीका केस हो गया था। किसीने अेक आदमीका सिर फोड़ दिया था। जब प्रार्थना हो रही थी तभी लोग खूनसे लथपथ अुस आदमीको बापूके पास लाये। वे लोग मामला पुलिसके हाथमें सौंपना चाहते थे। प्रार्थना पूरी होनेके बाद बापूने अुन्हें समझाया कि यह मामला पुलिसके हाथमें देनेसे दोनों पक्ष हैरान होंगे। जिसने अिस भाअीका सिर फोड़ा अुसने बड़ी भूल की। लेकिन आपको अुसे माफ कर देना चाहिये। अपने गांवके झगड़े आप आपसमें शांतिसे निबटा लिया करेंगे तो ही गांवमें प्रेम और मेल रहेगा और गांव अूंचा अुठेगा। लोग बापूकी बात समझ गये और शान्त हो गये। अिस प्रकार पहले ही दिन बापूको अनुभव मिल गया कि गांवमें कैसी-कैसी समस्याओंका सामना करना पड़ेगा और गांवके प्रश्नोंको किस प्रकार शांति और समझौतेकी भावनासे हल करके गांवके लोगोंमें प्रेम और हेलमेल बढ़ाना होगा।

अुस रोज मैंने सेगांवसे लौटकर महिलाश्रममें अपने मित्र सत्यदेवजीके यहां भोजन किया और सो गया। सुबह फिर सेगांव गया। बापूजीके साथ काफी चर्चा हुअी। जब शामको चलने लगा तो बापूजीने पूछा "कहां जाते हो?"

मैंने कहा — महिलाश्रम।

बापू — वहां क्या करोगे?

मैं — भोजन करूंगा और वहीं सोअूंगा। कल सुबह फिर आ जाअूंगा।

बापूने कहा — क्यों क्या सिर्फ भोजन करनेके लिये जाते हो?

मैंने कहा — हां जी आपने तो यहां किसीको भोजन न देनेका निश्चय किया है न?

बापूने कहा था कि वे सेगांवमें अकेले ही रहेंगे। ज्यादासे ज्यादा बा और मीराबहन अुनके साथ आ सकती हैं। दूसरा कोअी आयेगा

तो वे मुझे खाना भी नहीं देंगे। अिसलिअे मैं खाना महिलाश्रममें खाता था और बात करनेके लिअे बापूके पास आ जाता था।

मीराबहनके पास सेगांवका अेक गोविन्द नामका लड़का था जिसे वे बापूजीकी सेवाके लिअे तैयार कर रही थीं। क्योंकि मीराबहनको तो वहां रहनेकी अिजाजत नहीं थी। अुन्हें पासके ही वरोड़ा गांवमें जाना था। बापूजी जब गये तब दूसरा अेक लड़का दगड़ू बापूजीके पास आया और कहने लगा "मुझे तकली सीखनी है। बापूजीने मुझसे कहा "अच्छा तुमको रोटी यहीं मिल जायगी। मीराबहनके पास थोड़ा आटा होगा। तुम यहां रहकर अिन दोनों लड़कोंको धुनना और कातना सिखा दो।

मुझे तो अितना ही चाहिये था। अुन दोनोंको धुनना और कातना सिखाना और अुसके बदलेमें रोटी। दूसरे दिन भाअी मुन्नालालजी अहमदाबादसे बापूजीके पास आ गये थे। अुन्होंने मीराबहनके लेख हरिजन में पढ़े थे और वे मीराबहनके साथ सत्संगके लिअे सेगांव रहना चाहते थे। बापूजीके साथ अुनका परिचय पुराना था। जब अुन्होंने सेवाग्राममें रहनेकी बात की तो बापूने अुनसे कहा कि अगर मीराबहन स्वीकार करें तो मुझे कोअी आपत्ति नहीं है। मीराबहनने अुनकी बात कबूल की और वे सेवाग्राममें रहने लगे। अिस प्रकार सेवाग्राममें हम दोनोंका प्रथम प्रवेश हुआ।

अभी बापूजी दो चार दिन रहकर सिर्फ सगांव देखने गये थे। जिस स्थान पर अिस समय आश्रम है वहां पहले जमनालालजीका बड़ा खेत था और वहां पर अुनकी खेती चलती थी। अुसमें से अेक अेकड़ जमीन अुन्होंने आश्रमके लिअे दी थी। मिट्टीकी दीवारका जो आदि-निवास है अुसकी नींव बापूजीका निवास स्थान बनानेके लिअे खुदी थी। मीराबहनने बा और बापूके लिअे रस्सीकी दो खाटें बनाकर तैयार कर रखी थीं। खुदी हुअी बुनियादके बीचमें बापूजीकी खाट बिछायी गयी और बुनियाद पर तख्ता रखकर आने-जानेका मार्ग बनाया गया। बापूजी दिनमें बगीचेमें काम करते और रातको वहां सोते थे। शामकी प्रार्थना सेगांवमें होती थी और प्रातःकालकी वहीं पर। अुन्हीं दिनों पू० काकासाहब और नानावटीजी भी अेक रोज बापूजीसे मिलने आ गये थे और वहीं सोये थे। मेरे बापूजीके पास रहने न रहनेका कोअी निर्णय नहीं हुआ था। लेकिन बापूजीने कहा कि अभी तो मैं नन्दी हिल जाता हूं तब तक तुम मीराबहनके पास रहकर मकान और रास्ता

बनवानेमें मदद करो। वहांसे लौट आने पर विचार करेंगे। तुमको भी तब तक विचार करनेका मौका मिलेगा। अिस प्रकार अेक महीना मीराबहनके काममें मदद करनेका निश्चय हुआ। ५ और ६ मओीको पवनारमें खादीयात्रा थी। बापूजी सेगांवसे सीधे पैदल ही पवनार गये और खादीयात्रामें अपना भाषण देकर वर्धा चले गये। वहांसे दूसरे दिन या दूसरे दिन नन्दी हिल चले गये। पू॰ बा भी अुस समय बापूजीके साथ थीं।

मेरा सामान मगनवाड़ीमें था। अुसे लेकर मैं सेगांवमें रहनेके लिओ चला आया।

सेगांवका मकान और रास्ता बनाना था। क्योंकि बगीचे टेकरी तक तो गाड़ीका रास्ता था किन्तु अुसको आश्रमके साथ मिलानेका कोओी रास्ता नहीं था। बीचमें लोगोंके खेत पड़ते थे जिससे सीधा रास्ता तो नहीं बन सका। परन्तु जहां जमनालालजीके अधिकारकी बंजर भूमि थी वहांसे रास्ता बनाया जो आज भी टूटी-फूटी हालतमें बगीचे और गोशालाके दक्षिणसे घूमकर आता है। मकानका काम मुझे और रास्तेका काम भी मुन्नालालजीको सौंपा गया। हम दो सिपाही थे और मीराबहन हमारी जनरल! अिस तरह हमारी फौज तैयार हुओी। अेक महीनेमें बापूजीके आनेसे पहले रास्ता और मकान तैयार करना था। अुस समय वहां मजदूर तो काफी मिलते थे। लेकिन चूंकि मकानकी दीवार मिट्टीकी बनानी थी, अिसलिओे अुसके सूखने पर धीरे धीरे काम चलता था। दिन निकलनेसे पहले ही स्त्री और पुरुष मजदूरोंकी जरूरतसे ज्यादा भीड़ हो जाती थी। अधिकांश लोगोंको बड़ी कठिनाओीसे और दुःखसे वापस करना पड़ता था। अुस समय अेक पुरुषकी मजदूरी चार या तीन आने और अेक स्त्रीकी मजदूरी पांच या छह पैसे थी। सुबहसे शाम तक हम काम करते रहते और रातको आठ बजेके बाद हमारा भोजन होता। सचमुच ही हमारे वे दिन मस्ताओी और आनन्दके थे। जब आंधी-तूफान व वर्षा होती तो मीराबहनकी गाय और घोड़को जमनालालजीके बैलोंके साथ और बापूजीकी बकरीको किसी अेक कोनेमें बांध देते थे और हम तीनोंकी खाटें अुस कोठरीमें रहतीं जो आज कुटीके पास अुत्तर-पश्चिममें बनी हुओी तीन चार कोठरियोंमें से अुत्तरकी अन्तिम कोठरी है। जब हम तीनों अुस कोठरीमें पहुंच जाते तो अैसे आनन्दका अनुभव करते मानो किसी राजाके महलमें पहुंच गये हों।

आज उस बेचारीको कोअी पूछता भी नहीं। यों ही टूटी-फूटी हालतमें पड़ी है। समयकी कैसी बलिहारी है!

अुन्हीं दिनों मेरा मीराबहनसे निकट संबंध आया। हम तीनों सगे भाभी-बहनकी तरह काममें जुटे रहते थे। कभी कभी हमारी आपसमें अनबन भी हो जाती थी। परन्तु अधिकतर दिन तो कामके आनन्दमें और रात नींदके आनन्दमें बीतती थी।

अुसी समय मीराबहनको दौड़-धूपमें बुखार आ गया। बापूजीने अुन्हें वर्धा जानेकी सलाह दी थी मगर अुन्होंने सेगांव नहीं छोड़ा और हमारी सेवामें ही सन्तोष माना। जिसका बहुतसा स्पष्टीकरण मीराबहनके पत्रोंसे हो जाता है। बरसात सिर पर झूल रही थी और कभी कभी पानीके झोंके भी आ जाते थे। अेक रोज तो बापूजीके स्नानघरका बना-बनाया काफी हिस्सा पानीसे गिर गया। मगर अुन दिनोंका पूरा वर्णन लिखने बैठूं तो अेक स्वतंत्र पुस्तक बन सकती है। वैसे अुत्साह और आनन्दका फिर अनुभव नहीं हुआ। पू. बापूजीने लिखा

चि. बलवन्तसिंह

मीराबहनने खबर दी है कि सेगांव पहुंच गये हो। अच्छा हुआ। अब मीराबहनकी सेवा करो और प्रफुल्लित रहो। मेरी आशा है कि वहांसे जानेकी जिच्छा मेरे आने तक नहीं होगी। गोविन्द और दत्तात्रयको अच्छी तरह प्यार करो। शरीर अच्छा रखो।

नन्दीदुर्ग १४-५-३६ बापूके आशीर्वाद

बाकी पत्र तो मीराबहनके नाम आते थे। अुनमें ही जो कुछ सूचना हमारे लिअे होती थी बापूजी लिखते थे। अुनमें से अेक महत्त्वपूर्ण पत्र जनताके लिअे बोधप्रद होनेसे यहां देता हूं जिसकी नकल मेरे पास है। जिसके लिअे मैं मीराबहनकी जिजाजत नहीं ले सका हूं। लेकिन मुझे विश्वास है कि मीराबहन आपत्ति तो कर ही नहीं सकती। बापूजीने अुन्हें लिखा

चि. मीरा

आशा है नन्दीसे भेजे मेरे पत्र तुम्हें मिल गये होंगे। हां तो अन्सारीकी मृत्यु मेरे लिअे अेक भारी व्यक्तिगत हानि है। जन्म और मृत्यु दोनों ही महान रहस्य हैं। यदि मृत्यु दूसरे जीवनकी पूर्वस्थिति

नहीं है, तो जीवनका समय अेक निर्दय अुपहास है। हमें यह कला सीखनी चाहिये कि मृत्यु किसीकी और कभी भी हो अुस पर हम हर्षविष रंज न करें। मेरे खयालसे अैसा तभी होगा जब हम सचमुच अपनी मृत्युके प्रति अुदासीन होना सीखेंगे। यह अुदासीनता तब आयेगी जब हमें सचमुच हर क्षण यह भान होगा कि हमें जो काम सौंपा गया है अुसे हम कर रहे हैं। लेकिन यह कार्य हमें कैसे मालूम होगा? यह ओश्वरकी अिच्छा जाननेसे होगा। ओश्वरकी अिच्छाका पता कैसे चलेगा? यह प्रार्थना और सदाचरणसे चलेगा। असलमें प्रार्थनाका अर्थ ही सदाचरण होना चाहिये। हम रामायणसे पहले हर रोज प्रार्थनामें अेक गुजराती भजन गाते हैं जिसकी टेक यह है हरिने भजतां हजी कोअीनी लाज जतां नथी जाणी रे. प्रार्थनाका अर्थ ओश्वरके साथ अेक होना करना चाहिये।

खुशी है कि मकान बनानेमें प्रगति हो रही है। कमसे कम फिलहाल बरोडाकी जमीन और मकान बनानेके लिये १ रुपये काफी होने चाहिये। मैं चाहता हूं कि तुम बाड़को तंग कर दो। अुसके लिये मजदूरी देनेकी आवश्यकता न होनी चाहिये। तुम्हारी देखरेखमें बलवन्तसिंह और मुन्नालालको बाड़ बना लेना चाहिये। सामान पर तो लगभग कुछ भी खर्च न होना चाहिये। बाड़ और थोड़ीसी छाया ही मुख्य चीज है।

सस्नेह
बापू

हमारा मकानोंका काम चल रहा था। जिसको अब आदि-निवास कहते हैं वह मकान बन गया था। अुसके पश्चिम-दक्षिणमें दो छोटी कोठरियां थीं जिनमें से अेकमें शौचालय और अेकमें स्नानघर था। मकानके ठीक पश्चिममें अेक छोटीसी गोशाला बनाओी जो दरवाजेके पासके मकान और बड़ी मजारके बीचमें नीचा-सा मकान है। प्रार्थना-भूमि तैयार की जो आज भी वैसी ही है और जहां आज भी प्रार्थना होती है। वर्षाका मौसम आ रहा था। हम लोग मकान पर छत डालनेकी बहुत जल्दी मचा रहे थे।

ज्यों ज्यों बापूके आनेकी तारीख नजदीक आती जाती थी त्यों त्यों हमारे कामकी तेजी और घबराहट बढ़ती जाती थी। कहीं अैसा न हो

कि मकान तैयार न हो और बापू आ जायें। १५ जूनको बापूजी लम्बी हिस्से मगनवाड़ी आ गये और हमको खबर दी कि "मैं कल सेगांव पहुंच रहा हूं। रेलवेकी चौकी पर रास्ता बतानेके लिये अेक आदमीको भेज देना। मकानके नीचेकी जमीन गीली थी। हमने असे रातभर जोड़ेके तसलोंमें आग जलाकर सुखानेकी कोशिश की। असी रातको १ बजेसे भयानक तूफान और बरसात शुरू हुआ और लगातार गिरती रही। हमने सोचा कि असे तूफानमें बापूजी नहीं आ सकते। अिसलिये हमने चौकी पर आदमी नहीं भेजा। मुभर वर्षामें दस पांच मिनटके लिये पानी थम गया। बापूजीने कनुभाअीसे कहा "तेरी निकल सकते हैं क्या?" कनुभाअीने कहा "हां अब तो पानी बंद है।" लेकिन बापू मगनवाड़ीसे निकले त्यों ही पानी फिर शुरू हो गया। बापूने कहा "कुछ भी हो अब वापिस नहीं लौटेंगे।" अिधर हम तीनों मकानके किवाड़ बन्द करके अन्दर बैठे थे। हमें खयाल भी न था कि बापूजी असी वर्षामें आ सकते हैं। थोड़ा किवाड़ खोला और रास्ते पर हमारी नजर पड़ी तो हममें से शायद मीराबहन ही चिल्ला अुठीं "अरे, बापूजी आ गये!

मैं छाता लेकर दौड़ा। बापूजी बोले "अरे, अब तेरा छाता क्या करेगा?" बापूजी पानी और कीचड़में लथपथ हो गये थे। अनके साथ श्री कमलनयन बजाज और मुनीम श्री चिरंजीलालजी बड़जाते भी थे। अनके पास तो बरसाती कोट थे परंतु बापूजी अपनी लंगोटीमें ही थे। हमने आदमी नहीं भेजा अिसलिये बड़ा दुःख हुआ। लेकिन हमको क्या पता था कि अिस तूफानमें भी वे आ सकते हैं। बापूजीने कपड़े बदले और हमने अनको कम्बल ओढ़ा दिये। अनको खूब ठंड लग रही थी।

बापूजीने कहा "यों तो मैंने दक्षिण अफ्रीकामें बहुतसी मुसीबतें अुठाअी हैं मगर जितने भयंकर तूफानमें जितना लंबा रास्ता तय करनेका मेरे जीवनमें यह पहला मौका है।" मानो गांवमें रहनेकी कठिनाअियोंका प्रथम दर्शन भगवानने बापूको करा दिया। गांवमें रहनेसे किन किन मुसीबतोंका सामना करना पड़ेगा अिसकी कल्पना अुस तूफानने पहले ही दिन बापूजीको करा दी। अुस दिनका चित्र आज भी वैसाका वैसा मेरी आंखोंके सामने नाच रहा है। बापूजीको हमने वहां लिटाया था वैसे कम्बल ओढ़ाये थे वे कैसे कांप रहे थे और हमको भी अुन्हें देखकर कितनी मानसिक

ठंड लगा रही थी यह सब आज भी वैसा ही ताजा है। अगर मैं चित्र
होता तो आज सारका सारा चित्र खींचकर पाठकोंको बता सकता था
जिस तरह स्वामी रूपसे बापूजीके सेवाग्राम-निवासका श्रीगणेश हुआ

१२

कामका आरंभ और विस्तार

बापूजीका फैसला

जैसा कि अूपर लिखा जा चुका है, बापूजीकी सेवाके लिअे मीराबह
बालकिशन नामक अेक हरिजन लड़केको तैयार किया था। बापूजीको कब क
देना, कब क्या करना आदि सब बातें अुसे समझा दी गयी थीं। मेरे लि
सहज ही मीराबहनकी गाय और बापूजीकी बकरीकी सेवाका काम आ
पाखाना-सफाअी, बापूजीके कमोड वगैराकी सफाअी भी मैं ही करता
क्योंकि बापूजीके आते ही मीराबहनका वरोड़ाकी झोंपड़ीमें चला जाना
हो चुका था। तदनुसार मैं वहां चली गयी और हमने बापूजीका
संभाल लिया। अभी तक मेरे सेवाग्राम रहनेका कोअी निश्चय नहीं
था। १८ जूनको बापू आगेके कामके बारेमें सोचने बैठे। मुझसे
मैं तुमसे खुश हूं। मीराबहनको तुमने काफी संतोष दिया है। अिसलि
मैं तुमको कहता हूं कि तुम्हारी यहां भी आनेकी अिच्छा हो तो
हो। मेरी आनेकी तैयारी तो थी ही, लेकिन अपनी जिम्मेदारी पर
आना नहीं चाहता था। अुसका अर्थ यह होता कि मैं खुद ही बापू
छोड़कर चला गया। अिसलिअे मैं चाहता था कि बापू अपनी तरफसे
कहें कि तुम फला जगह जाओ तो अच्छा हो। अिससे मुझे अेक प्रकार
अुत्साह रहता। मैं यह भी देख रहा था कि बापूजी मुझे दिलसे छोड़
नहीं चाहते थे। अिसलिअे मैंने कहा कि मैं अपने लिअे कुछ भी नि
नहीं करता हूं। सब आपके अूपर छोड़ता हूं। मेरे लिअे जो ठीक
आप ही करें।

बापूजी गंभीर हो गये और बोले — औसी बात है?

मैंने कहा — जी हां।

बापू — देखो खूब सोच लो।

मैंने कहा — खूब सोच लिया है।

बापू — अगर म तुमको काश्मीर या कन्याकुमारी भेजूं तो जाओगे?

मैंने कहा — जी हां।

बापू — और मैं यहां रहनेके लिये कहूं तो?

मैंने कहा — यहां रहूंगा।

बापूने कहा — तो मैंने फैसला कर दिया। तुमको यहीं रहना है।

मैंने कहा — ठीक है।

बापूने कहा — अब हमको आगेके कामके बारेमें सोच लेना चाहिये। अगर हम किसी अेक अेकड़ जमीनमें घिरे पड़े रहे तो हमारा यहां आना व्यर्थ होगा। हमको तो देहातकी सेवा करना है। वह हम कैसे कर सकते हैं यह सोचो। अुसके लिअे जो साधन-संपत्ति चाहिये वह मैं जुटा दूंगा। हम देहातके जीवनमें कैसे प्रवेश कर सकते हैं और अुनकी आमदनी बढ़ानेमें क्या मदद कर सकते हैं? सफाओी और आरोग्यके लिअे क्या करना होगा? ये सब बातें सोचनेकी हैं।

रोगियोंका अुपचार

बापूजीने अुस मकानके अेक कोनेमें अपना डेरा जमाया। पूर्व-दक्षिणके कोनेमें बापूजी रहते थे। अिस समय बा बापूजीके साथ नहीं थी। बापूजीने तय किया कि सुबह रोज अेक घंटा वे सेगांवके रोगियोंको दिया करेंगे। हमने गांवमें खबर कर दी। सवेरे रोगी आते और बापूजी अुन्हें देखते। बापूजीके दवाखानेमें तीन चीजें मुख्य थीं। सोडा-बाओी-कार्ब, केस्टर ऑअिल और अेनीमा। और समझानेके लिअे अुनकी वाणी। रोगी आते बापू अुनको देखते हाल पूछते और किसीको केस्टर ऑअिल किसीको नीबूके साथ सोडा और जिसका पेट बहुत खराब हो अुसे अेनीमा देते थे। किसीसे कहते भाजी खाओ किसीसे कहते छाछ पीओ किसीको मिट्टीका प्रयोग बताते।

आजका कस्तूरबा दवाखाना भी बापूजीके अुस छोटेसे पौधेका ही रूप है, जिसका आज वटवृक्ष बन रहा है। बापूजीने तो अपने प्राकृतिक साधनोंसे ही अपना प्राकृतिक चिकित्सालय आरम्भ किया था। और वे अैसे प्राकृतिक चिकित्सककी खोजमें थे जो सेवाग्राममें प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा ही यहांकी

गरीब जनताकी सेवा यहीके साधनोंसे कर सके। सेवाग्राममें डॉक्टर तो अनेक आये और गये। कोओ मालिशका कोओ रोज़की हुओका कोओ डिस्टिल्ड वाटर — भापके पानी — द्वारा ही सब रोगोंका त्रिलाज करनेवाला। डॉक्टर केसकरने भापके पानीके पीछे हृदयसे जितना श्रम किया अुतना किसीने नहीं किया। डॉक्टर दासकी यह मान्यता थी कि भोजनकी व्यवस्थित करने मानी अमुक खुराकके साथ किस पदार्थका मेल है और किसका नहीं जिस तरहसे भोजनकी व्यवस्था होनेसे कमसे कम रोग होंगे। डॉक्टर हीरालाल शर्माको बापूजीने बड़ी आशासे प्राकृतिक चिकित्साका अभ्यास करनेके लिये अमेरिका आदि देशोंमें भी भेजा था। वे चाहते थे कि शर्माजी सेवाग्राममें रहकर आसपासकी जनताको अपने ज्ञानका लाभ दें। लेकिन अुनकी यह आशा पूरी नहीं हो सकी। शर्माजीने खुरजाके पास देहातमें अेक प्राकृतिक चिकित्सालय खोला जिसके लिये बापूजीने गांधी-सेवा-संघसे काफी आर्थिक सहायता दिलाओ। लेकिन वह भी नहीं चल सका।

अगर कोओ सेवाभावी और अुनका पक्का प्राकृतिक चिकित्सक बापूजीको मिला होता तो आज अुरुलीकांचनमें बालकोबाजीकी देखरेखमें जो निसर्गोपचार आश्रम चल रहा है, वैसा या अुससे भी विशाल प्राकृतिक चिकित्सालय सेवाग्राममें खड़ा होनेका पूरा पूरा अवकाश था।

बापूजीके जीवनका मूलमंत्र यह रहा है कि जिस प्रकारके सेवक अुन्हें मिलें अुनके लिये अुसी प्रकारका सेवाक्षेत्र तैयार कर दें। यहांके कामके लिये अुनको सुशीलाबहन मिलीं जो मेडिकल कॉलेजकी अूंची परीक्षा पास करके आओ थीं। बस बापूजीने अुनको ही यह क्षेत्र सौंप दिया और अुनको जिन साधनोंकी ज़रूरत महसूस होती गओ वे सब साधन बापूजी जुटाते गये। पहले तो आश्रममें ही यह दवाखाना छोटे रूपमें आरम्भ हुआ। सुशीलाबहनने अपनी मददके लिये शंकरन् नायर और प्रभाकरजीको तैयार किया। ज्यों ज्यों रोगियोंकी संख्या बढ़ती गओ त्यों त्यों मकान और साधनोंकी ज़रूरत भी महसूस होती गओ। जिसलिये दवाखाना आज जहां है अुस मकानमें लाना पड़ा। यह मकान घनश्यामदासजी बिड़लाने अपने लिये और अपने मेहमानोंके लिये बनवाया था। पूज्य बाकी मृत्युके बाद जिस दवाखानेका नाम पूज्य बाके नामसे कस्तूरबा दवाखाना पड़ा। फिर तो वहां बहनोंको नर्सिंगका शिक्षण देनेकी व्यवस्था की गओ रोगियोंको रखनेका प्रबन्ध हुआ

और प्रसूतिका प्रबन्ध भी हुआ। कुष्ठरोग और आंखोंके अिलाजका प्रबंध भी हुआ। रोग प्रतिबन्धके लिअे अिस दवाखानेकी ओरसे देहातोंमें काफी प्रयत्न किया जा रहा है। दवाखानेके आसपासके देहातोंमें अुसी अपकेन्द्र भी हैं। काफी दूर दूरसे रोगी अिलाजके लिअे यहां आते हैं। २४–२५ रोगियोंको रखनेकी स्थायी व्यवस्था भी है। प्रसूतिके लिअे भी १०–१५ स्त्रियोंको रखनेकी व्यवस्था है। लेडी डॉक्टरोंमें प्रथम विजयाबहनने यहां खूब सेवा की। कार्सटीबहन और मथुबहनने भी अच्छा काम किया। डॉक्टर वार्डेकर जबसे दवाखानेके साथ जुड़े तबसे व्यवस्थामें काफी सुधार हुआ। अेक्सरे और ऑपरेशनकी व्यवस्था भी की गयी। देहातकी गर्भवती स्त्रियोंका पहलेसे ही निदान करके अुन्हें मदद दी जाती है। आजकल डॉक्टर रावजे निष्ठापूर्वक दवाखाना संभाल रहे हैं। जिनका स्वभाव सेवाग्रामके वातावरणके बिलकुल अनुकूल है। यह दवाखाना आज आश्रमकी प्रवृत्तियोंमें से विकसित अेक मुख्य प्रवृत्ति माना जायगा।

प्रार्थना

बापूने सोचा था कि मीराबहनके लिअे अेक गाय रखेंगे और अपने लिअे बकरी। हम लोग गांवमें से कुछ दूध लेते थे। अुस समय सारे सेगांवमें सिर्फ ३ सेर भरका दूध होता था। शामकी प्रार्थना हम सेगांवमें करते थे। लोग आते थे। बापूजीसे कुछ कहते थे। सुबहकी प्रार्थना आश्रममें होती थी। अेक प्रसंग अैसा भी याद है जब कि प्रार्थनामें मैं और बापूजी सिर्फ दो ही आदमी थे। श्लोक बापूजीने बोले थे और भजन 'प्रभु मोरे अवगुन चित न धरो' मने गाया था। गाते गाते मेरा गला बंद गया था मानो मैं बापूजीसे क्षमा मांग रहा था। बापूजी रोज सुबह घूमते समय ग्रामसेवा पर चर्चा करते थे और हमारे मनमें जो प्रश्न हों अुनका अुत्तर देते थे। रोज सुबह बापू मीराबहनकी झोंपड़ी तक जाते अुनकी खैर-खबर पूछते और अुन्हें दूध पहुंचाते थे।

प्रार्थना बापूजी ही कराते थे क्योंकि हममें बापूजीका ही स्वर अच्छा था। हम अुनका साथ देते थे। गीता भी बापूजी ही बोलते थे। बादमें मामी मुन्नालालजीने बड़ी मेहनतसे गीता बोलनेका अभ्यास कर लिया था। जहां अुनकी भूल होती बापूजी नोट कर लेते और बादमें बताते थे। बादमें हम सभीने भी गीताका अभ्यास कर लिया। जबकि अेक संस्कृतके पंडित

जिनको सिखानेके लिअे सुबह पैदल चलकर आते थे और जो सीखना चाहें अुसका पाठ शुरू कराते थे। मुझे तो समय ही नहीं मिलता था। लेकिन मुशालालभाअीने अुसका बहुत लाभ अुठाया और अुनका पाठ काफी शुरू हो गया था। बोलनेकी गति भी सवा घंटेमें सारे गीता-पारायणकी हो गयी थी। अुनकी आवाज मेरे कानोंको सहन नहीं होती थी। मैंने बापूजीको अपनी कठिनाअी बताअी। बापूजीने गीतापाठके समय मुझे प्रार्थनासे अुठकर चले जानेकी अिजाजत दे दी। अतः गीता प्रारम्भ होने पर मैं प्रार्थनासे अुठकर चला जाता था। मुशालालजीने गीताका जितना अभ्यास किया कि अुससे अुनके कण्ठमें भी काफी सुधार हो गया और मुझे भी वह अच्छा लगने लगा।

खुलेमें सोनेके लाभ

मैं बापूजीका पीर तो नहीं लेकिन बबरची-भिश्ती-खर जरूर था। भोजन बनाना पाखाना-सफाअी करना बकरीकी सेवा करना दूसरी सफाअी करना रातको सोते समय बापूजीके पैरोंकी मालिश भी करना। बापूजी तो खुले आकाशके नीचे सोते थे। जब रातको पानी आता तब अुनका बिस्तर भी मैं भीतर करता और बरामदेमें ट्ट्टे लगाता। कभी बार अंदर-बाहर जानेका कार्यक्रम रातमें तीन चार बार भी हो जाता। क्योंकि बापूजी कहते थे कि खुलेमें दो तीन घंटेकी नींद छतके नीचे की गयी रातभरकी नींदकी पूर्ति कर देती है। दूसरी बात यह कि खुलेमें थोड़ी जगहमें बहुत आदमी सोयें तो कुछ भी नुकसान नहीं होता। छतके नीचे अधिक आदमी सोयें तो वहांकी हवा खराब होती है। जब मैंने गोशालामें अपने लिअे कमरा बनानेकी बात की तो बापूजीने कहा बरसातसे बचनेके लिअे अूपर छत भले बनाओ, लेकिन आसपासकी दीवारोंकी क्या जरूरत है? खुली छतके नीचे जितने आदमी सो सकते हैं अुतनी जगहमें दीवारोंके अन्दर नहीं सो सकते। क्योंकि खुलेमें सोनेसे हमारे शरीरसे जो गंदी हवा निकलती है वह सुखे आकाशमें चली जाती है और हमको ताजी हवा मिलती रहती है। सबसे बड़ा लाभ तो खुलेमें हमको आकाश-दर्शनका मिलता है। वह मन और तन दोनोंके लिअे लाभकारी है। जिनको ब्रह्मचर्यका पालन करना है अुनको तो खुलेमें ही सोना चाहिये। बरसातसे बचनेके सिवा हमको छतकी जरूरत ही नहीं है।

बापूजीकी बात तो मुझे ठीक लगी लेकिन मैंने कमरेको बिलकुल खुला नहीं रखा। कमरेमें दोनों तरफ दरवाजे बनाये जिससे अिधरकी हवा अुधर निकल सके। अिससे भी मुझे तो बहुत लाभ हुआ। अब कहीं भी बन्द मकानमें सोनेका प्रसंग आता है तो मेरा दम घुटने लगता है और गंदी हवासे नाक फटने लगती है।

बापूकी कंजूसी और अुदारता

बापूजी खुलेमें प्रार्थना-भूमि पर सोते और अुनके आसपास दूसरे लोग सोते थे। जब लोगोंकी संख्या बढ़ी तो प्रार्थना-भूमि रेलका मुसाफिरखाना बन गअी। कोअी बापूजीके अिधर, कोअी अुधर, कोअी पैरोंके पास। अितने नजदीक सोते कि वह तो मुझे भी अखरता था। बापूजीकी कुटीमें भी यही हाल रहता था। जो आता अुसीको वे कहते तुम भी यहां पड़े रहो। दूसरे मकानमें दूसरेके पास जगह भी हो तो बापूजी अुसकी सुविधाका ध्यान रखते लेकिन अपनी कुटियामें असुविधा होने पर भी आनेवालोंको टिका लेते थे। लोगोंको भी अुनके पास रहने और सोनेमें बड़प्पनके बजाय आनन्द ही अधिक होता था।

आजकलके बड़े लोगोंकि क्या हाल है? जिनके पास कोअी डिग्री हो जो किसी बड़े पद पर हों जिनके पास अधिक पैसा हो कोअी बड़े महात्मा भी हों अुनके लिअे आरामका अलग कामका अलग दूसरोंसे मिलनेका अलग और खानेका अलग कमरा चाहिये! लेकिन बापूजीका बिस्तर जितनी जगहमें आता था वहीं पर अुनका सब काम बड़ी आसानीसे हो जाता था। नया मकान बनाने या पुराने मकानमें कुछ सुधार करनेकी अिजाजत वे कठिनाअीसे ही देते थे। आश्रमके मकान बापूजीकी कंजूसी और सादगीकी गवाही दे रहे हैं। अुनकी मरम्मत करने और दीमकसे मुकाबला करनेमें हमको किन किन मुसीबतोंका सामना करना पड़ा है यह तो हम ही जानते हैं। मैं बापूका नाम लेकर जोर-जबरदस्तीसे कुछ करा भी लेता था लेकिन अपने लिअे कुछ सुविधा मांगनेकी हिम्मत नहीं पड़ती थी। बापूजी कहते थे "हम गरीबोंके प्रतिनिधि हैं। हमको जो पैसा मिलता है वह हमारी सुविधाके लिअे नहीं गरीबोंकी भलाअीके लिअे मिलता है। अैसी हालतमें अधिक सुविधा पानेका विचार कैसे कर सकता है? मुझ पर विश्वास करके लोग पैसे देते हैं। अुनका हिसाब भी कोअी मुझसे नहीं मांगता। कोअी मांगे न मांगे लेकिन भगवान तो मांगेगा।

अगर हम पैसा अपनी सुख-सुविधामें अुड़ाने लगेंगे तो लोग भी हिसाब मांगेंगे। मांगनेका अुन्हें अधिकार भी है। अिसलिअे संयमसे खर्च करनेमें ही हमारी शोभा है।

बापूकी कुटी

बापूजीके अिस कथनकी साक्षी यों तो सारा आश्रम ही दे रहा है। लेकिन बापूजीकी कुटी तो अिसका ज्वलन्त अुदाहरण है। जहां पर आज बापूजीकी गादी है वहां मीराबहनने अपने लिअे छोटीसी कुटी बनाअी थी। अिसमें मीराबहनका ✿ खजूरके वृक्षोंका चित्र मिट्टीकी पुताअी खजूर और बांसकी कमचियोंसे बनी दीवार, बांसोंका ही खंभा बांसकी आलमारी चटाअीके किवाड़ खजूरकी बिछानेकी चटाअी — सबका सब सामान सम्पूर्ण ग्रामका ही है।

बापूजीका रोजके अुपयोगका सामान भी देखने लायक है। अेक छोटासा रेक या टेबल — जिसमें लोहेका अेक भी कीला नहीं है — बालका-नन्दजीने बनाया था। अुसके अूपरका खोखा तो बिलकुल साधारण है। जिसमें फल आये होंगे अुसीका अुपयोग कर लिया गया। बापूजीकी गादीके पासका छोटासा टेबल शायद राजकुमारीबहन लाअी थीं। बापूजीकी गादीके पैरोंकी तरफ अेक छोटासा टेबल है जिस पर बापूजी लालटेन रखते थे। अूंचा रखना हो तो अुसे ही खड़ा कर लेते थे। लालटेन न गिरे अिसके लिअे तारमें पट्टी लगी है। मुन्नालालभाअी कहते हैं कि यह मैंने ही बनाया था। पर मुझे याद नहीं पड़ता है। दो मिट्टीकी डिब्बियां जिनमें बापूजी छोटी छोटी चीजें रखते थे पानीकी बोतल चरखा तराजू घूमनेके समयकी लकड़ी कागज दबानेके मट्टीकी टेकरियोंके छोटे छोटे पत्थर — साराका सारा सामान गरीबोंको शोभा दे वैसा ही बापूजीकी कुटियामें नजर आयेगा। बापूजीके सामने वानर-त्रिमूर्ति हमेशा रहती थी। बुरा न सुनो बुरा न देखो बुरा न बोलो — जैसे संकेतके लिअे अुनके हाथ कान पर, आंखों पर और मुंह पर रखे हुअे हैं। अिस बातको बापूजी हमेशा ध्यानमें रखते थे और हम लोगोंको ध्यानमें रखनेके लिअे कहते रहते थे। सारांश बापूजीकी कुटीका वातावरण, अुसकी स्वच्छता व्यवस्था हमको क्या सिखाती है यह हमको सोचना चाहिये। अिस छोटीसी कुटीमें बापूजीने बड़े बड़े लोगोंसे सलाह-मशविरा किया था बड़े बड़े प्रश्नोंका हल ढूंढा था और अन्तमें अंग्रेजो भारत छोड़ो का बोल

बापूकुटीकी अेक झांकी पूर्वकी ओरसे।

बापूकुटीमें बापूके बैठनेका स्थान जहां बापूके दैनिक अुपयोगका सारा सामान सजाया हुआ है।

ही देते थे। जिससे लोगोंको बापूजीका निकट प्रेम और गरीबीसे र
रहनेका पाठ सीखनेको मिलता था।

स्वामी परमहंस रामकृष्णजीने कहा है साधु क्या कहता है जि
ध्यान न देकर साधु कैसे रहता है यह देखनेके लिओ असे सोते जागते
पीते जिनमें रातमें भरी टट्टी जाते समय भी देखो। अुस परसे अुसके बारे
कायम करो। सचमुच ही बापूजीका जीवन हमारे लिओ बिलकुल खुल
जब बापूजी कामकी भीड़में होते थे तब हम आश्रमवासियोंकी बहुतसी मु
तो पाखानेमें ही होती थी। लोगोंको यह विचित्र भी लगता था।
बापूजीके लिओ यह सहज काम था। पाखानेमें कुछ जरूरी पत्र भी
भी बापूजी पढ़ते थे। किसीकिसी पाखानेको बापूजी वाचनालयकी
देते थे और कहते थे कि हमारे पाखाने जितने स्वच्छ रहने चाहि
अुसमें हम बैठ सकें और आरामसे कुछ अध्ययन भी कर सकें। जिस
बापूजीने मुझे अेक पत्रमें लिखा था कि भोजनालय और शौचालय
जीवनकी चाबी है। ये दो काम करें तो जिनमें सब कुछ आ जात
बापूजीके जीवनकी यह अेक अनोखी कसौटी थी।

> अनपेक्ष शुचिर्दक्ष अुदासीनो गतव्यथ ।
> सर्वारम्भपरित्यागी यो मद्भक्तः स मे प्रियः ।।

गीताका यह वचन बापूजीके जीवनका मूलमंत्र था।

> संसारीका टुकड़ा भी गज भरके दांत
> भजन करे तो अुबरे नहिं तो काढ़े आंत।"

कबीरके जिस वचनका दृष्टान्त बापूजी अनेक बार देते थे। अगर
छोटीसी पेंसिल गुम हो जाय या अेक पैसा भी व्यर्थ खो जाय तो बापू
जवाब देना बिल्लीके गलेमें घंटी बांधनेसे भी कठिन पड़ता था। जिस
बापूजीके पास रहनेका जितना लोभ होता था अुतना जिस संकटी
से गुजरते समय कहीं पंख न आयें जिसका डर भी बना रहता था।
जिसे बापूजीको कभी किसीसे यह कहनेका प्रसंग भी नहीं आता था कि
यहां रहने लायक नहीं हो चले जाओ। लोग अपने-आप ही अपना
समझ लेते थे। जो संकरी गलीमें से गुजरनेके लिओ अपने शरीरको
करनेकी या अुसमें अुलझ गया तो मरनेकी भी तैयारी रख सकता
वही अुनके पास टिक जाता था।

कबिरा माटी प्रेमकी बहुतक बैठे आय
सिर सौंपे सो पीवसी और पै पियो न जाय।

नुकसान सहनेकी अद्भुत शक्ति

अेक दिनकी बात है। सेवाग्रामके नाले पर बड़े बड़े ह्यूमोंका पुल बनाया गया था। जिसमें वर्धाकी म्युनिसिपैलिटीके ओवरसियरकी सलाह थी। जब पानी आया तो ह्यूमोंके मुँहमें कचरा भर जानेके कारण पानी रुक गया। बस गांवमें पानी घुसने लगा और लोगोंके घर गिरनेका खतरा पैदा हो गया। शामके भोजनका समय था। मैं वहीं काममें था। मुन्नालालजी भोजन कर रहे थे। जब गांवके लोगोंने अिस खतरेकी सूचना आश्रममें दी तो बापूजीने कहा — मुन्नालाल जाकर देखो क्या हो सकता है। मुन्नालालजी गये और जाकर देखा तो अुनको लगा कि पुलको तोड़कर पानी निकाल देना ही अेकमात्र अुपाय है। अुन्होंने गांवके लोगोंकी मददसे पुल तोड़ दिया और पानी निकाल दिया। जब अिसकी सूचना बापूजीको दी तो अुनको खुशी हुअी। बापूजीने पुल तोड़ देनेके नुकसानकी तरफ ध्यान नहीं दिया। लेकिन गांवके लोगोंको तुरन्त मिलनेवाली संकट-मुक्तिसे अुन्हें आनन्द हुआ। बापूजीके स्वभावमें जहां हर दर्जेकी कंजूसी थी वहां अुदारता और नुकसान सहनेकी शक्ति भी अद्भुत थी।

साथियोंकी भूलोंके लिअे क्षमावृत्ति

अेक रोज बापूजीके पास ही भाअी मुन्नालाल प्रार्थना-भूमि पर सो रहे थे। १ बजे पेशाबके लिअे अुठे। नींदमें वहीं नजदीक पेशाबके लिअे बैठ गये। दैवयोगसे बापूजी देख रहे थे। जब वे वापिस आये तो बापूजीने पूछा — मुन्नालाल यहां क्या कर रहे थे? मुन्नालालजीके तो देवता कूच कर गये। अकबक बनकर चुप रहे। थोड़ी देरमें अुन्हें अपनी भूलका भान हुआ तो बोले — बापूजी भूल हो गयी। मैं आधी नींदमें था। आगेसे अैसी भूल नहीं होगी। बस बापूजीको अितना ही चाहिये था। मुन्नालालजीको हमेशाके लिअे पाठ मिल गया। अुनके ही हाथसे अेक रोज दूसरी अेक बड़ी भयानक भूल हो गयी। अेक रोज सुबह ४ बजेकी घंटीके बाद बापूजी अुठे। दूसरे लोग भी अुठे। जो बहन बापूजीकी सेवामें थी वह बापूजीका पेशाब-पॉट खाली करने गयी और मुन्नालालभाअीसे कह गयी कि बापूजीको मंजनकी पीनी दे देना। बापूजी सोते समय अपने पास दंतमंजन, चश्मा वगैरा

चाक या अेक थूकदानी पेशाबका बरतन मुंह साफ करनेका बरतन वित्यादि जरूरी चीजें रखकर सोते थे। मुन्नालालभाजीको अंधेरेमें पता न चला। जब बापूने मंजन मांगा तो अुनके हाथमें लाल दवाकी शीशी दे दी। बापूजीने अुसे खोलकर जब मंजन करनेके लिअे अुसे मुंहमें डाला तो अुनको अटपटा लगा। अुन्होंने पूछा — मुन्नालाल तुमने मुझे कौनसी शीशी दी है? मुन्नालालभाजीने विश्वासके साथ कहा "बापूजी मंजनकी शीशी दी है। थोड़ी देरमें बापूजीके मुंहने जवाब दिया और लाल दवा थूक दी। जिससे बापूजीकी जीभ और होठ भी जल गये। जिससे पोंछा वह कपड़ा भी खराब हो गया। जब मुन्नालालजीने यह दृश्य देखा तो अुनमें काटो तो खून नहीं रहा। अुनके होश अुड़ गये। अगर यह दवा बापूजीके पेटमें चली जाती तो? परिणामका विचार करके शर्मसे अुनका सिर जमीनमें गड़ गया। ीश्वर-कृपासे दवा बापूजीके पेटमें नहीं गयी थी क्योंकि मंजन खानेकी चीज तो थी नहीं। तो भी दवा पेटमें जा सकती थी। अगर अुतनी चली जाती जितनी बापूजीने मुंहमें डाली थी तो बापूजीकी मृत्यु तक हो सकती थी। लेकिन 'जाको राखे साअियां मारि सकै नहिं कोय' के न्यायसे बापूजीको कुछ भी नहीं हुआ। हां जले मुंहके निशान तीन चार रोज तक बने रहे।

बापूजीसे जिसका कारण पूछा गया तो सहज भावसे अुन्होंने कारण बताया। लेकिन मुन्नालालजीके खिलाफ नाराजीका अेक भी शब्द अुनके मुंहसे नहीं निकला। जिन दोनों घटनाओंका मुझे तो आज तक पता ही नहीं था। जब मैंने मुन्नालालभाजीसे पुस्तकके लिअे कुछ जानकारी मांगी तो अुन्होंने ये घटनायें लिख भेजीं। यों तो मेरा और अुनका अेकसाथ ही सेवाग्राममें प्रवेश हुआ। अुनके अनुभवोंकी भी अेक स्वतंत्र पुस्तक बन सकती है। क्योंकि अुनका भी बापूजीके साथ वैसा ही निकट संबंध रहा है जैसा मेरा। वे बापूजीकी रिजर्व फौजके सिपाही थे। जहां कोअी जानेवाला न मिले वहां बापूजी अुन्हें भेजते थे। जब बापूजी प्रवासमें जाते तो स्टेशन तक अुनका सामान पहुंचाना और वापिस आने पर लाना यह काम तो अुनके लिअे ही रिजर्व था। कभी कभी मैं भी थोड़ी मदद कर देता था।

मच्छरदानीका किस्सा

अेक समय मलेरिया हो जानेके कारण डॉक्टरोंने बापूजीको मच्छरदानी लगानेकी सलाह दी। अुस समय तखत भी नहीं था। बापूजी बरामदेमें सोनेको

तैयार न थे वर्ना बरामदेके खम्भोंसे मच्छरदानीकी डोरी बांधी जा सकती थी। मुझे बुलाकर बोले देखो प्रार्थनाकी जगह मच्छरदानी लगानेकी तज बीज कर दो। मुझे मच्छरोंसे तो बचना है, लेकिन मच्छरदानीके सिवा असके लिये कुछ खर्च नहीं करना है। गरीब कौम क्या कर सकते हैं? वही हमको करना चाहिये न?" मैंने कहा "ठीक है, कर दूंगा। मैं विचारमें पड़ गया। यदि प्रार्थनाकी जगह पर चार खम्भे गाड़ू तो अेक तो प्रार्थनाके स्थान पर बीचमें खड़े खम्भे विचित्र लगेंगे। अुनको रोज गाड़ना और रोज अुखाड़ना भी अच्छा न होगा। कभी बापूजी खम्भोंकी कीमत और गाड़ने अुखाड़नेकी मजदूरीका हिसाब पूछ बैठें तो मैं क्या अुत्तर दूंगा। अिससे बचनका कोअी दूसरा रास्ता खोजना ही होगा। तुरन्त मेरे ध्यानमें जंगली लोगोंके तम्बू आ गये। दो बांसके टुकड़े लिये। अुनको मच्छरदानीके दो सिरों पर बांधकर अुनमें रस्सी बांधी और दोनों तरफ तान कर दो बड़े कीले जमीनमें गाड़ दिये। मच्छरदानी तम्बूनुमा भी सो ठीकसे तन गअी। यह क्रिया मैंने शामकी प्रार्थनाके बाद बापूजीके सोनेके पहले कर दी। मनमें अुसका ढांचा पहले ही बना लिया था। अेक बार तानकर भी देख लिया था। बापूजीने देखा तो बोले "बस यही मैं चाहता था। अब जो चाहेगा वही मच्छरदानी चाहे वहां लगाकर सो सकता है।

अनोखा सत्याग्रह!

गोविन्द बापूजीका खाना तैयार करता था। अेक रोज अुसने कहा — मुझे वर्धा जाना है।

बापूने पूछा — क्यों?

गोविन्द — हजामत बनवानेके लिये।

बापू — तो क्या गांवमें नाअी नहीं है?

गोविन्द — हरिजन नाअी नहीं है और सवर्ण नाअी हमारी हजामत बनाते नहीं हैं।

बापू — तुम्हारी हजामत नहीं बनाते तो मैं कैसे बनवा सकता हूं?

अुस रोजसे सेगांवके नाअीसे बापूजीने हजामत बनवाना बन्द कर दिया और खुद अपनी हजामत बनाने लगे। जब सिरके बाल बढ़ जाते थे तब मैं या बुलाकालजी काट देते थे।

तुकडोजी महाराज

अेक रोज नागपुरसे श्री बापूराव हरकरे आये और बापूजीसे कहने लगे कि तुकडोजी महाराज बड़े ही साधु पुरुष हैं। अुनके विचार राष्ट्रीय हैं और अुनके भजनोंका प्रभाव ग्रामीण जनता पर बड़ा अच्छा पड़ता है। मैं चाहता हूं कि वे थोड़े दिन आपके पास रह जायं तो अुनके विचार और भी परिपक्व हो जायेंगे और देहातमें वे अेक बड़ा कामकारी काम कर सकेंगे। बापूजीने अिस विचारको पसन्द किया और अुनको रखनेकी मंजूरी दे दी। अेक मास तक रहनेकी बात तय हुआी थी। ता० १४-७-३६ को श्री तुकडोजी महाराज आश्रममें आ गये।

बापूजीने अुनके रहनेकी व्यवस्था आदि-निवासमें अपने पास ही कर ली। हमारे पास दूसरा और मकान भी कहां था? अिसलिअे जो भी मेहमान आते अुनको अुसी मकानमें स्थान देना पड़ता था। तुकडोजी महाराजके साथ नारायण नामका अेक सेवक भी था। अुसको भी अुसी मकानमें स्थान मिला। महाराजको सूत कातना तो आता था लेकिन रूआी धुनना और पूनी बनाना नहीं आता था। अुन्होंने ये क्रियायें भी सीखनेकी अिच्छा प्रकट की तो बापूजीने मुझे बुलाकर कहा "देखो महाराजको रूआी धुनना व पूनी बनाना सीखना है। अिसलिअे अुनके साथ बात करके समय तय कर लो। अगर वे धुनना सीख जायेंगे तो अेक बड़ा काम हो जायेगा। अुनका शिष्य-मंडल विशाल है। वे दूसरोंको भी अिसका महत्त्व समझा सकेंगे और सिखा भी सकेंगे।" अगस्तका महीना था। पानीकी झड़ी लगी थी। अैसे मौसममें पूनकी बनाना कठिन था। लेकिन बापूजीके फरमानको टाला नहीं जा सकता था। वे किसी कामके लिअे ना तो सुनना ही नहीं चाहते थे। अिसलिअे मैंने राजीसे या बेमनसे कहा "जी हां सिखा दूंगा।" मुझे यह लोभ भी हुआ कि अगर अितना बड़ा सन्त चेला बननेको मिले तो कौन अैसा होगा कि अवसर चूके? अगस्तकी भीगी हवामें रूआी तांतसे चिपकनेकी कोशिश करती लेकिन मैं बहुत सावधानीसे अुसकी बनाता। अिसने मेरी मुसीबत कुछ बढ़ गयी। करीब दस बारह दिनमें महाराजको भी अच्छा धुनना और पूनी बनाना आ गया। मेरी शिक्षा अैसी फली कि अपने आश्रममें पहुंच कर महाराजने अपने भक्त-कार्यकर्ताओंका अेक शिविर बनाया जिसमें पचास विद्यार्थियोंने अेक मास तक भजन-कीर्तनके साथ

भी अुनका पूनी बनाना और सूत कातना सीखा। अिस शिविरके लिये महाराजने मुझे ही वहां बुलाया था। लेकिन मैं बीचमें ही बीमार हो गया और विवश होकर वापस लौट आया। तो भी शिविरका काम निश्चित समय पर पूरा हुआ।

श्री तुकडोजी महाराजके कीर्तनमें भक्तिभावसे भगवानका हृदयस्पर्शी गुणगान होता था जिससे श्रोतागण मन्त्रमुग्ध हो जाते थे। सेवाग्रामके सैकड़ों आदमी प्रतिदिन प्रार्थनामें अुनका कीर्तन सुननेके लिये आया करते थे। प्रार्थनाके बाद वे खड़े होकर अपने गुरुदेवकी रोज नियमपूर्वक आरती अुतारते थे। बापूजीका जितनी देर तक अेक आसनसे खड़े रहना हम लोगोंको अखरता था। लेकिन बापूजी तो स्वयं बड़े नियम-पालक थे अिसलिये सीधे ध्यानमग्न खड़े रहते थे। बीचमें दो-तीन दिनके लिये महाराज किसी गांवको चले गये तो सब सूना-सूना लगने लगा था। कुल मिलाकर अुनका यह क्रम अेक मास तक चला और ता० ११–८–३६ को वे बापूजीसे आशीर्वाद और विदा लेकर अपने आश्रम मोझरी चले गये। बापूजीको अुनका नीचे लिखा भजन बहुत प्रिय था। वे कहते थे कि यह भजन तो मेरी ही जीवन-कथाका द्योतक है।

किस्मतसे राज मिला जिसको, अुसने यह तीन बना डाली।
पहले तो धन जन हार गया अब खाक धुनीका धूं पड़ा।
सब मंजिल हाथी घोड़ोंमें नहीं काम रहा आपन जोगी।
दूजेसे जब अपमान हुआ अब आदर तो सब जाय भगा।
नहीं कीमत पाव दिदारदर्में खाली न रहा कुछ ममभाली।
तीजेसे आकर तन जोगी दिन रात रहा जैसे रोगी।
नैनोंसे कुछ नहीं देखा सब अुमरी कुनमें था जोगी।
ये तीनहुवे कंगाल हुआ पर पार अुसीरी करता था।
बिन नाम प्रभुके झूठ सभी यह भाव हमेशा मैन रही।
ये तीन जगह जिनको न मिली अुनको न कभी दीदार हुआ।
कहे जन्म करा मरते मरते तुकड्याको गुरुवर यह भाबी।

अेक दिन बापूजी महाराजसे कुछ बातें कर रहे थे। बीचमें बापूजीने अेक दृष्टान्त सुनाया। अेक गरीब और धनिकका घर पास पास था। अेक दिन गरीबके घरमें चोर आ घुसे। जब गरीब जागा तो अुसने देखा कि

चोर अुसके घरमें कुछ ढूंढ़ रहे हैं। अुसने सोचा कि ये बेचारे व्यर्थ ही परेशान होंगे क्योंकि अिनको यहां कुछ मिलनेवाला नहीं है। वह अुठा और बड़ी शांति व धीरजसे अुसने चोरोंसे कहा कि आप अधिक परेशान न हों। जो कुछ मेरे पास है वह मैं आपको दिये देता हूं। यह कह कर अुसने तिजोरीमें से निकाल कर दस-पांच रुपयोंकी अेक पोटली अुनके हवाले कर दी। चोरोंको बड़ा विस्मय हुआ। लेकिन लोभसे अुनकी आंखें बन्द थीं जिसलिअे अुन्होंने अधिक धन पानेके लालचसे पड़ोसी धनिकके घर पर हमला बोल दिया। वह धनिक जाग रहा था और अुसने सारी चर्चा सुनी थी। वह सोचकर बड़े आश्चर्य कर रहा था कि चोर अुस गरीबके घरसे खाली हाथ ही जानेवाले थे लेकिन अुसने अपने ही हाथसे अपनी संचित रकम चोरोंके हवाले कर दी। तो मैं भी अपनी पूंजी चोरोंके सुपुर्द क्यों न कर दूं? जितनेमें ही चोरोंने अुसके घरका दरवाजा खटखटाया। धनिकने तुरन्त दरवाजा खोल दिया और चोरोंसे कहा आअिये आपको जो चाहिये सो मैं दूंगा। चोर घरमें घुस गये लेकिन अुनके हृदयमें मंथन चलने लगा कि यह क्या हो रहा है। अुस धनिकने अपना सारा धन चोरोंके सामने लाकर रख दिया। बस चोरोंके मनमें राम जगा और अुन्होंने अुस धनिक और गरीबका सारा धन वहीं छोड़ दिया और भविष्यमें चोरी न करनेकी प्रतिज्ञा करके वे साधु हो गये। मैं हिंसाके मुखमें अहिंसाको मिसी तरह झोंक देना चाहता हूं। आखिर कभी तो हिंसाकी भूख शांत होगी ही। अगर दुनियाको शान्तिसे जीना है तो मेरे ख्यालमें जिसका दूसरा कोअी रास्ता नहीं है। आप अपनी सीधी-सादी भाषामें अपने मधुर वचनों द्वारा देहातकी जनता तक अहिंसाके अिस सन्देशको पहुंचा सकें तो मेरा बहुत बड़ा काम हो।

महाराजने कहा "आपकी बात तो ठीक है। मेरी श्रद्धा भी अहिंसा पर दिनोंदिन बढ़ती जा रही है। आपके आशीर्वादसे वह दृढ़ बनेगी और मैं अपनी सारी शक्ति लगाकर आपका सदेश लोगों तक पहुंचानेका प्रयत्न करूंगा।

जब मैं १८ सालके बाद सौराष्ट्र गया तो मैंने देखा कि श्री बाबू राजजीका मुकदमें महाराजको बापूजीके पास लानेका प्रयत्न सफल हुआ। महाराजने बापूजीकी कल्पनाको मूर्तरूप देनेका पूरा पूरा प्रयत्न किया है। जिसका दर्शन अुनके पुरुषोंके मंडलके संगठन और अुसके सेवाकार्यमें होता

है। आज मोझरीमें सुन्दर खेती और गोशाला चलती है। विद्यार्थियोंका छात्रावास चलता है। प्रसूति-गृह अस्पताल नयी तालीमका विद्यालय हाओी स्कूल कताओी बुनाओी तेलघानी पुस्तकालय प्रार्थना-भवन आदि सारी प्रवृत्तियां देखकर मुझे बड़ा आनन्द हुआ। आज तो महाराजका स्थान अखिल भारतीय हो गया है। साधु-समाजके अध्यक्षका सम्माननीय पद अुन्हें प्राप्त हुआ है। अुनके विचारोंमें क्रान्तिकारी प्रगति तथा गंभीरता देखकर मेरे सामने अुस दिनका चित्र स्पष्ट हो आया जिस दिन बापूजीने अुनसे कहा था कि आप मेरी बात समझ लें और अपनी सीधी-सादी भाषामें अपने मधुर भजनों द्वारा जनता तक अहिंसाके दिव्य सन्देशको पहुंचा सकें तो मेरा बहुत बड़ा काम हो।

अुन दिनों लीलावतीबहन रसोअीका काम संभालती थीं। मेरा अुनसे मतभेद हो जानेके कारण मैंने अपनी रसोअी अलग बनानेके लिये बापूजीकी अिजाजत चाही। बापूजीने मंजूरी दी और मैं अलग भोजन बनाने लगा। लेकिन आश्रममें जो फल वगैरा आते थे अुनमें से मेरे हिस्सेके बापूजी किसीके साथ मेरे पास भेज दिया करते थे।

मैं तुकडोजी महाराजको बुनना और पूनी बनाना सिखाता था। अुन्होंने अेक दिन कहा — भाओी तुम क्या खाते हो हमको भी खिलाओ। मैंने अुनको खिलाया। अिसका पता बापूजीको चला तो दूसरे दिन मेरी पेशी हुअी। बोले — मैंने तो सिर्फ तुम्हारी तन्दुरुस्तीकी दृष्टिसे तुमको अलग खाना बनानेकी अिजाजत दी है, तुम्हारे पास दूसरोंको खिलानेके लिये समय कहां है? तुम्हारा सारा समय गोमाताके लिये है। अुसमें से अेक मिनट भी दूसरेको देना गोमाताकी चोरी है। अिस प्रकार बापूजी काफी बोले। मैंने अपनी भूल कबूल की और आगेसे अैसा न करनेका वचन दिया।

विनोबाजी कहते हैं कि मेरे मन पर सबसे अधिक असर बापूजीके प्रेमसे भोजन करानेका पड़ा है। कअियोंको बापूजी भोजनका निमन्त्रण दे दिया करते थे। लेकिन मैंने जब तुकडोजी महाराजको दो मोटी रोटियां खिला दीं तो लम्बा भाषण सुनना पड़ा। अगर किसी अन्य प्रसंग पर मैं भी अुनको न खिलाता तो शायद अिससे भी ज्यादा लम्बा भाषण सुनना पड़ता। यही तो बापूजीकी खूबी थी। मुझे तो केवल अनिवार्य कारणवश सिर्फ मेरे लिये अलग भोजन बनानेकी अिजाजत मिली थी। यदि मैं किसी

प्रकार लोगोंको खिलानेका क्रम तो अुसमें समय तो जाता ही, मर्यादाका भी भंग होता। जिसमें तुकडोजी महाराजके लिये भी चेतावनी थी। बापूजीके विविध पहलुओंको समझना बड़ा कठिन काम है। यह तो वही जान सकते हैं जिन पर बीती हो। बांझ क्या जाने प्रसूतिकी पीर?

व्यवस्थापकके रूपमें

बापूजीका यह आग्रह कि मैं सेवाग्राममें अकेला ही रहूंगा पहले ही मेरे व मुन्नालालजीके प्रवेशसे ढीला हो गया था। थोड़े दिनों तक अैसा लगता रहा कि हम तात्कालिक कामके लिये हैं लेकिन आखिर हम स्थायी बन गये। शुरू शुरूमें तो बाहरके किसी आदमीके लिये वहां रातको ठहरनेकी व्यवस्था नहीं थी। पहले दिन किसको रोटी मिली जिसका मुझे स्पष्ट खयाल है। धुलियासे श्री पारनेरकरजी बापूजीसे बात करने आये थे। बात करके जब वे वर्धा लौटने लगे तो बापूजीने कहा कि यहां किसीको खाना नहीं मिलता है लेकिन तुम्हें मिल जायगा। पूछो बलवन्तसिंहको अगर अुसके पास कुछ आटा हो तो।

अुन्होंने मुझसे पूछा — भाअी मुझे खाना खिलाओगे? मैंने कहा — जरूर। अुस समय हमारे पास आटा भी सेर सवा सेरसे ज्यादा नहीं रहता था। मैंने अुनको खाना खिलाया।

हमें जानवरोंके लिये जो चारा वगैरा चाहिये था वह जमनालालजीकी खेतीमें से मांग लाते थे। जैसे जैसे बापूका परिवार बढ़ता गया वैसे वैसे गायका परिवार भी बढ़ाना पड़ा और अुसके लिये मकान और अधिक खेतीकी जरूरत पड़ती गयी। शुरूमें तो हमने अुसी अेक अेकड़ जमीनमें जहां खाली जगह थी सागभाजी बोना आरंभ कर दिया था। बापूजीने यह भी निश्चय किया था कि जहां तक सागभाजी जो गांवमें पैदा होनेवाली चीज है न मंगायी जाय। मगर बरसातके शुरूमें तो अैसा मौका आता था जब गांवमें भी कोअी सागभाजी नहीं होती थी। बापूजी कहते "जंगलमें भी बहुतसी पत्तियां होती हैं, जिनका साग बन सकता है। अुनकी जानकारी करो, तोड़ कर लाओ और साग बनाओ।" देहातके लोग बारिशके आरंभमें जो पत्तियां अुगती थी अुनकी भाजी बनाते ही थे। हम भी टोकरी लेकर निकलते और पत्तियां चुन लाते। अुससे हमारी भाजी बनती।

आश्रमके नामकरणके बारेमें प्रश्न खड़ा हुआ। किसीने गांधी-आश्रम सुझाया किसीने मीरा-आश्रम किसीने सेवाश्रम। अैसे कअी नाम सुझाये गये। आखिर बापूजीने गांवकी सेवाके लिअे आश्रम बना है, अिसके आधार पर सेवाग्राम आश्रम नाम रखा। वास्तवमें सिर्फ बापूजी ही यहां रहते थे और अुनके साथ हम कुछ लोग थे। जब बापूजीसे कोअी यहां आनेके लिअे पूछता तो वे कहते यह आश्रम थोड़ा ही है, यह तो मेरा परिवार है। जो लोग मुझसे अलग रह ही नहीं सकते या जिनको मैं छोड़ नहीं सकता वही लोग मेरे पास रहते हैं। अिसलिअे अिसको संस्था समझना ही नहीं चाहिये। वैसे साबरमती आश्रमके सब नियम यहां लागू हैं। और वही यहां रह सकता है जो आश्रमके सब नियमोंका पालन कर सकता है।

सचमुच सेवाग्राम आश्रम बापूके आज तकके अनुभवोंका निचोड़ था। यहां कोअी नियम नहीं था और सब नियम थे। आश्रमके व्यवस्थापक संचालक जो भी कहिये बापूजी ही थे। दूसरे लोग तो सिर्फ हिसाब-किताब रखना बाजारसे सामान खरीदकर लाना रसोअी बनाना वगैरा काम किया करते थे। यह काम कुछ रोज लीलावतीबहनने किया कुछ दिन मामा-बटीजीने किया। लेकिन दूसरी सब जिम्मेदारी बापूजी पर ही थी। बापूजी आश्रमके छोटेसे छोटे काम पर भी खूब ध्यान देते थे। भोजन परोसनेका काम तो बापूजीका ही था। हम भोजन बनाकर बापूजीके सामने रख देते थे और अपनी अपनी थाली अुनके पास ले जाते थे। बापू अुसमें परोस देते थे। ज्यादा खाने ले जानेकी झंझटसे बचनेके लिअे मैं बापूजीके बिलकुल सामने ही बैठता था। अुस समय बापू परोसते जाते और कुछ मनोरंजन भी करते जाते साथ साथ भोजनकी मात्रा और अुसके गुण आदिके बारेमें भी सूचनायें करते जाते। यह क्रम बहुत दिनों तक चला।

प्रार्थनामें रामायण

मैंने मगनवाड़ीमें बापूजीसे पूछा था कि मैं आपको रामायण सुनाया करूं तो कैसा रहे? बापूजीने कहा — हां पर मुझे वह स्वर प्रिय लगता है जिसमें मेरे पिताजीको अेक पंडितजी सुनाया करते थे। अुसको देवदासने ग्रहण कर लिया था और अुसके पाससे बालकोबा[1]ने। अगर तुम अुसको

१ आचार्य विनोबा भावेके छोटे भाअी। जिनका ज्यादा परिचय आगे सेवाग्रामसे सम्बद्ध कुछ विशिष्ट व्यक्ति नामक प्रकरणमें दिया गया है।

सीख सको तो मुझे रामायण सुनना प्रिय है। जिसलिअे मैं बालकोबाजीके पास गया लेकिन मुझे संगीतका ज्ञान नहीं था। मुझे अुनका राग अच्छा तो लगा लेकिन अुस रागको मैं खूब नहीं सीख सका। जब नाणावटीजी मगनवाड़ीमें बापूजीके पास रहने आये तबसे सुबह भी बजे बापूजीको रामायण सुनाना शुरू हुआ था। कभी कनु गांधी और कभी नाणावटीजी सुनाते थे। लेकिन अभी तक रामायण प्रार्थनामें शुरू नहीं हुआी थी। जब नाणावटीजी सेवाग्राममें आकर रहने लगे तब मैंने बापूजीको सुझाया कि जैसे सुबहकी प्रार्थनामें गीता पढ़ी जाती है, वैसे सायंप्रार्थनामें रामायणका भी पाठ हो तो कैसा रहे? बापूजीने जिसे पसंद किया और नाणावटीजी द्वारा शामकी प्रार्थनामें रामायण प्रारंभ हुआी।

कामका विस्तार

अब कामकी योजना बनाओी गी। मुन्नालालजीको गांवके बच्चोंको पढ़ानेका काम सौंपा गया और नाणावटीजीको ग्राम-सफाओीका। नाणावटीजीने गांवमें चलते-फिरते पाखाने और स्त्रियोंके लिअे आड़ करके और नालियां खोद कर कुछ पाखाने बनाये। शुरूसे ही गांवकी ग्राम सफाओीके लिअे अेक मंत्री भी रखा गया था लेकिन बहुत कोशिश करने पर भी मंत्रीका काम संतोषजनक न रहा और अुसको बंद करना पड़ा। अिसी बीचमें चर्मैया नामका लड़का आ गया। अुसको बुनाओी सिखाओी थी और आश्रममें बुनाओी जारी भी करनी थी। अिसलिअे नाणावटीजीने बुनाओीका काम भी शुरू किया।

अिस चर्मैयाके आनेके दिन भी बड़ी बोधप्रद घटना हुआी। अेक दिन बापूजीने महादेवभाओीको बुलाकर कहा देखो सीताराम शास्त्रीका पत्र आया है। अुनके आश्रमका अेक हरिजन लड़का कल सुबहकी गाड़ीसे आनेवाला है। तुम स्टेशन जाकर अुसे ले आना। महादेवभाओी हां कहकर चले गये। दूसरे दिन सुबहकी मद्रास अेक्सप्रेससे चर्मैया सेवाग्राम पहुंचा और बापूजीको प्रणाम करके बोला मैं आ गया। बापूजी तुम्हारा नाम चर्मैया है? जी हां। तो महादेव स्टेशन पर पहुंच गया था न? जी नहीं। बापूजी तो तुम यहां कैसे पहुंचे? पूछते-पूछते। बापूजी गंभीर हो गये और बोले महादेवको बुलाओ। महादेवभाओी आये। बापूजी गंभीरतासे बोले क्यों महादेव तुम स्टेशन नहीं पहुंच सके? महादेवभाओी चौंक अुठे और बड़ी नम्रतासे बोले बापूजी भूल गया था। बापूजीने कहा अैसी भूल

तुमसे औसे हो गयी? देखो यह तो बच्चा है। यह प्रयोग अिसके लिअे नया है। हमारी भूलके कारण यह कितनी मुसीबतमें पड़ सकता था? महादेव भाओी घबरा गये और बोले अिसको कष्ट तो हुआ ही होगा।

जैसे जैसे हमारी गायोंकी संख्या बढ़ती गयी वैसे वैसे हमने पैर फैलाना शुरू किया। पहले तो जमनालालजीसे घास-चारेके लिअे थोड़ीसी जमीन और नये कुअेंकी मांग की थी। परंतु अब सबकी सब जमीन मांगनी पड़ी। वे तो अिसके लिअे तैयार ही थे। लेकिन अुनके काम करनेवालोंका थोड़ा ममत्व था जो स्वाभाविक था। लेकिन क्या करते? जमनालालजीने तो जिस रोज बापूजी सेवाग्राम आये अुस रोजसे ही सेवाग्राम बापूजीको मनसे समर्पण कर दिया था। अिसलिअे अुन्होंने अपना सारा काम समेट लिया और अुनकी सारी जमीनका कब्जा आश्रमने ले लिया।

अब तक वहांके मकान वगैरा पर जो कुछ खर्च होता था वह सब जमनालालजी ही करते थे। क्योंकि अुनका खयाल था कि कल बापू यहांसे अुठकर चले गये तो सार्वजनिक पैसेका क्या होगा? अिसलिअे मेरी जमीन पर मेरा ही पैसा खर्च हो तो अुसका कुछ किया जा सकता है। अुसको मैं सह लूंगा। लेकिन अब तो स्थायी रूपसे आश्रम बन गया था अिसलिअे अुनका खर्च बन्द कर दिया गया और बापूजीने सारा खर्च आश्रमसे देना शुरू किया।

पारनेरकरजी भी धुलिया छोड़कर स्थायी रूपसे सेवाग्राम आ गये थे। खादीका कार्य शुरू किया गया और गोशालाका मेरे पास रहा। स्कूलके लिअे नये मकानकी जरूरत पड़ी। तालीमी संघके कुअेंके पास अुत्तर-पश्चिमके जिस मकानमें आज स्कूल है वह मकान आश्रमने स्कूलके लिअे बनाया और तालीमी संघके मकानके पूर्वमें बड़ा हॉल जिसमें भोजन होता है और सभा वगैरा होती है अुनाओी-घरके लिअे बनवाया गया। अुस वक्त तालीमी संघकी स्थापना हो चुकी थी और आर्यनायकम्‌जीको अुसका कार्य देना था जो १९३७ के नवम्बरमें सेवाग्राम आ गये थे। बापूजी चाहते थे कि नयी तालीमका प्रयोग अुनके नजदीक हो तो अच्छा। अिसलिअे आर्यनायकम्‌जीको यहां बुलाया गया। तालीमी संघके मकान वगैराके लिअे पिचरामवाली वाड़ी जिसमें आज संतरे और मोसंबीका बगीचा है, खरीदी गयी। लेकिन आशादेवी और आर्यनायकम्‌जी बापूजीसे कितनी दूर रहना नहीं चाहते थे अिसलिअे आश्रमसे कुछ ही दूरी पर अुनके मकान बनानेकी व्यवस्था हुअी।

वात्सल्यमूर्ति बापू

सचमुच आज जब अुन दिनोंकी याद आती है तो मनमें अनेक प्रकारके विचारोंकी लहरें अुठती हैं। अुस समय करीब-करीब हम यह भूल-से गये थे कि बापूजी अेक बड़े महापुरुष हैं और अुन पर देशकी बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, अिसलिअे हम अुनके साथ अमुक मर्यादावाले बरताव करें। अैसा लगता था कि बापू हमारे पिता हैं और हम अुनके बच्चे हैं। अुनके साथ हम खेलते थे खाते थे लड़ते थे और आनन्द करते थे। गीताके

यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि ।
विहार-शय्यासन-भोजनेषु ।।
अेकोऽथवाप्यच्युत तत् समक्षं ।
तत् क्षामये त्वामहमप्रमेयम् ।।*

श्लोकका प्रत्यक्ष दृश्य यहां दीखता था। हमारे आपसमें झगड़े होते तो बापूजीकी अदालतमें हमारी वैसी ही पेशी होती थी जैसे मां या पिताकी अदालतमें बच्चोंकी होती है और हम भी बच्चोंकी तरह ही अपनी बात पेश करते थे। बापूजी पिताकी तरह ही किसीको डांटते किसीको पुचकारते किसीको कुछ कहते और किसीको कुछ। अिस तरह हमारा फैसला करते। यह सब करनेके पीछे बापूका अुद्देश्य यही रहता था कि हम सब सत्यका पालन करें, हममें अहिंसा पैदा हो हम शुद्ध बनें और हमारा विकास हो। बाहरके लोग हम पर नाराज होते कि ये लोग बापूजीको तंग करते हैं और अुनका समय बरबाद करते हैं। मगर अुनको क्या पता था कि हमारी और बापूकी भूमिका क्या है। अगर हममें से किसीके कानमें दर्द हुआ हमने बापूजीको नहीं कहा और बादमें बापूजीको पता चल गया तो वे बहुत नाराज होते और डांटते कि तुमने मुझको क्यों नहीं बताया? और किसी पर अेक लंबा भाषण सुना देते। अिसलिअे बापूके सामने हमारी कोअी बात न छोटी थी न बड़ी।

चोरी कैसे बन्द हो?

तारीख २१—७—३५ की बात है। बापूजीने कुछ विद्यार्थियोंको समय दिया था। अुन्होंने अनेक प्रश्न पूछे और बापूजीने अुनके अुत्तर दिये। मेरी डायरीमें अुनके अेक प्रश्न और अुसके अुत्तरका नोट अिस प्रकार है

* हे कृष्ण विनोदार्थ खेलते सोते बैठते या खाते आपका जो कुछ भी अपमान हुआ हो अुसे क्षमा करनेके लिअे मैं आपसे प्रार्थना करता हूं।

प्रश्न — गोकुशी कैसे बन्द हो?

अुत्तर — गोकुशी होती क्यों है? गायको कसाअीके हाथ बेचता कौन है?

प्रश्न — अुनका मूल्य कम होनेसे हिन्दू ही गायें कसाअियोंको देते हैं और गायें अधिकतर फौजके लिअे काटी जाती हैं।

अुत्तर — अिस सस्ती गायको हम महंगी बना सकें तो गाय बच सकेगी। और अुसको महंगी बनानेका यही अेक तरीका है कि मरी हुअी गायके सब अंगोंका अच्छेसे अच्छा अुपयोग होने लगे। जब तक वह जिन्दा रहे अुसीके दूध व घीका हम अुपयोग करें अुसकी नसलमें सुधार करके अुसका दूध बढ़ायें और बढ़िया बैल अुत्पन्न करें। हमारे पास पशु-पालनके लिअे अितना चारा-दाना नहीं है कि जिससे भैंसें व गायें दोनों निभ सकें। अिसलिअे हम गायको ही पूरा ध्यान दें तो गाय बच सकती है। अगर हम भैंस और गाय दोनोंको बचाने जायेंगे तो अेक भी न बचेगी। हम टीका तो गोकुशीकी करते हैं लेकिन सेवा भैंसकी करते हैं। जितनी दुर्दशा गायकी आज हिन्दुस्तानमें है अुतनी शायद ही कहीं हो। दूसरे देशोंके लोग चाहे गायको काट कर खा जाते हों लेकिन जब तक अुसे जिन्दा रखते हैं तब तक पूरे आरामके साथ अुसे स्वस्थ अवस्थामें रखते हैं। हम गोकुशीका विरोध कर रहे हैं लेकिन हमारी गाय हमारी अुपेक्षाकी शिकार होकर रोज भूखसे तिल तिल करके मर रही है। यह कितना बड़ा अपराध है? आज गायकी दुहाअी देनेवाले काफी संख्यामें हैं लेकिन अुसकी सच्ची सेवा करनेवाले सेवक बहुत कम मिलते हैं।

अहिंसाकी सूक्ष्म व्याख्या

अुस समय सेवाग्राममें सांप और बिच्छू खूब निकलते थे। बरसातमें कभी छतमें से रोज दस दस बिच्छू निकल आते थे। सांप और बिच्छू पकड़नेके लिअे हमने दो चिमटे बनवाये थे। बापूजी यह पता लगाना चाहते थे कि कितने फी सदी सांप जहरीले होते हैं। अिसलिअे अुनको पकड़कर पिंजरेमें रखते और जहरीले सांपके लक्षणोंसे अुनका मिलान करते। बल्कि हॉफकिनके पास भी अेक सांप भेजा था। सेवाग्राममें साधारण सांप तो थे ही लेकिन नाग और गोखरा भी मिलते थे।

अेक रोज अेक बड़ा भारी साप पिंजरेमें बन्द था। अुसने पिंजरेमें अपना सिर मार मार कर अुसे काफी घायल कर लिया था। जब मैं अुसे जंगलमें छोड़ने गया तो असे देखकर मुझे काफी दुःख हुआ और मैंने निर्णय किया कि अब मैं साप पकड़नेमें मदद नहीं करूंगा। सारी घटना कैसे हुआी यह तो मुझे ठीकसे याद नहीं है लेकिन मेरी डायरीमें जो लिखा है वह यहां देता हूं

सेगांव ता. २१–८–१६. जब सांपको छोड़ा तो अुसकी हालत देखकर मनको बुरा लगा और यह विचार किया कि अब मैं सांप पकड़नेमें मदद नहीं करूंगा। सांपका प्रकरण लीलावतीबहनने बापूजीसे छेड़ा था। बापूजीने मुझे समझानेका प्रयत्न किया लेकिन अुनकी बात मेरे गले न अुतरी और मैंने कह दिया कि अब मैं सांप पकड़नेमें आपकी मदद नहीं करूंगा। अुस रोज तो बात टल गभी लेकिन २६ तारीखको फिर घूमते समय बापूजीने मुझसे कहा तुमको सांपकी बात समझा देना मेरा धर्म है। मैं सांपसे डरता हूं। अपनी यह कमजोरी स्वीकार करता हूं लेकिन मैं सांपके साथ अेकरूप होना चाहता हूं। मैं अभी तक यह नहीं जान सका हूं कि भगवानने सांप और बिच्छूको जहर क्यों दिया होगा। लेकिन सांप-बिच्छूमें जो जहर दीखता है वह तो मनुष्यके स्वभावका प्रतिबिम्ब है। अगर मनुष्य काम क्रोध द्वेषका त्याग करे तो सर्पसृष्टि बदल सकती है। मेरा पशुसृष्टिके साथ अेकरूपता साधनेका प्रयत्न है। मैं जितनी अहिंसाको सूक्ष्मता समझता हूं अुतना अुसका पालन नहीं कर सकता हूं यह मेरी कमजोरी है। आज लोग जिसको अहिंसाके नामसे पुकारते हैं वह किसीका खून न करना ही है। परन्तु दूसरे प्रकारसे हम खून पी जाते हैं जैसे गरीबका खून चूसकर रुपया जमा करना और अुस रुपयेसे पिंजरापोल आदि बांधकर अहिंसाका ढोंग करना। खटमल मराओ की बात जानते हो?

मैंने कहा — जी नहीं।

बापू — बम्बभी आदि शहरोंमें लोग प्रभातमें पुकारते फिरते हैं खटमल मराओ। यानी खटमलोंसे भरी खाट पर भाड़ेसे जो सोओ तो अुसे अहिंसा कहेंगे। अगर मैं अहिंसाका पूरा विकास न कर सका यानी सांप बिच्छूकी सृष्टिके साथ अेकरूप न हो सका तो मैं संतोषसे नहीं मरूंगा। जिसका मुझे दुःख रह जायगा।

बापूजीने सांपके विषयमें अपने विचार कहे पर मुझे सांप पकड़नेको फिरसे नहीं कहा और न मैंने फिर सांप पकड़ा।

मनोरंजनमें छिपा आशीर्वाद

अुसी दिन बापूको दो-चार दिनके लिअे मगनवाड़ी जाना था। पू० बाने बापूजीके साथ मगनवाड़ी चलनेकी बात निकाली। बापूजीने कहा "जिस प्रकार तुम अपने चलनेकी बात करती हो वैसे बलवन्तसिंहकी क्यों नहीं करतीं? बाने कहा "बलवन्तसिंह तो स्वतंत्र है। कल जाना चाहे तो कहीं भी जा सकता है।

अिस पर बापूजीने खूब जोरसे हंसकर अपनी लाठी अुठाकर बाको दिखायी और कहा बलवन्तसिंह जाय तो खरो अेना टांटिया भांगी नाखुं (बलवन्तसिंह जाय तो सही अुसकी टांगड़ी तोड़ दूं।) सब लोग खूब जोरसे हंसे।

बापूके अिस मनोरंजनमें बड़ी गंभीरता थी और मेरे लिअे अेक बड़ी चेतावनी थी।

बाने कहा "तमारी पासे तो सेंकडो आव्या ने चाल्या गया छे तो जीवनभरनी जोडी आवी छुं (तुम्हारे पास सैकड़ों आये और चले गये। यह मैं जीवनभर देखती आयी हूं।)

बापूजी मौन रहे। लेकिन बापूजीका मुख पर विश्वास देखकर और बाके कटाक्षको सुनकर मैंने अपने मनमें निश्चय किया कि अब मुझे बापूको छोड़कर नहीं जाना चाहिये।

श्रेष्ठ तो अेक अीश्वर ही है

ग्रामोद्योगके विद्यार्थी बापूजीसे मिलने आये। अेक विद्यार्थीने प्रश्न किया गीताके अध्याय ३के श्लोक यद् यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः का क्या अर्थ है?

बापूजी भगवान कहते हैं कि श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करता है वैसा ही जनसाधारण करते हैं। जिसका अर्थ यह है कि मानव-समाजका स्वभाव ही अैसा है कि लोग श्रेष्ठ पुरुषोंके आचरणकी तरफ देखते हैं। जिसलिअे भगवानने अैसा नहीं कहा कि श्रेष्ठ पुरुष जैसा कहते हैं वैसा अन्य लोग करते हैं, बल्कि यह कहा है कि श्रेष्ठ पुरुष जैसा करते हैं वैसा अन्य

लोप करते हैं। सिलीलिये भगवानने कहा है कि मेरे लिये कोओी कर्म बाकी नहीं है, फिर भी मैं लोक-संग्रहके लिये अतन्द्रित रहकर काम करता रहता हूं। नहीं तो जगतका नाश हो जायगा। सब लोग आलसी बन जायेंगे। अब सवाल यह अुठता है कि श्रेष्ठ पुरुष कौन है? किसके आचरणका अनुकरण करें? मैं जवाहरलाल राजेन्द्रबाबू, वल्लभभाओी जो आचरण करें अुसका अनुकरण करना चाहिये? कदापि नहीं।

मैं कुछ कहता हूं जवाहरलाल कुछ कहते हैं। जिस प्रकार अेक-दूसरेमें विरोध है। तब किसका अनुकरण करें? अैसा श्रेष्ठ पुरुष आज दुनियामें मिलना असंभव है। दुःखकी बात तो यह है कि आज मेरी ६७ वर्षकी आयु हो गओी और अभी तक मुझे अैसा पुरुष नहीं मिला जिसके सामने मैं सिर झुका दूं। तब क्या करें?

जो अन्तरात्मा और बुद्धि दोनोंसे ठीक जंचे सो करें। श्रेष्ठ तो अेक ओीश्वर ही है। अुसको अन्तरात्माके सिवा कहां ढूंढें?

अहिंसाका व्यापक क्षेत्र

अेक दिन घूमते समय मुझसे अहिंसाके विषयमें बापूजी कहने लगे सत्य और अहिंसाकी जितनी खामी थी अुतना ही सत्याग्रह असफल रहा। यही कारण है कि मैं सेगांवमें बैठ गया हूं। यह भी अेक प्रकारका तप नहीं तो और क्या है? जिधर अुधर घूमकर कुछ आन्दोलन कर सकता था लेकिन मैंने समझ लिया कि जब तक अंत:शुद्धि न हो तब तक सत्याग्रह करना निरर्थक है। यद्यपि अहिंसासे आज तक कोओी लड़ाओी राजनीतिक या सामाजिक ढंगसे नहीं हुओी यह बात सच है। व्यक्तिगत तो अैसे अुदाहरण बहुत मिलते हैं। मेरा काम है अहिंसाका राजकीय और सामाजिक विकास करना। हां जिस जन्ममें कर सकता या नहीं यह तो कौन जानता है? जिसीलिये तो मैंने तुम्हें अपने सान्निध्यमें रखा है कि तुम मेरा तरीका समझ जाओ। और बौसेवा भी तो तुम्हारे ही भरोसे पर आरंभ की है। बस यह जो आपसके तुम्हारे झगड़े होते हैं अुनको सहन करो और यहां शून्यवत् होकर पड़े रहो।

बापूका सर्वांगिक्षेत्र

हमने आश्रमकी सड़क जहां तक बनाओी थी अुससे आगे अेक अैसा टुकड़ा था जहां बहुत कीचड़ हो गया था। आदमियोंको तो तकलीफ थी ही

किन्तु माझियाँ फस जानेके कारण बैलोंके लिये भी वह अत्यंत कष्टदायक थी। बापूजीने मुझसे कहा कि यहां अगर सड़क बन सकती है तो बनाना अच्छा है। लेकिन पचास रुपयेसे अधिक खर्च नहीं होना चाहिये। मैंने स्वीकार किया और कार्य आरंभ हो गया। रुपये तो अस्सी खर्च हो गये लेकिन बापूजी और खानसाहब दोनों मुझे देखकर बहुत खुश हुओ। बापूने मुझसे कहा "तुम ञिंजीनियर तो नहीं हो लेकिन काम तुमने ञिंजीनियरका किया है। तुमका दूसरा कोओी शाबाशी दे या न दे मैं तो देने ही।

स्वरका प्रकोप

बापूने मुझसे कहा कि तुकडोजी महाराजका पत्र आया है। विद्यार्थियोंको बुनना-कातना सिखानेके लिये किसीको बुलाया है। लिखा है कि अगर बलवन्तसिंहको ही भेज दें तो अच्छा हो।

मैंने कहा — आपकी जिच्छा।

बापू — मेरी जिच्छाकी बात नहीं है। तुम्हारे जिम्मे जो काम है अुसकी क्या व्यवस्था होगी जिसका विचार करना होगा। सड़कका काम तुम्हारे बिना न होगा। गाय-बकरीका क्या होगा? जिन सबकी व्यवस्था हो सकती हो तो मुझे जिनकार नहीं है।

मैंने कहा — सड़कका काम दो रोजमें खतम कर दूंगा और गाय बकरीको चम्पत संभाल लेगा। बुननेवाला तो कोओी भी जा सकता है, परन्तु मैं जाअूंगा तो अुनके समाजमें मेरा परिचय हो जायगा और कुछ विचार विनिमय भी हो जायगा।

बापूजी — अगर तुम गोशालाकी व्यवस्था कर सको तो मुझे अच्छा लगेगा कि तुम जाओ। तुम बारीकीसे और कामको भी देख सकोगे और मुझे सारी रिपोर्ट दे सकोगे क्योंकि कुछ लोग तुकडोजी महाराजके खिलाफ शिकायत कर रहे हैं।

बापूकी अनुज्ञा लेकर मैं २२ सितम्बर, १९३६ को तुकडोजी महाराजके मोझरी आश्रममें पहुंचा। अुनका कार्यक्रम बड़ा ही सुन्दर चल रहा था। करीब ५ – ६ विद्यार्थी थे। अुनका कीर्तन-सत्संग तो होता ही था साथ ही कातना-बुनना भी चलता था। वहांसे भेजे हुओ मेरे पत्रके अुत्तरमें बापूजीने लिखा

चि॰ बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला है। क्या मानूं यह कब मिलेगा? यहां तो सब ठीक चल रहा है। रोज छाछ होती है और मक्खन निकलता है। २॥ सेरमें से आज १४ तोला निकला असका घी ९ तोला। प्यारेलाल अिस बारेमें अुस्ताद बन गया है। मुन्नालाल अुसकी देखभाल कर रहा है। आज तो बहुत पानी आया। किशोरलालका खत अिसके साथ है। अब तो ठीक है, दुर्बलता काफी है। महाराजसे कहो अुनका खत मिल गया था।

हां सफाओका काम भी अच्छी तरह सिखा दो।

सेगांव वर्धा
२४-९-३६

बापूके आशीर्वाद

वहां मैं मुश्किलसे ८-९ दिन ठहरा कि मुझे बुखार आ गया और वह भी बहुत सख्त। तुकडोजी महाराजने तारसे बापूजीको मेरी बीमारीकी खबर दी तो अुनका अुत्तर आया मुझे तुरन्त सेगांव भेज दो।

मेरी हालत बहुत खराब थी। मोझेरीसे सेगांव लगभग ५५ मील है। १ अक्तूबरको मोटर-कारसे मुझे लाया गया। मोटर आकर खड़ी हुअी और बापूजी तुरन्त मेरे पास आये। (नानावटीजी टाअीफाअिडसे बीमार थे। फिर मैं बीमार होकर आया। बादमें मीराबहन बीमार पड़ीं।) सोमवारका मौन तोड़कर बापूने हंसते हंसते मुझसे कहा क्यों खूब मिर्च खाअी? बीमार क्यों पड़ गये? मैंने कहा मिर्च तो नहीं खाअी। लेकिन वहां खाने-पीनेकी व्यवस्था अच्छी नहीं थी जिसलिअे मैंने केले खूब खाये जिससे मुझे कब्ज हो गया। मुझे लगता है कि मेरे पेटमें कुछ जहर पैदा हो गया है। अब अुसे निकालनेका प्रबंध कीजिये।

मांकी तरह बीमारोंकी सेवा

मैं बापूजीसे बात तो कर रहा था लेकिन शरीरमें जितनी पीड़ा हो रही थी कि मानो बेहोश-सा था। बापूजी मुझे अुठवाकर अपने स्नानघरमें ले गये और अपने हाथसे अेनीमा दिया। बुखार खूब था। मेरे शरीरसे बदबू आ रही थी। क्योंकि जबसे बुखार आया था तबसे स्पंज नहीं किया गया था। बापूजीने स्पंज किया मेरे कपड़े बदले। जबसे डॉक्टर महोदयको

बुलाया गया। अुन्होंने देखकर बापूजीसे कहा कि शिनका हृदय बहुत कमजोर हो गया है। बहुत संभालकर रखनेकी जरूरत है। कभी भी बन्द हो सकता है। मैंने बापूजीसे कहा कि आपके पास बहुत काम है। मेरे कारण आपके काममें बहुत अड़चन होगी। शिसलिये मुझे सिविल अस्पतालमें क्यों भेज दें तो कैसा रहे?

बापूजीने कहा "कोशी भी मां अपने बच्चेको अपनेसे दूर करना पसन्द करेगी? या कोशी भी लड़का माको तकलीफ होगी शिसलिये मांसे दूर जानेका विचार करेगा? तो तुम ही अैसा क्यों सोचते हो? मेरे पास कितना भी काम हो तो भी तुम्हारी सेवामें किसी प्रकारकी कमी नहीं आयगी। हां तुमको मेरी सेवामें विश्वास नहीं हो तो मैं तुमको रोकूंगा नहीं। तुरन्त जा सकते हो।

मैंने कहा मुझे तो आपके कामके कारण संकोच हो रहा था वैसे मैं जाना पसन्द नहीं करता।

बापूजीने डॉक्टरको दिखाया तो सही लेकिन शिलाज डॉक्टरका शुरू नहीं किया। प्यारेलालजीको सिर और पेट पर मिट्टीकी पट्टी रखनेका काम सौंपा और लालसाहबको फलोंका रस देनेका। मेरे पास कमोड पानीकी बाल्टी पीनेका लोटा कटोरी, चम्मच सब रख दिया गया तथा किसी बातकी जरूरत पड़े तो बजानेके लिये घंटी भी रख दी गयी।

मुझे खूब प्यास लगती थी। पेशाब बार बार होता था। मेरे पास सारी व्यवस्था थी। जब जरूरत होती घंटी बजाता और अगर कोशी दूसरा न होता तो बापूजी खुद आते। मुझे खुदको डर हो गया था कि शायद मेरा शरीर छूट जायगा। डॉक्टरके कहनेसे बापूजी भी घबरा गये थे। बापूका औषधि प्यारेलालजीकी मिट्टीकी पट्टी बनानेकी कुशलता लालसाहबका रस निकालकर और अुसमें मातृस्नेहकी मिठास घोलकर प्रेमपूर्वक पिलाना और मीराबहनकी देखरेख — शिस प्रकार मुझे सेवाके सर्वश्रेष्ठ साधन मिले थे। सर्वोपरि औषधि बापूका प्रेम तो था ही। आज जब अुन दिनोंकी याद करता हूं तो अपने सद्भाग्यके लिये आश्चर्य होता है। अगर शिस प्रकारकी सेवाकी व्यवस्था नहीं हुअी होती तो न जाने मेरा क्या होता। शिस सेवासे मैं जल्दी ही बीमारीके पंजेसे निकल गया और मेरा शरीर अमर बना।

ज्यों ज्यों मेरी तबीयत सुधरने लगी त्यों त्यों मेरी भूख भी बढ़ने लगी। मैंने बापूजीसे रोटी खानेकी आज्ञा मांगी। बापूजीने कहा कि अगर तुम दस सेर भी दूध पियोगे तो मैं खुशीसे पिलाअूंगा लेकिन तुम अेक भी रोटी मांगोगे तो मुझे दुःख होगा। मैं चुप हो गया। जब भूख लगती मैं बापूजीके सामने जाकर खड़ा हो जाता। बापूजी पूछते "क्या बात है?" मैं कहता "भूख लगी है।" बापूजी कहते "अच्छा मोसंबी ले लो मीठा नीबू ले लो, सतरा ले लो।"

जब मैं कहता कि कोअी ठोस चीज दीजिये तो वे कहते "अच्छा सब ले लो।"

यह क्रम करीब तीन महीने तक चला। अिस बीचमें मने पानी भी शायद ही पिया हो। अेक रोज थककर मैंने विजयाबहनसे रोटी मांगी और शायद अुनकी आंख बचाकर मैं आधी रोटी खा भी गया। विजयाबहनने हंसकर बापूजीसे शिकायत की। बापूजी बोले "अरे बलवन्तसिंह चुराकर रोटी खाता है?" और हंसे। मैंने कहा "बापूजी चोरी नहीं की लेकिन जोरी जरूर की है। क्या करूं रोटी खाये बिना मेरा शरीर खेतीका काम नहीं करता है। और अिस तरह बैठा तो कब तक रहूं?" तब बापूजीने अिसको हंसकर टाल दिया। लेकिन रोटीकी अिजाजत नहीं दी। जब बापूजी प्रवास पर जाने लगे तो मैंने कहा कि अब तक आपके लिये जो फल आते थे अुनमें मेरा भी गुजारा हो जाता था। लेकिन जब आप यहां नहीं होंगे तो फल कोअी भेजेगा नहीं और मैं भूखों मरूंगा। बापूजीने हंसकर कहा "बात तो ठीक है लेकिन जितना फल मिले अुतना खाकर यदि भूख बाकी रहे तो अुतनी रोटी खा सकते हो।" मुझे तो यही चाहिये था।

मेरे बीमार होकर आनेके चार रोज बाद ही मीराबहनको भी बुखार आ गया और वे सख्त बीमार हो गयी। अुनकी सेवाका भार बापूजीके अूपर ही पड़ा। अुनको टाअीफॉअिड था। बापूजी अनीमा देते स्पंज करते और पथ्य आदि व्यवस्था करते। नानावटीजीको पहलेसे ही टाअीफॉअिड था। अभी मैं कुछ कुछ ही घूमने-फिरने लगा था कि अिन लोगोंको बहुत सख्त बीमारी हुअी। मीराबहन कमजोर तो बहुत हो चुकी थी किन्तु बेहोशी तक नहीं पहुंची थी। नानावटी बेहोश हो गये थे और भय हो गया था कि कहीं चले न जाय। मुझमें भी बापूजीका बोझ देखकर असमान खानेकी बात नहीं,

किन्तु बापूजीने अुन्हें भी वही जवाब दिया जो मुझे दिया था। सारी दुनियाका काम करते हुअे भी बापूजी बीमारोंकी पूरी सेवा-शुश्रूषा करते थे। अुसके कुछ दिन बाद ही चिमनलालभाईको टाअीफाअिड हुआ। अिनका टाअीफाअिड सबसे खतरनाक था। खुद बापूजीको शक हो गया था कि अुनका शरीर चला जायगा। अुनकी पत्नी पू० शकरीबहन अहमदाबादमें थी। बापूजीको किसीने सुझाया कि शकरीबहनको बुला लिया जाय।

बापूजीने कहा, "मुझे मददकी जरूरत नहीं है और न अुनका आना मैं यहां ठीक ही समझता हूं। हां, अगर चिमनलाल चाहें तो जरूर बुला सकता हूं।" चिमनलालभाईने अिनकार कर दिया।

मुझे बापूजीकी यह कठोरता अच्छी नहीं लगती थी। मैं सोचता था चिमनलालभाई जानेकी तैयारी कर रहे हैं और बापूजी अुनकी पत्नीको अुनके पास नहीं आने देते। लेकिन बापूजीकी मनोभूमिकाको मैं कैसे समझ सकता था? बापूजी बीमारोंकी पत्नी थे, अुनकी मां थे और अुनके डॉक्टर थे। तब फिर दूसरोंकी जरूरत ही कहां रह जाती थी? सम्बन्धी-जन आकर तो मोह ही पैदा कर सकते थे।

चिमनलालभाईकी तबीयत अितनी खराब थी कि बापूजीने मुझे भी पहरा देनेको कहा, यद्यपि मैं कमजोर था। बापूजीने कहा, "हो सकता है आज रातको ही चिमनलाल चला जाय। हम सबको सावधान रहना चाहिये। हमारी सेवामें किसी प्रकारकी कमी न रहे, तो हमारे लिअे बस है।" बड़ी सेवा-शुश्रूषाके बाद चिमनलालभाईकी तबीयत सुधरी।

अिस प्रकार आश्रम पर बीमारीका अेक बड़ा प्रकोप आया, जिसका सामना बापूजीने बड़ी कुशलता और धीरजके साथ किया।

मैं अब भोजनालयमें ही भोजन करने लगा था। बापूजीको यह अच्छा लगा। वे कहने लगे, "तुम जो अलग बनाकर खाते थे, वह मुझे अच्छा नहीं लगता था। हमको तो सारे जगतके साथ कुटुम्बका-सा बरताव करना है। हर आदमीके साथ प्रेमसे रहना सीखना है।"

मैंने कहा, "अबकी बार मैं भोजन अलग बनाना नहीं चाहता था, लेकिन अेक दिन दो-तीन बातें अैसी हो गयीं जिससे मुझे लाचार होकर अलग होना पड़ा।"

बापूने कहा : अैसी बातोंको तो हंसकर टाल देना चाहिये। तुम अधिकारपूर्वक यह कहते हो कि मुझे यह चाहिये और यह नहीं चाहिए। शरीरको जिस जिस चीजकी आवश्यकता हो वह मुझे देना चाहिये। क्रोधको अक्रोधसे जीतना, कामको संयमसे जीतना और मूर्ख भी यह समझता है कि आगको पानीसे जीतना है। जैसे आग और पानी दीखते हैं वैसे क्रोध और अक्रोध दीखते नहीं हैं। लेकिन वे आग और पानीसे भी ज्यादा प्रत्यक्ष हैं।

अहिंसा तथा अन्य विषयोंकी चर्चा

ग्रामोद्योग-संघके विद्यार्थी बापूजीके पास अकसर आया करते थे। अेक रोज अुन्होंने प्रश्न किया : "अहिंसात्मक साधनोंसे हम सामाजिक विग्रहको कैसे दूर कर सकते हैं?" बापूजीने अुत्तर दिया :

सामाजिक विग्रह मिटानेका अर्थ है अपने आपको शुद्ध करना, अपनी दसों अिन्द्रियों और मन पर काबू रखना। हमारी नजरमें मनुष्यमात्रके लिये समभाव हो, चाहे वह किसी भी मजहबका माननेवाला हो। अुसके दोषोंको जानते हुअे भी अुसके नाशकी बुद्धि हम न करें। अुसके दोषोंको दूर करनेकी प्रभुसे प्रार्थना करें। मेरे चार लड़के हैं मगर मेरे दिलमें अैसा नहीं है कि देवदास मुझे प्यारा है और हरिलाल दुप्यारा। अैसे वह मेरी और अपने भाअियोंकी मलामत (बदनामी) करता है। अगर मैं हरिलालको खत नहीं लिखता हूं तो अिसका अर्थ यह नहीं है कि मैं अुससे प्रेम नहीं करता हूं। समझो कि देवदासको टायीफॉअिड हो गया है और हरिलाल चंगा है, तो जो खुराक मैं हरिलालको दूंगा वह देवदासको नहीं दूंगा। जहां चंगेको रोटी खूब खिलाना धर्म है वहां बीमारको केवल पानी पर रखना धर्म हो जाता है। अिसका अर्थ यह नहीं है कि दोनोंमें कुछ फर्क है। मैं चाहता हूं कि हरिलालका नाश न हो, अुसके दोषोंका नाश हो। अिसी प्रकार मैं जानता हूं कि   में दंगेकी शुरुआत मुसलमानोंने की है। हिन्दू भी निर्दोष नहीं हैं, अुनकी तरफसे भी हिंसा होती है। दोनों अेक-दूसरेको खानेके लिये अपना अपना संगठन करनेकी फिक्रमें हैं, जिसका नाम गुंडाशाही है। अंग्रेजोंने भी अिसी प्रकार दूसरोंको दबानेके लिये गुंडाशाहीका संगठन कर रखा है। गुंडे कभी अपने-आप संगठित नहीं होते। फौज गुंडाशाही नहीं तो और क्या है? अिस प्रकारकी गुंडाशाहीका बोलबाला अधिक टिकाअू नहीं होता। कितनी सल्तनतें आयीं और बरबाद हो गयीं। अिसी प्रकार यह

भी बरबाद हुअे बिना नहीं रहेगी। हां रह सकती है मगर अंग्रेज लोग समस्त धनमें और अुनके पास जितने हथियार हैं अुनको फेंक दें हवाओ जहाजोंको फूंक दें सागरमें आग लगा दें और कह दें कि जिन्हें लूटना हो हमको लूट लो। तो अंग्रेज जिन्दा रह सकते हैं नहीं तो नहीं।

घूमते समय मेरी बापूजीके साथ चर्चा होती थी। बापू गांवके लोगोंको गोपालनका महत्त्व समझाते थे। परन्तु लोगोंने कहा कि गांवमें कीचड़ बहुत रहता है और चारा भी कम है। बापूजीसे मैंने आंगन दूध बटोरनेके बारेमें पूछा तो अुन्होंने कहा कि जैसा अुचित लगे वैसा भाव ठहरा लो लेकिन अैसी कोशिश न करना जिससे गांवके लोगोंको अेक पैसा भी कम मिले।

मैंने बापूजीसे आगे प्रश्न करते हुअे कहा, कल मेरी सत्यदेवजीके साथ बात हुआी थी। अुनका मानना है कि आपने मीराबहन पर जितना प्रेम किया है अुतना हिन्दुस्तानमें किसी पर नहीं किया। तो भी अभी तक व स्वावलम्बी नहीं बन सकी। अिस प्रकार आप पर आश्रित रहना मोहकी निशानी है। ब्रह्मचर्यके बारेमें अुन्होंने कहा कि आज तक आपका जो नियम रहा है वह बाहरी दबाव-सा रहा है। यह बात स्वाभाविक होनी चाहिये जैसा आश्रमके लड़कोंको देखकर अनुभव होता है।

बापूजीने कहा "बात तो सच है लेकिन मीराबहनका मोह निर्विकार है। वह मेरे पास कैसे आयी और अुसके जीवनमें क्या क्या तबदीली हुआी यह जानने लायक बात है। अिसीसे आज भी मुझसे सीखनेकी दृष्टिसे वह मेरे पास रहनेका आग्रह रखती है। मैं जानता हूं कि यह दोष है, लेकिन मैं अुसे मरने भी नहीं दूंगा।

"ब्रह्मचर्यके बारेमें मैंने अपना विचार स्पष्ट किया है। जिसका मनसे पतन हुआ अुसका पतन हो चुका। यह बात ठीक है कि आश्रमके सब लड़के भाग गये लेकिन जिससे मैं असफल हुआ हूं अैसा भी नहीं है। जो बे-चार संभव हुअे हैं अुनसे मुझे अिस वस्तुकी सिद्धताका भरोसा हो गया है। मैं खुद अपूर्ण हूं तो दूसरोंको पूर्ण मार्ग कैसे बता सकता हूं? मैं कुछ पारस पत्थर तो नहीं हूं जो दूसरोंको स्पर्श करते ही ब्रह्मचारी बना दूं। मेरा तो सतत प्रयत्न है। जो लोग कामाग्नि पापीको मानते हैं अुनको भी लाभ होता है। मेरे पास तो दूर दूरसे पत्र आते हैं कि आपके लेखोंसे हमको बहुत लाभ हुआ है। जो लोग मेरे नजदीक आ जाते हैं अुनको मालूम हो जाता

है कि मैं तो अेक हाड़-मांसका पुतला हूं। मैंने कभी गुरु बननेका दावा तो किया ही नहीं है। मैं तो अल्पज्ञ हूं। सर्वज्ञ तो अीश्वर ही है।

दूसरे दिन फिर वैसी ही चर्चा चली। बापूजी कहने लगे मैं जो भूलमें से काम पैदा करनेकी बात कहता हूं अुसे तुम ध्यानसे सुनते हो न? तुम तो किसान हो। हरअेक चीजका ध्यान रखना और किसका क्या अुपयोग करना है अैसा जान-बूझकर करना।

बापूजीकी बीमारी

हम लोग तो बीमार पड़े ही लेकिन बापूजीको भी बुखार आ गया। जमनालालजी सोचने लगे कि यहां पर मलेरिया है अिसलिये बापूजीके लिअे अूपर टेकरी पर मकान बनाना चाहिये। अिसके लिअे वे बापूजीकी अिजाजत लेने आये। बापूजीने कहा "जब मेरे लिअे बनाओगे तो बलवन्तसिंहके लिअे भी बनाना होगा और जब बलवन्तसिंहके लिअे बनाओगे तो अुसकी गायोंके लिअे भी बनाना होगा। क्योंकि मैं अुसको छोड़कर नहीं जा सकता और वह अपनी गायोंको छोड़कर नहीं जा सकता। अिसलिये तुम अिस झंझटमें ही मत पड़ो।

जमनालालजीको बापूकी बात माननी पड़ी। परन्तु बापूजीकी तबीयत अधिक खराब हो गयी। अंतमें बहुत आग्रहसे जमनालालजी बापूको सिविल अस्पताल वर्धामें ले गये। अिसी बीच मेरा कमरा लीपते हुअे महादू* के हाथमें सुअी घुस गयी और टूट गयी। अुसे मैंने बापूजीके पास वर्धा अस्पतालमें भेज दिया। मैं सेवाग्रामके सब समाचार बापूजीको भेजता रहता था। मुन्नालालजीको बुखार था। अिसलिये अुनको भी वर्धा भेजना चाहता था। बापूजीसे पुछवाया तो अुन्होंने लिखा

चि. बलवन्तसिंह,

तुम्हारे तीन कागज मिले हैं। मुन्नालालके खतमें तुम्हारे खतोंकी पहुंच दी है। हां रमणीकलालका खत भी मिला। मैंने तुमको धन्यवाद भी भेजे हैं। मेरी अुम्मीद है कि शायद परसों मैं वहां पहुंच जाअूंगा।

मुझको आराम है।

---

* सेवाग्रामका अेक हरिजन कार्यकर्ता जो आश्रममें काम करता था।

मुन्नालालको अब तो नहीं बुलाता हूं लेकिन डॉक्टर महोदयको भेजनेकी कोशिश करूंगा। दरमियान वह सिर्फ दूध पर रहे। दस्त साफ न आवे तो दीवेल (अरंडी) तेल लेवे और कमसे कम दस ग्रेन क्विनीन लेवे। अुसकी सेवा तो तुम करते ही हो।

नयावहूनका खत नहीं मिला है, न मुन्नालालका। प्रह्लाद या किसीके बगैर मांगे दूध मत भेजो। प्रह्लादको दूध कल भी दिया था और आज भी दिया है ममतवाड़ीसे। प्रह्लाद अच्छी तरहसे है। दस दिन कमसे कम रहना होगा। पुरी (अनन्तराम पुरी) को आज नहीं लिखूंगा। बाकी कल।

यो ओलक तो वापिस जाती है बाकी कल भेजनेकी कोशिश करूंगा।

२-९-'३६ वर्धा वस्सलाम बापूके आशीर्वाद

कुछ दिन बाद बापूजी सेगांव आ गये। मुन्नालालभाजीको बुखार आता था। अुनका पेट भी खराब था। बापूजीने मुझको देखा और मुझसे कहा "अिसको जुलाब दे दो और कमोड आदिकी सब व्यवस्था कर दो।" मैंने हां तो कह दिया लेकिन मैं दूसरे काममें लग गया। थोड़ी देरके बाद बापूजीने पूछा "क्यों मुन्नालालको जुलाब दे दिया है न?" मैं तो शरमके मारे जमीनमें गड़ गया। बोला "बापूजी मैं तो भूल गया।" बापूजीने लम्बी सांस ली और बोले "यह तो बड़ा अपराध है।" मैंने अपना अपराध कबूल किया और मुन्नालालभाजीको जुलाब देकर कमोड आदिकी सब व्यवस्था की। अुनका पाखाना साफ करके बापूजीको खबर दी कि पाखाना कितना और कैसा था तथा अुसमें बदबू कितनी थी। बापूजी बोले "भूलना तो सब प्रकारका ही पाप है। लेकिन रोगीकी सेवामें भूल करना तो असह्य पाप है। समय पर मदद न पहुंचनेके कारण रोगी मर जाय तो अुस भूलको किसी भी तरह सुधारा जा सकता है? लेकिन तुम अपनी भूल कबूल कर लेते हो यह मुझे प्रिय लगता है। कबूल करनेके बाद वह भूल फिर न हो तो मनुष्य अूंचा चढ़ता है। आओ अगर वह खानेको मांगे तो थोड़ी छाछ या भाजीका पानी दे दो फलका रस भी दे सकते हो। अब अुसका बुखार जाना ही चाहिये। अुसको कह दो पूरा आराम करे।

मैं बापूजीकी बात ध्यानावस्थित होकर सुन रहा था और अपनी भूलका दुःख महसूस कर रहा था। यह भी सोच रहा था कि बापूजीके दिलमें हमारे प्रति कितना प्यार भरा है। जिसका बदला हम कैसे चुका सकेंगे?

(२४-१-३७ की डायरीसे)

मेरी बीमारी और बापूका आश्वासन

कुछ समयके पश्चात् मेरे पैरमें फोड़े हो गये। अुसके अिलाजके लिये मैं वर्धाके सिविल अस्पतालमें ड्रेसिंग करा आता था और मगनवाड़ीमें रहता था। अिसीके साथ मुझे ज्वर भी हो आया। मैंने बापूजीको लिखा कि "फोड़े तो थे ही बुखार और आ गया। मैं रोगी बनता जा रहा हूं। आपने कहा था कि जो सेगांवमें रहकर बीमार पड़ेगा अुसको सेगांव छोड़ना पड़ेगा। अिसलिअे मुझे आपके अुस निर्णयके पालनके लिअे ही सेगांव छोड़ना चाहिये। अबतक मैंने अेक गाय भेजी थी। अुसके दूधका हिसाब रखनेके लिअे भी लिखा था। बापूजीका पत्र आया।

चि. बलवन्तसिंह

तुम्हारा पत्र मिला। गाय आ गयी है। हिसाब रखा जायगा। डॉक्टर कहे सो करना। तुम्हारे सेगांव छोड़नेका प्रश्न अुपस्थित होता ही नहीं है। तुम्हारी व्याधि असाध्य नहीं है। बहुत दिनों तक चलनेवाली भी नहीं है। दो-तीन दिनमें हार क्यों गये? तुम्हारे खतमें मुझे अधीरताकी बू आती है। थोड़े फोड़े हो जाते हैं अुसका पूरा अिलाज भी नहीं हुआ है। अितनेमें वह न मिटनेका डर पैदा हो जाता है। यह कहांकी बात? तुम्हारे दिलको निश्चित करना है कि मैं अच्छा हो जाअुंगा शीघ्र हो जाअुंगा। अच्छा होनेके लिअे डॉक्टर वैद्यकी आज्ञाका पालन भलीभांति करना। दिलमें असंगत तर्क पैदा नहीं होने देना चाहिये। मेरे निर्णयके पालनकी फिकर तुम क्यों करोगे? और मेरे निर्णयमें कोअी महत्त्वकी बात तो है ही नहीं। माना कि मैंने किसी व्याधिग्रस्तकी सेवा ही करनेके लिअे मुझे सेगांव रखा तो मेरा कुछ अनिष्ट तो नहीं होगा। तुम्हारे फिकर करनी है अच्छे होनेकी शीघ्रतासे आ जानेकी और गायोंकी सेवा करनेकी। तुम्हारे फिकर करनी है तुम्हारे स्वभावकी अुग्रताकी।

७-२-३७ बापूके आशीर्वाद

मेरी बीमारी मुझे बढ़ती ही नजर आती थी। मैंने बापूको अिस बारेमें लिखा। बापूजीका अुत्तर आया

चि. बलवन्तसिंह

व्याकुल होनेकी कोअी बात नहीं है। डॉक्टरके सुपुर्द किया है सो ठीक ही है। वहींसे आराम होगा। धीरज नहीं छोड़ना।

गलतियां तो हकीम वैद्य डॉक्टर सब कर बैठे हैं। गलती हो ही नहीं सकती अैसी पद्धति सिर्फ नैसर्गिक अुपचारकी ही है। अुसे चलानेकी श्रद्धा बहुत कम लोगोंमें रहती है और अुसके अनुभव भी बहुत कम मनुष्योंमें देखनेमें आते हैं।

१४–२–४७ बापूके आशीर्वाद

मैं अस्पतालसे देरमें आता था अिस कारण अेक भाअी मेरे लिये रोटी बना देता था। अेक रोज वह सेगांव गया और बापूजीने अुसके कामका हिसाब पूछा। अुसने हिसाबमें मेरी रोटी बनानेका काम भी बताया। बापूजीने अुससे कहा कि तुम्हें रोटी बनानेकी जरूरत नहीं है, वह खुद बना लेगा या किसी दूसरेसे बनवा लेगा। अुसने बापूका यह संदेश कुछ अिस प्रकारसे तोड़-मरोड़कर मुझे कहा कि मेरे दिलको लगा कि बापू यह समझते हैं कि मैं आलस्यके कारण अुससे रोटी बनवा लेता हूं। मुझे बापूके अूपर बहुत गुस्सा आया। मैंने क्रोधवश अेक पत्र लिखा कि "मुझे आपकी गरज नहीं है। मैं कहीं भी चला जाअूंगा। अपनी रोटी मैं खुद बना सकता हूं और अपना सब काम भी खुद कर सकता हूं।

यह पत्र लिखते समय मैं क्रोधसे बेहोश-सा हो गया था। जो मेरे मनमें आया वह सब बापूको लिख दिया था। पत्र हाथसे निकलते ही मेरा गुस्सा अुतरा तो मुझे बड़ा अफसोस हुआ। लेकिन तीर कमानसे निकल चुका था। बापूजीने लिखा

चि. बलवन्तसिंह

तुम्हारे क्रोधकी सीमा ही नहीं है। अेक बेहोश आदमी लड़केके कहने पर कितना क्रोध कितना अविनय? सब प्रतिज्ञाओंका क्या? तुमको क्या पता के साथ क्या बात हुअी? मैं तुम्हारे हाल पर हंसूं रुदन करूं कि प्रतिक्रोध करूं? रुदन करने योग्य

अेक ही जमीनसे पैदा हुअे हैं। जो सेवाभावसे परावलम्बी बनता है से सेवाके स्वाधीन रहता है वह स्वावलम्बी है। मगर जो सेवा करते कुछ कष्ट पड़ने पर दूसरोंकी तरफसे सहायता न मिलने पर नाराज ा है वह गिरता है। मान लो कि अेक आदमी प्यासा पड़ा है। अुसके ासे सैकड़ों आदमी निकल जाते हैं और कोओ आदमी अुसे पानी नहीं ाता है। मगर अुसे अन पानी न पिलानेवालों पर गुस्सा आये तो ाका मजाल है। वह समझ ले कि सब लोग अपने अपने काममें लगे हैं। ार अीश्वरको मंजूर होगा तो पानी मिल जायगा नहीं तो पड़ा रहूंगा। ाखिर तो कोओ आदमी आता है और पानी पिलाता है। अुसका भी (अहसान न मानेगा। अहसान तो वह अीश्वरका मानेगा क्योंकि हम । अीश्वरके ही अंश हैं।

आश्रमवासियोंसे बापूकी अपेक्षा

अेक रोज मैंने बापूजीसे पूछा कि आप सेगांवके भविष्यके बारेमें क्या ाशा रखते हैं? आप बार बार कहते हैं कि मेरे बाद सेगांवमें क्या होगा ौन जाने? तो यहां जो आदमी हैं अुनसे आप क्या चाहते हैं? बापूजीने कहा

सेगांवमें अेक अच्छी दुकान चले। सबको खादीका तेल मिले। और ी आवश्यक वस्तुओंके लिअे वर्धा न जाना पड़े। गोपालन हो यहांके सब बच्चोंको दूध मिले। भले दो पैसा या अेक पैसा सेरकी कीमतसे लें। खेतीकी पैदावार बढ़ाओी जाय। खादव भी न रहे, कीकावदी जाय। तुम तो मुन्नालाल हैं, नाणावटी है। मगर सब भाय बाओमें तो मीराबहन तो है ही। वह तो नहीं मरेगी। तुम सबमें अैक्य नहीं है यह अच्छी बात नहीं है।

मैंने कहा — किसी कारणसे तो यह प्रश्न अुठता है।

बापूजीने कहा यह भी तो अेक काम है कि हम आपसमें मधुर सम्बन्ध बांधें। तुमको जितना अक्षरज्ञान तो नहीं है लेकिन बुद्धिमान तो है। व्यवहारज्ञान भी है ही। अक्षरज्ञान भी बढ़ा सकते हो।

बादमें मीराबहनकी बात चली। बापूने कहा मीराबहन बहुत गरीबीसे रह सकती है। अुसकी कहींसे भी शिकायत नहीं आयी कि मीराबहनने हमको तंग किया। फिर, कुछ भी हो मीराबहन सेगांव नहीं छोड़ेगी।

आश्रममें दूधकी कमी थी क्योंकि बापूका परिवार बढ़ने लगा था। अिसलिअे मैंने गाय वर्धासे भेजनेके बारेमें बापूसे पूछा तो अुन्होंने लिखा

चि. बलवन्तसिंह

हां गाय तो दूसरी अवश्य चाहिये यदि अच्छी हो तो। डॉक्टर कहते हैं अब्बी अच्छे हो जाओगे।

२२-२-३७ सेगांव बापूके आशीर्वाद

मुझे फिर ज्वर आ गया। मैंने बापूजीको लिखा कि मैं रोगी तो बना हूं लेकिन राम मिलेगा या नहीं यह कौन जानता है। विश्वासे राम मिला जिसको जिस भजनका मनन करता हूं। बापूजीने लिखा

चि. बलवन्तसिंह

मेरी कलकी चिट्ठी मिली होगी। बुखार आया वह अब तो गया होगा। घबराहटकी कोओी आवश्यकता नहीं है। धीरजसे सब अच्छा ही हो जायगा। हां किस्मतसे जिसको राम मिले भजन अवश्य मनन करने योग्य है। अगर मच्छर कष्ट देते हैं तो मच्छेरीका अुपयोग करना चाहिये।

२१-२-३७ सेगांव बापूके आशीर्वाद

परस्परावलंबनकी आवश्यकता

मैं वर्धा अस्पतालके अिलाजसे अच्छा होकर बापूजीके पास सेगांव आ गया और बापूजीके साथ सारी बातें हुओी। अेक रोज शामको घूमते समय मैंने बापूजीसे कहा कि मेरे मूल रोजके पथमें कोअी तो था ही आश्रमवाला भी थी जैसा विचार करनेसे पता चला। मैं यह मानने लगा हूं कि मनुष्य दूसरेकी सहायताके बिना अेक क्षण भी नहीं टिक सकता। बापूजीने कहा

ठीक है। जो हम खाते हैं वैसे गेहूं किसी दूसरेने पैदा किया, दुकानदारने नहीं। फर्ज करो कि अगर वह हमको पैसेके बदलेमें गेहूं न दे तो हम क्या करेंगे? और किसीने गेहूं भी पैदा कर लिया तो अुसके लिअे औजार किसने बनाये थे? हम अेक-दूसरेके आश्रित हैं। अगर सेवाकी दृष्टिसे विचार करें तो हम अेक ही हैं। जितना ही नहीं जिनको हम जड़ पदार्थ कहते हैं वैसे जलकी जाति वह और हम सब अेक समान ही हैं।

ब अेक ही जमीनसे पैदा हुअे हैं। जो सेवाभावसे परावलम्बी बनता है
नसे सेवाके स्वाधीन रहता है वह स्वावलम्बी है। मगर जो सेवा करते
वे कुछ कष्ट पड़ने पर दूसरोंकी तरफसे सहायता न मिलने पर नाराज
ोता है वह गिरता है। मान लो कि अेक आदमी प्यासा पड़ा है। अुसके
ाससे सैकड़ों आदमी निकल जाते हैं और कोअी आदमी अुसे पानी नहीं
पिलाता है। अगर अुसे अन पानी न पिलानेवालों पर गुस्सा आये तो
अुसका अज्ञान है। वह समझ ले कि सब लोग अपने अपने काममें लगे हैं।
अगर अीश्वरको मंजूर होगा तो पानी मिल जायगा नहीं तो पड़ा रहूँगा।
आखिर तो कोअी आदमी आता है और पानी पिलाता है। अुसका भी
वह अहसान न मानेगा। अहसान तो वह अीश्वरका मानेगा क्योंकि हम
सब अीश्वरके ही अंश हैं।

ग्रामवासियोंसे बापूकी अपेक्षा

अेक रोज मैंने बापूजीसे पूछा कि आप सेगांवके भविष्यके बारेमें क्या
आशा रखते हैं? आप बार बार कहते हैं कि मेरे बाद सेगांवमें क्या होगा
कौन जाने? तो यहां जो आदमी हैं अुनसे आप क्या चाहते हैं? बापूजीने
कहा

सेगांवमें अेक अच्छी दुकान चले। सबको घानीका तेल मिले। और
भी आवश्यक वस्तुओंके लिये वर्धा न जाना पड़े। गोशाला हो यहांके सब
बच्चोंको दूध मिले। भले दो पैसा या अेक पैसा सेरकी कीमतसे लें।
खेतीकी पैदावार बढ़ाअी जाय। शायद वा न रहे, लीलावती जाय। तुम
तो मुसाफिर हो, नाणावटी है। मगर सब भाग जायेंगे तो मीराबहन तो है
ही। वह तो यहीं मरेगी। तुम सबमें अैक्य नहीं है यह अच्छी बात
नहीं है।

मैंने कहा — किसी कारणसे तो यह प्रश्न अठता है।

बापूजीने कहा "यह भी तो अेक काम है कि हम आपसमें मधुर
सम्बन्ध बांधें। तुमको जितना अक्षरज्ञान तो नहीं है, लेकिन बुद्धिज्ञान तो
है। व्यवहारज्ञान भी है ही। अक्षरज्ञान भी बढ़ा सकते हो।

बादमें मीराबहनकी बात चली। बापूने कहा मीराबहन बहुत गरीबीसे
रह सकती है। अुसकी कहींसे भी शिकायत नहीं आयी कि मीराबहनने
हमको तंग किया। खैर, कुछ भी हो मीराबहन सेगांव नहीं छोड़ेगी।

मित्रमें लीलावतीबहन बीचमें बोल पड़ी और पूछने लगी क्या बात हुआी? बापूजीने हंसकर कहा—यह बात हुआी कि मेरे मरनेके दूसरे ही दिन पहले लीलावतीबहन मामेरी मा बनकररसिह। यह तो मैं जानता हूं कि पहले रोज तो कोअी नहीं मागोगे और झगड़ा भी नहीं करोगे। अेक अेक लकड़ी तो मेरी चिता पर जरूर डालोगे। याद रखना, मुझे तो सेगांवमें ही जलाना है। कोअी कुछ कहे तो कहना कि हमको बापूने सेगांवमें जलानेको कहा है।

ब्रह्मचर्य-सम्बन्धी प्रश्नोत्तर

अिसके बाद ब्रह्मचर्यके अूपर चर्चा हुआी। मैंने कहा — शास्त्र कहते हैं कि सन्तानके लिअे स्त्रीसंग धर्म है बाकी व्यभिचार है और निर्विकार मनुष्य भी सन्तान पैदा कर सकता है। वह ब्रह्मचारी ही है। लेकिन जिसने विकारके अूपर काबू पाया है वह क्या संतानकी अिच्छा करेगा?"

बापूजीने कहा — हां यह अच्छा सवाल है। लेकिन अैसे भी लोग हो सकते हैं जो निर्विकार होने पर भी पुत्रकी अिच्छा रखते हैं।

मैंने कहा — अधिकतर तो संतानकी आड़में कामकी ही तृप्ति करते हैं।

बापूजी — हां यह तो ठीक है। आजकल धर्मज संतान कहां है? मनुकी भाषामें अेक ही संतान धर्मज है, बाकी सब पापज हैं।

मैंने पूछा — कुछ लोग वासनाका क्षय करनेके लिअे विवाहकी आवश्यकता मानते हैं। क्या भोगसे वासनाका क्षय हो सकता है?

बापूजी — हरगिज नहीं।

स्वावलम्बनका पाठ

अेक बार ठंडके मौसममें लोगोंकी संख्या अधिक हो गअी और ओढ़नेके कपड़े कम थे। बापूजीने अेक तरकीब निकाली। अखबारोंकी पुरानी थाड़ियां लेकर अुनके बीच बीचमें कागज रखकर वे रजाअी बना देते और कहते कि कागजसे ठंड रुकती है। जो रजाअीकी मांग करता अुसे कागजकी रजाअी दे देते। अिस प्रकार कम खर्चसे काम कैसे चलाया जा सकता है यही बापूजीका प्रयत्न रहता था। बापूने खुद भी अिस तरहकी रजाअी अिस्तेमाल की थी।

अेक बार अेक पीपीका डाट बनानेके लिअे बापूजीने मुझसे कहा। मैं गया और जो बढ़अी आश्रममें काम कर रहा था अुसको डाट बनानेके लिअे पीपी दे दी। अुसने अेक खूबसूरत-सा डाट बना दिया। मैं पीपी बापूजीको देने गया। बापूजीने डाट देखा तो बहुत खुश हुअे। मैं समझ गया कि बापूजी अिसको मेरा बनाया हुआ मानते हैं अिसीलिअे अितने खुश हो रहे हैं। मैंने बापूजीसे कहा कि यह डाट मैंने नहीं बनाया है। बापूजी गंभीर हो गये और बोले अरे, मैं तो तुझे शाबाशी देना चाहता था लेकिन तूने तो बड़ा गुनाह किया। मैंने कब कहा था कि बढ़अीसे बनवाना। मैंने तो तुझको बनानेके लिअे कहा था। भले डाट खराब ही बनता लेकिन तेरे हाथमें अेक कला तो आती। दोबारा पकड़ना सीखता तुबारा अुससे भी अच्छा बनाता तिबारा अुससे भी अच्छा और अिस तरह डाट बनानेका कारीगर बन जाता। जो काम अपनेको सौंपा गया है अुसकी जवाबदारी दूसरे पर डालना यह तो अच्छी बात नहीं है। मैं बहुत शरमाया और मैंने अपनी भूल कबूल की। पहले जो बात छोटी लगती थी वह अब बहुत बड़ी नजर आती है। बापूजीके अुस डाटके सबकको मैं कभी नहीं भूल सका। अब यह चीज मेरे स्वभावमें दाखिल हो गयी है कि जो काम हमें सौंपा जाय वह हमें ही करना चाहिये। अैसी छोटी छोटी बातोंमें बापूजी हमें अैसा अुपदेश देते थे जिसकी कल्पना आज जितनी आती है अुतनी अुनके सामने आती तो हम अुनसे और भी बहुत कुछ सीख सकते थे।

१३

गोशाला और अुसका परिवार

बापूका प्रेम

बापूजी जहां बैठते थे वहांसे गायें बिलकुल अुनके सामने ही दीखती थीं। यह बापूजीको बहुत प्रिय था। मेरा रिवाज यह था कि जब कोअी नयी गाय या बकरी ब्याती तो अुसका बच्चा सुबह बापूजी घूमने निकलते अुस समय अुनको दिखाता था। बापूजीके साथ मैंने यह शर्त की थी कि घूमने जायें तब गोशालामें होकर ही जायें। जिस वजहसे मैं गोशालाकी सफाअीके बारेमें हमेशा सावधान रहता था। बापूजी बच्चा देखकर खूब खुश होते हंसते बच्चेको प्यार करते और कहते "अरे, तेरा परिवार तो बढ़ता ही जाता है।

अेक बार पूज्य राजाजी (राजगोपालाचार्य) से मेरा परिचय कराते हुअे बापूजीने हंसकर कहा देखो राजाजी मेरे पास भी अेक राजा है। जिसका परिवार रोज बढ़ता रहता है और नित्य नयी माल मेरे सामने पेश करता रहता है। देखो तो सही जिसका गायोंका परिवार कितना बड़ा है! राजाजी मेरी तरफ देखकर हंस दिये।

अेक रोज आदि-निवासके बरामदेमें बापूजी कुछ लिख रहे थे। रातको अेक गाय ब्यायी थी। अुसका बच्चा बापूजीको दिखानेके लिअे मैं वहां ले गया। बच्चा मेरे हाथसे छटककर बापूकी गादी पर चढ़ गया। बापूजी अुसे प्यार करते हुअे हंस रहे थे कि बच्चेने पेशाब करना शुरू कर दिया। जब मैंने अुठानेकी कोशिश की तो बापूजीने कहा "नहीं पेशाब कर लेने दो। मुझे तो संकोच हुआ। लेकिन बापूजी कुछ नहीं बोले बैठ ही हंसते रहे।

मिट्टीका चमत्कार

गोशालामें अेक बछड़ीके मुंहमें पड़ गयी थीं। मैंने अेक रोज बापू बजेके करीब तम्बाकूका चूरा राख और मिट्टीका तेल मिलाकर अुसके शरीरको पोत दिया और मैं आराम करने लगा। थोड़ी देरमें मुझे नींद आ गयी।

जब मैं अेक बजे अुठा तो मैंने देखा कि बकरी बिलकुल बेहोश पड़ी है, मृत्युके बिलकुल नजदीक है। मैं दौड़ता हुआ बापूके पास पहुंचा और कांपते कांपते बोला — मुझसे आज गोहत्याका अपराध हो गया। बापूजीने चौंककर पूछा "क्या हुआ?" मैंने सारा किस्सा सुनाया। बापूजी अुठकर मेरे साथ आये और बकरीको देखकर बोले "हां गलती तो हो गयी है लेकिन क्या किया जाय? अेक अुपाय है यह करके देखो। अगर अिसका जीवन होगा तो बच जायगी। अिसके सारे शरीर पर मिट्टी लगा दो और देखो अिसका क्या परिणाम होता है।" बापूजी यह कहकर चले गये और मैंने अेक बाल्टीमें घोलकर अुसके सारे शरीर पर मिट्टी लगायी। विजयाबहन मेरी मदद कर रही थी।

बापूजीने तो सिर्फ लगानेको ही कहा था पर मैंने १५ मिनटके बाद अुसको साफ कर दिया और दूसरी बार लगा दी। पहली मिट्टीके साथ अुसका तम्बाकूका और तेलका काफी अंश निकल गया। मैंने देखा कि बकरीकी आंख जहां बंद हो गयी थी वहां अुसने पलक अुठाये। मुझे आशा बंधी और मैंने तिबारा मिट्टी लगायी। तिबारा मिट्टी लगाने पर अुसने कान हिलाये। अिस प्रकार मैंने दो तीन बार और मिट्टी लगायी और निकाली। पांच बजे तक बकरी खड़ी हो गयी यद्यपि अभी तक बेहोशीसे ही अिधर अुधर पैर डालती थी। जैसे तैसे मैंने अुसको थोड़ा दूध पिलाया। दूसरे दिन तक वह बिलकुल स्वस्थ हो गयी। अुसके खड़े होनेकी खबर मैंने बापूजीको दी तो वे बहुत खुश हुअे। अुन्होंने कहा — यह मिट्टीकी करामात है।

अिस रोजसे मिट्टीके अूपर मेरा यह विश्वास हो गया कि अुसमें जहर चूसनेकी अजीब ताकत है। अुस बकरीको डॉक्टर या वैद्यकी कोअी दवा बचा नहीं सकती थी अैसा मुझे आज भी लगता है। बादमें वह बकरी बड़ी हुअी और अुसने कअी बच्चे दिये। अुसको जब कभी मैं देखता मुझे मिट्टीकी बात याद आ जाती।

मूक जानवरोंका चिंतन

अेक रोज बापूजीकी बकरी जंगलमें ब्यायी। बकरीने बच्चेकी आधी जितनी चाटी और अुसका नार मुंहसे पकड़कर अितनी जोरसे खींचा कि बच्चेका पेट फट गया और अुसकी आंतें निकल आयीं। बकरी चरानेवाला अुसे लेकर मेरे पास आया। यह दृश्य देखकर मेरे तो होश अुड़ गये। बापूजी

देखोगे तो कहोगे कि तुम सावधानी नहीं रखते हो। आखिर मैं असे लेकर बापूजीके पास गया। असकी करुणाजनक दशा देखकर बापूजीको बहुत ही दया आयी और बोले क्या किया जाय? बकरीने तो प्यारसे ही खाया था लेकिन जैसा परिणाम आ गया तो बकरी बेचारी क्या करे? यह तो पशु है। लेकिन मनुष्य मोहवश अपने बच्चोंको कितना नुकसान पहुंचाते हैं? जिसका भी हमारे पास क्या जिलाज है? मिर्ची-मसाले वाले मिठाओ़ी अरे बीड़ी-तम्बाकू भी अुनको पीना सिखाते हैं या पीने देते हैं। यह अुनकी पेटकी आग निकालना नहीं तो और क्या है? यह तो मैं दूसरी बात पर गया। अब तो जिसे सुशीलाके सुपुर्द करो। देखो वह क्या कर सकती है। अुसकी डॉक्टरीकी भी परीक्षा हो जायगी। देखें वह सिर्फ मनुष्यका ही जिलाज कर सकती है या हमारे पशुधनका भी।

मैं तुरन्त दवाखानेमें जो पास ही आखिरी-निवासमें था असे सुशीला-बहनके पास ले गया। सुशीलाबहनने अुसकी आंतें अंदर करके पेटके टांके लगा दिये। मैंने बापूजीको दिखाया तो बोले ठीक है अगर जिसकी जिन्दगी होगी तो बच जायगा। तुमसे जो बन सका किया और जिसकी सेवा भी करोगे। आगे हमको अनासक्तिकी साधना करनी है। अगर अब यह मर भी जाय तो दुःख क्या करना?

मुझे लगता था बापूजी मुझे डांटेंगे कि जब तुमको पता था कि बकरी घ्यानवाली है तो तुमने सावधानी क्यों नहीं रखी? लेकिन बापूजीने मेरी भूलकी तरफ जिशारा भी नहीं किया अुलटे मुझे आश्वासन दिया कि मैं जिसका दुःख न मानूं। साथ ही बहुतसा अुपदेश भी दे गये। मैं मन ही मन बापूजीके मधुर स्नेह और अुपदेशका मनन करता हुआ गोशालामें आया। और जितनी संभाल संभव थी अुतनी मैंने अुस बच्चेकी रखी। लेकिन आखिर वह दो-तीन रोजमें मर गया।

अेक रोज अेक गाय ज्यादा खा गयी तो अुसके बच्चेने गोबर नहीं किया और अुसका पेट फूल गया। मैंने बापूजीको खबर दी तो बोले जाओ सुशीलाको पकड़ो। मैं सुशीलाबहनके पास गया और अुन्हें गोशालामें ले गया। अुन्होंने दवा दी और पानीमें घोलकर पिलानेको कहा। मैंने पिला दी। दवा पिलानेके या देरकी ही गर्मीसे अुसके मुंहमें झाग हो गये। सुशीलाबहनने असे डिफ्थेरिया रोगका नाम दिया और छूतका रोग बताया। गोशालासे अलग रखनेकी

सलाह दी। मैंने अुसे गोशालाके पीछे खेतमें अेक आमके पेड़के नीचे रख दिया और खुद भी अुसके पास सोने लगा। अुसका पेट बार बार फूलता था जिसलिअे मुझे अेनीमा देना पड़ता था। खुराकमें थोड़ा मांका दूध देता मोसम्बीका रस भी देता था। किसीने बापूजीके पास शिकायत की कि बलवंतसिंह तो गायके बच्चेको भी मोसम्बीका रस पिलाता है। बापूजीने कहा "अरे, अुसके लिअे तो गायका बच्चा मनुष्यके बच्चेसे भी प्यारा है। मैं अुसे मोसम्बीका रस पिलानेसे कैसे रोकूं? जब यह बात मेरे कान पर आयी तो मैं बापूजीके प्रेमसे अितना दब गया कि अपने आपको खोया-सा अनुभव करने लगा। मेरी गोसेवाकी भावनाको अितने मधुर और जीवनदायी जलका सिंचन मिला यह मेरे पूर्वजोंके पुण्यका ही प्रताप हो सकता है। बापूजी जिस प्रकार आश्रमवासी रोगियोंकी सुबह घूमनेके बाद देख-भाल करते थे अुसी प्रकार मेरे गायके बीमार बच्चेको भी देखते थे। अुसके बारेमें सब हाल पूछते थे। अुस बच्चेकी बीमारीके कारण ही मैं गांधी-सेवा-संघकी सभामें जानेके लिअे बापूजीसे अिजाजत नहीं मांग सका था।

माली छोटेसे पौधेको जिस सावधानीसे सींचता है अुससे भी अधिक सावधानीसे बापूजी हमारी शुभ भावनाओंको सींचते थे और अशुभ भावनाओंको डॉक्टरके ऑपरेशनकी तरह काट फेंकते थे।

गोशाला और खेतीके लिअे नियम

अुस समय मने गोशालाके लिअे अैसा नियम बनवाया था कि जितने भी आश्रमवासी हैं वे सब आधा घंटा रोज गोशालाको दें और अुसकी सफाअी करें। सब लोग रोज आधा घंटा गायों और अुनके बच्चोंको साफ करते थे। अुस समय विजयाबहन पटेल खास तौरसे गोशालामें मेरी मदद करती थीं। खेतीकामके लिअे भी मुझे कभी जरूरत पड़ती तो बापूजीके पास मैं जाता और बापूजी सबको खेतीकामके लिअे भेज देते थे।

अेक बार हमारा गेहूं खेतमें पका खड़ा था। बादल हो रहे थे। बारिशका डर था। मजदूर नहीं मिल रहे थे। मने बापूजीसे कहा तो अुन्होंने कहा कि मुझे छोड़कर सबको ले जाओ। अुनमें राजकुमारीबहन महादेवभाअी विजयलक्ष्मी पंडित तथा दुर्गाबहन भी थीं। खास तौरसे दुर्गाबहनका चित्र मैं नहीं भूल सकता हूं। अुनका शरीर भारी था। लेकिन अुन्होंने सबके साथ बड़े अुत्साह और प्रेमसे गेहूं काटनेमें पूरी पूरी मदद की।

राजकुमारीबहन जहां तक मेरा खयाल है १९१५ में जब बापूजी दिल्लीकी हरिजन-बस्तीमें अेक महीना ठहरे थे तब मिली थी। बीच बीचमें भंगवाड़ीमें भी आती थीं। सेवाग्राममें अुनका बापूके पास रहनेका समय अधिकाधिक बढ़ता गया और फिर करीब करीब वे बापूके पास ही ठहर गयीं।

वर्षाका कष्ट

गोशालामें मकानोंकी कुछ कमी थी। मैंने कुछ नये मकान बनानेकी मांग की तो बापूजीने गरीबीसे काम चलानेका अुपदेश दिया। यह मुझे रुचा नहीं। लेकिन यह सोचकर मैं चुप रहा कि कष्ट होने पर देखा जायगा। बरसातके दिन थे। पानीकी बड़ी कमी थी। सांपमें हवा भी थी। गोशालामें बौछार आ रही थी और अूपरसे भी पानी टपक रहा था। मैंने बापूजीको लिखा

परम पूज्य बापूजी

आपने मेरे मकानका बजट स्वीकार न करके मुझे गरीबीसे काम चलानेका अुपदेश दिया। आपकी आज्ञाका अुल्लंघन तो कैसे किया जाय? लेकिन आपके गरीबीसे रहनेके सिद्धान्तको गाय बेचारी क्या समझे? वह तो चुपचाप कष्ट ही सह सकती है। आप आरामसे सुखी कुटियामें बैठे हैं। आपके पास अनेक सेवक-सेविकायें सेवाके लिये प्रस्तुत हैं। कहीं अेक भी बूंद टपके कि तुरन्त अुसे रोकनेके लिये दौड़ पड़ेंगे। लेकिन यहां मेरी और गायोंकी पुकार कौन सुने? चारों ओरसे आनेवाली पानीकी बौछारसे गोशालामें पानी ही पानी हो रहा है। गायें ठंडसे ठिठुर रही हैं। अैसे समयमें मेरी क्या दशा हो रही होगी इसकी कल्पना आप कर सकते हैं। विशेष क्या लिखूं?

गायोंके दुःखसे दुःखी
बलवन्तके सादर प्रणाम

मेरी टेर सीधी ठिकाने पर जा पहुंची। थोड़ी देरमें ही श्री रामदासजी गुलाटी* बरसाती कोट पहनकर गोशालामें आ पहुंचे और बोले मुझे बापूजीने अभी हाल बुलाकर आपका पत्र पढ़ाया और कहा कि अभी जाकर देखो

* सीमाप्रान्तके अेक बापूभक्त अिंजीनियर। अिनका ज्यादा परिचय प्रकरण १५ में देखिये।

अुसकी गायोंका क्या हाल है तथा जो करना हो वह जल्दीसे जल्दी करवा दो। अुसका कहना ठीक है। मैं तो महात्मा ठहरा अिसलिअे मेरे सुख-दुःखकी चिन्ता तो तुम सब लोग रखते हो लेकिन गायके सुख-दुःखकी चिन्ता अुसके बिना कौन करे? तो अब आप बतायें कि आप क्या चाहते हैं।" यह बात सुनकर तथा बापूजीकी तत्परता देखकर मेरे आनन्दका पार न रहा। मैंने अपनी कठिनाअी रामदासभाअीके सामने रख दी। अुसके अनुसार अुन्होंने नये मकान बांधनेकी योजना बनाकर बापूके सामने पेश कर दी और तत्काल टट्टे बंधवाकर जो सुविधा की जा सकती थी वह करवा दी। थोड़े दिनोंमें ही मेरी कल्पनाके अनुसार मकान बनकर तैयार हो गये।

गोपरिवारकी वृद्धि

अिस समय हमने गांवकी गायोंका दूध भी खरीदना शुरू कर दिया था। पहले तो गीता मोहनाश्रममें ही केले थे लेकिन बादमें पारनेरकरजीने आश्रमके दरवाजेमें प्रवेश करते ही बायें हाथको जो झूंपा-सा मकान है अुसे दूधघर बनाया। आगे चलकर अुसमें भी काम नहीं चला तो बड़ा दूधघर तालीमी संघकी ओर बनाना पड़ा। गावमें अब काफी दूध होने लगा था। तालीमी संघका भी विस्तार बढ़ा और चरखा-संघ भी आ गया। अिस कारणसे दूधकी खपत भी काफी होने लगी थी। आश्रमवासियोंकी संख्या ज्यों ज्यों बढ़ती जाती थी त्यों त्यों गायोंकी संख्या भी बढ़ानी पड़ती थी।

बापूजी चाहते थे कि व्यक्तिगत गाय कोअी न रखे। अिसलिअे आर्यनायकम्‌जी और मदनवाड़ीसे अबेरभाअीकी गाय भी आश्रमकी गोशालामें आ गयी।

गायका समझदारी और स्नेह

गायकी समझदारी और स्नेहके विषयमें मैं पहले भी विश्वास रखता था लेकिन अुसका प्रत्यक्ष अनुभव तभी हुआ जब सेवाग्रामकी गोशालाका संचालन करते समय मेरा सारा ध्यान गायों पर ही केन्द्रित हो गया। मैं तुफानीसे तुफानी गाय खरीदकर ले आता और थोड़े ही दिनोंके स्नेहसे वह मेरे साथ हिल जाती और मेरी भाषा (संकेत) समझने लगती। अुसके कुछ मीठे अनुभव यहां देता हूं।

अेक बार आश्रममें दूधकी कमीको पूरा करनेके हेतुसे आठ-दस गायें खरीदनेके लिअे मैं और पारनेरकरजी मगनभाअी जिनकी पांढरकवडा तहसीलमें

गये। वहां मैंने अेक गाय पसन्द की। गायवालेने साठ रुपये मांगे। हमने पचपन रुपये कहे लेकिन सौदा न बना। हम आगे बढ़ गये। बीस पच्चीस मील जाकर हमने अेक वैसी ही गाय पचास रुपयेमें खरीद ली। मेरा मन पहली गायमें भी फंस गया था। दोनोंकी सुन्दर जोड़ी बन सकती थी। अिसलिअे साठ रुपये देनेके लिअे पारनेरकरजीकी सहमति लेकर मैं अकेला ही वहां गया। गाय खरीद ली। लेकिन लेकर चलते समय वह छूट कर भाग गअी और दिनभर नहीं मिली। शाम तक भी न लौटी तो गायवालेको संदेह हो गया कि कहीं घेरने मार न दी हो। अिसलिअे अुसने रुपये वापस करनेसे अिनकार कर दिया। दिनमें वह रुपये वापस करनेको राजी था। दूसरे दिन गाय मिल गअी और अुसे अेक बैलके साथ गलेमें बांधकर अुसने बीस मील दूरके अेक गांव तक पहुंचा दिया। गाय पहली ब्यातकी थी और मजबूत थी। पारनेरकरजी अुस गांवसे आगे चल पड़े थे लेकिन वह मालिक अपना बैल लेकर वहींसे लौट गया। मैंने गाय पर हाथ फेरा और रामनाम लेकर अुसे वहांसे खोलकर अेक स्कूलमें ले जाकर बांध दिया। दूसरे दिन अुस गांवमें अेक और आदमी व बैलके लिअे खोज की लेकिन सफलता नहीं मिली। सिर्फ अेक आदमी वह भी जमींदारकी जबरदस्तीके कारण मिला। अुसे साथ लेकर मैं चल तो दिया लेकिन शीघ्र ही यह जानकर कि अुसकी स्त्री सख्त बीमार है और अुसे वहां जाना जरूरी है मैंने अुसे छोड़ दिया। मैंने फिर रामनाम लेकर गायसे बात की और अुसे लेकर अकेला ही चला। गाय चुप-चाप मेरे पीछे चली आयी और दोपहर तक हम वरोरा पहुंच गये जहां पारनेरकरजी ठहरे थे। जो गाय मैं ले आया था वह वहां ब्या गयी। तीन और गायें खरीदीं जिससे कुल पांच गायें हो गयीं। वहां सेवाग्रामसे हमने बैलगाड़ी मंगा ली थी। पारनेरकरजी मोटर-बससे सेवाग्राम चले गये और मैं दूसरे दिन छोटे बच्चों और गायोंको लेकर सेवाग्रामके लिअे रवाना हुआ। हम अुसी दिन सेवाग्राम पहुंचना चाहते थे। रास्तेमें गांवकी अेक बागमें लोगोंकी टोली गायोंको देखनेके लिअे जमा हुअी। जिससे तीन गायें चमक कर भाग गयीं। अुनका पीछा करनेमें मुझे कंटीले तारोंमें अुलझ जानेसे गहरी चोट आ गयी। लेकिन सौभाग्यसे सवेरे गांवके पास ही वे तीनों गायें मिल गयीं और सेवाग्राम पहुंच गयीं। मैं अेक मास तक बिस्तरमें रहा। अुसकी निशानी अब तक मौजूद है।

छोटे रुपयेवाली गायका नाम चन्द्रभागा रखा और दूसरीका नाम साबरमती। ये दोनों नाम साबरमती आश्रमकी स्मृतिमें रखे गये थे। चन्द्रभागा नदी आश्रमके पास ही साबरमतीमें मिलती है। चन्द्रभागा सफेद कपड़ोंसे भड़कती थी और हमला कर बैठती थी। अेक दिन अेक दर्शक महाशय मेरे साथ खड़े बातें कर रहे थे। अुधरसे गायें चरकर लौटीं। चन्द्रभागा अुस दर्शक पर दौड़ पड़ी। आगेके दोनों पैर अुठाकर वह अुन पर छलांग मारनेवाली ही थी कि मेरी आवाज 'अरे, चन्द्रभागा यह क्या करती है?' अुसने सुनी और लौट पड़ी। वे भाअी अचम्भेमें रह गये कि अभी अभी तो यह शैतानकी तरह चढ़ी आ रही थी और तुरन्त ही आदमीकी तरह रुक गयी। अुनके लिअे यह अद्भुत घटना थी। मुझे भी पक्का विश्वास तो नहीं था कि चन्द्रभागा मेरा कहना मान ही लेगी। परन्तु मैं खाली हाथ खड़ा था। ये शब्द मेरे मुंहसे निकल गये अुनके सिवा और करता भी क्या? चन्द्रभागाने अुस दिन मेरी बात मानकर गायकी समझदारीमें मेरी जो श्रद्धा थी अुसे और बढ़ा दिया।

अेक दिन बछड़े चरानेवाले लड़केने आकर कहा कि भाअी बलराम (अेक बछड़ेका नाम) कहीं खो गया है, मिलता नहीं है। मैं खोजने चला। काफी दूरी पर गांवके पशु चर रहे थे। मैंने दूरसे पुकारा 'अरे बलराम तू कहां है?' अुत्तरमें अुसने हुंकार की। मैंने फिर कहा 'तू वहां क्यों भटकता है?' अिस शब्द पर वह दौड़ा, अुसके बीचमें अेक कांटेदार बाड़ थी अुसे अेक छलांगमें पार करके मेरे पास आ गया और मेरे पीछे पीछे चलने लगा।

अेक दिन अेक बछड़ी बीमार हो गयी थी। अुसे ज्वर आ गया था। अुसने अपनी मांके पास न जाकर मेरे पास बैठना पसन्द किया। अिसलिअे मैंने तख्ते पर बिस्तर लगाया ताकि वह जमीन पर बिछी हुअी चटाअी पर बैठ सके। लेकिन जब वह तख्ते पर मुंह रखे बिना नहीं रही तब तो लाचार होकर मुझे चटाअी पर सोना पड़ा। फिर वह मेरे पास शान्तिसे बैठी।

अेक बैलके पैरमें चोट लगी थी। वह बैठा था। जब मैं दवा लेकर अुसके पास गया तो वह अुठकर खड़ा हो गया। मैंने कहा 'भले आदमी (बैल) मैं तो तेरे पैरमें लगानेके लिअे दवा लाया और तू खड़ा हो गया। बैठ जा।' वह तुरन्त बैठ गया। जब मैंने अुसका पैर पकड़ा तो था।

अुसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और दवा लगाकर पट्टी बांधने तक चुपचाप बैठा रहा। मेरे छूटते ही वह फिर खड़ा हो गया।

सन् १९४४ में मैं बंगालमें पूज्य सतीशबाबू (दादा) के पास अुनके लिये गायें खरीदकर अुनकी गोशालाका काम करनेके लिये गया था। अेक देहातमें जहां अुनका काम चल रहा था अेक भाभी अपने बीमार बैलको लेकर आया और मुझसे बोला दादा कहते हैं कि आप पशुओंकी भाषा पहचानते हैं। यह सुनकर पहले तो मुझे दादा पर गुस्सा आया कि वे अैसी गलत बातें गांवके भोलेभाले लोगोंको क्यों कहते होंगे। लेकिन जरा सोचने पर मैंने समझ लिया कि अुनका आशय जानवरका दर्द समझ लेनेसे है। तब मैंने अुत्तर दिया कि दादा सच कहते हैं और अुसे अुपचार बता दिया। वह बैल अच्छा हो गया। तबसे वहांके लोग मुझे गोरुबाबूके नामसे पुकारने लगे (गोरु अर्थात् पशु)। मुझे भी यह नाम प्रिय लगा। यह बात सच है कि मेरा दिल आपके साथ कितना अेकरूप हो गया है कि गाय जब हरी हरी घास चुगती है तब मुझे तृप्तिका अनुभव होता है।

१४

आश्रमका विस्तार

आश्रम-परिवारमें वृद्धि

अेक रोज परचुरे शास्त्री दरवाजेके पास छिपे बैठे थे। मीराबहनने अन्दर आनेको कहा। वे आकर खड़े हो गये और बापूजीसे कहने लगे "मुझे तो आपके सान्निध्यमें रहना है और यहीं मरना है।" अुनको कुष्ठ रोग हो गया था। कहने लगे मुझे कुछ नहीं चाहिये। अेक झाड़के नीचे पड़ा रहूंगा। दो रोटी मिल जायें तो बस है। बापूजी गंभीर विचारमें पड़ गये। अुनको हां भी कैसे कहें? जितने लोग आश्रममें आते हैं जाते हैं और रहते हैं। किस तरह अिनको संभालेंगे? और अुनको ना भी कैसे कहें? लेकिन दूसरे दिन बापूजीने कहा कि अगर मैं आज शास्त्रीजीको ना कह देता हूं तो अपने धर्मसे चूकता हूं। मेरी कसौटी करनेको ही ईश्वरने अिन्हें भेजा है। तब बापूजीने अुन्हें आश्रममें रखनेका निश्चय कर लिया। आश्रमके पास ही

अुनके लिअे अेक झोंपड़ी बनवा दी और बापूजी बड़े प्रेमसे अुनकी सार संभाल करने लगे। जब अुनका रोग भयानक स्थितिमें पहुंचा तो बापूजीने स्वयं ही अुनकी मालिश करना भी शुरू कर दिया।

धीरे-धीरे बापूजीको यह महसूस होने लगा कि महादेवभाअी यहीं रहें तो अच्छा क्योंकि वरधा आने-जानेमें अुनका काफी समय और शक्ति खर्च होती थी। अिसलिअे महादेवभाअीके लिअे अलग मकान बनानेका निश्चय हुआ। फिर किशोरलालभाअीके लिअे भी अेक मकान बनवाया गया। आश्रमके कुअेंके पानीमें कुछ खराबी थी अिसलिअे सीमेंट कांक्रीटका अेक नया कुआं बनाया गया जो अभी तालीमी संघके अधिकारमें है।

नअी तालीम

आरंभमें बापूजी नअी तालीमका काम भी आश्रमके मारफत ही करना चाहते थे। अुसके लिअे जरूरी मकान बनाये गये जो आज तालीमी संघमें विलीन हो गये हैं। शिक्षकका काम भी मुन्नालालभाअीको सौंपा गया था। अिसलिअे अुनका नाम गुरुजी पड़ा था जो सेवाग्राममें आज भी प्रचलित है। श्री अमृतलाल नाणावटीने भी कुछ दिन यह काम किया। फिर तो बड़े गुरुजी आर्यनायकम्‌जीको यह सारा काम सौंप दिया गया। अुनका मकान तो बन ही गया था। आश्रमने अुनाअी बुनाअी और पढ़ाअीके लिअे जो मकान बनाये थे वे भी अुनको सौंप दिये गये। आश्रमको जो जमीन जमनालालजीने सौंप दी थी अुसका दानपत्र आश्रमके नाम अभी तक नहीं लिखा गया था। अुस जमीनमें से ८ अेकड़ जमीनका दानपत्र तालीमी संघके नाम जमनालालजीने लिख दिया। तालीमी संघका विस्तार होता जा रहा था और यह आश्रमकी तरफ बढ़ता जा रहा था। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जीकी जमीन चाहिये मकान चाहिये की मांग बढ़ती जा रही थी। अिससे तंग आकर अेक रोज मैंने बापूजीसे कहा आखिर अिसकी कहीं हद भी है? ये तो रोज रोज मांगते ही रहते हैं।"

बापूजीने कहा कि हमको तो अपरिग्रह-व्रतका पालन करना है। जो दूसरोंको चाहिये वह हमको नहीं चाहिये। अुनको तो नअी तालीमका काम मैंने सौंपा है। अिसलिअे अुनको आश्रमसे जो चाहिये वह देनेको मैंने कह दिया है। और हमारा दुनियामें है भी क्या? जिस जगह हम बैठे हैं वह भी हमारी नहीं है। हमको

अुसने अपनी आँखें बन्द कर लीं और दवा लगाकर पट्टी बांधने तक चुपचाप बैठा रहा। मेरे हटते ही वह फिर खड़ा हो गया।

सन् १९४४ में मैं बंगालमें पूज्य सतीशबाबू (दादा) के पास अुनके लिये गायें खरीदकर अुनकी गोशालाका काम करनेके लिये गया था। अेक देहातमें जहां अुनका काम चल रहा था अेक आदमी अपने बीमार बैलको लेकर आया और मुझसे बोला दादा कहते हैं कि आप पशुओंकी भाषा पहचानते हैं। यह सुनकर पहले तो मुझे दादा पर गुस्सा आया कि वे कैसी गलत बातें गांवके भोलेभाले लोगोंको क्यों कहते होंगे। लेकिन जरा सोचने पर मैंने समझ लिया कि अुनका आशय जानवरका दर्द समझ लेनेसे है। तब मैंने अुत्तर दिया कि दादा सच कहते हैं और अुसे अुपचार बता दिया। वह बैल अच्छा हो गया। तबसे वहांके लोग मुझे गोरुबाबूके नामसे पुकारने लगे (गोरु अर्थात् पशु)। मुझे भी यह नाम प्रिय लगा। यह बात सच है कि मेरा दिल गायके साथ अितना अेकरूप हो गया है कि जब जब हरी हरी घास चुगती है तब मुझे तृप्तिका अनुभव होता है।

१४

आश्रमका विस्तार

आश्रम-परिवारमें वृद्धि

अेक रोज परचुरे शास्त्री द्वारके पास आकर बैठे थे। मीराबहनने अन्दर आनेको कहा। वे आकर खड़े हो गये और बापूजीसे कहने लगे मुझे तो आपके सान्निध्यमें रहना है और यहीं मरना है।” अुनको कुष्ठ रोग हो गया था। कहने लगे मुझे कुछ नहीं चाहिये। अेक झाड़के नीचे पड़ा रहूंगा। दो रोटी मिल जायें तो बस है। बापूजी गंभीर विचारमें पड़ गये। अुनको हां भी कैसे कहें? जितने लोग आश्रममें आते हैं आते हैं और रहते हैं। किस तरह अनको संभालेंगे? और अुनको ना भी कैसे कहें? लेकिन दूसरे दिन बापूजीने कहा कि अगर मैं आज शास्त्रीजीको ना कह देता हूं तो अपने धर्मसे चूकता हूं। मेरी कसौटी करनेको ही भीश्वरने अिन्हें भेजा है। तब बापूजीने अुन्हें आश्रममें रखनेका निश्चय कर लिया। आश्रमके पास ही

सदा नवी तालीमका ही चिन्तन करती है। मेरी स्वराज्यकी कल्पना भी तो नवी तालीममें ही छिपी है। सिर्फ अंग्रेज यहांसे चले जाय और हम जैसे हैं वैसे ही रहें तो वह स्वराज्य मेरे क्या कामका? मेरी नवी तालीमकी व्याख्या यह है कि जिसको नवी तालीम मिली है मुझे अगर गादी पर बिठाओगे तो वह फूलेगा नहीं और झाड़ देोगे तो शरमायेगा नहीं। असके लिये दोनों काम अेक ही कीमतके होंगे। असके जीवनमें फिजूलके मौजशौकका तो स्थान हो ही नहीं सकता है। असकी अेक भी क्रिया अनुपयोगी और अनुत्पादक न होगी। नवी तालीमका विद्यार्थी बुद्धू तो रह ही नहीं सकता। क्योंकि असके प्रत्येक अंगको काम मिलेगा। असकी बुद्धि और हाथ साथ साथ चलेंगे। जब लोग हाथसे काम करेंगे तो बेकारी और भुखमरीका तो सवाल ही नहीं रहेगा। मेरी नवी तालीम और ग्रामोद्योग अेक ही सिक्केकी दो बाजुअें हैं। अगर ये दोनों सफल होंगे तो ही सच्चा स्वराज्य आयेगा।

और, तुमको तो मैं यह समझाना चाहता हूं कि आर्यनायकम्‌जी जो मांगें वह हमें देना है और यह समझकर देना है कि आखिर यह काम भी हमारा ही है। अगर असके लड़के खेती और गोशालामें काम मांगें तो तुमको देना ही पड़ेगा। क्योंकि जब मैं तालीमको अनिवार्य बनानेकी बात करता हूं तो वह तालीम स्वावलम्बी होनी चाहिये। सरकार तो जितने स्कूल खालना भी चाहे तो आज असके लिये शक्य नहीं है। आजकी बात तो छोड़ ही दो क्योंकि अंग्रेजोंको हमारे शिक्षण और स्वावलम्बनकी कहां पड़ी है। लेकिन स्वराज्य-सरकार भी रूपांतर नहीं कर सकेगी। हां नवी तालीमसे रूपांतर जरूर हो सकता है। आजके शिक्षाशास्त्री कहते हैं कि शिक्षाका खर्च विद्यार्थियोंसे निकलवाना योग्य नहीं है, निकलेगा भी नहीं। मैं कहता हूं कि तब सबको शिक्षित करनेकी बात भूल जाओ। जब आप गांवमें स्कूल चलाना है तो असको अपना खर्च निकालना ही होगा। आज यह खर्च भले कुछ कम भी निकले लेकिन अंतमें हमें शिक्षाको स्वावलम्बी बनाना ही होगा। यह अलग बात है कि सब अेक ही प्रकारका काम नहीं सीखेंगे। हमारे गांवोंमें तो अनेक अुद्योग पड़े हैं। आज अुनमें सुथार भी तो किसीको नहीं सूझते हैं। नवी तालीमका विद्यार्थी सोचेगा — अगर अेक घंटेमें १ सेर कपास रेंजी (ओटी) जाती है तो हम दो सेर कैसे रेंजें? अरे, यह तुम्हारी गायका दूध कैसे बढ़े यह भी सोचेगा। खेतीकी पैदावार बढ़ायेगा तब तुम

और यह जमीन भी कहां रहनेवाली है? हमारे शरीरकी तो राख हो जायगी। वह भी मुट्ठीभर! यह कहते हुअे बापूजीने मुट्ठी बांधी मुंहके सामने हाथ खोलकर जोरसे फूंक मारी और फर्र् आवाज किया। और बोले: वह राख भी कहां रहनेवाली है? यों अुड़ जायगी।" और हंस पड़े।

मैं गया तो था शिकायत करने क्योंकि जमीन और मकान छोड़ना सबसे अधिक मुझे ही कष्टदायी था। मुझे अुनकी मांग अनुचित लगती थी। लेकिन मेरा पासा अुलटा ही पड़ा। बापूजीने तो ज्ञान और वैराग्यकी कथा छेड़ दी। फिर बोले "देखो यह नयी तालीमका काम मेरे जीवनका आखिरी काम है। अगर अिसे भगवानने पूरा करने दिया तो हिन्दुस्तानका नकशा ही बदल जायगा। आजकी तालीम तो निकम्मी है। जो लड़के स्कूल-कॉलेजोंमें शिक्षा पाते हैं अुनको अक्षरज्ञान भले ही आता हो लेकिन जीवनके लिअे अक्षरज्ञानके सिवा और भी कुछ चाहिये। अगर यह अक्षरज्ञान हमारे दूसरे अंगोंको निकम्मा बना दे, तो मैं कहूंगा मुझे तुम्हारा यह ज्ञान नहीं चाहिये। हमको तो लुहार चाहिये सुतार चाहिये तेली चाहिये राज चाहिये सिपाही चाहिये नाचनेवाला और मजदूर चाहिये। सारांश यह कि सब प्रकारके शरीर-श्रम करनेवाले चाहिये और अुसके साथ साथ अक्षर ज्ञान भी सबको चाहिये। जो ज्ञान मुट्ठीभर लोगोंके पास ही हो वह मेरे कामका नहीं है। अब सवाल यह है कि सबको यह सब ज्ञान कैसे मिले? अिस विचारमें से नयी तालीमका जन्म हुआ है। मैं जो कहता हूं कि नयी तालीम सात सालके बच्चेसे नहीं मांके गर्भसे आरम्भ होनी चाहिये — अिसका रहस्य तुम समझ लो। अगर मां परिश्रमी होगी विचारवान होगी व्यवस्थित होगी संयमी होगी तो बच्चे पर अिसका संस्कार मांके गर्भसे ही पड़ेगा।

तुमने तो अभिमन्युकी कथा पढ़ी है न? जो अुसका रहस्य है वही नयी तालीमका है। यह अलग बात है कि अभिमन्युका जमाना हिंसाका था। लेकिन हमको तो कविकी मूल कल्पनाको ही लेना है, बाकीको फेंक देना है। तो मैं यह कह रहा था कि जब मैंने यह काम आशादेवी और आर्यनायकम्‌जीको सौंपा है तो मैं यह सुनना नहीं चाहता कि बापूने हमको यह सुविधा नहीं दी अिसलिअे हम जो करना चाहते थे वह नहीं कर सके। हां अुनको भी अपना स्वभाव बदलना होगा और मैं देख रहा हूं कि वह बदल भी रहे हैं। आशादेवी तो जगतकी माता है। बच्चों पर कितना प्यार करती है और

सदा नयी तालीमका ही चिन्तन करती है। मेरी स्वराज्यकी कल्पना भी तो नयी तालीममें ही छिपी है। सिर्फ अंग्रेज यहांसे चले जायं और हम जैसे हैं वैसे ही रहें तो वह स्वराज्य मेरे क्या कामका? मेरी नयी तालीमकी व्याख्या यह है कि जिसको नयी तालीम मिली है, उसे अगर गादी पर बिठाओगे तो वह फूलेगा नहीं और झाड़ू देंगे तो शरमायेगा नहीं। उसके लिये दोनों काम अेक ही कीमतके होंगे। उसके जीवनमें फिजूलके मौजशौकका तो स्थान हो ही नहीं सकता है। उसकी अेक भी क्रिया अनुपयोगी और अनुत्पादक न होगी। नयी तालीमका विद्यार्थी बूढ़ा तो रह ही नहीं सकता। क्योंकि उसके प्रत्येक अंगको काम मिलेगा। उसकी बुद्धि और हाथ साथ साथ चलेंगे। जब लोग हाथसे काम करेंगे तो बेकारी और भुखमरीका तो सवाल ही नहीं रहेगा। मेरी नयी तालीम और ग्रामोद्योग अेक ही सिक्केकी दो बाजुयें हैं। अगर ये दोनों सफल होंगे तो ही सच्चा स्वराज्य आयेगा।

“और, तुमको तो मैं यह समझाना चाहता हूं कि आर्यनायकम्‌जी जो मांगें वह हमें देना है और यह समझकर देना है कि आखिर वह काम भी हमारा ही है। अगर उनके लड़के खेती और गोशालामें काम मांगें तो तुमको देना ही पड़ेगा। क्योंकि जब मैं तालीमको अनिवार्य बनानेकी बात करता हूं तो वह तालीम स्वावलम्बी होनी चाहिये। सरकार तो जितने स्कूल खोलना भी चाहे तो आज उसके लिये समय नहीं है। आजकी बात तो छोड़ ही दो क्योंकि अंग्रेजोंको हमारे विकास और स्वावलम्बनकी कहां पड़ी है। लेकिन स्वराज्य-सरकार भी छूमंतर नहीं कर सकेगी। हां नयी तालीमसे छूमंतर जरूर हो सकता है। आजके शिक्षाशास्त्री कहते हैं कि शिक्षाका खर्च विद्यार्थियोंसे निकलवाना योग्य नहीं है, निकलेगा भी नहीं। मैं कहता हूं कि तब सबको शिक्षित करनेकी बात भूल जाओ। जब गांव गांवमें स्कूल चलाना है तो उसको अपना खर्च निकालना ही होगा। आज यह खर्च भले कुछ कम भी निकले लेकिन अंतमें हमें शिक्षाको स्वावलम्बी बनाना ही होगा। यह अलग बात है कि सब अेक ही प्रकारका काम नहीं सीखेंगे। हमारे गांवोंमें तो अनेक उद्योग पड़े हैं। आज उनमें सुधार भी तो किसीको नहीं सूझते हैं। नयी तालीमका विद्यार्थी सोचेगा — अगर अेक अेकड़में १ सेर कपास देती (बोंडी) आती है तो हम दो सेर कैसे देवें? अरे, यह तुम्हारी गायका दूध कैसे बढ़े यह भी सोचेगा। खेतीकी पैदावार बढ़ायेगा तब तुम

मुझे गोशाला और खेतीमें काम क्यों न सौंपे ? अिसीलिअे मैं कहता हूँ कि हमारे सब काम अेक-दूसरेसे अलग किये ही नहीं जा सकते। अेक कोअी पानीका भी मोहताज रहे अैसा विद्यार्थी मेरे किस कामका ?

बापूजीकी बातमें रस तो आ रहा था लेकिन मेरे पास जितना लंबा अुपदेश सुननेका समय नहीं था। खेतोंमें आदमियोंको काम बताना था। मैंने जैसे तैसे पीछा छुड़ाया और अपने काम पर चला गया। आज मैं सोचता हूँ तो लगता है कि सचमुच ही बापूजीकी मुट्ठीभर राख अैसी अुड़ी कि सारे देशके तीर्थस्थानों पर जा गिरी। जब मैं हिमालयमें श्रीकेदारनाथजी पहुँचा और पंडेने बताया कि यहां अुस कुण्डमें बापूजीकी भस्म प्रवाहित की गयी थी, तो वहां बर्फ जमी नदीके अूपरसे जानेका खतरा अुठाकर भी मैं अुस स्थानका दर्शन करने गया। अुस सरोवरको देखकर और बापूजी तथा किशोरलाल-भाअीका स्मरण करके मुझे रोमांच हो आया और वहां थोड़ी देर बैठकर दोनोंको मैंने श्रद्धांजलि अर्पण की।

अुस रोज नयी तालीमके बारेमें जो कुछ बापूने कहा था आज सेवाग्राममें अुसका काफी विकास हो गया है। महापुरुषोंके शुभ संकल्प व्यर्थ नहीं जाते। दिन-प्रतिदिन शुभ संकल्प पर मेरी निष्ठा बढ़ती ही जा रही है। बापूजी जो बात हमारे लिअे अच्छा समझते थे अुसे हमारे मगजमें ठूंस-ठूंसकर भर देनेकी कोशिश करते थे।

तुकाराम महाराजने ठीक ही कहा है :

कृपेचे सागर हेचि साधुजन। तिहीं कृपादान केलें मज ॥१॥
बोबडे वाणीचा केला अंगीकार। तेणें माझा स्थिर केला जीव ॥२॥
तेणें सुखें मन स्थिर ठावें ठायीं। संतीं दिला पायीं ठाव मज ॥३॥
ना भी ना भी अैसे बोलिले वचन। तें माझें कल्याण सर्वस्व ही ॥४॥
तुका म्हणे झालों आनन्दनिर्भर। नाम निरंतर घोष करूं ॥५॥

अर्थ — ये सन्त पुरुष ही कृपाके सागर हैं। अुन्होंने मुझ पर कृपा की है। मेरी तोतली बोलीको स्वीकार कर लिया है। अुससे मेरा चित्त स्थिर हुआ है। अुस सुखसे मेरा मन ठीक स्थान पर स्थिर हो गया है (आ गया है)। संतोंने मुझे चरणोंमें आश्रय दिया है। मत डरो मत डरो अैसा अभय-वचन दिया है। अिसीमें मेरा कल्याण है और यही सर्वस्व है। तुकाराम कहते हैं मैं आनन्द-विभोर हो गया हूँ और सदा प्रभुनामका घोष करता हूँ।

बापू-कूप

आज जहाँ गोशालाके पूर्वमें तालीमी संघका संतरे और मोसंबीका बगीचा है वह जमीन तालीमी संघके मकानोंके लिये खरीदी गयी थी। जब तालीमी संघ आश्रमकी ओर बस गया तो मैंने अुसमें बगीचा लगानेका निश्चय किया। जिसका मेरे मित्रोंने विरोध किया। मैं नागपुरसे सरकारी अुद्यान-विशेषज्ञको लाया अुन्हें जमीन बताओ और बापूजीसे अुनकी मुलाकात करायी। विशेषज्ञने वह जमीन पसन्द की और अुसमें बगीचा लगानेका तय हुआ। अुस बगीचेमें बापूजी नंगे पैर घूमते थे।

अुस जमीनमें कुआँ बनानेका मुहूर्त बापूजीके हाथसे ९ सितम्बर, १९४ को हुआ। सोमवारका दिन था। बापूजीने अपना गमछा वगैरा अुतारकर रखा और कुदाली हाथमें ली। मजदूर जैसे खोदना शुरू करता है वैसे ही जोरसे अुन्होंने जमीनमें कुदाली मारी और खिलखिलाकर हँस दिये। बापूजी हँसते तो हमेशा ही थे लेकिन अुस दिनका वह मुक्तहास्य कभी भुलाया नहीं जा सकता। मुझे तो अेक विशेष प्रकारका आनन्द था ही क्योंकि मुझे अुस काममें विशेष रस था और बापूके हाथसे अुसका श्रीगणेश हो रहा था। किन्तु बापूको भी विशेष आनन्द हुआ क्योंकि वे अेक अैसे कामका मुहूर्त कर रहे थे जो हमेशा पशुओं और मनुष्योंके जीवन-धारणके साधन अुत्पन्न करनेमें मददगार साबित होता रहेगा। सचमुच ही अुस कुअेका पानी वहाँके अन्य सब कुओंसे श्रेष्ठ निकला। २५ सितम्बरको अुसमें पानी निकल आया। पहले-पहल पानी भी परचुरे शास्त्रीने वेदमंत्रोंके अुच्चारके साथ बापूजीके ही हाथसे निकलवाया था।

अैसी बातें लिखते समय बापूके साथके अनेक अद्भुत प्रसंग आँखोंके सामने आ जाते हैं। अुनमें से कौनसे लिखे जायँ और कौनसे नहीं यही प्रश्न है।

अुस बगीचेमें पेड़ लगानेका मुहूर्त भी बापूजीके हाथसे ही कराया गया था और अुनके घूमनेके लिये खास रास्ते बनाये गये थे। अुसके अुत्तरके कोनेमें जो अेक मकान है वह बालकोबाजीके लिये बनाया गया था। बादमें अुसमें मीराबहन रही थीं। अुस कुअेका नाम हमने 'बापू-कूप' रखा था। अेक रोज चिमनलालभाओ बापूजीको खर्चका हिसाब बता रहे थे। अुसमें अुस कुअेका हिसाब बताते हुअे 'बापू-कूप' नाम आया। चिमनलालभाओसे बापूने कहा कि मेरे नामसे कोओ भी चीज न रखी जाय। मैं नहीं चाहता कि

किसी भी चीजके साथ मेरा नाम जोड़ा जाय। अुसी रोजसे हमने यह नाम छोड़ दिया।

आश्रममें विवाह

लोगोंको आश्चर्य हो सकता है कि अेक तरफ तो आश्रममें अेकादश व्रतोंका कड़ाअीसे पालन होता था जिसमें ब्रह्मचर्यका प्रधान स्थान था और दूसरी तरफ विवाह भी कराये जाते थे। आश्रममें कभी विवाह हुअे। सबसे पहले चिमनलालभाअीकी पुत्री शारदाबहनका सूरतके भाअी गोरधनदास चोखावालाके साथ और विजयाबहन पटेलका मनुभाअी पंचोलीके साथ हुआ। अिन दोनोंमें कन्यादान बापूजीने किया था क्योंकि पू० बा राजकोटमें पकड़ी जा चुकी थीं। अिसलिअे विवाहकार्य बापूजीकी बगलमें बाका चित्र रखकर सम्पन्न हुआ था। शादीके लिअे चार-पांच आदमी आये थे और हम लोगोंसे बापूजीने कह दिया था कि शादीके समय तुम लोगोंके आनेकी जरूरत नहीं है। मानो कुछ हो ही नहीं रहा है, अिस प्रकारसे विवाह-संस्कार बापूजीने करा दिया और अेक रोज रोटी खिलाकर सबको विदा कर दिया।

पारनेरकरजीकी लड़की चि० शरदका विवाह भाअी प्रभाकर मावलेके साथ आश्रममें ही हुआ। पारनेरकरजीकी अिच्छा थी कि अुनकी लड़कीका कन्यादान भी बापूजीके हाथसे हो। लेकिन पारनेरकरजीकी माताजी छुआछूतमें विश्वास करती थीं अिसलिअे बापूजीने अुनकी भावनाका आदर करके पारनेरकरजीको ही कन्यादान देनेके लिअे कहा। विवाहके समय बापूजी वहां अुपस्थित रहे और सारे काम अुनकी सूचनाके अनुसार ही संपन्न हुअे। अितना ही नहीं जब पारनेरकरजीकी माताजीने अपना रसोअीघर आश्रमसे अलग बनाया तो बापूजीने पारनेरकरजीको आश्रममें भोजन बन्द करके आग्रहपूर्वक अपनी माताजीके साथ भोजन करनेके लिअे राजी किया। दूसरेके विचार जब तक बदले न जा सकें तब तक अुसके विचारोंकी रक्षा करना लेकिन स्वयं अुसके विचारोंके साथ सहमत न होना — यह बापूजीकी अद्भुत कला और महानता थी।

श्री जी० रामचन्द्रन्जीका विवाह भी सुन्दरम् बहनके साथ सेवाग्राम आश्रममें ही हुआ था। शिरीन काजी नामक अेक मुस्लिम बहनका विवाह भी बापूजीके हाथों ही संपन्न हुआ था। बादमें तो बापूजीने निश्चय किया था कि

वे हरिजन और सवर्णके विवाहमें ही आशीर्वाद देंगे। प्रो० रामचन्द्ररावने अपनी लड़की अेक हरिजन लड़केको देनेका निश्चय किया था। अुस लड़केका नाम अर्जुनराव था। अुसका विवाह प्रो० रामचन्द्ररावकी लड़कीके साथ करनेके पहले बापूजीने अुसे आश्रममें रखकर अच्छे संस्कार देना और अुसकी योग्यता बढ़ाना अुचित समझा। अिसलिअे विवाहसे पहले करीब दो साल अुसे आश्रममें रखा। लेकिन लड़के-लड़कीके विवाहके समय बापूजीके आशीर्वाद नहीं मिल सके। बापूजी अुन्हीं दिनों अिस दुनियासे बिदा हुअे थे। तो भी पूज्य ठक्करबापा जैसे महान सेवकके आशीर्वाद तो मिले ही। यह विवाह आश्रममें ही हुआ था। अुस समय बापाने कहा यह काम तो बापूका था लेकिन हमारे दुर्भाग्यसे आज मुझे करना पड़ रहा है। यह कहते कहते बापाका गला भर आया। वे बालककी तरह रोने लगे। वह दृश्य बड़ा ही करुण था।

कनु गांधी और आभाका विवाह आश्रममें बापूजीके सामने हो चुका था। अिस प्रकार आश्रम अेक विचित्र ही ढंगसे विकास तथा विस्तार कर रहा था।

बाका महल

शुरूमें हमारा अेक ही मकान था जिसके अेक कोनेमें बापूजी अेकमें बा अेकमें खानसाहब और अेकमें मुन्नालालजी थे। और भी जो मेहमान आते थे अुसीमें ठहरते थे। पू० बाको आराम करनेमें बहुत संकोच होता था। अुन्होंने बापूजीसे कहा आपको तो कुछ नहीं लगता है। लेकिन हमारा क्या हो? हमको यहां सराय जैसी जगहमें डाल दिया है। कपड़ा बदलनेके लिये और आराम करनेके लिअे कुछ तो आड़ चाहिये।"

बापूने कहा हम दरिद्रोंके प्रतिनिधि हैं अिसलिअे हमेशा झोंपड़ेमें ही रहना हमारे लिअे शोभास्पद है। हां थोड़ीसी आड़ करा दूंगा। बापूजीने मुझे बुलाया और कहा "देखो बाको बड़ी तकलीफ होती है। बरामदेमें अुनके लिअे अेक टट्टेकी कोठरी बना दो।

अुत्तर-पूर्वके बाजू बरामदेमें मैंने दीवारमें दो छेद कर दिये। अुनमें बांस डाले। बांसोंको बरामदेके खंभोंसे बांधकर टट्टा बांध दिया और अेक दरवाजा रख दिया। करीब आधे या पौन घंटेमें सब तैयार हो गया। मैंने बापूजीसे कहा कि बाके लिये महल बन गया है। बापूजी अुठकर आये और

बाको भी साथ आये। बोले "अरे, यह तो बहुत अच्छा बन गया! या बिचारी क्या बोलती? कह दिया "ठीक है।" मैं मन ही मन हंस रही थी कि बापूजी कैसे बाको बच्चोंकी तरह फुसला रहे हैं।

अन्तमें बाकी यह असुविधा जमनालालजीसे नहीं देखी गयी और अुन्होंने हठ करके अेक छोटासा मकान बनवा दिया जो आज बा-निवास कहलाता है।

कुछ और सदस्य जुड़े

मीराबहन बरोडाकी झोंपड़ीमें गयीं तो सही और थोड़े दिन अुनकी तबीयत वहां अच्छी भी रही लेकिन बादमें अुनको बुखार आने लगा। अुनकी झोंपड़ी जंगलमें और रास्ते पर थी जिस कारण लोग कुतूहलसे दिनभर वहां आते रहते थे। सबसे प्रेम तो वे करती ही थीं जिसलिये लोग वहां बैठकर जिधर‑अुधरकी बातें अुनसे किया करते थे। जिससे भी मीराबहन दुःखी हो गयी थीं। जिस कारण लाचार होकर अुन्हें सेवाग्राम आना पड़ा। आज जो बापू‑कुटी है अुसका अुत्तरकी ओरका जहां बापूकी बैठक है वह और अुसके सामका दीवार तकका भाग खासकर मीराबहनके लिये बनाया गया था और अुसमें वे बच्चोंको कातना‑बुनना सिखाती थीं। बादमें बापूजीकी तबीयत खराब हुओ तब अुन्हें आदि‑निवाससे यहां लाया गया और कुछ झोंपड़ीके अुत्तरी भागमें बरामदा और दक्षिणी भागमें सेप्टिक टैंक बढ़ाये गये।

हमारा मकान अैसा था जिसमें ५ दरवाजे थे और किसीको किसी भी समय अन्दर आनेमें कोअी रोकटोक न थी। दिनमें किसी भी समय कोअी न कोअी अन्दर घुस आता था जिससे बापूजीके कार्यमें बाधा पहुंचती थी। बापूजीकी तबीयत बिगड़ी जिसलिये अुन्हें वहांसे हटाना पड़ा और मीराबहनकी झोंपड़ीमें रखना पड़ा। बस तबसे बापूजीका सबको परोसना बन्द हुआ क्योंकि बापूजीका भोजन वहीं जाता था। परन्तु जब अुनकी तबीयत अच्छी होती थी तब वे सबके साथ पंगतमें ही बैठते थे। अब समाज भी बढ़ गया था। किन्तु जिसकी तबीयत कुछ खराब रहती थी अुसे बापूजी ही परोसते थे।

कृष्णचन्द्रजी पहले १९३५ में मगनवाड़ीमें बापूजीसे मिलने आये थे। बादमें १९३८ में स्थायी रूपसे सेवाग्राममें रहनेके लिये आ गये। सुशीलाबहन डॉक्टरी पास करके आ गयी थीं। जिसलिये दवाखानाका कार्य अुन्होंने ले

किया। बाके मकानके पीछे जो मकान है, वह जमनालालजीने अपने लिये बनवाया था। जमनालालजी तो शायद ही कभी अुसमें रहे होंगे। किन्तु बादमें अुसमें आश्रमका दवाखाना शुरू हुआ। शंकरनजी पहले मारवाड़ीके चर्मालयमें काम सीखते थे। वे भी बापूजीके सान्निध्यमें रहना चाहते थे। बापूजीने अुनको रख लिया और यह काम सौंपा कि जो लोग पाखाना जायं अुनका पाखाना देखें और अुस पर मिट्टी डालें। सबसे कह दिया गया कि अपने पाखाने पर कोओ मिट्टी न डाले ताकि अुन्हें पाखानेकी परीक्षा करनेकी आदत पड़ जाय। यह काम मीराबहनको बिलकुल पसन्द नहीं था। मीराबहनको छोड़कर हमारा सबका पाखाना शंकरनजी देखते थे अुसके बारेमें रिपोर्ट लिखते थे और पाखाने पर मिट्टी डालते थे। बापूजी अुनसे कहते "तुमको तो रहना भी वहीं चाहिये। अेक झोंपड़ी पाखानेके पास ही बनवा लो। तुम्हारी सफाओी जितनी आदर्श होनी चाहिये कि पाखानेके पास रहते हुअे भी जरा बदबू न आये।

बापूजीने जिस विषयमें शंकरनजीको जो पत्र लिखा था वह जिस प्रकार है

चि. शंकरन,

तुम्हारा प्रश्न बहुत अच्छा है। चूंकि हरिजनोंमें भी कामकी दृष्टिसे भंगीका काम सबसे नीच माना जाता है, सबको जिस कामकी घृणा रही है। और हम तो अूंच-नीचके भावको हटाना चाहते हैं। हरअेक सेवकका कर्तव्य है कि वह प्रेमसे भंगीका काम सीख ले और करे भी।

मेरे आदर्शका भंगी अब तक जगतमें नहीं हुआ है। भंगीका पद गिराकर हम गिरे हैं। प्रजाके आरोग्यका नाश हुआ है। और कहां जाऊं? किसी स्थानको ले लो। मैं खुद भंगीकामका महत्त्व जानते हुअे भी आदर्श स्वच्छताकी वृत्ति नहीं ला सका हूं। कैसा अच्छा होगा यदि अीश्वरने किसी कामके लिअे तुमको भेजा हो। तुम्हारी जिमनकालकी सेवासे संतुष्ट होकर ही मैंने भंगीकामकी जिम्मेदारी तुम्हारे सिर पर रखी है।

भंगीकामकी पूर्णता पर आरोग्य निर्भर है। प्रायः सब रोग अस्वच्छतासे पैदा होते हैं। कॉलरा बिरयादिका तो ऐसा ही है।

भंगीकाममें ये चीजें आ जाती हैं : पाखाने कैसे हों, देहातमें जाकर पाखाने और पेशाबकी परीक्षा, अुस परीक्षासे पाखाना करनेवालेको सावधानी, पाखानेके बरतन कैसे हों, किस प्रकारके हों, खादकी दृष्टिसे पाखाने और पेशाबकी अुपयोगिता, दूसरे खादोंके साथ अिसका मुकाबला, खादोंका पृथक्करण, पाखानोंका अर्थशास्त्र, रास्तोंकी सफाई, दुनियाके अन्य देशोंमें शौचादिकी व्यवस्था, शास्त्रोंमें शौचादिके नियम, हिन्दुस्तानमें भंगीकी अुत्पत्ति, अस्पृश्यताका अितिहास, अुनकी आधुनिक गणना, अुनके रिवाज, अुनकी स्थिति सुधारनेके अुपाय और समाजमें शौचादिके नियम-पालनकी योजना।

अिससे तुमको पता चलेगा कि यह कैसा कीमती शास्त्र है। यह पढ़कर घबराना नहीं। जिज्ञासा और अुत्साह होगा तो ज्ञानप्राप्ति हो जायगी।

बापूके आशीर्वाद

आश्रम-परिवारके दिल पर गहरी चोट

आर्यनायकम्जीकी दो सन्तानें थीं। मिठू नामक लड़की अभी मौजूद है। अुससे छोटा लड़का था आनन्द जिसके अनेक नाम थे। अपने नाम भी वह खुद ही रख लेता था। मैं अुसको ढांढेवालेके नामसे पहचानता था। अेक रोज मैंने सब लोगोंको बनकटीके कुअें पर हुरड़ा (हरी ज्वार) खानेकी पार्टी दी। अुसमें जमनालालजी भी थे। सब लोगोंने बड़े प्रेमसे खूब ज्वार खायी। ढांढेवाला भी अुसमें था। अुसने भी खायी। थोड़ी देरमें पता चला कि लड़का बेहोश हो गया है। मैं घबराया कि कहीं अधिक ज्वार खानेसे तो कुछ गड़बड़ी नहीं हो गयी है। लेकिन बादमें पता चला कि वह १ ग्रेन कुनैनकी गोलियां चाकलेट समझकर खा गया था। अुसीकी गर्मीने अुसके प्राण ले लिये। अुस रोज आर्यनायकम्जी वहां पर नहीं थे। बापूजी तुरन्त ही वहां पहुंच गये और काफी अुपचार किये। डॉ. सुशीलाबहनने भी काफी कोशिश की लेकिन किसीका कुछ बस नहीं चला। और यह बालक १९ दिसम्बर, १९३९ को हम सबको छोड़कर चला गया। सेवाग्रामके जीवनमें यह बड़ा भारी आघात था। आर्यनायकम्जी दूसरे दिन आये। अुनके आने पर बालकका दाह-संस्कार किया गया। आशाबहन तो काफी दुःखी थीं लेकिन आर्यनायकम्जीने बड़े धीरजका परिचय दिया। बापूजीने दोनोंको सान्त्वना देते हुअे कहा : अब तक

तो तुम्हारे अेक ही बच्चा था। आजसे सारे ग्रामके बच्चे तुम्हारे हैं। नयी तालीममें तो सारा हिन्दुस्तान आ जाता है। जिसलिअे सारे हिन्दुस्तानके बच्चे तुम्हारे ही हैं। अब तुम्हारी जवाबदारी और भी बढ़ गयी है। जिनकी सेवा करो और जिसको अपना बच्चा कहते थे अुसे भूल जाओ या अुसीका रूप सब बच्चोंमें देखो। यही शांति और सेवाका मार्ग है।

अुस बच्चेका वियोग मां-बापको तो सतानेवाला था ही लेकिन सारे सेवाग्राम परिवारके दिल पर भी अुसकी गहरी चोट लगी। मेरी तो अुसके साथ जितनी दोस्ती थी कि अुसका वियोग आज भी मुझे सताता है। आशादेवी और आर्यनायकम्‌जीने सचमुच सेवाग्रामके ही नहीं आसपासके सब बच्चोंको अपना बच्चा बना लिया है और अुनका प्रेम हिन्दुस्तान भरके बच्चों तक फैल गया है। महापुरुषोंके आशीर्वादमें कितनी शक्ति होती है, जिसका अन्दाज लगाना कठिन है।

१५

सेवाग्रामसे सम्बद्ध कुछ विशिष्ट व्यक्ति

पू. छगनलाल गांधी

पू. छगनलालभाई गांधी बापूजीके बड़े भतीजे हैं। जिन्होंने दक्षिण अफ्रीकामें ही अपने आपको सपरिवार बापूजीको सौंप दिया था। जिस तरह जिनके पिता पू. खुशालचन्द दादाने अपने चारों पुत्रोंको बापूजीको सौंप दिया था असी तरह जिन्होंने भी अपने दोनों पुत्रोंको (श्री प्रभुदास गांधी और श्री कृष्णदास गांधीको) बापूजीको सौंप दिया है। जिनकी अवस्था आज ७ वर्षसे अधिक होने पर भी ये जितना परिश्रम करनेकी क्षमता रखते हैं कि जिनके सामने जवान भी लज्जित हो जायं। जिनका गनी-कार्यका प्रेम जिनका बगीचा बतलाता है। पू. काशीबाके अन्तकाल तक धैर्य प्रेम और तत्परतासे जिन्होंने अुनकी सेवा की और अन्य किसीकी सहायताकी अपेक्षा तक नहीं रखी अुससे जिनके चरणोंमें अनायास ही सिर झुक जाता है। बापूजीके बारेमें पुरानी स्मृतियोंका अनुपम मस्तिष्कमें अखूट भंडार भरा पड़ा है। आशा है कि आनेवाली प्रजाके लिअे अुस

पूनीका अेक अभिलाषा थी जब तक वे किसीके सुपुर्द न कर दें तब तक अुनका बाल भी बाँका न होगा। अिनके पिताजी और माताजीके दर्शनोंका सौभाग्य भी मुझे मिला था। अुन दोनोंकी सौम्य और गम्भीर मुद्राको मैं भूल नहीं सकता। मैं मानता हूँ कि अुन्हींकी तपश्चर्याके प्रतापसे यह पूराका पूरा परिवार बापूजीके बतलाये हुअे सेवाकार्यमें अब तक ओतप्रोत है और आगे भी रहनेवाला है। भगवानने गीतामें अैसे ही परिवारोंके लिअे कहा है

प्राप्य पुण्यकृतांल्लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः।
शुचीनां श्रीमतां गेहे योगभ्रष्टोऽभिजायते॥
(अ ६, श्लो ४१)

काशीबा

पू. काशीबा बचपन अवस्थासे ही बापूजीके साथ रहीं। सभी तालीम माँके गर्भसे आरम्भ होती है, बापूजीके अिस कथनका मिलान मैं करता ही रहता हूँ। जब मैं काशीबाको देखता हूँ और अुनके दोनों पुत्र भाजी कृष्णदासजी व प्रभुदासजी गांधीको देखता हूँ तो बापूजीके कथनकी सत्यताका प्रत्यक्ष अनुभव करता हूँ। काशीबाकी सरलता अुनकी नम्रता अुनकी व्यवहार-कुशलता और भक्तिभावका वारसा अिन दोनों पुत्रोंको मिला है। सचमुच अैसी माँके गर्भसे जन्म मिलना बड़े पुण्यके प्रतापका फल है। अुनका कंठ कितना मधुर है! कहाँके पथिक कहाँ कीन्ह है गवनवा भजन बार बार अुनके मुँहसे सुननेकी अिच्छा होती है। अुनके दर्शनसे ही अेक प्रकारकी सात्त्विक खुराक मिलती है। अुन्होंने बापूजीसे बहुत कुछ सीखा है। सीखकर अुसे पचाया है। कीमत खानेकी नहीं पचानेकी है ही। दरस परस अरु मज्जन पाना हरहिं पाप कहहिं बेद पुराना। यही अनुभव काशीबाके दर्शनसे होता है।

बाचा खानसाहब

सन् १९४६ के अगस्त महीनेकी बात है। हमारे प्यारे बादशाह खान, सीमान्त गांधीको सरकारने जेलसे छोड़ा तो था पर अपने सूबेमें रहनेकी मनाही कर दी थी। बापूजीने अुनको सेवाग्राम आनेका प्रेमपूर्ण और आग्रह-भरा निमन्त्रण भेजा। खानसाहबने अुतने ही प्रेमसे अुसे मंजूर भी किया। खानसाहबके सेवाग्राम आनेसे अेक रोज पूर्व बापूजीने मुझे बुलाकर कहा “देखो खानसाहब और अुनकी लड़की आ रही है। अुनकी तबीयत खराब

अिस सेवाका बदला भी मैंने ब्याजसहित पाया।

मैं जब सख्त बीमार पड़ा, अुस समय आश्रममें गिने चुने ही आदमी थे। भाभी प्यारेलालजी और खानसाहबने अद्भुत प्रेम और तत्परतासे मुझे संभाला अेवं मौतके मुंहसे बचा लिया। बापूजीकी तो बात ही क्या कहूं! वे अेनीमा देते, स्पंज करते और जब मैं घंटी बजाता तब सब काम छोड़कर तुरंत मेरे पास आ जाते। सचमुच ही अुस समयका वह छोटा सा महान पारिवारिक जीवन कितना मधुर था! बापूजी तो बापू और मां सब कुछ थे। लेकिन खानसाहबने तो सचमुच ही चाचाका स्थान ले लिया था। वे हमारे साथ अितने घुलमिल गये थे कि अुनको और हमको कभी ऐसा अनुभव नहीं होता था कि खानसाहब कोअी बड़े आदमी हैं और हमको अुनके साथ अदबसे रहना चाहिये। फिर भी जितना चाचाका अदब करना चाहिये अुतना तो हम करते ही थे। खानसाहबके साथ अुनकी बहन महेरताजबहन भी आयी थीं। वह बड़े सरल स्वभावकी हैं। वह भी बहनोंकी तरह हमारे साथ घुलमिल गयी थीं। साग काटना, अनाज साफ करना, झाड़ू लगाना आदि सब काम आश्रमवासीकी तरह खानसाहब करते थे। खाने-पीनेके मामलेमें बापूजीने खानसाहबको पूरी आजादी दे दी थी। यहां तक कि मांस खानेकी भी छूट दे दी थी। किन्तु आश्रमके नियमोंका ध्यान रखकर जरूरत होने पर भी अुन्होंने मांस लेना कभी पसंद नहीं किया।

अुनके हाथमें फावड़ा और झाड़ू बहुत ही फबता था। अेक-दो दिनके लिये भी जब अुन्हें बाहर जानेका प्रसंग आ जाता, तब वापिस आने पर वे हमसे पठान-रिवाजके अनुसार कौली भरकर ही मिलते थे। हमारा सिर तो अुनके सीने तक ही रह जाता था। और वे हमारी कौलीमें आते भी कैसे? अुस वक्त हमको महसूस होता था कि खानसाहब हमसे कितने बड़े हैं। अुनकी कमखर्ची और सादगी तो गजबकी थी। अेक कुरता और पाजामा अुनकी पोशाक और अुसमें हलका-सा नीला रंग अिसलिये कि अधिक साबुन खर्च न करना पड़े। अेक साधारण किसानसे अधिक अच्छे कपड़े पहनना खानसाहब पसंद नहीं करते।

फैजपुर-कांग्रेसके अध्यक्षपदके लिये खानसाहबको राजी करनेके लिये पू॰ राजेन्द्रबाबू और जवाहरलाल नेहरू सेवाग्राम आये थे। वर्धामें वर्किंग कमेटीकी बैठक चल रही थी। वे आये अुस समय मैं और भाभी सुशीलाजी

भी बापूजीके पास बैठे थे। राजेन्द्रबाबू और जवाहरलालजी अपनी बात कहनेमें हिचक रहे थे। बापूजीने अुनकी अिस हिचकको ताड़ लिया। वे बोले "आप संकोच न करें। ये दानों अपने ही आदमी हैं। आपको जो भी कहना हो निःसंकोच भावसे कहें। अिससे पता चलता है कि बापूजी महत्त्वके राजनीतिक प्रश्नोंके बारेमें भी अपने साथियोंसे कोअी दुराव छिपाव नहीं रखते थे। दोनोंने खानसाहबको अध्यक्ष बनानेकी सूचना की। खानसाहब बोले यह मेरा काम नहीं है। मैं तो सिर्फ खिदमतगार सिपाही हूं। मुझे अिसमें रुचि भी नहीं है। आप किसी दूसरेको अध्यक्ष बनायें। अुनकी बातका समर्थन करते हुअे बापूजीने जवाहरलालजीसे कहा खानसाहब ठीक कहते हैं। मैं अिनको अिस झंझटमें डालना नहीं चाहता। अिनसे तो दूसरा ही काम लेना है। अिनके लिअे दूसरे बहुत काम हैं, जिन्हें अिनके सिवा दूसरा कर ही नहीं सकता। कांग्रेसका भार तो तुमको ही अुठाना होगा और आज यही ठीक भी है। अिसलिअे खानसाहबका विचार छोड़ो और तुम तैयार हो जाओ। खानसाहब तो खुश-खुश हो गये और बोले महात्माजी ठीक कहते हैं। यह भार जवाहरलालजीको ही लेना चाहिये।" आखिर पंडितजीको वह पद कबूल करना पड़ा।

खानसाहबने अहिंसाकी लड़ाअीमें अपना सब कुछ तो समर्पण कर ही दिया था साथ ही साथ हिंसक प्रवृत्तिवाले पठानोंको अहिंसाका पाठ पढ़ाकर अहिंसाका बेजोड़ दृष्टांत भी देश और दुनियाके सामने रखा था। अुनका दिल स्फटिक जैसा निर्मल और पारदर्शक है। अुनकी अुदारता और गंभीरता सागर जैसी महान है। अुनका धीरज हिमालय जैसा अचल है। अुनकी सरलता नम्रता सादगी और मिलनसारिताकी खुशबूने भारतवासियोंके मनको अितना सुवासित किया है कि अुनका पावन प्रेम कभी भी भुलाया नहीं जा सकेगा।

अन्तमें बाबा भगीबेरी मीठी टकटकका अेक बोधप्रद प्रसंग यहां देकर खानसाहबका रेखाचित्र मैं पूरा करूंगा।

जब सेवाग्राममें मीराबहन अकेली रहती थीं तब अुनके लिअे बापूके अेक दूसरा बाबा भरतराम भाअी जो मगनवाड़ीमें दूध देते थे और जिनका हमारे साथ अच्छा संबंध था मीराबहनके लिअे शुरूमें सिर्फ दूध पीनेके लिअे अैसी गाय भेज देते थे जिससे रोज १ सेर १॥ सेर दूध हो और

जो स्वयं तथा जिसका बच्चा दोनों कमजोर हों। मीराबहनकी कोशिश तो अद्‌भुत थी। वे गाय और बच्चेको खूब प्रेमसे खिलाती-पिलातीं जिससे थोड़े दिनोंमें ही वह गाय और बच्चा कितने तगड़े बन जाते कि दूसरी अपेक्षा अुनकी कीमत बहुत बढ़ जाती और अुस ग्वालेको बहुत लाभ होता। मीराबहनकी मुफ्तमें गाय देनेके पीछे यही ध्येय था।

अेक दिन प्रातःकाल घूमते समय न मालूम किस प्रसंगसे बापूजीने मीराबहनकी अुत्कृष्ट गोसेवाकी बात निकाली। बाबा अमुल गफ्फार खां साहब भी साथमें ही घूम रहे थे। मैंने सहज ही कहा, "बापूजी मीराबहनका गोप्रेम तो अद्‌भुत है ही लेकिन अुनका खर्चीलापन हमारे गरीब देशके लिये महंगा सौदा है। गाय ४ आनेका दूध दे और आठ आने का खाय यह बात हमारे अर्थशास्त्रमें नहीं बैठती है। हम जिस खर्चको बरदाश्त करनेमें असमर्थ हैं। हां पश्चिमकी दृष्टिसे मीराबहनकी कमखर्ची आदर्श मानी जा सकती है। लेकिन हमारा तो वह कचूमर निकाल देती है।"

बापूजीने कहा, "तुम्हारा कमाल करना है। मीराबहन यहां भी गयी है वहांसे अुसके खर्चीलेपनकी कोओी शिकायत नहीं आयी है। अुसकी सादाओीकी तारीफ ही आयी है।" मैंने कहा, "यह तो ठीक है, लेकिन मीराबहनकी सादाओीको लोग पश्चिमके मापसे मापते हैं। अपने देशके मापसे नहीं।" बापूजी बोले, "अच्छा तो २-४ गाय तुम्हारे हाथमें दी जायें और २-४ मीराबहनके हाथमें। देखें किसकी गायें अच्छी तन्दुरुस्त रहती हैं।" मैंने कहा, "कबूल है लेकिन केवल तन्दुरुस्तीकी बात नहीं है। अुसकी आमदनी और खर्च भी देखा जाये। गायको जब तक हम अपने अर्थशास्त्रमें नहीं बैठा सकेंगे तब तक अुसकी सच्ची रक्षामें देरी होना असम्भव है।"

मीराबहनके प्रति मेरी यह अक्षमता बाबा खानसाहबसे सहन नहीं हो सकी और बीचमें ही बात काटकर वे बोले, "तुम लोग आदमीकी कद्र नहीं समझते हो। मीराबहन अेक बहादुर बेड़ेके अफसरकी बेटी होकर कितने सेवाभाव और सादाओीसे रहती है?"

मैंने कहा, "हां अुस हिसाबसे तो ठीक है, लेकिन हमारी गरीबीके लिये तो अुनका सादापन भी कमरतोड़ बोझा है। मैं देखता हूं कि [वे] जानवरोंके पीछे जो बेहिसाब खर्च करती हैं अुसे हमारा गरीब देश[,] सहन नहीं कर सकता। प्रश्न गरीब-अमीरका नहीं सिद्धान्तका है। चाहे वे अफसरकी

लड़की हों चाहे बादशाहकी। अिसके साथ मुझे कुछ भी लेना-देना नहीं है। पैसेसे या ओहदेसे कोओी बड़ा आदमी बन जाता है, अिसे मैं नहीं मानता।

बस क्या था? चाचाजीके लिये तो यह जले पर नमक छिड़कने जैसा था। वे बोले "अगर तुमको पैसेकी परवाह नहीं है तो तुम यहां जमनालालजीका पैसा खाकर क्यों रहते हो? और अगर तुमको कलकत्ता जाना हो तो भाड़ेका पैसा कौन देगा?

मेरी नाकको भी चिनगारी छू गयी और मैंने जरा तेजीसे कहा "मुझे जमनालालजीके पैसेकी जरूरत नहीं है। मैं तो मजदूर हूं। मजदूरी करता हूं और दो रोटी खाता हूं। तो खानसाहब बोले ठीक है पर तुम वैसे मजदूर नहीं हो। अगर तुमको कुछ कहा जाय तो काम छोड़ दोगे और नाराज हो जाओगे। मैंने कहा "मैं गुलाम मजदूर नहीं हूं जो मजदूरीके लिये सब कुछ सहन करूं। मैं अिस देशमें स्वाभिमानी मजदूर बनना चाहता हूं। आजकी भाषामें जिसे मालिक कहा जाता है अुसे मैं साथी मानता हूं। अगर साथीको मेरा काम पसंद नहीं हो तो वह मुझे हटा सकता है। लेकिन मेरे अूपर मालिकीकी धौंस नहीं जमा सकता। खरी मजदूरी चोखा काम —मेरे जीवनका ध्येय है। ऐसा ही सब मजदूरोंका होना चाहिये।

रही कलकत्ता जानेकी बात और भाड़ेकी बात तो मुझे कलकत्ता जानेकी भी जरूरत नहीं है। जिसकी गरज होगी वह भाड़ा भी देगा और कलकत्ता भी भेजेगा। जमनालालजी अगर पैसा देते होंगे तो बापूजीको अपनी गरजसे देते होंगे। मेरे पास अुनके पैसेकी कौड़ीके बराबर भी कीमत नहीं है।

चाचाजीका पुण्यप्रकोप और भी प्रज्वलित हो अुठा और वे जोरसे बोले "अगर तुमको पैसेकी कीमत नहीं है तो जिसको तुम अीश्वर मानते हो वह राम भी तो राजाका लड़का था न? तुम्हारा तो अवतार भी पैसेवालेका लड़का था।

फिर क्या था? पाके मुख जिमि लाल कमान ! अुनकी अिस चोटने मुझे भिनभिना दिया। और मैं अपने रोषको जोरसे दबाकर, झूठी हंसी हंसकर बोला वाह चाचाजी! आपने हिन्दू धर्मके मर्मको समझा ही नहीं है। राजा दशरथ जैसे और अुनसे भी बड़े राजा हिन्दू धर्ममें न मालूम कितने हो गये? अुनका नाम भी हम नहीं जानते। रामने जब राज्यका तृणवत् त्याग किया तब हमने अुनकी पूजा की।"

नव मयंकु रघुबीर मनु राजु अलान समान ।
छूट जानि बन गवनु सुनि अुर अनंदु अधिकान ॥

अिसका मर्म बेचारे बाबाजी कैसे समझते? मैंने रामायणका अनुवाद तो काफी किया था। लेकिन जो प्रकाश मुझे अुस रोज बाबाजीके साथ झगड़ा करनेमें मिला वह पहले नहीं मिला था।

हमारी बाबा-भतीजेकी झड़पको बापूजी शांत चित्तसे चुपचाप सुनते थे। अेक शब्द भी नहीं बोले और मेरे मनमें भी यह खयाल नहीं रहा कि बापूजीको यह सब कैसा लगेगा? जब लड़ाअी छिड़ गयी तो जो भी हथियार हाथ लगा अुसका अुपयोग मुझे खुले दिलसे करना पड़ा। आसपासके लोगोंको क्या लगता होगा अिसका भी मनमें कोअी संकोच या भान तक न था। अुस रोजके घूमनेमें हमारा अखाड़ा ही मुख्य रहा। जब बापूजी आश्रममें लौटे और दूसरे लोग अिधर-अुधर बिखर गये तो मैंने अेकान्त पाकर बापूजीसे धीरेसे कहा कि बापूजी आज तो लालासाहब बहुत नाराज ही गये थे। बापूजी हंसकर बोले "अरे लालासाहबने तुमको मारा नहीं यही तो अुनकी अहिंसा है।" अिससे आगे बापूजी कुछ भी नहीं बोले। कह सकते थे कि तुम्हारा अुनके साथ अिस प्रकार खींचातानी करना अुचित नहीं था। लेकिन बापूजी अुस कटु संवादको गंभीरतासे पी गये। अिस प्रसंगको मैंने अिच्छासे टाला था। लेकिन मुझे लगा कि अिस संवादमें जहां थोड़ी अुत्तेजकता थी वहां मधुरता भी थी क्योंकि अुसके बाद बाबा लालासाहबके मन पर लेशमात्र भी अुस संवादके रोषका दर्शन नहीं हुआ। और अुनका वही वात्सल्यभाव मेरे अूपर बना रहा। अिस धैर्य और गम्भीरताके कारण ही तो लोग अुनको सरहदी गांधीके नामसे पुकारते हैं। तभी तो जिस प्रकारसे बापूजीका वियोग कष्टदायक बना है अुसी प्रकार बाबालालाके जिन्दा रहते हुअे भी अुनके दर्शन न पा सकनेका वियोग दिलको कांटेकी तरह चुभता रहता है। लेकिन क्या किया जाय? अैसी अनेक घटनाअें स्मरण-पटल पर आनेसे आनन्द और वेदना दोनोंके बादल आंखोंके सामने अंधेरा कर देते हैं और मन अेक स्वप्नमें डूब जाता है।

बालकोबा

विनोबा जैसे विनायकसे विनोबा बने वैसे ही विनोबाजीके छोटे भाई बालकृष्णसे बालकोबा बने। अिनसे छोटे भाई शिवाजी हैं। पुरंदरेजीने

तरह जन्मसे ही तीनों भाअी साधु, भक्त ज्ञानी संन्यासी और देशभक्त थे ही वे ही अिन पर कड़वी और नीम चढ़ी अिस नियमके अनुसार तीनों बापूजीके जालमें आ फंसे।

कुलं पवित्रं जननी कृतार्था वसुन्धरा पुण्यवती च तेन।

अिसी आशयका तुलसीदासजीका भी अेक वचन है — पुत्रवती युवती जग सोअी रघुपति भगत जासु सुत होअी। सचमुच ही अैसा दृष्टान्त दुनियाके अितिहासमें मिलना दुर्लभ है। अुस मांका पवित्र स्मरण करके आज भी विनोबाजीकी आंखोंसे गंगा-जमुना बहने लगती है। अिनके माता-पिता तो धन्य थे ही लेकिन अिन तीनोंको पाकर बापूजीने भी धन्यताका अनुभव किया। तभी तो बापूने सारे देशके सामने १९४० के व्यक्तिगत सत्याग्रहका प्रथम सत्याग्रही घोषित करके विनोबाजीको अपने विशेष प्रेम और विश्वासका पात्र होनेका प्रमाणपत्र दिया था।

पहले बापूजीके पास विनोबाजी आये और बादमें जैसे रामके पीछे लक्ष्मण भरत गये अुसी प्रकार अिन दोनों भाअियोंने भी विनोबाका पीछा पकड़ा। बालकोबाजीको विनोबाजीने घर पर रहनेको समझाया था। धमकाया भी था। लेकिन

अुतरु न आवत प्रेम बस गहे चरन अकुलाअि।
नाथ दासु मैं स्वामि तुम्ह तजहु तो कहा बसाअि॥

अिन दोनों छोटे भाअियोंका भी अैसा ही हुआ। सबसे छोटे भाअी शिवाजीको बहुत कम लोग जानते हैं। वे प्रसिद्धिसे बिलकुल दूर भागते हैं। अुन्होंने विनोबाजीकी मराठी गीताअी का बड़ी मेहनतसे शब्दकोश तैयार किया है। महाराष्ट्रकी जनतामें घूम घूम कर गीताअीकी लाखों प्रतियोंका प्रचार किया है। रामायणका भी अुनका गहरा अध्ययन है। जीवन और जनताकी दृष्टिसे अुन्होंने जो साधना की है वह प्रशंसनीय कही जायगी।

तीनों भाअियोंने बापूजीकी प्रयोगशालाको सजानेमें जो योग दिया है वह अितिहासके पृष्ठोंमें दीपस्तम्भकी तरह प्रकाशित करता रहेगा। और, मैं कहने कुछ जा रहा था और कह गया कुछ और। यह भी अच्छा ही हुआ। अिस त्रिमूर्तिका स्मरण भी तो त्रिवेणी-संगममें स्नान करने जैसा ही है।

बालकोबाजीको क्षयरोगने पकड़ लिया था। दोनों फेफड़े खराब हो चुके थे। दस-बारह सालसे सतत बुखार बना रहता था। पहले महिलाश्रम वर्धामें बापूजीकी ही देखरेखमें अुनका अिलाज चलता रहा। जब बापूजी सेवाग्राम बसे तो अुनको भी सेवाग्राम बुला लिया और अुनके खिलाने आदिकी सारी व्यवस्था अुन्होंने अपने हाथमें ले ली। बालकोबाजीके रहनेकी व्यवस्था आश्रमसे दूर मीराबहनवाली वरोड़ाकी झोंपड़ीमें की गयी थी। अुनके खाने-पीनेका जरूरी सामान आश्रमसे जाता था। सुबह शाम घूमने समय बापूजी अुनकी झोंपड़ी तक जाते थे जो आश्रमसे करीब डेढ़ मीलकी दूरी पर थी। सुबह रातके और शामको दिनके सब समाचार बापूजी अुनसे पूछते थे। नींद कितनी आयी दस्त कैसा और कितना हुआ बुखार कितना रहा कितने कदम और कितनी देर घूमे खुराकमें क्या क्या चीजें लीं, कितनी कितनी मात्रामें लीं — अित्यादि अित्यादि।

२४ घंटेका अपना कार्यक्रम बालकोबाजीने अिस प्रकार बना लिया था कि वह घड़ीके कांटेकी तरह ही नहीं बल्कि सूर्यकी गतिकी तरह नियमित चलता था। कितना और कितनी बार खाना अुसमें क्या क्या और कब लेना कितना सोना अगर नींद न आये तो चुपचाप बिस्तरमें पड़े रहना अमुक समय पर ही बहुत कम बोलना बिस्तरको रोज धूपमें सुखाना, कितना घूमना किस समय बुखार नापना कितना काम खुद करना और कितना सेवकसे कराना — अिसका भी बराबर हिसाब था। अुनकी झोंपड़ी और सामान सब अितना सुव्यवस्थित और स्वच्छ रहता था कि देखकर आनन्द होता था। अुनका आत्म-संशोधन और स्वास्थ्य-सुधारका प्रयत्न और निरीक्षण अितना सूक्ष्म था कि अुसमें अुपेक्षा आलस्य निराशा आदिका नाम भी न था। मैं भी अुनके पास जाया करता था। अुनकी छोटी छोटी बातोंमें अितनी बारीकी मुझे बालकी खाल निकालने जैसी लगती थी। और मैं सोचता था कि यह आदमी मृत्युके दरवाजे पर तो खड़ा है फिर भी जीनेके लिये अितनी चिन्ता और खटपट क्यों करता है? बात तो ब्रह्म, वैराग्य अुपनिषद् योगदर्शन आदिकी करते हैं और जीनेका अितना लोभ है? मैंने अपना यह विचार अेक आश्रमवासी भाअी कृष्णचन्द्रजीको बात बातमें कह डाला। क्योंकि बालकोबा वर्षोंसे और अुनसे कुछ काम होगा अिसकी मुझे जरा भी अुम्मीद नहीं थी। अुन्होंने मेरी बात बालकोबाजीसे कह दी।

औसी नाजुक बात अुनको कहनी तो नहीं चाहिये थी लेकिन वे अुनके मक्त थे। मेरे भी मित्र तो वे ही लेकिन अुनके पेटमें यह बात पच नहीं सकी। सुनकर बालकोबाजीको बहुत ही दुःख हुआ और अुनको लगा कि अगर साथियोंके मनमें असा विचार आता है तो मुझे यहां न रहकर हिमालयकी तरफ चला जाना चाहिये। जब तक शरीरको रहना होगा रहेगा जब पड़ना होगा पड़ जायगा। आखिर यह बात बापूजी तक तो पहुंचनी ही थी क्योंकि कोअी बात या विचार बालकोबाजीके पास पहुंचे या अुनके मनमें आवे और वह बापूजी तक न आय यह संभव नहीं था। अुन्होंने बापूसे हिमालय जानेकी अिजाजत मांगी।

मैंने तो सहज ही चर्चा करते करते अुन भाअीसे अपना विचार कह दिया था। मुझे पता नहीं था कि यह प्रश्न सचमुच ही अितना गंभीर बन जायगा और मेरी पूरी पूरी हाजरी ली जायगी। जब मुझे पता चला कि प्रश्न बापूजी तक पहुंचा है तो कृष्णचन्द्रजी पर मुझे गुस्सा आया। मेरा कलेजा धड़कने लगा कि न मालूम कब मेरे लिये वारंट आयगा और क्या हाल होगा। अेक कहावत है कि हाकिमके आगेसे और घोड़ेके पीछेसे कभी नहीं निकलना चाहिये न मालूम हाकिम कब क्या पूछ बैठे और घोड़ा कब लात मार बैठे। अिसलिये मैं भी बापूजीसे कतराकर निकलने लगा। आखिर दूर भी कब तक रह सकता था? मेरा खयाल था कि बापूजी मेरा स्वभाव जानते हैं मैं किसीको कुछ भी बोल देता हूं अिसलिये बातको टाल भी सकते हैं। लेकिन बापूजीके लिये तो वह प्रश्न महत्त्वका था। अुसे यों ही वे कैसे छोड़ सकते थे?

अेक रोज घूमते समय अुन्होंने धीरेसे बात निकाली — क्यों बलवन्तसिंह, तुमने बालकृष्णके लिये क्या कह दिया था? तुम्हारी बातसे अुसको बड़ा दुःख हुआ है और वह हिमालयमें भाग जानेकी बात करता है। मेरे अुस समय क्या हाल हुअे होंगे अिसका अन्दाज पाठकगण लगा सकते हैं। लेकिन अदालतमें जवाब न देना भी तो गुनाह है। अिसलिये मैंने धीरेसे कहा "हां बापूजी मैंने कहा था कि बालकोबाजी जीनेके लिये अितनी खटपट क्यों करते हैं? खुद परेशान होते हैं और दूसरोंको भी परेशान करते हैं। अेक तोला दूध या अेक खजूर या मुनक्का कम हो गया तो क्या और अधिक हो गया तो क्या?"

बापूजी गंभीरतासे बोले “यह तुम्हारी भूल है। तुमको क्या पता है कि अगर मैं न रोकता तो यह कबका हिमालय चला गया होता। अुसको तो सेवा और खटपट सहन ही नहीं हो सकती थी। यह बड़ा ही संकोची और भावना-प्रधान है। तुमको क्या पता है कि अुसमें सेवा करनेकी कितनी शक्ति भरी है? अगर खड़ा हो सका तो तुम देखोगे कि यह कितनी सेवा दे सकता है। अैसा ही समझो कि अुसे जीनेका लोभ है ही नहीं। यह तो मेरे प्रेमके वश होकर ही मेरे हुक्मका पालन करनेके लिये यहां पड़ा है नहीं तो कबका हिमालयमें चला गया होता और शरीर भी पड़ सकता था। लेकिन मैंने अुससे कहा है कि तुमको अच्छा होना ही है और सेवा करना है। साबरमतीमें तो अुसके खिलाफ यह शिकायत थी कि यह काम बहुत करता है और खुराक बहुत कम लेता है। अुसका शरीर बिगड़नेका यह भी अेक कारण हो सकता है। और भी कारण है। लेकिन अब यह समझ गया है कि शरीरको ठीक रखना भी धर्म है और जो भी नियम डॉक्टर या मैं बताता हूं अुसका अक्षरशः पालन करता है। डॉ॰ डेविडने अुसके पीछे काफी मेहनत और प्रेम बरसाया है। वह तो बड़े सेवाभावी और अपनी कलामें बड़े अुस्ताद हैं और अुनको पूरी अुम्मीद है कि बालकृष्ण ठीक हो जायगा। अगर मैं अुसे खड़ा कर सका तो मेरा अेक बड़ा काम हो जायगा। कुछ भी हो हमको साथियोंके प्रति अुदारता बरतना सीखना और सेवाभाव रखनेका अभ्यास करना चाहिये। हम अपने आपको दूसरेकी स्थितिमें रखकर सोचना सीखें। अुसने मुझे सर्वार्पण किया है तो मेरा धर्म हो जाता है कि मैं अुसे खड़ा करनेका पूरा पूरा प्रयत्न करूं। जितने पर भी अगर यह जायगा तो मैं रोते नहीं बैठूंगा। आखिर तो हम सब भूखे कालके गालमें खड़े हैं न? कोअी छोटा-मोटा पहलवान भी यह दावा नहीं कर सकता कि दूसरे क्षण अुसका शरीर रहेगा या नहीं। गीतामाता तो अपना कर्तव्य-कर्म करके अनासक्त रहनेको कहती है न? और अुसको तो मैंने समझा दिया है। लेकिन तुमको भी कर्तव्य-धर्मका पालन और साथियोंके साथ सहानुभूतिसे बरतना सीखना है। बालकृष्णको हम जितनी सेवा और प्रेम दे सकें अुतना देना हमारा धर्म है।

मैं बापूजीकी प्रेमवाणी सुनकर सुन्न रह गया। बापूजीने मुझे सब कुछ कह दिया लेकिन अुसमें अेक भी शब्द चुभनेवाला नहीं था। बापूजीने मुझमें

झपेटकर मुझे कुनैनकी अेक कड़वी गोली खिलाओ। मैं बालकोबाजीके पास गया और मेरे शब्दोंसे अुनको जो दुःख हुआ था अुसके लिअे अफसोस जाहिर किया। अुनका स्वभाव तो बड़ा ही सरल और भोला है। अुनके मनमें मेरे प्रति द्वेष नहीं आने पाया था बल्कि अपने आप पर ही ग्लानि आओ थी कि कहीं सचमुच ही मुझे जीनेका लोभ तो नहीं हो गया है। अगर अेक साधी अैसा सोचता है तो यह विचारने लायक प्रश्न है। मेरी बातचीतसे अुनके मनसे वह असर भी चला गया और अब तक हम दोनों अच्छे मित्र बने हुअे हैं।

आज बापूजीकी अुस दिनकी दिव्य दृष्टिका मैं विचार करता हूं तो आश्चर्यचकित रह जाता हूं। अुस निमित्तसे बापूजीने मुझे तो ज्ञानगोष्ठी सुना ही दी। लेकिन बालकोबाजीके लिअे बापूका शुभ-संकल्प कितना कितना सत्य सिद्ध हुआ अुसका दर्शन निसर्गोपचार आश्रम अुरुलीकांचन (पूनाके पास) को देखनेसे होता है। अुस संस्थाके लिअे देशके कोने कोनेसे ही नहीं समुद्र पार जाकर भी लाखों रुपये जमा करना बालकोबाजीकी शक्ति और स्वभावके बाहरकी बात थी। वे कभी सरदी और गरमीमें पैदल चलने लायक हो सकेंगे और जितनी बड़ी संस्थाको चला सकेंगे यह स्वप्न जैसी कल्पना कौन कर सकता था? कमसे कम मुझे तो नहीं ही थी। परंतु आज वे अुसके संचालनमें प्राणपणसे जुटे हुअे हैं। अगर आज बापूजी जीवित होते तो मुझसे पूछते कि देखो बालकोबाके बारेमें मैंने जो कहा था वह कैसे सच साबित हो रहा है। आज बालकोबा कितनी सुन्दर सेवा कर रहा है!

* * *

अन्तमें यहां मैं बापूजीके दो-तीन पत्र अुद्धृत करूंगा जो अुन्होंने बालकोबाको बीमारीमें अुन्हें लिखे थे। बापूजीके वात्सल्य सहानुभूति आश्वासन और प्रोत्साहनके जैसे ही पत्रने बालकोबामें जिजीविषा अुत्पन्न की होगी और स्वस्थ तथा सशक्त बनकर बापूजीके सेवाधर्मके आदेशको पूरा करनेका संकल्प-बल अुनमें पैदा किया होगा।

१

चि० बालकृष्ण

तुम्हारा पत्र मिला। यह नहीं कहा जा सकता कि अिस बार पंचगनीमें तुम्हारा निवास लाभदायी हुआ है। परन्तु कैसे कह सकते

हो कि तुम यहां रहते तो तुम्हारी तन्दुरुस्ती कैसी रहती? तुम्हें भविष्यका नहीं सोचना है। अगर मैं देखूंगा कि तुम मुझ पर बोझ हो रहे हो तो मैं स्पष्ट ऐसा कहनेमें संकोच नहीं करूंगा परन्तु जब तक तुम्हारा मस्तिष्क काम कर सकता है मैं नहीं कहूंगा कि तुम बोझ हो। अगर आदमीका मस्तिष्क काम करे और अुसकी भावना शुद्ध हो तो वह दूसरों पर बोझ कभी नहीं हो सकता। अक्सर विचार कार्यसे ज्यादा शक्तिशाली होते हैं। जैसे भाषा विचारोंको बांध देती है, वैसे कार्य मानवकी भावनाओंको बांध देता है।

२१-१-'४ बापूके आशीर्वाद

२

चि. बालकोबा

अगर आदमी असाध्य रोगसे पीड़ित हो और अमुक संयोगोंमें वह आदमी अनशन करे तो संभव है अिसे आत्महत्या करना न कहा जाय। परन्तु अगर अुस आदमीका चित्त शुद्ध हो तो अुसे ऐसा अनशन करनेका कोअी हक नहीं है भले वह असाध्य रोगसे पीड़ित हो। क्योंकि वह तब भी दूसरोंकी सेवा कर सकता है — अपने विचारसे।

२४-१-'४१ बापूके आशीर्वाद

३

चि. बालकृष्ण

मैं नहीं मानता कि तुम्हें किसी भी स्थितिमें हिमालय जाना चाहिये।

बापूके आशीर्वाद

मूक सेवक रामदासजी गुलाटी

भाअी रामदासजी गुलाटी सीमाप्रान्तके अेक अिंजीनियर थे जो सरकारी नौकरी छोड़कर पू. ठक्करबापाकी प्रेरणासे १९१४में सेवा और साधनाकी दृष्टिसे बापूजीके पास आये थे। बापूजीने अुन्हें पू. जाजूजीको सौंप दिया। जाजूजीने अुन्हें चरखा-संघके सावली उत्पत्ति-केन्द्रमें बुनाअीका अभ्यास करने भेज दिया। वे कुछ ही समयमें बुनाअीका शास्त्र समझ और सीखकर देखते

संचालक बन गये। वहीं मेरा अुनसे परिचय हुआ जब मैं १९३५ में अुनाकी सीखने सावली गया था।

अुनका प्रेमल स्वभाव अुनकी सरलता सरस्वता व्यवहार-कुशलता सूक्ष्म दृष्टि और सेवाभाव प्रशंसनीय थे। भगवद्भक्त और साधक भी वे अुच्च कोटिके थे। थोड़े ही दिनोंमें अुनके साथ मेरा घनिष्ठ संबंध हो गया। सावलीमें अुन्होंने मुझसे रामायणका अभ्यास करना शुरू कर दिया था। पाखाना-सफाओ व ग्राम-सफाओमें भी वे सबसे आगे रहते और सब काम अपने हाथसे ही करनेका आग्रह रखते थे।

जब वे सेवाग्राममें आ गये तब हम दोनोंकी आत्मीयता और भी बढ़ गयी। अुसके बाद सेवाग्रामका जो भी मकान बनता अुन्हींकी देखरेखमें बनता। फिर तो कांग्रेस-अधिवेशनोंमें भी सारी रचना अुनसे ही करानेका बापूजी आग्रह रखते थे क्योंकि अुन्होंने बापूजीकी सादी ग्रामीण कलाकी दृष्टिको पूरी तरह समझ लिया था।

मेरी गोशालाके नये मकानोंकी योजना बनानेके खर्चका अन्दाज लगाने और मकान बनवानेका काम भी बापूजी अुन्हें ही सौंपते थे। और मैं अुनकी सलाह सूचना या संशोधनको मंजूर कर लेता था।

बापूजीके अवसानके बाद भी भाओीलालभाओी पटेलके आग्रहसे वे वल्लभ-विद्यानगर, आणंदमें सिविल-अिंजीनियरीके प्रोफेसर हो गये थे। वहां कुछ समय बाद अुन्हें कैन्सरका असाध्य रोग हो गया जिससे बचना असंभव था। मृत्यु अुनके सामने मुंह बाये खड़ी थी। लेकिन अुन्होंने तो बापूके अुपदेशको जीवनमें ओतप्रोत कर लिया था। अिसलिये मृत्युसे अुन्हें किसी प्रकारका भय क्षोभ या ग्लानि जैसा कुछ नहीं लगता था। वे सदा प्रसन्नतासे मृत्युका स्वागत करनेके लिये तैयार रहते थे। अन्तमें अुसी रोगने अुनके प्राण लिये।

अुनका सारा परिवार बड़ा ही सुसंस्कृत है। बीमारीमें अुनके भाभी और भाभीने अुनकी खूब सेवा की।

सेवाग्राममें रहते हुअे अुन्होंने बालकोबासे पंचदशी आदि वेदान्त ग्रन्थों और अुपनिषदोंका गहरा अध्ययन किया था। वहां अुनकी साधना बीजकी तरह बिलकुल मूक अवस्थामें चलती थी।

अुनका रहन-सहन अत्यन्त सादा था। अुनके पास कुछ पैसे थे। अुन्हींसे आश्रममें रहकर वे अपना गुजर चलाते थे। आश्रम या चरखा-संघसे अुन्होंने कभी अेक पैसा भी अपने निजी खर्चके लिये नहीं लिया था।

बापूजीका अुन पर अनोखा प्रेम था। अुनकी रामको बापूजी सोलमोहर मानते थे। सेवाग्रामसे अुनके चले जानेके बाद हमें अुनकी बहुत याद आती थी और पद पद पर अुनकी सलाह और मार्गदर्शनकी जरूरत महसूस होती थी।

मुझे बड़ा दुःख है कि बीमारीमें न तो मैं अुनकी कोअी सेवा कर सका न अुनके दर्शन ही कर पाया। परम बचन मम्यू नहिं बोलहिं तुलसी-दासजीके अिस वचनका प्रत्यक्ष दर्शन रामदासभाअीके जीवनमें होता था। अैसे मूक सेवकोंका जीवन और मृत्यु दोनों ही धन्य होते हैं। आज अुनका स्मरण करके मैं धन्यताका अनुभव करता हूं।

धन्य घड़ी जब होहि सतसंगा।

अनमोल संतमालिकाके अेक मोती

सेवाग्राम आश्रमके वृद्ध श्रीपत बाबाजीने अपनी जिहलोककी यात्रा पूरी कर ली। बाबाजीका शरीर क्षीण हो गया था। अुनके वियोगकी कल्पनाने मनको अुदासीन बना दिया। अुनकी पवित्र स्मृतिसे हृदय भर आया। हमारे यहां कअी प्रकारके बाबा और महात्मा होते हैं। लेकिन श्रीपत बाबाजीने तो न कपड़े रंगे थे न लंबी दाढ़ी बढ़ाअी थी। वे सच्चे बाबा और महात्मा थे। अुम्र सत्तर वर्षकी थी। दरअसल वे देहातके अेक सच्चे किसान बुजुर्ग थे।

सन् १९४२ में जब वे जितना कमायें अुतना ही खायें अिस सिद्धान्तके अनुसार चलनेके कारण खुराकमें कमी हो जानेसे अत्यधिक कमजोर हो गये तब अुन्हें पवनारसे सेवाग्राम आश्रम लाया गया था। अितनी अुमरमें भी वे कताअीसे जितना कमा सकते थे अुतना ही खाते थे। मुझे ठीक पता नहीं है लेकिन बाबाजीकी कमाअी अितनी कम होती थी कि अनेक बार मैंने अुनको चने या खजूर खाकर या अुपास कर ही जाते देखा था। बाबाजीकी अिस कठिन तपश्चर्याका मैंने विरोध किया था और साधारण पोषक खुराक लेनेकी राय दी थी। लेकिन बाबाजीका यह विचार तो ठीक ही था कि जितना कमाओ अुतना खाओ।

यद्यपि बाबाजीसे पढ़ानेका काम अधिक नहीं होता था फिर भी जिनको वे आश्रममें पढ़ाते थे अुनको जब तक शुद्ध बोलते न आ जाता तब तक बाबाजीको संतोष नहीं होता था। अितनी तत्परता व लगनसे वे पढ़ाते थे। अुनके अुच्चार बड़े शुद्ध होते थे — चाहे मराठी हो चाहे संस्कृत चाहे हिन्दी। संस्कृत मराठीके समान ही अुनकी मातृभाषा लगती थी।

मुझे गीताजी पढ़ानेके समय यदि मैं स्थान पर नहीं रहता तो वे खुद मुझे खोजने आते और नाराज भी नहीं होते। नम्रता भी अुनमें गजबकी थी। दरअसल बाबाजी आश्रमकी शोभा थे आश्रमके सच्चे सेवक थे और गायकी तरह सरल और प्रेमी थे। पूज्य विनोबाजीकी सूचनानुसार अुन्होंने बापूजीकी कुटिया संभालनेकी जिम्मेदारी ली थी जो अुन्होंने अपनी सेहत ठीक रहने तक पूरी तरह निभाअी। वे आत्मज्ञानी और वैराग्यनिष्ठ भक्त थे। अुनकी ज्ञान-पिपासा आखिर तक बनी रही। वे करीब दो बजे जाग जाते और तबसे सुबहकी प्रार्थनाके समय तक केनावली अुपनिषद् या ब्रह्मसूत्र अथवा अन्य कोअी वैसा ही ग्रंथ अुनके अध्ययनका विषय रहता। अुनको गीताजी गीताजी अुपनिषद्, ब्रह्मसूत्र आदि अनेक ग्रंथ कंठस्थ थे। प्रार्थनामें जब ये पढ़े जाते तब बाबाजी बिना पुस्तकके ही अिन्हें बोलते थे। अिन पुस्तकोंसे अुनका अगाध परिचय था।

बाबाजी अपनी धुनके पक्के थे। वे मानते थे कि जो अपनी कमाअीसे अधिक खाता है वह दूसरेका पेट काटकर ही खा सकता है। यह बात बुद्धिसे माननेवाले तो बहुत मिलेंगे लेकिन अिस विचार पर अमल करनेवाला माअीका लाल कोअी विरला ही मिलेगा। बापूजी अुनको बहुत ही आदरकी दृष्टिसे देखते थे। आश्रमका हर काम घटी चलानेसे लेकर चक्की चरखा और झाड़ू लगाने तकका काम वे प्रेमसे करते थे। वे बड़े व्यवस्थित थे। अुनके कपड़े कभी भी बिखरे हुअे मैंने नहीं देखे। सब साफ-स्वच्छ रहते थे। आश्रममें रहते हुअे अुन्होंने बापूजीका कम-से-कम समय लिया। बापूजी खुद जब अुनको कोअी बात पूछते तभी वे जरूरी बात करते थे।

बाबाजीकी नम्रता तुकाराम जैसी थी। जब कोअी आध्यात्मिक चर्चा छिड़ती तो बाबाजी बालकोंकी तरह बोल अुठते "भाअू, अितकें सर्व करूनिहि आंतून कोरडा राहिलो!" (भाअी अितना सब करके भी अंदरसे कोरा ही रहा।) और तुकारामके शब्दोंमें आगे सुनाते "मापून अिसकों मापाची मा परी। खाळाची है थोरी लाभ बिन। (माप-माप कर रिस गया। अिस प्रकारके बड़प्पनको आग देना चाहिये। लोग मुझे महात्मा कहते हैं लेकिन मैं तो अन्दरसे खाली ही रहा।) महाराष्ट्रमें पायलीसे अनाज मापनेका रिवाज है। पायली बार बार भरती है, रिसती है और अंतमें खाली ही रह जाती है। जब अहंभावका सर्वथा अभाव रहता है, तभी वैसी नम्रताकी भाषा

निकल सकती है। मनुष्यकी बाह्य जगतमें ख्याति अवश्य क्षीण होती है और आंतरिक साधना अवश्य।

स्व. श्रीमत् बाबाजीको चाहे कोअी जाने या न जाने अुनका स्थान संतजनोंकी गुप्त मालिकामें कायम रहेगा। आश्रममें पहली पवित्र मृत्यु स्व. धर्मानन्दजी कोसाम्बीकी हुअी जिन्होंने अपना शरीर चलने लायक न रहा कर अेक मासका अुपवास करके अुसे छोड़ा था। और दूसरी पवित्र मृत्यु बाबाजीकी हुअी।

प्रभुसे प्रार्थना है कि बाबाजीके जैसी सरलता जीवनके संबंधमें जागृति और जितना समाओ अुतना खाओ के सिद्धान्त पर अंत तक अमल करनेका बल वह हमको भी दे।

बापूजीके अेकाप साथी

मध्यप्रान्तीय हरिजन-सेवक-संघके अध्यक्ष श्री तात्याजी वझलवारका स्वर्गवास १७ दिसम्बर, १९५५ को लंबी बीमारीके बाद नागपुरमें हो गया। यह दुःखद समाचार मुझे अुनके नाम लिखे पत्रके जवाबमें मिला। कअी दिनोंसे अुनकी तबीयत खराब थी। छह सात महीने पहले अुनके पेटका ऑपरेशन बम्बअीमें हुआ था। अुसके बाद वे संभल ही नहीं सके। श्री तात्याजी नागपुरके अेक महाविद्यालयके मुख्य अध्यापक थे। जहां तक मुझे याद है, सन् १९३९-४ के लगभग अुन्होंने सेवाग्राम आश्रममें बापूके पास आना आरंभ किया था। विद्यालयसे थोड़ा अवकाश मिलता तो वे आश्रममें दौड़ आते बापूजीसे प्रेरणा लेते आश्रमवासियों पर अपना स्नेह बरसाते और चले जाते। महीनेमें दो-चार दिन तो आश्रममें रहनेका अुनका आग्रह रहता ही था।

धीरे-धीरे नौकरी परसे अुनका मन हटता गया और बापूजीके रचनात्मक कार्योंमें दिलचस्पी बढ़ती गयी। अुन्होंने अिस्तीफा देनेका निश्चय किया तो विद्यालयके मुख्य अधिकारियोंने अुनका अिस्तीफा मंजूर न करके सेवाके लिये अुनको लंबा अवकाश दिया। क्योंकि वे विद्यालयके प्राण थे और किसी भी कीमत पर अधिकारी और विद्यार्थी अुनको छोड़ना नहीं चाहते थे। थोड़ा समय देकर भी वे विद्यालयके मुख्य अध्यापक ही बने रहें अैसी अुनकी अिच्छा थी। अिस अिच्छाके वश होकर अुन्होंने थोड़े समय तक निभानेकी कोशिश की। लेकिन वे बापूजीकी तरफ जितने अधिक आकर्षित

हो गये थे कि बड़े परिवारके खर्चका भार और साथियोंका प्रेमभरा आग्रह होते हुये भी विद्यालयसे त्यागपत्र देनेके लिये वे विवश हो गये।

अुनका मित्र-मंडल बहुत बड़ा था। अुनकी सुशीलता नम्रता सेवा-भाव सहनशीलता और हँसमुख प्रकृतिका असर बहुत ही व्यापक था। सन् १९४२ के आन्दोलनमें वे भोजन भले कलेक्टरके घर, जो अुनका मित्र था करते और पानी आश्रममें पीते थे। लेकिन अुनके अूपर किसी भी प्रकारका शक नहीं किया जा सकता था क्योंकि अुनका जीवन गंगाजलके जैसा पवित्र तथा स्फटिकके जैसा स्वच्छ और पारदर्शी था। अुनका काम अनेक प्रकारसे रेडक्रॉस का शुद्ध सेवाका ही था। अुनके जीवनमें राजनीतिक दावपेंच पदलोलुपता या भौतिक आकर्षणोंका नाम निशान भी नहीं था। गीताकी भाषामें जिन सब चीजोंसे वे कमलपत्र-वत् अलिप्त थे। सफेद कपड़ोंमें वे संन्यासी थे। विनोबाजीकी भाषामें वे शुद्ध कांचन-मुक्त थे। अुनकी सादगी और परिश्रम-निष्ठा अद्वितीय थी। आश्रमके लिये नागपुरसे कुछ सामान मंगाना होता तो अुसकी लिस्ट या तो वे स्वयं ले जाते या भेज दी जाती। वर्धा स्टेशनसे सेवाग्राम पांच मील है। जिस सामानको वे खुद अुठा सकते थे अुसे सिर या कमर पर लादकर पैदल ही सेवाग्राम पहुँचते थे। अगर कुछ अधिक होता तो साथमें मजदूर कर लेते थे। तांगा करनेकी नौबत तभी आती जब सामान बहुत ज्यादा होता था। आश्रममें पहुँचते ही आश्रमके नित्यकर्मोंमें — जैसे पाखाना साफ करना झाड़ू देना पानी भरना आदिमें — ऐसे रम जाते मानो वे नित्य आश्रममें ही रहते हों। बापू और आश्रमके प्रति अुनकी श्रद्धा अगाध थी। आश्रमवासी अुनको अपने बीचमें पाकर प्रफुल्लित हो अुठते थे और चाहते थे कि हमारे बीच वे जितना अधिक रहें अुतना ही अच्छा है। अुनका मन आश्रममें ही रमता था।

जबसे वे हरिजन-सेवक-संघके अध्यक्ष बने तबसे प्रान्तके कोने-कोनेमें जाकर अुन्होंने हरिजनोंके सुख-दुःखको समझा और अुनके अधिकार अुन्हें दिलानेकी दिलोजानसे कोशिश की। अपने शरीरको अुन्होंने चन्दनकी तरह घिसने दिया। रोजाना २५—३ मील तक साअिकल पर या पैदल दौड़ लगाते थे। मित्रोंने अुनको मोटरकी सुविधा कर देनेका प्रेमभरा आग्रह किया था लेकिन अुन्होंने नम्रतापूर्वक अुसका अस्वीकार कर दिया था। अुनकी तबीयत बिगड़नेका प्रबल कारण मर्यादासे अधिक अुनकी साअिकलकी दौड़

भी थी। अुनका भोजन बहुत ही सादा था। लेकिन वह भी वे समय पर नहीं कर पाते थे। घर पर तो अुन्होंने तुम्बीपात्र ही रख लिया था। नागपुरसे तीन मील बाहर अेक मित्रके यहां सोते और भोजन करते थे। पत्नीके आग्रह करने पर सप्ताहमें दो या तीन दिन घर पर भोजन करना कबूल किया था लेकिन वे अुसका भी पालन नहीं कर पाते थे। सेवाके कामोंमें अुनका मन जितना फंसा हुआ था कि भोजन आराम वगैरा अुन्हें विस्मरण ही हो जाता था। जिसका भी अुनके शरीर पर बुरा परिणाम हुआ। मन आकाशमें अुड़ सकता है, लेकिन शरीरको तो प्रकृतिके नियमके अनुसार जमीन पर ही चलना पड़ता है। जब अुन नियमोंका अुल्लंघन होता है तो शरीर मन और आत्माका साथ छोड़कर अपने भिन्न तत्त्वोंमें विलीन हो जाता है। अुनका शरीर जिस नियमका अपवाद कैसे हो सकता था? अनेक मित्रोंके आग्रह करने पर भी वे शरीरका अुतना ध्यान नहीं रख सके जितना रखना चाहिये था। अुनका मन और आत्मा शरीरसे बहुत अूंचे अुठ चुके थे तब शरीर बिचारा अुनका साथ कहां तक दे सकता था?

अुनका परम-स्वावलम्बन दर्शनका था। तकली और बुनाईका सामान अुनकी थैलीमें ही रहता था। वे अेक पैसेकी भी रूई या कपास नहीं खरीदते थे। फसलके मौके पर नागपुरमें जो कपासकी गाड़ियां आती अुनमें से जो कपास सड़कों पर बिखर जाती अुसे चुन लेते थे और साफ करके अुसका सुन्दर सूत कातते थे। जिस प्रकार धूलमें से धन पैदा करनेके बापूजीके मन्त्रको अुन्होंने अपने जीवनमें सिद्ध कर दिया था। बुनाईके लिये भी पैसा न देकर बदलेमें वे सूत ही देते थे। अुठते-बैठते चलते-फिरते अुनकी तकली अबाध गतिसे चलती ही रहती थी। मुखमें राम और हाथमें काम अुनका जीवन-मन्त्र था। रामदास स्वामीका वचन है

देह त्यागिता कीर्ति मागें अुरावी।
मना सज्जना हेचि क्रिया धरावी॥
मना चन्दनाचे परी त्वां झिजावें।
परि अंतरी सज्जना नीववावें॥

अर्थात् — देह त्यागने पर कीर्ति पीछे बच जावे। रे मन सज्जनोंकी अैसी ही क्रिया करनी चाहिये। रे मन तू चन्दनकी तरह घिसा जाय तो भी अन्तरकी सज्जनता कायम रहे।

जिस वचनको अुन्होंने अपने जीवनमें पूरी तरह अुतार लिया था। चन्दनकी तरह जैसे जैसे अुनका शरीर घिसता गया वैसे वैसे अुनकी सुगन्ध प्रखर होती गयी। अुनकी देह चली गयी लेकिन अपनी सेवा और सुगन्ध रूपी बहुत बड़ी पूंजी वे हमारे लिये छोड़ गये हैं। हम अुसका अच्छेसे अच्छा अुपयोग करें यही अुनके प्रति हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

मध्यप्रदेशके बाहर शायद अुनको बहुत कम लोग जानते हैं क्योंकि वे अखबारी दुनियाके झमेलेसे बिलकुल दूर रहते थे। तो भी अैसे मूक सेवकोंकी सेवाकी सुगन्ध बापूके साथ सारे आकाशको सुगन्धित करनेमें समर्थ होती है। अैसे पवित्र सत्पुरुषोंका जीवन और मृत्यु दोनों धन्य होते हैं। अुनका पवित्र स्मरण मनको पवित्र बनाता है। अुनके वियोगमें भी शोकके बजाय सात्त्विक प्रेरणा अधिक मिलती है।

प्रभुसे प्रार्थना है कि वह हम सबको अुनके सत्पथ पर चलनेका बल दे। बापूजीके अैसे बेदाम साथी थोड़े ही मिलेंगे।

अनोखा महापुरुष

पू० श्रीकृष्णदासजी जाजू जिन्हें हम काकाजीके नामसे पुकारते थे सचमुच ही बापूजीके बाद हमारे परिवारके काकाजीका पूरा फर्ज अदा करते थे। सबकी सार-संभाल सबके सुख-दुःखकी चिन्ता सबकी कठिनाअियोंमें मदद — अिसे अुन्होंने अपना ही फर्ज समझ लिया था। बापूजीके बाद हमारे परिवारमें तीन बुजुर्ग बचे थे। पू० किशोरलालभाअी पू० जाजूजी अेवं पू० विनोबाजी। किशोरलालभाअीका स्थान बड़े भाअीका था जो अंत समय तक अुसे निभाते हुअे हमें छोड़कर चले गये। काकाजीने कुछ लम्बे समय तक निभानेकी ही गरजसे हार्निआका ऑपरेशन कराना मंजूर किया था। डॉक्टरी राय थी कि यदि आरामसे अेक जगह रहा जाय तो ऑपरेशनकी जरूरत नहीं है। लेकिन काकाजीके लिये तो रामकाज कीन्हें बिना मोहि कहां विश्राम हनुमानका यह वचन सार्थक था। तीसरे हैं विनोबाजी जो अपने रुग्ण शरीरको लेकर केवल आत्मबलसे ही भूदानका गोवर्धन पहाड़ अपने सिर पर अुठाये भारतमें घूम रहे हैं। लेकिन कुटुम्बके बारेमें जो दिलचस्पी और लगन काकाजीमें थी वह अुनकी अपनी निराली वस्तु थी।

बापूजी और विनोबाके कामसे अुन्हें अेक क्षण भी विश्राम लेना असह्य था। सूर्यकी गतिकी भांति अुनका कार्य सतत चलता ही रहता था। ऑपरे

मिलना कठिन है। हमारे परिवारके वे प्रिवी कौंसिल थे। किसी व्यावहारिक प्रश्नके लिये बापूजीके पास समय न होता तो वे कहते जाओ जाजूजीके पास चले जाओ। जैसा वे कहें वैसा करो। फिर मेरे पास नहीं आना।

जब सेवाग्राममें बापूजीकी झोंपड़ीमें से संसार बड़ा तो मैंने पूज्य जमनालालजीके खेती-कार्यकर्ताओंको वहांसे अपना ढोरों-ढांडा अुठानेकी नोटिस दी। अुन्होंने जमनालालजीसे कहा कि अगर मालगुजारी रखनी हो तो यहां खेती रखना भी जरूरी है। जमनालालजीने बापूजीसे सारे सेवाग्रामका कब्जा देनेकी बात की क्योंकि वे तो बापूजीके यहां आते ही अुस गांव पर तुलसीपत्र रख चुके थे। लेकिन बापूजी जमींदार बनना पसन्द नहीं करते थे। आश्रमको तो सिर्फ काश्तकी जमीन चाहिये थी। प्रश्न खड़ा हुआ — या तो सब कुछ लो नहीं तो जमीन भी नहीं मिलेगी। जिस पर मेरी और जमनालालजीकी बापूजीके सामने मीठी टक्कर हुआी क्योंकि जमनालालजी मीठे थे। मामला काकाजीकी कोर्टमें गया। अुन्होंने देखा और फैसला दिया कि जमींदारीके साथ काश्तकी जमीनका कोअी सम्बन्ध नहीं है। जमनालालजीकी हार हुआी और मैं जीता।

काकाजीका प्रथम दर्शन मुझे जमनलाली (अुस समयकी जीवन-कुटीर) राजस्थानमें १९१४ में हुआ था। लेकिन १९१५ में जब मैं बापूजीके साथ मगनवाड़ी (वर्धा) और बादमें सेवाग्राम गया तो वहां अुनका सच्चा परिचय हुआ। जब गन्नेका रस चालू होता तो मैं अुनके पास जाकर पूछता कि रस चालू हो गया है कितना भेजूं। वे पूछते भाव क्या रखा है? मैं कहता आप भावकी झंझटमें क्यों पड़ते हैं? अरे भाअी मुझे अपना हिसाब देखना पड़ेगा कि कौनसी चीज कम करके रस लिया जा सकता है। अुस समय अुनके मासिक खर्चका बजट ३ रु था। अगर मैं आधा सेर भेजता और अुनको डेढ़ पावकी जरूरत होती तो दूसरे दिन अुतना कम भेजनेको कहते।

जबसे मैं राजस्थानमें आया तबसे वे सीकर आते तो मेरे पास ही गोशालामें ठहरते और कहते देखो आश्रमके लोग साथ अधिक जाते हैं मेरे लिये अुस हिसाबसे नहीं बनाना है। अुनका हिसाब तोलोंका था।

अेक बार अुन्हें सीकरसे अजमेर जाना था। मैं भी अपने कामसे अुधर जा रहा था। अुनके साथ ही गया। वे किसीको सेवाके लिये अपने साथ नहीं

रखते थे और जहां तक संभव होता तीसरे दर्जेमें ही सफर करते थे। फुलेरासे गाड़ी बदलनी थी। वहांसे अजमेरके लिये दो डिब्बे लगते थे। मैंने अेक सीट पर अुनका बिस्तर लगा दिया।। बैठ कर वे बोले अरे भाभी तुमने मेरा बिस्तर लगा दिया तो दूसरे लोग कहां बैठेंगे? अिसे समेट लो। मैंने समेट लिया। गाड़ीमें खूब भीड़ हो गयी। अजमेर तक काफी कष्टमें गये लेकिन अुन्होंने अुफ तक न की। सीकरमें मैंने अुन्हें थोड़ी मालिशके लिये राजी कर लिया और यह भी सूचना की कि आप किसीको साथमें रखा करें, अब आपकी अुम्र अकेले घूमनेकी नहीं है। थोड़ी थोड़ी मालिश भी कराते रहें तो शरीरको मदद मिल सकती है। वे बोले भाभी अब अिस शरीरको और कितने दिन रखना है? अिससे बहुत काम लिया है। अिसके लिये दूसरेका समय क्यों खर्च करूं?

जब २ जनवरीको काकाजी जयपुर आये तो मैंने दुर्गापुरा जाकर मेरी कुटी देखनेकी बात की। वे हंसकर बोले अरे भाभी वह जमीन तो मैंने पवित्र की है। मैं वहां गया था। अब तो समय नहीं है। पर मैंने ८ तारीखको अुन्हें राजी कर ही लिया। यहां आये। डॉ. शर्मा भी साथ थे। शर्माजी अुनको अमेरिका जानेकी बहुतसी बातें सुनाते रहे। मैं भोजन बनाने लगा तो बोले देखो जमनालालसिंह, तुम आश्रमवासी हो और आश्रम-वासियोंको भोजनकी झंझटमें नहीं पड़ना चाहिये। आओ मेरे पास बैठकर कुछ बातें करो। मैंने कहा आपकी बात तो ठीक है। लेकिन स्वभाव पड़ गया है अुसका क्या करूं? बोले अच्छा तो जल्दी खिला दो। अुन्होंने बड़े प्रेमसे भोजन किया और सब कुछ देखकर चले गये। मुझे क्या पता था कि अिस स्थानको पवित्र करनेका अुनका वह अन्तिम दिन था।

अेक बार राजस्थान सेवा संघकी सदस्यताके लिये कामके सीधा नियम कुछ ढीला करनेकी सूचना आयी। हम लोग कुछ ढीले पड़े। प्रस काकाजीके पास गया तो कड़क कर बोले अगर तुम लोग राजस्थानमें रहकर भी पायकें सीधा पत नहीं पाल सकते तो सेवा कैसे करोगे? मैं तो सारे हिन्दुस्तानमें घूमता हूं और पायके घी-दूधके व्रतका पालन करता हूं। अगर थोड़ी अड़चन भी आये तो मुझे सहन करनेकी तैयारी होनी चाहिये हमारे पास अिसका क्या अुत्तर हो सकता था? हम सावधान हो गये और अपने व्रतको हमने ढीला नहीं किया। यह थी अुनकी सिद्धान्त-निष्ठा।

जब अुनके ऑपरेशनकी बात तय हुआी तब धाताकृष्णजीके मनमें सहज यह शंका हुआी कि कहीं ऑपरेशन सफल न हुआ तो? अिस खयालसे अुन्होंने काकाजीसे पूछा आपको कुछ कहना तो नहीं है? अुन्होंने अुत्तर दिया नहीं मुझे कुछ नहीं कहना है। मेरे मनमें अैसा कुछ कहनेको है ही नहीं। ऑपरेशनसे पहले अुन्होंने कहा मुझे तो सामान्य वार्डमें रहना है। अन्तमें साथियोंके आग्रहसे अलग छोटे कमरेमें रहना अुन्होंने स्वीकार कर लिया। लेकिन अुस समय कमरा खाली न होनेसे अुन्हें १ २ रोजके किरायेके बड़े कमरेमें रखा गया जिसमें सब प्रकारकी सुविधा थी। यह कमरा अुन्हें रुचता न था। जब छोटा कमरा खाली हुआ तो साथियोंने बड़ेमें ही रहनेकी अुनसे विनती की। वे बोले अरे, मुझे अितने आराममें क्यों रखते हो? कहते कहते अुनकी वाणी रुक गयी और वे हिचकी बांधकर रोने लगे। अुनकी अिस भावनाको देखकर हमारे मुंह बन्द हो गये और हम अुनको तुरन्त छोटे कमरेमें ले आये। अुससे अुनको बड़ी प्रसन्नता हुआी। यह था अुनका गरीबीसे जीनेका महामंत्र। काकाजीने कभी अपने पास घड़ी या फाअुन्टेनपेन तक नहीं रखी जो आजके जीवनकी बहुत ही जरूरी चीजें बन गयी हैं। गाड़ीमें जाना होता तो टाअिमसे १०--१५ मिनट पहले स्टेशन पर पहुंच जाते। अिसलिअे गाड़ी छूट जानेका तो प्रश्न ही नहीं रहता था।

पू काकाजीके जीवनसे हम जितना भी पाठ लें अुतना थोड़ा ही होगा। अैसे अनोखे सत्पुरुष भाग्यसे ही कभी आते हैं। और

यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥*

का पाठ देकर चले जाते हैं। पीछे रहनेवाले अुनके आदर्शोंसे जितना लाभ अुठा सकें अुठायें।

मुझे अुनकी पवित्र आत्माकी शांतिके लिअे प्रार्थना करनेका तो क्या अधिकार है? क्योंकि अुनकी आत्मा तो शांत तथा प्रभुमय ही थी। अुसे मैं अपनी नम्र श्रद्धांजलि ही अर्पण करता हूं।

भगवान हम सबको अुनका छोड़ा हुआ काम पूरा करनेका बल दे यही प्रार्थना है।

* जो जो आचरण अुत्तम पुरुष करते हैं अुसका अनुकरण दूसरे लोग करते ।

१६

बापूके विभिन्न पहलुओंका दर्शन

हिमालयकी तरह अटल

अेक दफा बांदा जिलेके कुछ हरिजन डिस्ट्रिक्ट बोर्डमें सीट चाहते थे। वह अुनको मिल नहीं रही थी। अिसलिअे वे बापूजीसे मिले। बापूजी अपने ढंगसे अुस बातकी जांचबीन करके तथा वहांके कार्यकर्ताओंसे पूछताछ करके अुन्हें न्याय दिलानेका प्रयत्न करना चाहते थे। लेकिन हरिजन भाअी अपने ही ढंगसे तत्काल न्यायकी मांग करने लगे। बापूजीको यह बात ठीक नहीं लगी। तब अुन्होंने बापूजीके खिलाफ ही सत्याग्रह कर दिया और आश्रमके दरवाजे पर अुपवास आरम्भ कर दिया। बापूजीने कहा, आप लोग दरवाजे पर बैठे हैं, जिससे आपको तकलीफ होती है। आश्रममें ही बैठें तो कैसा हो? मैं आपको मकान देता हूं। साफ स्थानपर अुनके लिअे खाली करा दिया और आश्रमवालोंसे कह दिया कि अिनको किसी प्रकारकी तकलीफ न हो। अुनमें स्त्रियां भी थीं। वे लोग समझते थे कि शायद हमारे और विशेषकर स्त्रियोंके अुपवाससे बापूजी घबरा जायंगे और हमको सीट दिला देंगे। लेकिन बापूजी तो हिमालयकी तरह अटल रहे। अुन्होंने कह दिया कि योग्य रीतिसे जितना मैं कर सकता था अुतना मैंने किया है। जिस प्रकारसे हठपूर्वक अुपवास करके यदि आप मर जायेंगे तो भी मैं परवाह नहीं करूंगा। रोज सुबह-शाम बापूजी अुनके पास जाते और अुनसे बड़े प्रेमसे बातें करते थे। अुनको किसी चीजकी जरूरत पड़े तो आश्रमसे मदद लेनेके लिअे कहते थे। आश्रममें भी लोगोंसे कह दिया था कि अिनको हमारे बरतावसे अैसा प्रतीत नहीं होना चाहिये कि ये हमारे विरोधी हैं। आखिर वे लोग हारे और अुपवास बन्द करके चले गये।

अजीब मांगोंकी पूर्ति

अेक दफा सेवाग्राममें हैजा फैल गया। सुशीलाबहनने कहा कि सेवाग्रामके पासमें जो नाला बहता है अुसमें पैर डालकर सेवाग्राममें जाना पड़ता है। बरसातके दिनोंमें तो अिसीसे हैजा फैलता है। अिस कारण अैसी व्यवस्था होनी चाहिये जिससे पानीमें पैर न भीगें। बापूने गांवको

मुझे बुलाया और कहा "देखो सुशीला जब सेवाग्राम आती है तो रोज़ अुसके पैर नालेमें भीग जाते हैं। कल १ बजे अुसको आना है। अुसके पहले नाले पर पुल बंध जाना चाहिये। बापूजीके सामने तो हां कहना ही पड़ता। अिसलिये मैंने कह दिया जी बन जायगा।"

मैंने शामको ही जाकर नालेका मौका देखा। नालेका पानी जितनी चौड़ाओीमें बहता था कि अुसके अूपर कामचलाअू पुल भी जितनी जल्दी नहीं बन सकता था। मेरे सामने बड़ी समस्या थी। सुबह गया तो बहुत विचार किया। नालेके आसपास बड़े बड़े पत्थर पड़े थे। मैं कुछ आदमी तो आश्रमकी खेतीके अपने साथ ले गया और दस-पांच आदमी गांवके बुला लिये। अुनकी मददसे वे बड़े बड़े पत्थर ढकेलकर अैसे मिला दिये कि अुनमें से पानी भी निकल जाय और आदमी भी पार हो जाय।

मैंने दस बजेके पहले ही आकर बापूजीको रिपोर्ट दी कि पुल तैयार है। बापूजी हंसकर बोले अच्छा! और सुशीलाबहनसे कहा देखो सुशीला बलवन्तसिंहने पुल बना दिया। अब तू आरामसे आ सकती है। सुशीलाबहन गयी और अुस पुलके बारेमें बापूजीको अच्छी रिपोर्ट दी। बापूजीको अिससे काफी आनन्द हुआ।

अेक रोज़ सुबह बापूजीने मुझे बुलाया और कहा मीराबहनको यहां शांति नहीं मिलती है। वह टेकरी पर जाना चाहती है और आज ही जाना चाहती है। तो शाम तक वहां मकान बन जाना चाहिये। मनमें तो मुझे बहुत हंसी आयी कि बापूजी कैसी अनहोनी-सी बात कहते हैं? लेकिन ना थोड़े ही कह सकता था। बापूजीको हां कहकर मैं चला आया। सोचने लगा क्या हो सकता है? विचार करते करते ध्यानमें आया कि खेतकी रखवालीके लिअे मचान बनाते हैं वैसा गोल-सा झोंपड़ा बनाया जाय। अुसके अूपर गोल छप्पर भी बनाया जाय। बस बाकीमें लकड़ी रस्सी छप्पर बनानेका सारा सामान और अेक चलता-फिरता पाखाना ले गया। पांच बजे तक टेकरी पर मीराबहनके लिअे रहने लायक झोंपड़ा बन गया। जिसकी रिपोर्ट मैंने बापूजीको दी। बापूजीने मीराबहनसे तैयार होकर जानेके लिअे कहा। मीराबहन गयी और झोंपड़ा अुनको बहुत पसन्द आया।

अिस प्रकारसे बापूजीके पास अजीब अजीब मांगें आती थीं और अजीब ढंगसे बापूजी अुन्हें पूरा करते थे। जिसमें बापूको जितना आनन्द आता

था, अिसकी कल्पना वे लोग नहीं कर पाते थे जो यह मानते थे कि बापूके पास अितने बड़े बड़े काम हैं फिर भी आश्रमके लोग छोटे छोटे कामोंके लिये अुनका अितना वक्त ले लेते हैं।

कभी नहीं हारना

मअीका महीना था। बापूजी हवापानी बदलनेके लिये तीथल जा रहे थे। मैं स्टेशन तक अुनके साथ गया। आश्रममें कअी प्रकारके आपसी मतभेद चलते थे जिनके कारण मैं काफी दुःखी हो गया था। मैंने सब हाल बापूजीको सुनाया। बापूजीने भुसावल जाकर मुझे पत्र लिखा

चि० बलवन्तसिंह

तुम्हारे साथ ठीक बातें हुअीं। तुम्हारे स्वभावके साथ रहनेका अिल्म सीख लेना है। और सबके गुणोंको देखो। दोषोंको भूल जाओ। गायोंके बारेमें लेखापत्र आरम्भ किया होगा।

१०-५-३७ भुसावल बापूके आशीर्वाद

मैं सेवाग्रामसे कुछ ऊब-सा गया था और यहाँसे जानेकी अिच्छा मनमें घर करने लगी थी। मैंने बापूजीको पत्र लिखा जिसके जवाबमें अुन्होंने लिखा

चि० बलवन्तसिंह

तुम्हारा खत मिला। दूधके बारेमें मुन्नालालसे पूछता हूँ। तुम्हारी दलील सही तो लगती है।

मैं न तुमको निकालूँगा न दूसरे किसीको। जो अपने-आप भाग जायेंगे अुनको रोकूँगा नहीं। और सबसे यथाशक्ति सेवा भी लूँगा। यों तो कुछ न कुछ सब करते ही हैं लेकिन मेरे हिसाबसे यह काफी नहीं है। कभी नहीं हारना भले सारी जान जाये यह भी मेरे जीवनका अेक मंत्र है। सबको रहने दिया मैंने अब मैं सबको रुखसत दे दूँ तो मैं हारूँ और मूर्ख बनूँगा। मूर्ख बनना आपत्ति नहीं है वैसे तो मूर्ख हूँ पर यह आपत्ति होगी। अिसलिये हारनेकी बात मैं कैसे सहूँ?

आज किशोरलालभाअी और गोमतीबहन वर्धा गये।

२१-५-३७ तीथल बापूके आशीर्वाद

ब्रह्मचर्य और सन्तानोत्पत्ति

कुछ दिन पश्चात् बापू दौरेसे लौट आये। मैंने ब्रह्मचर्यके विषयमें बापूजीको अपने मनकी शंका लिखी। अुत्तरमें बापूजीने लिखा

चि. बलवन्तसिंह

तुम्हारा पत्र बहुत ही अच्छा है। निर्मल है। और तुम्हारी सब शंका अुचित है। भय भी स्थान पर है। और सावधानी स्वागत योग्य है।

१९१५की प्रतिज्ञा लिखी गयी है अंग्रेजीमें। गुजराती अथवा हिन्दी अनुवाद मैंने पढ़ा नहीं था। मूल अंग्रेजीका अर्थ यह है बहनोंके कंधे पर हाथ रखनेका मुहावरा मैंने रखा है अुसका मैं त्याग करता हूं। अुस वक्त या आज भी मैंने कुछ दोष महसूस नहीं किया न करता हूं। लेकिन लोक-संग्रहकी दृष्टिसे अुसका त्याग किया। जिसमें कभी यह अर्थ नहीं था कि मैं कभी किसी लड़कीके कंधे पर हाथ नहीं रखूंगा। मुझे खयाल नहीं है कि सेवाग्राममें कंधे पर हाथ रखनेका मैंने किस लड़कीसे शुरू किया। लेकिन मुझे जितना खयाल है कि मुझको १९१५की प्रतिज्ञाका पूरा स्मरण था और यह स्मरण होते हुअे मैंने अुस लड़कीके कंधे पर हाथ रखा। हो सकता है कि अुस लड़कीके आग्रहको मैं रोक न सका अथवा मुझे अुसके कंधेके टेकेकी दरकार थी। ऐसा तो मैं कैसे कह सकता हूं कि दुर्बलताके कारण ही मैंने सहारा लिया। और अगर ऐसा ही था तो मैं प्रतिज्ञाको कायम रखनेके लिअे किसी भाअीका सहारा ले सकता था। लेकिन मेरी प्रतिज्ञाका ऐसा व्यापक अर्थ था नहीं मैंने कभी किया नहीं।

अब रही अमलकी बात। मैंने मेरे निर्णयका अमल शुरू किया अुसके बाद ही भाष्य बना। प्रथम भाष्यमें जो अमल तीन चार दिनके बाद करनेकी बात थी अुसको मैंने दूसरे ही दिन शुरू कर दिया। जहां तक मेरी निर्विकारता अधूरी रहेगी वहां तक भाष्यको होना ही है। शायद यह आवश्यक भी है। संपूर्ण ज्ञान मौनसे ज्यादा प्रगट होता है, क्योंकि भाषा कभी पूर्ण विचारको प्रगट नहीं कर सकती। अज्ञान विचारकी निरंकुशताका सूचक है जिसलिअे भाषाकी वाहन चाहिये। जिस कारण ऐसा अवश्य समझो कि जहां तक मुझे कुछ भी समझानेकी

आवश्यकता रहती है वहां तक मेरेमें अपूर्णता भरी है अथवा विकार भी है। मेरा वाचा बहुत छोटा है और हमेशा छोटा ही रहा है। विकारों पर पूर्ण अंकुश पानेका अर्थात् हर स्थितिमें निर्विकार होनेका मैं सतत प्रयत्न करता हूं काफी जाग्रत रहता हूं। परिणाम औश्वरके हाथमें है। मैं निश्चित रहता हूं। अगर अब कुछ चीज बाकी रह जाती है अथवा कुछ नमी चीज आ जाती है तो मुझे अवश्य लिखो। तुम्हारा खत वापिस करता हूं।

सेगांव ११-६-३८ बापूके आशीर्वाद

ब्रह्मचर्य और सन्तानोत्पत्ति दोनोंमें मुझे विरोध-सा लगता था। मैंने बापूजीसे अिस बारेमें प्रश्न किया। अुत्तरमें बापूजीने लिखा

चि. बलवन्तसिंह

ब्रह्मचर्यमें अेक वस्तु यह है कि वीर्य निष्फल न होना चाहिये। जब अुसकी अूर्ध्व गति होती है तब माना जाता है कि वह निष्फल नहीं जाता है। बात सही नहीं है। जो मनुष्य क्रोध करता है वह वीर्यका दुर्व्यय करता है अथवा नाश करता है। अिसलिअे वह निष्फल हुआ। अिसी कारण ब्रह्मचर्यका अितने अंशमें नाश हुआ। अिसी तरह जो मनुष्य भोगवृत्तिसे स्त्रीसंग करता है अुसके वीर्यका नाश होता है। क्योंकि वह निष्फल जाता है। जब मनुष्यको किसी प्रकारकी विषय-वासना नहीं है, स्त्री-पुरुष दोनों सन्तान चाहते हैं और अिसी कारण मिलन होता है तब वीर्य सपूर्णतया सफल होता है। अिसलिअे अैसे दंपति संपूर्णतया ब्रह्मचारी हैं। अैसे दंपति शायद करोड़ोंमें अेक मिलें। तब अेक ही वक्त अुनका मिलन होता है। अुसके सिवा अैसे भाई-बहन रहते हैं अुसी तरह रहते हैं। मनसे वाचासे स्पर्शसे अथवा किसी तरह विषय-तृप्ति नहीं करते हैं। अुसके संतान-अुत्पत्तिके कारण बना हुआ मिलन किसी प्रकारसे भोगकी व्याख्यामें नहीं आता है। अितनेमें तुम्हारी शंकाका समाधान होना चाहिये।

सेगांव ८-७-३८ बापूके आशीर्वाद

अिस विषयमें तथा रामनामके विषयमें बापूने अेक साथीको जो लिखा था अुसका मुख्य अंश यह है

"रामनाम-स्मरण जब श्वासोच्छ्वासवत् स्वाभाविक होता है तब दूसरे कामोंमें विघ्नकर नहीं होता बल्कि बल देता है। तबूरेका सुर दूसरे सुरोंको बल देता है वैसे जिसमें दो काम साथ करनेका दोष नहीं आता। आंख अपना काम करती है, कान अपना। सब अेकसाथ होता है।

अब समझमें आ सकता है कि मेरे दूसरे कामोंको रामनाम सरल करता है सफल भी। अुसका स्वरूप अवर्णनीय है, अनुभवगम्य है।

ब्रह्मचर्य और अहिंसा शारीरिक तप है जिस बारेमें मुझे शंका थी; अब नहीं है। दोनोंका संबंध शरीरके साथ है। मनोविकारका असर शरीरव्याप्त है। वैसे ही क्रोधादि हिंसक विकारोंका। अगर शरीर न हो तो अहिंसा और ब्रह्मचर्य अर्थविहीन हो जाते हैं। अर्थात् दोनों शरीरके धर्म हैं और दूसरे शरीरके साथ संबंध रखते हैं।

ब्रह्मचर्यके लिअे बलवान साधन चित्तशुद्धि है। अुसमें बाह्य साधन कुछ अंश तक सहायक होते हैं।

प्रार्थना अनजानमें चलती है अुसका मतलब यह है कि जब मनुष्य अुसीमें रत रहता है तो अुसे पता नहीं चलता कि वह प्रार्थना करता है। जैसे गाढ निद्रामें सोये मनुष्यको निद्राका पता नहीं चलता। रामनामके विस्तृत अर्थमें यह कृष्णनाम भी आया। चरखा चलाना भी रामनाम हो सकता है।

छोटी-छोटी बातों द्वारा बापूका अुपदेश

अेक रोज गोशालाके चरागाहमें गांवके लोगोंके जानवर चर रहे थे। अक्सर वे लोग आपापीछा देखकर जिस तरहसे घास चरा लेते थे। मैंने अेक लड़केको समझाया और अुसके साथ थोड़ी धक्कामुक्की भी की। अुसने जाकर अपने बापसे शिकायत की। अुसका बाप पहलेसे ही मुझसे नाराज था क्योंकि जो जमीन हमने मालिकसे वाजिब दाम देकर चरानेके लिअे ली थी अुसे वे लोग बहुत कम दाम देकर चराते थे। लोगोंको यह पसन्द नहीं था कि जमीनके मालिकको अधिक दाम मिले। जिसलिअे अुस आदमीने मेरे खिलाफ अेक तूफान-सा अुठाया। वह ४–५ आदमी लेकर बापूजीके पास शिकायतके लिअे आया और बहुत ही बढ़ा-चढ़ाकर शिकायत की। मैंने

जो घटना घटी थी वह सब बापूके सामने स्पष्ट शब्दोंमें रख दी। बापूजीने अुन लोगोंसे कहा "किसी भी हालतमें बलवंतसिंहको तुम्हारे बच्चे पर हाथ नहीं अुठाना चाहिये था। अिस बार तो मैं अुसे माफ करता हूं लेकिन अगली बार अैसी घटना होगी तो अुसे सेवाग्राम छोड़ना पड़ेगा। क्योंकि मैं तो तुम्हारा सेवक बनकर यहां बैठा हूं स्वामी बनकर नहीं। तुम लोग जिस रोज नापसन्द करोगे अुसी रोज मैं यहांसे चला जाअूंगा।" अिस घटनासे मुझे काफी दुःख पहुंचा।

मैंने बापूजीको लिखा कि "अिस प्रकारकी घटना तो खेती और चराआीके बारेमें अक्सर ही रहती है। और लोगोंको नुकसान करनेकी और आपकी अुदारताका अैसा फायदा अुठानेकी आदत पड़ रही है। मैं अपने क्रोधको रोक नहीं सकता। खास तौरसे मेरे खिलाफ वातावरण तैयार करनेके लिअे लोगोंको आपके पास लाया। अब मेरी भी अिच्छा सेवाग्राममें रहनेकी नहीं है। मैं कहीं बाहर जंगलमें चला जाना चाहता हूं।"

बापूजीने लिखा

चि. बलवंतसिंह,

अुपाय अेक ही है। कड़वा कड़वा घूंट पी जाना। क्रोधको मारनेका प्रयत्न करते ही रहना। गोसेवाके खातिर क्या नहीं हो सकता है? अेकान्तमें तो क्रोध हो नहीं सकता। जहां हो सकता है वहीं अुसे जीता जा सकता है न? हम सेवक हैं। सेवक स्वामी पर हाथ कैसे अुठावे?

२९–७–१८ बापूके आशीर्वाद

आश्रमकी खेतीकी व्यवस्था के हाथमें थी और गोशालाका काम मैं देखता था। मेरी गायें कभी कभी खेतमें घुसकर फसल चर जाया करती थीं। को लगता था कि मैं जान-बूझकर फसल चरवा देता हूं। अिससे हम दोनोंके बीच संघर्षके मौके आते रहते थे। अिस पर मैंने बापूजीको लिखा कि आप खेती और गोशाला दोनोंका काम के हाथमें दे दें तो यह हमेशाका झगड़ा मिट जाय। मेरे पत्रके अुत्तरमें बापूजीने लिखा

चि. बलवंतसिंह,

सच्ची माता और झूठी माताकी बात सुनी है न? झूठी माताने कहा अच्छा लड़केके टुकड़े करो। अेक मुझे और दूसरा दूसरी

खानेवाली है अुसे दे दो। सच्चीने काजीसे कहा अगर यहां तक नौबत आती है तो मेरा दावा मैं वापस लेती हूं मगर बच्चेको यह औरत ले जाय। जिन्दा तो रहेगा। देखें अब सच्चा गोसेवक कौन सिद्ध होता है। दोनों ही सच्चे हो या दोनों निकम्मे भी साबित हो सकते हो या अेक सच्चा अेक झूठा। मेरे नजदीक तीन प्रश्न है। कभी नहीं हारता मगर सारी बात जाये।

२-९-३८ बापूके आशीर्वाद

आश्रमकी गोशाला और खेतीके लिये अुसके चालक कामकी योजना बनानेके बारेमें मेरे और के बीच कुछ मतभेद था। अिसलिये मैंने बापूजीको सारा हाल लिखा। पत्र लम्बा और कड़ा था। साथी पर भी जो गुस्सा हो अुसे साथी पर न निकालकर बापूजी पर ही निकाले सिवा दूसरा चारा ही नहीं था। क्योंकि साथी पर गुस्सा करना या अुसके साथ झगड़ा करना हिंसामें गिना जाता था। लेकिन बापूजीके साथ झगड़ा करने और अुन पर गुस्सा करनेका हम अपना जन्मसिद्ध अधिकार समझते थे। खास तौरसे मेरी तो लगाम खुली थी। बापूजीको कुछ भी लिखने या बोलनेमें मुझे झिझक नहीं होती थी। यह दोष मुझमें बचपनसे ही था। जब कभी मैं अपनी मां पर गुस्सा करता तो जो घरका बरतन हाथ लगता अुसे ही तोड़ डालता। मां मुझ पर गुस्सा न होकर दया करती क्योंकि अुसकी मान्यता थी कि मेरे जन्मके लिये अुसने जो तप या जादू-टोना कराया था अुसके असरसे मैं गुस्सेमें भान भूल जाता हूं। अिसमें मेरा दोष नहीं जादू-टोनेका दोष मांको दिखाओ देता था। अिसी प्रकार बापूजी भी क्रोधके हाथमें मुझे फंसा देखकर मुझ पर दयाकी ही दृष्टि रखते थे। लेकिन अुसमें जो तथ्यकी बात होती थी अुसको स्वीकार करनेमें ही अुन्हें आनन्द होता था। बापूजीके नीचेके पत्रसे अिसकी झांकी मिलती है

प्रिय बलवन्तसिंह

रात्रिके १२-४५ बज रहे हैं। मेरे पास कलम नहीं है। अब मौका अच्छा है अिसलिये सीसपेनसिलसे कागज पर लिख रहा हूं। तुमको अुत्तर देनेमें विलंब हुआ है। मैं लाचार हूं। डॉक्टर लोग मुझको रात्रिको काम करनेकी अिजाजत देते हैं? आज तो कुछ कारणवशात् नींद नहीं आती अिसलिये मैं तुमको लिख रहा हूं।

आशा करता हूँ कि मेरे अक्षर पढ़नेमें मुश्किल नहीं होगी। देखता हूँ संभव है तो कनुसे स्याहीसे लिखवाअूंगा।

मुझे यह डीप खतम होने तक समय दो। यह मौसम जाय तो जाने दो। गरीब लोग क्या करते हैं? तुम्हारे लिखनेमें कुछ भी अनुचित नहीं है। मुझे अिस पर क्रोध तो है ही नहीं। तुम्हारी भाषाके लिअे मेरे मनमें आदर है, क्योंकि जैसा तुम्हारे दिलमें आता है वैसा ही तुम कहते लिखते हो। बिलकुल संभव है कि मैं अंधेरेमें हूँ बल्कि ज्यादा संभव नहीं है क्योंकि अिन चीजोंमें मुझे तो कुछ भी समझता नहीं है। मैंने अेक बात पकड़ ली है। तुम दो दोषेक हो। तुम्हारेमें मेहनत अधिक योग्येम अधिक है। में शास्त्रीय ज्ञान अधिक है। अैसी हालतमें मैंने सोचा मैं यही चीज करूं जिसमें दोनों सम्मत हों। अैसा करते करते मुझे पता चल जायगा कौन सही कहता है। दरम्यान नुकसान आय तो मैं सहन कर लूंगा।

२१-१-४८ बापूके आशीर्वाद

ये पत्र मैंने अिसलिअे दिये हैं कि पाठकोंको पता चले कि बापूजी छोटी छोटी बातोंमें किस तरहसे अुपदेश देते थे और हमारे जीवनको आगे बढ़ानेकी कोशिश करते थे। अुनके पास अेक बार जो ठहर गया अुसमें अगर कोअी नैतिक दोष नहीं हो या अगर कोअी नैतिक दोष अुत्पन्न हो जाय और अुसे स्पष्ट कबूल करके सुधारनेकी कोशिश करे, तो मनुष्यके अूपरी स्वभावके कारण बापूजी अुसका कभी त्याग नहीं करते थे। अिस प्रकार अुन्होंने बड़े-बड़े नेताओंसे लेकर छोटे-छोटे कार्यकर्ताओंको सहन किया और अुनको आगे बढ़नेका मौका दिया। आज अिसीलिअे तो छोटे और बड़े सब अुनके अभावको महसूस करते हैं। अुनके जैसा सबके जहरको पीनेवाला शिवरूप सिवा मुझे दूसरा कोअी नजर नहीं आता।

गोशालाका चार्ज दिया

अन्तमें स्थिति यहां तक पहुंची कि मुझे गोशालाका काम छोड़ देना पड़ा। मैंने गोशालाका चार्ज दे दिया। कुछ रोज न तो मैं आश्रममें आता न गोशालामें ही रहा। रातको गोशालाके बाहर अेक खेतमें सो गया। सोनेसे पहले रोज सब गायों और बछड़ोंके पास जाकर मैं अुनके दाने-पानीकी व्यवस्था देखता और छोटे बछड़ोंके शरीर पर हाथ फेरकर देख लेता था कि

कहीं अुनके शरीरमें कोअी कांटा आदि तो नहीं है। क्योंकि जहां वे चरने जाते थे वहां पर कांटे और गोखरू बहुत थे। अिसलिये कभी कभी गोखरू और बड़े बड़े कांटे अुनके शरीर पर मिलते थे। बड़ी बड़ी चिचड़ियां भी मिलती थीं। अुनको निकालते निकालते कभी कभी रातके बारह तक बज जाते थे। बच्चे मुझे चारों तरफसे घेर लेते थे। कोअी अपनी गरदन मेरे सिर पर रख देता कोअी पीठ पर और कोअी मेरे मुंहको चाटता था। अिसमें अुनका अपने आपको सुहलानेका आग्रह रहता था। मैं भी अुनके बीचमें अपने आपको भूल जाता था। यह दृश्य भाअी प्यारेलालजीको बहुत ही प्रिय लगता था। आज भी वे अुसकी याद करके मुग्ध हो जाते हैं। अुस रोज रातको गाय और बछड़े जोर जोरसे रम्भा रहे थे। मैं यह तो नहीं कह सकता कि अुनको मेरा ही वियोग सता रहा होगा। लेकिन मुझे अुनका वियोग जरूर सता रहा था। मुझे लग रहा था कि वे सब मुझे बुला रहे हैं या अुनको कोअी कष्ट हो रहा है। मेरे दिलमें वैसा ही दर्द हो रहा था जैसे किसी मांकी गोदसे बच्चेको छीन लेने पर मांको होता है या बच्चेसे मांको अलग करने पर बच्चेको होता है। अपने दुःख और गायकी पुकारका लम्बा वर्णन मैंने बापूजीको लिखा। अपने लिये दूसरे कामके बारेमें भी पूछा था। बापूजीका अुत्तर आया

सेगांव
२१-१२-३८

चि. बलवन्तसिंह

तुम्हारा पत्र मैं ध्यानसे पढ़ गया हूं। अच्छा है। लेकिन मैं देखता हूं कि गायोंके वियोगकी बरदाश्त हो नहीं सकती है। अितना समझो कि यह वियोग अधिक सेवाके कारण ही होता है। मुझे अनुभव हो जायेगा तुमको भी हो जायेगा। अभी भी जो हो रहा है अुसकी योग्यताका तुम्हारे दिलमें शक रहा है। यह ठीक बात नहीं है। क्योंकि शक है तो तुम्हारे त्यागमें ज्ञान नहीं है। कलकी तुम्हारी बातसे मैं यह समझा कि तुम्हारा दिल साफ हो गया है और तुमने समझ लिया है कि जो हो रहा है वह सब तरहसे अुचित ही है।

तुम्हारी शुद्ध वृत्तिका तो मुझे खयाल तक नहीं है। अहंकारकी मैंने अवश्य बात की थी और वह भी मैंने तो स्तुतिके रूपमें कहा

था। मैंने तो यहां तक कहा कि तुम्हारी गोभक्तिका तो मुकाबला न पारनेरकर न और कोमी कर सकता है। न तुम्हारे जितनी मजदूरी पारनेरकर या और कोओी कर सकता है। तुम्हारा अनुभव भी काफी है, क्योंकि बचपनसे ही खेती और गोरू (गाय) का अनुभव मिला है। मैंने यह भी कहा कि जैसा होते हुमे भी तुम्हारा ज्ञान व्यवस्थित नहीं है शास्त्रीय नहीं है। जिसलिये पशु-विज्ञानमें आगे बढ़ नहीं सकते हो और तुम्हारा बोझ तुमको और गायको भी खा जाता है। जिसके साथ मैंने पारनेरकरको अपना दिल देखनेका कहा और अपनेमें आत्म-विश्वास हुमे कि वह कब्जा ले सकता है तब ही कब्जा ले ले। जिस वृत्तिसे और जिस हालतमें कब्जा मुझको दिया है। नायकम्‌जीसे मैंने बात कर ली है। वह तुमसे बात कर लेंगे। जिस वक्त कोओी निश्चित रूपसे काम न किया जाय। थोड़ा आराम की शान्तिसे जो हुआ है और हो रहा है अुस पर विचार करो, थोड़ा वाचन-मनन करो और सहज रूपमें जो आपसका कार्य मिल जावे वह करो। विमलताजीसे मिलकर जिस कामके लिये अुनको भीड़ होगी अुसे करो। तुम्हारे जैसे सेवकके लिये हमारी संस्थामें कामकी कोओी कमी हो ही नहीं सकती है।

बापूके आशीर्वाद

गोशालाका चार्ज देते समय गोशालाका हिसाब बनाकर मैंने बापूजीको भेजा। बापूजीने लिखा

चि बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत वापिस करता हूं। अक्षर पहलेसे ठीक तो हैं परंतु सुधारके लिये काफी जगह है। झूम झूमकर लिखना नहीं चाहिये। चारों बाजू पर हमेशा जगह होनी चाहिये। शब्द शब्दके बीचमें भी जगह रखी जाय। कलमकी नोक पतली होनी चाहिये। और यह सब सुधार भी गोमाताके निमित्त करता है यह संकल्प करना। संकल्पकी महिमा तो जानते हो न?

जो हिसाब तुमने भेजा है वह तो अच्छा है ही। तुम्हारी प्रामाणिकताके बारेमें तुम्हारी निःस्वार्थ बुद्धिके बारेमें कभी शंका थी ही नहीं।

शांतिसे रहते हो यह अच्छा ही है। शरीर मजबूत कर लो। हिन्दी ज्ञानमें वृद्धि करो।

बारडोली १८-१-३९ बापूके आशीर्वाद

राजकोट-प्रकरण और बाका पत्र

अिसी समय राजकोटका प्रकरण शुरू हुआ। बापूजी अुसको निबटानेका प्रयत्न कर रहे थे। वहां काफी लोगोंको पकड़ लिया गया था। अुस समय श्री विजयलक्ष्मी पंडित भी सेवाग्राम आयी थीं। अुन्होंने बापूजीसे कहा कि राजकोटकी लड़ाईमें शामिल होना तो मेरा भी धर्म है, क्योंकि राजकोट हमारा पुराना घर है। पं॰ रणजीतके पिता राजकोटके ही अेक प्रतिष्ठित नागरिक थे और अिस दृष्टिसे वे राजकोटको अपना स्थान मानती थीं।

बापूजीने कहा "तुम्हारी दलील तो सही है, लेकिन अभी तुमको नहीं भेजूंगा। पहले बाको भेजूंगा और फिर मैं जाअूंगा। हो सकता है तुम्हारी भी जरूरत पड़े।"

बापूजीने बाको कुमारी मणिबहन पटेलके साथ राजकोट भेजा। बा और मणिबहनको गिरफ्तार करके जंगलमें अेक सरकारी बंगलेमें रखा गया। बा मणिबहनसे बापूजीको और आश्रमके लोगोंको पत्र लिखवाया करती थीं। मैंने भी बाको अेक पत्र लिखा। अुसके जवाबमें अुन्होंने जो पत्र लिखा अुससे अुनकी विशाल दृष्टिका दर्शन होता है और यह पता चलता है कि वे आश्रमकी प्रवृत्तियों और व्यक्तियोंसे कितना गहरा संबंध रखती थीं। मेरे सारे जीवनमें बाने सिर्फ अेक ही पत्र मुझे लिखा है, जिसे मैंने बड़ी ममतासे सुरक्षित रखा है। मूल पत्र गुजरातीमें है। अुसका हिन्दी अनुवाद अिस प्रकार है

मार्फत कौंसिलके प्रथम सदस्य
राजकोट
२७-२-३९

भाअी बलवंतसिंह,

तुम्हारा पत्र कल मिला। पढ़कर आनंद हुआ। तुम तो वहां आश्रममें हो। कुछ न कुछ काम तो चलता ही होगा। तुम्हारा गायों पर बड़ा प्रेम है, कभी भीतर [illegible] देना ही।

विजया तो ससुराल गओ। मंगलाभाभी यहां हैं। मुन्नालाल है। सब आनंदसे रहता।

मणिबहनके पत्र यहां रोज आते हैं। तुम अुन्हें पढ़ते ही होंगे। मैं अुससे लिखवाती हूं। राजकुमारीको अंग्रेजीमें लिखती हूं। मि. कैलनबैक यहां बीमार पड़ गये। दो तीन दिन अुन्हें खूब तकलीफमें डाल दिया। परन्तु अब ठीक हो गये हैं। दो चार दिनमें निर्मला भी चली आयगी।

मैं आअूंगी तो मुझे नानाभटीके बिना बहुत सूना लगेगा। अब गांवमें सवेरे पाठशाला देखने कौन जाता है? किसीको सौंपा तो होगा। देखें काकासाहबके पास अुनकी कैसी तबीयत रहती है। काकासाहबको खूब प्रवास करना पड़ता है। रातको तीन चार बजे अुठने व लिखानेका काम काकासाहबके पास खतम नहीं होता। आदमी बिलकुल थक नहीं जाता तब तक लिखाया ही करते हैं।

आज तो बापूजी यहां आ रहे हैं। देखें क्या होता है। कल शामको नारणदास मिलने आये तब खबर मिली कि बापूजी आज आ रहे हैं।

तुम दोनोंका प्रेम मुझ पर बहुत है। ईश्वर अिसे ऐसा ही बनाये रखे तो बस है।

हम सब यहां मजेमें हैं।

बाके आशीर्वाद

नानाभटीजी बाको रामायण पढ़ाते थे और गांवके स्कूल वगैराका निरीक्षण करते थे। बादमें काकासाहबने अपने कामके लिअे अुन्हें ले लिया था। बाका अुन पर बहुत प्रेम था।

अुस समय मि. कैलनबैक सेवाग्राममें थे। अुनकी अुम साठसे अूपर थी लेकिन वे अेक नौजवानकी तरह आश्रमके सब कामोंमें हिस्सा लेते थे। अुनको बगीचेका बड़ा शौक था। आम वगैरा फलके पेड़ोंकी कलम आदि लगाते थे। कभी मिस्टर वे बड़े बगीचेमें साथ रहते और दक्षिण अफ्रीकाके अपने अनेक अनुभव सुनाते। मैं अंग्रेजी नहीं जानता था और वे हिन्दी नहीं जानते थे अिसलिअे हमारी सब बातें अिशारोंसे होती थीं। बापूजीके प्रति अुनकी

भरा अुनकी हरअेक हरकत बोलचाल और आदरपूर्ण बातोंसे स्पष्ट झलकती थी। बड़े ही प्रेमी और अुदार पुरुष थे। वे बीमार पड़े तो बापूजीने अुनकी बड़ी सेवा की। यह सेवा खास तौरसे लीलावतीबहनको सौंपी गयी थी। अुनकी सेवासे वे बहुत संतुष्ट हुअे थे। अेक तरहसे आश्रम-जीवनमें वे घुलमिल गये थे। आश्रमसे वे दक्षिण अफ्रीका लौट गये। वहां जाकर कुछ समयके बाद फिर बीमार पड़े और अिस दुनियासे चले गये।

लाहौर जानेकी तैयारी

पू. बापूजीने ता. १८–१–१९ के पत्रमें संकल्पकी महिमाकी ओर संकेत किया था। शायद अुस समय तो मैंने अुसको अितना नहीं समझा था लेकिन आज जब अुनका नीचेका पत्र मेरे सामने आता है तो पता चलता है कि अुन्होंने मेरे लिअे क्या संकल्प किया था। बीचमें मैं गोसेवासे करीब करीब अलग हो गया था और मनमें यह भी तय कर लिया था कि अब अिसमें नहीं पड़ूंगा। शायद अितना प्रसंग भी नहीं आता। लेकिन अेक अकल्पित घटना घटनेसे मैं आज यहां सीकरमें गोमाताकी सेवाका ही संकल्प लेकर बैठा हूं। मैं नहीं जानता कि गोमाताकी मुझसे कितनी सेवा बन सकेगी लेकिन बापूके अिन वचन पर विश्वास करके धीरजसे आगे बढ़नेका प्रयत्न कर रहा हूं। वह वचन यहां देता हूं

चि. बलवन्तसिंह,

बड़े शब्दोंके बीच ज्यादा अन्तर होना चाहिये। कैसी भी सुधारना काफी हुआी है। अैसा ही चलता रहेगा तो अच्छा ही होगा। मेरी चली तो तुम सच्चे और कुशल गोसेवक होनेवाले हो।

यह खत यहीं बारडोली होकर आज आया।

१–१–१ बापूके आशीर्वाद

सचमुच मैं यह अनुभव कर रहा हूं कि मुझमें बापूके अिन शब्दोंको पूरा करनेकी शक्ति न होते हुअे भी मेरा दिल आज गोसेवाके विचारोंसे ओतप्रोत है। अुसमें कुशलता कितनी आयी है, यह तो मेरे कामसे दूसरे लोग ही आंक सकते हैं। लेकिन मेरा दिल गोसेवाकी बड़ी बड़ी अुड़ानें भरता है। कभी कभी तो मनमें यह विचार आता है कि मैं मनुष्य-शरीरको छोड़कर गौ-शरीर ही क्यों न धारण कर लूं। या अिस तरहसे सब लोगोंके

अंदर पैठकर भोमाताकी सेवाके भाव भर दूं। सचमुच यह बापूके शुभ शुभ संकल्पका ही फल है, जो अुन्होंने मेरे लिअे किया था। बड़ोंके आशीर्वादकी शक्तिमें मेरा विश्वास बहुत बढ़ गया है।

अुसी समय बापूजी मुझे पंजाबमें की डेरीमें अनुभवके लिअे भेजना चाहते थे और अुनके साथ लिखा-पढ़ी कर रहे थे कि मैं कब जाअूं? अुधर श्री बालकोबाजी स्वास्थ्यलाभके लिअे पंचगनी गये थे। अुनके लिअे अेक सेवककी जरूरत थी। अिस बारेमें पत्र लिखकर मैंने बापूजीसे पूछा।

बापूजीका जवाब आया

चि बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। डेरीके बारेमें सम्मति चार दिन पहले आ गओ है। मैंने तो पंचगनी जानेका तार बनाकर को दिया था लेकिन वह तार भेजा ही नहीं गया जैसा आज ही जाना। क्या करें जैसा है वैसा हमारा कुटुम्ब है। अिस अव्यवस्थाके लिअे मैं दिली जिम्मेवारी प्रतिक्षण महसूस करता हूं। लेकिन मेरा यह दोष अब निकल नहीं सकेगा।

अब तुमको पंचगनी नहीं भेजूंगा। लाहौर जानेकी तैयारी करो। मैंने सब प्रबंध करनेका कबूल कर लिया है। कब जाओगे? मुझे तारीख भेजो तो मैं खबर भेज दूंगा।

बम्बअी २१-९-३९ बापूके आशीर्वाद

१७

मेरे गोसेवा-सम्बन्धी प्रवास

मुझसे बापूजीकी आशायें

मैंने ता० २२-१२-४८ को गोशालाका चार्ज को सौंप दिया। गोशाला छोड़ते समय मुझे और दूसरे काम करनेवालोंको खूब दुःख हुआ। कुछ लोग रोने तक लगे। लेकिन दिल कड़ा करके मैंने विदा ली। दूसरे दिन सवेरे घूमते समय बापूजीने कहा "देखो मैंने से साफ कह दिया है कि अमन्तर्लसिंह सब लेनेको तैयार है और अुसके हाथसे गोशालाका न तो आज तक कुछ बिगड़ा है न आगे बिगड़नेका अन्देशा है। अगर तुम अपने अूपर भरोसा रखते हो तो जो निर्णय हुआ है अुसे मैं बदलना नहीं चाहता। ऐसा समझो कि अब नये सिरेसे सब काम शुरू हुआ है तब तुमको दिया गया है। जिसमें तुम्हारी परीक्षा हो जायेगी। यह सब मैंने से कहा। तुमसे यह कहना है कि जब तक तुम्हारे हाथमें गोसेवाका काम सीधा न आवे तब तक तुम बाहर जाकर अपना गोसेवाका ज्ञान बढ़ाओ। गायका शास्त्र तो हमारी भाषामें है ही नहीं। यह दुःखकी बात है। अब तक हम ऐसे आदमी निर्माण नहीं कर सके हैं जो कुछ लिख सकें। तुमको मैं लाहौर भेजनेकी बात सोच रहा हूं। मैंने राजकुमारीको लम्बा पत्र लिखा है। वह को लिखेंगी। अुनका जवाब आने पर तुमको जाना होगा।

मैंने पूछा "आप मुझसे क्या आशा रखते हैं और मेरा किस प्रकारसे अुपयोग करना चाहते हैं? बापूजीने कहा "जितना तुम्हारा अनुभव-ज्ञान है अगर अुसमें शास्त्रीपना भी आ जाय तो अच्छा हो। प्रवासमें तुम जितना ज्ञान पा सकोगे जिसके अूपर आधार है। अगर तुम्हारा ज्ञान जितना हो जाय कि किसी भी जानकार आदमीके सामने गोसेवाकी बात जिस प्रकारसे रख सको या अुसके मनमें अुतर जाय और मैं जहां चाहूं वहां तुम्हें भेज सकूं और तुम सबके साथ मिलजुल कर काम कर सको तो मेरा काम निबट जायगा। मैं देख रहा हूं कि तुम्हारे स्वभावमें परिवर्तन

तो काफी हुआ है लेकिन अभी और भी करना होगा। मैं तो तुमसे अखिल भारतीय विशेषज्ञकी हैसियतसे सारे हिन्दुस्तानकी गोसेवा करा लेना चाहता हूं। मेरे पास पैसे तो काफी पड़े हैं। परन्तु अुनका अुपयोग कैसे करूं? मेरे पास अेक भी आदमी नहीं। दिल्लीकी गोशाला (कैटल ब्रीडिंग फार्म) के लिअे घनश्यामदासने कहा था कि अगर आप कहें तो मैं अुसमें दो-तीन लाख रुपये लगानेको तैयार हूं। लेकिन आदमी आपको ही देना होगा। तो मैं आदमी कहांसे दूं? जब पारनेरकर धूलियामें काम करता था तब अुसने पारनेरकरकी मांग की थी। तब मैं देनेको तैयार नहीं था। अब तो वह मेरे ही पास रहना चाहता है और मुझे भी यही पसन्द है। यों तो हिन्दुस्तानमें गोसेवा-विशारद बहुत पड़े हैं लेकिन अुनसे मेरा काम नहीं चलेगा। मेरा काम तो वही कर सकता है, जिसने मेरी सब बातोंको अच्छी तरह समझा है। गुजरातमें भी गोसेवाका काम अधूरा ही पड़ा है। अिसीलिअे मैंने तुमसे कहा था कि भले खाली बैठना पड़े लेकिन यहीं पड़े रहो तो मैं कुछ न कुछ काम ले ही लूंगा। अगर आदमीमें तेजस्विता है तो दूसरी चीजें तो आ ही जाती हैं।" अिस सिलसिलेमें बापूजी बहुतसे लोगोंके दृष्टान्त दे गये जिनको अुन्होंने अपने कामके लिअे अयोग्य पाया था। फिर मुझसे बोले

तुमको अेक और भी परीक्षा देनी होगी। तुम्हारा और पारनेरकरका जो अेक-दूसरे पर अविश्वास है अुसे मिटाना होगा। आज तुम अुसके काममें बिलकुल विश्वास नहीं करते और न वह तुम्हारेमें। जब तुम भी शास्त्रीय ज्ञान प्राप्त कर लोगे तो वह भी समझ जायगा और तुम भी अुसके कामकी कीमत समझ सकोगे। मैंने कहा “आपकी बात बिलकुल ठीक है। बापूजीने कहा कि तुमको थोड़ी अंग्रेजी भी सीखनी होगी। मैंने कहा मुझे स्वयं अंग्रेजी सीखनेकी अिच्छा नहीं है लेकिन आप चाहेंगे तो सीखना कठिन न होगा। बापूजीने कहा यह तो मैं जानता हूं।

दूसरे दिन फिर घूमते समय मैंने बापूजीसे कहा “आपकी बात पर मैंने खूब विचार किया है। मुझे अैसा नहीं लगा कि मैं पारनेरकरजीके प्रति मनमें अीर्ष्या या द्वेष रखता हूं या अुनके काममें बाधक बना हूं। यह बात सच है कि मुझे अुनकी कार्य-पद्धतिमें विश्वास नहीं है। बापूजी बोले यह तो मैं जानता हूं। लेकिन मुझे अविश्वास नहीं है। मैं यह

भी जानता हूं कि अुसके पास तुम्हारे जितना अनुभव-ज्ञान और श्रम करनेकी शक्ति नहीं है। लेकिन अुसके पास शास्त्रीय ज्ञान है जो तुम्हारे पास नहीं है। हो सकता है तुम्हारी बात ही ठीक हो। क्योंकि मैं तो अिस विषयमें कुछ भी नहीं जानता। मैंने वीरावाला*के साथ जो प्रयोग किया है वह करने जैसा है क्योंकि मैं अहिंसाका जो अर्थ करता हूं अुसके अनुसार सांप भी मेरे हाथमें खेलना चाहिये। वह मेरे स्पर्शमात्रसे यह समझ जायगा कि मेरा अिरादा अुसको चोट पहुंचानेका नहीं है। परन्तु अुसी सांपको छूनेकी मैं दूसरेको सिफारिश नहीं दूंगा। अहिंसाका यह अर्थ नहीं है कि हिंसक समान रूपसे सबके लिये अहिंसक बन जाय। परन्तु जिसने अुसके साथ अहिंसाका बरताव किया हो अुसके लिये तो वह अवश्य अहिंसक बन जायगा। वीरावाला साधु बन जायगा अैसा नहीं है। लेकिन वह मेरे साथ जरूर सीधा चलेगा। मेरा मतलब यह नहीं है कि दुष्टकी दुष्टताको नहीं देखना। मेरे जीवनमें अनुचित सहिष्णुताने प्रवेश करके मेरे कामको खूब नुकसान पहुंचाया है। अखबारनवीसोंके कड़वेसे कड़वे मायणोंका मैंने कुछ भी जवाब नहीं दिया। अुससे आज मुझे नुकसान हो रहा है। आज मैं कड़वेसे कड़वे जवाब देता हूं। अगर तुम्हारी बात सच होगी तो मुझे भी पता चल जायगा। मेरा काम किसी प्रकार चलता है। अगर तुम्हारे दिलमें अैसा लगे कि बापूने जितना अन्याय किया तो मुझे छोड़कर भाग सकते हो। दुनियामें तुम्हारे लिये कहां जगह नहीं है? लेकिन अगर तुमने यह समझकर धीरज रखा है कि बापू जो कर रहे हैं कुछ सोच कर ही कर रहे हैं, तो मेरे पास बहुतसा काम पड़ा है। हिन्दी पढ़ना तो है ही अुर्दू भी पढ़ना है और अंग्रेजी भी पढ़ना है।

तारीख २९-४-३९ से ६-५-३९ तक वृन्दावन (चम्पारण बिहार)में गांधी-सेवा-संघकी सभा थी अुसमें मैं गया। वहां भी बापूजीसे कुछ न कुछ चर्चा होती रही। अेक रोज बापूजीने कहा मैं तुमसे बड़ी आशा लगाये बैठा हूं। गोसेवाका काम बड़ा कठिन है। अुसके लिये बड़े गुण मनुष्य चाहिये धीरज चाहिये सहनशीलता चाहिये। अुसका पूरा पूरा ज्ञान चाहिये। यह सब तुममें हो अैसी आशा लगाये बैठा हूं। मैं देख रहा हूं कि ये सब गुण तुममें बढ़ रहे हैं लेकिन अभी बहुत कुछ करना है। मेरे

* बापूजीके राजकोटके अुपवासके समय राजकोट राज्यके दीवान।

सामन मौसेवाका पहाड़ पड़ा है, लेकिन आदमी नहीं हैं। तुम जहांसे भी मौसेवाका ज्ञान प्राप्त कर सकते हो वहां हिन्दुस्तानमें कहीं भी जानेकी और जितना भी खर्च करना हो वह करनेकी तुमको छूट है। मैंने कहा, "महासे सेवाग्राम लौटते समय मिनाहाबाद दिल्ली हिसार और लवाकबागकी गोशालाओंमें देखते जानेका मेरा विचार है।" बापूजीने सबके नाम पत्र लिख दिये और मैं सब गोशालाओंमें देखता हुआ सेवाग्राम पहुंचा।

लाहौरकी गोशालाका अनुभव

बिसी बीच जुलाईमें लाहौरके प्रवासका कार्यक्रम बना। बापूजीने मुझे लाहौर जानेका आदेश दिया। बापूजी यात्रामें थे। मैं दिल्ली जाकर अनुसे मिला। अन्होंने कहा कि ९ तारीखको तुम्हें लाहौर पहुंचना है। वहां तुम्हारी सब व्यवस्था हो जायगी। तुमको सब प्रकारका ज्ञान देनेकी कोशिश करेंगे। मैंने पूछा कि मुझे वहां कितने दिन रहना होगा। बापूजीने कहा मैंने छह मासका सोचा है, लेकिन तुमको लगे कि अधिक समय रहना चाहिये तो दो चार वर्ष भी रह सकते हो।" फिर वहां किस तरह रहना होगा बिस विषय पर काफी समझाया। मैंने स्टेशन पर बापूजीको प्रणाम किया। वे बोले "देखो हारना नहीं।" मैंने अुत्तर दिया बापूजी, हारनेसे तो मेरी लाज ही चली जायेगी। फिर बापूजीने कहा जाओ और गोशालाका अच्छा ज्ञान प्राप्त करके जल्दी सेवाग्राम पहुंचो। वहांसे सब हाल मुझे लिखते रहना।

९ जुलाईको मैं लाहौर स्टेशन पर अुतरा। भी मुझे लेने लाहौर पहुंचे थे। अुन्होंने स्टेशन पर मुझे तलाश किया परन्तु हम लोग मिल न सके। क्योंकि वे किसी जटाधारी पुरुषकी खोजमें थे और मेरा सिर घुटा हुआ था। आखिरकार मैं जैसे-तैसे अुनकी गोशालामें पहुंचा। रास्तेमें मुझे मिले भी थे लेकिन अेक-दूसरेकी पहचान न होनेसे वह मिलना निरर्थक रहा। गोशाला पर जाकर मैंने देखा कि वहां न तो मेरे ठहरनेका प्रबन्ध था और न खाने-पीनेका। कठिनाईसे मैंने स्नानादि किया। खाना बनानेके साधन बड़ी कठिनाईसे शामको मिले। कुछ समय बाद आये तो अुनसे मेरी बातें हुईं। भोजनके प्रबंधके बारेमें अुन्होंने अपनी असमर्थता प्रकट की। अेक सराय-सी जगहमें मैंने जैसे तैसे खाना बनाया। जब मुझे ठहरनेके लिये कमरा बताया गया तब तो मैं दंग रह गया।

क्योंकि कमरेमें पानी भरा था और आसपास कीचड़ था। मैंने अुस कमरेमें ठहरनेसे अिनकार कर दिया। सारी गोशाला ही कीचड़वाली बनी हुअी थी। सब जानवर कीचड़में खड़े थे। सिर्फ दूध निकालनेकी जगह पक्की थी और वहां कीचड़ नहीं था। गोशालामें अठारह भैंसें भी थीं। मेरे आश्चर्यका पार नहीं रहा जब मैंने देखा कि दूध निकालनेवाले ग्वाले दूध निकालते समय थनोंमें साफ पानी या चिकनाअी न लगाकर थूकका अुपयोग करते हैं। अिस गन्दी प्रथाकी कल्पना मुझे स्वप्नमें भी नहीं थी। रातके समय जब मैंने फूका प्रथाका शर्मनाक दृश्य देखा तो दुःखसे मेरा सिर फटने लगा। अेक भैंस कुछ गड़बड़ कर रही थी। अुसके योनिद्वारमें अेक बांसकी पोली नली डालकर अुसमें जोरसे फूंक मारी गअी। थोड़ी ही देरमें भैंस लाचार बनकर खड़ी हो गअी और अुसने सारा दूध बर्तनोंमें अुतार दिया। बापूजीने यही प्रथा कलकत्तेमें देखी थी और अुससे दुःखी होकर दूधका त्याग किया था। मैंने फूका-प्रथाके विषयमें पढ़ा तो था लेकिन समझमें नहीं आया था। अब आंखों देखकर मैं हैरान हो गया।

अभी मेरे नसीबमें अेक और भी दुःखद घटना देखनी शेष थी। मैं रातको सोनेका प्रयत्न कर रहा था तब अेक पाड़ेकी करुणाजनक आवाज मेरे कान पर पड़ी। मैं अुठकर अुसके पास गया तो देखा कि अेक नवजात पाड़ा भूखसे तड़प रहा है। रातमें अुसे खिलानेके लिअे मेरे पास कुछ भी नहीं था। सुबह लोगोंसे मालूम हुआ कि वहां यह प्रथा थी कि गाय या भैंसके ब्याते ही अुसका बच्चा अुससे अलग कर लिया जाता था। गायकी बछियोंको और भैंसकी पाड़ियोंको तो दूध पिलाकर पाल लेते थे लेकिन गायके बछड़ेको किसी पालनेवालेको मुफ्तमें दे देते थे। वह बेचारा बैल बनानेके लोभसे अुसे कुछ न कुछ दूध छाछ या पानीमें घुला आटा पिलाकर बचानेकी कोशिश करता था। तो भी आधेसे ज्यादा बछड़े मर जाते थे। भैंसके पाड़ेको तो सीधी मौतकी सजा ही दी जाती थी। पैदा होते ही अुसे गोशालाके बाहर फेंक दिया जाता था जहां वह दो-तीन दिनमें तड़प तड़पकर मर जाता था। मैंने गोशालाके मैनेजरसे अुसे दूध पिलानेकी बात की तो अुसने आनाकानी की। तब मैंने कहा अुसे मेरे हिस्सेका दूध पिला दो क्योंकि अिस प्रकारका हत्याकांड मुझसे देखा नहीं जायगा।" अिस पर वह बेचारा धर्मसंकटमें पड़ गया। अन्तमें अुसने दूध पिलाना कबूल

किया। ग्वाले कहने लगे कि आस्मानी (महात्मा गांधीकी कोठियामें वे आसमानी कहते थे) यहाँ तो नहीं पाय चलता है। यह बाड़ा बापूकी कृपासे बच जाय तो खुदाका शुक्र मानना चाहिये। यह सब देखकर मैं विचारमें पड़ गया कि आये थे हरिभजनको ओटन लगे कपास। बापूजी समझेंगे कि मैं गोसेवाका विशारद बन रहा हूँ और यहाँ मेरी गाँठकी पूँजी भी जानेका खतरा है। मैंने बापूजीको सारा हाल विस्तारसे लिखा और पूछा कि मैं यहाँ सीखूँ या जिनको सिखाऊँ? जवाबमें बापूजीने लिखा

चि बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत बहुत अच्छा है। सब साफ साफ लिखा है। ऐसा ही चाहिये। कुछ तो सीखोगे लेकिन काफी सिखाओगे। थोड़े ही दिनोंमें तुम्हारा मार्ग साफ हो जायगा। का मुझ पर खत आया है। के आया है। वे अपने बड़े फार्म पर भी तुमको भेजना चाहते हैं। हिसाबसे तुमको करीब करीब २॥ महीने लगेंगे। देखें क्या होता है।

गायका दूध बरतन रखकर असलमें से मक्खन निकाल लेना। दही जमाकर शीघ्र ही निकालोगे। वैसे सब कुछ ठीक हो जायगा।

तुम्हारा खत राजकुमारीको भेजूँगा। वहाँसे आश्रम जायगा और वहाँसे सुरेन्द्रको। को तो कुछ भी नहीं लिखूँगा।

बा प्यारेलाल और सुशीला वहाँसे कुम्भारकी गाड़ीमें रवाना होंगे। यह खत मुझके बाद मिलेगा।

ऐबटाबाद १२-७-३९ बापूके आशीर्वाद

जिस विषयको लेकर से मेरी काफी लम्बी चर्चा और पत्र व्यवहार चला। आखिरकार उन्होंने सरलतासे स्वीकार किया कि भाई हम तो व्यापारी आदमी हैं। सब कुछ नफा-टोटा देखकर करना होता है। एक बछड़ेको पालनेके लिये एक सौ पचास रुपया खर्च होता है। वह कहाँसे लायें? वैसे मुझे भी पसन्द नहीं है। लेकिन ग्राहकोंको दूध रखनेके लिये रखनी पड़ती है। धीरे धीरे उन्हें निकालनेका प्रयत्न करता हूँ।

मोडल टाउनमें मेरी प्रवृत्ति

मैं कुछ न कुछ सीखनेका प्रयत्न तो करता ही था। लेकिन मेरी बछड़ोंकी बात मोडल टाउनमें फैल गयी। गोशालाका प्रधान कर्मचारी

मॉडल टाअुनमें रहता था। अुसने कुछ लोगोंसे मेरा परिचय कराया। अिसलिये चरखा चलाना और अुनना सिखाना भी मेरा अेक काम हो गया। श्री सुशीलालजी कपूर सी० आअी० डी० पुलिसके सुपरिण्टेण्डेण्ट थे। अुनकी लड़की कान्ताकुमारी मेरी प्रचारिका बनी। वह खूब कातना-अुनना सीखती और दूसरी लड़कियोंको भी बुलाकर लाती या अुनके घरों पर मुझे ले जाती। अिस प्रकारसे मेरा परिचय बढ़ता ही गया।

अेक रोज मैं वहांकी भंगीबस्तीमें गया तो बस्तीका हाल देखकर मुझे अत्यंत दुःख हुआ। अेक छोटेसे कमरेमें आठ आदमी अेकके अूपर अेक तीन खाटें बिछाकर रहते थे। न वहां पानीका प्रबंध था न रोशनीका। घरोंके सामने कीचड़ ही कीचड़ था। मॉडल टाअुनके संस्थापक दीवानचन्दजी तथा पुलिस सुपरिण्टेण्डेण्ट श्री सुशीलालजीसे मैंने हरिजनोंकी करुण कथा कह सुनाअी। दोनोंने आकर हरिजन-बस्ती देखी तथा अुसी दिनसे अुसमें सुधार करवानेकी खटपटमें लग गये। और भी कअी भाअी-बहनोंको मैं वहां ले गया। सब लोगोंने कमेटी पर जोर डालकर भंगियोंको सुविधा दिलानेके लिये कमर कस ली। रात्रि-पाठशाला चलानेका भी निश्चय हुआ। अुसमें चरखा चलवानेके लिये भी विचार किया गया। चरखोंके लिये कुछ चन्दा भी हुआ। रामप्यारीबहनने बापूजीके पास रहनेकी अिच्छा बताअी। मैंने अुनको आशादेवी और बापूजीसे पत्रव्यवहार करनेकी राय दी। आजकल वे बहन माता रामेश्वरी नेहरूके साथ काम कर रही हैं। अेक नौजवान लड़का सूरजप्रकाश भी सेवा करनेको तैयार हुआ। बहन कान्ताकुमारी सुशीलाकुमारी विमला-कुमारी कृपाकुमारी और महेन्द्र कौरने कातने बुनने और हरिजन बहनोंकी सेवामें दिलचस्पी बताअी। मॉडल टाअुनमें गांधी-जयंती पर खादी प्रदर्शनी भी रखी तथा खादी बेचने और हरिजन-फंड जमा करनेका कार्यक्रम बना। डॉ० गोपीचन्दजी भार्गवसे मिलकर खादी प्रदर्शनीका प्रबंध करवाया। हरिजन-फंडमें १   रुपये मिले। जयंतीके दिन काफी अच्छी सभा हुअी। मॉडल टाअुनके जीवनमें अैसा यह पहला ही कार्यक्रम था। लोगोंमें बड़ा अुत्साह था। लोगोंने मुझे वहां दो-तीन मास रहनेको कहा लेकिन यह संभव नहीं था।

शुद्ध भूखकी व्याख्या

अेक दिन अेक रायबहादुर साहबने मुझे भोजनके लिये प्रेमभरा आग्रह किया। मैंने कहा कि मेरे भोजनमें बड़ी खटपट है। आप अिसका विचार छोड़

पीजिये। जब अुन्होंने पूछा तो मैंने बताया कि मेरे लिये अुबली भाजी और गायका घी-दूध चाहिये। वे बोले यह तो छोटी-सी बात है। रोज ग्वाला मेरे घर गाय लाकर दूध निकाल जाता है और भाजी अुबालना तो अेक मामूली-सी बात है। मैंने अुनके घर भोजन करना कबूल किया। दूसरे दिन सबेरे जब मैं घूमने गया तो रायबहादुर साहबके दरवाजे पर अेक ग्वाला दुबली-सी गाय लेकर आया। मैंने सहज ही पूछा कि गाय कहां से ला रहे हो? वह बोला कि रायबहादुर साहबके यहां दूध निकालकर देना है। गायका हाड़-पिंजर देखकर मेरी आंखें खुल गयीं। अैसी गायके दूधको क्या दूध कहें, लेकिन असलमें तो वह गायका खून ही है। मेरे मनमें दूध दूधकी व्याख्या स्पष्ट हो गयी। जिस गायको पेटभर चारा बढ़िया दाना स्वच्छ पानी, रहनेको स्वच्छ जगह तथा प्रेमी पालक मिला हो और जिसके बच्चेकी तन्दुरुस्ती अच्छी हो, जिसे किसी प्रकारका रोग न हो और जिसे देखकर मन प्रसन्न होता हो, अुसी गायका दूध शुद्ध माना जाना चाहिये। अैसी भी गायके थनोंमें से जो सफेद चीज निकलती है वह दूध नहीं होता बल्कि अुसके खूनका ही सफेद रंग हो गया होता है। यह बात मैंने राय-बहादुर साहबको और दूसरे लोगोंको समझायी और अुस गायका दूध पीनेसे अिनकार कर दिया। अुसके बाद मेरी गोसेवा और जनसेवा साथ साथ चलने लगीं। शायद चलते समय बापूजीने मुझे रहन-सहनके बारेमें यही समझानेकी अिच्छासे कुछ कहा होगा। अुनके शब्दोंको तो मैं भूल गया था लेकिन अुनका अर्थ पुष्ट रूपमें मुझसे अपना काम करा रहा था।

अेक सबक बापूसे और

मेरे लाहौर-निवासके अरसेमें लायलपुरके अेग्रीकल्चरल कॉलेजमें जो भारतका अुच्च कोटिका कॉलेज माना जाता था, अेस्टेट मैनेजर क्लास का १५ दिनका वर्ग चला था। अुसमें सारे पंजाबके फार्मोंके मैनेजर ट्रेनिंग लेने आये थे। मैंने भी अुस वर्गके लिये अर्जी भेजी थी जो मंजूर हुयी थी। अिसलिये मैंने १५ दिनका यह कोर्स पूरा किया और अुसमें अच्छे नम्बरोंसे पास हुआ। अब यदि कोअी मुझे निरक्षर कहे तो अुस पर अेतराजीका दावा करनेके लिये मेरे पास लायलपुर अेग्रीकल्चरल कॉलेजका प्रमाणपत्र मौजूद है।

कॉलेजके विद्यार्थियों और प्रोफेसरोंमें चरखा मेरा प्रचारक बना। यों तो जितने लोग अुस कोर्समें आये थे सबके ही साथ मेरा अच्छा परि-

खम हो गया था। लेकिन सरदार गुरुदयालसिंहजी मालने मुझे अपने गांव मामाबाला चलनेका आग्रह किया जो शेखूपुरा जिलेमें था। वहां अुनकी अच्छी खेती बसती थी। सरदारजी फौजमें कप्तान थे। लेकिन अुन्हें खेतीका बड़ा शौक था। मैं अुनके साथ वहां गया। अुनकी खेती देखकर तो आनन्द हुआ ही लेकिन अुनकी छोटी बहन गुरुबचन कौरसे मिलकर बड़ी खुशी हुआी। दरअसल सरदारजी मुझे अिन बहनसे मिलानेकी ही गरजसे ले गये थे। वे बहन प्रज्ञाचक्षु थीं। अुन्होंने गुरुमुखी और हिन्दीकी कभी परीक्षायें दी थीं। बड़ी ही अिनकी सात्त्विक और बुद्धिमान थीं। अपने खर्चसे अेक कन्याशाला चलाती थीं। कभी लड़कियां अुनके पास ही रहती थीं। अुनमें हरिजन लड़कियां भी थीं। छूतछात बिलकुल नहीं थी। नेत्रहीन होने पर भी अुत्तम सूत कातती थीं। भजन-कीर्तन तथा गुरुग्रंथ साहबका पाठ नियमित चलता था। अुनके आसपासका वातावरण किसी ऋषिके आश्रम जैसा लगता था। बहनके आग्रहसे मैं दो तीन रोज वहां ठहरा। वहांसे गुरु नानक साहबके जन्मस्थान ननकाना साहब भी गया। बहनकी बापूजीसे मिलनेकी बड़ी अिच्छा थी। वे सेवाग्राम दो बार आयी और बड़े भक्तिभावसे थोड़े दिन रहकर चली गयीं। बापूजीको अुनके विचार और स्वभाव बहुत पसंद आया। सरदार गुरुदयालसिंह भी सेवाग्राम आकर बापूजीसे मिले। सी आओी डी ने अुनके खिलाफ रिपोर्ट की। जब अुनसे जवाब तलब हुआ तो अुन्होंने कहा मैं सरकारका वफादार नौकर हूं। अगर अुसमें कहीं फर्क पड़े तो सरकार मुझसे जवाब तलब कर सकती है। लेकिन अपने धार्मिक मामलेमें मैं स्वतंत्र हूं। मैं महात्माजीको धार्मिक महात्मा मानता हूं। अुसी भावसे अुनके दर्शनके लिअे गया था। और जब मौका मिलेगा आगे भी जाअूंगा। जिसके लिअे सरकारको जो करना हो वो कर सकती है। अुनकी दृढ़ता देखकर सरकार चुप हो गयी। पाकिस्तान बनने पर सारा मामाबाला खाली करना पड़ा। भूपेन्द्र मान जिनके छोटे भाओी हैं जो संसदके सदस्य और पेप्सु सरकारमें मिनिस्टर भी रह चुके हैं। बहन गुरुबचन कौरसे और अुनके सारे परिवारसे आज भी मेरा वैसा ही प्रेम-सम्बन्ध है।

आजकल यह परिवार बल्कि सारा मामाबाला गांव ही फतेगढ़ साहब जहां गुरु गोविन्दसिंहके जिन्दा बच्चोंको दीवारमें चुनवाया गया था

तालीमियाम रहता है। बहन पुरुषचन कौरकी कन्याशाला और कन्या-छात्रालय यहाँ भी चलता है।

अेक आदर्श गोसेवकके दर्शन

जब मैं पंजाबकी गोशालाओंका अनुभव लेते हुअे लाहौरसे मांटगुमरी पहुँचा तब वहाँके कुछ मुसलमान भाअियोंने अलहदाद फार्म देखनेका आग्रह किया। यह स्थान मुल्तान जिलेकी जहानिया तहसीलमें है। मैं वहाँ पहुँचा और अलहदादजीसे मिला। अुनसे मिलकर मुझे अैसा अनुभव हुआ कि किसी देवतासे मिल रहा हूँ। जब अुनको यह पता लगा कि मैं बापूजीके पाससे आया हूँ और गोसेवामें रुचि रखता हूँ तो वे आनन्दसे गद्गद हो गये और बोले, देखो भाअी, मैं महात्माजीसे अेक साल छोटा हूँ। अुनके लिअे मेरे दिलमें बहुत बड़ी मुहब्बत है। वे तो खुदाके बन्दे हैं और मुल्ककी बड़ी खिदमत कर रहे हैं। मैं अेक मामूली आदमी हूँ और छोटासा गोसेवाका काम लेकर बैठा हूँ सो भी अपने स्वार्थसे। मैं तो अेक गरीब किसान था। जब पंजाब सरकारने सांड तैयार करनेकी योजना बनाअी और बीस सालके पट्टे पर जमीन देनेकी जाहिरात की तो मैंने हिम्मत करके हाथ फैला दिया। मेरे चार लड़के हैं। मैंने किसीको भी अंग्रेजी नहीं पढ़ाअी। अुनको थोड़ासा कामचलाअू पढ़ाकर खेती और गोपालनमें लगा दिया। अेक दूधकी गायों और दूधकी व्यवस्था करता है। दूसरा दूध पीते बच्चों और दूसरे बच्चोंको संभालता है। खेती और हरी घास पैदा करनेकी जवाबदारी तीसरेकी है। सूखी घास और सांड चौथा संभालता है। खुदाके फजलसे मुझे तो गायकी मेहरबानीसे ही रिजक मिल रहा है। मेरी अेक गाय मेरे फार्म पर २३ साल जिन्दा रही और अुसने १७ बच्चे दिये। सरकारी डॉक्टरोंने कहा कि अिसे गोलीसे मार देना चाहिये। तो मैंने कहा कि अब मेरा भी क्या बनेगा? मुझे भी क्यों नहीं गोलीसे मार दिया जाय? यह गाय मरी ही भूखसे मरी। मैंने अुसे हर जगह चरनेकी छूट दे दी थी। अेक रोज वह चरते बागमें घुस गअी और अधिक खाने लग गअी। अन्तमें पेट फूलनेसे मर गअी। अुसका मुझे बड़ा अफसोस है।

अलहदादजीकी सफेद चिट्टी लम्बी दाढ़ी, अुनका हसमुख चेहरा और गोसेवाकी भावनासे ओतप्रोत अुनके मनको देखकर मुझे बहुत ही खुशी हुअी। अुनके सब जानवर हृष्ट-पुष्ट थे। अुनके फार्म पर पूरी स्वच्छता थी। काम

काश्तकारोंको भितना अनाज भितनी कपास और आध सेर रोजका दूध तथा अूपरसे थोड़ा पैसा मिलनेका प्रबन्ध था। यहां मजदूर-मालिकका भेद नहींके बराबर प्रतीत होता था। अुस समय अुनके पास कुछ मिलाकर ५० जानवर थे। अुनके लड़के कहने लगे कि जब हमारे अब्बाजान गोशालामें आते हैं तो सबसे पहले कमजोर जानवरोंका निरीक्षण करते हैं। अगर कोअी जानवर कमजोर मिले तो हमारे साथ लाठीके सिवा बात नहीं करते। अुनका कहना है कि जो जानवर बोलता नहीं है अुसे हम अगर तकलीफ देते हैं तो खुदाके घर गुनहगार होते हैं। देखिये यह घोड़ी यहीं अंधी पैदा हुअी थी। भिसे ९ सालसे हम खाली अंधीको चुगा रहे हैं। सबसे पहले हमारे अब्बाजान भिस घोड़ीके पास आते हैं। अगर यह कमजोर हो जाय तो हमारी खैर नहीं है।

मुझे मालूम हुआ कि खांसाहबने स्टेशनके पास अेक सराय हिन्दू मुसलमान दोनोंकी समान सुविधाके लिये बनवाअी है, जहां मुसाफिरोंकी काफी सेवा की जाती है। मुसलमानी ढंगके अनुसार अपनी आमदनीका दसवां हिस्सा वे वैसे ही पुण्यकार्योंमें खर्च करते रहते हैं। बहुतसे हिन्दुओंका अैसा गलत खयाल बन गया है कि गायकी सेवा हिन्दू ही कर सकता है। लेकिन अैसे अनेक माअीके लाल मुसलमान पड़े हैं जो हिन्दुओंसे कहीं अच्छी सेवा गायकी करते हैं। मैं अपने अनुभवसे कह सकता हूं कि सारे पंजाबमें हिन्दुओं और सिक्खोंकी व्यवस्था और सेवासे कहीं अच्छी व्यवस्था और सेवा मैंने असदुल्लाजीके यहां देखी।

चलते समय असदुल्लाजीने कहा देखो मैं तो महात्माजीके पास पहुंच नहीं सकता लेकिन आप अुनकी खिदमतमें मेरा सलाम अर्ज कर देना। जब मैंने यह सारा समाचार बापूजीको लिखा तब बापूजीने मुझको लिखा कि मुसलमान भाअियोंकी कथा बड़ी रोचक है। भिस प्रकारके अनेक अनुभव मुझे अुस प्रवासमें हुअे।

बापूजीसे भेंट

अुन्हीं दिनोंमें आलमपुरमें श्री प्रभुदासभाअी गांधी अुत्सव मना रहे थे। अुसमें वे किसी प्रमुख आदमीको बुलाना चाहते थे। पूज्य किशोरलालभाअीने अुनको मेरा नाम सुझाया और मुझे भी वहां जानेके लिये लिखा। अुनका लिखना मेरे लिये फौजी हुक्म जैसा था। मैं वहां गया और वहां भी गायके

ही जीत मैंने पाये। वहांसे दिल्ली आया और पन्द्रह दिन पूसा फार्म पर रहकर वहांकी गोशालाका सब हाल देखा। अुस समय वहां पर डॉक्टर करवान्दीकर सुपरिन्टेन्डेन्ट थे। वे बड़े सरल आदमी थे। अुन्होंने बड़े प्रेमसे मुझे सब कुछ दिखाया।

लाहौरसे लौटते समय फिरोजपुर छावनीकी मिलिटरी डेरी भी देखी। सरदार किशनसिंह अुसके बड़े ही योग्य मैनेजर थे। ता ९–७–३९ को बापूजीसे विदा लेकर गया था। ता १–११–३९ को दिल्लीमें लौटकर मैंने जब अुन्हें प्रणाम किया तो वे हंसकर बोले "अरे, चोर कहांसे आ गया? घूमते समय सब हाल पूछा और बोले दिल्लीका कैटल ब्रीडिंग फार्म भी देख लो। अगर तुमको अैसा लगे कि अुसमें कुछ किया जा सकता है तो अुसका चार्ज मिल सकता है। अुसी दिन मेरी भतीजी चि० होशियारी बापूजीसे मिलने आयी थी। अुसने बापूजीसे कहा कि मेरी अिच्छा आपके पास रहनेकी है। लेकिन पिताजी राजी नहीं होते हैं। बापूजी बोले मेरे पास तो तुम रह सकती हो लेकिन पिताजीको राजी करना होगा। अगर तुम्हारा संकल्प सच्चा होगा तो तुम्हारी जीत होगी।" अुसी संकल्पने जोर मारा और पांच सालके बाद सन् १९४४ में वह बापूजीके पास सेवाग्राममें आ ही गयी।

दूसरे दिन दिल्लीका कैटल ब्रीडिंग फार्म देखने गया और वहां भी लक्ष्मीनारायणजी गाडोदियासे बातें कीं। फार्म अिन्हींके जरिये चल रहा था। अुसमें भैंसाका भी प्रवेश हो चुका था। अिसलिये मैंने बापूजीसे कह दिया कि अिन शर्तोंमें ठीक नहीं है। अगले दिन जब मैं बापूजीके पास गया तो बापूजीकी मालिश की जा रही थी। मैं चुपचाप जाकर खड़ा हो गया। बापूजीने मुझे देख लिया और बोले देखो बलवन्तसिंह आ गया है। अैसा न समझना कि यह चुपचाप खड़ा रहेगा। अुसको मालिशमें हिस्सा दो नहीं तो तुम्हारी खैर नहीं।" सब लोग हंस पड़े और बापूजी भी खूब हंसे। मेरे लिये अेक पैर खाली हो गया और मैं अपने काममें लग गया। अिस अनोखे प्रेमका स्वाद चखनेके बाद आज सब स्वाद फीके लगते हैं। बापूजीकी कल्पना बहुत अूंची थी। वहां तक तो मैं नहीं पहुंच पाया। लेकिन अुन्हींके प्रतापसे जितनी जानकारी और अनुभव मुझे हो गया है कि अिस विषयके बड़ेसे बड़े जानकारोंके सम्मुख आत्म-विश्वाससे अपनी

बात कह सकूं। मेरी कही हुअी बात अधिकतर तो अुनके मनमें अुतर जाती है। पर कभी असफलता मिलती है तो जैसा जानकर अपनी बात अुनके गले अुतार सकूं अितना धीरज भी मुझमें आ गया है। यह सब बापूका ही प्रताप है।

मूक होहि वाचाल पंगु चढ़े गिरिवर गहन।

१८

विविध प्रसंग

अेक बोधपत्र

किसी समय बंगालमें गांधी-सेवा-संघकी सभा थी। बापूजी वहां जा रहे थे। मैंने बंगाल जानेकी अिच्छा बताअी और कहा कि मैं वहांकी गांवें देखना चाहता हूं। अुस समय कृष्णचंद्रजी मुझे हिन्दी पढ़ाते थे लेकिन ठीक ठीक समय नहीं दे पाते थे। अिसलिअे मैंने बापूके पास शिकायत की थी। मैंने लिखा था कि मैं अुनकी खुशामद नहीं करूंगा। बापूजीने अिन दोनोंके सम्बन्धमें लिखा

चि. बलवंतसिंह

अिस वक्त गांधी-सेवा-संघमें तुमको ले जानेका दिल नहीं है। बंगालकी गांवोंकी चिन्ता हम न करें। कृष्णचन्द्रसे कहूंगा। लेकिन ज्ञानके पिपासुको खुशामद करनी पड़ती है। जब मेरे जैसे महात्मा बनोगे तब तुमको ज्ञान देनेवाले तुम्हारी खुशामद करेंगे। दरम्यान गीताका वचन याद करो। वह यह है कि प्रणिपात (खुशामदसे) परिप्रश्न (बार बार प्रश्न करनेसे) और सेवा करके ज्ञान सीखो। गीताका क्रम तो महात्माओंके लिअे ही शायद बदलता होगा। बाकी मुझे जो खुशामद करनी पड़ती है सो मैं ही जानता हूं।

२७-१-'४ बापूके आशीर्वाद

अुन दिनों मेरे पास कोअी दूसरा खास काम नहीं था। मैंने बापूजीको लिखा कि मैं कुछ नहीं करता हूं और करूंगा भी नहीं। खाली बैठकर

दूध पीता हूं। मगर आप दूध पिलाते पिलाते थक जायेंगे तो चला जाऊंगा।
बापूने लिखा

चि॰ बलवन्तसिंह,

दूध पीते पीते थको तो दूसरी बात। मैं तो रोकनेवाला नहीं हूं। न मैं यहांसे तुमको कहीं हटानेवाला हूं। यहीं रहना और आनन्द पूर्वक जो काम मैं दूं वह करना। भूमीमें तुम्हारी साधना है। भूमीमें मोक्ष है।

सेगांव ८-२-'४ बापूके आशीर्वाद

* * *

मालिकांदा (बंगाल) में गांधी-सेवा-संघका अधिवेशन था। बापूजी शान्तिनिकेतन जानेवाले थे। बापूजीके साथ जानेकी जिज्ञासा बहुतोंकी थी। मैं भी बंगालके गांवें देखना चाहता था। लेकिन शान्तिनिकेतन देखने और गांधी-सेवा-संघके अधिवेशनमें शामिल होनेका भी मोह था। १५ आदमी साथ ले जानेकी बापूजीको शान्तिनिकेतनसे इजाजत मिल गयी थी। लेकिन बापूजीके मनमें मंथन चल रहा था कि किसको मैं ले जाऊं और किसको छोड़ूं?

बापूजी अपनी मर्यादाका बराबर ध्यान रखते थे। आखिर बापूजीकी व्याकुलता बाहर आयी। प्रार्थनाके बाद बापूजीने कहा

जबसे शान्तिनिकेतन जानेकी बात चली है तबसे मैं व्याकुल हो रहा हूं। आज दो दिनसे अधिक अशान्ति चली है और आज तो मैं बहुत बेचैन हो गया। मैंने देखा कि मैं अपना धर्म चूक रहा हूं। सत्यका खून कर रहा हूं। मुझमें सबको खुश करनेकी आदत है। हमेशा सबको खुश रख सकूं ऐसा नहीं है। लेकिन जिसमें अतिशयता आ जाय तब वह गुण मिटकर दोषका रूप लेता है। मैं देखता हूं कि शान्तिनिकेतन और अधिवेशनमें कमसे कम लोगोंको अपने साथ ले जाना मेरा धर्म है। अधिकको ले जानेकी मैंने शान्तिनिकेतनसे सम्मति तो मंगायी है, लेकिन आज मुझे ऐसा लगा कि आवश्यकतासे एक भी अधिक आदमीको ले जाना मेरा धर्म नहीं है इसलिये मैंने निश्चय किया है कि मेरे साथ सिवा बा, महादेव, प्यारेलाल, कनु और नारायणके और कोई नहीं जायगा। मेरे दिलमें दया हो य

है, बुसका अेक अंश भी यहां नहीं बता सकता हूं। मेरे लिये यह कदम अेक भारी वस्तु है, लेकिन बिसके सिवा शान्त नहीं हो सकता हूं।

८-१-’४

मैंने हिन्दीकी पढ़ाबीके बारेमें फिर बापूजीको लिखा। बिसलिये बापूजीने लिखा

चि॰ बलवंतसिंह

बिसे देखो। गीतामाता कहती है — जिससे ज्ञान लेना है बुसको प्रणिपात करो परिप्रश्न करो बुसकी सेवा करो। कृष्णचन्द्रकी शक्तिका माप करके बुससे शिक्षा लो। बुससे अच्छा शिक्षक कहांसे मिलेगा?

सेवाग्राम २-४-’४ बापूके आशीर्वाद

छोटी बातके लिये बड़ा कदम

अेक बार आश्रममें अेक बहनका पत्र गुम हो गया। बुसने अेक दूसरी बहन पर शक किया। बापूजीने पूछा तो वह बहन जिस पर शक किया गया था बिनकार कर गबी। बापूजीको भी शक हुआ और बुन्होंने बुपवास शुरू कर दिया। मैंने बापूजीको लिखा कि आप शकके आधार पर बुपवास करके किसीके बूपर दबाव डालते हैं। यह ठीक नहीं।

बापूजीने लिखा

चि॰ बलवंतसिंह,

समझना मुश्किल है। जब पिताको घरमें किसी लड़के पर शक आता है लेकिन कौन है बुसका पता नहीं लगता तब वह बुपवास करके शांति पाता है। मगर लड़कोंमें प्रेम है तो लड़के कबूल कर लेते हैं। ठीक है कि मेरा अनुमान ही है, लेकिन हम सर्वज्ञाता नहीं हैं।

बापूके आशीर्वाद

अेकाध दिन बुपवास करनेके बाद आश्रमवासियोंका बिस बुपवासके लिये विरोध होनेसे बापूने असे छोड़ दिया था और बादमें बुस बहनके बारेमें रही शंका भी बुनके मनसे निकल गबी थी। यह शंका-निवारणकी बात तथा शंका करनेका दुःख बापूजीने बादमें लिखित रूपमें प्रगट किया था।

अिस तरह अूपरसे छोटी दीखनेवाली बातोंमें बापू कितने भारी कष्ट अुठा सकते थे और अुनके पास रहना कितनी सावधानीका काम था अिसका अनुभव तो अुन्हींको होगा जो अुनके निकट रहे हैं। बाहरसे देखनेवाले तो समझते थे कि बापूजीके पास रहनेवाले मौज करते हैं। लेकिन वास्तवमें अुनके पास रहना तलवारकी धार पर चलनेसे भी कठिन और फूलों पर चलनेसे भी आसान था। साअींका घर दूर है, जैसी लंबी खजूर। चढ़े तो चाखे प्रेमरस गिरे तो चकनाचूर॥ अिस दोहेका प्रत्यक्ष अनुभव अुन लोगोंने किया है, जिनको बापूजीके निकट संपर्कमें रहनेका सौभाग्य मिला है।

लॉर्ड लोथियन सेवाग्राममें

यों तो बापूजीके पास बड़ेसे बड़े मेहमान आते थे और बापूजी अुनकी आव-भगत और सुख-सुविधाका प्रबंध अपने ही ढंगसे करते थे। लेकिन लॉर्ड लोथियन अेक निराले ही प्रकारके मेहमान थे। वे १९३८ में बापूजीसे मिलने आये थे। बापूजीने जमनालालजीसे पहले ही कह दिया था कि अुनको अपने बैलोंके तांगेमें ही लाना है। अेक रोज देखा तो जमनालालजी और लॉर्ड साहब बैलके तांगेमें फँसे बैठे चले आ रहे हैं। दोनों पूरे लंबे-चौड़े डील-डौलके थे और तांगेकी सीट साधारण ही चौड़ी थी। दोनोंको बैठनेमें कठिनाअी हो रही थी। बापूजीने प्रार्थनाकी जगह पर अुनका स्वागत किया। अेक-दूसरेसे मिलकर दोनों खूब खुश हुअे। दोनोंके चेहरोंसे आनन्द टपक रहा था। अुनका ठहरनेका अिन्तजाम खादी-विद्यालयमें किया गया था। वहाँ अुनके लिये तख्ता स्नानघरमें कमोड आदि छोटी छोटी सुविधाओंका प्रबंध बापूजीने खुद अपनी निगरानीमें करवाया था। अुनके भोजनका प्रबंध हमारे साथ पंक्तिमें ही किया गया था। पतलूनके कारण जमीन पर बैठनेमें अुनको थोड़ी असुविधा तो होती थी लेकिन हमारे साथ बैठना अुन्हें बहुत ही पसन्द था। बापूजी अपने पास ही अुन्हें बिठाते और परोसनेका काम भी खुद ही करते थे। बीच बीचमें अुनसे पूछते जाते और भोजनकी सामग्रीके गुणोंका बखान भी करते जाते। अंग्रेज लोग मिर्च-मसाला तो खाते नहीं। अिसलिये आश्रमका भोजन अुन्हें बहुत पसन्द आया। वे सेवाग्राममें ३ रोज रहे और हमारे साथ खूब घुलमिल गये। अुन्होंने कहा "मेरे सारे जीवनमें ये तीन दिन जैसे शांतिसे बीते हैं वैसे कभी नहीं बीते। अितना अेकान्तवास मुझे कभी नहीं मिला है। यहाँ मुझे बड़ी शांतिका अनुभव हुआ है। हमको

लगता था जैसे कोओी पुराना साथी हममें आ मिला हो। अुनको वापिस भेजनेका प्रबंध भी अुसी ढंगसे रातमें किया गया। अुनके जानेके बाद बापूजीने शामकी प्रार्थनामें कहा : "मैं चाहता तो जमनालालजीकी मोटर थी ही और मैं जब बम्बओीमें था तभी अुनको मुलाकात दे सकता था। लेकिन अुसे मैंने जान-बूझकर टाला। क्योंकि बम्बओीमें बैठकर मैं अुनको हिन्दुस्तानका सही दृश्य नहीं दिखा सकता था। हिन्दुस्तान शहरोंमें नहीं गांवोंमें बसता है। यह मैं बम्बओीमें बैठकर अुन्हें कैसे समझाता? जो अंग्रेज भारतमें आते हैं अुनको गांवोंका दर्शन कहां होता है? लोग तो अुनके आसपास शहरोंकी ही चकाचौंध खड़ी करते हैं। जिससे वे भी भ्रममें पड़ जाते हैं। मैं जिनका प्रतिनिधित्व करता हूं अुसका पता सेवाग्राममें आये बिना अुन्हें कैसे चलता? अुनके यहां आनेसे हिन्दुस्तानका कुछ भला होगा सो बात नहीं है, लेकिन वे यहांसे जो विचार लेकर गये हैं अुनका असर दूसरों पर भी अच्छा होगा। अुन्होंने देख लिया कि असली हिन्दुस्तान किसको कहते हैं। हमारे किसान मोटर कहांसे लायें? अुनके पास तो बैलगाड़ी ही हो सकती है। अिसलिये मैंने जमनालालजीसे कहा कि अुनको बैलगाड़ीमें ही लाना चाहिये। जमनालालजीके मनमें संकोच हो सकता था लेकिन वे तो मेरे तर्कको समझते हैं। अिसलिये अुनको भी आनन्द ही हुआ।"

बापूजी देहातोंके साथ कितने अेकरूप होना चाहते थे यह अैसी घटनाओंसे स्पष्ट हो जाता है। वे देहातोंके जीवनमें जहां तक प्रवेश करना चाहते थे वहां तक जानेका अुनको अवसर नहीं मिला। वे शुद्ध ग्रामसेवककी तरह जीवन बितानेकी अपनी तमन्ना पूरी न कर सके क्योंकि देशको आजाद करानेका कार्यक्रम अुनके सहारेके बिना चल ही नहीं सकता था। अिसलिये अुस जवाबदारीका भार भी अुनको अुठाना पड़ा।

होड़ करना बुरा है

१ ४ के अभी मासके अंतिम सप्ताहमें वर्धा और आसपासका चार्ज फिर मुझे लेना पड़ा। आश्रमका कड़ा नियम था कि कोओी बैलको आर न मारे। लेकिन हमारे खेतीवाले लोग अेक छोटीसी आर अपनी जेबमें रखते थे और जब वर्धा वगैरा कहीं जाते थे तो अुसका अुपयोग करते थे। अिसका मुझे पता नहीं था। गांवके अेक भाओीसे मैं बात कर रहा था तब अुसने बताया कि आपके बैलोंके अूपर भी आरका प्रयोग होता है। मैंने अिसकार

लिया तो अुसने कहा 'शर्त लगाओ।' मैंने कहा 'अगर मेरे आदमियोंके पास भार पकड़ी जाय तो मैं पांच रुपये दूंगा।'

अुस भाअीने वर्धा जाते हुअे हमारे गाड़ीवानके पास भार पकड़ी मुझे वह भार दिखाअी और अुस आदमीसे मेरा मुकाबला कराया। बात सच थी। मुझे पांच रुपये देने पड़े। अिसका पता बापूजीको लगा। बापूजीने लिखा "हम ट्रस्टी हैं अिसलिअे हमको होड़ बदनेका अधिकार ही नहीं है। क्योंकि दान हमको अिस कारण नहीं मिलता है। तुम्हारे पास पैसे हैं ही नहीं अर्थात् तुम्हें चाहिये नहीं। अिसलिअे तुम्हारी होड़में ये दोनों दोष थे। आश्रमके पैसे पर होड़ बदनेका तुम्हें अधिकार नहीं था। और होड़ बदना ही दूषित है, अभिमानका सूचक है।

हृदय-परिवर्तन

सेगांवमें वहांके अेक हरिजनका मामला आया। अुसने वहां हरिजन बच्चोंको पढ़ाना और अुनको क्रिश्चियन बनानेका प्रचार आरंभ किया। अुसको नागपुर क्रिश्चियन सोसायटीकी तरफसे तनख्वाह मिलती थी। वह बहुत ही गलत ढंगसे हरिजन बच्चोंको बहकाता था। वह हरिजन युवक था तो नादान लेकिन लोभमें फंसा था। समझाने पर भी मान नहीं रहा था। हम लोगोंने भी अुसे समझानेका काफी प्रयत्न किया। बापूजीको अिससे बड़ा दुःख पहुंचा। अुन्होंने नागपुरके बिशपके साथ पत्रव्यवहार किया। लेकिन बिशपका अुत्तर संतोषजनक नहीं था। अन्तमें बापूजी अपने प्रयत्नमें सफल हुअे और वह प्रचार बंद हो गया। अब वह युवक आश्रमका वफादार सेवक है। नाम है तुकाराम कामसेकर। गांवके लोगों और आश्रमवासियोंके समझानेसे भाअी कामसेकरने पादरीकी नौकरी छोड़ दी और आश्रममें काम करने लगा जिससे पादरीकी पाठशाला भी बंद हो गअी।

सच्ची सलाह न माननेका फल

अेक बार गांवमें कुछ झगड़ा हुआ। दादा पाटील नामके अेक सवर्णने छिदरू नामक अेक हरिजनकी आंख फोड़ दी। मामला पुलिसमें जानेको था। बापूजी बीचमें पड़े। अुन्होंने सवर्णोंको यह समझानेकी कोशिश की कि जिस हरिजनकी आंख फूटी है अुससे अपराधी सार्वजनिक रूपमें माफी मांगे और अुसको मुआवजेके रूपमें सौ रुपये दे। जिसके हाथसे आंख फूटी थी

वह पहले सेगांवका मालगुजार था और माफी मांगनेमें अपनी बेजिज्जती समझता था। वह रुपये देनेको तो तैयार था लेकिन सार्वजनिक रूपमें माफी मांगनेके लिअे तैयार नहीं था। बापूजीने कहा कि मेरे नजदीक रुपयेका बहुत महत्त्व नहीं है। अगर तुम नहीं दे सकोगे तो मैं भी दे सकता हूं। लेकिन तुमने जो अपराध किया है अुसकी क्षमा तो मांगनी होगी। जिस पर तुमने गरीब हरिजनके प्रति अपराध किया है। यह दुहरा पाप है। बिना क्षमा मांगे तुम पापसे मुक्त नहीं हो सकते। वह माफी तो मांगता था लेकिन दूसरे कुछ लोग अैसे थे जिन्होंने अुसको माफी मांगनेसे रोका। आखिर मामला पुलिसमें गया। बाप-बेटेको सजा हुअी अेकको चार मासकी और दूसरेको आठ मासकी। हजारों रुपये खर्च हो गये सो अलग। अन्तमें अुनको बापूजीकी बात न माननेका खूब पश्चात्ताप हुआ।

फोटो खिंचवानेसे अरुचि

बापूजीको फोटो खिंचवाना पसन्द नहीं था। सिर्फ कनु गांधीको अुनके कलाहृदय होनेके कारण कुछ प्रसंगों पर यह छूट दे रखी थी। कलकत्तेमें अेक रोज जब हम सब लोग भोजनके लिअे बैठ रहे थे बाहरके अेक फोटोग्राफरने फोटो लेनेके लिअे कैमरा लगाया। बापूजीकी नजर अुस पर गयी तो बहुत गंभीर होकर बोले — तुम लोगोंको जितनी भी सभ्यता नहीं है? किसीके घरमें आकर भोजनके समय भी फोटो लेते हो! बापूजीकी फटकार सुनकर वह बेचारा अपना कैमरा लेकर चलता बना।

सेवाग्राममें अेक रोज बापू किशोरलालभाअीको देखने जा रहे थे। बापू सुबह घूमने समय किशोरलालभाअीसे थोड़ी बातचीत कर लेते थे क्योंकि तबीयत अच्छी न होनेके कारण वे बापूके पास आ नहीं सकते थे। वहां जा रहे थे अुस समय अेक आदमीने आगे आकर अेकदम कैमरा लगा दिया। बापूने तेजीसे झपट कर अुसके हाथसे कैमरा छीन लिया। हम सब आश्चर्यमें पड़ गये। आखिर हुआ क्या? बापूजीको जितना बिगड़ते मैंने पहली ही बार देखा था।

अेक रोज बापू अपनी कुटियामें बैठे थे। किसी परिचित भाअीने सुन्दर फोटो भेजा था। जिस समय अुनके सामने जो पुस्तक रखी हुअी थी वह पन्नेमें दबकर रह गयी थी। जिज्ञासावश फोटो देखनेके लिअे किसीने वह

पुस्तक हटानेको कहा। पुस्तक हटा दी गयी। लेकिन बापूने वह पुस्तक भुठाकर वहां भी नहीं रख दी। वे कुछ बोले नहीं लेकिन गंभीर हो गये।

आप यहां हैं वहीं रहेंगी

सन् १९४ की बात है। बापूजी व्यक्तिगत सत्याग्रहकी तैयारी कर रहे थे। स्वयं कब पकड़े जायेंगे जिसका पता न था। हमें क्या करना होगा यह मैंने अनुनसे लिखकर पूछा था। आश्रमकी जमीन आदिका भी कुछ प्रश्न था। बापूजीने लिखा

चि॰ बलवंतसिंह,

तुम्हारा खत अच्छा है। जमीन वित्यादिके बारेमें मैंने ठीक किया है। और मी अगर आजाद रहा तो करूंगा। तुम्हारे, पारनेर करने विमनलाल मुन्नालाल वित्यादिने बाहर रहना ही है।

सेवाग्राम ११–११–'४ बापूके आशीर्वाद

दिसम्बरमें तालीमी संघके बोर्डकी सेवाग्राममें मीटिंग थी। आर्यनायकम्‌जीने बापूजीके सामने अेक मांग पेश की कि गोशालाके मकान वित्यादि तालीमी संघको दे दिये जायं। वे वहां छात्रालय बनाना चाहते थे। आर्यनायकम्‌जी बापूजी और डॉ॰ जाकिरहुसैन सब गोशालाका स्थान देखनेके लिये आये। मुझे सीधा तो किसीने नहीं कहा लेकिन मुझे अुनकी चर्चाका पता चल गया। जब वे लोग गोशालामें घुसे और सब चीजें देखने लगे तो मैं समझ गया कि वे क्यों आये हैं। मैंने एकान्त स्थानमें आर्यनायकम्‌जीसे पूछा आप क्या देखते हैं? अुन्होंने कहा कि हम यह स्थान छात्रालयके लिये लेना चाहते हैं। आप अपनी गोशाला दूसरे खेतमें ले जायं। मैंने कहा अैसा नहीं हो सकता। जाकिरहुसैन साहब व बापूजीने भी कुछ कहा लेकिन मैंने साफ कह दिया कि यह स्थान नहीं मिलेगा। जब वे लोग चले गये तो मैंने बापूजीको अेक लंबा सख्त पत्र लिखा। अुसमें लिखा सुनता हूं कि आप गोशालाका स्थान तालीमी संघको देना चाहते हैं। आर्यनायकम्‌जी जाकिरहुसैन साहब और बापूजी तो आपके प्रिय सेवक हैं। वे अपनी जरूरत आपको समझा सकते हैं क्योंकि भगवानने अुनको जबान दी है। लेकिन गाय तो मूक प्राणी है। अपने सुख-दुखके बारेमें आपको कुछ नहीं कह सकती। मैं अपनेको आपको गायका प्रतिनिधि मानता हूं। अगर

आप मेरे मिस वादेको कबूल कर सकें तो मैं आपसे कहता हूँ कि गाय महंगि हटना नहीं चाहती है। अगर आप यह स्थान तालीमी संघको दे देंगे और गायको यहांसे हटायेंगे तो मैं भी गोधालाका काम नहीं कर सकूँगा। आपको जो कुछ करना है खूब सोच-समझकर करें।

बापूजीका मुत्तर आया

चि० बलवंतसिंह

सिंहका नाद और गायोंका रुदन दोनों सुना। अब गाय जहाँ है वहीं रहेगी। आर्यनायकम्जी और आशादेवीका कह दिया है। बस ना?

सेवाग्राम १५-१२-'४ बापूके आशीर्वाद

सेप्टिक टैंकका किस्सा

कुछ डॉक्टरोंकी सलाहसे बापूजीने आश्रममें सेप्टिक टैंक बनवाना शुरू किया। वह बन रहा था तब मैंने बापूजीको नीचेका विरोधपत्र भेजा

सेवाग्राम
५-२-'४१

परम पूज्य बापूजी

मैंने सुना है कि आपने पाखानेका टहखाना (सेप्टिक टैंक) बनानेकी विजाजत दे दी है। आपकी मिस प्रकारकी बदली हुमी नीतिको सुनकर मुझे दुःख और आश्चर्य हो रहा है। अब तक आप चूल्में से धन पैदा करनेका मंत्र हमको सिखाते आये हैं। अब सोनेका पानी करनेका मंत्र इससे सिद्ध होगा या नहीं यह कहना कठिन है। आश्रममें आकर मैंने यों तो बहुत कुछ सीखा है लेकिन जिसका मुझे अभिमान हो सकता है वह है पाखाना-सफाओी और अुसका सदुपयोग तथा बुनाओी। लेकिन अगर मेकको ही चुननेका अधिकार हो तो मैं पाखाना-सफाअीको ही चुनूंगा।

पाखाना-सफाअी और अुसके खादसे मेरे स्वार्थका भी घनिष्ठ संबंध है। लेकिन सिद्धान्तकी दृष्टिसे भी मैं जिसको आश्रमकी नाक या आत्मा मानता हूँ। आपके पास तो नित्य नये डॉक्टर और नित्य नये रोगी आते ही रहते हैं और आते ही रहेंगे। लेकिन अगर आप

जैसा कोअी मचाये वैसा ही नाच नाचते रहेंगे तो शायद आपके छत्तर वर्षके बूढ़े पैर जवाब दे बैठेंगे। किसीकी भी अच्छी चीजको अपनाने या अुसका प्रयोग करनेका आपका स्वभाव है। धनसंग्रह करना तो आपका धंधा ही है। लेकिन जैसा कि कहा जाता है, अब जाने दो सोना जिससे नाक कटे। अब तक आप ढोल पीट पीट कर यह कहते आये हैं कि यदि हिन्दुस्तानके सात लाख गांवोंका पाखाना सुव्यवस्थित ढंगसे खादके काममें लाया जाय तो अुसका कीमिया बन सकता है। आपकी अिस बातको काटनेकी हिम्मत किसीमें नहीं है। और हो भी कैसे सकती है? जिस तिजोरीमें से हम निकालते ही रहें लेकिन रखें नहीं वह कितने दिन पैसा पूरायेगी? क्या यही हाल जमीनका भी नहीं है? जानवर वनस्पति खाकर भी बेशकीमती खाद जमीनको वापिस देते हैं तो मनुष्य जमीनकी अुत्पत्तिका सार अनाज खाकर कितना कीमती खाद दे सकता है? अिसीलिये तो पाखानेको सोनखाद कहा जाता है न?

पहले तो कुओंमें चूनेके साथ जन्तु जाते हैं अिसलिये मोट बंद की पानी गरम किया भाजी साग और गरम पानीमें धोयी लेकिन टाअीफ़ॉअिड बन्द न हुआ। अब मक्खियोंका नंबर है। मुझे पूरा पूरा शक है कि अिस अिलाजसे भी मर्ज चला जायेगा। लेकिन हमारा बाप तो अवश्य चला जायेगा।

मुझे लगता है कि अिसका अिलाज यह है कि या तो आप सेवाग्राम छोड़ दें या अितने बड़े समाजको छोड़ दें और मुझे तो यह भी लगता है कि हमारा अधमरा समाज और अिनके मगजमें ही जन्तुओंने घर कर लिया है जैसे डॉक्टर यदि हिमालयकी चोटी पर भी जाकर बसें तो भी अिनका पीछा टाअीफ़ॉअिड शायद ही छोड़े। डॉक्टर दास सज्जन आदमी हैं और लगनके पक्के हैं। लेकिन जब वे मशरूवालाके लड़केके अिलाजके लिये सेवाग्राम गांवमें न जा सके और अुसको यहां आना पड़ा तो वे हिन्दुस्तानके सात लाख गांवोंमें सेप्टिक टैंक बना सकेंगे यह कैसे माना जाय?

अेक तरफ तो आप गरीबीके गीत गाते नहीं अघाते और दूसरी तरफ अमीरीके साधन मुहैया करते करते आपकी अुदारता बरसाती

नदीकी तरह सब कुछ बहा ले जाती है जिसके सामने कोभी मुश्किल ही खड़ा रह सकता है। मैरे मेरे पवनवस्वामीके पैर तो जम ही नहीं सकते। मुझ जैसा बिलकुल तैरना न जाननेवाला तो समुद्रमें ही जाकर दम लेगा। शायद आपको जिस पत्रमें मेरे पैने दांत और नख दिखाओ दें लेकिन मैं लाचार हूं। मेरी नम्र सूचना है कि पाखानेको थोड़ा दूर हटा दिया जाय या मुझे प्रतिदिन खिसकानेकी व्यवस्था की जाय लेकिन असको रुकना देना किसान और जमीनके लिये अन्याय होगा। आगे राजा कहे सो न्याय।

कृपापात्र
बलवन्तसिंहके सादर प्रणाम

बापूजीने अुत्तर दिया

चि॰ बलवन्तसिंह

तुम्हारा लिखना सही है। मैं सावधानीसे काम ले रहा हूं। यदि अधूरा छोड़कर मर गया तो सब काम टीकापात्र होगा। अगर पूरा करके मरा तो सब देखेंगे। जितना कहता हूं कि खादको बरबाद नहीं होने दूंगा। मैं जो कुछ करता हूं सब अन्तमें गरीबोंके ही लिये है। लेकिन आज तो जिसमें से कुछ भी सेवाग्राममें सिद्ध नहीं कर सकता हूं।

श्रद्धा रखोगे और अपना निजी जीवन सादा और विशुद्ध रखोगे तो देखोगे कि सब ठीक ही है।

तुमने लिखा सो ठीक ही किया है। जिसमें न बात है न पंखा।

५-२-'४१ बापूके आशीर्वाद

आश्रम खतम नहीं होगा

आश्रममें आनेवालोंकी संख्या घटती-बढ़ती रहती थी और अुसके हिसाबसे सामानोंकी कम-ज्यादा जरूरत रहती थी। कुछ लोग अैसा भी कहते थे कि हम यह नहीं खायेंगे वह नहीं खायेंगे।

हमारा खेतीका गेहूं था। अुसमें कुछ कीड़ा लग गया था। भोजनालयके व्यवस्थापकने अुसे लेनेसे अिनकार कर दिया था। मैंने बापूजीको लिखा कि

अेक दिन ५ सेर साकभाजी मांगते हैं तो दूसरे दिन १ सेर। मैं किस हिसाबसे पैदा करूं? और आश्रमका गेहूं खराब हो गया तो अुसको कहां फेंक दूं? मैं नहीं जानता कि अिस तरह यह आश्रम कितने दिन चल सकेगा। गरीब लोग तो अिस तरह गेहूं फेंक नहीं सकते हैं। हम लोग क्या अमीर हो गये हैं?

बापूजीने लिखा

चि॰ बलवन्तसिंह

साकभाजीके बारेमें कोअी बदअिन्तजामी सहन करने योग्य है। जो आश्रममें न चाहिये वह बाहर बेचनेकी हमारी शक्ति होनी चाहिये। डॉक्टरसे बात करके भविष्यका प्लान बनाना चाहिये। साकभाजी तायी और अच्छी बनानेकी शक्ति हमारेमें होनी चाहिये।

गेहूं खराब हो जाय तो फेंकना ही चाहिये। गरीबको भी अैसा ही करना चाहिये। हमारे गेहूं बिगड़े क्यों?

यह आश्रम खतम होनेवाला नजर नहीं आता है। परिवर्तन होना संभव है। जो होगा सो हमारे या कहो मेरे कर्मोंका फल होगा। धैर्य रखो।

१६–२–'४१ बापूके आशीर्वाद

* * *

आज आश्रमकी हालत देखकर दुःखके साथ लिखना पड़ता है कि मेरा मुख रोनका दुःख सब साबित हो रहा है। हमारे मां बापूजीके कर्मोंके फलसे आश्रम आज खाली है। खाली मकानोंको देखकर आज मुझे रोनेकी याद आती है जब यहां पैर रखनेको भी जगह नहीं रहती थी।

सब थोमा दरबारकी गयी बीरबल साथ।

क्या किया जाय? हो सकता है हजार दो हजार सालके बाद पुरातत्व विभागवाले अिस बातकी खोज करेंगे कि भारतके राष्ट्रपिता और जगतके वन्दनीय महापुरुष गांधीजी कहां रहते थे अुनकी कुटिया कहां थी आदि निवास और कुटियाका स्थान निश्चित करनेमें तर्क-वितर्क चलेंगे। लेकिन आज अिस तरफ कोअी ध्यान नहीं दे रहा है। अिस दुःखको मैं छाती पर पत्थर रखकर सहन कर रहा हूं। न मालूम भगवानने क्या सोचा है?

जमीनका झगड़ा

सेवाग्रामके अेक गरीब किसान पर कभी सालका लगान चढ़ा हुआ था। अुसकी सारी जमीन बेदखल होनेवाली थी। अुसका अेक खेत गोशालाके पास लगा हुआ था। अिस किसानको साथ लेकर गांवका अेक प्रतिष्ठित आदमी मेरे पास आया और बोला — आप अिसके खेतको खरीद लें तो अिसके बच्चोंके लिअे अिसकी दूसरी अच्छी जमीन बच सकती है। मुझे जमीनकी खास जरूरत नहीं थी। तो भी पास होनेसे अुसमें गायके दूध पीते बच्चे चरानेकी सुविधा थी। और अुसकी सारी जमीन जमनालालजीकी जमींदारीमें थी। अगर बेदखल होती तो हमारे पास ही आनेवाली थी। अुनके मुनीमजीने मुझे कह भी दिया था कि यह सारी जमीन आपको ही दे देंगे। लेकिन मुझे लगा कि अिस प्रकारका लोभ ठीक नहीं है। अगर अिसकी जमीन बच सकती हो तो अुसे बचाना चाहिये। अिस विचारसे मैं बापूजीके पास गया और सारी परिस्थिति अुन्हें बताअी। बापूजीने कहा — तुम्हारे पास जमीन तो काफी है। लेकिन अुसकी दूसरी जमीनकी रक्षा होती है और अुस जमीनका तुमको अुपयोग है तो भले खरीद लो। मैंने वह जमीन खरीद ली।

अुस किसानके दो लड़के थे। अेक बाहर पटवारी था और वहीं बस गया था। लिखा-पढ़ीके समय जब मैंने अुसकी सही लेनेकी बात की तो जो भाअी बीचमें पड़ा था अुसने मुझे विश्वास दिलाया कि अिसकी आप चिन्ता न करें वह भाअी अुज्र करनेवाला नहीं है, न अिस जमीनमें से वह हिस्सा ही लेगा। क्योंकि अुसने वहां काफी जमीन कर ली है और अिस जमीनका लगान भी वह नहीं देता है। अिसीलिअे तो अितना लगान चढ़ा है। अुसके विश्वास दिलाने पर मैंने आग्रह नहीं किया और जमीनका विक्रीपत्र आश्रमके नाम करा लिया। अितनेमें सौदा पक्का हुआ था वह मुझे कुछ सस्ता लगा। मैंने सोचा कि किसानकी मुसीबतका लाभ अुठाना ठीक नहीं है। अिसलिअे लिखा-पढ़ी होनेके बाद भी अुसको थोड़ी रकम मैंने और दे दी। अिससे अुसे बड़ा संतोष मिला और दूसरे लोगों पर भी अिसका बहुत अच्छा असर हुआ।

८ १ मासके बाद अुस किसानका दूसरा लड़का जो पटवारी था नौकरी छूट जानेसे सेवाग्राममें ही आ गया और अपने लिअे जमीन खरीदनेकी कोशिश करने लगा। रिश्ता अैसा बना। पड़ोसके गांव नालोटामें अेक किसान अपनी जमीन बेच रहा था जिसे वह लेना चाहता था। अुसी जमीनको

सुखाभाअू चौधरी जो चरखा-संघके कार्यकर्ता थे लेना चाहते थे। दोनोंसे मेरा अच्छा संबंध था। अतः अुस जमीनका सौदा सुखाभाअूके लिये हो गया। पटवारीको लगा कि अिस सौदेमें मैंने मदद की है। अिसलिये चिढ़कर अुसने अपने बाप और छोटे भाओ द्वारा आश्रमको बेची हुअी जमीन वापस मांगी। जब यह सवाल बापूजीके सामने गया तो बापूजीने अुसके बाप और भाओ तथा गांवके दूसरे लोगोंको बुलाकर पूछा कि अिस मामलेमें क्या किया जाय। गांवके लोग यह कैसे कह सकते थे कि जमीन वापिस कर दी जाय। अिसलिये वे कुछ न बोले। बापूजीने अुसके बाप और भाओसे पूछा कि क्या करना चाहिये। अुन्होंने कहा कि जमीन वापिस कर देनी चाहिये। बापूजीने मुझे आदेश दिया कि अिनकी जमीन वापिस कर दो। अुस पर तुम्हारी जो फसल खड़ी हो काट लो। अिन आदमियोंमें यह आदमी भी था जो मेरे पास अुनकी जमीनको बचानेकी वकालत करने आया था। लेकिन अुसने अिस अन्यायका प्रतिकार नहीं किया। अिससे मुझे भारी दुःख हुआ। जब वही आदमी मेरे पाससे जमीनका चार्ज और हिसाब-किताब लेने आया तो मैं अपने गुस्से पर काबू न रख सका। मैंने अुससे कहा कि तुमको अिसके साथ हिसाब-किताब लेने आनेमें शर्म आनी चाहिये थी। जिस मुंहसे तुम मेरे पास अिसकी जमीन बिकवाने आये थे अुसीसे वापिस करानेमें तुमको जरा भी शर्म नहीं आती? अुसको मेरी अिस बातसे दुःख हुआ। अुसके अिस दुःखकी बात बापूजीके कान तक पहुंची।

बापूजीने मुझे बुलाकर कहा — तुमने विठोबाके अूपर गुस्सा करके भारी अपराध किया है। अिसके लिये मुझे क्षमा मांगनी पड़ी। तुम भी मांग लो। तुम तो सेवक हो। अिसलिये तुमको किसी पर गुस्सा करनेका अधिकार ही नहीं है। तुम्हारी बात तो सच थी। लेकिन गुस्सेने अुसका सच्चापन मिटा दिया। मैंने गांवमें जाकर क्षमा मांगी और कहा कि तुमने मेरे साथ विश्वासघात तो किया है लेकिन मैंने गुस्सेमें तुमसे जो कठोर शब्द कहे अुन्हें मैं वापिस लेता हूं। अिससे अुन लोगोंको और भी बुरा लगा। जब सारा किस्सा बापूजीके पास गया तो बापूजीने लिखा

चि॰ बलवन्तसिंह

सुभाभाअू कहते हैं कि तुम्हारी क्षमा-याचनासे शांति नहीं हुअी है। क्षमा मांगनेके समय विठोबाको बुलाना। तुमने विश्वासघात तो

किया है तो भी क्षमा मांगता हूं। अगर यह ठीक है तो क्षमा-प्रार्थना निरर्थक है। विश्वासघातकी शिकायत बहुत कठोर है। मैं विश्वासघात नहीं पाता हूं हृदय-दौर्बल्य भले कहो। यह बात सुधरनी चाहिये।

१९-५-'४१ बापू

अिस घटनासे मुझे और भी दुःख हुआ। और मैंने प्रायश्चित्तके रूपमें ३ रोजका अुपवास करनेका निश्चय बापूजीको बताया। अुन्होंने अिसे पसन्द नहीं किया और बोले — अुपवास करना ठीक नहीं है। अिससे तुम्हारे काममें बाधा पड़ेगी। और अुपवासके लिअे अधिकार भी तो चाहिये। बस नम्र बनो। जिसे जनताकी सेवा करनी है, वह किसीके साथ घनिष्ठ संबंध न जोड़े। क्योंकि अगर हम अेकके साथ घनिष्ठता जोड़ते हैं तो स्वाभाविक है कि हम दूसरोंसे दूर जाते हैं। मैं तुम्हारा त्याग न करूंगा। हां अेक बात है। मैंने लोगोंको पहले कहा था (बलवन्तरायके प्रकरणमें) कि अगर बलवन्तसिंह दूसरी बार गुस्सा करेगा तो सेवाग्राम छोड़ेगा। अिस बिना पर तुम सेवाग्राम छोड़ सकते हो और लोगोंको यह कह सकते हो कि बापूके वचन-पालनके लिअे मैं सेवाग्राम छोड़ रहा हूं। बापूजीकी यह सूचना मुझे बहुत पसन्द आयी। मैंने अुपवासका विचार छोड़ दिया और सेवाग्राम छोड़नेका निश्चय कर लिया।

रातको सेवाग्राममें जाकर मैंने सभा की और लोगोंको सारा हाल सुनाया तथा अपना सेवाग्राम छोड़नेका निश्चय बताया। मैंने कहा कि मुझे बड़ी खुशी है कि मैं बापूजीके वचन-पालनके लिअे आप लोगोंसे विदा मांगने आया हूं। जिन भाअियोंको मेरे स्वभावसे दुःख पहुंचा है अुनसे मैं नतमस्तक होकर क्षमा मांगता हूं। अुनके आशीर्वाद लेकर यहांसे विदा लेना चाहता हूं। आशा है कि वे भाअी मुझे क्षमा कर देंगे।

मैं बापूजीके पास आया और सभाका सब हाल अुन्हें सुनाया। अुनको बड़ा आनन्द हुआ। मेरे भी आनन्द और अुत्साहका पार नहीं था। मुझसे बापूजीने पूछा — कहां जानेका सोचते हो? साबरमती जा सकते हो। आपके पास जाना हो तो वहां भी जा सकते हो। और भी कभी जगहोंके नाम दे दिये गये। मैंने कहा बापूजी आपका पालन तो करना चाहता हूं, लेकिन मेरी व्यवस्थाकी चिन्तासे मुक्त होना नहीं चाहते। मैंने कहा — अैसी जगह नहीं जाअूंगा जहां पर आपके नामका सहारा हो। अब यहांसे जा ही

रहा हूं तो आपके नाम और प्रभावका भी मुझे अुपयोग नहीं करना है।
बापूजीने कहा : तुम्हारा विचार मुझे पसन्द है। जब मेरी और बापूजीकी
बात हो रही थी तब प्रभावतीबहन* वहीं बैठी थीं। मैं जो कह रहा हूं जिसका
अुनके मनमें दुःख था। लेकिन मैं बापूजीके नामका अुपयोग नहीं करना
चाहता जिससे अुनको बड़ी खुशी हुआी। जब मैं बापूजीके पाससे अुठकर
आया तो वे भी मेरे साथ ही अुठकर आअीं और अपने स्वभावके अनुसार
हंसकर बोलीं : आपने बहुत अच्छा सोचा है। हममें जितना आत्म-विश्वास
होना चाहिये कि बापूजीके नामके सहारेके बिना जगतमें अपने पैरों पर
खड़े रह सकें।

मेरे निवेदनसे गांवमें खलबली मचा दी और अुस भाअीका मन भी
बदल गया। १०-१५ लोग मिलकर बापूजीके पास आये और बोले : आप
बलवन्तसिंहजीसे बातेंकी कहते हैं यह ठीक नहीं है। हमारे तो वे कामके
आदमी हैं। हमारी ओर भी कुछ अड़चनें होती हैं हम जिनको ही बताते
हैं और वे हमको काफी मदद भी करते हैं। जिनको तो हम नहीं जाने
देंगे। बापूजीने कहा : देखो मनपतरायके लड़केको जब बलवन्तसिंहने
धक्का दिया था तो मैंने मनपतरायसे क्षमा तो मांगी थी लेकिन साथ साथ
यह भी वचन दिया था कि अगर बलवन्तसिंह दुबारा गुस्सा करेगा तो मुझे
आश्रम छोड़ना ही पड़ेगा। अुस वचनके पालनके लिये मैंने अुसे आश्रम
छोड़नेकी सलाह दी है। नहीं तो आप लोगोंको क्या यह तो मुझे भी कितनी
गालियां सुनाता है। जिसका हिसाब आप लोगोंको क्या बताअू? तो भी मैं
सहन करता हूं क्योंकि यह कामका आदमी है और अुसके मनमें मैल नहीं
है। मैंने अपने वचन-पालनके लिये अुसे जानेको कह दिया है। आप लोगोंसे
अेक बात और भी कह देना चाहता हूं कि अुनके पाससे जमीन वापिस
लेकर आपने अुनके प्रति अन्याय किया है। अुनने तो मेरे साथ झगड़ा करके
अुस भाअीकी जमीन बचानेकी सद्भावनासे जमीन ली थी। अगर यह जमीन
अुनको वापिस नहीं मिलेगी तो अुसके दिलमें जिसका दर्द बना ही रहेगा।
जिसलिये भी अुनका यहांसे चला जाना ही अुसके लिये अच्छा है। आपका
धर्म है कि अुस भाअीको धर्म समझाओ और जमीन वापिस करा दो।
गांवके लोगोंने कहा : हम जिनका पूरा पूरा प्रबन्ध करेंगे। बापूजीने कहा :

* श्री जयप्रकाश नारायणजीकी पत्नी।

"ठीक है अब बलवन्तसिंहसे बात करो। मुझे हर्ज नहीं है, क्योंकि मेरे वचनका पालन हो जाता है।"

वे लोग मेरे पास आकर बोले: "बापूजीको तो हमने राजी कर लिया है। अब आपसे कहते हैं कि हम आपको किसी भी तरह नहीं जाने देंगे।" और अूपरकी बापूजीके साथ हुअी बातचीत सुनाअी। मैंने कहा: "मैं तो बापूजीके वचन-पालन और आप लोगोंकी बातचीतके कारण जाना चाहता था। लेकिन अगर बापूजीके वचनका पालन हो जाता है और आप लोग मुझे रोकना चाहते हैं तो मैं नहीं जाअूँगा। जमीन वापिस मिले या न मिले अिसकी मुझे चिन्ता नहीं है। मुझ तो दुःख अिस बातका हुआ था कि मेरा साथ आप लोगोंमें से किसीने नहीं दिया। लेकिन अब तो जो हुआ सो हुआ।"

मेरे जानेका निश्चय हो जाने पर बापूजीने मुझे लिखा था:

चि० बलवन्तसिंह,

तुम्हारे मनमें ख्याल यह रहना चाहिये कि यदि तुम्हारी तपश्चर्या शुद्ध होगी तो यहीं वापिस आओगे। कहीं भी रहो अुर्दूका अभ्यास नहीं छूटना चाहिये। हिन्दी अक्षर अच्छे बनाने चाहिये। खेती और गोपालनके शास्त्रका अभ्यास बढ़ाना।

१७–८–'४१ बापूके आशीर्वाद

बापूजीने गाँवके लोगोंकि आपसकी बात मुझसे की और जमीनकी बात भी बतलाअी। मैंने कहा: "लोग मेरे पास भी आये थे। अगर आपके वचनका पालन हो जाता हो तो जमीन वापिस मिले या न मिले अुसकी मुझे चिन्ता नहीं है। क्योंकि मैं देख रहा हूँ कि लोगोंके दिल साफ हैं।" बापूजीने कहा: "मेरा वचन तो गाँवके लोगोंकी दया पर ही निर्भर था। वे लोग तुमको रखना चाहते हैं तो मेरा काम निबट जाता है।"

और मैं रुक गया।

अिन सारी घटनाओंमें मैंने बापूजीके चित्तकी अवस्थाका जो अध्ययन किया वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। लेकिन मेरे हाथसे अेक बड़ा अवसर चला गया जिसका जरूर मुझे दुःख रहा। अगर मुझे जाना पड़ता तो बापूजीके वचन-पालनके लिअे मैंने बहुत बड़ा त्याग किया अैसी अनुभूति होती और संभव है अुसमें मेरी आत्मा अूँची ही अुठती तथा बापूजीका प्रेम भी मैं अधिक ही पाता।

मौनका आदेश और अुसका लाभ

आश्रमके अेक साथीसे मेरा कुछ झगड़ा हो गया था, क्योंकि वे गोशालाके काममें अनधिकार दस्तंदाजी करते थे। यह सब मैंने डायरीमें लिखा। बापूजीने मुझे बुलाया और कहा :

“मैंने तुम्हारी डायरी पढ़ ली है। अुसकी सच्चाई तो मैं कबूल करता हूँ, लेकिन तुमको भी गुस्सा बार बार आना ठीक नहीं है। नहीं तो अितनी बड़ी जवाबदारी निभा नहीं सकोगे। नाव बिलकुल किनारे पहुँचकर भी अगर डूब जाय तो अुसका सारा पानी पार करना व्यर्थ हो जाता है। बात सबकी सुनना लेकिन अुसमें जितना सार हो अुतना लेकर बाकी फेंक देना। मैंने तुम्हारे बारेमें बहुत विचार किया कि तुमको कहीं बाहर भेज दूँ या आश्रममें कोअी अैसा काम दे दूँ जिससे किसीके साथ संघर्ष न आये। लेकिन तुम्हारे कामसे तुमको अलग करना भी ठीक नहीं लगता है। अिसलिअे मैंने अैसा सोचा है कि तुमको मौन रखकर काम करना चाहिये। तुम्हारे साथ पचासों आदमी काम करते हैं और बार बार बोलनेका प्रसंग आता है। लेकिन मौनसे भी बहुत बड़े बड़े काम किये जा सकते हैं। श्री अरविन्द घोष और मेहरबाबा बड़ी बड़ी संस्थायें मौन रखकर चलाते हैं। मैंने भी कअी बार मौन रखकर काफी काम कर लिया है। प्यारेलाल पर गुस्सा करने पर मैंने तीन मास तक मौन रखा था। अुससे मुझे काफी फायदा हुआ था और मैंने काम भी काफी कर लिया था। फिलहाल तुमको अेक मासका मौन रखना चाहिये। अिसमें तुम अगर मीठी भाषा बोलना सीख गये तो ठीक है, नहीं तो और लंबा मौन चलने देंगे। तुम्हारा बजट मैंने नामंजूर नहीं किया है। बस आजसे ही मौन रखा जाय।”

प्रार्थनाके बाद बापूजीके चरण छूकर मेरे मौनका आरम्भ हुआ। बापूजीने आशीर्वाद देते हुअे कहा : अिस संकल्पको अीश्वर पूर्ण ही करेगा। मुझमें भी अुस समय बड़ा अुत्साह था।

अुस समयकी बातों पर विचार करनेसे लगता है कि बापूका कैसा अद्भुत प्रेम था। वे छोटी छोटी भूलें बताते हुअे हमको संभालते, हम नीचे न गिरें अिसलिअे पत्थरसे भी कठोर बनते। किसी माता या पितामें वे गुण अपनी सन्तानके प्रति होते हैं तो भी अुनमें कहीं न कहीं कुछ ढीलापन या मोह आ ही जाता है। लेकिन बापू हमारे कल्याणकी दृष्टिसे ही सब कुछ सोचते

और करते थे। यह हमें कड़वा लगे या मीठा लगे अिसकी अुनको चिन्ता नहीं थी। मेरा मौन अेक महीनेके बजाय दो महीने तक बड़ी शांतिसे चला और कोअी भी काम बोले बिना रुका नहीं बल्कि व्यवस्थित ढंगसे चला। शहरके काम भी मौनसे ही चलते थे। कभी प्रसंग अैसे आये जो मौनके कारण शांतिपूर्वक निपट गये। मगर अुस समय मेरा मौन न होता तो कुछ न कुछ झगड़ा जरूर होता।

अेक दिन मैं भोजनालयमें चावल नहीं दे सका क्योंकि मगनभाओसे साफ होकर नहीं आये थे और अितवार होनेसे धान कूटनेवाली स्त्री भी नहीं आयी थी। अुस सम्बन्धमें भोजनालयके व्यवस्थापक मुझसे बात कर ही रहे थे कि अेक बहन बीचमें कूद पड़ीं और अुस विषयको लेकर अुन्होंने मुझे खूब गालियां सुनायीं। यह भी कहा कि दिखावा करता है तभी तो मौन लेना पड़ा है। अुस अपमानको मैं सहन नहीं कर सका। परन्तु मौन होनेके कारण कुछ कह भी न सका। बापूजीको लिखा कि अैसे अपमान सहन करानेके बदले तो आप मुझे यहांसे भगा दें तो अच्छा हो।

बापूजीने लिखा

> यह सब क्या है? अबलाके अपमानसे यह सब दुःख कैसे? मैं तो जानता भी नहीं कि बहनने क्या क्या गालियां दीं। हमारी बहन गालियां दे अुसे भी घीकी गालियां समझें। मैं तमाशा तो करूंगा लेकिन किसी कारण मैं तुम्हारा निकलना पसन्द नहीं कर सकता हूं। अपमान तो सहन करना चाहिये। तुम्हारे हंसना था। और भागनेकी बात कैसे सूझती है? सब अपने आपको भगा सकते हैं। आश्रम तो तुम्हारा है। बहनका भी है। दोनों लड़ें तो कौन किसको भगाये? ठीक ही कहा है गीतामाताने कि जिसको क्रोध होता है अुसको संमोह होता है, संमोहसे स्मृतिभ्रंश और अुसमें से बुद्धिनाश। यह तुम्हारा हाल आता है। सावधान हो लो और अपनी मूर्खता पर हंसो।
>
> १-१२-'४१ बापू

अिस प्रकार मौनके कारण और बापूजीके प्रेमसे समझानेके कारण यह कठिन प्रसंग सहजमें टल गया।

मौनके सारे समयमें सिर्फ दो बार बोलनेका अवसर आया। अेक बार जमनालालजी और मीराबहनसे ४५ मिनट बात की थी। दूसरी बार कुछ ग्रामसेवक गोशाला देखने आये तब मैंने अुनसे थोड़ी बातें की थीं। अिसके सिवा बड़े आनन्दसे दो मास पूरे हुअे। ता॰ १९-१-'४२ को प्रार्थनाके बाद बापूजीको प्रणाम करके मैंने मौन छोड़ा। अुस दिन सरदार वल्लभभाजी पटेल वहीं थे। अुन्होंने मुझे प्रेमसे डांटते हुअे कहा कि "तुम्हारे जैसे किसानका काम मौन रखनेका नहीं है। यह महात्मा लोगोंका काम है। यदि मौन ही रखना हो तो भगवे कपड़े पहनकर जंगलमें भाग जाओ।"

समर्पणके विषयमें बापूजीके विचार

अेक यात्रीने बापूजीको लिखा कि मैं अपनेको आपके चरणोंमें समर्पित करना चाहता हूं। अुसके अुत्तरमें अुन्होंने लिखा

> समर्पण सिर्फ अीश्वरको ही किया जा सकता है, मनुष्यको कदापि नहीं। अिसलिअे तुम्हारा समर्पण मुझको नहीं हो सकता है और न मैं स्वीकार कर सकता हूं। मैं संपूर्ण नहीं हूं जीवन्मुक्त नहीं हूं। मुझे साक्षात्कार नहीं हुआ है। लक्ष्य है। जब पहुंचूंगा तब दुनिया जानेगी।
>
> ११-४-'४२

गोशाला-सम्बन्धी सूचनायें

मैं गोशालाके लिअे कुछ नयी गायें खरीदना चाहता था। बापूने नयी गायें खरीदनेका विरोध करते हुअे कहा "तुमको यह गोशाला मकान और जमीन तुमको दानमें मिली है और अेक भी पैसा तुम्हारे पास नहीं है, तो तुम क्या करोगे? यही न कि जो अधिक खर्च करना हो वह अिसमें से कमाकर करोगे? अब अगर तुम्हें नयी गायें खरीदना हो तो बछड़े बेचो, बछड़ी बेचो, दूधका पैसा जमा करो और जितनी रकम बचे अुससे गायें खरीदो। यों तो मेरे पास पैसे आते ही रहते हैं। अुनमें से मैं खर्च भी कर सकता हूं। लेकिन यह ठीक नहीं है। तुम्हारी खूबी तो अिसमें है कि अपने पैरों पर खड़े होकर आगे बढ़ो। मेरा तुम पर पूरा पूरा विश्वास है कि अिसमें से कुछ शुभ परिणाम लाओगे। अिसलिअे ही तो यह सब कह रहा हूं।"

भोजनालयमें दूध कुछ कम आता था। जिस विषयमें भोजनालयकी शिकायत थी। मैंने बापूजीसे कहा कि अगर भोजनालयमें अधिक दूध देता हूँ तो मायके बच्चोंका पेट कटता है, जिससे बच्चे कमजोर होते हैं और भोजनालय खराब होती है। बापूजीने कहा "भोजनालयमें पूरा दूध देनेकी तुम्हारी जवाबदारी नहीं है। जितना तुम चाहते हो अुतना दूध बच्चोंको पिलानेके बाद ही जो दूध तुम्हारे पास बचे वह भोजनालयमें दो। तुम्हारा काम दूध पैदा करना नहीं है, बच्चे जानवर पैदा करता है। देखो आज यूरोपमें कैसा हत्याकांड चल रहा है? मनुष्य राक्षस बन गये हैं। नीति-अनीतिका कुछ भान नहीं रहा है। जिस आगकी आंच हिन्दुस्तानको नहीं लगेगी अैसा कहना कठिन है। देखो गुजरातमें बरसातसे कितना भयंकर नुकसान हुआ है? जिन सब बातोंको देखते हुअे हमें अधिक विस्तार बढ़ानेकी झंझटसे बचना चाहिये।"

खजूरी गरीबोंका वृक्ष है

हमने गोशालाके लिअे जो जमीन खरीदी थी अुसमें खजूरके बहुतसे पेड़ थे। अुनके कारण घास होनेमें बड़ी कठिनाअी होती थी। मैंने अुनको कटवानेका निश्चय किया और तदनुसार ठेका दे दिया। श्री मन्नालालजी नामक अुस समय ताड़गुड़-विभागके संचालक थे। अुन्होंने जिसके खिलाफ बापूजीसे शिकायत की। बापूजीने मुझे बुलाया और जिसका जवाब पूछा। मैंने बापूजीसे कहा "यह जमीन साफ किये बिना अुसमें घास होना संभव नहीं है। मैं कमसे कम खजूरसे होनेवाली आमदनीकी चौगुनी आमदनी अुस खेतसे करनेका वचन देनेको तैयार हूँ। चूंकि खेतमें सुधार वगैरा करनेकी मेरी जिम्मेवारी है, जिसलिअे मैंने पेड़ काटते समय किसीको पूछनेकी जरूरत नहीं समझी।"

बापूजीने लिखा

> मैंने मेरे हाथोंसे सैकड़ों खजूरी काटी है और आंखोंके सामने कटवाअी हैं। यह मूल मैं वापिस नहीं ला सकता। तुम्हारी शर्तोंके मुताबिक तो कोअी भी वृक्ष काट सकते है। हां यह ठीक है कि तुमको अच्छा लगा सो किया। मुझे दुःख तो हुआ कि तुमने जितने वृक्षोंको काटा तो सबसे बहुत करनी थी। खजूरी गरीबोंका वृक्ष है। अुसके अुपयोग

ग्रामका जीवन बदल जायेगा। मजूरी हमारे जीवनमें ओतप्रोत है। घास बिल्यादि दूसरी जमीनमें बो सकते थे। लेकिन हुआ अुसका कुआ सूख जाता है। अुसमें से जो शिक्षा मिलती है वह लें तो अच्छा है। मैं तो वक्त नहीं निकाल सकता। ध्यानसे बात करो दूसरोंको पढ़ाओ। मजूरीके अुपयोगका हिसाब करो।

१३-१-'४२ बापूके आशीर्वाद

जमनालालजी और गोसेवा

व्यक्तिगत सत्याग्रह समाप्त हो चुका था। अुस समयके बापूजीके विचार और प्रवचन तो महादेवभाओकी डायरीमें छपे हैं। प्यारेलालजीके पास भी कुछ नोट होंगे। रोज कुछ न कुछ चर्चा चलती ही थी। मैं दूरसे देखता था क्योंकि अुसमें शामिल होनेका मुझे समय नहीं था। अब बापूजी अेक नये आन्दोलनकी तैयारी कर रहे थे। सेवाग्रामकी भूमिमें अुनको करेंगे या मरेंगे मंत्रकी प्रेरणा भी मिली।

अुन्हीं दिनों अेक रोज जमनालालजी बापूजीके पास आये। अुन्होंने कहा कि अब मुझे राजनीतिक काममें रस नहीं रहा है। अब शांतिसे बैठ-कर मैं कुछ रचनात्मक काम करना चाहता हूं। आपकी अिस बारेमें क्या सूचना है?

बापूजीने कहा: "काम तो अनेक हैं। लेकिन खादीका काम चरखा-संघ कर रहा है, ग्रामोद्योगका कुमारप्पा कर रहे हैं, नयी तालीमका आशा-देवी और आर्यनायकम्जीने शुरू किया है। गोसेवा-संघका काम ही अेक अैसा है जो बढ़ नहीं सका है। अगर तुम अुसे बढ़ा सको तो वह तुम्हारे लिअे योग्य है।" जमनालालजीको तो यही चाहिये था। अुन्होंने बड़े आनन्द और अुत्साहसे अिसे स्वीकार किया और अुसकी योजनामें लग गये। यों तो संस्थाके नामसे गोसेवा-संघ बहुत दिनोंका था किन्तु अुसका काम अुसके योग्य अुन्नति नहीं कर सका था। जमनालालजीने सारे हिन्दुस्तानके गोशालाके विशेषज्ञोंकी अेक सभा की। फरवरीके पहले सप्ताहमें सभा हुआी। अुस सभामें ता० १-२-'४२ को बापूजीने जो भाषण दिया अुसके मुख्य अंश ये हैं:

आजकल जिस तरह गोसेवाका कार्य हो रहा है, दूसरी संस्थायें जो कुछ कर रही हैं अुसमें और गोसेवाके काममें बड़ा अन्तर है। यह बात

जनताके सामने नहीं आ रहा था। अमदावादजीके जिसमें पड़ जानेसे यह सबकी नजरमें आ गया है। पीरसाका दावा करनेवालोंको गोपालन और गोवंशकी हालतका ज्ञान नहीं है। अपनेको परम्परासे गोभक्त माननेवाले लोग अेक तरफ बोसेवाके नाम पर पैसा देते हैं और दूसरी तरफ व्यापारमें बैलोंके साथ निर्दयता करते हैं। मैं किसीकी टीका नहीं करता। सिर्फ यह बताना चाहता हूं कि हममें असली कृपामके प्रति कितना अज्ञान भरा है। यही बात मैंने पिंजरापोलोंमें भी देखी। वहां भी विवेक मर्यादा और ज्ञानकी कमी पायी।

मुसलमानोंसे गोकुशी छुड़ानेके लिये अुनका विरोध किया जाता है और गायको बचानेमें जिन्सानोंका खून तक हो जाता है। लेकिन मैं बार बार कहता हूं कि मुसलमानोंसे लड़कर गाय नहीं बच सकती। जिससे तो और भी ज्यादा गायें मारी जायेंगी।

असली दोष तो हिन्दुओंका है। घीका सारा व्यापार हिन्दुओंके हाथमें है। लेकिन क्या घी-दूध शुद्ध मिलता है? दूधमें मिलावट की जाती है और जो पानी मिलाया जाता है वह भी स्वच्छ नहीं होता। घीमें दूसरे पशुओंका घी और वेजिटेबल घी मिलाया जाता है। चूंकेसे दूध निकाला जाता है। बाजारमें जो घी बेचा जाता है अुसे अेक तरहसे जहर कहें तो ज्यादा नहीं है। न्यूजीलैण्ड आस्ट्रेलिया या डैन्मार्कसे विश्वस्त रूपमें गायका शुद्ध मक्खन मिल सकता है। लेकिन हिन्दुस्तानमें जो घी मिलता है अुसकी शुद्धताकी कोओी गारंटी नहीं।

मुझे यह देखकर आश्चर्य होता है कि हम भैंसके घी-दूधका कितना पक्षपात करते हैं। असलमें हम निकटका स्वार्थ देखते हैं दूरका लाभ नहीं सोचते। नहीं तो यह साफ है कि अन्तमें तो गाय ही ज्यादा अुपयोगी है। गायके घी और मक्खनमें अेक खास तरहका पीला रंग होता है, जिसमें भैंसके मक्खनसे कहीं अधिक केरोटीन यानी अे विटामिन रहता है। अुसमें अेक खास तरहका स्वाद भी है। मुझसे मिलनेको आनेवाले विदेशी यात्री सेवाग्राममें गायका शुद्ध दूध पीकर लट्टू हो जाते हैं। और यूरोपमें तो भैंसका घी-मक्खन कोओी जानता ही नहीं। हिन्दुस्तान ही अैसा देश है जहां भैंसका घी-दूध जितना पसन्द किया जाता है। जिससे गायकी बरबादी हुआी है। और जिसलिओ मैं कहता हूं कि हम सिर्फ गाय पर ही जोर न देंगे

तो वह नहीं बच सकती। यह बड़े दुःखकी बात है कि सब गायें और भैंसें मिलकर भी हम चालीस करोड़ लोगोंको पूरा दूध नहीं दे सकतीं। हमें यह विश्वास होना चाहिये कि गायका महत्त्व अिसलिये है कि वही गायें दूध देनेवाली है तथा खेती करने और बोझा ढोनेके लिये बाछड़े देनेवाली है। वह मरने पर भी मूल्यवान है, यदि अुसके चमड़े हड्डी मांस और अंत-ड़ियोंका भी हम अुपयोग करें।

पिंजरापोलोंका प्रश्न कठिन है। देशभरमें अुनकी संख्या काफी है। शायद हर बड़े कस्बेमें अेक-अेक धर्मार्थ गोशाला होगी। अुनके पास पैसा भी बहुत जमा है। लेकिन बहुतोंकी व्यवस्था बिगड़ी हुआी है। अुनका असली काम बूढ़े बूढ़े और अपाहिज गाय-बैलोंका पालन करना है। अिन संस्थाओंका काम दूधका व्यवसाय करना नहीं है। हां वे चाहें तो अेक अलग दुग्धालय या गोशाला विभाग रख सकते हैं। लेकिन अुनका मुख्य धर्म यही है कि बूढ़े और अपंग ढोरोंका पालन करें और चर्मालयके लिये कच्चा माल देवें। हर पिंजरापोलके साथ अेक-अेक सुसज्जित चर्मालय होना चाहिये। अुन्हें अुत्तम सांड़ भी रखने चाहिये जो जनताके भी काम आ सकें। खेती और गोपालनकी शिक्षाका भी प्रबंध अुनमें होना चाहिये।

गोसेवा-संघने अपने सदस्योंके लिये यह शर्त रखी है कि वे गायका ही घी-दूध खायें और गाय-बैलका मुर्दार चमड़ा ही काममें लें। अिस नियमके पालनमें बड़ी कठिनाआी यह बताआी जाती है कि जिनके यहां हम मेहमान बनते हैं अुनको बड़ी दिक्कत और परेशानी होती है। लेकिन अिन कठिनाअियोंको बहुत महत्त्व नहीं देना चाहिये। धर्मका पालन सदा कष्ट दायी तो होता ही है। अुससे भागनेमें न बहादुरी है न औचित्य।

आज तो गाय मृत्युके किनारे खड़ी है। और मुझे भी यकीन नहीं है कि अन्तमें हमारे प्रयत्न अुसे बचा सकेंगे। लेकिन यह नष्ट हो गयी तो अुसके साथ ही हम भी यानी हमारी सभ्यता भी नष्ट हो जायेगी। मेरा मतलब हमारी अहिंसा-प्रधान और ग्रामीण संस्कृतिसे है। हमारा जीवन हमारे जानवरोंके साथ ओतप्रोत है। हमारे अधिकांश देहाती अपने जानवरोंके साथ ही रहते हैं और अक्सर अेक ही घरमें रात बिताते हैं। दोनों साथ जीते हैं और साथ ही भूखों मरते हैं। लेकिन हमारा काम करनेका ढंग सुधर जाय तो हम दोनों बच सकते हैं।

हमारे सामने हल करनेका प्रश्न तो आज अपनी भूख और दरिद्रताका है। हमारे ऋषियोंने हमें रामबाण अुपाय बता दिया है। वे कहते हैं गायकी रक्षा करो सबकी रक्षा हो जायगी। ऋषि ज्ञानकी कुंजी खोल गये हैं। अुसे हमें बढ़ाना चाहिये बरबाद नहीं करना चाहिये। हमने विशेषज्ञोंको बुलाया है और हम अुनकी सलाहसे पूरा काम अुठानेकी कोशिश करेंगे।

लेकिन ११ फरवरी १९४२ को भगवानने अचानक जमनालालजीको अुठा लिया और सारे संकल्प जहांके तहां रह गये।

१९
बापूके पांचवें पुत्रका स्वर्गवास

११ फरवरीको सुबह आठ बजे मैं लोहेका हल लेने वर्धा गया था। भैया बंधुकी दुकान पर करीब साढ़े तीन बजे यह दुःखद समाचार मुझे मिला कि जमनालालजीका स्वर्गवास हो गया। मुझे यह बात झूठ लगी बिलकुल ही विश्वास नहीं हुआ। क्योंकि वे कल ही मेरे साथ बात करके आये थे कि परसों आकर आपसे गोसेवाकी देशव्यापी योजना पर बात करूंगा। आज अुनकी मृत्यु हो जाय यह कैसे सच हो सकता है? भैया बंधुने अेक आदमीको अुधर दौड़ाया तो अुसने भी यही समाचार दिया। मैं जमनालालजीके मकानकी तरफ तेजीसे लपका तो क्या देखता हूं कि अुनकी दुकानके सामने आदमियोंका हुजूम खड़ा है। और सचमुच ही जमनालालजी विश्व जगतसे विदा हो चुके हैं। मैंने देखा कि अुनका सिर बापूजीकी गोदमें है और बापूजी गंभीर मुद्रामें मानो अुनसे कह रहे हैं मानो तू मेरा पांचवां पुत्र बना था तो मुझसे पहले जाना तेरा धर्म नहीं था। अुनकी मृत्यु अचानक हुअी थी जिसलिये सब हक्केबक्के हो रहे थे। मेरे मनको बड़े जोरका धक्का लगा और मेरे सारे मनोरथों पर पानी फिर गया। जबसे जमना-लालजीने गोसेवाका ही संकल्प लेकर काम शुरू किया तबसे अुनके साथ मेरा सम्बन्ध और भी निकटका हो गया था। अुनके द्वारा मेरा गोसेवाका मनोरथ पूर्ण होगा अैसी आशा बंध गयी थी। लेकिन जब सुना कि वे नहीं रहे तो अैसा लगा जैसे मेरे पैरोंके नीचेकी मिट्टी ही खिसक गयी हो। मैंने अनेक बार बापूजीके साथ झगड़ा किया था कि आपने जिस प्रकार चरखा-

संघ, ग्रामोद्योग-संघ, हरिजन-सेवक-संघ, तालीमी संघ आदिका काम जैसा बड़े पैमाने पर किया है, अुस प्रकार गोसेवाके लिये कुछ भी नहीं किया है, जो मेरी नजरमें अिन सब कामोंसे अधिक महत्वका काम है। बापूजी कहते "देखो, मैं किसी कामका आरम्भ नहीं करता। जैसी परिस्थिति होती है और जैसे सेवक मिल जाते हैं अुसी तरह काम भी आरम्भ हो जाता है। गोसेवाका काम मैं करना नहीं चाहता अैसी बात नहीं है। लेकिन अभी तक मुझे अैसा प्रभावशाली गोसेवक नहीं मिला है, जिससे मैं हिन्दुस्तानकी गायोंको बचानेका काम ले सकूं।

जबसे जमनालालजीने गोसेवाका काम समाल लिया था तबसे मुझे आशा बंध गयी थी कि अब गोसेवाका काम जमेगा। क्योंकि बापूजी जैसे सेवकको तलाशमें थे अैसा सेवक अुन्हें मिल गया है और अुनके मार्फत बापूजीके अुद्देश्यकी अवश्य पूर्ति हो सकेगी। मेरे जीवनमें जिन स्नेहियोंके वियोगका दुख अमिट रहा है अुनमें जमनालालजीका भी स्थान है। अुनकी मृत्युसे मेरा धीरज छूट गया और मुझे गोसेवाके प्रकाशकी जो किरणें दिखायी देती थीं वे फिरसे गहरे अंधकारमें विलीन हो गयीं। मैंने अनेक बार जमनालालजीको पुत्रवत् बापूजीके चरणोंमें बैठकर अुनका प्यार पाते और अुनकी फटकार भी सुनते देखा था। मैंने जब अुनकी वारी जमीनका कब्जा लिया तब मुनीमोंके कहनेसे कुछ ढीली बात करने पर जमनालालजीको बापूजीके सामने अेक मुलजिमकी तरह पेश कर दिया था। तब नम्रतासे अुन्होंने सब कुछ मुझे सौंपनेका आदेश अपने मुनीमजीको दे दिया था। जितना ही नहीं बल्कि सेवाग्रामकी सड़कके आसपास जितनी जमीन मैं चाहूं अुतनी खरीदनेका अधिकार मुझे दे दिया था और अपने मुनीमजीसे कह दिया था कि जब तक अपने लिए आदेशका मैं वापिस न खींच लूं तब तक बलवन्तसिंह जिस जमीनका सौदा जितनेमें करे अुतनी रकम मुझसे बिना पूछे अुसे चुकाते रहना।

वे बापूके पार्षदों गुनके नामसे पहचाने जाते थे लेकिन अुनके काम प्रथम पुत्रके थे। वे बापूके पुत्र थे अुनके भामाशाह थे अुनके सलाहकार थे और अुनके सेवक थे। अुनकी ही भाषामें वे बापूजीके धीर-बावर्ची-भिश्ती-खर सब कुछ थे। अुनके चले जानेसे बापूजीकी अेक बांह टूट गयी थी। महादेव भाभीके जानेसे अुनकी दूसरी बांह भी टूट गयी। और बाने तो आकर अुनका अन्तर ही खोखला बना दिया था। पू. जमनालालजीकी नम्रता

अुनकी महानता अुनकी अुदारता और अुन सब पर चढ़े हुअे गोसेवाकी पवित्र भावनाके कलशको देखकर अुनके वियोगसे किसको दुःख नहीं होता ? आखिर बहुत विचारके बाद मैंने मनको धीरज बंधानेका रास्ता ढूंढ लिया या मुझे लाचारीसे ढूंढना पड़ा। मैं सोचने लगा कि ईश्वरकी अिच्छाके बिना पत्ता तक नहीं हिल सकता तो अुसकी अिच्छाके बिना अैसी पवित्र महान आत्मा हमसे दूर क्योंकर भाग सकती है ? अन्दरसे अुत्तर मिला कि अुनका गोसेवाका संकल्प जितना महान था कि मर्यादित शरीर अुसका साथ नहीं दे सकता था। ईश्वरने सोचा होगा कि अैसे प्राणप्रिय भक्तके शुभसंकल्पको जल्दीसे जल्दी किस तरह पूरा किया जा सकता है ? अुसका अेकमात्र मार्ग यही है कि अुसे अेकसे मिटाकर अनेकमें विलीन कर दूं। यह जो मर्यादित शरीर अुसके संकल्पको पूरा करनेमें रुकावट डालता है अुसको दूर कर दूं। भगवानने अधिक काम लेनेकी गरजसे ही अुनको अपने पास बुला लिया। प्रभु, तेरी गति लखि न परे।

कुछ भी हो अुनका आरम्भ किया हुआ काम हर हालतमें अधिक वेगसे आगे बढ़ेगा अैसा मेरा विश्वास है। प्रभुसे प्रार्थना है कि वह मुझे बल दे, ताकि अुनकी आरम्भ की हुअी मशीनमें मेरा भी अेक पुर्जेकी जगह पर अुपयोग हो सके।

बापूजीके मनमें तो अुनके चले जानेका डर था ही। वे कई रोज पहलेसे कह रहे थे कि मुझे लगता है मैं जमनालालको खो दूंगा। जब फोनसे अुनकी अकस्मात बीमारीका समाचार मिला तब बापूजी सर्पगंधा औषधि लेकर ही निकले थे। लेकिन वे तो बापूजीके पहुंचनेके पहले ही चले गये। सारे वर्धामें और सेवाग्रामकी संस्थाओंमें यह दुःखद समाचार बिजलीकी तरह फैल गया और हजारों लोग अुनकी श्मशान-यात्रामें शामिल हुअे। अुनका दाह-संस्कार अुसी शांतिकुटीके सामने करनेका निश्चय हुआ जिसमें सब छोड़-छाड़कर वे गोसेवाके लिअे ही बैठे थे। जब अुनके पार्थिव शरीरको चिता पर रखा गया तो अुनकी धर्मपत्नी श्री जानकीबहनने अुनके साथ जलकर सती होनेका आग्रह किया। बापूजीने अुनको धीरज बंधाते हुअे कहा: जमनालालजीके मृत शरीरके साथ जल जानेसे धर्मका पालन थोड़े ही हो सकता है। धर्मका पालन तो जिस कामके लिअे अुन्होंने अपना जीवन समर्पण किया था अुसको पूरा करनेसे होगा। किसीके प्रेम या मोहके

बद्ध होकर प्राण देना आसान है, लेकिन अुसके कामके लिये जीना भारी काम है। और यही अुसके प्रति सच्ची भक्ति और प्रेम है। अब आजसे यह संकल्प करो कि जमनालालजीका काम मुझे पूरा करना है।"

जब जमनालालजीका शरीर अग्निदेवकी सीढ़ियोंसे आकाशकी तरफ धांय-धांय करके जुड़ रहा था सबके चेहरे मुरझाये हुअे थे बापूजी गमगीन थे तब केवल विनोबाजी ही मुख्य स्वरसे अीशावास्योपनिषद्का अुच्चारण जिस प्रकारसे कर रहे थे मानो यज्ञ चल रहा हो और होता अग्निमें मंत्रोंकी आहुति दे रहा हो। अुनके चेहरे पर अुदासी नहीं बल्कि अेक प्रकारका आत्मतेज था।

अुस दिन जमनालालजीकी पवित्र स्मृति हृदय-पटल पर नाचती रही और मैं सोचता रहा कि अुनके अधूरे कामको आगे बढ़ानेमें मैं कैसे मददगार हो सकता हूं, गोसेवाका काम कैसे सुव्यवस्थित हो सकता है?

शामको अुनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करनेके लिये वर्धामें सभा हुअी। मैं भी अुसमें गया था। अुसमें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुअे विनोबाजीने कहा : "जमनालालजीके साथ मेरा २२ सालका परिचय था। लेकिन अुनके मनकी जैसी अुन्नत अवस्था मैंने जिन सभा दो महीनोंमें देखी वैसी कभी नहीं देखी थी। मनकी अैसी अुन्नत अवस्थामें मृत्यु प्राप्त करना बहुत ही दुर्लभ है। जमनालालजी प्राप्त कर सके। यह सोचकर मुझे अुनकी मृत्युसे दुःख नहीं बल्कि आनन्द हुआ है। अैसी पवित्र मृत्यु पानेका हम सब प्रयत्न करें। जब आत्मा अपने संकल्पको शरीरमें पूरा होते नहीं देखता तब वह अुस शरीरको फेंककर सबमें प्रवेश करके अपना कार्य करता है। यही जमनालालजीने किया है। ईश्वर हम सबको बल दे कि हम भी जमनालालजी-सी मृत्यु प्राप्त कर सकें। ॐ शांति शांति शांति।"

जानकीदेवीने अपने हिस्सेकी सारी सम्पत्ति गोसेवाके लिये गोसेवा-संघको समर्पण कर दी और अपना जीवन भी गोसेवामें लगानेका निश्चय किया। वे जोरसे अपने काममें लग गयीं। अुनके पास जिस प्रकारकी शास्त्रीय योग्यता तो नहीं है जो आजकलके जमानेको कायल कर सके। अुनका समझानेका और बात करनेका तरीका बिलकुल पुराने ढंगका है। लेकिन अुनके दिलमें गोसेवाकी ही नहीं बापू और विनोबाके हरअेक रचनात्मक काममें अपने आपको खपा देनेकी तमन्ना है। मैं तो अुनको काफी

सताता हूं। और प्रेमसे वे भी मुझे काफी गालियां सुना देती हैं। लेकिन मेरी अुनके प्रति कितनी श्रद्धा है और अुनका मेरे प्रति कितना प्यार है, अिसका अन्दाजा दूसरे नहीं लगा सकते। दधीचिकी तरह अगर गोसेवामें अुनकी हड्डियोंका अुपयोग हो सकता हो तो वे खुशीसे अपनी हड्डियां दे देंगी। सारे देशमें गोसेवा भूदान संपत्ति-दान आदिके कामसे वे अकेली ही घूमती रहती हैं। अुनकी अिस सेवा और लगनको देखकर भारत-सरकारने अुन्हें पद्म भूषणकी अुपाधि प्रदान की है। अुनकी कंजूसीसे लोग तंग तो आ जाते हैं। पर अुन्होंने बापूजीके आदेश और आशीर्वादके अनुसार अपनी शक्तिभर काम करनेमें कोअी कमी रखी है यह तो कोअी नहीं कह सकता। अिसमें अुनकी पतिभक्ति गोभक्ति देशभक्ति गुरुभक्ति सब कुछ आ जाता है। अिसको कहते हैं शुभ संकल्प और दृढ़ निश्चय।

बापूजीने जमनालालजीके वियोगको अपनी कड़ी परीक्षा माना और 'हरिजनसेवक' में लिखा

> बाअीस वर्ष पहलेकी बात है। तीस सालका अेक नवयुवक मेरे पास आया और बोला मैं आपसे कुछ मांगना चाहता हूं। मैंने आश्चर्यके साथ कहा मांगो। चीज मेरे बसकी होगी तो मैं दूंगा।
>
> नवयुवकने कहा आप मुझे अपने देवदासकी तरह मानिये। मैंने कहा मान लिया! लेकिन अिसमें तुमने मांगा क्या? दरअसल तो तुमने दिया और मैंने कमाया।
>
> यह नवयुवक जमनालाल थे। वे किस तरह मेरे पुत्र बनकर रहे, सो तो हिन्दुस्तानवालोंने कुछ कुछ अपनी आंखों देखा है। जहां तक मैं जानता हूं, मैं कह सकता हूं कि अैसा पुत्र आज तक शायद किसीको नहीं मिला है।
>
> यों तो मेरे अनेक पुत्र और पुत्रियां हैं क्योंकि वे सब पुत्रवत् कुछ न कुछ मेरा काम करते हैं। लेकिन जमनालाल तो अपनी अिच्छासे पुत्र बने थे। और अुन्होंने अपना सर्वस्व दे दिया था। मेरी अैसी अेक भी प्रवृत्ति नहीं थी जिसमें अुन्होंने दिलसे पूरी पूरी सहायता न की हो और वह सभी कीमती साबित न हुअी हो। क्योंकि अुनके पास बुद्धिकी तीव्रता और व्यवहारकी चतुरता दोनोंका सुन्दर मेल था। धन तो कुबेरके भण्डार-सा था।

मेरे सब काम अच्छी तरह चलते हैं या नहीं मेरा समय कोअी नष्ट तो नहीं करता मेरा स्वास्थ्य अच्छा रहता है या नहीं, मुझे आर्थिक सहायता बराबर मिलती है या नहीं अिसकी फिक्र अनको बराबर रहा करती थी। कार्यकर्ताओंको लाना भी अनुहींका काम था। अब अैसा दूसरा पुत्र मैं कहांसे लाअूं? अिस रोज मेरे अनुसी रोज जानकीदेवीके साथ वे मेरे पास आनेवाले थे। कभी बातोंका निर्णय करना था। लेकिन भगवानको कुछ और ही मंजूर था। अैसे पुत्रके मृत जानेसे बाप पंगु बनता ही है। यही हाल आज मेरा है। जो हाल भगवानके जानेसे हुअे थे वे ही अीश्वरने दुबारा फिर मेरे किये हैं। अिसमें भी अुसकी कोअी छिपी कृपा ही है। वह मेरी और भी परीक्षा करना चाहता है। करे। अुसीमें हीलेकी शक्ति भी वही देगा।

सेवाग्राम १६-२-'४२ बापू

अूपरके लेखसे पांचवें पुत्रकी योग्यता और बापूकी वेदनाका स्पष्ट दर्शन होता है।

२०

गोशालासे विछोह और मेरी बेचैनी

जमनालालजीके स्वर्गवासके बाद गोसेवा-संघका नया संगठन बना। अध्यक्ष माता जानकीदेवी बजाज बनीं अुपाध्यक्ष श्री कनस्यामदासजी बिड़ला और मंत्री स्वामी आनन्द बनाये गये। वे लोग चाहते थे कि बापूजीके आस-पास ही गोसेवा-संघका गोपालन-केन्द्र खोला जाय। अिस दृष्टिसे अिन लोगोंने आसपासके गांवोंमें जमीन तलाश की लेकिन मौकेकी जमीन नहीं मिली। अेक रोज सरदार वल्लभभाअीने स्वामीसे कहा "अरे भाअी तुम अिधर-अुधर क्यों घूमते हो? आश्रमकी ही खेती और गोशाला लेकर काम करो न।" अब तक अनुके मनमें अिस प्रकारका विचार था या नहीं यह तो भगवान जाने लेकिन सरदारजीके कहनेसे अुनको यह विचार ठीक लगा। बापूजीसे पूछा गया तो अुन्होंने कहा "मैंने अिस प्रकार सोचा तो नहीं है तो भी अगर बलवन्त-

सिंह और पारनेरकर राजी हो जायें तो मैं राजी हो जाअूंगा। स्वामीने मुझसे कहा "हमने तलाश की है लेकिन आसपास कोअी ठीक जमीन नहीं मिल रही है। अगर न मिल सके तो हम आपकी जमीन और गोशालाका अुपयोग करना चाहते हैं। बापूजीने कहा है कि अगर बलवन्तसिंह और पारनेरकर राजी हो जायें तो मुझे कुछ भी हर्ज नहीं होगा। तुम बलवन्तसिंहसे बात करो। मैंने कहा कि अगर बापूजी चाहते हैं तो मुझे क्या हर्ज है। स्वामीने कहा, "अगर आपको प्रयोगके लिअे जमीन चाहिये तो थोड़ी हम दे सकते हैं। मैंने कहा "मुझे कोअी व्यक्तिगत प्रयोग नहीं करना है।

मैंने अपनी डायरीमें लम्बा नोट लिखा कि अगर बापूजी सचमुच ही खेती और गोशाला गोसेवा-संघको सौंपना चाहते हों तो भले सौंपें क्योंकि आखिर यह सब अुन्हींकी अिच्छासे खड़ा हुआ है। मुझे दुःख तो जरूर होगा। क्योंकि मैंने अिसके निर्माणमें काफी शक्ति लगाअी है और जहां तक अिस कामको पहुंचानेका मौका था वहां तक नहीं पहुंचा सका और बीचमें ही यह विघ्न आ गया। गोसेवा-संघके साथ काम करना भी मेरे लिअे कठिन पड़ेगा क्योंकि दो तलवारें साथ साथ नहीं चल सकेंगी। अिसलिअे मुझे अपने आपको गोशालासे हटाना ही पड़ेगा। मैं अुनका रास्ता साफ कर दूंगा।

अिस पर बापूजीने लिखा अिसका अर्थ अिनकार है, अिसीलिअे तो मैंने कहा कि बलवन्तसिंह और पारनेरकरको पूछो और वे लोग राजी हों तो मुझे कुछ अड़चन नहीं होगी। वे लोग तुम्हारी बात समझे भी नहीं हैं। अुनसे बात करो।

२८-४-'४२ बापू

महावीरप्रसादजी पोद्दार और स्वामीने मेरे पास खबर भेजी कि आपको बापूजीने बुलाया है। अिस परसे मुझे लगा कि ये लोग बापूजीके मार्फत मुझे दबाना चाहते हैं। खबर लानेवालेसे मैंने कह दिया कि जब बापूजी बुलायेंगे तब चला जाअूंगा। अुन लोगोंको बीचमें पड़नेकी जरूरत नहीं है।

मैं घूमने कहीं जा रहा था। बीचमें स्वामी और पोद्दारजी मिल गये। वहीं अुन्होंने बात दोहराअी और मुझे समझानेकी कोशिश की। साथ ही यह भी कहा कि बापूजीने हमसे कह दिया है कि तुम बलवन्तसिंहको समझानेकी कोशिश करो। अगर वह नहीं मानेगा तो अेक आदमीके कारण अितना बड़ा काम रोका नहीं जा सकता है। अिसलिअे आप काम करने

तो अिसमें आपकी शोभा है। अिस परसे मुझे लगा कि ये लोग मेरे साथ औपचारिक भाषाका प्रयोग करना चाहते हैं। अिसके पीछे तलवार लटकती है। अुनकी बातचीतके अिस ढंगने मुझे विद्रोही बना दिया। मैंने कह दिया कि अगर सचमुच अैसी बात है तो मुझे पूछनेका कुछ भी अर्थ नहीं है। क्योंकि मैं यह समझ गया हूं कि मुझे केवल राजी रखनेकी कोशिश की जा रही है। होगा तो वही जो आप लोगोंने तय किया है। मैं अितना मूर्ख नहीं जो अिस डरसे राजी हो जाअूं। तब तो आज तककी मेरी तालीम फिजूल हो जायेगी।" पोद्दारजीने कहा "आजी आजकल जमाना ही अैसा है कि औपचारिक भाषा बोलनी पड़ती है। जब आप जानते हैं कि काम होने ही वाला है तो राजीसे कबूल करनेमें आपकी भलमनसाहत होगी। अिस पर घनश्यामदासजी १ लाख रुपये खर्च करनेवाले हैं।" मैंने कहा "अैसी भलमनसाहत और घनश्यामदासजीके १ लाख रुपयेकी मेरे पास कोअी कीमत नहीं है। अिस प्रकारसे मेरे साथ संधिकी कोशिश करना बेकार है।"

बादमें मैं बापूजीके पास गया और अुनसे पूछा कि आपने मुझे बुलाया था। बापूजीने कहा "मैंने तो नहीं बुलाया था। हां अुन लोगोंको तुमसे बात करनेको कहा था। तुमको कुछ कहना हो तो कहो। अितनी बात मुझे लगती है कि गोशाला गोसेवा-संघको देनेसे मेरे सिरका भार हलका हो जायेगा। लेकिन तुम सोचो।" मैंने बापूसे कहा कि मैं सब आश्रमवासियोंसे मिलकर आपको बताअूंगा।

बादमें भी चिमनलालभाअी और मुन्नालालभाअीके साथ बैठकर मैंने विचार किया। हम तीनों अिस नतीजे पर पहुंचे कि अगर गोशाला अुनको देनी ही हो तो मेरा समावेश अुसमें नहीं हो सकेगा। दोपहरके भोजनके बाद जानकीबहन आयीं और कहने लगीं "आप थोड़े अुदार बनो।" मैंने कहा, "मेरा काम करनेका तरीका अलग है और अुनका अलग होगा। अिसलिअे या तो मुझे एकदम पूरा काम अपने हाथमें ले लो या मेरे हाथके नीचे अपने प्रयोग करो। मेरे पास बीचका रास्ता नहीं है। मैंने अपने जीवनमें आज तक जो सीखा है अुसे मैं खोना नहीं चाहता हूं। अिसमें बापूजीका भी भला हुआ है। घनश्यामदासजी या और कोअी अिसमें १ लाख खर्च करेंगे अिसकी मेरे नजदीक कुछ भी कीमत नहीं है। हां बापूजी मुझे योजना दें और अुसके लिअे पैसा दें तो अुसे पूरा करनेका मैं सामर्थ्य रखता हूं। लेकिन बापूजी

बनकर मैं कुछ भी करनेको तैयार नहीं हूं।" बापूको मैं संतरेके बगीचेमें जाकर सो गया। शामको अुड़ती हुअी खबर मिली कि खेती और पोथाका बापूजीने गोसेवा-संघको सौंप दी है। साथ साथ यह भी खबर मिली कि गोसेवा-संघ मुझे साथ रखनेके लिअे तैयार नहीं है। दूसरी खबरका तो कुछ भी अर्थ नहीं था क्योंकि मैं खुद ही साथ रहनेको तैयार नहीं था। लेकिन मुझे विश्वास नहीं होता था कि मेरे साथ पूरी बात किये बिना बापूजी अैसा कर सकते हैं। मैंने अपने मनके विचार डायरीमें अिस प्रकार लिखे "अगर बापूजीने सचमुच अैसा किया हो तो मेरी और बापूजीकी बड़ी कसौटी हो जायेगी। मैं मन ही मन कह रहा था कि देखूं औश्वर क्या चाहता है। अपनी बात पर अटल रहनेका औश्वर बल दे यही प्रार्थना है। बाकी जगतके सम्बन्ध तो स्वार्थसे बने हुअे ही रहते हैं लेकिन बापूजीका सम्बन्ध निःस्वार्थ भावसे जुड़ा है। अगर वह भी टूटा तो मुझे अेक बहुत बड़ा पाठ सीखनेको मिलेगा। मेरी औश्वर पर पूरी श्रद्धा है कि वह जहां भी मुझे ले जायगा वहां मेरे कल्याणके लिअे ही ले जायगा। अगर मुझसे और भी शुद्ध और कठिन साधना करानी होगी तो वह मुझे यहांसे जबरन् छुड़ा ले जायगा और अिससे भी अधिक लायक बनानेकी परिस्थितिमें रख देगा। अिसका मुझे पूर्ण विश्वास है। हे भगवान तू कितना ही नाच नचा लेकिन आखिर तो तुझे ही व्यवस्था करनी होगी। आज तकके अनुभवके आधार पर मैं कबूल करता हूं कि तूने मेरा कल्याण करनेके लिअे ही पहले कड़वा घूंट पिलाया है। अिसलिअे अिस अंधकारकी आड़में मुझे तेरी ज्योति नजर आती है, हालांकि मैं अभी तक अुसके लायक नहीं बना हूं। तेरे अूपर विश्वास जरूर है। यह तेरी मेरी मूक लड़ाअी किसीको मालूम न हो अिसका भी मैं ध्यान रखता हूं। और तू भी रखता है। यह बात कागज पर लिखना भी अपना भेद खोलना है। मौनमें ही सब कुछ समाया है। गूंगेकी मिठासकी व्याख्या करने बैठना मूर्खता नहीं तो और क्या है? बस होने दे तमाशा और देखने दे मुझे कैसा आनंद आता है।"

मैंने बापूजीको लिखा

परम पूज्य बापूजी

पोथाकाके बारेमें आपके सामने मेरे बारेमें महावीरप्रसादजीने जो बात कही है वह अेकपक्षीय है, क्योंकि कुछ समय मुझे भी

बुलाना चाहिये था। आपसे यह कहा गया है कि बलवन्तसिंह तो यह कहता है कि मेरे साथ संधि नहीं हो सकती है। मैं आपको बता देना चाहता हूं कि अुन्होंने मुझे धमकी दी थी कि आप न मानोगे तो भी काम तो होने ही वाला है अच्छा है आप समझ जायं। अिस पर मैंने कहा कि अगर यही बात है तो मुझे पूछनेका कुछ भी अर्थ नहीं रह जाता और अिस प्रकार धमकीकी तलवार मेरे सिर पर लटकाकर आप मुझे झुका नहीं सकते अगर आपकी धमकीसे मैं झुक जाऊं तो आज तकका मेरा प्रयत्न व्यर्थ हो जायगा। अिस लिये मैंने कहा था कि अिस मनोवृत्तिसे मेरे साथ संधि नहीं हो सकती। जब तक मुझे ऐसा न लगे कि मेरी राय अमान्य हो सकती है तब तक अिस डरसे कि अच्छा है जिनकी ही बात मान लूं, मैं क्यों अपनी बेजिम्मेदारी करूं? यह बात मेरे स्वभावमें नहीं है कि मैं किसीके डरसे झुक जाऊं। आपने जो फैसला किया होगा वह तो ठीक ही होगा। लेकिन मुझे समझाकर और मेरी बात समझकर आप फैसला करते तो अच्छा होता। दूसरोंकी बात सुनकर किया होगा तो मुझे अिस बातका दुःख होगा कि मेरी बात बिना सुने आपने फैसला क्यों किया। आप अपने फैसलेसे जल्दी सूचित करेंगे तो मुझे शांति मिलेगी।

कृपापात्र
बलवन्तसिंहके प्रणाम

ऊपरकी डायरी और पत्र जो डायरीमें ही था पढ़नेके बाद मेरी डायरीमें बापूजीने लिखा

चि. बलवन्तसिंह,

तुम्हारा सब लेख पढ़ गया। मुझे बड़ा दुःख होता है। यहां अीश्वरका नाम लेना अज्ञानसूचक है। तुम्हारे लेखमें अहंकार भरा है। तुमको बुलाकर क्या फैसला करना था? गोसेवा-संघ हमारा सब काम ले ले तो हमें खुश होना है। अुसमें से किसीको स्वार्थ नहीं है, तो भी तुमको स्वार्थकी बू आती है। तुमको धमकी देनेकी बात कहां है? को तो बेचारोंको मैंने भेजा था। तुमको विनय करने आनी थी। मैंने भी कहा विनय करो। ठीक है जो अच्छा

लगे सो करो। मैं तो अब भी कहता हूँ कि जैसा संचालक कहें वैसा करो। अिसमें तुम्हारी शोभा है। तुम्हें मुझको कुछ समझाना है तो समझाओ। वे लोग भी तो सब मुझको पूछकर ही करनेवाले हैं। वे भी तुम्हारे जैसे ही सेवक हैं। वे भी अुसी अीश्वरको भजते हैं जिसको तुम। फरक अितना है तुम नाम अीश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहते हो। अहंता तुममें अितनी है कि किसीके साथ काम नहीं कर सकते हो। जरा नीचे अुतरो जरा समझो।

१–५–४२ बापूके आशीर्वाद

अिसके अुत्तरमें मैंने लिखा

परम पूज्य बापूजी

आपका लेख पढ़कर मुझे अितना दुःख हुआ कि आज तक कभी नहीं हुआ था। अिसमें अितना रोष है कि अुसे हजम करना मेरी शक्तिके बाहरकी चीज है। अहिंसाकी तो अिसमें बू तक मुझे नहीं आती है। नाम अीश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहते हो। यह मर्मभेदी वाक्य आपकी कलमसे!! तुमको बुलाकर फैसला क्या करना था? —आपके अिस वाक्यने मेरी सारी भावनाओंको कुचल डाला है। ये सेवक नहीं हैं या अीश्वरको नहीं भजते या अीश्वरका काम नहीं करते हैं अैसा मैंने कभी नहीं कहा है। चूँकि आप सबके अन्तरकी बात जानते हैं अिसलिये अैसा कह सकते हैं कि नाम अीश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहते हो। मेरे लिये आपका यह वाक्य जले पर नमक जैसा है। अरे बापू, आप मेरे प्रति अितना अविश्वास भी रख सकते हैं जिसका मुझे आज पता चला! दरअसल मेरा यह लेख आपके लिये नहीं मेरे लिये ही था। खेती और गोशालाके अेक अेक झाड़ और अेक अेक जानवरके साथ मेरा आत्मीय संबंध है। यह किसीको दिखानेके लिये नहीं या अीश्वरका नाम लेकर अपना ही काम करनेके लिये नहीं है। अुसके पीछे मैंने अपने खूनका पसीना बहाया है। यह नाम या अपने कामके लिये नहीं। अुसके करने और सोचनेमें जो आत्मिक संतोष मिलता है, अुसके लिये आप या और कोअी अिसमें मेरा स्वार्थ मानें

तो मले मानें। अगर नाम अीश्वरका और काम अपना ही किया होता तो आप या और कोअी मुझसे अिस चीजको अिस तरहसे छीन नहीं सकता था। अेक तरफ तो आप यह कहते हैं कि बलवन्तसिंहको राजी कर लो और दूसरी तरफ लिखते हैं 'तुमको बुलाकर क्या फैसला करना है? मुझे लगता है कि आपका काम था कि मुझे बुलाकर समझा देते कि गोशालाकी भलाअी संघको ही देनेमें है और तुम संघकी दृष्टिसे काम करो। तो मैं आपकी बातका अिनकार थोड़ा ही करनेवाला था। को मैंने साफ कह दिया था कि अगर बापूजी चाहें तो मैं गोसेवा-संघके पैमाने पर काम कर सकता हूं। संघके साथ काम करनेमें मुझे यह अड़चन थी कि अगर संघवाले की दृष्टिसे यहांका सारा कार्यक्रम बनावें और अुसको मेरे अूपर लादना चाहें तो अिसे मेरी आत्मा बर्दाश्त नहीं कर सकेगी और अिससे अुनको भी अपने विचारके अनुसार काम करनेमें अड़चन होगी और मुझको भी। अगर मैं अुनसे दबकर काम करूंगा तो मेरा तेजोभंग होगा और काम भी बिगड़ेगा। अिसलिये पहलेसे ही अलग हो जाना सुरक्षित मार्ग है। हो सकता है अिसमें मेरी भूल हुअी हो। था के साथ काम करनेमें मुझे किसी प्रकारकी अड़चन नहीं थी।

गोसेवा-संघका काम बढ़े और फले-फूले अिससे मुझे जितनी खुशी हो सकती है अुतनी थोड़ी है। आपको याद हो तो मैं आपसे कअी बार कह चुका हूं कि आपने जिस प्रकार चरखा-संघ ग्रामोद्योग-संघ अित्यादिका काम व्यापक रूपसे किया है, अुसी प्रकारसे गोसेवा-संघका आप क्यों नहीं करते हैं। मुझे लगता है कि आपने जो किया है अुस पर फिरसे विचार करियेगा। मेरा केस भी फिरसे पढ़ियेगा। अगर फिर भी अुसका अर्थ यही निकले कि मैं नाम अीश्वरका लेकर काम अपना ही करना चाहता हूं तो अैसे स्वार्थी आदमीके लिये आपके पास स्थान नहीं होना चाहिये।

मैं यह सब लिख रहा था कि बापूजीका बुलावा आ गया। मैं गया। बापूजीने कहना आरंभ किया देखो मेरे मनमें गोशाला संघको देनेका विचार नहीं था। लेकिन मेरे ही आसपास जिनको काम करनेकी जिज्ञासा रही वो ठीक भी थी। क्योंकि मैं भी देखना चाहता हूं कि वे लोग कितना

काम कर सकते हैं। अिनको दूसरी अुपयुक्त जमीन न मिली तो मुझसे पूछें। मैंने कहा अगर बलवन्तसिंह और पारनेरकर राजी हो जायं तो मैं राजी हो जाअूंगा। अिसलिअे ये लोग तुम्हारे पास आये। अिसमें चमकनेकी क्या बात थी? तुमको तो खुश होना चाहिये था कि ये लोग गोसेवाका बड़ा काम करना चाहते हैं तो अपना भार जितना कम हुआ। मेरे सिर पर तो सबकी भूल रही है। अब क्या होगा कहना कठिन है। यह भार हल्का हो जाय तो अच्छा ही है। तुम्हारा धर्म है कि तुम अुनके साथ काम करो और अुनकी मदद करो। अपने अनुभवका लाभ अुनको दो। आखिरमें वे भी तो गोसेवा ही करना चाहते हैं। तरीकेमें फरक हो सकता है तो अेक-दूसरेको अपनी बात समझाकर आगे बढ़ सकते हो। मेरी सलाह है कि तुम अपनी सेवा गोसेवा-संघको दो। हां यह दूसरी बात है कि वे तुम्हारी सेवाका अस्वीकार कर दें तो तुम्हारा रास्ता साफ हो जायगा। लेकिन अपनी तरफसे अिनकार करना किसी भी तरह अुचित न होगा। तुम अिस पर विचार करो। मैं कहता हूं अिसलिअे नहीं। लेकिन अब तुमको भी अैसा लगे कि तुम्हारे सहयोगसे अच्छा काम हो सकता है और गोवंशकी सेवा हो सकती है तो तुम्हारा धर्म हो जाता है कि तुम अुनके साथ काम करो।"

बापूजीकी बातसे मुझे पूरा समाधान तो नहीं हुआ लेकिन मनमें जो अुद्वेग था वह कुछ कम हो गया। मैंने विचार किया कि अगर मुझे काम करनेकी स्वतंत्रता मिली तो मैं आश्रमकी तरफसे ही गोसेवा-संघके साथ काम करनेके लिअे अपने आपको तैयार कर लूंगा और जो कुछ अड़चन आयेगी वह बापूजीके सामने रख दिया करूंगा। आखिर संघकी अधिक काम बढ़नेकी आशा तो रखी ही जा सकती है।

मैंने अपना यह विचार और सारी डायरी किशोरलालभाअीको पढ़ाअी और कहा आपको कष्ट देनेकी अिच्छा तो नहीं थी। लेकिन क्या करूं? बापूजीके लेखसे मुझे भारी आघात पहुंचा है। अैसा लिखकर बापूजीने भारी भूल की है। मेरी आन्तरिक भावनाके बारेमें अैसा निर्णय देना अुनके लिअे योग्य नहीं था।"

किशोरलालभाअीने सब पढ़ा और कहा अब अिसके बारेमें अधिक खुलासा करनेसे कुछ लाभ न होगा। मेरा अैसा अनुभव है कि अैसी बातोंको भविष्यके अूपर छोड़ देना चाहिये। जिसकी भूल होगी अुसको महसूस हो

जायगी। मैं अब आपका जिस तन्त्रमें रहना कामयाबी नहीं मानता हूँ, क्योंकि जिसकी शुरुआत ही बिगड़ गयी है। आप संतोषपूर्वक काम कर सकें ऐसा मुझे नहीं लगता है। जिसलिये अगर आपको कुछ करना है तो छोटे पैमाने पर अलग ही स्वतंत्रतापूर्वक करना चाहिये जो सेवाग्रामके किसानोंके लिये अुपयोगी हो सके और जिससे आपको भी संतोष मिल सके।' किशोरलालभाईकी यह बात मुझे पसन्द आयी। लेकिन यहाँ पर अलग काम करनेमें अनेक बाधायें आयेंगी ऐसा सोचकर अलग काम करनेका विचार मैंने छोड़ दिया और तय किया कि अगर बापूको मेरी मदद चाहिये तो जरूर दूँगा। मैंने बापूजीको लिखा

सेवाग्राम ३-५-'४२

परम पूज्य बापूजी

मैंने अपनी सारी डायरी पू॰ किशोरलालभाईको पढ़ायी है। वे मेरी और संघकी भूमिका समझ गये हैं ऐसा मुझे लगता है। मैं नाम बीमारका लेकर काम अपना करना चाहता हूँ यह लिखकर और मुझे बिना समझाये गोशाला संघको देकर आपने मेरे साथ न्याय किया या अन्याय जिसकी दलीलमें न पड़कर जिसे मैं भविष्यके अूपर छोड़ता हूँ। अगर अपनी भूल समझमें आयेगी तो आपसे और संघसे क्षमा मांगनेमें मुझे शर्म नहीं आयेगी। मैंने अपनी सारी कठिनाई पू॰ किशोरलालभाईको समझा दी है। मेरा गोसेवा-संघके साथ कैसे मेल बैठ सकता है जिसका रास्ता आप निकालकर मुझे बतानेकी कृपा करियेगा। अब आपको समयकी अनुकूलता हो मुझे बुला लीजियेगा।

कृपाकांक्षी
बलवन्तसिंहके प्रणाम

सेवाग्राम ४-५-'४२ डायरीसे

आज शामकी प्रार्थनाके बाद बापूजीने मुझे बुलाया। पू॰ किशोरलालभाई भी वहीं पर थे। अुन्होंने संघकी और मेरी सारी मनोभूमिका समझायी। बापूजीने कहा "गोसेवा-संघने तुम्हारा भार हलका कर दिया यह तो अच्छा ही हुआ। मेरी राय है कि बलवन्तसिंहको यहीं रहना चाहिये। कभी ऐन मौके पर काम आ जायगा। जाना चाहे तो जा भी सकता है।

मैंने कहा "सेवाग्राममें ही रहनेका आग्रह नहीं है, लेकिन अेकाअेक आपको छोड़कर जानेकी अिच्छा भी नहीं है। अगर आप मेरी भावनाको समझ गये हैं और अुसकी रक्षा करते हुअे गोसेवा-संघमें मेरी सेवा देना चाहते हैं तो मैं अपने आपको तैयार कर लूंगा।" बापूजीने कहा "यह तो बड़ी खुशीकी बात है। अगर वे तुम्हारा अुपयोग करना नहीं चाहें तो मैं अेक मिनट भी तुमको अुनके पास नहीं रखना चाहूंगा।" और किशोरलालभाअीसे बोले "तुम कल स्वामीसे बात करके सब तय कर लेना और मुझे आखिरी खबर सुना देना।" हमारी यह बात करीब अेक घंटे तक चली।

सेवाग्राम ५-५-'४२ शामसे

आज पू॰ किशोरलालभाअीने मुझे स्वामीको पारनेरकरजीको और विमलालभाअीको बुलाकर सब बातें कीं। स्वामीने मेरी सेवा लेनेसे अिनकार कर दिया।

बस मेरा रास्ता साफ हो गया। बापूजीने जो कल कहा कि तुम्हारे काममें कोअी दखल नहीं देगा यह बात गलत सिद्ध हुअी और अब यह बात नहीं रही कि मैं गोसेवा-संघके साथ काम करना नहीं चाहता हूं। पू॰ किशोरलालभाअीने हम दोनोंसे सद्भावना बढ़ानेको कहा। गोशालाका चार्ज आज ही देनेका तय हुआ और मैंने दो बजे भाअी कमलाशंकर अिनको चार्ज दे दिया। अेक रोज स्वामीने किशोरलालभाअीसे शिकायत की कि बलवन्तसिंह गोशालाके मजदूरोंको बहकाता है अिसलिअे वे काम छोड़ रहे हैं। किशोरलालभाअीने कहा कि अिसका अर्थ तो यह है कि बलवन्तसिंह सेवाग्राम भी छोड़ दे। स्वामीने कहा "हां यही है।" किशोरलालभाअीने यह बात बापूजीको बताअी तो बापूजीने कहा बलवन्तसिंह अैसा कर ही नहीं सकता है। स्वामी तो कल यह कहेगा कि बाको भी यहां न रहने दो तो क्या मैं बाको निकाल दूंगा? बलवन्तसिंह कहीं नहीं जायगा। बापूजीके अिस प्रेम और दृढ़ताको देखकर मेरा सारा दुःख हलका हो गया। असलमें तो मैंने अिससे अुल्टा ही किया था। सब नौकरोंको मैंने समझाया था कि कोअी काम न छोड़े और अच्छा काम करे, क्योंकि मेरे मनमें अुनका काम बिगाड़नेकी कल्पना ही नहीं थी। लेकिन वहमकी दवा तो लुकमानके पास भी नहीं होती। फिर भी बापूजीका मुझ पर विश्वास है, अितना मेरे लिअे बस है।

अन्त भला तो सब भला। गीतामाताने कहा है यत्तदग्रे विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्। तत्सुखं सात्त्विकं प्रोक्तमात्मबुद्धिप्रसादजम्। (अ १८ श्लोक ३७) मेरी बात अुस रोज सबको कड़वी लगी थी और मेरे हाथसे गोशाला निकल जानेका मुझे भी दुःख हुआ था। लेकिन आज जब अपनी अिस डायरीके पन्ने मैं अुलटता हूँ तो मुझे लगता है कि मेरी बात ही सही थी। आज सेवाग्राममें न तो गोसेवा-संघ है न अुसके कार्यकर्ता हैं।

२१
सेवाग्राम आश्रमके अुद्योग

१ खजूर-गुड़ और नीरा

भाअी गजाननजी नायक बापूजीके पास कैसे आये अिसकी पूरी जानकारी मेरे पास नहीं है। लेकिन अैसा लगता है कि ये भाअी मगन-वाड़ीमें ग्रामोद्योगके विद्यार्थी बनकर ही आये थे। कुछ दिन तो अुन्होंने किसी गाँवमें ग्राम-सफाअीका तथा नीरा और गुड़का काम किया। लेकिन जब सेवाग्राममें हमारा डेरा जमा तो बापूजीने सेवाग्राममें नीरासे गुड़ बनानेका काम आरंभ करनेकी ठानी और अिसके लिअे भाअी गजाननजी नायक यहाँ आ गये। सेवाग्राममें खजूर तो काफी थी। अुससे लोग ताड़ी निकाला करते थे। चटाअी और पंखे भी बनते थे। लेकिन बापूजी तो अुससे गुड़ बनाना चाहते थे। अिसलिअे सरकारसे खास अिजाजत लेकर मीठी नीरा लोगोंको पिलाने और गुड़ बनानेका काम आरंभ किया गया। भाअी गजाननजी खजूरका रस निकालनेवालोंके साथ खुद भी खजूर पर चढ़ते नीरा निकालते तथा अुसका गुड़ बनाते। आश्रममें भी नीराका नाश्ता होने लगा। गाँवके लोग भी यहीं आकर नीरा पीने लगे। दो पैसे गिलासमें आधा सेर मीठे पेयके रूपमें लोगोंको बड़ा पोषण मिल जाता था। जब गुड़के अनेक नमूने भाअी गजाननजी बापूजीके सामने रखते तो बापूजी सबकी बानगी अुठा कर देखते और खुश होते थे। बापूजीकी खुशीको देखकर भाअी गजाननजी फूले न समाते। हम सब लोग अुसी गुड़का अुपयोग करते थे।

अेक दिन बापूजीने मुझसे कहा "तुम गजाननके कामको देखते हो या नहीं? यह भी तो अेक ग्रामोद्योगका ही काम है न? और तुम तो यहांके मुखिया हो। हर काममें रस लेना और अुसकी कलाको सीख लेना तुम्हारा काम है। अिससे गजाननको भी मदद मिलेगी। अरे, खजूर भी तो अेक प्रकारकी गाय ही है न? देखो तो सही अुसका दूध तो तुम्हारी गायसे भी मीठा होता है। तुम तो पीते हो न? असलमें मैं नीरा नहीं पीता था क्योंकि अुसमें अेक प्रकारकी गंध आती थी जो मुझे पसंद नहीं थी और गजाननजीके पास भी नहीं जाता था। बल्कि मेरा और अुनका तो झगड़ा भी हो गया था। क्योंकि मैंने अपनी गोबर-भूमिमें से खजूरके हजारों पेड़ कटवा डाले थे जिसका केस मेरे अूपर भाअी गजाननजीने बापूजीकी अदालतमें चलाया था। लेकिन जब बापूजीने आग्रहपूर्वक कहा तो मैं गजाननजीके पास जाने लगा और यहां तक आगे बढ़ा कि खजूर क्षेत्रमें अुनका चेला बन गया। मुझे खजूर पर चढ़कर अुसे छलने और अुसका नीरा अुतारनेका अितना शौक लगा कि पैरोंमें फोड़े होते हुअे भी शामको खजूर चढ़कर मटकी बांधने और सुबह अुसे अुतार कर गुड़ बनानेके लिअे मैं लंगड़ाता-लंगड़ाता भी वहां पहुंच जाता था। यह काम मुझे बहुत ही पसन्द आ गया था। नीरा पीनेका अभ्यास भी हो गया था। आज भी अगर मेरे पास खजूरके झाड़ हों तो नीरा निकालनेकी बात मनमें है। भाअी गजाननजी तो अिस कलामें अितने पारंगत हो गये कि अुन्होंने सारे हिन्दुस्तानमें अिसका प्रचार और संगठन किया। यहां तक कि दिल्लीमें भारत-सरकारके ताड़गुड़-विभागके बड़े अफसरका पद अुनको मिला। बड़ा पद मिलने पर भी अुन्होंने न तो अुस पदका ११ रुपया वेतन लिया न अुनकी पहले वर्जेके सफर आदि सुविधाओंका ही अुपयोग किया। परिश्रमी सेवकका अपना वही पुराना रूप अुन्होंने निभाया। अेक बार बात बातमें पू. श्रीकृष्णदास जाजूजीने मुझसे कहा था "कभी हमारे जो लोग सरकारमें गये अुन सबको सरकारी हवा लगे बिना न रही। अेक गजानन ही अैसा है जो अुस हवासे बचा है।"

बापूजीकी प्रयोगशालामें से अैसे अनेक सेवक निकले जो आज भी अुसी चक्करमें घूम रहे हैं और देशकी अमूल्य सेवा कर रहे हैं। निष्काम भाव बहुत पवि हारी रोम रोम अुजागी। अुनका प्रेम और आशीर्वाद

अनेक सेवकोंके रोम-रोममें अैसा रम गया है कि वे निकलना भी चाहें तो निकल नहीं सकता। भाअी गजाननजी नायक भी अुनमें से अेक हैं।

गजाननजी नायक शायद कोंकणके हैं। अुन्होंने मेट्रिक पास करके हाअीस्कूल छोड़ा। आजकल वे केन्द्रीय सरकारके ताड़गुड़-सलाहकार हैं, अखिल भारतीय खादी ग्रामोद्योग बोर्डके ताड़गुड़-विभागके संचालक हैं और बम्बअीमें रहते हैं।

२ कुम्हार-काम

भाअी चन्द्रप्रकाशजी अग्रवाल मगनवाड़ीमें कुम्हारका काम सीखते थे। अुनकी अिच्छा सेवाग्राममें बापूजीके निकट रहनेकी हुअी। बापूजीने अुन्हें अिजाजत दे दी। वे आ गये और लगे बरतन बनानेकी मिट्टी खोजने। बापूजीने अुनसे कहा : सेवाग्राममें या अिसके आसपास कहीं भी अच्छी मिट्टी मिले तुम अुसकी खोज करो। यों तो आज भी देहातके लोग मिट्टीके ही बरतनोंका अुपयोग अधिक करते हैं। अुनके पास धातुके बरतन खरीदनेके लिअे पैसे कहाँ हैं? और वैसे भी मिट्टीके बरतन स्वास्थ्यप्रद होते हैं। हाँ, अुनमें सुधारकी काफी गुंजाअिश है। तुमको अिसमें अुस्ताद बन जाना है।

भाअी चन्द्रप्रकाशजी अपनी धुनके पक्के थे। अुन्होंने मिट्टीकी खोज तो की ही, अच्छे कुम्हारोंकी भी खोज की। क्योंकि आखिर तो कुम्हारोंके धंधेका विकास करना था। वे कहींसे पांडुरंग नामक अेक कुम्हारको खोज लाये। अुसके परिवारको आश्रममें लाकर बसा दिया और खुद भी अुसके साथ कुम्हार-काममें जुट गये। खाने-पीनेके नये नये नमूने पालिशदार कटोरे, नमकदानी (क्योंकि मसाला तो हमारी रसोअीमें था ही नहीं जो मसालादानी बनाते) वगैरा बरतन बनाते। सबसे मिट्टीके बरतनोंमें ही खाने-पकानेका आग्रह करते। दूसरे खाते या न खाते लेकिन बापूजी तो मिट्टीके बरतनमें ही खाते थे। लकड़ीका चम्मच और मिट्टीका कटोरा बापूके साथ अन्त तक रहा। जेलसे लाया हुआ लोहेका कटोरा और पानीका टमलर भी बापूजीके साथ अन्त तक रहा। आश्रमके अेक कोनेमें कुम्हारका ठीया, अुसके चक्के, अुसकी मिट्टी, अुसकी गाड़ी, बरतनोंका ढेर, बरतन पकानेका आवाँ सारा अेक अद्भुत दृश्य था। जब नये नये नमूने बनाकर भाअी चन्द्रप्रकाशजी बापूजीको दिखाने लाते तो बापूजीकी खुशीका पार न रहता। अुनका अुत्साह बढ़ानेके लिअे बापूजी काफी समय देकर अुनमें और भी सुधारकी सूचनायें

करते। जिस प्रकार मुझे गोसेवाका ज्ञान प्राप्त करनेके लिये देशमें कहीं भी जानेकी छूट थी अुसी प्रकार भाअी जगप्रकाशजीको भी कुम्हार-कामके लिये कहीं भी जानेकी छूट थी। अिसलिये अुनको जहां जहां अच्छे कामका पता चलता वहीं वे दौड़ जाते। कुछ दिनके लिये वे काशी विश्वविद्यालयमें भी सीखने गये थे। चीनीके बरतनोंका भी अुन्होंने अभ्यास किया। नये सुधारोंका कुम्हारोंमें प्रचार भी खूब किया। और अेक बार तो सेवाग्राममें कुम्हार-सम्मेलन भी करा डाला।

खजूर और ताड़ वृक्षोंसे नीरा निकालनेके बरतनोंमें अुन्होंने काफी सुधार किया था। पुराने ढंगके बरतनोंमें नीरा जल्दी खट्टी हो जाती थी और पीने या गुड़ बनाने लायक नहीं रहती थी। वे बरतन नीराको सोख भी जाते थे। भाअी जगप्रकाशजीने अैसी पालिश खोज निकाली जिससे नीरा जल्दी खट्टी न हो और बरतन अुसे सोखें भी नहीं। जिसका प्रचार अुन्होंने सारे हिन्दुस्तानमें किया जो काफी कामयाब सिद्ध हुआ। जगप्रकाशजी जातिके बनिये होनेसे दुकानदारीका काम भी अच्छा कर सकते थे। अुन्होंने आश्रममें बापूजी और विनोबाजीके साहित्यकी छोटीसी दुकान भी आरम्भ कर दी जो अेक घंटा दो बार चलती थी। जिससे आनेवाले दर्शनार्थियोंको अच्छा साहित्य सहज ही प्राप्त हो जाता था और अुसमें से ही अुस कामका व्यवस्था-खर्च निकल आता था। यहां तक कि अुसमें से बची हुअी दस बारह सौकी रकमकी अेक थैली जब राष्ट्रपति राजेन्द्रबाबू आश्रममें राष्ट्रपति बननेके बाद पहली बार गये तब अुन्हें भेंट भी की गयी थी। मैं तो अुनको प्रजापतिके नामसे ही पुकारता था। आज भी मैं अिसी नामसे अुन्हें पुकारता हूं। अुनका साहित्य-प्रचार और मिट्टीके बरतनोंका प्रचार चालू ही है।

मुझे हंसी आया करती थी कि कुम्हार-काम भी कोअी प्रचारका काम है; यह तो गांव-गांवमें चलता ही है। लेकिन बापूजीकी दृष्टि बहुत ही बारीक और लंबी थी। वे देख रहे थे कि ग्रामोद्योगोंके साथ साथ हमारी ग्राम-जीवनकी संस्कृतिका भी लोप होता जा रहा है। और लोग छोटीसे छोटी चीजोंके लिये शहरों और बड़े बड़े कारखानोंके गुलाम बनते जा रहे हैं। जिससे वे अपना पैसा और स्वास्थ्य दोनों ही बरबाद कर रहे हैं। अिनको आत्म-निर्भर कैसे बनाया जाय जिनकी आमदनीमें दो पैसे कैसे बचाये

और बढ़ाये जायं यह खयाल तो था ही। दूसरी तरफ बापू जिस कार्यकर्ताकी जिस काममें रुचि देखते मुसको मुसी काममें प्रोत्साहन देकर आगे बढ़ाते थे। जैसे बच्चोंको माँ चलना सिखाती है और मुसके चलने लगने पर खुश होती है, वह गिरता है तो मुसे मुठाने रहनेमें आवश्यक मदद करती है, मुसी तरह बापूजी भी करते थे। यह बापूजीकी दूसरी साधनाका मूलमंत्र था।

चत्रप्रकाशजी अग्रवाल पेशावरके थे। नमनवाड़ीमें ग्रामसेवकोंके विद्यार्थी होकर आये थे और सेवाग्राममें रहे थे। आजकल भूदानका प्रचार करते हैं।

भिस बार जब मैं सेवाग्राममें गया तो वहाँके तालीमी संघके कला-भवनमें खूब सुधरा हुआ कुम्हार-काम देखकर मुझे बड़ी खुशी हुआ। मुझे वहाँके कलाकार श्री देवीभाभी* बता रहे हैं। नमे कुम्हार-चाकको खोज करके और साधारण मसाला लेकर वे भिस कामको खूब आगे बढ़ा रहे हैं। मैंने जाते ही देखा कि कला-भवनमें काम करनेवालोंकी भीड़ थी। मुनमें से ज्यादा लोग कुम्हार-काममें जुटे हुमे थे। नभी नभी चीजों और नये नये आकारके बरतनोंका ढेर लगा था। ग्रामीण जीवनके लिये बरतन और सुन्दर खिलौने जोरोंसे बन रहे थे। वैसे तो सारा कला-भवन ही बड़ी रमणीय जगह है, किन्तु मिट्टीका काम देखकर मेरा दिल खुश हो गया।

३ धर्म-मुद्बोध

धर्माक्य नालवाड़ीमें था। श्री गोपालरावजी वालुंजकर मुसके संचालक थे। वे सप्ताहमें अेक रोज सुबह घूमनेके समय बापूजीसे मुसके विषयमें चर्चा करनेके लिये नियमित रूपसे आते थे। मुसकी कठिनामियाँ मुसमें सुधार आदिके विषयमें चर्चा होती थी। अेक रोज बापूजीने मुझे पूछा "वालुंजकरके साथ जो चर्चा होती है मुसे तुम सुनते हो न?" मैं चुप रहा। क्योंकि मैं नियमित मुनकी चर्चाके समय हाजिर नहीं रह सकता था। मुसमें मेरी मितनी दिलचस्पी भी नहीं थी। बापूजी बोले "वैसे तुम तो गोपालक और किसान हो न? किसानको चमड़ेकी जरूरत तो होती ही है। वह अपना कच्चा चमड़ा मुफ्तमें या कौड़ीमें दे देता है। और बड़े चमड़ेकी

---

* श्री देवीभाभी शान्ति-निकेतनके प्रसिद्ध कलाकार श्री नन्दलाल बोसके प्रिय शिष्योंमें से अेक हैं।

तालीम अुसे पूरी चुकानी पड़ती है। जिसमें अर्थशास्त्र तो है ही लेकिन धर्मशास्त्र भी भरा है। तुमको तो आज मैं गोसेवाके लिये तैयार कर रहा हूं न? और तुम्हारी भी जिस काममें रुचि है। तो अुसका पूरा शास्त्र समझ लेना आवश्यक है। नयी तालीमके लिये मैं यह कहता हूं कि नयी तालीम मांके गर्भसे आरंभ होनी चाहिये तब ही हम अुसमें सफलता प्राप्त कर सकेंगे। लेकिन यह विषय आर्यनायकम् और आशादेवीका है। वे अुसे समझने और कार्यक्रममें परिणत करनेमें जिलोजानसे जुटे हुवे हैं। मैं चाहता हूं कि आशादेवी और आर्यनायकम् बहुली (अुनका सर्वस्व बच्चा आनन्द) को भूल नहीं सकते। लेकिन मैंने अुनसे कहा है कि सेवाग्रामके और आसपासके देहातोंके सब बच्चे तुम्हारे हैं। सारे देशके बच्चोंको अपना समझोगे तो अुनमें तुम्हें बहुलीका दर्शन मिल जायगा। और, यह तो मैं विषयान्तरमें चला गया। तुमको तो यह कहने जा रहा था कि गायकी पूरी सेवा अुसके चमड़े और अवशेषोंका पूरा पूरा अुपयोग करने तक जाती है। अगर हम गायको कसाईकी छुरीसे बचाना चाहते हैं तो अुसे आर्थिक दृष्टिसे लाभकारी सिद्ध करना होगा। अुसमें धर्म और अर्थ दोनोंकी सिद्धि छुपी हुई है। अुसके चमड़ेका तो अुपयोग है ही लेकिन अुसके मांस और हड्डियोंका अुत्तम खाद बन सकता है और पश्चिमके लोग बनाते भी हैं। वे हमारे यहांसे हड्डियां कौड़ीके मूल्यमें ले जाते हैं और अुनका कीमिया बनाकर हमसे मोहरके दाम वसूल करते हैं। अुनके सामने हिंसा-अहिंसाका खयाल तो है ही नहीं। वे गायको जब तक जिन्दा रखते हैं तब तक अच्छी हालतमें रखते हैं, नहीं तो मारकर खा जाते हैं। लेकिन वे अुसके मृत शरीरका पूरा पूरा अुपयोग कर लेते हैं।

"हम तो अहिंसक हैं। अगर गायको माताका स्थान देते हैं तो हमारी जवाबदारी दुहरी हो जाती है। जिन्दा रहने पर अुसकी मा जैसी सेवा करें और अुसके मृत शरीरका पूरा पूरा अुपयोग कर लें। जिससे आर्थिक लाभ तो होगा ही धर्मलाभ भी होगा। लोग कहते हैं हम हरिजनोंसे जिसलिये अलग रहते हैं कि वे लोग चमड़ा निकालते हैं और मुरदार मांस खाते हैं। मुरदार मांस तो वे गरीबीके कारण खाते हैं। वह स्वास्थ्यकी दृष्टिसे हानिकारक है, लेकिन अुसमें पाप है यह तो कैसे कह सकते हैं? पाप तो जिन्दा गायको कष्ट देनेमें है। जैसे अुपयोगी और वफादार प्राणीको कतल करने और अुसको कतलखानेके दरवाजे तक पहुंचानेमें हमारा हाथ होता है, जो

हमारे लिये धर्मकी बात है। चमड़ा निकालनेका काम तो पवित्र काम है। आखिर हम अपने माता-पिताको भी तो कंधे पर अुठाकर ले जाते हैं तो गायको या किसी भी मृत पशुको ले जानेमें कौनसा पाप है? पुण्य तो जरूर है।

"अस्पृश्यताकी जड़में यह भावना भी काम कर रही है। अिसीलिये साबरमतीमें मैंने सुरेन्द्रको चमार बननेको कहा था। वह चमारोंके बीचमें जाकर रहा और चम्पल बनानेमें अुस्ताद बन गया। तुम्हारा तो वह मित्र है न? समझो तुम्हारी गाय मर गयी और दूसरे किसीने अुसके मृत शरीरको अुठानेसे अिनकार कर दिया तो तुम क्या करोगे? क्या अुसे घरमें ही सड़ने दोगे? अगर तुम खुद अुसका चमड़ा निकालोगे तो तुमको अुसकी बहुतसी बीमारियोंका ज्ञान हो जायगा। डॉक्टर मृत शरीरकी चीरफाड़ क्यों करते हैं? अुसकी मृत्युका कारण जाननेके लिये ही न? तो तुम अपनी गायकी मृत्युका कारण क्यों न जान लो? डॉक्टरोंको तो कोअी अछूत नहीं मानता है। अरे, मनुष्य-शरीरमें तो पशुसे कहीं अधिक गंदगी भरी पड़ी है। लेकिन हम डॉक्टरोंका आदर करते हैं और बेचारे हरिजनोंको दूर बैठाते हैं। मनुष्य-शरीरका तो मृत्युके बाद अुपयोग ही क्या है? अब तो यह घृणा यहाँ तक पहुँच गयी है कि कोअी हरिजन साफ-सुथरा भी रहे तो लोग अुससे द्वेष करते हैं। डॉ॰ आम्बेडकर तो बैरिस्टर हैं और वे किसी भी सवर्णसे स्वच्छतामें कम नहीं हैं। लेकिन अुनको भी कितना अपमान सहन करना पड़ा है यह तो अुनका दिल ही जानता है। जब डॉक्टर आम्बेडकर मेरे सामने जोरसे बोलते हैं तो मैं अुनका दुःख समझ सकता हूँ और मुझे सवर्णोंके बरतावसे शर्मका अनुभव होता है।

जो गायके लिये मरनेकी बात करते हैं लेकिन काम गायको मारने या मरने देनेके करते हैं, अुनके लिये क्या कहा जाय? गायके घी-दूधका अुपयोग न करना, हड्डीकी चमड़ेका अुपयोग करना, बैलको बनाकर अुसे भोजन न देना या कम देना अित्यादि गायको मौतके नजदीक पहुँचानेके काम करना नहीं तो और क्या है? यह मैं लम्बी कथा कह गया क्योंकि यह सब तुम्हारे कामकी चीज है। तुमको तो लोगोंको यह भी समझाना होगा कि गाय आर्थिक और धार्मिक दोनों दृष्टियोंसे अनिवार्य है और हमारे जीवनकी पूरक है।

“ओसाड़ाके साथ साथ अेक अच्छा चर्मालय तो चलना ही चाहिये लेकिन तुमको यहां चलानेकी जरूरत नहीं है। क्योंकि मालगाड़ी यहांसे दूर नहीं है और वे तुम्हारे मृत जानवर ले जा सकते हैं और अुनकी तुमको पूरी कीमत भी मिल सकती है। लेकिन तुमको यह सब समझनेकी जरूरत है। तब ही तुम सच्चे और पूरे गोसेवक बन सकोगे। नहीं तो मैं तुम्हें फूटी बादाम (निकम्मा) समझूंगा।

* * *

अेक रोज बापूजीने वालुंजकरजीसे कहा कि “किसी दिन अपने सब कारीगरोंको मेरे पास ले आना। मैं अुनको चप्पल सीनेका तरीका बता देना चाहता हूं। तुम जानते हो न कि मैंने दक्षिण अफ्रीकामें चप्पल बनानेका धंधा खूब किया था?” वालुंजकरजी अेक रोज सब कारीगरोंको लेकर आ पहुंचे। बापूजीने अुनको बड़े प्रेमसे चप्पल बनानेका तरीका बताया और बोले “यह काम हमारे लिये अुतना ही पवित्र है जितना कोअी भी काम हो सकता है। चमड़ा काटने या टांके लगानेमें चमड़े और समयकी बरबादी बचानेका पूरा ध्यान रखना चाहिये। हमारे हाथकी कला बारीकसे बारीक मशीनोंको पछाड़ देनेका सामर्थ्य रखनेवाली होनी चाहिये। तभी हमारे ग्रामोद्योगोंको हम जिन्दा रख सकेंगे। अगर हमने प्रमाद किया तो केवल भावनाके बल पर हमारे अुद्योग जिन्दा रहनेवाले नहीं हैं। खादी और दूसरे गृह-अुद्योगोंके लिये भी यही बात लागू होती है। लोग चमड़ेके कामको नीचा भी समझते हैं। मेरी दृष्टिमें तो हरिजन के लिये लेख लिखना और चप्पल सीना अेक ही बात है। बल्कि अगर मुझे लिखनेके कामसे मुक्ति मिल सके तो मैं चप्पल बनाना अधिक पसंद करूंगा। लेकिन अब यह शुभ अवसर मेरे लिये असम्भव-सा ही लगता है। लेकिन तुम लोगोंको मैं बता देना चाहता हूं कि अिस कामके द्वारा हम देशकी करोड़ोंकी सम्पत्ति बचा सकते हैं। अिसीलिये मैंने कहा है कि हमको मुरदार पशुके सारे अवयवोंका पूरा पूरा अुपयोग करना है। देखो यह वालुंजकर तो ब्राह्मण है न? लेकिन आज जान-बूझकर चमार बना है। तो अिससे अिसके ब्राह्मणत्वमें कुछ भी कमी आअी हो अैसा कौन कह सकता है? अुल्टा अिस काममें यह अपने ब्राह्मणत्वको प्रकट कर रहा है। हमारा चर्मालय स्वच्छतामें किसी भी ब्राह्मणके घरसे कम स्वच्छ नहीं रहना चाहिये नहीं तो मेरी और अिनकी दोनोंकी लाज जायगी। हमारे कामोंमें अूंच-नीचकी भावना हमारी अज्ञानता और स्वच्छताके ज्ञानका अभाव ही है। अगर

अुसे तुम लोग मिटा सके तो मैं मानूंगा। मैं देख रहा हूं कि तुम लोग आगे बढ़ रहे हो। तुमने काफी सुधार किये हैं लेकिन अपने लक्ष्यसे हम अभी काफी दूर हैं। अुस तक पहुंचनेका प्रयत्न हमको जाग्रत रहकर करते रहना है। आज मैंने तुम लोगोंको अिसलिये बुला लिया कि अपने दिलकी बात तुम लोगोंके सामने रख सकूं और तुम लोगोंके साथ परिचय भी कर लूं। तुम जा सकते हो। हर बुधवारको बालुंजकरजी तो आते ही हैं। तुम लोग भी जब चाहो तब आ सकते हो।”

लोग बापूके प्रेम, अुनकी सावधानीकी सूचना तथा अपने कामकी पवित्र भावनासे मंत्रमुग्ध-से बन गये थे। सबने बापूजीको प्रणाम किया और विदा ली।

अिस प्रकारसे कार्यकर्ताओंका अुत्साह बढ़ाने और अुनके कामका मोल करनेसे अुनको बड़ा बल मिलता था। और यही कारण था कि बापूजी छोटे-छोटे कार्यकर्ताओंसे भी बड़ेसे बड़ा काम करा पाते थे। आज देशमें मुर्दार जानवर न अुठाने और अुनका चमड़ा न निकालनेकी लहर हरिजन जातियोंमें चली है, जिसके कारण आज लाखों रुपयेका चमड़ा व्यर्थमें यों ही नष्ट हो रहा है। हरिजनोंकी बात तो ठीक ही मानी जायगी क्योंकि अिस पवित्र कामके कारण ही लोगोंने अुनको नीच समझकर दूर किया है। अब अपने आपको अूंचा समझनेवालोंको सोचना ही पड़ेगा कि जिस माताका दूध हम पीते हैं जिसके बैल हम जोतते हैं अुसके मरने पर हम अुसको हाथ भी न लगायें तो हमसे बड़ा पापी और कृतघ्न कौन हो सकता है? आखिर हम अपने माता-पिताओंका भी तो क्रिया-कर्म करते हैं। तो अपने जानवरोंका अन्तिम संस्कार करनेमें कौनसी बुराई है? अगर हमको अपनी सम्पत्तिकी रक्षा करना है तो अुसका मृत जानवरोंका पूरा अुपयोग किये सिवा दूसरा रास्ता नजर नहीं आता है।

चर्मालयके मुख्य कार्यकर्ताके लिये चर्मालयसे लगकर ही लेकिन थोड़ा बाहरकी तरफ भी बालुंजकरजीने मकान बनाना आरम्भ किया था। अुसे देखकर जमनालालजी बोले: “तुम आश्रमके लोग कैसे अव्यावहारिक हो जो अितनी लम्बी चौड़ी जमीन पड़ी रहने पर भी बिलकुल चर्मालयसे सटकर मकान बनाया हो! अगर थोड़ा दूर बना लो तो क्या बिगड़ जाता?” कुछ हंसीमें और कुछ गम्भीरतासे अुन्होंने बालुंजकरजीको मीठी चेतावनी दी।

गा जिसे व्यंग भी कह सकते हैं। किसी प्रकारकी बात अप्पासाहब सहस्रबुद्धेने भी कही। वालुंजकरजी चुप रहे।

दैवयोगसे अेक रोज बापूजी भी वहां पहुंच गये और मुझी मकानके बारेमें पूछा "वालुंजकर, यह मकान किसलिये बना रहे हो?" वालुंजकरजीने कहा "बापूजी मुख्य कार्यकर्ताके लिये बनवा रहा हूं जो नजदीकसे कामकी निगरानी रख सके।" बापूजी बोले "अरे, कार्यकर्ताका स्थान तो चमड़ा पकानेकी कूंडीके पास ही होना चाहिये जो वहीं अेक खटिया पर पड़ा रहे और वहीं अेक अंगीठी पर अपना खाना पकाये ताकि अुसकी सीधी नजर काम पर रह सके। और वहां आदर्श स्वच्छता रखनी चाहिये। वहां पर किसी प्रकारकी दुर्गन्ध तो आनी ही नहीं चाहिये। यही तो हमारी खूबी है। चमड़ा पकानेकी क्रियासे जो स्वाभाविक गंध आती है, अगर हमारा काम ठीक शास्त्रीय ढंगसे किया जाय तो वह दुर्गन्ध नहीं मानी जायगी। अगर हम जितना न कर सकें तो हम देहातके चमारोंको क्या सिखा सकते हैं? तुम ब्राह्मण होकर भी जान-बूझकर चमार बने हो तो तुम्हारे कामसे भी ब्राह्मणत्वका दर्शन होना चाहिये। और यह तभी हो सकता है जब तुम और तुम्हारे साथी जिस काममें जिस प्रकारके संशोधन करो कि आज जो जिस कामके प्रति लोगोंके मनमें घृणा है वह आदरमें बदल जाय।" बापूजीकी बात सुनकर वालुंजकरजीको बड़ी सांत्वना मिली और अुन्होंने जिस दिशामें काफी प्रगति की।

अेक रोज वालुंजकरजी बापूजीसे मिलनेके लिये आये तो साथमें पक्के चमड़ेके कुछ नमूने कुछ चप्पल आदि भी ले आये। शामको बापूजीके भोजनका समय था। बापूजी भोजन कर रहे थे। वालुंजकरजी चमड़े आदिको कमरेके बाहर रखकर बापूजीके पास पहुंचे। बापूजीने हंसकर पूछा "मेरे लिये क्या सौगात लाये हो?" वालुंजकरजीने कहा "बापूजी लाया तो हूं। आपके भोजनके बाद दिखलाअूंगा।" बापूजी बोले "अरे, मेरे लिये तो तुम्हारा चमड़ा अुतना ही पवित्र है जितना यह भोजन। जाओ अभी लेकर आओ।" वालुंजकरजीके हर्षका पार न रहा। अुन्होंने तुरन्त चमड़ा आदि लाकर बापूजीके सामने रख दिया। बापूजीने अपने हाथका चावल बगैरा चम्मच अेक तरफ रख कर अुसमें से अेक चमड़ा अुठाकर अपनी जांघ पर रखा और अुसे गौरसे निहारने लगे। बापूजीके अेक हाथमें नाश्तेका गिलास दूसरेमें चमड़ा! नाश्तेके गिलासकी अपेक्षा चमड़ेके

टूटने पर बापूजीका दिल, दिमाग और आँखें ज्यादा केन्द्रित थीं। कोअी पुराने विचारका चुस्त हिन्दू बापूजीके अिस व्यवहारको देखकर आश्चर्य और दुःखका अनुभव कर सकता था। लेकिन चमड़े पर बापूजीकी मुग्ध मुद्राको देखकर “भरत रामका मिलन लखि बिसरे सबै हि अपना” की तरह सचमुच ही वालुंजकरजी पलक मारना और सांस लेना भी भूलसे गये। अिसमें कोअी अतिशयोक्ति या आश्चर्यकी बात नहीं है। बापूजीकी अुस मुद्रामें गरीब मजदूरोंके दुःख-निवारणकी चाबी थी; ग्रामोद्योगोंके प्रति गहरी सहानुभूति और आदर था; वालुंजकरजीके प्रति वात्सल्यभाव था; मुरदार चमड़ेके प्रति पवित्र भावना थी। अुस भावको समझना आजके चमक-दमक-पसंद और भावुक सफेदपोशोंके लिअे कठिन है। आज तो फैशनेबल लोगोंको हलाली चमड़ेके मुलायम और देखनेमें सुन्दर बूट, बढ़िया चमड़ेकी सुन्दर पेटियां, कमर-पट्टे और घड़ीके पट्टे चाहिये। और अैसे लोग ही गोवध-बन्दीके आन्दोलनमें अपने प्राणोंकी बाजी लगानेकी बात करते हैं। बापूजीके अुस चमड़ा-प्रेममें गोसेवाकी गूढ़ भावनाका भी दर्शन किया था।

४ मधुमक्खी-पालन

अेक दिन बापूजीने मुझे बुलाकर कहा, “देखो, छोटेलाल यहां मधुमक्खी पालना चाहता है। अुसके लिअे जो सुविधा चाहिये वह तुमको करनी होगी। छोटेलालके साथ तुम्हारा परिचय है न?” मैंने कहा — “जी हां। यहांके लिअे पास भी तो छोटेलालजीने ही लाकर दी थी।” बापूजी बोले, “हां, छोटेलाल तो हर काममें अुस्ताद है। जब मैंने मगनवाड़ीमें तेलघानी चलानेकी बात की तो विनोबासे अुसे मांग लिया था। अुसने घानीके पीछे जो मेहनत की है वह अद्भुत है। जब मगनवाड़ीमें मधुमक्खी-पालनकी बात चली तो वह काम भी मैंने अुसीको सौंपा और अुसके पीछे अुसने रात-दिन अेक कर दिया। हिन्दुस्तानमें जहां भी जितना ज्ञान और साहित्य मिल सका वह सबका सब छोटेलालने प्राप्त करनेमें कोअी कसर नहीं छोड़ी। चक्कीमें अपना सिर खपाया है। अब बात तो यह है कि मेरे मनमें ज्यों ही किसी ग्रामोद्योगकी कल्पना आती है और अुसे पता चलता है त्यों ही अुसे मूर्तरूप देनेमें वह अपना खाना-पीना सब भूल जाता है। मेरा काम अैसे ही स्वयं-सेवकोंके बल चलता है। आजकल ग्रामोद्योग मृतप्राय अवस्थामें पहुंच चुके हैं। अिनको सजीव करनेके लिअे अनेक छोटेलाल पैदा हों तो भी कम होंगे।

ग्रामोंमें हमारे आसपास सोना बिखरा पड़ा है। असे अुठानेवाले चाहिये। मधुमक्खीका दृष्टान्त ही ले लो। मक्खियां फूलोंमें से रसकी अेक अेक बूंद जमा करके कितना पौष्टिक खाद्य अेकत्रित करती है। बस अुसकी व्यवस्था करना हमारा काम है।

यों तो शहद दूसरे लोग भी जमा करते हैं। लेकिन अुनके जमा करनेमें हिंसा और गंदगीका कोओी पार नहीं होता। हमको शहद भी चाहिये और हिंसासे भी बचना चाहिये। यह मधुमक्खी-पालनके सिवा नहीं हो सकता। अुसके शास्त्रियोंने यह सिद्ध कर दिया है कि अेक भी मक्खी मरे बिना हमको अुत्तम शहद मिल सकता है। तुमने मगनवाड़ीमें छोटासा मधुमक्खीका काम देखा होगा। वह मांकी तरह मक्खियोंकी संभाल रखता है। मगनवाड़ी शहरके बीचमें है, लेकिन यहां तो हम खुले खेतोंमें पड़े हैं। अगर हम सेवाग्राम और दूसरे गांवोंके लोगोंको मधुमक्खी पालनेका शौक लगा सकें तो अुन्हें अेक नया धंधा दे सकते हैं जिससे अुनकी आमदनीमें वृद्धि हो सकती है। तुम भी अिसका शास्त्र समझ लो। गाय भी तो पहले जंगली ही थी न? लोग अिसका मांस खाना तक अधर्म नहीं बल्कि धर्म मानते थे। ग्रंथोंमें गायबलिका भी जिक्र आता है। लेकिन जिसने पहली बार गायसे दूध निकालनेकी बात सोची होगी वह कितना बुद्धिमान आदमी होगा। अुसके मनमें गोहिंसाके प्रति तिरस्कार आया होगा और अहिंसाका बेल बना होगा। मैं यह भी देख रहा हूं कि ग्रामोद्योगोंके विकासमें अहिंसाका विकास समाया हुआ है। तुम स्वयं देहाती हो और देहातकी आवश्यकताओंको समझ सकते हो। तुम्हारा मन तो गांवोंमें ही रमता है। अुससे तुमको बहुत कुछ सीखनेको मिलेगा। किसानके लिअे मधुमक्खी-पालन खेतीकी दृष्टिसे भी आवश्यक है। तुम जानते हो कि मक्खियां फसलको कैसे लाभ पहुंचाती हैं?

मैंने शर्मके साथ कबूल किया कि मैं नहीं जानता।

बापूजीने हंसकर कहा तुम कच्चे किसान हो। देखो बाहोश किसान खतमें पेतामें मधुमक्खीके छत्ते पकड़ रखते हैं। अुनसे अनकी पैदावारमें वृद्धि होती है। फलवृक्षोंके फलोंमें या शामनाजीके फूलोंमें भी नर और मादा दो प्रकारके फूल होते हैं। मधुमक्खी जब फूलका रस चूसती है तो अुसके पैरोंके साथ थोड़ासा फूलका पराग भी लग जाता है। जब वही मक्खी दूसरे फूल पर जाती है तो वह पराग अनायास दूसरे फूलमें गिर जाता है।

टुकड़े पर बापूजीका दिल दिमाग और आँखें ज्यादा केन्द्रित थीं। कोअी पुराने विचारका चुस्त हिन्दू बापूजीके अिस व्यवहारको देखकर आश्चर्य और दुःखका अनुभव कर सकता था। लेकिन चमड़े पर बापूजीकी मुग्ध मुद्राको देखकर भरत रामका मिलन भक्ति बिसरे सबै हि अपना की तरह सचमुच ही वालुंजकरजी पलक मारना और साँस लेना भी भूल-से गये। अिसमें कोअी अतिशयोक्ति या आश्चर्यकी बात नहीं है। बापूजीकी अुस मुद्रामें गरीब मृत ढोरोंके दुःख-निवारणकी भावना थी, ग्रामोद्योगोंके प्रति गहरी सहानुभूति और आदर था, वालुंजकरजीके प्रति वात्सल्यभाव था, मुर्दार चमड़ेके प्रति पवित्र भावना थी। अुस भावको समझना आजके चमक-दमक-पसंद और नाजुक सफेदपोशोंके लिये कठिन है। आज तो फैशनेबल लोगोंको हलाली चमड़ेके मुलायम और देखनेमें सुन्दर बूट, बछड़े चमड़ेकी सुन्दर पेटियाँ, कमर-पट्टे और घड़ीके पट्टे चाहिये। और अैसे लोग ही मानव-जन्तुके आन्दोलनमें अपने प्राणोंकी बाजी लगानेकी बात करते हैं। बापूजीके अुस चमड़ा-प्रेममें अहिंसाकी गूढ़ भावनाका भी दर्शन किया था।

४ मधुमक्खी-पालन

अेक दिन बापूजीने मुझे बुलाकर कहा, "देखो, छोटेलाल यहाँ मधु-मक्खी पालना चाहता है। अुसके लिये जो सुविधा चाहिये वह तुमको करनी होगी। छोटेलालके साथ तुम्हारा परिचय है न?" मैंने कहा — "जी हाँ। यहाँके लिये गाय भी तो छोटेलालजीने ही लाकर दी थी।" बापूजी बोले, "हाँ, छोटेलाल तो हर काममें हुश्यार है। जब मैंने मगनवाड़ीमें तेलघानी चलानेकी बात की तो विनोबासे अुसे माँग लिया था। अुसने घानीके पीछे जो मेहनत की है वह अद्भुत है। जब मगनवाड़ीमें मधुमक्खी-पालनकी बात चली तो वह काम भी मैंने अुसीको सौंपा और अुसके पीछे अुसने रात-दिन अेक कर दिया। हिन्दुस्तानमें जहाँ भी अिसका ज्ञान और साहित्य मिल सका वह सबका सब छोटेलालने प्राप्त करनेमें कोअी कसर नहीं छोड़ी। चरखेमें अुसने काफी सिर खपाया है। सच बात तो यह है कि मेरे मनमें ज्यों ही किसी ग्रामोद्योगकी कल्पना आती है और अुसे पता चलता है त्यों ही अुसे मूर्तरूप देनेमें वह अपना खाना-पीना सब भूल जाता है। मेरा काम अैसे ही स्वयं-सेवकोंसे चल सकता है। आजकल ग्रामोद्योग मृतप्राय अवस्थामें पहुँच चुके हैं। अिनको सजीव करनेके लिये अनेक छोटेलाल खप जायँ तो भी कम होंगे।

ग्रामोंमें हमारे आसपास सोना बिखरा पड़ा है। अुसे अुठानेवाले चाहिये। मधुमक्खीका दृष्टांत ही ले लो। मक्खियां फूलोंमें से रसकी अेक अेक बूंद जमा करके कितना पौष्टिक खाद्य अेकत्रित करती हैं। बस अुसकी व्यवस्था करना हमारा काम है।

"यों तो शहद दूसरे लोग भी जमा करते हैं। लेकिन अुनके जमा करनेमें हिंसा और गंदगीका कोअी पार नहीं होता। हमको शहद भी चाहिये और हिंसासे भी बचना चाहिये। यह मधुमक्खी-पालनके सिवा नहीं हो सकता। अुसके शास्त्रियोंने यह सिद्ध कर दिया है कि अेक भी मक्खी मरे बिना हमको अुत्तम शहद मिल सकता है। तुमने मगनवाड़ीमें छोटेलालका मधुमक्खीका काम देखा होगा। वह मांकी तरह मक्खियोंकी संभाल रखता है। मगनवाड़ी शहरके बीचमें है लेकिन यहां तो हम खुले खेतोंमें पड़े हैं। अगर हम सेवाग्राम और दूसरे गांवोंके लोगोंको मधुमक्खी पालनेका शौक लगा सकें तो अुन्हें अेक नया धंधा दे सकते हैं जिससे अुनकी आमदनीमें वृद्धि हो सकती है। तुम भी अिसका शास्त्र समझ लो। गाय भी तो पहले जंगली ही थी न? लोग अिसका मांस खाना तक अधर्म नहीं बल्कि धर्म मानते थे। यज्ञोंमें गोबलिका भी जिक्र आता है। लेकिन जिसने पहली बार गायसे दूध लेनेकी बात सोची होगी वह कितना बुद्धिमान आदमी होगा। अुसके मनमें गोहिंसाके प्रति तिरस्कार आया होगा और अहिंसाका रंग चढ़ा होगा। मैं यह भी देख रहा हूं कि ग्रामोद्योगोंके विकासमें अहिंसाका विकास समाया हुआ है। तुम स्वयं देहाती हो और देहातकी आवश्यकताओंको समझ सकते हो। छोटेलालका मन तो गांवोंमें ही रमता है। अुससे तुमको बहुत कुछ सीखनेको मिलेगा। किसानके लिये मधुमक्खी-पालन खेतीकी दृष्टिसे भी आवश्यक है। तुम जानते हो कि मक्खियां फसलको कैसे लाभ पहुंचाती हैं?

मैंने शर्मके साथ कबूल किया कि मैं नहीं जानता।

बापूजीने हंसकर कहा "तुम कच्चे किसान हो। देखो यूरोप किसान अपने खेतोंमें मधुमक्खीके छत्ते पालकर रखते हैं। अिससे अुनकी पैदावारमें वृद्धि होती है। कद्दुओंके फूलोंमें या सागभाजीके फूलोंमें भी नर और मादा दो प्रकारके फूल होते हैं। मधुमक्खी जब फूलका रस चूसती है तो अुसके पैरोंके साथ थोड़ासा फूलका पराग भी लग जाता है। जब वही मक्खी दूसरे फूल पर जाती है तो वह पराग अनायास दूसरे फूलमें गिर जाता है।

जिस प्रकार नर और मादा फूलोंके परागका संयोग होकर फलकी अुत्पत्ति होती है। अिसलिअे लोग मादा-वृक्षोंके साथ नर-वृक्ष भी रखते हैं। अंजनी मधुमक्खियां भी यह काम करती ही हैं। लेकिन अुनका पालन करनेसे दो लाभ होंगे। तुम अिसका हिसाब रख सकोगे कि यहां छत्ते रखनेसे फसलमें कितनी वृद्धि हुआी।

छोटेलालजी आये और अुन्होंने जो सुविधा चाही वह मैंने अमरूदके बगीचेमें कर दी। मैंने समझा था कि वे मगनवाड़ीसे तैयार छत्ते लाकर बगीचेमें रख देंगे। लेकिन वे तो बापूजीसे भी दो कदम आगे बढ़नेवाले निकले। अुन्होंने मुझसे कहा कि चलो यहांके लिअे आसपासके गांवोंमें से नये छत्ते पकड़कर ले आयें।

मैं मना कैसे कर सकता था? बापूजीने पहले ही मुझे पुरस्कार दे रखा था। छोटेलालजी स्वयं मगनवाड़ीमें रहते थे। अुनके साथ साहूजी नामका अेक हरिजन छत्ते पकड़नेमें सहायकका काम करता था। दिनमें मेरे पास आदेश आ जाता कि आज शामको अमुक गांवमें छत्ते पकड़ने चलना है, तुम तैयार रहना। छोटेलालजीका स्वभाव और अनुशासन फौजी अफसरके जैसा कठोर था। अुनके कार्यक्रममें जरा भी गड़बड़ हो गयी कि शामत आयी समझो। अिसी डरसे मैं अुनके आनेकी राह देखता रहता। वे ठीक समय पर आते और मैं चुपचाप अुनके साथ चल देता। दो चार मील जाकर किसी अूंचे आम या अिमलीके पेड़के नीचे खड़े होते और अिशारा करके कहते कि अमुक कोहमें मक्खियां अुड़ती दीखती हैं वहीं अुनका छत्ता होगा। चलो चढ़ो पेड़ पर। चढ़नेमें मैं कोअी मुस्तार नहीं था। हां बचपनमें पेड़ों पर चढ़नेका कुछ कुछ अभ्यास जरूर हुआ था। छोटेलालजीके प्रेमभरे अुत्साहसे मैं पेड़ पर चढ़ जाता। खोहके पास जाकर वे मुझे अेक तरफ फूंकनीसे धुआं देनेको कहते और दूसरे मुंह पर स्वयं मक्खी पकड़नेकी अपनी पेटी लगा देते। साहूजी वहीं हमारी मददमें रहता या नीचेसे आवश्यक सामान पहुंचानेमें सहायता देता। यह सब क्रिया शामको अुस समय की जाती जब सब मक्खियां छत्तेमें आ चुकतीं। मक्खियां धुअेंके कारण जिस पेटीमें चली जातीं और हम अुसे बन्द करके नीचे अुतार लेते। मक्खियोंकी रानी पेटीमें चली जाती कि अन्य सारी मक्खियां भी थोड़े ही समयमें अपने-आप पेटीमें आ जातीं। छोटेलालजीने मुझे जो रानीकी पहचान करा दी थी। वह दूसरी मक्खियोंसे

बड़ी और लम्बी होती है। मक्खियां पकड़कर कोओी बड़ा घड़ जीतनेकी खुशीके साथ हम लोग आश्रममें कभी कभी रात्रिके दस-ग्यारह बजे तक लौटते थे। छोटेलालजी बड़ी सरलतासे बड़े बड़े वृक्षों पर चढ़ जाते थे। अैसा लगता था कि अुनके शरीरकी रचना ही कुछ अिसके अनुकूल है। कभी कभी अैसे अवसर भी आते थे जब मक्खियां पकड़नेके लिअे अुनको बहुत दूर जाना पड़ता और रात्रिको बाहर ही रहना पड़ता था। यह ध्यानमें रखना चाहिये कि अैसी ही मक्खियां पाली जा सकती हैं जो बड़े वृक्षों या पहाड़ोंकी अंधेरी खोहोंमें अपने छत्ते रचती हैं और जिनका स्वभाव छत्तेके अन्दर अंडे और शहद अलग अलग रखनेका होता है। जिससे शहद निकालते समय अेक भी अंडेको नुकसान नहीं होता।'

अिस प्रकार हमने ८–१० छत्ते अपने बगीचेमें जमा लिये। अुस स्थानका नाम मधुशाला पड़ गया था। छोटेलालजीने मक्खियोंके बारेमें मुझे सभी आवश्यक बातें सिखा दी थीं। अुदाहरणके लिअे किसी छत्तेमें दो या तीन रानियां हो जानें पर अेकके सिवा शेष अेक या दोको अलग छत्तेमें रख देना चाहिये ताकि और मक्खियां अुनके साथ अुड़ने न पायें। पेटियोंके पायोंके नीचे बरतनोंमें पानी रखना चाहिये ताकि पेटियोंमें मक्खियोंके शत्रु कीड़े प्रवेश न करने पायें। जब फूलोंकी कमी होती है तब मक्खियोंको शरबत बनाकर कृत्रिम खुराक भी देना चाहिये अित्यादि। अिन छत्तोंसे हमारी फसलमें कितने प्रतिशतकी वृद्धि हुअी अिसका सही हिसाब तो मैं नहीं निकाल सका। लेकिन स्पष्ट ही फल और अेकवार शाखोंकी — जैसे लौकी काशीफल तुरुमी पपीता आदिकी — अुत्पत्ति काफी बढ़ी। वजनमें अधिकसे अधिक काशीफल ८१ पाअुंडका पपीता ११ पाअुंडका और चुकन्दर ७ पाअुंडका हुआ। चुकन्दरको देखकर अेक बार ठक्करबापाने कहा था “अरे भाअी बम्बअीमें तो छोटे छोटे होते हैं। अिसका नाम ही बदलना पड़ेगा।” साग-भाजी पपीता नींबू और संतरा आश्रम और सेवाग्रामकी दूसरी संस्थाओंकी जरूरत पूरी करके वर्धामें काफी भेजना पड़ता था। मक्खियोंके झुंडोंको फूलों पर विचरते देखकर मेरे मनमें यही भाव आता था कि ये मक्खियां अलग अलग फूलोंमें पराग बदलनेका काम कर रही हैं। और मुझे बापूजीका पहले दिनका भाषण याद आ जाता। जब मैं बापूजीको यह संदेश सुनाता कि मधुशालाका काम ठीक चल रहा है और मक्खियां ठीक काम कर रही हैं,

जिस प्रकार नर और मादा फूलोंके परागका संयोग होकर फलकी अुत्पत्ति होती है। जिसलिमे लोग मादा-फूलोंके साथ नर-फूल भी रखते हैं। लेकिन मधुमक्खियां भी यह काम करती ही हैं। लेकिन अुनका पालन करनेसे दो लाभ होंगे। तुम जिसका हिसाब रख सकोगे कि यहां छत्ते रखनेसे फसलमें कितनी वृद्धि हुजी।

छोटेलालजी आये और अुन्होंने जो सुविधा चाही वह मैंने आमरसके बगीचेमें कर दी। मैंने समझा था कि वे मगनवाड़ीसे तैयार छत्ते लाकर बगीचेमें रख देंगे। लेकिन वे तो बापूजीसे भी दो कदम आगे बढ़नेवाले निकले। अुन्होंने मुझसे कहा कि चलो यहांके जिले आसपासके गांवोंमें से नये छत्ते पकड़कर ले आयें।

मैं मना कैसे कर सकता था? बापूजीने पहले ही मुझे मुक्त कर रखा था। छोटेलालजी स्वयं मगनवाड़ीमें रहते थे। अुनके साथ साहूजी नामका अेक हरिजन छत्ते पकड़नेमें सहायकका काम करता था। जिनमें मेरे पास आदेश आ जाता कि आज शामको अमुक गांवमें छत्ते पकड़ने चलना है, तुम तैयार रहना। छोटेलालजीका स्वभाव और अनुशासन फौजी अफसरके जैसा कठोर था। अुनके कार्यक्रममें जरा भी गड़बड़ हो गजी कि शामत आमी समझो। जिसी डरसे मैं अुनके आनेकी राह देखता रहता। वे ठीक वक्त पर आते और मैं चुपचाप अुनके साथ चल देता। दो चार मील जाकर किसी सूने आम या जिमलीके पेड़के नीचे खड़े होते और जिशारा करके कहते कि अमुक खोहमें मक्खियां अुड़ती दीखती हैं वहीं अुनका छत्ता होगा। चलो चढ़ो पेड़ पर। चढ़नेमें मैं कोजी अुस्ताद नहीं था। हां बचपनमें पेड़ों पर चढ़नेका कुछ कुछ अभ्यास जरूर हुआ था। छोटेलालजीके प्रेमभरे अुत्साहसे मैं पेड़ पर चढ़ जाता। खोहके पास जाकर वे मुझे अेक तरफ फूंकनीसे धुआं देनेको कहते और दूसरा मुंह पर स्वयं मक्खी पकड़नेकी अपनी पेटी लगा देते। साहूजी वही हमारी मददमें रहता था नीचेसे आवश्यक सामान पहुंचानेमें सहायता देता। यह सब क्रिया शामको अुस समय की जाती जब सब मक्खियां छत्तेमें आ चुकतीं। मक्खियां धुअेंके कारण जिस पेटीमें चली जातीं और हम अुस बन्द करके नीचे अुतार लेते। मक्खियोंकी रानी पेटीमें चली जाती कि बाकी सारी मक्खियां भी थोड़े ही समयमें अपने-आप पेटीमें आ जातीं। छोटेलालजीने मुझे भी रानीकी पहचान करा दी थी। यह दूसरी मक्खियोंसे

तो बापूजीका मुख प्रसन्न हो जाता और वे बोल अुठते "तुम्हारे लिये तो मक्खियां भी मजदूरी करती हैं। किसानका काम तो सांप भी करता है यह तुम जानते हो? खेतीमें बहुतसे कीड़े होते हैं जो फसलको नुकसान पहुंचा सकते हैं। सांप अुन्हें खा जाता है। अिसमें हिंसा भले हो लेकिन सांप किसानके लिये अुपकारी ही है। वास्तवमें मैंने देखा भी कि गन्नेके खेतमें सांप पत्तों पर चढ़कर अुन कीड़ोंको खा जाता था जो गन्नेको नुकसान पहुंचाते हैं। धानके खेतमें हरे धानके रंगके अनेक सांप मैंने देखे। चूहोंका तो सांप शत्रु है। मैंने सांपको बिलोंमें से चूहे निकालकर खाते देखा है।"

मुझे आश्चर्य तो यह होता है कि मैं किसान होने पर भी अिन छोटी छोटी बातोंको क्यों नहीं जानता था और बापूजी अुन्हें कैसे जानते थे? वास्तवमें बापूजीकी दृष्टि बहुमुखी और विशाल थी जब कि हमारी दृष्टि सिर्फ नाककी सीधमें ही देखना जानती थी।

छोटेलालजी जैन राजस्थानके थे। सन् १९१५ में किसी बम-कांडमें पकड़े गये थे। लेकिन अवस्था कम होनेसे छोड़ दिये गये थे। सन् १९१७ में साबरमती आश्रममें बापूजीके पास आ गये और अल्पकालमें ही वे साबरमती आश्रमके अेक प्रमुख कार्यकर्ता बन गये। स्व. मगनलालजी गांधीके साथ अुन्होंने अ. भा. चरखा-संघका शिक्षा-विभाग अनेक वर्षों तक बड़ी योग्यतासे चलाया। श्री बालकोबाजी, श्री सुरेन्द्रजी और श्री तुलसी मेहरजी अुस समयके अिनके प्रमुख सहयोगी कार्यकर्ता थे। साबरमती आश्रममें शिक्षार्थ आनेवाले प्रत्येक विद्यार्थी पर अिन भाअियोंके अत्यन्त परिश्रमी तथा स्वाध्यायी होनेकी छाप शीघ्र ही पड़ जाती थी। जब पू. जमनालालजी बजाजने आश्रमकी अेकमात्र शाखा मगनवाड़ी वर्धामें ग्रामोद्योगोंके विकासके लिये श्री छोटेलालजीको मांग लिया तबसे वे अन्त तक पहले मगनवाड़ीमें और बादमें सेवाग्राममें अनेक ग्रामोद्योगोंको चलाते रहे। सेवाग्राममें रहते हुअे मधुमक्खी-पालनके सिलसिलेमें जंगली मधुमक्खियां पकड़नेके लिये लगातार कअी दिनों तक जंगलमें भटकनेके कारण अुन्हें टायफाअिड हो गया और अुन्होंने अेक दिन बापूजीको यह लिखा भेजा कि मुझे दूसरोंसे सेवा लेकर जीना पसन्द नहीं होगा। लेकिन अिस संदेशको पाकर बापूजी दूसरे दिन आकर अुन्हें सान्त्वना दें अिसके पूर्व ही रात्रिमें मगनवाड़ीके अेक कुअेंमें प्रवेश करके अुन्होंने जल-समाधि ले ली।

भाओी छोटेलालजीके आत्मघातके विषयमें अपने हृदयका दुःख अुंडेलते हुओ बापूजीने ता. ११-९-३७ के ‘हरिजनसेवक’ में ‘अेक मूक साथीकी मृत्यु’ नामक लेखमें लिखा था :

“छोटेलालकी मूक सेवाका वर्णन भाषाबद्ध नहीं हो सकता। अैसा करना मेरी शक्तिके बाहर है। … मेरे सौभाग्यसे मुझे कुछ अैसे साथी मिले हैं जिनके बिना मैं अपनेको असमर्थ महसूस करता हूं। छोटेलाल मेरे अैसे ही अेक साथी थे। अुनकी बुद्धि तीव्र थी। अुन्हें कोओी भी काम सौंपते मुझे हिचकिचाहट नहीं होती थी। वे भाषाशास्त्री भी थे। अुनकी मातृभाषा हिन्दी थी। पर वे गुजराती मराठी बंगला तामिल संस्कृत और अंग्रेजी भी जानते थे। नओी भाषा या नया काम हाथमें लेनेकी अुनके जैसी शक्ति मैंने और किसीमें नहीं देखी।

रसोओी बनाना पाखाना साफ करना कातना बुनना हिसाब-किताब रखना अनुवाद करना चिट्ठीपत्री लिखना आदि सब कामोंको वे स्वाभाविक रीतिसे करते और वे अुन्हें शोभते थे। यह कहा जा सकता है कि मगन-लालके लिखे ‘बुनाओी-शास्त्र’ में छोटेलालका हिस्सा मगनलालके जितना ही था। चाहे जैसे पोशिसका काम अुन्हें सौंपा जाय अुसे वह प्रयत्नपूर्वक करते और जब तक वह पूरा न हो जाता अुन्हें शांति नहीं मिलती थी। अुनके शब्दकोशमें ‘थकान’ शब्दके लिअे स्थान ही नहीं था। सेवा करना और दूसरोंसे सेवाकार्य कराना यह अुनका मंत्र था। ग्रामोद्योग-संघ स्थापित हुआ तो घानीका काम दाखिल करनेवाले छोटेलाल, धान कूटनेवाले छोटेलाल और मधुमक्खियां पालनेवाले भी छोटेलाल। आज मैं छोटेलालके बिना जैसा अपंग हो गया हूं वही स्थिति आज अुनकी मधुमक्खियोंकी भी होगी।

छोटेलाल मधुमक्खियोंके पीछे दीवाने थे। अुनकी खोजमें रहनेसे हुअे प्रवाससे बिमारी बुखारने अुन्हें पकड़ लिया। यह अुनके लिअे घातक निकला। मालूम होता है अुन्हें ८-१० दिन सेवा कराना भी असह्य लगा। ता. ११ अगस्त मध्यरात्रिकी रातको ११ और २ के बीचमें सबका सोना हुआ जानकर वे मगनवाड़ीके कुअेंमें कूद पड़े।

“जिस आत्मघातके लिअे छोटेलालको दोष देनेकी मुझमें हिम्मत नहीं। छोटेलाल तो वीर पुरुष थे। अुनका नाम १९१५ के दिल्ली-षड्यन्त्र केसमें आया था। पर अदालतसे वे बरी हो गये थे। किसी औरके अत्याचारको

मारकर फांसीके तख्ते पर चढ़नेका स्वप्न वे अुन दिनों देखते थे। जिनमेंसे वे मेरे जैसोंके पापमें आ फंसे। और अपनी तीव्र हिंसक वृत्तिको अुन्होंने वश किया और अहिंसाके पुजारी बन गये।

*काटेलास मुझे अपना देनदार बनाकर ४५ वर्षकी अुम्रमें चल बसे।

२२

चरखेका चमत्कार

बापूजीने चरखा और खादीको सब ग्रामोद्योगोंका मध्यबिन्दु माना था। अेक सालमें स्वराज्य दिलानेकी बात भी अुन्होंने चरखेके मारफत ही की थी। बापूजीने अपने जन्मदिनके अुत्सवको भी चरखा-द्वादशीका नाम दिया था। कांग्रेसकी सदस्यताके लिये भी चरखा अनिवार्य करनेकी अुन्होंने पूरी पूरी कोशिश की थी। संक्षेपमें चरखेके लिये बापूजीने जिन्दगीकी तरह और तप किया था। मगनलालभाओी गांधीने भगीरथकी तरह चरखाकी नयी खोज की थी। और विनोबाजीने तपस्वीकी तरह रोज ८–८ घंटे तकली और चरखे पर कात कर अपनी हड्डियां सुखा दीं और चरखेका मंत्र सिद्ध करके दिखा दिया। बहुतसे लोग बापूजीकी चरखेकी बात सुन कर हंसते भी थे। लेकिन बापूजीके जीवनमें चरखा ओतप्रोत था। कितने ही काममें हों कितने ही थके हुअे हों लेकिन चरखा चलाये बिना बापूजीका दैनिक कार्य पूरा नहीं हो सकता था। जब तक बापूजी बीमार होकर बिस्तर पर न पड़े हों तब तक चरखेका नागा अुनके जीवनमें कभी नहीं हुआ। अुन्होंने लम्बे लम्बे अुपवास किये तब भी और राअुण्ड टेबल कान्फरेन्समें गये जहां कि सोनेके लिये भी बहुत कम समय मिल पाता था वहां भी अुनका चरखा तो चलता ही रहा।

आज जब मैं सेवाग्रामके जीवन पर विचार करता हूं तो मेरी आंखोंके सामने चरखेका चमत्कार आ खड़ा होता है। मुझे सेवाग्राममें रोटी चरखेमें ही दिखायी दी। बापूजी कहते थे “चरखा गरीबोंका सहारा है, दुखियोंका बन्धु है और अन्धेकी लकड़ी है।” बापूजीके जिस कथनकी सत्यता मैं अपने जीवनमें आज अनुभव कर रहा हूं। अगर दयाराम और गोविन्दको कातना सिखानेकी बात न होती तो मुझे सेवाग्राममें रोटी कैसे मिलती? अगर मेरी

सेवाग्राम आश्रमकी प्रार्थना-भूमि पर चल रहे
सूत्रयज्ञका अेक दृश्य।

बापूजीके हस्ताक्षरोंका नमूना

[यह पत्र पुस्तकके पृष्ठ १७४ पर छपा है।]

[illegible]

बुनाओी सीखनेकी बात न होती तो मैं साबरमती आश्रममें विनोबाजीके पास या सावली कैसे जाता? अगर न जाता तो बापूजीके चरणोंमें भी अन्त तक कैसे टिकता? अगर न टिकता तो आज ये पवित्र संस्मरण लिखनेका सौभाग्य क्योंकर प्राप्त होता जिससे सत पुरुषोंकी पवित्र स्मृतियोंसे मनका मैल धोनेका अवसर मिला? अगर यह अवसर न मिलता तो फिर अिस जगतमें जन्म लेनेका भी क्या अर्थ रहता? फिर तो मेरी मां यही कहती

नतरु बांझ भलि बादि बियानी राम बिमुख सुत ते हित हानी।

अर्थात् मेरा सारा जीवन व्यर्थ सिद्ध होता। अब मुझे बापूजीके चरणोंमें देखकर अवश्य ही मेरी मांको स्वर्गमें संतोषका अनुभव होता होगा। सच-मुच जब मैं यह सोचता हूं कि मेरे जीवनकी नौकाको चरखेने किस प्रकार किनारेके निकट पहुंचाया तो मैं स्वप्न-सा देखने लग जाता हूं। अेक गरीब किसानका लड़का लिखा नहीं पढ़ा नहीं दूसरा कोओी साधन नहीं तो भी जगतके अेक महान पुरुषका पुत्र बननेका अधिकार बापूजीसे झगड़कर प्राप्त किया। जब गांधी-स्मारक-निधिवाले मेरी गोसेवाकी योजनाके लिओे पैसा देनेमें देर करते हैं तो मैं आत्म-विश्वासके साथ यह कहनेकी हिम्मत रखता हूं कि मेरे ही पिताके नामसे पैसा जमा किया और मुझे ही आज दिखाते हो। जिन बापूने मेरे बजट पर आज बीस बरस सही की अुन्हीं बापूके नामका पैसा मुझे मिलनेमें अितनी देर क्यों? मैं अितना बड़ा दावा करनेका ढोंग नहीं करता हूं और न किसीकी गीदड़-भभकी ही देता हूं। जो भी कहता हूं वह बापूके प्रति अटल श्रद्धाके बल पर ही कहता हूं। बापूके सामने मेरे लिओे संसारकी सारी समृद्धि तृणवत् थी। बापूके प्रेमके कारण सेवाग्राम आनेवाले बड़ेसे बड़े लोगोंसे भी परिचय करनेका लोभ मेरे मनमें नहीं आता था। मेरी यह अेंठ बापूजीके प्यारके बल पर थी और बापूजीके प्यारका निमित्त बना था चरखा। जिस रोज बापूने मुझसे यह कहा था कि दशरथ और गोविन्दका कातना और बुनना छिपा तो तुम्हें रोटी मिल जायगी अुस दिनका चित्र मेरी आंखोंके सामने आज भी ज्योंका त्यों नाच रहा है।

जिस प्रकारसे मेरे जीवनकी नींवमें चरखा है अुसी प्रकार सेवाग्रामके सरंजामकी नींवमें भी चरखेने ही प्रथम स्थान लिया। जिस बक्त दैवयोग ही कहना चाहिये। वे दोनों लड़के कुछ काम सीखना चाहते थे यह बात तो थी ही। लेकिन अुससे भी बड़ी बात यह थी कि मुझको बापूजीका सम्पर्क

साधना था। अुन्होंने देखा कि बापूजीको सबसे प्रिय चरखा ही है जिसलिये हम भी चरखा सीखकर ही अुनके निकट पहुँच सकते हैं। बापूजीको सेवाग्रामकी सेवाका पवित्र काम चरखेसे ही आरम्भ करनेका अवसर मिला। मुझे वे कैसे छोड़ सकते थे और मेरे जैसा सस्ता शिक्षक सिर्फ रोटीमें ही मिल जाय तो बापू जैसा अवसर भला क्यों चूकते? फिर मुझे भी तो बापूजीके पास रहनेका लोभ था ही। जिस प्रकार बिना किसी योजनाके बिना कुछ सोचे-विचारे चरखा सेवाग्रामके जीवनमें सबसे प्रथम आकर खड़ा हो गया। मैं आज गर्वके साथ कह सकता हूँ कि सेवाग्रामका प्रथम शिक्षक बननेका सुअवसर निःसन्देह मुझे चरखेने ही दिया। जिस प्रकार सेवाग्रामके क्षेत्रमें अुस दिनका चरखेका बीज वटवृक्षके रूपमें फला-फूला। मेरे अुस विद्यालयका आरम्भ कुअेंके पासकी अेक छोटीसी कोठरीमें हुआ था जो आज भी अपनी टूटी-फूटी हालतमें अुस घटनाकी गवाही दे रही है। लेकिन आज तो सेवाग्राममें चरखेके लिअे महल खड़े हो गये हैं। अब अुस बेचारी कोठरीका नाम भी कौन पूछता है? और शिक्षक भी बड़े बड़े पंडित यहां आ गये हैं। तब मेरे जैसे बिना पढ़े आदमीका नाम अुनकी सूचीमें कैसे रह सकता है!

हमने सेवाग्राममें चरखेके कामको धीरे धीरे बढ़ाया। और लोगोंसे भी चरखा चलाने और खादी पहननेकी बात कही। धीरे धीरे लोग हमारे पास आने लगे। श्री मुन्नालालभाअीने स्कूलमें बच्चोंको तकली सिखाना आरम्भ किया। धुनाअी-काम भी भाअी अमृतलालजी नाणावटीने धनैयाके मारफत आरम्भ किया। बापूजीने कहा — अेक चरखा ही अैसा अुद्योग है, जो कि छोटे-बड़े जवान-बूढ़े सबको दिया जा सकता है। हमने धुनाअी-घर बनाया और रुआी-घर भी बनाया। आज जो बापूजीकी कुटीके नामसे प्रसिद्ध है वह दरअसल मीराबहनने गांवके बच्चोंको कताअी व धुनाअी सिखानेके लिअे ही बनवाअी थी। आज अुस स्थानकी महिमा भले ही बापू-कुटीके नामसे हो, लेकिन वास्तवमें तो वह चरखा-कुटी ही है। आश्रमके काम चरखा ही अेक अैसा अुद्योग था जिसे बेकारीके सामने खड़ा किया जा सकता था। अेक बार अकाल पड़नेसे लोग बेकाम हो गये। वे घर घर काम मांगनेके लिअे आने लगे। गांवमें और आसपासमें अितना काम नहीं था कि काफी लोगोंको दिया जा सकता। तब बापूजीसे पूछा कि क्या किया जाय। बापूजीने कहा — चरखा तो तुम्हारे पास है ही। यहां आप अुनको चरखा दे दो। मैंने लोगोंके अेक

मकानमें चरखेका अेक परिश्रमालय खोल दिया। १ —२ बजेसे माछीवाड़ीसे जमा किये। वो लड़कियां और बड़ी बहनें काम मांगती अुन्हें चरखा दे देता। चरखा-संघ भी सेवाग्राममें आ चुका था। अुनका सूत चरखा संघ खरीद लेता था। अन्तमें चरखा-संघने सूतकी पूंजीके लिये कताअीमें ज्यादा देनेका निश्चय किया। आश्रमका परिश्रमालय काफी दिनों तक चला और लोगोंको अुससे काफी मदद भी मिली। बादमें वह चरखा-संघमें विलीन हो गया।

गांवकी अेक सखा नामक लड़की पागल हो गअी थी। अुसके घरवालोंने अुसे घरसे निकाल दिया था। अुस परिवारके साथ मेरा अच्छा संबंध था क्योंकि अुस लड़कीका पति और जेठ दोनों मेरे पास गोशालामें काम करते थे। मैंने अुस लड़कीकी तलाश की जो खेतमें भूखी-प्यासी घूमा करती थी और रातको भी जंगलमें किसी झाड़के नीचे पड़ी रहती थी। मैंने अुसको बुलवाया। अुसके घरवालोंसे अुसे संभालनेकी बात की लेकिन अुन्होंने अिन-कार कर दिया। मैंने देखा कि अुसके सारे कपड़े और सिर जूंओंसे भरे थे। अुसके सिरके बालोंमें जूंअें अधिक थीं। मैंने अुसके बाल काटे। अेक दूसरी बहनको बुलाकर अुसको स्नान कराने और अुसके कपड़े धोनेकी बात कही। अुस बहनने कहा — भाअीजी अिन कपड़ोंको तो जला देना ही ठीक है नहीं तो अिसकी जूंअें मेरे अूपर चढ़ जायेंगी। मैंने वैसा करनेके लिये अुस बहनको कह दिया। बालोंको जमीनमें गाड़ दिया। अुस बहनने पगलीको स्नान कराया। मैंने दूसरे कपड़े अुस लड़कीको दिये और परिश्रमालयमें चरखा कातने बैठा दिया। वह कातने लगी। अुसकी ही मजदूरीसे अुसके खाने पीनेकी व्यवस्था कर दी। अुसका मन चरखेमें लगा खानेको रोटी मिली और चूंकि संकटसे मुक्त हुअी तो धीरे धीरे अुसका पागलपन कम हो गया। मैं अुसे रोज स्नान कराता था। अब तो अुसके चेहरे पर चमक आ गअी और वह ठीकसे बात भी करने लगी। यह सब अुसका पति और घरके दूसरे लोग देखते ही थे। अिसलिये धीरे धीरे अुनका भी मन बदला। अन्तमें मैंने अुसको अुन लोगोंके हवाले कर दिया। अब तो अुसके कभी बच्चे भी हुअे। अेक दो तो मेरे सामने ही हो गये थे। अब अुसने अपनी गृहस्थी फिरसे जमायी तब मैं अुससे पूछता — क्यों सखा अुस दिनकी बात याद है न? वह हंस देती। सचमुच अगर मेरे पास चरखा न होता तो अुसके पागलपनको दूर करनेका

मेरे पास कोअी दूसरा अिलाज नहीं था। चरखेसे मुझे मन और तन दोनोंको काम मिला और पेटको रोटी मिली। अिसलिये मुझे मस्तिष्कमें जो विकृति आयी थी वह सब दूर हो गयी। मैं अिसे चरखेका चमत्कार ही कहता हूँ।

महादेवभाअीके स्वर्गवासके बाद बापूजी अुनके कमरेमें आध घंटा हमारे साथ मौन कताअी करते थे। वह दृश्य देखने लायक होता था। धीरे धीरे कताअी और बुनाअीके कामोंका विकास हुआ और जहां सेवाग्रामके स्त्री-पुरुष कामकी खोजमें दूसरे गांव जाया करते थे वहां आसपासके कअी स्त्री-पुरुष सेवाग्राम आश्रममें कामके लिये आने लगे। मकान वगैराके काममें तो कोअी लगते ही थे लेकिन कताअी बुनाअी और बादमें तो धुनाअीमें भी काफी लोगोंको काम मिलने लगा। सेवाग्राममें भी हमने अेक बुनाअीघर खोला। कितने ही हरिजन और सवर्ण लड़कोंने बुनाअी सीखी और अुससे वे अपनी रोटी कमाने लगे। कताअी और बुनाअी भी काफी स्त्री-पुरुषोंकी आजीविकाका साधन बनी। मेरा प्रथम विद्यार्थी दशरथ आज तालीमसंघका निष्ठावान कार्यकर्ता बन गया है और सेवाग्रामके हरिजनोंमें सबसे पहला पक्का मकान अुसीने बनाया है। सेवाग्रामके कितने ही लड़के खादीके शिक्षक बनकर बाहर भी काम कर रहे हैं। फिर तो यहां चरखा-संघका खादी-विद्यालय बना और सारे हिन्दुस्तानसे चरखेका काम सीखनेके लिये स्नातक शिक्षक विद्यार्थी बनकर आने लगे। तालीमी संघने भी कताअी और बुनाअीका काम बहुत बढ़ा दिया है। अुसमें भी हिन्दुस्तान भरसे नयी तालीमकी शिक्षा लेनेके लिये अध्यापक और अध्यापिकायें आती हैं। चरखा अुनके लिये अनिवार्य है। सेवाग्रामका बापूराव नामक युवक वकीलका मामूली मुहर्रिर था। अुसको मैंने चरखा दिया और १९४२ के आन्दोलनमें जेल भेजा। आज वह मध्यप्रदेशकी धारासभाका सदस्य है और कांग्रेसका बहुत अच्छा कार्यकर्ता है। यह चरखेका ही प्रताप है।

चरखेमें बापूजीकी हिमालय जैसी अचल और अटल श्रद्धा थी। वे अुसे अपनी कामधेनु और मोक्षका द्वार मानते थे। अेक बार अुन्होंने चरखेके विषयमें अपनी भावना व्यक्त करते हुअे लिखा था “मैं हर तारको खींचते समय भारतके गरीबोंका ध्यान करता हूँ। गरीबोंकी मजदूरी चरखा ही दे सकता है। अिस चरखे पर अुनकी श्रद्धा मैं कोरे भाषण देकर नहीं जमा सकता स्वयं कातकर ही जमा सकता हूं। अिसीलिये मैं कातनेकी क्रियाको

अुन्होंने पहली बार आश्रमको अिस भावनासे अपना ली थी। और अिसका प्रचार भी किया था। दैवयोगसे विनोबाजीके मनमें भी यही विचार स्फुरित हुआ और अुन्होंने भी अिसका प्रचार किया। बादमें तो सारे देशके यज्ञ-मन्त्रमें श्रद्धा रखनेवाले लोगोंने अिसे अपना लिया। १२ फरवरी — बापूजीका श्राद्धदिन — आश्रमके लिये पूंजीदानका दिन माना जाने लगा।

२३

बापूजीका हृदय-मन्थन

बापूजीके हृदय-मन्थनकी बात कहनेसे पहले मैं अेक अैसे प्रसंगका जिक्र कर देना चाहता हूं जो हमारे और बापूजीके पिता-पुत्रके अधिकार और भावनाओं पर बहुत प्रकाश डालता है। बात यह थी कि बापूजीकी तबीयत अुन दिनों काफी कमजोर थी। अुनसे मिलने-जुलनेवाले काफी लोग आते थे। अिस परेशानीसे बापूजीको बचानेके लिये पू. किशोरलालभाअीने अेक लिखित सूचना निकाली कि व्यवस्थापक-मंडलकी अिजाजतके बिना बापूजीसे कोअी मिलने न पाय। मुझे और मुन्नालालभाअीको यह सूचना अखरी। अिस पर शामकी प्रार्थनाके बाद पू. किशोरलालभाअीने चर्चा की और हमें समझानेका प्रयत्न किया। हमारे विरोधका अुन्होंने तेजीसे जवाब दिया। हमने भी अुनके जवाबका विरोध किया। आखिर यह बात बापूजीके पास पहुंची। दूसरे दिन शामकी प्रार्थनाके बाद बापूजी बोले

कल किशोरलालकी सूचना पर चर्चा हुअी यह ठीक नहीं हुआ। अुन्होंने तो मुझे बचानेके लिये किया था। यह धर्मशाला है फिर भी अिसमें कुछ नियम होने ही चाहिये। रुग्णालय भी है। रोगियोंको भी नियमका पालन करना पड़ता है। परन्तु भंसाली तो हम सबमें श्रेष्ठ पुरुष हैं। अुनको नियम क्या? मुन्नालाल भी स्वतन्त्र है। अपना बादशाह है। यह जितना [illegible] कर सकता है, पर तो हम सबमें किशोरलालभाअीके समान कर देता है। [illegible] भी [illegible] है। बलवन्तसिंह हम सबसे अच्छा मजदूर है। गाय और [illegible] जितना [illegible] नहीं कर सकता है। लेकिन आज मेरे पास यहां [illegible] भी [illegible] है।

हम समझते थे कि बापू हमारे पिता हैं। पिता बीमार हों और लड़कोंसे कोअी कहे कि तुम्हें पिताके पास जानेकी अिजाजत नहीं है तो यह कैसे बन सकता है?

२६ जुलाअीको विनोबाजी तथा अन्य कार्यकर्ता बापूजीसे कुछ जाननेके लिअे जमा हुअे थे क्योंकि आन्दोलन द्वार पर खड़ा था। बापूजी बोले

मैंने तुम लोगोंको अिसलिअे बुलाया है कि मेरे मनमें जो विचार चल रहा है अुसे तुम्हारे सामने रख दूं और तुम्हें यदि अुसमें मेरा अधैर्य या कुछ दोष दिखे तो तुम मुझे बता सको।

आजकल मेरे मनमें अुपवासका जो विचार चल रहा है अुसे टालनेका मैंने खूब प्रयत्न किया है और आज भी कर रहा हूं। लेकिन मैं देख रहा हूं कि वह मेरे सिर पर सवार हो रहा है। मैंने आज तक बहुतसे अुपवास किये हैं और अुनमें से अेक भी असफल हुआ अैसा मुझे नहीं लगता। कितने ही तो मैंने व्यक्तिगत और कौटुम्बिक तौर पर किये हैं। अुनका परिणाम भी शुभ ही आया था। हिन्दू-मुस्लिम-अेकताके लिअे भी अुपवास किया था अुसका भी असर तो हुआ था। लेकिन वह कायम न रह सका। हरिजनोंको अलग न करनेके लिअे जो आमरण अुपवास किया था अुसका परिणाम तत्काल हुआ था। लोग मेरे पास आकर बैठ नहीं गये थे बल्कि काम करने लग गये थे। हिन्दू महासभाके अध्यक्ष भी आ गये थे और अुन्होंने भी मेरी बात मान ली थी। यह सब मुझे अच्छा लगा था। आखिरकार धर्मशुद्धिके कारण या आत्मशुद्धिका २१ दिनका अुपवास था अुसके पीछे यही भावना थी कि जिससे शुद्धता अेक मात्रा तक बढ़ाअी जाय। लेकिन साथियोंके कहे न माननेसे वह स्थगित करना पड़ा था। लेकिन अब मैं देख रहा हूं कि अिससे टाला नहीं जा सकेगा। जिस तरह हिंसा आगे पूरे जोरमें है और चारों ओर अेक प्रकारका अन्धकार-सा छा गया है। हिन्दुस्तानमें भी जहर फैलाया जा रहा है। सरकार हमारे आदमियोंको ही हमारे सामने खड़े कर तमाशा देखना चाहती है। अिसको मैं कैसे बरदाश्त कर सकता हूं? अिसलिअे मुझे लगता है कि अब बलिदान दिये बिना यह ज्वाला शान्त नहीं हो सकेगी।

अनशनके दो रूप हैं। अेक तो स्वयं शुद्धि करना दूसरा बलात्कार पर पट

अिस शर्तसे तो नहीं होगा। यहां तो दो चार रातमें पूरा काम तमाम करना है। जब हम सरकारके सब कानूनोंका भंग करना चाहते हैं तो अुपवास आ ही जाता है। जब हमको जेलमें डालेंगे तो हम अन्न-पानीका त्याग करेंगे और अपने आपको खतम ही कर देंगे।

"अब सवाल यह अुठता है कि अिसकी शुरुआत किससे की जाय? अिसके लिअे मैंने अपने आपको चुना है। क्योंकि मेरे बलिदानके बिना काम नहीं चलेगा। तुम सब साथियोंका मेरे साथ सहकार चाहिये। अिसमें किसीको घबरानेकी या रंज माननेकी बात नहीं है। कर्तव्य-पालनकी बात है। आखिर तो अिस शरीरको गिरना ही है। तो अेक शुभ कार्यके निमित्त मुझे गिरने देना ही अच्छा है।"

किशोरलालभाअी बोले — मगर जनरल ही पहले चला जाय तो फौजका क्या हाल होगा। अिसलिअे मेरी राय है कि आप जिसको पसंद करें अुसके द्वारा आरंभ करें और अुसके बलिदानका अुपयोग कर लें। जब समय आ जाय तो आप अपना बलिदान भी दे दें।"

बापूजी — अैसा कौन है? समझो जानकीबहन कहे कि मेरे शरीरकी तो कुछ कीमत नहीं है, मुझे जाने दो। या शास्त्रीजी (परचुरे शास्त्री) कहें कि मैं जाअूं।

किशोरलालभाअी — ना ना। मैं तो अैसी बात कहता हूं कि जिसकी कीमत हो।

बापू — हां मैं भी तो यही कहता हूं। समझो शास्त्रीजीकी कीमत पैसा है और जानकीबहनकी रुपया और मेरी मोहर। अगर अिस चीजकी कीमत मोहर देनी चाहिये तो मुझे ही देनी चाहिये। और अब मेरे बलिदानका समय आ गया है अिसका निर्णय कौन करेगा?

किशोरलालभाअी — आप ही करेंगे।

बापू — बस तो मैं आज ही निर्णय करता हूं कि पहला बलिदान मुझे ही करना चाहिये।

किशोरलालभाअी चुप हो गये। बापूने विनोबाजीसे पूछा "तुमको कैसा लगता है?" अुन्होंने कहा "मुझे तो ठीक लगता है। मैं समझता हूं या नहीं अिसलिअे पूछ लेता हूं। आपके कहनेका मैं यह अर्थ समझता हूं कि स्वतंत्र बुद्धिसे भी अुपवास किया जा सकता है। जिनकी स्वतंत्र बुद्धि साथ न दे, वे बापू पर श्रद्धा रखकर भी कर सकते हैं।"

बापू — ठीक है। लेकिन अिसमें अितना और जोड़ूं कि अब जैसा अितनी फूट निकली है तो मुझे रोकनेका अिसके सिवा और कोअी चारा नहीं दीखता है और अिसलिअे अैसा करना आवश्यक हो गया है। अगर अिस विषय पर अधिक चर्चा करनी हो तो मैं समय निकाल सकता हूं।

विनोबा — मुझे जरूरत नहीं लगती है।

अिसके बाद सभा विसर्जित हो गअी। मुझे बापूजीकी योजना पसंद तो थी लेकिन अनशनका अस्त्र आम लोगोंके सामने रखने जैसा नहीं लगता था। मैंने बापूजीको अपने मनकी बात कहते हुअे लिखा "हिंसाकी लड़ाअीमें मरना जितना सरल है अुतना अिसमें नहीं है। सामूहिक रूपमें अिस प्रकारसे मूलसे कोअी शांति पूरी हो अैसा अुदाहरण ही नहीं मिलता है। अिसमें क्या आत्महत्याके पापका डर नहीं है?

मुझे डर यह भी था कि बापूजी अब अधिक दिनों जीवित नहीं रहेंगे। अिसलिअे मैंने लिखा था कि "अिस व्याधिमें मेरा खात्मा हो गया तो प्रश्न ही खतम है। जीवित रहा तो आपकी आत्मा मुझसे क्या अपेक्षा रखेगी और मेरा क्या कार्य देखकर संतुष्ट होगी? अगर आप समय निकाल सकें तो बम्बअी जानेसे पहले आपके सामने अपना दिल खोलकर मैं मन हलका करना चाहता हूं। आप मेरी चिन्ता तो नहीं करते होंगे। मेरे सब अपराधोंको क्षमा करके मुझे आशीर्वाद दीजिये कि आपको संतुष्ट करनेमें सफल होअूं।

बापूजीने लिखा

मेरी चिन्ता न करो। दूसरोंके लिअे अनशन किया जा सकता है या नहीं? सोचनेकी बात है। मैंने तो सैद्धांतिक चर्चा ही की।

तुम्हारे बारेमें विचार तो करता ही हूं। चिन्ता मुतलक नहीं। मुझे तुम्हारे बारेमें डर है ही नहीं। तुम्हारा यहां पड़ा रहना और आश्रमके काममें रत रहना मेरे लिअे पर्याप्त है और अैसा भी समझो कि अुसमें गोसेवा छिपी हुअी है। स्वामी बिरयारिसे मिलना मुनासिब करना। तुम्हारा यहां होना फायर बकेट-सा है। फायर बकेटमें कितनी शक्ति रहती है, जानते हो न? मैं चल गया तो भगवान मार्ग बता देगा। मैं तो अिसकी नीयतसे तुम यहां ही यहीं मरना। समय मिला तो बुला लूंगा। पर मुश्किल है।

२७—७—४२ बापूके आशीर्वाद

बापूजीकी आज्ञाके अनुसार मुझे सेवाग्राम आश्रममें ही रहना चाहिये था। पर बापूजीके चले जाने पर आश्रमका मार्गदर्शक विनोबाजीको ही माना गया था। अुनके आदेशसे ओड़िसाके कामके लिअे मुझे बाहर जाना पड़ा। खुशीसे नहीं पर कर्तव्य-बुद्धिसे ही मैं बाहर गया।

अूपरके पत्रसे प्रगट होता है कि बापू छोटेसे छोटे सिपाहीकी बातों पर भी कितना ध्यान देते थे। किसी प्रकार विचार-मंथनमें अगस्तका महीना आ गया।

बापूजी वर्किंग कमेटीकी मीटिंगके लिअे बम्बअी जानेकी तैयारी कर रहे थे। जानेसे पहले दिन ४ अगस्तको शामकी प्रार्थनाके बाद बापूने कहा —

मैं कल बम्बअी जा रहा हूं। क्या होगा यह तो नहीं कह सकता लेकिन मेरी अुम्मीद है कि ११ अगस्त तक मैं यहां वापिस आ जाअूंगा। १२ से अधिक तो नहीं। जो लोग आश्रममें हैं अुनको समझना चाहिये कि आश्रम पर कुछ भी संकट आ सकता है। हो सकता है कि सरकार हमारा खाना भी बंद कर दे। तो जिनकी पत्ते खाकर भी यहां रहनेकी तैयारी हो वे ही लोग यहां रहें बाकी सब चले जायं। अगर संकट आने पर जायेंगे तो हमारे लिअे शर्मकी बात होगी।

बापूजी ५ अगस्तको बम्बअी जा रहे थे अुस दिन सोमवार था। गाड़ी लेट थी। बापू वेटिंग रूममें बैठकर अपना काम कर रहे थे। मैं बाके साथ बात कर रहा था। अुनसे मैंने कहा "बा जल्दी लौटकर आअिये।

बाने करुण स्वरमें कहा — जोअीअे शुं थाय छे? तमारा बधाना आशीर्वादथी पाछा फरीअे तो सारुं ज छे।*"

बाका यह करुण स्वर मेरे हृदयमें बहुत ही चुभा। अुससे यह स्पष्ट रहा था कि अुन्हें वापिस आनेकी कोअी अुम्मीद नहीं है। और बाका यह डर सच्चा सिद्ध हुआ। बा फिर लौटकर सेवाग्राम नहीं आ सकीं।

बापूजीके लिअे गाड़ीमें स्थान अक्सर पहले ही निश्चित हो जाया करता था। लेकिन अिस बार अितनी भीड़ थी कि रेलवेवाले बापूजीके लिअे कोअी खास प्रबंध न कर सके। अुस रोज न मालूम क्यों महादेवभाअी भी लोगोंसे खास तौर पर मिल रहे थे। मैं अुनके साथ कोअी विशेष संबंध

---

* अर्थ — देखें क्या होता है? तुम सबके आशीर्वादसे लौट आयें तो अच्छा ही है।

और अुसमें अेक लड़केकी मृत्यु भी हो गयी। सेवाग्रामकी सब संस्थाओंमें हलचल मच गयी। हमारे पथ प्रदर्शनके लिये पूज्य किशोरलालभाओी सेवाग्राममें थे अिसलिये हम लोग निश्चिन्त थे।

बम्बओीसे जो लोग वापिस आये अुन्होंने बापूके नामसे 'करो या मरो' नारेका कुछ अिस ढंगसे अर्थ किया जो बापूजीकी अहिंसाके साथ मेल नहीं खाता था। तोड़फोड़के तरीके अपनानेकी जो बात थी वह बापूजीकी अहिंसामें ठीक नहीं बैठती थी। मैंने अुसका विरोध किया। भय यह था कि आश्रमको भी सरकार बन्द कर देगी। कुछ लोगोंकी मान्यता थी कि सरकार अिस बार शायद आश्रम पर हाथ नहीं डालेगी। अिस आशंकाको मिटानेके लिये हमने सरकारको सीधी चुनौती दी और आश्रमको सत्याग्रहका केन्द्र ही बना दिया। आसपासके देहातके जो सत्याग्रही आन्दोलनमें हिस्सा लेना चाहते थे अुनको वहां स्थान दिया। अुसकी अेक कमेटी बन गयी। दूसरी संस्थाओंसे जो लोग सत्याग्रहमें शामिल होना चाहते थे वे आश्रमके शिबिरमें आ गये। मैं और चरखा-संघकी तरफसे श्री सुखाभाअू चौधरी मुख्य थे। बापूजीकी रक्षाके लिये जो चार पुलिस वहां रखे गये थे अुनको सरकारने हटा लिया। अुनमें से रामचन्द्र बोबड़ा नामक पुलिस कान्स्टेबलने अिस्तीफा दे दिया और वह आन्दोलनमें शामिल हो गया।

अुन दिनों किशोरलालभाओी 'हरिजन' के संपादनका काम कर रहे थे। अेमरी साहबके भाषणको यथार्थ मानकर, बापूने ठीक वैसा ही कहा होगा जैसा अेमरीने अपने भाषणमें बापूके शब्दोंको अुद्धृत किया है, अैसा समझ कर अुन्होंने जनताको तोड़फोड़की अिजाजत देनेवाला अेक लेख 'हरिजन' में लिखा था। अिसलिये २१ अगस्तकी रातको बारह बजे पुलिसकी लारी आयी और अुनका मकान घेर लिया गया। हम सबको पता चला तो हम भी वहां पहुंचे। पुलिसने अुनके मकानकी तलाशी ली और कुछ कागजातके साथ अुनको पकड़ लिया। किशोरलालभाओीने मुझसे कहा कि तुम अिन लोगोंको देशके प्रति अिनका सच्चा कर्तव्य समझाओ। अिस पर मैंने अुन्हें समझाया कि आप लोग पेटके लिये यह कैसा निन्दनीय काम कर रहे हैं। अपनी रोटीके लिये किशोरलालभाओी जैसे पुरुषको रातके बारह बजे गिरफ्तार करते आपको शर्म आनी चाहिये। अंग्रेज आज नहीं तो कल भारतसे जाने ही वाले हैं। तब आप क्यों अुन्हें खुश करनेके लिये अैसा घृणित और

नहीं रखता था लेकिन अुसे रोज मुझे भी अुनके प्रति बड़ी श्रद्धा हुई और मैंने अुन्हें प्रणाम किया। वे हंसकर बोले "अच्छी तरहसे रहना।" सचमुच वे भी हमसे हमेशाके लिओ बिछुड़ गये।

बापूकी पार्टी गाड़ीमें जहां तहां बैठी लेकिन मैं बापूजी और बाको बैठानेमें लगा था। डिब्बेमें बहुत भीड़ थी। जैसे तैसे बापूका बिस्तर अन्दर ले गया और बापूको चढ़ाया। अुनको देखकर लोगोंने थोड़ी जगह कर दी। अेक सीट पर बापूका बिस्तर और दूसरी पर मुश्किलसे बाका बिस्तर लगाया। मैंने बा और बापूको प्रणाम किया और बापूने हंसकर मुझे अेक चपत जमायी। मैं वापिस चला आया।

यों तो बापू अनेक बार सेवाग्रामसे बाहर जाते थे। लेकिन अुस दिनकी जुदाओने चित्त पर विछोहका गहरा असर किया। मनमें अैसा ही लगता था कि अिस बार बापूजी लौटकर आनेवाले नहीं हैं निश्चित ही पकड़े जायेंगे। और वही हुआ। पू बा और महादेवभाओ तो मानो सेवाग्रामसे अुस दिन आखिरी विदा लेकर ही गये थे। भगवानकी गति कौन जान सकता है?

२४

अगस्त-आन्दोलन और आश्रमवासी

बापूजीको लग रहा था कि अिस बार सरकार मुझे पकड़ेगी नहीं क्योंकि मैंने अैसा कुछ किया ही नहीं है। लेकिन ८ अगस्त १९४२को बम्बओमें वर्किंग कमेटीकी मीटिंगमें भारत छोड़ो प्रस्ताव पास हुआ। अुस पर बापूजीका जो मार्मिक ओजपूर्ण भाषण हुआ और बापूजीने करेंगे या मरेंगे की जो बुलन्द घोषणा की अुससे हमें लगा कि अब बापूजीका वापिस आना कठिन है।

कांग्रेसने अुस प्रस्ताव पर अमल करनेकी सारी जिम्मेदारी भी बापूजी पर ही छोड़ी थी। हम प्रतीक्षा कर रहे थे कि देखें बापूजी लड़ाओकी क्या रूपरेखा बनाते हैं और कलकी आमसभामें क्या बोलनेवाले हैं। अितनेमें ही ९ अगस्तको सुबह ही रेडियोसे खबर मिली कि बापूजीको पकड़ लिया गया। वर्धामें सभा हुओ और असको भंग करनेके लिओ गोली भी चली।

हो गये। तब मुझे अस्पतालमें ले जाकर फोर्स्ड फीडिंग (जबरदस्तीसे नाकमें नली डालकर दूध पिलाना) शुरू किया। जिस पर मैंने पानी भी छोड़ दिया। मजिस्ट्रेटने केस चलानेका नाटक-सा करके अुसी समय तककी सजाको पर्याप्त मानकर मुझे छोड़ दिया। मेरे केसमें अेक मजेदार घटना यह हुअी कि मजिस्ट्रेट श्री मेहतासे मेरा परिचय पहले हो चुका था। सेवाग्रामकी सड़क बनाते समय अेक मंजुला नामकी बहनका खेत जो बीचमें आता था मैंने अुसे राजी करके प्राप्त कराया था। तबसे वे मुझे पहचानते थे। तब मेहताजीसे मैंने हंसीमें कहा था कि अेक दिन आपकी अदालतसे मुझे अपराधी करार देकर सजा होगी यद्यपि अुस समय अैसा अवसर आनेकी आशा नहीं थी। अेक दिन वे जेलमें आकर मुझसे बोले कि आपकी वाणी सत्य निकली। आपका केस मेरी अदालतमें है। मैं सजा नहीं करना चाहता और कलेक्टर व पुलिस आपको छोड़ना नहीं चाहते। जिससे धर्म संकट अुपस्थित हुआ है। मैंने हंसकर कहा कि आप और मैं अपना अपना काम करें। जिससे मित्रतामें कोअी फर्क नहीं पड़ेगा। यह सब हो रहा था तब भंसालीभाअी तो अपने चरखेमें ही मस्त थे।

आश्रममें जितनी बहनें थीं वे सब जेल चली गअी थीं। चिमन लालभाअीको पुलिसने पकड़ा पर सात दिन हवालातमें रखकर छोड़ दिया। जेलकी अव्यवस्थाके खिलाफ मैंने अुपवास किया जिसलिअे मुझे भी छोड़ दिया। अुस समय वर्धामें श्री शालिग्रामसिंह अिन्स्पेक्टर और श्री ताराचन्द डी अेस पी थे। अिन लोगोंने काफी जुल्म किये। पवनार षड्यन्त्र केसके नामसे तार काटने और रेलवे लाअिन काटनेका अेक झूठा केस बनाया गया। झूठे गवाह तैयार किये गये। तब गवाहोंसे मैं व्यक्तिगत रूपसे मिला और पूछा कि सचमुच तुमने अैसा कुछ देखा है क्या? अेक भी गवाह अैसा नहीं निकला जो अुस केसके बारेमें कुछ भी जानता हो। जिस तरहसे पुलिस अहलकारी भी वैसा ही न चाहते थे। अुनका नाटक लंबा चला जिसमें अब्दुलसलामजीको दो सालकी सजा हुअी। लेकिन बादमें अपील करने पर वे छूट गये। मुखबिरको पलट जानेके जुर्ममें सजा हुअी।

आश्रमके सत्याग्रहियोंके आन्दोलनमें सबसे प्रसिद्ध घटना तो भंसाली-भाअीके अुपवासकी रही जिसका प्रचार सारे हिन्दुस्तानमें हुआ। वे बहुत समय तक सत्याग्रहकी हवासे निर्लिप्त रहे। मैंने अेक दिन हंसकर अुनसे कहा

देशद्रोहका काम करते हैं?" अुस समयकी अुनकी मनस्थितिमें मेरी बातका क्या असर हो सकता था? वे चुपचाप किशोरलालभाअीको लेकर चले गये।

आश्रमसे काफी लोगोंने सत्याग्रह किया और जेल गये। पहला जत्था बहनोंका गया। अुसमें पू॰ शकरीबहन कंचनबहन कान्ताबहन [illegible] और मनु गांधी गयीं। वर्धामें सभाओं और जुलूसों पर प्रतिबंध था। अिन्होंने जाकर अुसे तोड़ा और गिरफ्तार हो गयीं।

अुस समय सेवाग्रामके कुछ नौजवान भी बाहर निकले। हमें अुम्मीद नहीं थी कि सेवाग्राममें से भी कुछ लोग जेलके लिअे तैयार होंगे। लेकिन अैसे लोग भी निकले जो पहले कोअी खास हिस्सा आन्दोलनमें नहीं लेते थे। श्री बापूराव देशमुख, महादेवराव कोल्हे, चन्द्रभान तथा अन्य कअी लड़के सत्याग्रहमें कूद गये। सबसे महत्त्वका आदमी तो तुकाराम साबले निकला, जो चरखा-संघका बुनकर था। अुस पर ६–७ बच्चोंका भार था। लेकिन वह बड़ी दृढ़तासे सत्याग्रहमें शामिल हुआ और कह सकते हैं कि वह सेवाग्रामके सत्याग्रहमें सर्वश्रेष्ठ सत्याग्रही सिद्ध हुआ। अुसके घरमें छह बरसके बच्चेसे लेकर अुसकी पत्नी तक सब लोग सूत कातकर गुजारा करते थे। सत्याग्रहियोंके परिवारोंके लिअे हमने थोड़ीसी मदद भी दी लेकिन वह नहींके बराबर थी।

मार्चके हिसाबसे सेलूसर्कलके जो सेवाग्रामसे ५–६ मील दूर है सत्याग्रही सबसे अधिक [illegible] थे। सत्याग्रहियों पर वहांकी पुलिसने काफी जुल्म किये। दिनमें लड़कोंको पकड़ लेते और रातमें अुनको अंधेरेमें छोड़ते और अकेलेमें भी मारते। फिर भी सत्याग्रही लोग बहादुरीसे अपना काम करते रहे। श्री मनोहरजी दीवान वर्धा जिलेके सत्याग्रहका संचालन करते थे। अुनकी सूचनाके अनुसार हम सत्याग्रहके लिअे सत्याग्रही भेजते थे। राजाराम बाबा भी हमारे शिविरमें शामिल हो गया। अुसकी गिरफ्तारी हुअी और अुसको सजा हो गयी। जब पुलिसके अत्याचार बढ़े तो मैं आश्रमसे सत्याग्रहियोंकी अेक टोली लेकर वर्धा गया और सभा तथा जुलूसका कानून तोड़कर पकड़ा गया। चूंकि जेलमें ज्यादा जगह नहीं थी। अिसलिअे सरकारने [illegible] जेल बना दिया। वहां छोटीसी गंदी और अंधेरी जगहमें बहुतसे सत्याग्रहियोंको २४ घंटे बन्द रखते और वहीं खाना भी खिलाते थे। अिसका हम लोगोंने विरोध किया। जब अधिकारियोंने अिस पर कोअी ध्यान नहीं दिया तो मैं और कअी अन्य साथी अनशन करनेके लिअे मजबूर

हो गये। तब मुझे अस्पतालमें ले जाकर फोर्स्ड फीडिंग (जबरदस्तीसे नाकमें नली डालकर दूध पिलाना) शुरू किया। अिस पर मैंने पानी भी छोड़ दिया। मजिस्ट्रेटने केस चलानेका नाटक-सा करके अुसी समय तककी सजाको पर्याप्त मानकर मुझे छोड़ दिया। मेरे केसमें अेक मजेदार घटना यह हुआी कि मजिस्ट्रेट श्री मेहताके मेरा परिचय पहले हो चुका था। सेवाग्रामकी सड़क बनाते समय अेक मंजुला नामकी बहनका खेत जो बीचमें आता था मैंने अुसे राजी करके प्राप्त कराया था। तबसे वे मुझे पहचानते थे। तब मेहताजीसे मैंने हंसीमें कहा था कि अेक दिन आपकी अदालतमें मुझे अपराधी करार देकर सजा होगी यद्यपि अुन्हें अैसा अवसर आनेकी आशा नहीं थी। अेक दिन वे जेलमें आकर मुझसे बोले कि आपकी बात सच निकली। आपका केस मेरी अदालतमें है। मैं सजा नहीं करना चाहता और कमिश्नर व पुलिस आपको छोड़ना नहीं चाहते। अिससे धर्म संकट अुपस्थित हुआ है। मैंने हंसकर कहा कि आप और मैं अपना अपना काम करें। अिससे मित्रतामें कोअी फर्क नहीं पड़ेगा। यह सब हो रहा था तब भंसालीभाअी तो अपने चरखेमें ही मस्त थे।

आश्रममें जितनी बहनें थीं वे सब जेल चली गयी थीं। जिमन लालभाअीको पुलिसने पकड़ा पर सात दिन हवालातमें रखकर छोड़ दिया। जेलकी अव्यवस्थाके खिलाफ मैंने अुपवास किया अिसलिअे मुझे भी छोड़ दिया। अुस समय वर्धामें श्री भाअियाजीसिंह जिलेवेकर और श्री ताराचन्द जी जैन थी थे। अिन लोगोंने काफी जुल्म किये। पवनार पहुँचने कैम्पके आसपास तार काटने और रेलवे लाअिन काटनेका अेक झूठा केस बनाया गया। झूठे गवाह तैयार किये गये। सब गवाहोंसे मैं व्यक्तिगत रूपसे मिला और पूछा कि सचमुच तुमने अैसा कुछ देखा है क्या? अेक भी गवाह अैसा नहीं निकला जो अुस केसके बारेमें कुछ भी जानता हो। जिस तरहसे पुलिस चाहती थी वैसा ही वे कहते थे। अलबत्ता नाटक लंबा चला जिसमें बल्लभस्वामीको दो सालकी सजा हुआी। लेकिन बादमें अपील करने पर वे छूट गये। मुख्तियारको चन्द आनेके जुर्मानेकी सजा हुआी।

आश्रमके सत्याग्रहियोंके आन्दोलनमें सबसे प्रसिद्ध घटना तो भंसाली भाअीके अुपवासकी रही जिसका प्रचार सारे हिन्दुस्तानमें हुआ। वे बहुत समय तक सत्याग्रही हलचलसे निर्लिप्त रहे। मैंने अेक दिन हंसकर अुनसे कहा

कि आप वर्धामें बैठकर चरखा कातें तो कैसा हो। लोगोंको मदद मिलेगी। अुनको यह सूचना बहुत पसन्द आयी। बोले मैं तो तैयार हूँ। मैंने कहा कि काकासाहबसे पूछकर आपको वहाँ भेजनेकी व्यवस्था करेंगे। लेकिन अुनको जितने समयके लिये भी रुकना नहीं था। अुन्होंने अपना चरखा अुठाया और वर्धामें लक्ष्मीनारायणके मंदिरके चबूतरे पर बैठकर कातना शुरू कर दिया। मुन्नालालभाअी रमणलालभाअी तथा मोहनसिंहभाअी भी वहाँ गये थे। बस भंसालीभाअीके चरखेके आसपास बच्चे अिकट्ठे हो गये। पुलिस तो किसीका भी जमा होना कानूनके विरुद्ध समझती थी। अिसलिये बच्चोंको अुसने धमकाया और जब भंसालीभाअी तथा मुन्नालालभाअीने कुछ कहा तो भंसालीभाअीको पकड़कर अकोला ले जाया गया। वहाँ पानीके बगैर अुपवास करने पर अुन्हें फोर्स्ड फीडिंग किया गया लेकिन सफलता नहीं मिली। बादमें अुन्हें छोड़ दिया गया। रमणलालभाअी और मोहनसिंहभाअीको पंद्रह दिनके बाद छोड़ा। मुन्नालालभाअीने कुछ कहा तो अुन्हें फिर गिरफ्तार कर लिया। भंसालीभाअीने जेलमें जाते ही फिर अुपवास शुरू कर दिया। अिस पर अुनको तो छोड़ दिया लेकिन मुन्नालालभाअीको रख लिया। फिर तो भंसालीभाअीको कअी बार पकड़ा और कअी बार छोड़ा। भंसालीभाअीको लगा कि मुझे अिस अन्यायी राज्यमें जीना ही नहीं चाहिये। हम लोग अुन्हें काफी समझाते थे लेकिन अुन्हें अुपवास करके मरनेकी धुन लग गअी थी।

चिमूरमें पुलिसने स्त्रियों पर काफी अत्याचार किये। अुनकी निष्पक्ष जाँचकी माँग करनेके लिये भंसालीभाअी दिल्लीमें श्री अणेके घर पहुँचे। मैं भी साथ था। श्री अणे अुस समय वाअिसरॉयकी कौंसिलके सदस्य थे। अणे साहबने हमारा प्रेमसे स्वागत किया और आनेका कारण पूछा। हमने सारा हाल कह सुनाया और निष्पक्ष जाँचकी माँग की। अणे साहबने कहा कि जहाँ आन्दोलन चलता है वहाँ कुछ अवांछनीय घटनायें भी हो ही जाती हैं। अिस अुत्तरसे भंसालीभाअीको संतोष नहीं हुआ और अुन्होंने अुपवास करनेका अपना निर्णय बताया। दुर्भाग्यसे अुसी दिन श्री अणेकी अेक पुत्रीका देहान्त हो गया था। यह बात हमने अुनके मुँहसे अुसी समय जानी। लेकिन तब भी अुन्होंने भंसालीभाअीसे कहा कि ठहरिये आपके ठहरनेका प्रबन्ध कर दूँ। मुझे तो अुपवास करना नहीं था अिसलिये मुझे भोजन

कराया गया। थोड़ी ही देरमें पुलिसवाले आ गये और हमें चिमूर न जानेका नोटिस दिया। हमने अिनकार किया तो हमें जेलमें ले जाया गया और वहांसे ८ नवंबरको हमें सेवाग्राम भेज दिया गया। १ तारीखको भंसालीभाओ पैदल ही चिमूरके लिये निकले क्योंकि वे वहां जाकर अुपवास करना चाहते थे जिससे लोगोंका ध्यान चिमूरके अत्याचारोंकी ओर आकर्षित हो। लेकिन सरकार नहीं चाहती थी कि वे चिमूर पहुंचें अिसलिये पुलिसने रास्तेमें ही अुन्हें पकड़ लिया और सेवाग्राम पहुंचा दिया। २ तारीखको भंसालीभाओ फिर निकले और २२ को चिमूर पहुंचे। पुलिस फिर अुन्हें सेवाग्राम ले गयी। अिस तरह कभी बार हुआ। वर्धामें चिमूर-दिवस मनाया गया। अिस सारे अरसेमें भंसालीभाओका अुपवास चालू ही था।

अेक बार जब भंसालीभाओ चिमूरके लिये पैदल निकले तो हमको लगा कि वे चिमूर तक नहीं पहुंच सकेंगे रास्तेमें ही कहीं अुनका शरीर गिर जायगा। अिसलिये मैं और शीलावतीबहन रेल द्वारा अनके समाचार जाननेको चिमूरके लिये निकले। चिमूरसे चार-पांच मील अिधर हमने सड़क पर भंसालीभाओको पकड़ा। अुस समय तेज धूप पड़ रही थी। भंसालीभाओने पानी भी छोड़ दिया था। वे सिर पर भीगा हुआ कपड़ा रखकर चल रहे थे। अुनकी अिस सहिष्णुताको देखकर मेरे आश्चर्यका पार न रहा। चिमूर पहुंचते ही दूसरे दिन पुलिसने अुनको वहां गिरफ्तार कर लिया और सेवाग्राम लाकर छोड़ दिया। लेकिन वे कहां माननेवाले थे? फिर निकल पड़े। तब तो हमको निश्चय हो गया कि अब भंसालीभाओ चिमूर नहीं पहुंच सकेंगे। अिसलिये मैं शीलावतीबहन और मोहनसिंहभाओ बैलगाड़ी लेकर अुनके साथ निकले और यह तय हुआ कि चिमूरके आधे रास्तेसे अिधर यदि भंसालीभाओका शरीर छूट जाय तो सेवाग्राममें अुनके शरीरको दाह-संस्कारके लिये ले आयेंगे और आधे रास्तेसे अुधर छूटे तो चिमूर ले जाकर दाह-संस्कार करेंगे। सेवाग्रामसे चिमूर सीधे रास्ते करीब ६१ मील पड़ता था। जब हम लोग ४ मील दूर निकल गये तो अेक गांवमें जहां हमारा मुकाम था पुलिस पहुंच गयी और हम सबको वापिस हिंगनघाट ले आयी। पुलिसवालोंने हाथ जोड़कर हमें वापस जानेको कहा और कहा कि यह बार हम बैठने लिये कह रहे हैं। बादमें भंसालीभाओको मोटर द्वारा सेवाग्राम लाकर छोड़ दिया।

कि आप चर्खेमें बैठकर चरखा कातें तो कैसा हो। लोगोंको मदद मिलेगी। अुनको यह सूचना बहुत पसन्द आयी। बोले मैं तो तैयार हूं। मैंने कहा कि काकासाहबसे पूछकर आपको वहां भेजनेकी व्यवस्था करेंगे। लेकिन अुनको अितने समयके लिअे भी रुकना नहीं था। अुन्होंने अपना चरखा अुठाया और चर्खेमें लक्ष्मीनारायणके मंदिरके चबूतरे पर बैठकर कातना शुरू कर दिया। मुन्नालालभाजी रमणलालभाजी तथा मोहनसिंहभाजी भी वहां गये थे। सब मंसालीभाजीके चरखेके आसपास बच्चे अिकट्ठे हो गये। पुलिस तो किसीका भी जमा होना कानूनके विरुद्ध समझती थी। अिसलिअे बच्चोंको अुसने धमकाया और जब मंसालीभाजी तथा मुन्नालालभाजीने कुछ कहा तो मंसालीभाजीको पकड़कर अकोला ले जाया गया। वहां पानीके बगैर अुपवास करने पर अुन्हें फोर्स्ड फीडिंग किया गया लेकिन सफलता नहीं मिली। बादमें अुन्हें छोड़ दिया गया। रमणलालभाजी और मोहनसिंहभाजीको पंद्रह दिनके बाद छोड़ा। मुन्नालालभाजीने कुछ कहा तो अुनको फिर गिरफ्तार कर लिया। मंसालीभाजीने जेलमें जाते ही फिर अुपवास शुरू कर दिया। अिस पर अुनको तो छोड़ दिया लेकिन मुन्नालालभाजीको रख लिया। फिर तो मंसालीभाजीको कअी बार पकड़ा और कअी बार छोड़ा। मंसालीभाजीको लगा कि मुझे अिस अन्यायी राज्यमें जीना ही नहीं चाहिये। हम लोग अुन्हें काफी समझाते थे लेकिन अुन्हें अुपवास करके मरनेकी धुन लग गयी थी।

चिमूरमें पुलिसने स्त्रियों पर काफी अत्याचार किये। अुनकी निष्पक्ष जांचकी मांग करनेके लिअे मंसालीभाजी दिल्लीमें श्री अणेके घर पहुंचे। मैं भी साथ था। श्री अणे अुस समय वाअिसरॉयकी कौंसिलके सदस्य थे। अणे साहबने हमारा प्रेमसे स्वागत किया और आनेका कारण पूछा। हमने सारा हाल कह सुनाया और निष्पक्ष जांचकी मांग की। अणे साहबने कहा कि जहां आन्दोलन चलता है वहां कुछ अवांछनीय घटनायें भी हो ही जाती हैं। अिस अुत्तरसे मंसालीभाजीको सन्तोष नहीं हुआ और अुन्होंने अुपवास करनेका अपना निर्णय बताया। दुर्भाग्यसे अुसी दिन श्री अणेकी अेक पुत्रीका देहान्त हो गया था। यह बात हमने अुनके मुंहसे अुसी समय जानी। लेकिन तब भी अुन्होंने मंसालीभाजीसे कहा कि चलिये आपके ठहरनेका प्रबंध कर । मैं तो अुपवास करता नहीं था अिसलिअे मुझे भोजन

पता चला और भय हो गया कि शायद बापूजी अिस बुपवासमें चले जायेंगे। सरकारके मनमें भी कुछ अैसी ही शंका थी अिसलिये बापूजीसे मिलनेकी लोगोंको बहुत बड़ी छूट द दी गयी थी। आश्रमसे किसीका बापूजीके पास जानेका विरादा नहीं था लेकिन अखबारमें बापूजीके चिन्ताजनक समाचार आने लगे और अैसा लगने लगा कि शायद बापूजी चले जायेंगे। अतः अुनके दर्शन करनेकी अिच्छासे मैं व्याकुल हो अुठा।

आश्रम कमेटी पहले किसीको भी खर्च देनेको तैयार नहीं थी। परन्तु पूनासे रामदासभाओका मेरे फोन आया कि बलवंतसिंह आ सकते हैं। अिसलिये कमेटीने मुझे जानेकी आज्ञा दे दी। मैं २८ तारीखको पूना पहुंचा। समय अितना हो गया था कि मेरी मुलाकातकी अर्जी भी मंजूर नहीं हो सकती थी। क्योंकि मुलाकातके दिन बीत चुके थे। अर्जी दी थी लेकिन नामंजूर हो गयी। सद्भाग्यसे मि कटेली जिनके हाथमें आगाखां महलकी व्यवस्था थी पहले यरवडा जेलमें सुपर जेलर थे और मेरा अुनके साथ परिचय था। जब रामदासभाओने अुनसे कहा कि बलवंतसिंह सेवाग्रामसे आये हैं, तो अुन्होंने अपने अधिकारसे मुझे भीतर जाने दिया। दूसरे दिन बापू अुपवास खोलनेवाले थे। मैं जब वहां पहुंचा तो बापू खाटमें पड़े थे। मुझे देखकर हंसे और बोले अरे, मैं तो भाया छोड़ बैठा था। आ गया? क्यों आपको बिलकुल ही भूल गया? बापूके अिस वचनमें मेरे लिये और पौनेभाकके लिये गहरी भावना भरी थी। बापूकी अुस समयकी मुद्रा और अुनकी प्रेमभरी दृष्टिका वर्णन करना मेरे लिये असंभव है।

मैंने नम्रतासे कहा — मैं आपको भूला नहीं हूं। लेकिन आज कुछ नहीं कर सकता हूं। आपकी दया ही करती है लेकिन मैं अपने ढंगसे कर सकता हूं।

मुलाकातें काफी थीं। बापूजी काफी थके हुअे थे। शायद मुझसे कहनेको अनेक बातें अुनके दिलमें भरी थीं। पर मैं नहीं चाहता था कि बापू अेक शब्द भी बोलनेका कष्ट करें। अिसलिये मैं अुनको प्रणाम करके हट गया। बापूजीके आनके कार्यक्रमके बारेमें थोड़ी बात मीराबहनसे जान ली।

पूज्य बासे मिला। वे मुरझाओ हुओ और अुदास अेक खाट पर बैठी थीं। मैंने प्रणाम किया। बाने पूछा, "क्यों अच्छे हो? सेवाग्राममें सब अच्छे हैं?" अुन्होंने सबके नाम ले लेकर आश्रमवासियोंकी राजीखुशी पूछी।

सत्याग्रहकी लड़ाअीमें मसालीभाअीका अपवास आश्रमकी तरफसे अेक महान बलिदान था। मंसालीभाअी मृत्युके बिलकुल नजदीक पहुंच गये थे। अेक रोज तो अनकी नाजुक स्थितिको देखकर हमें लगा कि शायद रातको ही वे चल बसेंगे। अुस रोज पुलिसने अखाड़ावाडी पर घेरा डाल दिया था। लेकिन मेरे मनमें कुछ अैसा विश्वास था कि मंसालीभाअी अपवाससे मरनेवाले नहीं हैं। अन्तमें सरकारने चिमूर-कांडकी जांच करनेकी मंसालीभाअीकी मांग स्वीकार की और ९३ दिनके पश्चात् अनका अपवास अीश्वर-कृपासे पूरा हुआ। अुसमें वे विजयी हुअे और आज भी देहातमें बैठकर लोगोंकी बहुत बड़ी सेवा कर रहे हैं।

अिस सत्याग्रहका अितिहास तो स्वतंत्र रूपसे लिखनेकी चीज है। मुझे यहां अितना ही जिक्र करना है कि आश्रमने अुसमें जितना भी संभव था सब कुछ किया।

बापूजीको पकड़कर कहां ले गये? क्या हुआ? अिसका कुछ भी पता बहुत दिनों तक नहीं चलने दिया गया। धीरे-धीरे थोड़े दिनके बाद गुप्त रूपसे पता चला कि बापूजीको आगाखां महलमें रखा गया है। करीब अेक महीने बाद बापूजीका दुर्गाबहनके नाम किया हुआ तार मिला। महादेवभाअीकी मृत्युके बारेमें अफवाह तो बाहर आ गयी थी लेकिन बापूजीकी तरफसे कोअी प्रामाणिक खबर नहीं मिली थी। महादेवभाअीकी मृत्युसे आश्रमके लोगोंको बड़ा भारी धक्का लगा। दुर्गाबहन और महादेवभाअीका लड़का नारायण वहीं पर थे। आश्रममें अेकदम गहरा शोक छा गया। लेकिन दुर्गाबहन बहुत धैर्यवान निकलीं। अुन्होंने बहुत धीरज और समतासे काम लिया। नारायण भी बहुत समझदार लड़का निकला।

गांवमें महादेवभाअीकी मृत्यु पर शोकसभा की गयी। मैं दुर्गाबहनके हाथों हरिजनोंका विठ्ठल-मन्दिर हिन्दूमात्रके लिअे और सवर्णोंका राम-मन्दिर हरिजनोंके लिअे खोल दिया गया।

नारायण स्वयं भी सत्याग्रहमें शामिल होना चाहता था लेकिन दुर्गाबहनकी सान्त्वनाके लिअे अुसको समझाया गया और वह नहीं गया।

बापूजीका अुपवास

फरवरी १९४३ में बापूने आगाखां महलमें २१ दिनका अुपवास आरम्भ कर दिया। जब बापूजीके अुपवासका बयान निकला तब हम सबको

पता चला और भय हो गया कि शायद बापूजी अिस अुपवासमें चले जायंगे। सरकारके मनमें भी कुछ अैसी ही शंका थी अिसलिअे बापूजीसे मिलनेकी कार्योंको बहुत बड़ी छूट दे दी गअी थी। आश्रमसे किसीका बापूजीके पास जानेका अिरादा नहीं था लेकिन अन्तमें बापूजीके चिन्ताजनक समाचार आने लगे और अैसा लगने लगा कि शायद बापूजी चले जायंगे। अतः अुनके दर्शन करनेकी अिच्छासे मैं व्याकुल हो अुठा।

आश्रम कमेटी पहले किसीको भी खर्च देनेको तैयार नहीं थी। परन्तु पूनासे रामदासभाअीका फोन आया कि बलवंतसिंह आ सकते हैं। अिसलिअे कमेटीने मुझे जानेकी आज्ञा दे दी। मैं २८ तारीखको पूना पहुंचा। समय अितना हो गया था कि मेरी मुलाकातकी अर्जी भी मंजूर नहीं हो सकती थी। क्योंकि मुलाकातके दिन बीत चुके थे। अर्जी दी भी लेकिन नामंजूर हो गअी। सद्भाग्यसे मि० कटेली जिनके हाथमें आगाखां महलकी व्यवस्था थी पहले यरवडा जेलमें सुपर जेलर थे और मेरा अुनका साथ परिचय था। जब रामदासभाअीने अुनसे कहा कि बलवंतसिंह सेवाग्रामसे आये हैं, तो अुन्होंने अपने अधिकारसे मुझे भीतर जाने दिया। दूसरे दिन बापू अुपवास छोड़नेवाले थे। मैं जब वहां पहुंचा तो बापू पानी पी रहे थे। मुझे देखकर हंसे और बोले: अरे, मैं तो मरता छोड़ बैठा था। आ गया? क्यों गायको बिलकुल ही भूल गया? बापूके अिस वचनमें मेरे लिअे और गोसेवाके लिअे गहरी भावना भरी थी। बापूकी अुस समयकी मुद्रा और अुनकी प्रेमभरी दृष्टिका वर्णन करना मेरे लिअे असम्भव है।

मैंने नम्रतासे कहा — मैं गायको भूला नहीं हूं। लेकिन आज कुछ नहीं कर सकता हूं। गोसेवा ही करती है लेकिन मैं अपने ढंगसे कर सकता हूं।

मुलाकातें चालू थीं। बापूजी काफी थक गये थे। शायद मुझसे कहनेको अनेक बातें अुनके दिलमें भरी थीं। पर मैं नहीं चाहता था कि बापू अक शब्द भी बोलनेका कष्ट करें। अिसलिअे मैं अुनको प्रणाम करके हट गया। बापूजीके आपके मार्गदर्शनके बारेमें थोड़ी बात मीराबहनसे जान ली।

पूज्य बा बीमार थीं। वे मुरझाअी हुअी और अुदास अेक खाट पर बैठी थीं। मैंने प्रणाम किया। बाने पूछा: "क्यों अच्छे हो? सेवाग्राममें सब अच्छे हैं?" अुन्होंने सबका नाम ले लेकर आश्रमवासियोंकी राजीखुशी पूछी।

मैंने थोड़ेमें सब बताया और कहा "बा आप सेवाग्राम आयेंगी तो आपको वहां आराम मिलेगा।"

बाने कहा "अब तो सेवाग्राम जानेकी आशा नहीं दीखती है। मालूम होता है मैं तो यहीं मरूंगी। देखें भगवान क्या करता है।"

कुमीबा बापूजीकी बड़ी बहन को पहली बार मैंने आगाखां महलमें देखा। अन्तमें प्यारेलालजी और सुशीलाबहनसे मिलकर मैं चला आया।

जब मैंने आगाखां महलमें प्रवेश किया तो वह मुझे स्मशान जैसा भयावना प्रतीत हुआ था। और आखिर वह स्मशान ही बन गया।

२५

बाका स्वर्गवास और बापूजीकी रिहाई

बापूजीसे मिलकर मैं बम्बई होता हुआ सेवाग्राम आ गया। बादमें १९४३ के दिसम्बरमें बंगाल चला गया। वहां मैं सतीशबाबूके साथ काम करता रहा। अचानक २२ फरवरी १९४४की रातको ९ बजे रेडियो बोल उठा कि कस्तूरबा आज इस दुनियासे चली गयीं। सबको भारी आघात पहुंचा। दूसरे दिन खादी-प्रतिष्ठानमें उपवास, सूत्रयज्ञ और प्रार्थना हुई। सब गंगास्नान करने गये और पूज्य बाको अंजलि प्रदान की। मैं बाके बहुत निकट सम्पर्कमें आया था, अतएव मेरे कभी मित्रोंने मुझसे बाके विषयमें कुछ लिखनेको कहा। मास्टरजी क्षितिकंठ लाहाका अनुरोध सबसे अधिक और आग्रहपूर्ण था। मैंने उन्हें लिखा:

"आपकी इच्छा है कि मैं स्वर्गीय पूज्य बाके निकट परिचयके कुछ संस्मरण आपको लिखकर दूं। किन्तु मैं आपको उनके बारेमें क्या लिखूं? मातृप्रेमसे अतृप्त मेरा मन बाके मातृस्नेहसे सांत्वना पाता था, क्योंकि मेरी मां मुझे बचपनमें ही छोड़कर चली गयी थी। उनका पवित्र दर्शन और सम्भाषण मन लिए गया जैसा ही पवित्र था। आज मैं अपनेको अनाथ बच्चेकी तरह महसूस करता हूं। उनके लिये रातभर मेरा दिल रोया है। स्वर्गमें बा गयीं। अन्तर रुककर वेदना और भी तीव्र हो गयी है। किन्तु बापूजी आज भी अमर पर हैं। सचमुच पूज्य बाकी प्रेममय फटकार अब सुननेको

नहीं मिलेगी। मुनके पवित्र संस्मरण तथा मुनके अनेक असाधारण सद्गुणोंके विचारसे मेरा हृदय भर आता है और बुद्धिका भी यही हाल हो जाता है।

> भरत महा महिमा जलरासी।
> मुनि मति ठाढ़ि तीर अबला-सी॥

फिर भी आपका प्रेम और पूज्य बाके प्रति आपकी अगाध श्रद्धा मुझे लिखनेकी प्रेरणा देती है। मिसलिमे थोड़ेसे घरेलू संस्मरण सिर्फ आपकी जानकारीके लिमे लिखता हूं। बाका जीवन मितना सार्वजनिक था कि सब कोमी मुनके जीवनके बारेमें सब कुछ जानते हैं। तो भी मुझे जो मुनके चरण-कमलोंके निकट रहनेका सौभाग्य मिला और मैंने जिस दृष्टिसे मुन्हें देखा मुससे शायद आपको कुछ विशेष जानकारी मिले। अस्तु।

यह तो आप जानते ही हैं कि बा बहुत कम पढ़ी-लिखी थी। तो भी गुजराती और हिन्दीमें अनेक धार्मिक ग्रंथोंका मुनका अभ्यास चालू ही रहता था। मितना ही नहीं मिस मुम्रमें भी वे अेक छोटे विद्यार्थीकी तरह गीताके श्लोकोंका शुद्ध पाठ करने तथा मुन्हें कंठस्थ करनेका सतत प्रयत्न किया करती थी। और हममें से जिनके पाससे वे भाषा तथा ग्रंथों संबंधी कुछ भी सीख सकती थीं बड़ी श्रद्धाके साथ सीखा करती थी। मितनी पूज्य और मितनी बुजुर्ग होते हुमे भी किसीसे पढ़ते समय वे अेक योग्य विनयी विद्यार्थीकी तरह शिष्यभावसे ही पढ़ा करती थीं। मुझे मुनको कुछ दिन रामायण पढ़ानेका सौभाग्य मिला था। मुस समय मैंने मुनसे आदर्श विद्यार्थी बननेका पाठ पढ़ा था।

"बाकी मितनी मुम्र होते हुमे भी और अेक महापुरुषकी सहधर्मिणी बननेका सौभाग्य प्राप्त होने पर भी मिसके अभिमानने या मिस स्थितिसे सुविधा भोगनेकी भावनाने मुन्हें स्पर्श तक नहीं किया था। सेवाग्राममें मितने सेवक-सेविकाओंके रहते हुमे भी बा अपना काम आप ही करनेका आग्रह रखती थीं। अपना चेम्बर पॉट व कमोड भी जब तक खुद बीमार होकर बिस्तरमें न पड़ जायें किसीको साफ नहीं करने देती थीं। मितना ही नहीं आश्रमके सामुदायिक कुछ काम तो अपने हाथों किये बिना वे रहती ही नहीं थी। मिसके बिना मुनको चैन ही नहीं पड़ता था। आश्रमके बीमारोंकी खबरदारी तो बा रखती ही थी। परन्तु मितनी कमजोरीके बावजूद बापूजीकी कुछ न कुछ शारीरिक सेवा किये बिना भी वे नहीं रह

सकती थीं। आश्रमके तमाम लड़के-लड़कियों पर वे अेक माताकी तरह की निगरानी रखती थीं।

“बाकी गोभक्ति अद्भुत थी। जब गोपूजाका कोअी त्योहार आता तो बा मुझसे कहतीं — बसंत अेक बछड़ेवाली गाय मुझे पूजाके लिये चाहिये। अुनकी प्रेममय गोपूजा देखकर मुझे यशोदा माताकी याद आ जाती थी। अक्सर मैं अुनको देवकी नामकी गाय दिया करता था जो वास्तवमें हमारी गोशालाकी मा थी और सचमुच देवकी जैसी ही निरीह और प्रेमकी मूर्ति थी।

अगर आश्रममें बा न होतीं तो हमें त्योहारोंका पता चलना असम्भव सा ही था। कोअी त्योहार हुआ कि बाकी सीधीसादी प्रथाओं जो आश्रमके अस्वाद-व्रतकी व्याख्याओंमें आतीं हमारे सामने आ ही जाती थीं। तब पता चलता था कि आज अेकादशी या संक्रान्तिका दिन है।

देश या विदेशके राजनीतिक मामलोंमें अुनकी स्वतंत्र दिलचस्पी रहते हुअे भी वे रोजाना अखबार पढ़कर सब बातोंकी जानकारी रखती थीं। लड़ाअीकी अिस मानव-संहारिणी विध्वंस-लीलाके बारेमें सुनकर या पढ़कर अुनको काफी वेदना होती थी। अेक रोज कुछ बात चल रही थी कि वे बोलीं — ‘आ लड़ाअी तो जगतनो नाश करीने ज शान्त थशे के शुं?’ (यह लड़ाअी जगतका नाश करके ही शान्त होगी क्या?) बंगालके दुष्कालके बारेमें आगाखां महलसे अेक पत्रमें अुन्होंने लिखा था — ‘बंगाळना समाचार सांभळीने तो हैयुं फाटे छे। आवे बंगाळमां तो आकाश ज फाटी पडयुं छे। कोण जाणे अीश्वर शुं करशे?’ (बंगालके समाचार सुनकर हृदय फट जाता है। बंगाल पर तो आकाश ही फट पड़ा है। न मालूम भगवान क्या करेगा?) अिससे आप जान सकते हैं कि देशकी कितनी चिन्ता अुनको रहती थी।

बा यद्यपि बहुत कम पढ़ी-लिखी थीं तो भी अंग्रेज मेहमानोंका टूटी-फूटी अंग्रेजीमें ही स्वागत करती थीं और अुनके साथ कुछ बातचीत भी अंग्रेजीमें कर लिया करती थीं। मगर बाहरी दुनियाकी बात बापूजीके लिअे छोड़ देतीं। बाके बिना आश्रम सूना-सा लगा करता था।

जिस दिन बापूजी बम्बअी गये थे मैं वर्धा स्टेशन तक अुन्हें पहुंचाने गया था। गाड़ी लेट थी। स्टेशनके वेटिंग रूममें बापू तो कुछ

पूज्य कस्तूरबा गोपूजाके लिये तैयार हैं। लेखक बछड़ेको पकड़कर बैठे हैं।

बापूजीके हस्ताक्षरोंका नमूना

[यह पत्र पुस्तकके पृष्ठ १५९ पर छपा है ।]

"बा बराबर नियमित रूपसे सूत कातती थीं। जब तक बीमारीके कारण बिलकुल शय्याशायी न हो जातीं तब तक अनका सूत कातना नियमित चलता था और प्रार्थनाके समय देखा जाता था कि सबसे ज्यादा सूत कातनेवालोंमें अेक बा भी होती थीं। कितने ही समय तक बससस रहने पर भी बापू तथा आश्रमको छोड़कर जलवायु परिवर्तन करना न अपने पुत्र तथा स्नेहियोंके पास जाना अुन्होंने कभी पसन्द नहीं किया।

पूज्य बाके प्रति बापूका जितना आदर था कि जब बा कहीं बाहर जातीं या बाहरसे आतीं तो बापू अपने जरूरीसे जरूरी कामको भी छोड़कर बाको पहुंचाने या अुनका स्वागत करने आश्रमके बाहर तक जाते थे। बापू कितनी ही बार कहा है मुझे और बाको नजदीकसे जाननेवाले लोगोंमें से अैसे ही लोग ज्यादा हैं जिन्हें मुझ पर जितनी श्रद्धा है अुससे कहीं ज्यादा बा पर है। पू बाके जैसा पवित्र आदर्श जीवन और मृत्यु भीश्वर सबको दे अैसी प्रार्थना करें। [अुनकी पवित्र मृत्युका शोक तो हम क्या करें?

मेरा मुझ पर कुछ नहीं जो कुछ है सो तोर।
तेरा मुझको सौंपते क्या लागत है मोर?

"बस बा जिसकी थीं अुसके पास चली गयीं। हम सबको भी अेक दिन जाना है। किसी संतने कहा है अैसा काम करो कि रोते आये थे हंसते हंसते जाओ।

"पूज्य बा हंसते हंसते गयीं। वे जितनी सुखी व पवित्रात्मा थीं कि अुनकी आत्माको हमेशा ही शांति थी। और जिसमें संदेह नहीं कि वे भगवानकी गोदमें शान्तिपूर्वक विश्राम करेंगी।

२१-२-'४४

आपके भाभी
बजरंगसिंहके सादर प्रणाम

* * *

अब मैं पूज्य बाकी डायरीके कुछ नमूने यहां देता हूं

ता ८-२-११

५ बजे अुठी। प्रार्थना। नित्यकर्म। ८ बजे परिश्रमका कार्यक्रम था। अुसमें जाते समय ७ बहिनोंको पकड़ा। पीछे पुलिस चौकी पर ले गये। शाम तिलक किये। अुसके बाद भोजनके लिये पूछा। भोजन बाथमें ले आया।

ता ७-४-३३

४ बजे प्रार्थना। गीता पढ़ी। नित्यकर्म। ७ बजे अखबार पढ़ा। ११ बजे भोजन। ४   तार काते। २ बजे हिन्दी। ३ बजे दूसरी बहन आती है। ४ के बाद गुजराती सिखाती हूँ। ५॥ भोजन। ६॥ बजे बहनोंको बन्द कर देते हैं। ७ बजे प्रार्थना। भजन। भागवत सुनती हूँ।

ता ४-५-३३ गुरुवार

४ बजे प्रार्थना। गीता। नित्यकर्म। काता। अभी अखबार नहीं आया। मीराबहन रोटी बनाती है। बापूजीके पास जानेके लिये बहुत चिंता करती है। बापूजीका यह अुपवास यह तपश्चर्या बहुत कठिन है।

ता ८-५-३३

४ बजे प्रार्थना। गीता पढ़ी। आजसे बापूजीका महायज्ञ शुरू होता है। यहां हमने प्रार्थना की थी। आशा रखी थी कि मुझे बापूजीके पास ले जायेंगे। परन्तु अभी तक मुझे बुलाया नहीं है।

ता १०-५-३३

कल रामदास मिलने आया था। अुसके साथ मनु थी। अिस बार मेरा नसीब फूट गया है। नहीं तो मुझे क्यों न ले जायें? चिंता बहुत ही होती है। अिस बार भी मैं दूर बैठी हूँ। ४ बजे प्रार्थना। गीता पढ़ी। ५   तार काते।

ता ११-५-३३

प्रार्थना। गीता पढ़ी। नित्यकर्म। बापूजीको तार किया कि मुझे आपके पास आना है। अुनका तार आया कि धीरज रखना। फिर दूसरा तार आया कि अुस सरकारसे अिजाजत नहीं मांगी जा सकती। शान्ति रखना। बादको मैं कातती रही। प्रार्थना करती रही। दूसरा कुछ भी अच्छा नहीं लगता था।

ता १२-५-३३

४ बजे प्रार्थना। गीता पढ़ी। नित्यकर्म। कॉफी पी। १ बजे अकस्मात् आये। कहा आपको छोड़ा जाता है। तैयार होकर बाहर आयी। दरवाजे पर रामदास था। फिर मैं आश्रममें गयी। शामको प्रार्थना करके पूनाके लिये निकली।

ता० १४-५-११

प्रार्थना। गीता पढ़ी। सुबहसे चलकर अेक बजे हमारी गाड़ी दादर आयी। वहाँसे पूना आयी। प्रेमलीलाबहन और मथुरादास आया था। मेरे साथ हरिलाल था। मैं बापूजीसे खुशीसे मिली। रोयी नहीं थी। परन्तु अब बापूजी बहुत कमजोर हो गये हैं।

ता० १५-५-११

४ बजे प्रार्थना। नित्यकर्म। अब तो चलते-फिरते बापूजीको देखते रहना है। बने उतनी सेवा करनी है। बहुत सूख गये हैं। परन्तु अेक भी शब्द मुखसे नहीं निकलता है। मुझे दुःख होता है कि अिसमें क्या होगा। यह भी नहीं बोलते हैं। ४ तार काते।

ता० २१-५-११

४ बजे प्रार्थना। गीता। नित्यकर्म। किसी प्रकार चलता रहता है। दस्तोंके होकर ४ बार आ गये। अिसमें कोअी कुछ नहीं कर सकता है। अिसमें तो अीश्वरकी ही मददकी जरूरत है। वह (मदद) दे रहा है अैसा मुझे लग रहा है।

ता० २९-५-११

४ बजे प्रार्थना। नित्यकर्म। बापूजीका किसी दिन दिलसे नहीं करता है। बापूजीका मन बहुत अच्छी तरहसे चलता है। जिनका मन बहुत दुःख था। जिसलिये अग्नि-प्रवेशमें से अीश्वरने जिन्हें मुक्त किया है।

ता० १७-७-११

४ बजे प्रार्थना। गीता। नित्यकर्म। ६ बजे बापूजीको खाना। मुझे अैसा लगता कि बापूजीको मैं खाना दूँ। प्रेमाबहन अैसा लगता कि मैं दूँ। जिसलिये होड़ चलती थी। जिससे मैं हारकर बैठ जाती थी।

बापूजी भी कहते हैं कि बाकी कुछ काम नहीं है। परन्तु मैं क्या करूँ? मुझे बापूजीके पास खाली बैठना पसन्द नहीं है।

ता० २१-७-११

मन बहुत विचार आते हैं परन्तु अमल नहीं कर पाती हूँ। भविष्यकी अवस्थामें क्या होगा जिसका पता नहीं है।

ता १८—८—११

अखबारमें पढ़ा कि अभी तो बापूजीका उपवास चल रहा है। खूब चिन्ता होती है। अपना कुछ चलनेवाला नहीं है। ईश्वर करेगा सो होगा। बादमें मैंने सुम्मारको बापूजीको तार किया कि अखबार द्वारा सुना है कि आपका आज तीसरा उपवास है तो खबर दें कि तबीयत कैसी है।

ता १९—८—११ शनिवार

परन्तु जवाब न आया। मुझे शामके पौने सात बजे कहा कि तैयार हो जाओ आपको जाना है। मैं समझ गयी कि मुझे यरवदा ले जायेंगे।

ता २१—८—११

मुझे आफिसमें बुलाया और कलेक्टरने कहा आपको छोड़ दिया गया है। मैंने पूछा गांधीजी छूटे हैं? उसने कहा गांधीजी अस्पतालमें हैं। वहां आपको जाने देंगे। मैं आयी। बहनोंसे मिली। सामान बांधने मथुरादास आया था। पर्णकुटी गयी। फिर बापूजीके पास अस्पतालमें गयी। वहां बहुत खड़ा रहना पड़ा। बम्बईका बड़ा पुलिस अफसर आया। उसने मुझसे पूछा आपको गांधीजीके पास जाना है? मैंने हां कहा। फिर मैं गयी। फिर मुझसे कहा गया कि रातके ८ के बाद यहां नहीं रहना है। मैं पर्णकुटी आयी।

ता २१—८—११

मीरा आयी। मैं अस्पतालमें गयी। मैंने सामानकी गठरी बांधी थी। वह खोली। बापूजीने कहा सारा सामान अस्पतालमें ले लो। मैंने सारा सामान दे दिया। बापूजीको उलटी हुयी थी। सुबह बहुत कमजोरी आ गयी थी। अब मैं इस बिस्तरमें से उठनेवाला नहीं हूं। तुमने कुछ फिकर नहीं करना। तुमको तो मजबूती रखना है। सत्य किसीको कहते हैं। बापूजीने मुझसे कहा। परन्तु ईश्वर दयालु है। उसने अपने भक्तोंको तारा है। परन्तु जो होनेवाला होगा वह होगा। १ बजे पर्णकुटीमें आये हैं।

ता ९—९—११

शनिवारको पौने सात बजे पंडित जवाहरलाल यहां आये हैं। रवि वारसे बात चल रही है।

अिसमें आनन्द आता है। अिनकी माताजीकी तबीयत अच्छी नहीं है। अनन्तु अस्पतालमें हैं। अिनकी पत्नी भी बीमार है।

ता १२-९-४१

बापूजीको पं० जवाहरलालजीकी कृपालानीकी मिसेस नायडूकी अिन सबकी मुलाकात चलती है। आशा है कि बुधवारको पूरी हो जायगी। यहाँ सब आनन्दमें हैं। रामदासका पोस्टकार्ड आया है। देवदासका तार आया था कि बापूजीकी तबीयत कैसी है? यहाँसे तार किया है। १९ तार आये।

ता १३-९-४१

पौने चार बजे अुठे। प्रार्थना। गीता चन्द्रशेखर पढ़ता है। बापूजीको थकान लगती है। परन्तु वे काम छोड़ते ही नहीं हैं। रातको ११ बजे सोते हैं। वजन घटता जाता है। जैसा ही चलता है। अिनका जीवन जैसे ही चलता। अिनको हरिजनोंकी बहुत चिन्ता है। अिसे तो औश्वर ही दूर करे तो होगी। हिन्दुस्तानमें अेकताकी कमी है। २ तार आये।

* * *

सन् १९४४के मअीमें बापूजी जेलसे छूट गये और कुछ दिन आरामके लिअे जुहू चले गये। मैंने बंगालसे बापूजीको लिखा कि आपसे मिलनेकी अिच्छा होती है, लेकिन मनको रोकनेकी कोशिश करता हूं। बापूजीने लिखा

चि बलवन्तसिंह

तुम्हारा खत मिला। थोड़े शब्द तो तुमको भी लिखूं क्योंकि थोड़ा थोड़ा प्रियजनोंको लिखता हूं। तुम्हारा वहाँ ठीक जम गया है। सतीशबाबूकी मदद मिलती है ऐसी चाहिये। अच्छे रहो। मेरे पास आनेकी अिच्छाको रोको।

जुहू ११-५-'४४ बापूके आशीर्वाद

मैं बंगालसे ता २१-९-'४४ को सेवाग्राम वापिस आया। बापूजी गांधी-जिन्ना वार्ताके लिअे बम्बअी गये थे। वहाँसे ता १-१० -'४४को वापिस आये। मैंने बापूजीको बंगालका अनुभव और १९४२ के आन्दोलनमें बाहर क्या क्या हुआ अुसका सब हाल सुनाया। वे कुछ नहीं बोले। अुन्होंने दुःखसे अेक लम्बी सांस ली। मगर दीवालीके दूसरे दिन बापूजीको अपने मनकी

स्थिति बतलायी। संस्कृत पढ़नेकी भिच्छा प्रकट की और अंग्रेजीके विषयमें भुनकी राय जाननी चाही। बापूजीने लिखा

संस्कृत अवश्य पढ़ो। भुच्चारण शुद्ध बनानेमें किया हुआ प्रयत्न व्यर्थ नहीं जायगा। प्रत्येक भाषाके भुच्चारण शुद्ध होने चाहिये परन्तु संस्कृत भाषाके लिये शायद शुद्ध भुच्चारण अत्यावश्यक है। अंग्रेजीका अभ्यास तुम्हारे लिये बिलकुल आवश्यक नहीं है। जो ज्ञान है भुसे व्यवस्थित करो और भुसमें वृद्धि करो।

मेरे आशीर्वाद तो तुम्हारे साथ हैं ही।

२१-१ -'४४ बापू

दूसरे दिन आश्रमवासियोंके सामने बापूजीने आश्रमकी विश्व-कुटुम्ब भावना और ग्रामसेवाकी कमीके भूपर गम्भीर प्रवचन दिया। अन्तमें भुन्होंने कहा "अगर हम सेवाका क्षेत्र न बढ़ा सकें तो प्रजाका पैसा खाकर यहां रहना अच्छा नहीं है।"

बापूजीके मनमें यह विचार चल रहा था कि अब आश्रमको विसर्जन देना चाहिये। वे चाहते थे कि आश्रमसे जो लोग बाहर जाकर अधिक काम कर सकते हैं वे बाहर जाकर अधिक काम करें। भिस विषयमें बापूजीके साथ हमारी खूब चर्चा होती थी। मैंने बापूको अेक लम्बा पत्र लिखा जिसका आशय यह था कि आपने यहां सब संस्थाओंको बसाकर ठीक नहीं किया है। भुनमें आपसमें कुछ न कुछ संघर्ष चलता है और देहातका काम भी अेक दृष्टिसे नहीं हो पाता है। आपके रोज नये नये परिवर्तन चलते रहते हैं। वैसे ही आपने साबरमती आश्रमका परिवर्तन किया। अब भिसका भी करना चाहते हैं। यदि ये संस्थायें अलग अलग गांवमें बसतीं और स्वतंत्र रीतिसे काम करतीं तो भिससे गांवोंकी अधिक सेवा होती। बापूजीने लिखा

चि० बलवन्तसिंह

तुम्हारा खत मिला। भुसमें तुमने बुद्धिका बल नहीं बताया है। खादी-विद्यालय आदि लाकर मैंने बिगाड़ा नहीं है। मेरी ही बनायी हुभी संस्थाओंको मेरे नजदीकमें ही कार्य करना था। अगर भुनके सब सेवक अेक कुटुम्ब होकर न रह सकें तो दोष किसका? मेरा ही हो सकता है। कि दोष देखनेवालेका? मैंने समझ-बूझकर साबरमती

२९

महादेवभाओी और पूज्य बाके पुण्यस्मरण

जब बापूजीकी तबीयत ठीक रहती थी तब आश्रममें शुरू शुरूमें उनकीके सुपयज्ञ आरम्भ हुआ और बापूजी अुसमें मौजूद रहते थे। अुस समयका गाम्भीर्य देखने लायक होता था। सारा वातावरण यज्ञमय बन जाता था। आगाखा महलसे छूटनेके बाद बापूजी जब सेवाग्राममें रहते थे तब यह सूत्र-यज्ञ महादेवभाओीके अुस कमरेमें चलता था जिसमें बैठकर महादेवभाओी अपना सारा काम करते थे। भगवान अपने भक्तकी किस तरह सेवा करता है, यह महादेवभाओीके प्रति बापूजीके बीसे-बापसे प्रेमसे प्रत्यक्ष दिखाओी देता था। अुस समय औसा प्रतीत होता था जैसे बापूजी महादेवभाओीका जप कर रहे हैं और महादेवभाओी बापूके सामने हंस रहे हैं। क्योंकि महादेवभाओी सूत्रयज्ञके बारेमें बहुत शुद्ध और नियमित थे। कितना भी काम क्यों न हो १७५ तार तो वे कातते ही थे। आश्रममें सूत्रयज्ञका यह क्रम काफी दिन तक चला।

२ फरवरी १९४५ को बाकी पहली बरसीके समय बापूजी सेवाग्राममें ही थे। अुस रोज सुबहसे ही गीता-पारायण हुआ। सूत्रयज्ञ तो चला ही। मैंने बापूसे कहा कि बाको रामायण बहुत प्रिय थी जिसलिये अुसका पाठ होना चाहिये। तब रामायणका पाठ भी सारे दिन चला। शामको सामूहिक प्रार्थना हुओी। बापूजीने अुसमें बाके प्रति हृदयकी गहरी श्रद्धा व्यक्त करते हुये कहा

भूपकी गतिके हिसाबसे आज बाको गये अेक वर्ष पूरा होता है। चान्द्री गतिसे महाशिवरात्रिके दिन अवसान हुआ था। यह शोकका प्रकरण नहीं है बल्कि अुत्सव दिनकी तरह बड़ा आनन्द होना चाहिये। मैं जन्म और मृत्युमें बड़ा फर्क नहीं मानता। आत्माका न जन्म है न मृत्यु। हम सभी आत्माका भाजन है। अुसका तो कभी हनन नहीं होता है।

अैसे दिन बाकी स्मृतिमें तो हम धार्मिक क्रियामें ही बिताते हैं। आज [illegible] चरखा चला। यह मेरे लिये धार्मिक विधि है। बाकमन्दिरकी प्रार्थनामें [illegible] रामायण भी चली। सुबह गीता-पारायण हुआ। मगर

जिससे हमारा पेट नहीं भरता। हम लोग सोच-समझकर धार्मिक क्रिया करें, अीश्वरको स्वीकार करें। अीश्वर अूपर नहीं नीचे नहीं, हृदयस्थ है। सचमुच तो वह हर जगह है। शास्त्रमें जो लिखा है कि जब चीजें खाली हो सकती हैं वह हवासे खाली होनेकी बात हो सकती है। हवासे खाली करो तो भी कुछ तो रह ही जाती है। भौतिक शास्त्रवालोंने तो यह देख लिया है कि हवामें भी सूक्ष्म कोअी चीज है। आध्यात्मिक शास्त्रवालोंने देख लिया है कि अीश्वर सब जगह है। हमारी सब धार्मिक क्रियाओंका वह अीश्वर साक्षी है।

कल मैंने कहा कि पहले हमें अपना पाप धोना है। कल विवाह* था। पहले पांच मिनट मैं पाखाना देखने गया। वहां बदबू थी। आंखोंने मैला देखा। मैला क्या भौतिक पाप नहीं है? मैला रखनेमें हमने बड़ी गलती की है। अैसे ही पाप हमने यहां भी किये होंगे। तो हमें देखना है कि हमारे पाखाने और रसोअीघर बिलकुल साफ हैं या नहीं? रसोअीका काम बराबर चलता है या नहीं? क्यों हम अेक-दूसरेको दुःख देते हैं? क्यों मच्छर-मक्खी बढ़ते हैं? यह हमारे पापकी निशानी है। जिसके बदलनेका कारण अभी तक मेरे हाथमें नहीं आया। लेकिन अिससे हमारा पाप मिट नहीं जाता।

अिस शुभ दिन हमने चरखा चलाया दूसरा धर्मकार्य किया। अुसके हम लायक थे या नहीं अुसका चिह्न यह है कि हम सफाअी रखते हैं या नहीं। अिसे पाप न कहो दोष कहो। मगर मेरे सामने यह अेक ही चीज है। अिस पापका बदला आगामी जन्ममें नहीं अिसी जन्ममें मिल जाता है। अिस तरह देखें तो हमारा जीवन सरल और आनन्दमय बन जाता है।

कान्तिका पत्र था। अुसमें दो विद्वानोंका अुल्लेख किया है। अेकने कहा चरखा चलाना मैं धर्म नहीं मानता। यह तो फर्ज ही अभी है अिस लिये चलाता हूं। किसीको देखकर चरखा चलानेसे वह धर्मकार्य नहीं होता अुससे स्वराज्य नहीं आवेगा। वह तब होगा जब हम अुसके शास्त्रको अुसकी शक्तिको समझ लें। अिस तरह बिना विश्वास चरखा चलानेवाले आश्रममें तो नहीं होने चाहिये। यहां तक चरखा नहीं चलाते हैं। वह मैं सहन करता हूं। देखकर चलानेवालोंको मैं मना नहीं कर सकता। मगर अितना बता देता हूं कि अुनको धर्मसिद्धि नहीं होगी।

* कनु गांधी और आभा गांधीका विवाह।

"दूसरे मित्रने कहा : प्रार्थनामें मैं मानता नहीं। यह अुसका दोष नहीं। अुसका कारण यह है कि हम प्रार्थना करनेवाले प्रार्थनाको जीवनमें ओतप्रोत नहीं करते। अुन्होंने मुझे चेतावनी दी कि तुम्हारे आसपास क्या सच्चे आदमी हैं या धोखा देनेवाले? तुम्हारे नसीबमें निराशा ही निराशा है। मुझे निराशा नहीं। मैं तो अपना धर्म पालन करता हूँ, बता देता हूँ। पीछे मुझे क्या? यह मित्र गीता पर प्रवचन देते हैं, प्रार्थनामें बैठते हैं मगर दिखावेके कारण करते हैं।

"अगर प्रार्थनामें मन घूमता रहे, औश्वरमें न रहे तो प्रार्थनामें हाजिरी मात्र भले ही हो, हम वहाँ नहीं हैं। हमारे शरीर और मनमें द्वन्द्व चलता है। आखिर मन जीत जाता है। यह सब कहनेका हेतु अितना ही है कि आज जिसे हम धर्मचिह्न मानते हैं अेक स्वच्छ कपड़ा, पूनी और तकलेके सामने अुसके स्मरणार्थ जो करते हैं अुसे पूरे मनसे करें, वह सच्ची चीज हो।"

अुसी दिन मेरी भतीजी चि० होशियारी आश्रममें आयी। अुस रोज रातको तो समय नहीं मिला लेकिन २१ तारीखको सुबह मैं अुसे बापूके पास ले गया। वह तो सिर्फ बापूजीके दर्शन करनेके लिअे और अुनको अेक हार भेंट करने आयी थी। मैंने बापूजीसे कहा : बापूजी, आप अिस लड़कीको पहचानते हैं? १९१९ में यह दिल्लीमें बापूजीसे मिल चुकी थी। बापूजीने कहा : "हाँ क्यों नहीं।" और हँसकर बोले : क्यों अब तो नहीं जायगी? अुसका सेवाग्राममें रहनेका कोअी अिरादा नहीं था लेकिन बापूके अिस वचनने अुसको बाँध लिया। अुसने कहा : "हाँ आप रखेंगे तो रहूँगी आपके पास।" बापूने कहा : अब तो नहीं जाना है। बापूके अुस वचनका अितना चमत्कारिक असर अुस पर हुआ कि कुटुम्बके सब लोगोंका विरोध सहन करके भी वह आश्रममें रही। अिस तरह न मालूम कितने लोगोंको बापूजीने अपनी प्रेमडोरीमें बाँधा था। वे कहा करते थे कि अेक बार जो मेरी पिटारीमें आ जाता है वह निकल नहीं सकता है। बात सच थी। क्योंकि आदमीको जो चाहिये अुसकी पूरी पूरी सुविधा बापूजी अुसके लिअे कर देते थे और अुसका अुचित अुपयोग भी कर लेते थे। फिर आदमी जाय तो क्या बहाना लेकर जाय?

बापूजी चमकता पा रहे थे। अुसी दिन महिलाश्रममें कोअी अुत्सव था। अिसमें अुनको आशीर्वाद देने बुलाया गया था। सुबह ही बापूजी महिला-

चल बसे। मैं भी बापूजीके साथ था। बाके नामसे बापूजीको दो साड़ियाँ भेंट दी गयीं। साड़ियाँ हाथमें लेकर अुन्होंने बोलना शुरू किया

आप लोगोंने बाके निमित्तसे मुझे दो साड़ियाँ दी हैं यह अच्छा है। बा अनपढ़ थी तो भी अुसका दिल स्त्रियोंकी अुन्नतिके लिये काफी तड़पता था। अुसका जीवन सादा और अेक देहातीका-सा था। अुसका आचार विचार भी हमारी संस्कृतिका प्रतीकरूप था। बा मेरे हर संकटके समय मेरे साथ खड़ी रही और निरक्षर होने पर भी मेरे बड़े बड़े मेहमानोंका सत्कार करनेमें और मेरी बड़ी बड़ी लड़ाअियोंमें शामिल होकर साथ देनेमें कभी पीछे न रही। अन्तमें अेक अन्तिम लड़ाअीके मोर्चे पर मुझे अकेला छोड़कर चली गयी। यह कहते कहते बापूका गला भर आया और वाणी बन्द हो गयी। आँखोंसे अश्रुधारा बहने लगी। बाके लिये पहली ही बार मैंने बापूको अिस तरह रोते देखा।

महिलाश्रमकी लड़कियोंका दिल भर आया और सबकी आँसू निकलने लगे। अुसके बाद बापू अधिक नहीं बोल सके। अितनेमें कहा आज बंगालमें क्या चल रहा है? वहाँ लाखों लोग भूखसे मर गये। अभी भी वहाँकी हालत सुधरी नहीं है। हिन्दू-मुस्लिम सबके भी झगड़े हैं। मैं अिनमें क्या कर सकूँगा यह तो अीश्वर ही जाने।

फिर बापूजी बंगाल गये और तीन ही रोज आये। २२ मार्चका दिन था। सुबहकी घंटी पर श्री कृष्णचन्द्रजी दीक्षा लेने आये। मैं जगा। रामनामकी जगह पू० बाका नाम मनमें स्फुरा। साथ ही रामायणमें से अुस दिनके लिअ विषय खोजने लगा। अहल्याका अुद्धार सामने आकर खड़ा हो गया और साथ ही पू० बाकी वात्सल्य-मूर्ति। मैं स्वप्न नहीं देख रहा था। जाग्रत था। परन्तु बिलकुल स्पष्ट मैंने यही देखा। बाद बोलना आरम्भ किया "आ कलकत्ता अहल्या कोअी अक्षरनी शिक्षा न हती जे रामनी चरणरज लागवाथी रुषी अतीव आकाशमां उड़ी गअी अे तो मात्र अेवी पथ्थरनी मूर्ति हता अमर आशी हते अने जडबुद्धिने सीधे सुन्दरतामां अने पवित्र थअी अमेनी हम अेम बाकी आपान के समाजनां अंक लाग्यो हते बोतीज भूल बन थअी हम अेम रामनी चरणज अटल पत्नीना बन लग्नना प्रमाणे पवित्र अने पुरियानी पत्नी समाजमां मुख्य स्थान प्राप्त थयुं हते अे व बेनो अवतार

था मा हुं पण पथरा जेवी ज हती ना? पण बापुनी सेवाने प्रतापे आज जगत मारी पूजा करे छे ना?* "

अुस बाकी दलीलने मंत्रमुग्ध कर दिया। मन आनन्द-सागरमें गोते खाने लगा। आंखें बाके प्रेमसे भीगी हो गयी। हृदय गद्गद हो गया। मैं मोहवश बासे पूछ बैठा "अच्छा बा! आप बापूको अकेला और आश्रमको सूना बनाकर क्यों चली गयीं?

बाने तुरन्त ही जवाब दिया "देखो बलवन्त यह तुम्हारा मोह है। मैंने जो किया वह करना मेरा धर्म था। अब मेरा शरीर जर्जरित हो गया था। अुसे अच्छी अवस्थामें रखना असंभव हो गया था। बापूके लिअे तुम सबके लिअे मित्रोंके लिअे देश-विदेशके अुन सब लोगोंके लिअे जो बापूको पहचानते हैं मैं चिन्तारूप बन गयी थी। और बापूजीकी कुछ भी सेवा करनेके लिअे मेरा शरीर निकम्मा बन गया था। मेरे लिअे यही अेक मार्ग था। जिस प्रकार मैंने बापूकी सेवा करके अुनके कामोंमें मदद की थी अुसी प्रकारसे अपनी शारीरिक सेवाका भार अुनके अूपरसे अुठाकर भी क्या मैंने अुनकी सेवा नहीं की है? और देखो आज तो मैं बापू और तुम सबके लिअे सूक्ष्म रूपमें सहज प्राप्य हो गयी हूं। जब मेरा शरीर था तब तो आश्रममें आगाखां महलमें या और किसी स्थान पर रहनेसे दूसरे स्थानमें मेरा अभाव

---

* बाने तो शायद सारी बात गुजरातीमें ही कही होगी किन्तु वे मुझसे हिन्दीमें भी बोलती थीं। आज यह संस्मरण लिखते समय मुझे पता नहीं है कि अुन्होंने क्या क्या बातें गुजरातीमें कहीं और क्या क्या हिन्दीमें। लेकिन अुस दिनकी मेरी डायरीमें जैसा लिखा है वैसा अविकल रूपमें मैंने रख दिया है। गुजराती वाक्योंका अर्थ "देखो बलवन्त अहल्या कोअी पत्थरकी शिला न थी जो रामकी चरण लगनेसे स्त्री बनकर आकाशमें अुड़ गयी। वह तो मेरे समान कोअी भोली और अनपढ़ नारी थी। अुसकी जड़बुद्धिके कारण तुलसीदासने अुसका पत्थर जैसा वर्णन किया होगा। अुसे कोअी आघात लगा होगा या समाजका दंड मिला होगा। कुछ भूल भी हुअी होगी। अुसने रामकी चरण मानी पदसेवा और सत्संगके प्रतापसे पवित्र और बुद्धिशालिनी बनकर समाजमें अुच्च स्थान प्राप्त किया होगा। यही अुसका अुद्धार है। देखो मैं भी तो पत्थर जैसी ही थी न? बापूकी सेवाके प्रतापसे आज संसार मेरी पूजा करता है न?"

रहता था। तुमको सब कामोंसे छुट्टी लेकर या काम अधूरे छोड़कर मुझे रामायण सुनानेके लिये मेरे पास आना पड़ता था। अब तो मैं सबके लिये सब स्थानोंमें सहज प्राप्य हूं न? अच्छा तुम बताओ कि अब मुझे रामायण सुनानेके लिये तुमको झंझट करनी पड़ती है? या कुछ भी काम छोड़कर दिवसमें आकर आना पड़ता है? या मुझे समझानेकी कोशिश करनी पड़ती है? तुम्हारे मनमें जब मेरा स्मरण होता है और रामायणका मनन चलता है तब मैं समझती हूं और लुब्ध होकर तुमको आशीर्वाद देती हूं। जितना ही नहीं तब तो तुम मुझे धर्म समझाते थे अब तो मैं भी तुमको समझाती हूं। तो तुम ही बताओ कि तुमको मेरा शरीर रहते हुओ जो लाभ था असुसे लाभ कम है या अधिक?

मेरे पास क्या दलील थी जो मैं बाके शरीरकी सार्थकता सिद्ध कर सकता? आखिर बाके मुंहकी तरफ देखता रहा। बाका चेहरा सुबहके हुओ सूर्यके समान स्वच्छ और तेजमय था लेकिन आखें भरकर देखा जा सके जितना सौम्य था। मुख पर किसी प्रकारकी बुढापे या बुढापेकी झलक नहीं थी। बा फिर बोलीं देखो तुम गायोंसे दूर रहते हो यह मुझे बिलकुल पसन्द नहीं है। मैंने तो कुछ समय भी बापूके साथ झगड़ा किया था। पण तारा गुस्साथी बापु मूझाय छोजानो आवे झपकवानो भय रहता करे अने बधी वातो तो बापु बारीकीथी क्यां छाने? पण अेने कोमी मधी। तुं गुस्सा छोड काम घले मायथी अलग छ पण मायने मनथी भीवरजे मा गाय तो आपणी साची मा छे गाय न होय तो आपणे अेक डगलुं चाली शकीओ नहीं *

मुझे विचार आया कि रामकृष्ण परमहंसके जीवनमें जो अलौकिक दर्शनकी बातें आती हैं वे किसी तरहकी हुआ होंगी। सच बात तो यह है कि हमारा मन ही सब कुछ है। मनमें जिस प्रकारके संस्कार और संकल्प होंगे हैं वैसे ही हम होते हैं। मैंने जो बाके दर्शनकी बात लिखी है यह कोअी स्वप्न

---

* परन्तु तेरे गुस्सेसे बापू घबराते हैं। दूसरेके लाभ समझकर भय रहता है। सारी बातें तो बापूजी बारीकीसे नहीं देख सकते हैं। पर जिसका कुछ नहीं। तू गुस्सा छोड़। काम भले ही तू मायस अलग है पर मायका मनसे मत भूलना। गाय तो हमारी सच्ची मा है। गाय न हो तो हम अेक कदम भी नहीं चल सकते।

नहीं है न मेरी नहीं हुअी बात है। मैं तो अुस समय शून्यवत् हो गया था। थोड़ी देरके लिअे अपने आपको भूल गया था।

मैंने बापूजीके सामने यह सारी बात रखी और पूछा कि अहल्याके बारेमें आपका क्या मत है? बापूजीने लिखा

> अहल्या आख्यानका जो अर्थ आपने दिया वह ठीक है। वह अेक है। दूसरे भी अर्थ हो सकते हैं। जितने भक्त और अुनके भाव जितने और अैसे अर्थ होते हैं।

२२-३-४५ बापू

२७
कुछ महत्त्वकी बातोंमें बापूकी सलाह-सूचना

मुन्नालालजीने बापूजीके सामने अेक अैसी योजना रखी कि आश्रमके जो नौकर हैं वे भी आश्रमके भोजनालयमें भोजन करें। अुनको अुनके बच्चोंके लिअे थोड़ासा पैसा दिया जाय और अुनके भोजनादिमें जो अधिक खर्च हो वह आश्रम सहन करे। अिससे अुनके साथ भाअीचारा बढ़ सकेगा और हम अुनके जीवनमें प्रवेश कर सकेंगे।

मुझे यह योजना अव्यवहार्य लगती थी। अुसी समय मीराबहन मुझे किसान आश्रम मूलदासपुर (हरद्वार और रुड़कीके बीच) में गोशालाकी व्यवस्थाके लिअे बुला रही थीं। लेकिन मेरी भतीजी होशियारी थोड़े ही दिन पहले आश्रममें आयी थी और अुसे मेरे बिना अकेले रहना अटपटा-सा लगता था। अिस नौकरोंके प्रयोगके बारेमें मैंने अपनी शंका बापूजीको बतायी थी और मीराबहनके पास जानेके बारेमें अुनसे पूछा था। पंचगनीसे बापूजीका अुत्तर आया

> चि. बलवन्तसिंह
>
> अब होशियारीको मत सताओ। मेरे आने तक ठहर जाओ। मीराबहनको लिखो। होशियारीका दुःख मैं समझ सकता हूं। मैंने मीराबहनको अेक खत लिखके पहले लिखा है। जो प्रयोग मुन्नालाल

नौकरोंके मार्फत करते हैं अच्छा है। अैसा ही करना चाहिये। निष्फल हो सकता है तो अर्थ होगा कि हमारी अहिंसा बहुत अधूरी है। गलती समझमें है। नौकरोंको हम नौकर न समझें हमारे सगे भाअी समझें। कुछ चिजोंमें कुछ चोरें ज्यादा खर्च हो जाय यह सब व्यर्थ नहीं होगा अगर हम अुनको कुटुंबी समझें तो। जिसे सोचो।

मैंने संचालककी सूचना विमलालको की है। अुसे सोचो और हो सके तो संचालक प्रतिमास बदलो।

१२-५-'४५ बापूके आशीर्वाद

होशियारीको मैंने खादीके अध्ययनके लिये खादी-विद्यालयमें भेज दिया वहां अुसका मन काममें लग गया। नौकरोंके प्रयोगके बारेमें मैं अब तक सहमत न हो सका था। मैंने यह सब बापूजीको लिखा। अुनका अुत्तर आया

चि. बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। अब होशियारीको शांति देना काम और अभ्यास करने देना।

नौकरोंके बारेमें जो मुन्नालाल करते हैं अुसमें सलाह मेरी है। अच्छे हेतु रखते हुअे अुस मुताबिक हम न चलें तो दोष हमारा है। हेतुकी निर्मलता मलिन नहीं होती है। काम कठिन है। मैं चाहता हूं कि सब अुसमें मदद दें। नौकरोंको अपने आचारसे बतायें कि वे नौकर नहीं हैं लेकिन हमारे भाअी-बहन हैं। हम अपना काम करें शरीरको आलस्यसे बचावें जिस सिलसिलेमें तनिक भी फरक नहीं हुआ है। वैसे लिखे समझो। न समझमें आवे तो मुझे बार बार पूछो।

२५-९-'४५ बापूके आशीर्वाद

यह नौकरोंका प्रयोग थोड़े दिन तक चला। मुन्नालालभाअीने जिसके पीछे बहुत मेहनत की। नौकरों पर कुछ असर भी हुआ। लेकिन धीरे धीरे यह बन्द हो गया।

आश्रमवासियोंके बापूजीने आश्रममें रसोअी आदिके मामूलि कामके लिये नौकरोंसे काम न लेनेका नियम रखा था। लेकिन सेवाग्राममें तो

जान-बूझकर आश्रमके रसोई आदिके काममें हरिजन नौकर रखे गये थे। अिसमें बापूजीका अुद्देश्य हरिजन और देहातियोंके साथ घुलमिल जानेका था जिससे देहातियोंको आश्रमके साथ अेकरूपता लग सके। अैसी स्थिति साबरमतीमें नहीं थी। सेवाग्राममें बापूजी देहातियोंके साथ बिलकुल अेकरूप होनेका प्रयत्न करते थे। छोटी छोटी बातोंमें बापूजी बहुत तत्पर और सावधान रहते थे और जिसको अेक बार अपना लिया अुसको फिर माँकी तरह ममत्वसे पकड़ रखते थे।

चि० होशियारी आश्रममें आओी तो सही लेकिन मेरे भाभी और भाभीको यह पसन्द नहीं था। मेरे भाभी अुसको वापिस ले जानेके लिये आय। होशियारीने कहा कि मैं बापूजीकी अिजाजतके बिना वापिस नहीं जा सकती। अुसने बापूजीको तार दिया। मैंने पत्र लिखा। बापूजीका अुत्तर आया

चि० बलवन्तसिंह

चि० होशियारीका तार मिला था और कल शामको तुम्हारा खत भी मिला।

होशियारीके पिताजीको मेरी सलाह है कि वे मेरे आने तक होशियारीको ले जानेकी चेष्टा न करें। और क्योंकि आश्रममें आ गये हैं तो मेरे आने तक ठहर जावें और आश्रमके काममें पूरा हिस्सा लें जिससे वे कुछ सीखेंगे आश्रमका अनुभव लेंगे और आश्रम पर बोझ भी नहीं पड़ेगा। होशियारी मुझे तो अुतनी ही प्रिय है जितनी अपने पिताको। अगर होशियारीको असंतोष रहता तो मैं कुछ भी नहीं कहता। लेकिन होशियारीको संपूर्ण संतोष है। वह सीख रही है और अूंचे चढ़ती जाती है। आश्रम संपूर्ण नहीं है, लेकिन आश्रम बुरा नहीं है। आश्रमने किसीका बिगाड़ा नहीं है। कभी लोग आश्रममें रहकर अूंचे चढ़े हैं। जो अच्छे हैं अुनको कभी कष्टदायी सिद्ध नहीं हुआ। अिसलिये होशियारीके पिताजी अितना विश्वास रखें कि आश्रममें रहकर होशियारीका अनिष्ट कभी नहीं होगा। आखिर तो मेरे आने पर मुलतवी रखता हूं। आज तो मेरा अितना ही विनय है कि होशियारीके पिताजी महीना भर आश्रममें न भी रह सकें तो भी होशियारीको न ले जावें। मेरे आनेके बाद

अैसा निर्णय होगा कि होशियारीको वापिस आना ही चाहिये तो तुम ही अुसको ले आओगे।

आश्रम-व्यवहार ठीक चलता होगा। नौकरोंके बारेमें हम बातें करेंगे।

पंचगनी ७-६-'४५ बापूके आशीर्वाद

अिस पत्रमें बापूजीका साधकके लिअे कितना प्रेम और अुदारता है और अुनके रास्ते न आनेवालोंके लिअे कितना विनय भरा है? अैसो को अुदार जग माहीं? बिनु सेवा जो द्रवै दीन पर, राम सरिस कोअु नाहीं। तुलसीदासका यह पद सभी महापुरुषोंके लिअे लागू होता है।

अुसी समय मैं सेवाग्रामसे मीरांबहनके किसान-आश्रमके लिअे चल दिया और मेरे गांवमें कुछ झगड़ा था अुसको निपटानेके लिअे रास्तेमें ठहरा।

होशियारी अपने बच्चे गजराजको घर छोड़ आयी थी। अुसके पिताजी अुस बच्चेको अिस कारण नहीं भेजना चाहते थे कि अुसका खयाल करके वह आश्रमसे घर चली आयेगी। होशियारीके मनमें द्वन्द्व चल रहा था। वह लड़के बिना भी नहीं रह सकती थी और आश्रम भी नहीं छोड़ सकती थी।

बापूजीने अुसे समझाया कि लड़केको भूल जाओ। अगर तुम्हारी सच्ची तपश्चर्या होगी तो तुम्हारे लड़केको तुम्हारे पिताजी तुम्हारे पास छोड़ जायेंगे। वह समझ गयी और यह निश्चय हो गया कि अब वह लड़केके लिअे घर नहीं जायगी। लेकिन मैंने लड़केकी खराब हालत देखकर बापूजीको लिखा तो अुन्होंने पहली ट्रेनसे ही मुझे लड़केको लानेके लिअे भेजा। पहली रातको बापूजी अिस बात पर अटल थे कि मुझे लड़केको लेने जानेकी जरूरत नहीं है लेकिन मेरा पत्र पहुंचते ही अुन्होंने तुरंत मुझको रवाना कर दिया। मुझे बापूजीने लिखा

चि० बलवन्तसिंह

तुम्हारे पत्र मिले। वहांका काम तुम्हारी हाजरीसे चले तो बहुत अच्छा है।

होशियारी बहादुर है, बलवन्ता भी निकली। अच्छा है तुम भी वहीं हो। मुझे अच्छा लगा है। मीराबहन तुम्हारे लिअे तरस रही है।

डॉ. शर्माजीने* जो बनाया है अुसे देखना। अच्छा होगा। अुनकी प्रवृत्ति भी देख लो। यहांका काम ठीक चलता है। तुमने जो रास्ता *बताया है वहांसे बालकृष्णके यहां जा नहीं सकते।*

सेवाग्राम २७-७-'४५ बापूके आशीर्वाद

डॉ. हीरालाल शर्माके पीछे बापूजीने काफी खर्च किया था। अुनकी आशा थी कि वे प्राकृतिक चिकित्सा द्वारा देशकी सेवा करेंगे। अुन्हें सेवाग्राममें रखनेका भी खूब प्रयत्न किया था। अुन्होंने तुमकि पास अेक देहातमें प्राकृतिक चिकित्सालय खोला था। अुसके लिये बापूजीने काफी आर्थिक सहायता दिलायी थी। अुसीको देखनेके लिये मुझे लिखा था। मैं वहां डॉ. शर्माकी सूचना देकर देखने गया तो देखा कि कुछ टूटी-फूटी फूसकी झोंपड़ियां थीं। अेक मकान कुछ ठीक था। अुसमें कुछ पुस्तकें आदि सामान था जिस पर धूल जमी थी। जब मैं वहां पहुंचा अुसी समय दो-तीन मुसलमान स्त्रियां आयीं। मैंने अुनसे पूछा कि क्यों आयी हो तो अुन्होंने बताया कि शर्माजीने यहां आनेको कहा था। मुझे रोगी दिखानेकी दृष्टिसे अुनको अुसी रोज खास आग्रहसे बुलाया गया था। परन्तु वहां पर चिकित्साका कुछ भी काम नहीं चलता था। जिससे वहांकी परिस्थिति स्पष्ट हो जाती थी। यह सब देखकर मुझे काफी दुःख हुआ। शर्माजीसे जब मैंने कोअी जानकारी मांगी तो वे अुत्तेजित हो गये। मैंने सब हाल बापूजीको दुःखके साथ लिखा। तो बापूजीका अुत्तर आया

सेवाग्राम वर्धा
१-८-'४५

चि. बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। डॉ. शर्माकी जगह पर हो आये अच्छा किया। मेरा संबंध (आर्थिक) टूट गया है। चि. होशियारी कल रातको आ गयी। बच्चा भी साथ है। दोनों खुश हैं। मीराबहनके पास जाओ।

बापूके आशीर्वाद

---

* डॉ. हीरालाल शर्माने तुमकि पास अेक प्राकृतिक चिकित्सालय खोला था। बापूजीने जिस चिकित्साके अभ्यासके लिये अुन्हें अमेरिका आदि भी भेजा था।

होशियारी गजराजको ले आयी और पहले अुसे आश्रममें रखा। बापूजी अुसे तालीमी संघके छात्रालयमें रखना चाहते थे क्योंकि आश्रममें अुसकी पढ़ाओी ठीकसे नहीं चल रही थी। बापूजीने होशियारीसे पूछा कि मैं गजराजको छात्रालयमें रखना चाहता हूं तुम्हारा क्या कहना है? अुसने कहा "जो आपको ठीक लगे वही मुझे पसंद है।" दूसरे दिन होशियारी गजराजको समझा-बुझाकर छात्रालयमें पहुंचा आयी। अेक रोज बाद वह छात्रालयसे वापिस आ गया और वहां जानेसे अुसने अिनकार कर दिया। जब होशियारीने कारण पूछा तो अुसने कहा कि "वहांके लड़के बहुत गंदे रहते हैं। अुनके साथ मैं क्या सीखूंगा?" यद्यपि गजराज सात-आठ सालका था पर अुसे आश्रममें साफ-सुथरा रहनेकी आदत पड़ गयी थी। बापूजीको होशियारीने सब हाल बताया। बापूजी हंसकर बोले "तू मां तो बन गयी है, लेकिन कुछ नहीं जानती। अुसे मेरे पास भेज दे।

बापूजीने गजराजसे पूछा "तू छात्रालयमें क्यों नहीं जाता?" गजराजने वही बात दुहरायी। बापूजीने अुसे समझाया। अुसने कहा "आप अेक बार छात्रालय आकर देख लें फिर मैं जानेको तैयार हूं।" बापूजीने कहा बस अितनी ही शर्त है? मंजूर है। फिर होशियारीको हंसकर कहा देखो गजराज तैयार हो गया।

दूसरे रोज बापूजी घूमने निकले। जब छात्रालयके पास पहुंचे तो बोले कि मैंने गजराजको वचन दिया है अिसलिअे अुसके स्कूलमें पांच मिनिट हो आअूं। और बापूजी अुधर घूम गये। वहां जाते ही हर चीजको बारीकीसे देखने लगे। वे गये तो थे ५ मिनिटके लिअे लेकिन लग गया पौन घंटा। निरीक्षणके बाद बापूजीने स्कूलके अधिकारियोंको जो पत्र लिखा वह यह है

> कल मैं तालीमी संघका छात्रावास देखने चला गया। आश्रममें होशियारीबहन है न? अुसके लड़के गजराजको तुम्हारे स्कूलमें भेजा है। अुसका आग्रह था कि मैं अुसका स्कूल देख लूं। कल सबेरे भी वह आया और पूछा कि आओगे न? मैंने कहा कि तुम्हारे स्कूलमें आकर क्या करूंगा? मैं वह जगह देखूंगा जहां तुम्हें सोना है। मेरा विचार तो अुसकी मांको भी भेजनेका था पर खैर। सो अपनी प्रतिज्ञा पालन करनेके लिअे सबेरे घूमनेके बाद वहां चला गया। मैंने वहां जो देखा अुससे मुझे दुःख हुआ। मेरी आंखोंने नहीं होनी चाहिये वैसी गंदगी

और अव्यवस्थाका वर्णन किया। मैं ज्यादा समय देना नहीं चाहता था लेकिन जो मैंने देखा वह मुझसे बरदाश्त न हो सका और आधा-पौन घण्टा   को समझानेमें खप गया। मैंने देखा कि बच्चोंके अस्पतालके बरामदेके आगे पानी पड़ा था। मेरी आंखोंको खटका। यहां लड़के हाथ-मुंह धोते हैं। जिससे मच्छर पैदा होते हैं। जितना पानी व्यर्थ जाता है। हम किसी बरतनमें ले लें नहीं तो पास वृक्ष खड़े हैं अुनमें धोयें। अगर हजार लड़के हों तो काफी हो जाय। कमरेसे गुजरकर दूसरी तरफ बरामदेके सामने भी यही हाल था।

फिर मैं वहां गया जहां बच्चे सोते हैं। बाहर ही काफी कचरा था। अंदर गया। चटाअियां व्यवस्थित ढंगसे न थीं। अेक बिस्तर उलटवाया। बहुत गंदा था। चादर फटी हुअी थी। अेक दो जगह ही सी थी पर सिलाअी बहुत भद्दी थी। बाकी जगह वैसी ही फटी थी। थिगळा लगाना चाहिये था। बहुत फट गअी थी तो दोहरी करके सी ली होती। मैंने तो जेलमें कभी कथा जैसी गुदड़ी बनाअी थी। वह गरम हो जाती है और पक्की भी। गद्देकी रूअी दब चुकी थी। अेक मोटी भारी चीज बन गअी थी। नरम नहीं थी। अुसकी रूअी निकालकर फिरसे धुनना चाहिये था। गद्देके नीचेसे बहुतसे कपड़ेके टुकड़े निकले जो बहुत गंदे थे। मैं अुनको साफ रखता जिससे लगानेके काम आता। चटाअी बहुत गंदी थी। अुसे धोना चाहिये था।

जमीन देखी। सोनेकी जगह है। पर बहुत बुरी हालतमें सब टूटी-फूटी है।   ने कहा गोबर नहीं मिलता। गोबर हो तो अच्छा है, पर अिसके बिना भी काम चलता है। दक्षिण अफ्रीकामें गोबर कहां था? केवल मिट्टीसे काम चलता था। दीवार पर चीजें रखनेके लिअे लकड़ी लगी थी। अुस पर हाथ लगाया तो मिट्टीसे भर गया।

के हाथोंसे अपना हाथ मला। अुसका हाथ मिट्टीसे भर गया। लड़कोंने कलमदान चटाअी पर रखा था। कहां रखें बेचारे? क्योंकि रखनेके लिअे कोअी ढंग न था। अेक अेक कलम और निबको देखा। दवात देखी। मेरा तो यही तरीका है न? और नयी तालीमका भी होना चाहिये। मेरी दृष्टिसे सब गन्दा था। छोटी छोटी चीजें हैं पर छोटी चीजोंसे बड़ी बनती है। जिसमें पैसेकी जरूरत नहीं है।

दृष्टिकी सूक्ष्मता होनी चाहिये कला होनी चाहिये। यह सिखाना हमारा फर्ज है। नयी तालीमका अुद्देश्य है। अगर नहीं किया तो शिक्षकका दोष है। तुम्हारा दोष है। मैं तो यह भी मानूंगा कि मेरा दोष है, क्योंकि नयी तालीमको चलानेवाला तो मैं ही हूं न? शुरू किया और छोड़ दिया। अगर कोअी यह कहे कि जिस तरह तो मैं अेक ही लड़केको संभाल सकता हूं। तो मैं कहूंगा कि अेक ही लो। ज्यादा न लो। ज्यादा लेते हैं और संभाल नहीं सकते तो अुसमें आलस्य आ जाता है। बाहर निकला तो मेरी नजर अुन टट्टों पर पड़ी जो तुमने बरामदेके बाहर बना रखे हैं। जिसके लिये तुमसे लड़ना है। बरामदा तो हवा और धूपके लिये होता है। अुसमें टट्टे बांधनेसे दोनों रुक जाते हैं। पिछला कमरा तो बिलकुल निकम्मा हो जाता है। अगर यह कहो कि लड़के ज्यादा हों तो क्या करें। तो मैं कहूंगा कि हम अुतने ही लें जितनोंका प्रबंध कर सकें। ज्यादा न लें।

 की मांको देखा। निहायत गंदे कपड़े पहने थी। नौकरानी-सी लगती थी। और हिन्दुस्तानी भी नहीं जानती थी। अुसे हमारे बीचमें दो महीने हो गये। के अपने कपड़े भी ठीक न थे।* गला खुला था। कफ भी खुले थे। हम मजदूर हैं कुर्तेकी बांहें आधी होनी चाहिये। पीतल या कांचके बटन हमारे लिये निकम्मे हैं। आशादेवीसे कुछ थोड़ी बातें हुअीं। लेकिन पूरा लिखता हूं क्योंकि चीजें हैं बहुत छोटी छोटी पर महत्त्वपूर्ण हैं। जिनके बिना हम अपने अुद्देश्यसे बहुत दूर जा पड़ते हैं।

१०-११-'४५ बापूके आशीर्वाद

*

अेक बार बापूजीकी तंदुरस्ती कुछ कमजोर थी। पेटमें भारीपन होनेसे अुन्होंने कैस्टर आअिलका जुलाब लिया था। आभाबहन अुनको स्नान करा रही थी। स्नानघरमें से अेकाअेक आभाके चिल्लानेकी आवाज आयी दौड़ो दौड़ो बापूजी गिर गये। मैं स्नानघरके नजदीक ही था। दौड़कर गया तो देखा कि टबके पास जमीन पर बापूजी बेहोश होकर निश्चेष्ट पड़े हैं। यह

* दो कपड़े तो बढ़िया थे लेकिन अव्यवस्थित थे। जिसीलिये बापूजीने टोपियारीके कुरतेके बटन बताकर कहा कि हमें तो अैसे बटन चाहिये।

देखकर मेरा मुंह पीला पड़ गया और मैंने समझा कि बापू हमेशाके लिये चले गये। मैं न तो किसी दूसरेको आवाज दे सका न कुछ बोल सका। स्तब्ध होकर बापूके माथे पर हाथ धरकर बैठ गया। दो मिनटमें बापूजीको होश आया। आभा तो बिलकुल सूख गयी थी वह भी खुश हुअी। बापूजीने हमसे कहा कि अिसकी कोअी चर्चा नहीं करना है। मैंने अीश्वरको अनेक धन्यवाद दिये और अैसा ही समझा कि बापू बाल बाल बच गये।

अिसके पश्चात् बापूजी दिल्ली चले गये क्योंकि भारतीय स्वतंत्रता-संग्राम अपने शिखर पर पहुंच रहा था। अुसके बाद मुझे सेवाग्राममें रहनेका अवसर बहुत ही कम मिला।

*

पू. किशोरलालभाअीकी तबीयत काफी कमजोर थी। कुछ मानसिक बेचैनी भी रहती थी। अुनकी अिस स्थितिसे मुझे दुःख और चिन्ता हो रही थी। मैंने बापूजीको लिखा था कि आप अुनकी तरफ ध्यान दीजिये। अिसके अुत्तरमें बापूजीने मुझे लिखा

सेवाग्राम वर्धा,
२५-२-'४१

चि. बलवंतसिंह

चि. किशोरलालका अिलाज कलसे मैंने शुरू तो किया है। देखें क्या होता है।

तुम्हारे गवया भक्तिका मनन करके अपना कर्तव्य पालन करता है। पाखाना और रसोड़ा हमारे जीवनकी चाबी है। बाकी सब यह तो करे तो आता है।

बापूके आशीर्वाद

बापूजीने अिस छोटेसे पत्रमें जीवनकी सम्पूर्ण साधनाका बोध करा दिया है। आध्यात्मिक दृष्टिसे गवया भक्तिमें सब कुछ आ जाता है। व्यावहारिक जीवनमें पाखाना-सफाअी और भोजनालयकी व्यवस्था तथा स्वच्छतामें जीवनकी व्यवस्था और स्वच्छता आ जाती है। अगर बापूजीका सारा साहित्य और अुनकी बताअी सारी अुत्तम बातें विस्मृत हो जायं और सिर्फ अेक यह पत्र ही रह जाय तो चिन्तन मनन और साधनाके लिये

जितनी सामग्री अिसमें भरी है कि अेक नहीं अनेक जन्मोंमें भी अिस स्थितिको प्राप्त किया जा सके तो जीवन सफल हो जाय। पाखाना और रसोड़ा (भोजनालय) हमारे जीवनकी चाबी है — बापूके अिस वचन पर मैं सोचता हूं तो लगता है कि अिसमें ग्राम-साधना स्वच्छता अूंच-नीच भावका निराकरण सब कुछ आ जाता है। नववा भक्तिकी बात लिखकर तो मानो बापूने जो भी कुछ मुझे कहना था वह सब कह दिया है। बापूजी मुझे कहां ले जाना चाहते थे मेरे लिये अुनकी कितनी गहरी शुभ कामनायें थी यह सोचकर मेरा हृदय और दिमाग चकित रह जाता है। कहां मैं और कहां बापूका अहैतुक प्रेम!

*

आश्रमके बगीचेमें तीन चार प्रकारके आमके पेड़ थे। अुनमें अेक पेड़के आम बहुत ही मीठे और स्वादिष्ट होते थे। अुसके फल भी बहुत कम और सो भी हमेशा नहीं आते थे। अिस बार वह पेड़ खूब फला और फल भी अच्छे आये। मेरे मनमें लालच हुआ कि ये आम बापूजीको खिलाने चाहिये। बापूजी दिल्लीमें थे। मैंने सोचा किसी दिल्ली जानेवाले आदमीके साथ भेज दूं। वर्धामें कुछ परिचित मित्रोंसे पूछताछ की कि कोअी दिल्ली जानेवाला हो तो मुझे बतावें। श्री गंगाबिसनजी बजाजने मुझसे कहा कि आप स्टेशन पर आम ले आना। कोअी न कोअी परिचित मिल ही जायगा। मैं भेजनेका प्रबंध कर दूंगा। मैं स्टेशन पर आमकी टोकरी ले गया लेकिन कोअी मुसाफिर अैसा अपना परिचित नहीं मिला जो आम बापूजीके पास पहुंचा सके। रेलमें जो भोजनका डिब्बा होता है अुसके व्यवस्थापकसे गंगा-बिसनजीका परिचय था। अुन्होंने अुससे कहा और वह पहुंचानेको राजी हो गया। अुसने आम तो पहुंचाये लेकिन बापूका थोड़ा समय भी लिया। बापू बहुत काममें थे तो भी जब अुस आदमीने मेरा नाम लिया तो अुन्होंने थोड़ा समय दे ही दिया। अिस पर बापूजीने अुससे तो कुछ नहीं कहा लेकिन मुझे अेक पत्र लिखा

चि० बलवन्तसिंह

तुम्हारा पत्र मिला। आम मिले। आम क्यों भेजे? सेवाग्रामकी कोअी खास वस्तु मुझे भेजनेसे क्या फायदा? नुकसान तो बराबर है ही। नुकसान यों कि जिन चीजका यहां बहुत ही दुरुपयोग है अैसे

जहां यह अनावश्यक है वहां भेजनेसे अविचार ही सिद्ध होता है। और हम विचारहीन कभी न बनें। मैंने आम खोले। अच्छे थे। लेकिन जो फल हिन्दुस्तानमें कहीं भी मिलते हैं वह सब फल मेरे पास रखे जाते हैं। असी हालतमें सेवाग्रामके आमकी क्या जरूरत? अब सुनता हूं कि वहांसे भाजी भेजते हो। अगर यही भेजी है तो मत भेजो। अिसमें कितना समय जाता है? हमारे पास जो समय है वह प्रजाका है। और रेलवेवालोंका अनुग्रह भी असी बातमें क्यों लें? यह सब फटकारके रूपमें नहीं है, लेकिन सावधानीके लिये है असा समझो।

हाथियारी और गजराज १ दिनसे यहां हैं। मैंने तो कहा था कि यहां आना नहीं चाहिये था। फजूल समय गया है और गजराजका तो नुकसान ही हुआ है। रहती है आज चली जायगी।

मेरे ठहरनेका शायद आज निश्चित हो जायगा।

नयी दिल्ली २५-५-'४६ बापूके आशीर्वाद

आमके बारेमें मैंने अपनी भूल समझी और बापूजीके सामने अुसे स्वीकार किया और आअिन्दा असी कोअी चीज न भेजनेकी बात अुन्हें लिखी। अिसके जवाबमें बापूजीने लिखा

चि० बलवन्तसिंह

तुम्हारा खत मिला। आमके बारेमें समझ गये यह काफी है। सारा जीवन सावधानीसे ही अच्छा चल सकता है।

हाथियारीका खत आया कि वह भाअीकी शादीके बाद आश्रममें जायगी। मैं अुससे बहुत बात नहीं कर सकता था। किसीके सामने रखनेकी फुरसत दिल्लीमें नहीं मिलती थी। मुश्किलसे गजराजके बारेमें बात कर सका था। और अुसे मेरे पीछे पीछे यहां पहुंच गअी आखिर मोह छोड़नेको कहा था। अुसके परिणाममें वह घर चली गअी। मन लगता है कि आश्रममें वह शायद ही अब आने पा सके। वापिस आवे तो आश्रममें नहीं आनेकी शर्तसे और गजराजको भूपाजन भी लिया जाय। अनुभवसे मैंने पाया है कि गजराजको हाथियारी भी बिगाड़ती है। वह बिचारी दूसरा जानती ही नहीं है तो कर क्या? लेकिन गजराज तो बिगड़ता ही है।

दांत नहीं बना लिये हैं यह बहुत ही अच्छा है। और बगीचा भी अच्छा कर रहे हैं जैसा अनन्तरामजी लिखते हैं।

मसूरी ४-६-'४६ बापूके आशीर्वाद

*

आश्रमके भाओी अनन्तरामजीकी तबीयत खराब रहती थी। खास तौरसे अुनका दिमाग परसे काबू चला जाता था और वे कुछ भी बोलने लगते थे। वे आश्रमकी खेतीमें मेरे साथ ही काम करते थे। अुन्होंने बीमारी और दवाके बारेमें बापूजीको खत लिखा। बापूजीका अुत्तर आया

मसूरी ५-६-'४६

चि॰ अनन्तराम

तुम्हारा खत मिला। किसानोंको आसमानी आपत्तिका सामना करना पड़ता है। यह करनेमें हमें भी वही मुख्य साधन है जिस पर जगत निर्भर रहता है। जिसलिये तुम दोनों काम कर रहे हो यह मुझे बहुत अच्छा लगता है। तुम्हारी चित्तशांतिके लिये अब तो मैं सिवा रामनामके और कोओी अिलाज नहीं बता सकता हूं। वह अनुभवसे पाया है। अुसकी शर्त दो हैं। पहली यह नाम हृदयसे लेना चाहिये। और दूसरी यह कि कुदरतके जो कानून मैंने बताये हैं अुनका पालन होना चाहिये। अुनका पालन बहुत ही आसान है।

बापूके आशीर्वाद

*

अनाजकी कमीसे सेवाग्राममें कुछ लोगोंकी स्थिति बहुत खराब होती जा रही थी। लोग मेरे पास आये और कहने लगे कि आश्रमकी तरफसे कुछ मदद होनी चाहिये। आश्रममें अिस प्रकारकी कोओी व्यवस्था नहीं थी कि किसीको आर्थिक मदद दी जा सके। मैंने लोगोंसे कहा कि मैं कोशिश करूंगा कि दुकान (श्री जमनालालजीकी) की तरफसे आपको कुछ मदद मिल सके। लेकिन दुकानवाले भी बादमें कुछ देनेसे हट गये। मैंने बापूजीको लिखा कि सेवाग्रामकी स्थिति खराब होती जा रही है। लोगोंको कुछ मददकी जरूरत है। यह स्थिति अभी देहातोंमें फैलने लगी है लेकिन अभी काबूमें आ सकती है। आप सेठजी (जो जमनालालजीके

तरफसे सेवाग्रामका काम देखते थे) को लिखें तो कुछ हो सकता है। बापूजीने मुझे लिखा

चि. बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। बिलकुल ठीक है। जो आपत्ति है अुसको छोटी समझनेकी कोअी आवश्यकता नहीं है। जो छोटी समझकर आवश्यक वस्तुको छोड़ देता है वह अन्तमें कुछ नहीं कर पाता है। तुमने जो वचन दिया है अुसका पालन करना ही होगा। अब मैं जो करना है वह शुरू कर देता हूं। अिसके साथ बंगाजीका खत है वह पढ़ो और ठीक हो तो अुन्हें भेज दो।

मसूरी १-६-'४६ बापूके आशीर्वाद

•

बापूजी बंगालमें थे। नोआखालीका तूफान शुरू हो गया था और अुसमें पड़नेके लिये बापूजी वहां चले गये थे। मैंने भी वहां जानेकी बापूजीसे अिजाजत मांगी। बापूजीका अुत्तर आया

चि. बलवन्तसिंह

मैं खुद तो बैठे-बैठे क्या लिख सकता था? जो बैसा काम करनेवाले थे अुनको अलग अलग कर दिया। अब बोझ (कामके बोझ) के कारण मनु मेरे पास नहीं है और काम दे रही है। तुम्हारे खतका सब अुत्तर मैं नहीं लिखवा सकूंगा। समय भी नहीं है। यहां आनेके बारेमें अगर मैं नहीं लिख चुका तो लिखवाता हूं कि जिस जगह वहीं रहो। वही तुम्हारा धर्म है। स्वस्थचित्तसे मुसीबतको रोककर स्थितप्रज्ञ जैसे रहना है।

श्रीरामपुर, २६-१२-'४६ बापूके आशीर्वाद

बापूजी बिहार और बंगालके दंगोंके मामलेमें अितने फंस गये थे कि सेवाग्राम वापिस आना अुनका असंभव बन रहा था। अुनके पत्रसे भी बापूका बंगाल-बिहारके हिन्दू-मुसलमानोंके पापकर्मके विषयमें दुःख टपकता है। अेक भाअीको अुन्होंने लिखा "या तो बंगालमें सफल होअूंगा या वहीं पर देह छोड़ूंगा।" अिस दृढ़ निश्चयके साथ बापूजी अुस आगमें कूदे थे।

•

मैंने बापूजीको लिखा कि अैसी छोटी छोटी बातों पर मुझे गुस्सा आ जाता है तो मैं आश्रमका व्यवस्थापक कैसे बन सकता हूं। बल्कि मुझे तो आश्रम छोड़ देना चाहिये। बापूजीने लिखा

दिल्ली ५-९-'४७

चि॰ बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। तुम्हारे हाथ बड़ी जिम्मेदारी आयी है। मुझे विश्वास है कि तुम यह बोझा अच्छी तरह अुठा लोगे। क्रोधको जीतना होगा। यह काम जंगलोंमें होता नहीं है। क्रोधका मौका आने पर भी जब अंकुशमें रहता है तब ही रखता है कि नहीं यह समझमें आ सकता है। जो दृष्टान्त तुमने क्रोधका दिया है अुसमें मुझे आश्चर्य नहीं होता है। लेकिन जो पद तुमने लिया है वह तुम्हें बचा लेगा। लड़केके माता-पितासे सरलतासे क्षमा मांग ली सो बहुत अच्छा हुआ।

बापूके आशीर्वाद

२८

'सेवाग्रामके सेवकोंके लिये'

बापूजीने सेवाग्राम आश्रमके सेवकोंको किसी विषयमें मार्गदर्शन देनेके लिये अेक सूचना-बही बना दी थी। जब अुनके मनमें कोअी सूचना करनेका विचार आता थे वहीमें लिख देते और आश्रमके व्यवस्थापक अुसकी नकल करके सब आश्रमवासियोंको सुना देते थे। ये सूचनायें अैसी हैं जो सामूहिक जीवन जीनेवाली सार्वजनिक संस्थाओं परिवारों और अन्य सबके लिये भी अुपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। अिसलिये मैं यहां बापूजीकी अैसी कुछ कीमती सूचनाओंका नमूना पाठकोंके सामने रखता हूं।

सेवाग्रामके सेवकोंके लिये

मुझे पूछा गया है कि यहां किसी बारेमें नियम हैं क्या? हैं क्योंकि जब साबरमती आश्रम बन्द किया तब मैंने बताया कि हम सब जंगम आश्रम बनते हैं और कहीं भी वास आश्रम-जीवन और अुसके नियम साथ

लेकर सकते हैं। अिसलिये प्रार्थना आदि क्योंकी त्यों कायम है। अुठनेका समय भी कायम रखा है। अवश्य संयोगवशात् सिद्धान्तोंको छोड़कर दूसरी बातोंमें परिवर्तन कर सकते हैं। जैसे कि यहां किया है। हम जान-बूझकर हरिजन नौकरोंको रखते हैं। क्योंकि अुसमें अुनकी सेवाकी भावना है। लेकिन यद्यपि नौकर रखते हैं तो भी अुनको हमारे भाजी समझकर बरताव करना चाहिये। अिसलिये जो कार्य मजदूरीका भी हम कर सकते हैं वह हम ही करें। जो हमसे नहीं हो सके तो हम दूसरे साथीकी मारफत करावें। अुनसे भी न हो सके तो वही हरिजनोंसे लेवें।

ता० १-९-१८ बापू

जिस कमरे (आदि-निवास) में हम बैठते हैं अुसमें सुघड़ता नहीं है। बहुत सामान मैंने देखा वह निकम्मा है। निरीक्षण करके अुसे हटाना चाहिये। जिधर मैं बैठता था वहां जो टेबल पड़ी है वह अनावश्यक है। संदूक पर सब सामान आ सकता है। हमारा परिग्रह अिससे कम होना चाहिये। याद रखा जाय कि ११ व्रतोंमें अपरिग्रह भी है।

ता० १२-९-१८ बापू

आज दुःखद बीना (घटना) बन गयी। अेक लड़का हमारे खेतके नजदीक बैल चराता था। अुसको रोकनेकी चेष्टा की गयी। वह नहीं माना। बलवन्तसिंहने अुसको पत्थर मारा। यह बात हमारे लिये शरमकी है। मैंने ग्रामवासियोंको कह दिया है कि अगर दुबारा अैसा बलवन्तसिंहसे हो जायगा तो वे सेगांव छोड़ेंगे। हमें समझना चाहिये कि हम सेवक हैं मालिक नहीं। ग्रामवासियोंकी दयासे ही रह सकते हैं। हमको किसीको गाली देनेका या स्पर्श करनेका कुछ भी अधिकार नहीं है।

ता० १९-९-१८ बापू

अितनी बातें हम याद रखें

१ थूक भी मल है। अिसलिये जिस जगह हम थूकें या मैले हाथ धोवें वहां बरतन कभी साफ न करें।

२ टैंकसे सीधा पानी अिस्तेमाल न करें। अिसमें अधिक पानीका खर्च होता है और ज्यादा आदमी अेक टैंकसे अेक ही वक्तमें पानी नहीं ले

सकते हैं। अिसलिअे अपने लोटेमें पानी निकालें और लोटेके पानीसे मुंह साफ करें। फिर लोटे साफ जगह रखनेकी व्यवस्था भी होनी चाहिये

ता १–८–१८ बापू

मेरी सलाह है कि सब नियमपूर्वक सूतयज्ञ करें। अिस बातमें हमें बहुत सावधान रहना चाहिये।

ता १–१–'४ बापू

खानेके बारेमें हरअेकको मर्यादा रखना आवश्यक है। अुसका बोझ, भूखका भाजीका प्रमाण होना चाहिये। भाजी अेक समयके लिये आठ औंस काफी समझी जाय। भोजनमें कुछ बिगड़े तो अुसकी टीका खानेके समय करना असभ्यता है। अिसलिये हिंसा है। खानेके बाद चिट्ठी लिखकर व्यवस्थापकको बताया जाय। कोअी चीज कच्ची रह जाय तो छोड़ देना। अितनी भूख रह जाय तो कोअी हानि नहीं होगी लेकिन गुस्सा न किया जाय।

सब काम सावधानीसे होना चाहिये। हम सब अेक कुटुम्ब हैं अैसी भावनासे काम लेना आवश्यक है।

ता २–१–'४ बापू

आजकल मैं जो कुछ लिखता हूं अुसको आज्ञारूप न माना जाय। सब अपनी बुद्धिका अुपयोग करके जो करें वही सही माना जाय।

ता ८–१–४ बापू

नमक भी चाहिये अुतना ही लेवें। पानी तक निकम्मा खर्च न करें। मैं आशा करता हूं सब (लोग) आश्रमकी हरअेक चीज अपनी और परायी है अैसा समझकर चलेंगे।

ता ३–१–४ बापू

सबको जानना चाहिये कि सेवाग्राममें काफी जहरी सांप रहते हैं। अीश्वरकी कृपा समझें कि अब तक किसीको सांपने नहीं काटा है। लेकिन सावधान रहना हमारा धर्म है। अीश्वर सावधानको ही सहायता देता है। अिसलिये मेरी सलाह है कि जब तक हो सके लालटेनका सहारा लें। किसी तरह अंधेरेमें जूते भी पहनें।

ता १३– –४ बापू

मैं सुनता हूँ कि कभी सज्जन जब खाना छोड़ते हैं तो अुसकी खबर रसोड़ेमें पहुँचाते नहीं हैं। जिसका नतीजा यह आता है कि खाना पड़ा रहता है। जिसलिये प्रार्थना है कि जो पहलेसे जानते हैं कि अमुक समय खाना छोड़ना है वे वक्त पर रसोड़ेमें खबर भेज दें। यह नींव और दूसरी जो नित्यकी है अुसे दीवाल पर रखना चाहिये।

ता ७-१-'४ बापू

मेरी आशा है कि सब अुबला हुआ पानी ही पीते हैं। वर्षा ॠतुमें हमारे कुओंके पानीमें काफी खराबियां रहती हैं। मलेरियासे बचनेके लिये सब रातको हाथ-पैरों पर मिट्टीका तेल लगाकर सोवें। सिर पर भी लगाना चाहिये। खाना चबाकर खाया जाय। दस्त हमेशा साफ आना ही चाहिये। न आवे तो अेरंडीके तेलका जुलाब लेवें। धूपसे बचना काम करते समय सर पर टोपी या कुछ कपड़ा होना चाहिये।

ता १-७-'४ बापू

जो सूतयज्ञ चल रहा है (राष्ट्रीय सप्ताहके संबंधमें १२ घंटेके दो अखण्ड और ता ६ तथा १३ को २४ घंटेके अखण्ड) अुसमें जितना किया जाय

(१) हरअेककी पूनीका वजन।

(२) अुसमें कितना वजन सूत निकला।

(३) कचरा कितना रहा। सब टूटा हुआ सूत जिकट्ठा किया जाय। अुसका अुपयोग है।

(४) तारका आंक मजबूती समानता।

(५) प्रत्येक गुंडी पर कातनेवालेका नाम दिया जाय।

ता ७-४-'४१ बापू

लड़के या बड़े आपसमें या लड़कियोंसे निरर्थक मजाक न करें। कामकी बातमें निर्दोष विनोदकी जगह है। यह अेक कला है। प्रथम तो बगैर कारण मौन ही धारण करना शुद्ध बोलीकी जड़ है।

आश्रममें जिर्दगिर्द बहुत गंदगी रहती है। जिसलिये अेक आश्रमवासीको जिम्मेदारी सिर पर लेनी चाहिये। अहिंसामें शौच तो आता ही है।

ता १५-४-'४१ बापू

मेरा बी० पी० (ब्लड प्रेशर) तभी कम होगा जब यहांके लोग अपना-अपना काम ठीक तरहसे चलायें और कोअी भी आपसमें झगड़ा न करें। यहांका सब काम मेरे आदर्शके अनुसार चलायें और चलें।

ता० २८-१-'४१ बापू

अेकादश व्रतोंसे फलित होनेवाले और सुव्यवस्थाके लिअे अन्य अुपनियम निम्नलिखित हैं

सब निवासी स्थायी या अस्थायी अपना अेक भी क्षण निकम्मा नहीं जाने देंगे। यहां रहनेवाले आश्रमकी सब सामाजिक सेवामें हिस्सा लेंगे और जब आश्रमका कुछ काम नहीं रहता है तब कातेंगे या रुअीकी किसी क्रियामें अपना समय देंगे। स्वाध्याय रातको ८ से तक कर सकते हैं और जिसमें (अुस समय) जब आश्रमका कुछ कार्य नहीं दिया गया है और कमसे कम अेक घंटे तक कात लिया हो।

बीमारी या अनिवार्य कारणके लिअे कातनेसे मुक्ति होगी।

बगैर कारण कोअी वार्तालाप नहीं करेंगे। अूंची आवाजसे कोअी नहीं बोलेंगे। आश्रममें नित्य शांतिकी छाप पड़नी चाहिये। वैसे ही स्वच्छताकी छाप। अेक-दूसरेके साथ हमारा व्यवहार प्रेममय और मर्यादामय होना चाहिये। और अतिथि या देखनेवालोंके साथ सभ्यतापूर्ण। कोअी कैसा भी वेष पहनकर आवें गरीब-से क्यों तो भी अुनके प्रति आदरसे बरताव होना चाहिये। अूंच-नीच गरीब-अमीरका भाव नहीं होना चाहिये। जिसका मतलब यह नहीं है कि कोअी नाजुक अतिथि आ जाये तो अुसकी तरफसे अैसी आशा रखें कि वह भी हमारी जैसी सादगीसे रह सकता है। आतिथ्यमें अतिथिके रहन-सहनका हमें हमेशा खयाल रखना होगा। अिसीका नाम सच्ची सभ्यता है। आश्रममें कोअी अनजान मनुष्य आ जाये तो अुसके आनेका प्रयोजन पूछना चाहिये। और आवश्यकता होने पर व्यवस्थापकके पास अुसको ले जाना चाहिये। यह धर्म सब आश्रममें रहनेवालोंका है। क्योंकि किससे पहली भेंट कैसे लोगोंकी होगी जिसका हमें पता नहीं चल सकता।

प्रत्येक मनुष्य जो कुछ करे, वही सोच-विचारकर करे। जो कुछ करे अुसमें ध्यानावस्थित और तन्मय हो जाय। सब खाना औषध समझकर और शरीरको आरोग्यवान रखनेके लिअे खाया जाय और शरीरकी रक्षा

भी सेवाकार्यके लिये ही की जाय। अिस दृष्टिसे मनुष्यको मिताहारी अथवा अल्पाहारी होना चाहिये।

खाना जो मिले अुससे संतोष माना जाय। कुछ खाना कच्चा या बिगड़ा हुआ लगे तो अुसी समय शिकायत न की जाय लेकिन बादमें विनयपूर्वक रसोअीके व्यवस्थापकको बताया जाय। बिगड़ा हुआ या कच्चा खाना छोड़ दिया जाय। खानेमें आवाज न किया जाय। आहिस्ते आहिस्ते मर्यादा और स्वच्छतापूर्वक अीश्वरका अनुग्रह मानते हुअे खाना चाहिये।

हरअेक मनुष्य अपने बरतन बराबर साफ करे और बताअी हुअी जगह पर रखे।

अतिथि या दूसरे अपनी थाली लोटा दो कटोरी और चम्मच साथमें लायें। अपनी लालटेन बाल्टी और बिस्तरा भी। कपड़े वगैरा आवश्यकतासे अधिक न होने चाहियें। कपड़े सब खादीके होने चाहियें। अन्य वस्तुअें यथासंभव देहाती या कमसे कम स्वदेशी होनी चाहियें।

सब हरअेक वस्तु अपनी जगह पर रखें और कचरा कचरेकी जगह पर। पानीका भी दुर्व्यय न किया जाय।

पीनेका पानी अुबला हुआ रहता है और बरतन भी अंतमें अुबले पानीसे धोने चाहियें। कुअेंका कच्चा पानी पीने योग्य नहीं माना जाता है। अुबलते हुअे पानी और गरम पानीका भेद समझना आवश्यक है। अुबला हुआ पानी वह है जिसमें खाल पड़ सकती है, जिसमें से काफी भाप निकलती है। अुबलता पानी कोअी भी पी नहीं सकता।

कोअी रास्तेमें न थूके न नाक साफ करे। अैसी क्रिया अेकांत जगह जहां किसीका चलना फिरना नहीं होता वहीं की जाय।

पाखाना-पेशाब भी नियत जगह पर ही किया जाय। अिन दोनों क्रियाओंके बाद सफाअी होना आवश्यक है। पाखानेका बरतन हमेशा अलग ही रहता है, रहना चाहिये। पाखाना जाकर साफ मिट्टीसे हाथ मांजने चाहियें और धोनेके बाद साफ कपड़ेसे पोंछने चाहियें। पाखाने पर सूखी मिट्टी अितनी डालनी चाहिये कि अुस पर मक्खी न बैठ सके और देखनेमें सिर्फ सूखी मिट्टी ही नजर आये।

पाखाना बैठते समय ध्यानसे बैठना चाहिये जिससे बैठक न बिगड़े और पाखाना अपनी जगह पर ही पड़े। अंधेरेमें लालटेन जरूर ले जायं।

कोअी चीज जिस पर मक्खी बैठ सकती है ढंकना आवश्यक है।

दतौन अेक जगह बैठकर शांतिसे करना चाहिये। खूब चबाकर बारीक कूंची करके दांत और मसूड़ोंको आगे-पीछे घिसना चाहिये। घिसते समय जो थूक पैदा होता है थूक देना चाहिये। निगलना नहीं चाहिये। दांत अच्छी तरह साफ होनेके बाद दतौन चीरकर दोनों चीरोंसे जीभ अच्छी तरह साफ करना और बादमें मुंह खूब साफ करना और नाक भी पानी चढ़ाकर साफ करना चाहिये। दतौनको चीर पानीसे अच्छी तरह धोना और अुसे अेक बरतनमें अिकट्ठी करना चाहिये। सूख जाने पर अुसे जलानेके काममें लाना चाहिये। नियम यह है कि कोअी चीज व्यर्थ नहीं जानी चाहिये।

निकम्मे कागजात जो दूसरी तरफ लिखनेके काममें नहीं आ सकते अुन्हें जला देना चाहिये। कागजके साथ और कोअी चीज नहीं मिलना चाहिये।

भाजी वगैरा साफ करनेसे जो कचरा बचता है अुसे अलग रखकर खाद बनाना चाहिये।

थूकना अेक निश्चित जगह किसी कोनेमें जाकर करना अिधर अुधर हरगिज नहीं।

कोअी आश्रम देखनेको आते हैं अथवा हमारे अतिथि होते हैं तो अुनसे हम मोहब्बत करें। अुनको परायापन नहीं लगना चाहिये।

आश्रममें सब वस्तु अपनी जगह पर होनी चाहिये और कोना-कोना साफ होना चाहिये। दरवाजे पर धूल नहीं होनी चाहिये। यह मिलने नहीं होने चाहिये।

जो काम जिसके सिर है अुसे वह बड़ी सावधानीसे करे।

सामुदायिक काममें सब पूरी हाजिरी भरें, बरतन मांजनेमें खूब सफाई होनी चाहिये।

पाखाने हमेशा सूखे होने चाहिये। मैले पर सूखी धूल हमेशा होनी चाहिये।

पानीकी कोठीके नजदीक बहुत पानी पड़ता है। यह ठीक नहीं है। खाना हमेशा ढंका होना चाहिये। मक्खी न बैठने पाये।

खानेमें सब अस्वाद-व्रत ध्यानमें रखें और सब वस्तु औषध समझकर खायें। कोअी समय (कभी) कुछ कम मिले तो अस्वस्थ न बनें। जो मिले वह अीश्वर-कृपा समझकर ग्रहण करें।

प्रार्थनामें जो कुछ है अुसका अर्थ बराबर समझें। आश्रमकी सब वस्तु निजी है अैसा समझकर अुसकी रक्षा करें और अुसको अिस्तेमाल करें।

ता० ८-१२-'४१ बापू

मेरा खयाल है कि कमसे कम अेक समयके लिये कच्ची भाजियां ही खानेसे बड़ा फायदा होता है। भाजियोंमें पालक या मूलीकी पत्तियां, सलगम, गाजर, मेथी, मूली, टमाटर ले सकते हैं। अिसमें क्षार मिलते हैं, दांत मज़बूत होते हैं, हाजमे पर अच्छा असर होता है। और पकी खाते हैं अुससे थोड़े हिस्सेमें काम निपटता है। बराबर चबानेकी आदत होती है, स्वाद पकी भाजीसे अधिक रहता है। मैंने तो दो महीने तक यह प्रयोग किया है। जिनको खास हरज नहीं है वे प्रयोग करके देखें।

सब अपने अपने काममें अधिक जाग्रत रहें। जैसा व्यवस्थित काम होना चाहिये वैसा नहीं हुआ है। स्वच्छताके बारेमें काफी सुधारनाको स्थान है।

ता० ७-२-'४२ बापू

मेरी सलाह है कि आवश्यकतासे अधिक (बरतन) किसीके पास न रहें और जिनके पास नये बरतन हैं वे पुराने दें जिससे मेहमानोंके लिये अच्छे रह सकें।

ता० ८-२-'४२ बापू

आश्रममें हममें से कोअी स्वादके लिये न खाय, जीनेके लिये खाय। अैसा भी जीनेके कारण नहीं लेकिन सेवाके लिये। अिसलिये अेकका देखकर दूसरे न करें। जैसे कि अगर किसीको भातकी आवश्यकता है तो अुसके लिये पकाया जाय अिसलिये दूसरे भी मांगें अैसा नहीं होना चाहिये। सामान्यतया कोअी रोटी और भात दोनों न खाय, लेकिन किसीके लिये आवश्यक है तो दोनों लिये जायें। नियम यही है, स्वाद नहीं।

अिसमें से यह तो सहज प्राप्त होता है कि जिनको अीश्वरने मन दिया है वे अिसमें स्वाद न करें। यहां रहनेका सब फायदा वे गुमा देंगे अगर स्वादके कारण कुछ भी चीज खरीदेंगे।

आजकल अच्छा होगा यदि सब कमसे कम दो बार साफ पानीसे कुल्ला करें। साफ पानी किसे कहा जाय डॉक्टर दाससे समझ लें। सामान्य नियम यह है कि पानीका रंग गुलाबके फूल-सा होना चाहिये।

ता. २७-४-'४२ बापू

बात यह है कि हम अपना जीवन विचारमय करें। काम कम करना है तो कम करें, लेकिन जो करें सो बन पड़े वहाँ तक संपूर्ण करें। किसीकिसीसे मैंने कहा है कि अगर हम अपने जीवनको (सब बातमें) चाहते हैं वैसा करें और सेवाग्रामको आदर्श बना सकें तो हमने सब किया।

ता. १९-१-'४५ बापू

मैंने कल सुना कि बापू जो आश्रममें बहुत बरससे काम कर रहा है उसे न हिसाबका ज्ञान है न हिन्दुस्तानके इतिहास-भूगोलका। अगर ऐसा ही है तो हमारे सोचनेकी बात है।

ता. ११-२-'४५ बापू

२९
धर्मानन्दजी कौशाम्बी

किशोरलालभाईकी तबीयत काफी कमजोर हो गयी थी। मुझे उनकी चिन्ता हो रही थी। मेरी सूचना थी कि उनको उरुळीकांचन जाना चाहिये या सेवाग्राममें ही किसी प्राकृतिक चिकित्साके जानकारको बुलाकर उसकी सूचनाके अनुसार चलना चाहिये। उसी समय पू. धर्मानन्दजी कौशाम्बीको बापूजीने आश्रममें भेजा। उनकी तबीयत काफी खराब थी। उनको कुछ भी हजम नहीं होता था। उन्होंने सिर्फ पानी पर रहकर शरीर छोड़नेकी बापूजीसे सलाह माँगी थी। अपने अंतिम संस्कारके बारेमें उनके मनमें यह विचार था कि मेरी अन्त्येष्टि क्रिया सस्तीसे सस्ती की जाय। और उन्हें समझा था कि जमीनमें दफनाना सबसे सस्ता है।

वर्धमा (हरिजन लड़का) को जिसे श्री सीताराम शास्त्रीने १९३५ में बापूजीके पास भेजा था कुछ बीमारी हो गयी जिससे उसको बार बार

उपवास करके देह छोड़नेवाले श्री धर्मानन्द कोसाम्बीका अंतिम दर्शन।

पकड़कर आते थे। अुनकी डॉक्टरी परीक्षा करानेके लिअे बंबअी भेजनेका निश्चय हुआ। यह सब मैंने बापूजीको लिखा। बापूजीका अुत्तर आया

सोदपुर, १२-५-'४७

चि. बलवन्तसिंह,

तुम्हारे तीनों खत मेरे सामने हैं। चिमनलालभाओकी तबीयत अच्छी रहे या न रहे, मुझे अच्छा लगेगा कि वह वहीं रहनेका निश्चय करें। दुबेजीको बुलानेसे कुछ भी फायदा नहीं होगा। दूध फल और कच्ची-पक्की भाजी काफी खुराक है। मूंगफली खानी हो तो पानीमें १६ घंटा रखकर खायें। ठंडे पानीमें बैठनेसे फायदा हो सकता है। यह सब करते हुअे रामनाम लेते हुअे जो हो सो होने देना। अुस्सीका विचार अुनके लिअे नहीं कर सकता हूं।

कौशाम्बीजी कुछ भी हजम नहीं कर सकते हैं तो भले पानी पर रहें। पानी न पी सकें तो भले देह जाय। भीतरी शांति है तो सब कुछ है। फिर भी जैसे विनोबा कहें सो करो। यह सब अुन्हें सुनाओ।

कन्हैया बम्बअी पहुंच गया है, अैसा खत लीलावतीबहनका है। मैंने कन्हैयाको लिखा है। डॉ. पुरंदरको भी जो आँख देखते हैं।

दौड़धूपकी भीतर ठीक है तो तुम्हारा बीमार होना नहीं चाहिये। तुम्हारी परीक्षा ठीक हो रही है।

राह न देखी जाय। लेकिन कौशाम्बीजीके विषयमें खबर दी जाय। मैं तो दहन पसन्द करूंगा। लेकिन अुस बारेमें मेरा आग्रह नहीं।

बापूके आशीर्वाद

कौशाम्बीजी विनोबाजीकी सलाहसे अल्पाहार कर रहे थे। ता. ४-६-'४७ को यह भी अुनकी अनुज्ञा लेकर अुन्होंने बन्द कर दिया। अुनका शरीर धीरे धीरे क्षीण हो रहा था। किन्तु अुनकी चित्तकी प्रसन्नता और बुद्धिकी तीव्रतामें लेशमात्र भी फर्क नहीं पड़ता था। वे आनन्दके साथ प्रयाणकी तैयारी कर रहे थे। धर्मानन्दजी बौद्ध थे। लेकिन सचमुच गीताकारके प्रति अुनकी अपार भक्ति थी। अुन्होंने गीताध्ययन भी जारी किया था। अपनी मृत्युका दर्शन वे स्पष्ट रूपसे वैसे ही कर रहे थे जैसे कोअी सामने खड़े हुअे आदमीको

देख सकता है। अुसके बारेमें छोटी छोटी सूचनायें भी हमको वे करते थे। अपना अनुभव भी सुनाते थे। अेक दिन प्रार्थनाके पश्चात् मुझसे कहने लगे "आपके बारेमें मुझे यह कहना है कि आप क्षत्रिय हैं, गुरु भी क्षत्रिय थे। आपको गीता धर्मके कुछ वाक्य बताना चाहता हूं।" अुन्होंने जो कुछ बोला वह जिस प्रकार था "यो मे बुध्यति वीर्य एवं मन्त्रं च आस्थे। तवह सारथि मुनि रश्मिग्राही मितरो जनो॥ (जो आप अुत्तम घोड़ेको पकड़कर चलानेवाले रथकी तरह नियंत्रणमें रखते हैं अुन्हें मैं सारथि कहता हूं दूसरे तो केवल रस्सी पकड़नेवाले हैं।)" कहने लगे "आपको जपध्यानका क्रम सुनाया है। जिसको ध्यानमें रखकर कुछ रोज अभ्यास करना चाहिये। अभी तो आपके पास काफी समय है। जिससे आप काफी कर सकते हैं। आप मेरे पाससे कुछ चाहते थे जिसलिये मेरी जिच्छा हुआी कि आपको कुछ बताना ही चाहिये। मैं आपको आशीर्वाद देता हूं। आपका कल्याण होगा।" फिर अुन्होंने अपने ध्यानका अनुभव सुनाया और बोले "आज जो जितनी शांतिका अनुभव मैं कर रहा हूं वह शुभ लक्षणमात्र ही कम है। मनुष्यकी परीक्षा मृत्युके समय ही होती है। अगर अुसकी कुछ भावना सफल होगी तो अुस समय अुसके अनुरूप ही भाव आयेगी और वह शांतिका अनुभव करता करता शरीर छोड़ेगा। हमको अपनी कीर्तिके लिये कुछ भी नहीं करना चाहिये। जो करना है वो अच्छे गुणोंके विकासके लिये करना चाहिये। क्रोध सबको आता है। जिसमें क्रोध नहीं वह मनुष्य किसी कामका नहीं। लेकिन जो क्रोधके वशमें होकर अपना काबू खो बैठता है वह अुससे भी बुरा है। क्रोधको अपने काबूमें रखकर मर्यादासे बाहर न जाने देना ही पुरुषार्थ है। बापूजीमें यही शक्ति है। क्रोधको काबूमें रखनेका अभ्यास आपको करना है और निष्काम भावसे शुभ काम करते जाना है। जिसीसे आपका कल्याण हो जायगा। मेरी आत्मा आपसे यही कहती है कि आप जिज्ञासु हैं। जिज्ञासु होनेसे मनुष्य जितना ही बुरा हो अेक रोज सत्पुरुष बन ही जाता है।

श्रीस्वामीजीका दिल प्रेमसे सराबोर था। मुझे अुनकी वाणीमें साक्षात् भगवानकी कृपा बरसती मालूम हुआी। वे आगे कहने लगे

बापूजीने मेरा समाधान करवाया। अुस समय मुझे कोअी तकलीफ नहीं थी, तुलसी भी नहीं थी और अुस समय मैं आरामसे मर सकता था। लेकिन बापूजीने मेरे अुपर दया करनेके लिये मुझे अुस्तादसे निमुक्त करके

लिखे तार दिये। मैंने भुनकी प्रेरणासे पिछले २३ सितम्बरको अनशन छोड़ दिया और तबसे आज तक काफी दुःख पाया और अन्तमें फिर यहीं अनशन करना पड़ा। लेकिन जिसमें बापूका तनिक भी दोष नहीं है क्योंकि बापूजीने सब दयाभावसे ही किया था। जिसमें मुझे जरा भी दुःख नहीं है, क्योंकि भगवान बुद्धने कहा है कि खन्ती परमं तपो तितिक्खा। (तितिक्षारूपी क्षमा ही परम तप है।)

बापूजीकी कृपासे मुझे जिस तितिक्षाका अवसर मिला। जिसमें मेरी कसौटी हो गयी। मुझे जो तकलीफ आती है असे सहन करनेमें आनन्द मानता हूं। यह सब बापूजीकी कृपा है। मेरी जिस प्रकारकी मृत्युसे बापूजीको आनन्द मानना चाहिये क्योंकि अनका अक भक्त जिस कसौटीमें से गुजर रहा है और शान्तिपूर्वक प्रयत्न कर रहा है। अन्तके क्षण तक क्या होगा यह तो भगवान ही जाने।"

मैंने यह सब वर्णन बापूजीको लिखा। बापूजीका जवाब आया

पटना १९–५–४७

चि॰ बलवन्तसिंह

तुम्हारा खत प्रार्थनाके पहले मिला हुआ मिला। कोसाम्बीजीका पढ़कर आनन्द होता है। सायमें अनके लिये खत रखता हूं। जिन्हें तब देह छूटा तो खत अनको दे देना या पढ़ देना।

अनके आश्रममें रहनेसे आश्रम पवित्र होता है, जिसमें मुझको थोड़ी शक नहीं है।

शंकरनका खत जिसके साथ है।

बापूके आशीर्वाद

अन्तमें [illegible] कोसाम्बीजीने सब बापूजी पर छोड़ दिया था। बादमें बापूजीका दूसरा पत्र आया

पटना २–६–४७

चि॰ बलवन्तसिंह

तुम्हारा खत मिला है। जिसमें पढ़ने जैसा कोई खत मिला नहीं है जिसमें कोसाम्बीजीके स्वीकृत मृत्युके बाद क्या करना यह पूछा हो।

लेकिन आज संकल्पका सवाल है। अुसमें सब फिजूल ही है। कोसाम्बीजी आखिरका निर्णय हम पर छोड़ते हैं तो अग्नि-संस्कार ही सबसे अच्छी क्रिया है। यह बात अकल-मान्य हो गयी है। अुसमें खर्च भी ज्यादा नहीं है, न होना चाहिये। दफन करनेमें भी शास्त्रीय तरीकेसे करें तो काफी खर्च होता है। बाकी चीजें तो अुन्होंने लिखवायी हैं। पाली विद्यार्थियोंके बारेमें अुनका आग्रह होगा तो वैसा अुनको कहा जाय। मेरी अुनसे प्रार्थना है कि अब असी बातोंको भूल जायें और शांतचित्त होकर देह छूटना है तो छूटे, रहना है तो रहे। अुनसे यह भी कहना कि पाली भाषा तो लंकामें सीखी जाती। लेकिन बौद्ध धर्म सीखनेका क्षेत्र लंका है असा मेरा दिल नहीं मानता। बौद्ध धर्मकी अूपरी बात जाननेसे रहस्यका ज्ञान होता नहीं है।

मोघिस रेड्डीका खत आया है। अुसका अुत्तर पढ़ो और जो निर्णय करना है सो करो।

रविवार ता. २१ को प्रात — बापूके आशीर्वाद

धर्मानन्दजीने बापूको लिखवाया था कि अुनकी मृत्युके बाद कुछ विद्यार्थियोंको हर साल लंका भेजा जाय जो पाली भाषा सीखकर बौद्ध धर्मका प्रचार भारतवर्षमें करें। जिसके अुत्तरमें ही बापूजीका अुपर्युक्त अुत्तर था। अुस पत्रके अुत्तरमें कोसाम्बीजीने लिखवाया

सेवाग्राम २५-५-'४७

पू. बापूजी

सादर प्रणाम। यदि श्री कमलनयन बजाज आपकी मेरे अूपर अेक हजार रुपयेका बोझा न छोड़ जाते तो स्मारकके बारेमें मेरे दिलमें कोअी विचार नहीं आता। पैसा आनेके बाद जो विचार मुझे सूझे लिखवाये। लेकिन अुसकी जरा भी चिन्ता नहीं है। मैं तो सब भार आपके अूपर छोड़कर संतुष्ट रहता हूँ। रातको आकाश देखकर बहुत सुख पाता हूँ। यह सब आपके आशीर्वादका ही सुफल समझता हूँ। सिलोनमें बौद्ध धर्मका रहस्य नहीं रहा है यह मैं भी जानता हूँ। अुन लोगोंके साथ अेक अरसे रहकर मैंने बहुत अनुभव लिया है। लेकिन अुनके साथ रहनेसे समथान बुद्धके जमानेकी कुछ कुछ याद कर

सकता था और असुसे मुझे बहुत लाभ हुआ है। अभी तक अुनकी यादसे बहुत आनन्द मिलता है। बाकी सब भूल गया हूं। आम और नीम अेक ही जमीनमें बढ़ते हैं। लेकिन आमका फल अलग होता है नीमका अलग।

अशोकके शिलालेखोंका अर्थ अंग्रेज आनसे पहले हम भूल गये थे। पाश्चात्य विद्वानोंके प्रयत्नसे ही अुनका अर्थ हम लोग समझ सके हैं। हमारे विद्वानोंने भी पाश्चात्योंका अनुकरण करके बहुत कुछ किया है। लेकिन अशोक राजाके अत्यंत सहृदय वचनोंको पढ़कर कितने पंडितोंका हृदय कंपित होता होगा? जिसलिये मेरा कहना है कि प्राचीन संस्कृत खंडहरोंमें मिल गया है तो भी सज्जन अुससे बहुत सबक सीख सकते हैं।

अभी जो आदमी सिलोन जानेवाला है वह जैसा भक्त थोड़ा ही हो सकता है? वह यहांकी डिग्री लेकर वहां सिर्फ ज्ञान बढ़ानेके लिये जायगा। तो भी हमारा कर्तव्य है कि अुनका गुजारा वहां पर अच्छी तरहसे चल सके जिसलिये काटछांट न करके अुसके गुजारेके लिये काफी पैसा मिलना चाहिये। आजकल जो शिक्षायंत्र चल रहा है अुससे जो लाभ अुठा सकते हैं वह अुठाना चाहिये।

मवदीय
धर्मानंद कौशाम्बी

अुसी दिन किशोरलालभाअीका पत्र बारडोलीसे आया

बारडोली
दिनांक २५-५-४७

प्रिय बलवन्तसिंहजी

आपका विस्तृत पत्र मिला। श्री कौशाम्बीजीकी सारी सूचनायें लिख भेजी जिससे खुशी हुअी। अुनमें से जितना पू. बापूजीसे संबंध है वे अुनको लिख भेजी होगी। मुझे दुःख है कि मैं अुनके अंतिम दिनोंमें अुनका लाभ नहीं अुठा सका रहा हूं। अुनमें वर्धा पहुंचनेका विचार तो है, लेकिन अुतने दिन तक अुनके शरीरका टिकना मुश्किल है। और मैं अैसी कठोर जिच्छा भी कैसे करूं कि सिर्फ मैं अुनको मिल

सब अिसलिअे अुनकी भावना बढ़ती थी। अिसलिअे मन ही मन अुन्हें दूरसे नमस्कार भेजता हूं।

अुनकी आपबीती (गुजराती) आपने पढ़ी है या नहीं? बहुत पढ़ने योग्य है। सत्यधर्मकी खोजके लिअे पुरुषार्थी मुमुक्षु क्या क्या करेगा और कितने कष्ट अुठायेगा अिसकी अुसमें तवारीख है। और बादमें जो अुन्होंने प्राप्त किया अुसे जनताको वितरण करनेके लिअे भी अुन्होंने जीवन चल जाय तब तक परिश्रम किया है। बहुत बड़े भंडारमें से अच्छेसे अच्छे मोती चुन चुन कर अुन्होंने हमें दिखा दिये हैं। वे बड़े संत पुरुष हैं। यह अेक भावातिरेक नहीं सच बात है। अुनकी जन्म-तारीख आपने मालूम कर ली होगी। न की हो तो कर ली जाय।

श्री किशनलालभाअी बहुत कमजोर हो गये हैं यह जानकर खेद होता है। अच्छा होता गर्मीमें वे थोड़े दिन पूना जाते। अब भी जायं तो ठीक रहेगा जैसा मेरा खयाल है।

चि. होशियारीकी तबीयत अच्छी हो रही है जानकर संतोष हुआ। चि. मनरावके लिअे कुछ अच्छी तरहसे सोच लेना चाहिये। अुसकी नाक ठीक हो जानी चाहिये।

आपके गुणोंको अभिनन्दन। अब बहुत काम्य भरा होगा।

गर्मी यहां पर बहुत है। लेकिन यहां लू नहीं बरसती। हवा अकसर चलती रहती है। फिर भी यहांकी हवा बम्बअीके जैसी है। अिसलिअे पसीना सूख नहीं जाता और ठंड भी मालूम होती है। और रातको हवा बन्द हो जाती है तब तीन चार घंटा दुःख मालूम होता है। यमनिके कारण मेरा स्वास्थ्य कुछ ठीक है। और गोमतीको भी यहां बहुत तकलीफ जैसी नहीं हुअी है। हां अपनी अंगुली या शरीरके किसी भागको विदा कर के तो अुसका क्या किया जाय?

अब यहांसे निकलनेकी चिन्ता कर रहा हूं। पर सेवाग्रामवालोंके जो खत आते हैं वे आनेसे रोकते हैं। आज ही श्री बापूजीका बम्बअीसे पत्र है कि अिस वक्त सेवाग्राम न आना अच्छा है।

बालक

किशोरलाल

पू. कौसाम्बीजीको मेरा प्रणाम कहना। चि. होशियारी और पद्मराजको आशीर्वाद।

चि. गोमती

किशोरलालभाईको मैंने पू. कौसाम्बीजीका सारा समाचार लिखा था। और भी आश्रमके समाचार लिखे थे। अुसके जवाबमें अुनकी भावना विवेचना मनोरंजन गंभीरता तथा व्यावहारिकतासे भरा अुपरका पत्र आया। गोमतीबहनके हाथमें डाक बांटते समय चाकू लग गया होगा तो अुसका भी जिक्र कर दिया। पू. कौसाम्बीजीके लिअे अुनके दिलमें बड़ा आदर था। परन्तु अुनसे मिलनेकी तीव्र अिच्छा होते हुअे भी वे वापिस आवें तब तक जीवित रहकर कौसाम्बीजीको यातना सहन करनी पड़े अैसा न चाहनेमें अिनकी अुदारता है। यह पत्र मैंने कौसाम्बीजीको सुनाया तो वे बहुत खुश हुअे और बोले "किशोरलालजी तो बड़े विवेकशील पुरुष हैं। अुनको लिखो कि मुझसे न मिलनेका दुःख न मानें। आखिर तो हमारी आत्मा अेक ही है और वह मिली हुअी है।"

आश्रमके ११ सालके जीवनमें कौसाम्बीजीकी मृत्यु पहली मृत्यु थी। अैसी आदर्श मृत्यु मैंने अपने जीवनमें कभी नहीं देखी। वे रातको अपने पास सोनेका मुझे कभी नहीं कहते थे। लेकिन मृत्युकी पहली रातको मुझसे कहने लगे "आज तुम मेरे पास ही सोओ। रातको बारह बजे जब चन्द्र सिर पर आयेगा तब मेरी मृत्यु होना सम्भव है। तुम सावधान रहना। मेरे कफनके लिअे नये कपड़ेका अिस्तेमाल नहीं करना। मेरे जो पुराने कपड़े हैं, अुनका ही अिस्तेमाल करना है।" वे सब कपड़े धो-धाकर साफ रखे हुअे थे।

अुन्होंने अपना सारा सामान आश्रमके सुपुर्द कर दिया था। सिर्फ अेक घड़ी अपने लड़केके लिअे अिसलिये रखी थी कि शायद वह अुनका कुछ चिह्न रखना पसन्द करे। अुनके लड़के और लड़कीके बार बार बम्बअीसे पत्र आते थे और वे अुनको देखनेके लिअे सेवाग्राम आना चाहते थे। लेकिन कौसाम्बीजीने आग्रहपूर्वक अुनको नहीं आने दिया। मैं अुनको रातके बारह बजे तक मैं अुनके पास था।

अुस समय गीतामें अेकाग्रमें अुन्होंने जो योगाभ्यास किया था अुसका अद्भुत वर्णन अुन्होंने सुनाया। मृत्युका पहलेसे पता कैसे चल सकता है,

अिसकी साधना भी अुन्होंने की थी। अपना पुराना बहुतसा अनुभव भी मुझे लिखाया। अुन्होंने आनापान भावनाकी बात बतायी जिसकी पूरी साधनासे मनुष्य अपने अन्तिम श्वासको भी अच्छी तरह जान सकता है। वे बोले

जैसा योग रहता है वैसी ही आनापान भावना रहती है। लेकिन अुस भावनामें कुम्भक श्वास रोकना पूरक श्वास भीतर ग्रहण करना और रेचक श्वास छोड़ना नहीं होता है। सिर्फ श्वासोच्छ्वासका खयाल रखना पड़ता है। अिसका संक्षिप्त वर्णन समाधि-मार्ग में मैंने किया है। विस्तृत वर्णन पाली ग्रन्थोंमें विशेषतः विशुद्धि-मार्ग में है। यद्यपि यह भावना अलग है तो भी अिसका अुपयोग अन्य सभी भावनाओंमें होता ही है। अिस भावनाका मैंने विशेष अभ्यास नहीं किया है। थोड़ासा तो करना ही पड़ा था लेकिन अुसका अभी अच्छा फल मिल रहा है।

रातको मुझे जरासी नींद आती है तब मेरा मुंह खुल पड़ता है और जीभ बिलकुल सूख जाती है और अुस पर कांटे खड़े हो जाते हैं। जब मैं जाग जाता हूं तब क्या करना और क्या नहीं करना अुसका भी खयाल नहीं रहता है। कल-परसोंसे अुस आनापान भावनाकी मददसे अिस कष्टके अूपर काबू कर रहा हूं।

अुस भावनाके वर्णनमें यह कहा गया है कि जो यह भावना पूरी तौरसे करेगा वह अपना अंतिम श्वास भी जान सकेगा। अुसका अेक अुदाहरण भी बता दिया है। लेकिन मेरा तो पूरा अभ्यास नहीं है। मैं नहीं जानता हूं अन्त क्या होगा।

यह डॉ॰ वारेरकरजी अथवा काकासाहबको बतलाया। वे अिसका अुपयोग कर सकते हैं। अुनके पास अेक कापी दे देना।"

अुनकी आज्ञानुसार मैंने अेक कापी डॉ॰ वारेरकरजीको दी थी।

अुन्होंने कभी कुअें और विहार बनवाये थे जिसका बहुत दिलचस्प वर्णन अुन्होंने मुझे बताया था। अुनको कुओंसे बड़ा ही प्रेम था। अुसी समय आश्रमके खेतमें दक्षिणकी ओर जो बड़ा अंधाकार कुआं है वह बन रहा था। अुस कुअेंको देखनेकी अिच्छा अुन्होंने प्रकट की। मेरी अिच्छा तो प्रारम्भ ही अैसी थी कि कौशाम्बीजीके हाथसे ही अुसका शिलान्यास कराअूं। परन्तु अैसी कमजोर हालतमें अुन्हें वहां तक कैसे ले जाअूं यही संकोच मेरे मनमें था। जब अुन्होंने स्वयं अुत्साह बताया तो मैं स्ट्रेचर पर अुनको कुअेंके

पास ले गया। अनुके हाथसे अुसमें अेक पत्थर लगवाया। अुस कुर्जेका नाम कौशाम्बी-कूप रखा। अुसमें अुनके जन्म और मृत्युकी तारीख पत्थरमें खुदाकर लगवानेकी बात थी। अिस संबंधमें बादको कुअें पर अिस प्रकार स्मृतिपत्र खुदवाया गया

"जिनका सलिल-सा निर्मल जीवन था ४ मखीसे आमरण अुपवास द्वारा आमंत्रित मृत्युदेवको प्रतिबिंबित् क्षणभर विश्रामके लिअे छोड़ जिन्होंने २२ मखीको जीवनके अिस सनातन स्रोतको आशीर्वाद दिया अुन श्री धर्मानन्दजी कौशाम्बीकी पावन स्मृतिमें।

जन्म गोवा निर्वाण सेवाग्राम
९-२-१८७६ ४-६-१९४७

अुस रातको बारह बज गये। मैं जाग रहा था। अुन्होंने मुझसे कहा कि अब तुम सो सकते हो। आज रातको तो मैं नहीं मरूंगा। मैं जाकर सो गया। प्रातः अुनके पास गया तो वे प्रसन्न थे। करीब १२ बजे अुन्होंने कहा कि मेरी जानेकी तैयारी है। दो बजे थोड़ा पानी लिया और मकानके सब दरवाजे खोलनेके लिअे कहा मानो अुनको अैसा प्रतीत हो रहा हो कि कोअी अुनको लेनेके लिअे आया है, अथवा अुनके जानेके लिअे दरवाजे खोल देने चाहिये। अिस प्रकारसे वे कभी दरवाजे नहीं खुलवाते थे। धीरे धीरे शरीर शिथिल होता गया और ठीक २॥ बजे वे शांत हो गये। अुनका अंतका सांस निकलने और शामभाअीसे बात करनेके बीचमें बेहोशीका अन्तर दस मिनटसे ज्यादा नहीं रहा।

५ बजे अुनके भौतिक शरीरका दाह-संस्कार हुआ। काकासाहब और विनोबा मौजूद थे। विनोबा वेदमंत्रका पाठ कर रहे थे। बड़ा ही भव्य दृश्य था। जितना भव्य कौशाम्बीजीका जीवन था वैसी ही भव्य अुनकी मृत्यु हुअी।

कबीरका यह भजन अुनके जीवनको और मृत्युको पूरी तरह लागू होता है

दास कबीर जतनसे ओढ़ी
ज्योंकी त्यों धरि दीनी चदरिया।

अुनकी मृत्युका सारा वर्णन मैंने बापूको दिल्ली लिख भेजा था। अुन्होंने ता ५-६-'४७ के अपने प्रार्थना-प्रवचनमें कौशाम्बीजीको अंजली

ऐसे हमें कहा था "जो अपनी ढोंडी पीटते-पिटवाते हैं अुन्हें तो हम खूब जानते हैं। पर जो मूक सेवक हैं, धर्मकी सेवा करते हैं अुन्हें लोग पहचानते भी नहीं। ऐसे अेक आचार्य कौशाम्बीजी थे। वे हिन्दुस्तानके (बौद्धधर्म और पालीके) प्रमुख विद्वान थे। अुन्होंने स्वयं फकीरी पसन्द की थी। वे धार्मिकतामय थे। अीश्वर करे हम सब अुनका अनुकरण करें।

अुनकी सेवा और मृत्युसे मुझे आश्रमके अस्तित्वकी सार्थकताका प्रत्यक्ष भान हुआ। आश्रमके बल पर बापूजी किसी भी आदमीको आश्रममें आकर रहनेका सुखे दिलसे निमंत्रण दे सकते थे। अिसीलिअे बापूजी कहा करते थे कि चरखा-संघ जैसी सब संस्थायें मैंने ही बनायी हैं लेकिन आश्रम जैसी दूसरी संस्था तो मैं भी नहीं बना सका।

अिसमें हम आश्रममें रहनेवालोंकी विशेषता नहीं थी। विशेषता बापूजीके शुभ संकल्पकी थी। बाहरसे हमारे ही लोग आश्रमकी अनेक प्रकारकी आलोचनायें करते थे और करते हैं परन्तु मैं नम्रतासे और साथ ही दृढ़तासे यह कह सकता हूं कि वे आश्रमके महत्त्वको समझनेमें असमर्थ रहे हैं। मैं आज आश्रमसे कितनी दूर बैठा हूं लेकिन देखता हूं कि आश्रम मेरे चारों तरफ लिपटा हुआ है।

बापूजीकी पूर्ण कल्पनाका पूरी तरह अमल अिस जीवनमें करना शायद संभव न भी हो। लेकिन अुसका थोड़ासा जो स्पर्श हो सका है, अुस परसे बापूजी आश्रमके मारफत क्या करना चाहते थे अिसका खयाल करके अुनकी महत्ता और अपनी कमजोरीका भान मुझे होता है।

३०

विविध प्रश्नोंका बापूजीका हल

पिछले प्रकरणमें चर्मैयाका जिक्र आ चुका है। वह बम्बअी गया था। अुसके साथ प्रभाकरजी किसी डॉक्टरको सौंपना या खुद जाना चाहते थे क्योंकि अुसकी बीमारी खतरनाक थी। बापूने बम्बअीके डॉक्टरोंसे लिखा पढ़ी करके सब व्यवस्था कर दी थी। मैंने बापूजीको अिस बारेमें लिखकर पूछा तो बापूजीने जवाब दिया

भंगी-निवास नअी दिल्ली
२४-५-'४७

चि. बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। मैंने जो टेलीफोनसे कहला भेजा था वह यह था कि चर्मैयाके लिअे जो कुछ भी हो सकता है सब हो रहा है। अिसलिअे अुसके पास किसीको भेजनेकी आवश्यकता नहीं है। फिर भी मैं मनाही करना नहीं चाहता। अुनके दिलमें लगे कि जाना ही चाहिये तो जा सकते हैं। और अब गया तो है ही। अस्पतालमें [illegible] लिअे हम फिक्र न करें। विजयाबहन तो है ही। चांद, जोहरा वगैरा अच्छी लड़कियां हैं। फिर तो हमारा जैसा नसीब।

बापूके आशीर्वाद

परीक्षा करने पर चर्मैयाके मगजमें फोड़ा निकला। अुसका ऑपरेशन किया गया और दुर्भाग्यसे टेबल पर ही अुसकी मृत्यु हो गयी। जिससे बापूजीको काफी दुःख हुआ। अधिक दुःख तो अिस बातका हुआ कि चर्मैया प्राकृतिक चिकित्सामें विश्वास रखता था और अिस प्रकारके ऑपरेशन आदिकी झंझटमें नहीं पड़ना चाहता था।

अुसने बापूजीको अेक पत्र लिखा था कि प्राकृतिक चिकित्सा करते करते यदि मेरा शरीर चला जाय तो अुसकी चिन्ता नहीं है। लेकिन दुर्भाग्यसे वह पत्र बापूजीके हाथमें तब पहुंचा जब चर्मैया अिस लोकसे

चित्त हो चुका था। अगर पत्र पहले मिल जाता तो बापूजी तारसे अुसका ऑपरेशन रोक देते। लेकिन अीश्वरको यही मंजूर था।

चर्चीमा प्रयत्नशील नम्र और बड़ा अच्छा सेवक था। जन्मभर आश्रम-जीवन जीनेका और सेवा करनेका अुसका दृढ़ निश्चय था। अुसके बारेमें बापूजीने दिल्लीकी प्रार्थना-सभामें दुःख प्रकट किया और कहा था यह सेवाग्राममें मेरा बेटा बन गया था। अुसका चरित्र आदर्श था। कुदरती चिकित्सामें अुसका विश्वास था। मुझे यह कहनेमें गौरव मालूम होता है कि चर्चीमा सचेत हालतमें रामनाम जपते हुअे ही मरा।”

*

गोशालाका ट्रान्सफर गोसेवा-संघसे तालीमी संघको हो गया। लेकिन तालीमी संघवाले भारमें नहीं रख रहे थे। न गोसेवा-संघवाले नहीं दे रहे थे। भारमें बहुतसे कार्य यह मुझे पसन्द नहीं था। अुन दोनोंको मैं नहीं समझा सका। अिसलिअे बापूजीको लिखा। बापूजीका पत्र आया

नअी दिल्ली २८-९-'४७

चि॰ बलवन्तसिंह,

तुम्हारा खत मिला। गोशालाके बारेमें तुमने ठीक लिखा। मैं तो कहूंगा कि तुम्हारे स्पष्ट रूपमें तुम्हारा अभिप्राय आर्यनायकम्जीको लिखकर बता देना चाहिये। दूसरे अिसका क्या अनर्थ करेंगे अुससे कुछ भी सम्बन्ध होना नहीं चाहिये। हम शुद्ध हैं तो दूसरे हमको अशुद्ध मानें अुसका अर्थ तो अितना ही होगा न कि हमारी शुद्धिमें और भी वृद्धि करें? दुःख क्यों? स्पष्ट रूपसे आर्यनायकम्जीको यह होने अुसमें सच्ची मित्र-भावना होगी।

सफरीआमका वापसी तो अच्छी बात है। चिमनलालको कुछ राहत मिलेगी।

ब्रह्मचर्यकी जो बाड़ मानी गअी है अुसमें लड़कोंके बीचमें और लड़कियोंके बीचमें नहीं रहना चाहिये यह भी है। अुसका मैंने निषेध किया है। होशियारी अच्छी हो रही है सो ठीक है।

बापूके आशीर्वाद

मैगावमें बहुत कोय पत्थेका काम करते थे और भुसमें से कंठियां वगैरा पिरोते समय कुछ सोनेके मनके चुरा लेते थे। अक गोंड कुछ चीज कहींसे चुराकर लाया जैसा गांवके लोगोंको पता चला। गांवकी पचायत हुआ और मुसको कोड़ोंकी सजा दी गयी। भुस गांवका अेक राजपूत तहसीलदार था। भुसने अपने हाथसे भुस गोंडको खूब पीटा। यह सब किस्सा मुन्नालालभाईने बापूजीको लिखा। बापूजीने लिखा कि यह सारा किस्सा क्या है कैसे हुआ क्यों हुआ? बापूजी गोंडको भी हरिजन समझते थे। मैंने सारा किस्सा बापूजीको लिखा और बताया कि यह गोंड था लेकिन गोंड हरिजन नहीं होते हैं। बापूजीने लिखा

नभी दिल्ली
१४–७–४७

चि बलवन्तसिंह

तुम्हारा खत मिला। गोंडके बारेमें दुःखद किस्सा है। हम अहिंसासे बहुत दूर हैं प्रयत्नशील रहें।

दूसरा लिखनेका समय नहीं है। वहां जो हो सके किया करो। कमतियां हाती ही। भुन्हें दुरुस्त करना और आगे बढ़ना हमारा धर्म है।

गोंड हरिजनका भेद मैं भूल गया था। कोई और अैसा भेद भी न किया।

बापूके आशीर्वाद

*

अेक रोज आश्रमकी गाड़ीमें माल भरकर मैं वर्धा शहरमें बेचने जा रहा था। रास्तेमें बैलका पेट फूला और वह तुरंत मर गया। भिसका मुझे बहुत दुःख हुआ। यह सारा किस्सा मैंने बापूजीको लिखा और अपना दुःख भी बताया। बापूजीने लिखा

नभी दिल्ली
२४–७–४७

चि बलवन्तसिंह

बैलके बारेमें पढ़कर दुःख हुआ। मैं समझता हूं कि किसानको बैल पुत्रवत् होता है। गोपालवृत्तिका धारण बहुत कठिन है। कारण

भारी सहयोगसे ही फलदायी होगी। बहुत हिस्सा श्रम-मेहनतसे होना चाहिये। मैंने नोआखालीमें तो श्रम-मेहनतसे खेत साफ करतेको कहा है। वहां बैल मिलते ही नहीं हैं। बहुत मारे गये। नया बैल खरीदना नहीं जैसा मेरा अभिप्राय रहेगा। कहां तक खरीदते जायें? यह सारा शास्त्र विचारणीय है।

तुम्हारा स्वप्न सुन्दर था। जैसा ही हम वर्तन करें तो जगका शीघ्र ही हल हो जायगा।

छाडो मनका मान त्यागो मजनका मगन करो।

बापूके आशीर्वाद

*

आश्रममें और सेवाग्राममें गायका दूध कम पड़ रहा था। वल्लभराम भी आश्रमके ही मकानमें रहती थी मैंसका दूध लेनेकी जिज्ञासा बाहती थी। मैंने बापूजीको लिखा। बापूजीका जवाब आया

नयी दिल्ली
२७-७-४७

चि बलवन्तसिंह

तुम्हारा लम्बा पत्र मिला। अब तक आश्रममें या तो सेवाग्राममें कहीं भी गायके दूधका घाटा रहे यह असहनीय है। घाटा

१ मैंने अेक रातको यह स्वप्न देखा था कि मुझे दो मुसलमान अेक बड़े मकानमें बुलाकर ले गये और मेरे पीछेसे अुन्होंने दरवाजा बन्द कर दिया। फिर अुनमें से अेकने छुरा निकाला और मुझसे बोला कि हम तुम्हें मारेंगे। मैं अुससे भयभीत नहीं हुआ। और स्वप्न रहते हुअे मैंने अुत्तर दिया कि भले तुम मुझे मार दो लेकिन जिसका परिणाम अच्छा न होगा तुम्हें पछताना पड़ेगा। क्योंकि मैं तुम्हारा दुश्मन नहीं हूं बल्कि दोस्त हूं। जितना सुनते ही अुसका चेहरा प्रसन्न हो गया और वह बोला कि हम तो तुम्हारी परीक्षा ले रहे थे। यह स्वप्न मैंने बापूजीको लिखा था और यह भी लिखा था कि अगर प्रसंग आने पर जागृतिमें भी जितना धीरज रख सकूं तो कितना अच्छा हो।

२ बापूजीके घनिष्ठ मित्र डॉ॰ प्राणजीवन महेताकी पुत्रवधू।

दूर करनेके लिये जो अिलाज लेने चाहिये सो लो। चम्पाबहनको भैंसका दूध लेना पड़े यह हमारा धर्म मानना चाहिये। अगर अुसको पढ़ने दें तो हम किसी कामसे भी गायका दूध न दे सकें तब तो लाचारीसे अुसको भैंसका दूध देना होगा। बापूजीसे मिलकर अिसका निचोड़ लाना होगा।

बापूके आशीर्वाद

*

भारतीय स्वतंत्रताके दिन पास आ गये थे। देशमें रक्तकी होली और साम्प्रदायिक पागलपन जोरों पर था। अिस वातावरणको पीछे हुये भी बापू आश्रमको नहीं भूले थे। आश्रमकी गोशाला नष्ट-सी हो रही थी क्योंकि तालीमी संघ पासमें नहीं रखना चाहता था। मैंने बापूजीको लिखा कि जितनी मुसीबतसे मैंने गोशाला जमाओ थी और अब यह नष्ट हो रही है। अिससे मुझको दुःख होता है। बापूजीने लिखा

हैदरी मैन्शन कलकत्ता
१५-८-'४७

चि. बलवंतसिंह,

मैं तो यहां बड़े झगड़ेमें पड़ा हूं। मेरी परीक्षा हो रही है। नोआखाली अब तो छूट गया है।

गोशालाके बारेमें सब पढ़ गया। यहांसे मैं क्या राय दूं? मैं अितना जानता हूं कि सेवाग्राममें गाय रहनी चाहिये। गोशाला चलनी चाहिये। यह कैसे हो सके नहीं जानता हूं। मैं आर्यनायकम्‌जीको लिखता हूं।

बापूके आशीर्वाद

गोशाला तालीमी संघके हाथमें जानेसे स्थिति ऐसी हो गयी थी कि आश्रमको दूध मिलना मुश्किल हो गया था और सेवाग्रामकी दूधकी सारी व्यवस्था छिन्नभिन्न हो गयी थी। मेरे मनमें ऐसा विचार आया कि क्यों न गायका दूध पीना ही छोड़ दूं। अपने मनका यह मन्थन मैंने बापूजीको लिखा था। बापूजीकी तरफसे मनु गांधीका पत्र आया

नअी दिल्ली
९ –९–'४७

मु. बलवंतसिंहजी

आपका पत्र बापूको मिला। बापू तो जवाब नहीं लिख सकते हैं। अुनके पास अेक मिनटकी फुरसत नहीं है। बापूजीने जो कहा है मैं लिख देती हूं।

गोशालाके लिये दुःख नहीं मानना चाहिये। जो हुआ सो हुआ। गीताशास्त्रका श्लोक क्या है? अपना कुछ नहीं है सब कुछ अीश्वरका है। गायका दूध नहीं छोड़ना चाहिये। गायका दूध छोड़कर बकरीका लें तो अुसमें गायकी सेवा नहीं है। देहातसे गायका दूध आता है सो अच्छा है। और देहातकी गायोंकी सेवा करो अुनका दूध बढ़ाओ। और अिर्दगिर्दके देहातोंकी गायोंको बढ़ाना अुनको कौनसा चारा दें तो अच्छा दूध निकले और कौनसी अच्छी वनस्पति दें तो अच्छा दूध निकले यह सब देखो। और यही सच्चा आदर्श है। तुमको यहांसे कहीं नहीं जाना है। यहां कुछ हो जाय तो वहां मरना। यहां जो हो सके करो। काफी काम तो पड़ा है।

यह बापूजीने बताया था सो लिख दिया है। पू. बापूजी वैसे तो ठीक हैं। लेकिन थकान बहुत जल्दी लगती है। आप सब अच्छे होंगे। और सब हाल सुशीलाबहनने बताया ही होगा।

मनुका सादर प्रणाम

मैं गोशालाके विषयमें निराश हो गया था और अपने कठोर परिश्रमसे बनाअी हुअी चीजको अिस तरह बिगड़ते देखकर सचमुच मुझे दुःख होता था। मैंने मनुके मारफत बापूजीको लिखा। अुसके जवाबमें सुशीलाबहनने लिखा

बिड़ला हाअुस नअी दिल्ली
१५–१०–'४७

श्री बलवंतसिंहजी

आपका मनुको लिखा पत्र बापूजीको पढ़कर सुनाया। वे कहते हैं कि आप क्यों अिस तरह निराश होते हैं? गोशाला अब कहां

हुजी? विस्तृत हो गयी। सब गांवके ढोरोंकी अुन्नति करना, दूध बच्छा हो, ढोरोंकी नसल अच्छी हो, लोग प्रामाणिक मनसे दूध बेचना सीखें, दूधमें पानीकी मिलावटके लिये परीक्षा-विज्ञान — यह सब आप कर सकते हैं, करना चाहिये। मुझे वे सच्ची गोसेवा मालते हैं। आप कुशल होंगे। अब जल्दी मुलाकात होगी। बापू अब अच्छे हैं।

सुशीलाका प्रणाम

३१

शांतियज्ञमें प्राणार्पण

बापूजीकी सेवाग्राम आनेकी बात चल रही थी। सन् १९४६ के अगस्त मासमें बापूजीने सेवाग्राम छोड़ा था। अुस समय किसको पता था कि अब बापूजी यहां कभी वापिस नहीं आयेंगे? जितने लम्बे समयके लिअे अुसको छोड़कर बापूजी सेवाग्रामसे कभी बाहर नहीं रहे थे। चरखा-संघ, तालीमी संघ वगैरा संस्थायें भी चाहती थी कि बापू अेक बार सेवाग्राम आ जाय तो वे अपने बहुतसे प्रश्न अुनके सामने रखकर हल कर लें। हम लोग भी यही चाहते थे। लेकिन अेकके बाद अेक संकट बापूजीके अूपर अैसा आता रहा कि अुनके लिअे सेवाग्राम आना असंभव बन गया। ११ फरवरी १९४८ को जमनालालजीकी पुण्यतिथिके निमित्तसे तथा और भी दूसरे कामोंके बापूजीको सेवाग्राम आनेका आग्रह किया गया। बापूजीने अुसे स्वीकार भी किया। अखबारोंमें भी अैसी खबर मानो आयी कि बापूजी यहाँ आ रहे हैं। लेकिन बापूजीकी ओरसे हमें कोओी सीधी सूचना नहीं मिली थी।

२७ जनवरीको हमने प्यारेलालजीको तार किया कि बापूजीके आनेकी तारीख निश्चित कर दें ताकि हम अुनका कमरा आदि ठीक कर लें। तारका भी कुछ जवाब नहीं मिला। फिर भी हमने तैयारी तो शुरू कर ही दी। बापूजी सेवाग्राम आयें यह तो सब लोग चाहते ही थे। दूसरे लोगोंकी भी अुत्कट अिच्छा रही होगी। लेकिन मैं तो बिलकुल अधीर हो रहा था।

*

रातको मैंने स्वप्न देखा कि नागपुरमें शामके समय बापूजीका बड़ा भारी जुलूस निकल रहा है। देखनेकी अिच्छासे मैं भी अुधर गया तो देखा

कि अुसके सब लोग लौट गये हैं और बापूजी अकेले ठंडका अनुभव कर रहे हैं। कपड़े भी पासमें नहीं हैं। मुझे बापूजीको अिस प्रकार अकेला देखकर दुःख और आश्चर्य हुआ। मैं दौड़ा और बापूजीको सहारा देकर अेक किसानके घर ले गया। अुससे स्नान और कपड़े मांगे। दिन छिप चुका था। ठंड बढ़ रही थी। मैं अुसके घरमें बापूजीके लायक स्वच्छ स्थान खोजने लगा। बापूजी कुछ बोलते नहीं थे। अिसका भी मुझे आश्चर्य हो रहा था। अिस प्रकारकी विचित्र अवस्थामें मैंने बापूजीको कभी नहीं देखा था। अितनेमें आंख खुल गअी। सोचने लगा बापूजी पर कोअी संकट तो नहीं आ पड़ा है? दिल्ली चलूं क्या? किसीको कुछ खबर कर दूं क्या? अगर दूं तो क्या दूं? आखिर स्वप्नकी बात है यह सोचकर रह गया।

(ता. २८-१-'४८ की डायरीसे)

सेवाग्राम छोड़े बापूजीको बहुत समय हो गया था। अिस बीचमें मैंने नये नमूनेका अेक कुआं बनवाया था। वह २१ फुट लम्बा और १० फुट चौड़ा अण्डाकार था जिसमें लोग तैरना चाहें तो तैर सकें। बड़ा ही सुन्दर दीखता था। सेवाग्राममें रहते तब बापूजी बाहरकी सड़क पर घूमने निकला करते थे। अुस सड़क पर बहुत धूल अुड़ती थी। अिसलिअे अिस कुअेंवाले खेतमें ही बापूजीके घूमनेके लिअे मैंने रास्ते बनाये थे। खेतीमें और भी कअी प्रकारके सुधार किये थे जिन्हें बापूजीको दिखानेका मेरे मनमें बड़ा अुत्साह था। मैं सोच रहा था कि बापूजी कब आयें और कब यह सब देखकर प्रसन्न हों और मेरा श्रम सफल करें। अुनके शीघ्र आनेकी आशा रखकर मैंने खेतवाले रास्ते साफ कर दिये थे और अुनकी आवश्यक मरम्मत कर दी थी। अब मैं सफाअीमें लगा था। कूड़े-करकटको अलग करके कम्पोस्ट खादके गड्ढोंमें गाड़ना चाहता था। १ जनवरी १९४८के दिन मैं यही काम कर रहा था। क्योंकि सरकारी कम्पोस्ट खाद विभागका अेक कर्मचारी भी मेरे साथ [illegible] रहा था। मनमें यह अुल्लास था कि बापूजी अिन रास्तों पर चलकर आनन्दित होंगे तथा कम्पोस्ट खादके गड्ढोंको देखकर [illegible] सुफल कार्यान्वित हुआ देखकर सन्तुष्ट होंगे। [illegible] मनमें अुस समय थकावटका अनुभव नहीं होने दिया था।

[illegible] बजे मैं अपने कमरेके सामने खड़ा था कि [illegible] आये और अुन्होंने यह संवाद

सुनाया — भाअू, बापूजी गेले! (भाभी बापूजी गये!) मैंने समझा बापूके कहीं जानेकी सम्भावना थी, वहीं गये होंगे। अिसलिये यह प्रश्न किया कि वे कहां गये? तब बाबाजीने अत्यंत करुण स्वरमें यह सुनाया कि ३ गोलियां मारकर किसी आदमीने बापूजीकी हत्या कर दी। मुझे सहसा अिस पर विश्वास न हुआ। तुरन्त ही मैं प्रार्थना-भूमिकी ओर गया। वहां यह संवाद मिला कि बम्बअीसे श्री करंदीकरका टेलिफोन आया था कि शामको प्रार्थना-सभामें जाते समय किसीने बापूजीको गोलीसे मार दिया। यह रेडियो पर सुना गया था फिर भी विश्वास बैठा नहीं।

जब रातको ८ बजे रेडियो पर पं॰ जवाहरलाल नेहरू तथा सरदार वल्लभभाअी पटेलके वक्तव्य सुने तब कहीं लाचारीसे विश्वास करना पड़ा। सोचने लगा ईश्वरकी कैसी लीला है! महात्मा सुकरातको अुनके देशवासियोंने जहर पिलाकर अुनके प्राण लिये। महात्मा औसाको अुन्हींके देशवासियोंने फांसीकी सजा देकर परलोकवासी बनाया। वही दशा बापूजीकी हुअी! लेकिन मैं यह नहीं सोच पाता था कि बापूजी जैसे अहिंसक महात्माको मारनेके लिये क्यों कर हत्यारेका हाथ चला होगा।

हमने प्रार्थना की। तत्पश्चात् सब शाम बैठे। जबकि कलेक्टर तथा पुलिस कप्तान हमारे पास आये और अुन्होंने सहानुभूति प्रगट की। भाअी मुन्नालालजीने यह सूचना रखी कि किसीको दिल्ली जाना चाहिये और तदर्थ अपनी तैयारी बताअी। वे दिल्ली गये। मैं यह सोचकर रह गया कि अुनकी आत्मा मुझे रोता देखकर कहीं यह पूछ बैठे कि मेरे साथ रहकर तुमने यही सीखा है? जिस मृतदेहको देखनेके लिये गांवोंको छोड़कर यहां कैसे आ गये? तो मैं अपने हृदयका समाधान कैसे करूंगा? दूसरे, अब वहां पुलिसका कड़ा पहरा होगा। अुसमें अन्दर प्रवेश कठिनाअीसे होगा। अब वे मुझे स्वयं तो बुला नहीं सकते न प्यारकी चपत ही लगा सकते हैं। तो जानेसे लाभ भी क्या? अित्यादि विचारोंमें मैं मग्न हो गया।

मैंने बहुतेरी विधवाओंके प्रति सहानुभूति प्रगट की होगी। परंतु विधवाकी वास्तविक मनोदशाका अनुभव मुझे अुसी समय हुआ। बापूजीके चले जानेसे मेरे सींग व दांत दोनों गायब हो गये थे। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो मैं सारी शक्ति खो बैठा हूं। जीवनमें अेक नये जन्मके बाद नितान्त शून्यता-सी लगने लगी। लगता था कि अब किसकी प्रसन्नता और

आशीर्वाद प्राप्त करनेके लिये यह शरीर श्रम करेगा? फिर शुस हत्यारे मानवका खयाल आया। मनने कहा शुसने बापूजीको मारकर समस्त मानव-जाति पर प्रहार किया है और अपनी आत्माका भी साथ ही साथ हनन किया है। बापूजीकी आत्माको तो शुस पर दया आती ही होगी और शुनकी आत्माने शुसे क्षमा भी दे ही चुकी होगी। मन और आगे बढ़ा। दैवकी अिच्छाके बिना पत्ता भी नहीं हिलता। बापूजी हिन्दू-मुसलमानोंकी मार काटको रोकनेके लिये अपने प्राणोंकी बाजी जिससे पहले दो बार लगा ही चुके थे। परन्तु त्रिकालदर्शी दैवको विदित था कि शांतिका मूल्य शुनके मूल्यवान प्राण ही है। तभी शुसने हत्यारेको यह कार्य करनेकी बुद्धि और साहस दिया होगा। यह विचार भी आया कि बापूजीने सत्य अहिंसा प्रेम त्याग वैराग्य अेवं लोकहितार्थ जीवन अित्यादि सर्वोत्कृष्ट दैवी संपत्तियोंका जो पवित्र मंदिर निर्माण किया था शुस पर प्राणार्पण का कलश चढ़ना शेष था। सो भी आज चढ़ गया। अब यह मंदिर अेक अत्यंत देदीप्यमान कलशसे सुशोभित हो गया है।

बापूजी यदि किसी अुपवासके कारण या असाधारण बीमारीके कारण मृत्यु प्राप्त करते तो शुसके पहले कितना घटाटोप हो जाता? सारे देशमें कितनी दौड़धूप मचती शुनकी सेवाके लिये कितनी होड़ लगती? कोअी अपनेको सेवाका प्रथम अधिकारी मानता और सेवाका कोअी अधिकारी सेवासे वंचित रह जाता। परन्तु दैवको यह बात प्रिय न थी अिसलिये किसीको अपने अेक क्षणका भी अवसर नहीं दिया। अिस प्रकारके विचारोंसे मैं सान्त्वना प्राप्त करनेका प्रयत्न करता रहा। जितनी शून्यता मैंने जीवनमें कभी किसी प्रियजनके मरने पर अनुभव नहीं की थी जितनी शुस दिन अनुभव की।

कृष्णके जानेके बाद अर्जुन जितना शक्तिहीन हो गया था कि भीलोंने अपार मारकर शुनसे नारियोंको छीन लिया था। शुसके बाहु तथा गांडीव ज्योंके त्यों थे परंतु कृष्णका पीठबल चला गया था। अैसा ही हाल हम सब आश्रमवासियोंका बापूजीके चले जानेसे हो गया।

*

अब । जनवरीकी दुर्घटनाके बारेमें बताता हूँ तो दो दिन पहले वाले स्मरणमें से अेक बात बैठता है। शुस दिन ठीक शामके समय बापूजी

सबसे अलग होकर अेकान्तमें यमुनाके किनारे राजघाट पर चिरनिद्रामें सो गये। मनमें विचार आता है कि अगर मैंने अुस धमकीको थोड़ा महत्त्व दिया होता और दिल्ली जाकर कुछ सावधानी रखनेकी व्यवस्था की होती तो शायद बापूजीको बचा लेता। यह भी लगता है कि अगर अुस रोज मैं अुनके साथ होता तो गोडसेकी पिस्तौलसे दूसरी गोली न चलने देता। लेकिन यह विचार भी स्वप्न जैसा ही है। विधिका विधान कौन टाल सकता है? मुझे तो यह भी लगता है कि बापूजी पूर्ण ज्ञानके साथ भगवानमें लीन हुअे थे। अुनको जानेका आभास मिल गया था। और अुनके मनमें जानेका संकल्प भी हो गया था। मानव-जातिको अहिंसाका सही रास्ता बतानेका यह अन्तिम अुपाय अुनके पास था सो भी जगतके सामने रखकर अपना कार्य पूरा करके वे चल गये। जगतके लिये अिससे बड़ी देन अुनके पास नहीं थी। भगवानके पास भी अुनके लिये अिससे अच्छी मृत्युकी देन और क्या हो सकती थी? भक्तके लिये भगवानके पास कुछ भी अदेय नहीं है और वह जो करता है भक्तकी सच्चाअीसे अुसके अन्तरको जानकर ही करता है। यह भी बापूजीकी मृत्युने सिद्ध कर दिया है।

जन्म जन्म मुनि जतन कराहीं।
अन्त राम कहि आवत नाहीं॥

भक्तकी परीक्षाकी भी अिससे बड़ी कसौटी और क्या हो सकती है कि अन्तका अेक शब्द भी निकले तो वह रामनाम ही निकले? सच पूछा जाय तो भगवान और भक्त दोनों खिलाड़ी हैं और अेक-दूसरेकी कसौटी करनेके अनेक खेल खेलते हैं। तभी तो तुकारामने गाया है

माझें मन पाहे कसून। चित्त न ढळे तुझ पासा पासून॥
कापुनि देमी न शिर। पहा कृपण की अुदार॥
मजवरी आली घण। परि मी न सोडी चरण॥
तुका म्हणे अति। तुजवाचून नाही गति॥

(मेरा मन कसकर देख। चित्त तेरे पाससे नहीं छूटेगा। मैं सिर काटकर दे सकता हूं। तू देख कि मैं कृपण हूं या अुदार। मेरे सिर पर घन पड़ेगा तो भी मैं तेरे पैर नहीं छोड़ूंगा। तुकाराम कहते हैं कि अन्तमें तेरे बिना मेरी गति नहीं है।)

यह भक्ति और भगवानका मार्ग है जिसे बापूजीने अपने जीवन और अपनी मृत्युसे सिद्ध करके दिखाया।

*

ता० २९-१-'४८ को बापूजीका नअी दिल्लीसे लिखाया हुआ नीचेका पत्र अुनके अवसानके बाद मुझे मिला था। यह मेरे नाम अुनका अंतिम पत्र था अिसलिअे यहां दे रहा हूं।

नअी दिल्ली
२९-१-'४८

श्री बलवंतसिंहजी

बापूजीने कहा सो मेरे शब्दोंमें लिख रहा हूं। होशियारीबहन बीचमें यहांसे अुर्वा चली गयी। कल ही वापिस आयी है। और आज ही अुर्वा वापिस जायेगी। कारण यह है कि वे कहती हैं कि वहां कोअी वैद्यराज हैं जो अेक महीनेमें अुसे अच्छी कर देनेके लिअे कहते हैं। होशियारीबहनने अुनका अुपचार लेना पसंद किया है और बापूजीने भी अुसे ठीक समझा है। बापूजीने कहा कि होशियारी चंगी हो जाये तभी सेवाके काममें दिल लगा सकेगी। अिसलिअे मैंने अुसके लिअे वैद्यराजकी दवा कराना कबूल किया है। यह पत्र चिमनलालभाअीको भी दिखा देंगे।

बाकी चिमनलालभाअीके खतमें से पढ़ना। अिति।

सेवक
बिशनके नमस्ते

*

कअी दिनोंके बाद श्री रामकृष्ण बजाज दिल्लीसे अेक पात्रमें बापूजीकी भस्मका अेक भाग लेकर सेवाग्राम आये। वहां पूज्य बापूजीकी दिव्य मूर्तिके दर्शनकी भावना सेवाग्रामवासियोंके मनमें थी और अुनकी प्रेमभरी चरण भावना सब तरफ रही थी। वहां ताम्रपात्रमें अेक मुट्ठीभर भस्म बाकी देखकर मनका धीरज छूट गया।

जब अिस पवित्र भस्मराशिको मैंने सभाला तो मेरे शरीरमें बिजली-सी दौड़ गअी और आगामी जीवन अंधकार-सा छा गया। मैं सोचने लगा कि

बापूको हँसते हुओ आते देखकर हम सब लोग हँसते थे। प्रत्येकके मिलनमें अपनी अपनी खूबी होती थी। मैं तो सबके पीछे चुपकेसे आकर अुनके चरणोंमें पड़ा करता था। जब अुनकी नजर मुझ पर पड़ती वे चपत लगाते और पूछते — अच्छा आ गया? तेरा गो-परिवार कैसा है? मैं सारी कथा सुनाता कि कितनी गायें ब्याओी हैं कितने बच्चे हैं कितना दूध होता है अित्यादि।

आज यह सब किसको सुनाअूँ? मैं बापूजीको नया कुआँ दिखाना चाहता था नये रास्ता पर अुनको चलाना चाहता था। अब अुस पवित्र कलशको लेकर अुन्हीं रास्तोंसे होकर मैं कुओं तक गया। दूसरे लोगोंको यह सब अटपटा लगा होगा। लेकिन मैं विवश था। मैं पुकार पुकार कर कह रहा था — बापू, यह सब देख लीजिये। मैं नहीं जानता था कि लोग मेरे पागलपनको देख रहे थे या नहीं। मैं खूब जोरसे रो भी रहा था। लोगोंकी आँखें भी सजल थीं।

अुसी समय मुन्नालालजीके बड़े भाओी चुन्नीलालजी बरहानपुरसे बड़े ही विह्वल होकर बरहानपुरके लिये भस्मका थोड़ा भाग माँगने आये थे। अुन्होंने दूसरी जगहसे भी भस्म लानेका प्रयत्न किया था। लेकिन सफलता न मिलनेके कारण वे बड़े बेचैन थे। अुनके हृदयकी श्रद्धा और भावनाका हमने आदर किया और भस्मका थोड़ासा अंश अुन्हें देना मंजूर किया। वे चाँदीके पात्रमें बड़ी श्रद्धासे भस्म ले गये। भस्मको बरहानपुरके नजदीक ताप्ती नदीमें प्रवाहित किया गया और आज वहाँ हर साल बहुत बड़ा मेला लगता है। जिस बरहानपुरसे अेकमात्र मुन्नालालभाओी बापूके निकट संपर्कमें आये थे वहाँ आज हजारों लोग अुनके सम्पर्कमें आते हैं। जो काम बापू जिन्दा रहते हुओ नहीं कर सके वह काम अुनकी अस्थियोंने किया। दधीचि ऋषिकी हड्डियोंका अुपयोग राक्षसोंका संहार करनेमें हुआ था तो बापूजीकी हड्डियोंका अुपयोग सद्वृत्तियोंको जाग्रत करनेमें हुआ। अगर बापूजीकी मृत्यु सहज रूपसे होती तो जो प्रेरणा आज लोगोंको मिल रही है वह हरगिज न मिलती।

बापूने हमको जन्मभर यह पाठ पढ़ानेका प्रयत्न किया था कि जिस प्रकार किसीका जन्म लेना खास सुखका कारण नहीं है अुसी प्रकार मृत्यु भी दुःखका कारण नहीं है बल्कि मरण तो हमारा परम मित्र है। जन्मके

आनेसे रोना क्या? आज वह सारा अुपदेश न जाने कहाँ चला गया था। हृदयकी बनावटमें भगवानने कुछ अिस प्रकारके पुर्जे लगाये हैं कि अुनके तारोंको अमुक प्रकारका स्पर्श होते ही आँखोंकी नालियाँ बहने लगती हैं। अिसका क्या किया जाय?

६२

बापूके अमूल्य विचार

[अिस प्रकरणमें बापूजीके विचार-सागरमें से चुनकर कुछ अैसे विचार दिये जाते हैं जो मानव-जातिके सुख, सन्तोष और प्रगतिके लिये अमूल्य माने जायेंगे और जो भावी पीढ़ियोंको जमानों तक सात्त्विक प्रेरणा देते रहेंगे।]

ज्ञानी पुरुषके विचार-स्वभावमें लोक-संग्रह आवश्यक है। जिसका अपवाद नहीं ही हो सकता। मनको निर्विचार मैं कितनी देर तक रख सकता हूँ यह कह नहीं सकता। क्योंकि अैसा माप मैंने निकाल कर देखा नहीं। पर अितना जानता हूँ कि मेरे मनमें निकम्मे विचार स्थान नहीं ले सकते। आ जाय तो अुन्हें चोरकी तरह भगाना पड़ता है।

*

ब्राह्मी-स्थितिमें किसीके दुःखसे दुःखी होनेकी बात नहीं है, क्योंकि किसीके सुखसे सुखी होनेकी बात नहीं है। सुधार टूटी हुअी नाकको अच्छी करते समय सुख-दुःखका अनुभव नहीं करता। अुसी तरह ब्राह्मण को भी सुख-दुःखका अनुभव नहीं होता। ब्राह्मी-स्थितिवाला ब्राह्मण कहा जायगा?

*

[illegible] आत्मनिरीक्षा अत्यावश्यक है। पर मैंने देखा है कि [illegible] आत्मनिरीक्षा करनेकी टेव पड़ जाती है और फिर वे आगे [illegible] नाका अुपयोग आगे बढ़नेके लिये ही हो सकता [illegible] आज यदि हम न करते तो भी अुनका [illegible] निकाला या दाममें वृद्धि करनेके बराबर है। [illegible] यह मैं स्वीकार करता हूँ। सत्यका पुजारी [illegible] तुम आपका स्वीकार करते हुअे मन पर [illegible]

किसी भी प्रकारका बोझ न होना चाहिये। चढ़ा हुआ मैल जो डालनेके बाद फिर अुसी मैलका बोझ अपने पर कोअी रखता भला?

*

साक्षी-स्थिति आदि अवस्थाओंमें मैं भेद नहीं करता। जो अनुभव आया है वह अैसा कहता है कि राग-द्वेष रहितता ही आत्म-दर्शन है। अिस स्थितिका वर्णन मैं कर नहीं सकता। बुद्धि अुसे पहचानती है। अनुभव रोज अुसकी झांकी करता है। अिसलिअे मेरा कथन निश्चयात्मक है। यदि राग-द्वेषसे मैं सर्वथा मुक्त हो जाअूं तो आजकी प्रवृत्तियोंमें रहते हुअे भी सम्पूर्ण आत्मानन्द अनुभव कर सकूं। आज मैं अुसका अनुभव नहीं करता। परन्तु जिस अंश तक आज अनुभव करता हूं अुस परसे राग-द्वेषका पूर्ण क्षय होने पर कैसी स्थिति होगी अुसका भान आ सकता है।

*

मेरा आदर्श शुकदेवजी है अिसका अर्थ अैसा नहीं कि अुनके जैसा मुंह हो अुनकी तरह सोया जाय बैठा जाय खाया जाय और हिमालयकी शरण ली जाय। अुसका अर्थ अितना है कि अुनका ब्रह्मचर्य जैसा था वैसा मेरा हो। और यदि तुम अैसा कहो कि संसारमें रहकर सेवा करनेवालेका यह आदर्श नहीं हो सकता अथवा अुस तक पहुंच नहीं सकता तो शुकदेवजीके जैसे ब्रह्मचर्यकी कोअी कीमत नहीं रहती। पूर्ण ब्रह्मचारीकी निर्विकारता चाहे जैसी स्थितिमें निभनी ही चाहिये। यदि तुम कहो कि अैसी निर्विकारताको आज तक कोअी पहुंचा ही नहीं और पहुंच भी नहीं सकता तो ब्रह्मचर्यका प्रयत्न छोड़ना चाहिये अैसा सिद्ध होगा। और यह ठीक हो तो अहिंसाको पहुंचा ही नहीं जा सकता।

*

मैला रहना आत्माका गुण नहीं — जिससे मैल जमा कि गया। पापीसे पापी भी जब स्वच्छ हो जाय तब जिसने कभी पाप नहीं किया अुसके साथ खड़ा रह सकता है। मोक्षमें दरजे नहीं होते। वह अेक ही अवर्णनीय दशा प्राप्त हो तब सबके लिअे वह अेकसी ही होती है। पाप हम सब करते हैं। पर अुसे देखनेमें अुसे कबूल करनेमें अुसका नाश करनेमें पुरुषार्थ है।

*

रामरक्षा कौन कर सकता है? जो ब्रह्मचारी है, जिसने निद्रा जीत ली है, जो अल्पाहारी है, जो निर्व्यसनी है, जो सत्यवादी है, जो अल्पभाषी है और जो परदुःखका ही विचार करके दुःखी होता है और दूसरोंको न मिले अैसी चीजका त्याग करनेकी अिच्छा रखनेवाला होकर सदा अपरिग्रही रहता है।

*

जो हमारी बात न मानें अुन्हें प्रेमसे जीतना यह धार्मिक वृत्ति है; अुन पर रोष करना यह राक्षसी — नास्तिक वृत्ति है। अिसलिअे हमारा बड़से बड़ा काम प्रेमका बरसाव बरसानेका है। प्रेम बरसाना यानी मिल जाना अैसा नहीं। यह तो मोह कहा जायगा। हम जिनका विरोध करते हों अुन पर भी प्रेम रखना, अुनको मूर्ख न मानना, अुनकी सेवा करना यह प्रेम है। हिन्दू हिन्दू पर प्रेम बताये अिसमें कोअी आश्चर्य नहीं; पर हिन्दू मुसलमान पर भी अुतना ही प्रेम रखे, अुसके रीत-रिवाजोंको बरदाश्त करे अिसमें भलाअी रही है। सहकारी सहकारी साथ मिलें अिसमें क्या आश्चर्य है? परन्तु असहकारी सहकारी पर, तीव्र मतभेद होते हुअे भी प्रेम करे, धीरज रखे — अिसमें वीरता है, नम्रता है। अुन्हें दूसरोंकी नजरमें गिरा देना, अुनका तिरस्कार करना, अुनकी मसखरी अुड़ाना अिसमें बड़ाअी नहीं है। परन्तु अुनके यहां खुले पांव जाकर अुनकी सेवा करना अिसमें बड़ाअी है।

*

आत्मशुद्धिके लिअे निरंतर अीश्वर-स्मरण करना चाहिये। आस्तिक मानता है कि अीश्वर अन्तर्यामी है, निद्रामें भी वह हमारी चेष्टायें देखता है। अिसलिअे हमें चौबीस घंटे सावधान रहना चाहिये। हरअेक मानसिक या शारीरिक क्रिया करते हुअे अीश्वरका नाम कभी न भूलना। अुसका नाम सब पापोंको हरता है। थोड़े अभ्यासके बाद हर आदमी अनुभव कर सकता है कि सब काम करते समय, सारे विचार करते समय अीश्वर-स्मरण संभवित है। अेक समय मनुष्य अेक ही विचार कर सके यह नियम अीश्वर-स्मरणको ही लागू नहीं होता, क्योंकि अीश्वर-स्मरण आत्माका स्वाभाविक गुण है। दूसरे विचार तो अुपाधिरूप हैं। अीश्वर सब कुछ करता है अैसा जानकर

जो आदमी अुसमें लीन हो जाता है अुसे विचारने या करनेका क्या रह जाता है? वह स्वयं मिटकर अीश्वरके हाथमें भाजनमात्र बन जाता है।

*

कायाको पत्थररूप मान कर जो विहार करता है वह मेक ही जगह बैठकर भी जगतको हिलाता ही करता है। पत्थरको कौन मार सकता है? पत्थरको रख कर डालो तो भी वह माफी नहीं मांगेगा। पर वह वर भी नहीं चुनेगा। अुसे जितना मारोगे अुतना थकोगे। जितना मारोगे अुतना वह वर चुननेके लिये ना कहेगा। अैसी जिसने अपनी काया बना ली हो अुसे हरानेवाला अिस जगतमें कौन हो सकता है? मनुष्यमें पत्थरका और अीश्वरका मिलाप होता है। मनुष्य यानी चेतनामय पत्थर। अिसीलिये शास्त्रोंने सिखाया है कि वही मनुष्य पूरा जीता हुआ माना जायगा जिसने पूरा देह-दमन किया है। अिसलिये शांतिका अर्थ देह-दमन हुआ। अिससे हम जिस हद तक शरीरका मोह छोड़ेंगे अुसी हद तक स्वतंत्रता प्राप्त करेंगे।

*

जिसने अहिंसा सत्य और ब्रह्मचर्यमें पूर्णता प्राप्त नहीं की और जिसने सब प्रकारकी मालिकी और धन-वैभवका त्याग नहीं किया अैसा कोअी भी मनुष्य शास्त्रोंका सच्चा अर्थ समझ नहीं सकता। अिस धर्म मुक्तमें मेरी पूर्ण श्रद्धा है। मैं मुक्ती प्रथाको मानता हूं। लेकिन साथ साथ यह भी देखता हूं कि अभी तो लाखों मनुष्योंको गुरुके बिना ही जीवन-यात्रा पूरी करनी होगी। कारण, सम्पूर्ण ज्ञानके साथ अुतने ही सम्पूर्ण सदाचारका संगम अिस जमानेमें होना दुर्लभ है।

*

मुझे अितना ही सन्तोष है कि मैं सत्यका आग्रह रखनेके सिवा अिस बारेमें अधिक दावा करता ही नहीं। मैं जानकर असत्य भाषण कर ही नहीं सकता। सत्य कहना और करना यह मेरा स्वभाव बन गया है। परन्तु जिस सत्यको मैं परोक्ष रूपमें पहचानता हूं अुस सत्यका पालन करनेका दावा मुझसे नहीं किया-जा सकता। मुझसे अनजानमें भी अति शयोक्ति हो जाय जिससे हुअे कार्यका वर्णन करनेमें मुझे रस आ जाय तो अिन सबमें असत्यकी छाया है और वह सत्यकी कसौटी पर नहीं चढ़ सकता। जिसका जीवन सत्यमय है वह तो शुद्ध स्फटिक-मणिके जैसा होगा।

अुसके पास असत्य अेक क्षण भी नहीं टिक सकता। सत्याचरणीको कोअी धोखा दे ही नहीं सकता। क्योंकि अुसके सामने असत्य बोलना असम्भव होना चाहिये। जगतमें कठिनसे कठिन व्रत सत्यका है। लाखों प्रयत्न करें, परन्तु अुनमें से कोअी विरला ही अिसी जन्ममें अिस व्रतमें पार अुतर सकता है। मेरे सामने जब कोअी असत्य बोलता है तब मुझे अुस पर क्रोध चढ़नेके बजाय खुद अपने पर ज्यादा क्रोध चढ़ता है। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझमें अभी असत्यका वास गहराअीमें पड़ा ही हुआ है। मैं सत्यकी सेवाका प्रयत्न कर रहा हूँ। अुसके खातिर हिमालयकी चोटी परसे नीचे गिरनेकी हिम्मत मुझमें है अैसा मैं मानता हूँ। फिर भी अभी मैं अुससे बहुत दूर हूँ अिसका मुझे भान है। जैसे जैसे मैं नजदीक पहुँचता जाता हूँ वैसे वैसे मुझे मेरी अशक्तिका भान अधिकाधिक होता जाता है। और वैसे वैसे यह भान मुझे अधिक नम्र बनाता है। अपनी तुच्छताको न जानना और अभिमान रखना यह समझ है। परन्तु जो जानता है अुसका गर्व अुतर जाता है। मेरा तो कभीका अुतर गया है। यह (सत्यका) मार्ग शूरोंका मार्ग है कायरोंका यहां काम नहीं है। चौबीस घंटे जो प्रयत्न करता है खाते बैठते सोते जागते चौब जाते — हरअेक क्रिया करते हुअे जो केवल सत्यका ही चिन्तन करता है वह जरूर सत्यमय बन सकता है। जब सत्यका सूर्य किसीमें सम्पूर्ण प्रकाशित होता है तब वह छिपा नहीं रहता। तब अुसके लिअे कोअी बात बोलने या समझानेकी नहीं रह जाती। अथवा अुसके वचनमें जितनी शक्ति भर जाती है, जितना प्राण भर जाता है कि अुसका असर लोगों पर तुरन्त होता है।

*

सत्याग्रह रहनेके लायक कोअी नहीं हो सकता। जगत ही तो संस्था है। जगतके बाहर कौन रह सकता है? कुटुम्ब भी संस्था है। यह छेटा-सम्पा है। और कुटुम्ब और जगतके बीचमें हमारे जैसी संस्थायें हैं। सब अपूर्ण हैं। जगत भी अपूर्ण है। संपूर्ण संस्था जैसी कोअी वस्तु ही नहीं है। क्योंकि संस्था अपूर्ण मानवियोंकी बनी हुअी है। संपूर्ण अेकमात्र अीश्वर है।

*

रामनामका स्मरण जब श्वासोच्छ्वासवत् स्वाभाविक होता है तब दूसरे कामोंमें विघ्नकर नहीं होता बल्कि बल देता है। तंबूरेका सुर दूसरे

पुर्जोंको बल देता है वैसे। अिसमें दो काम अेकसाथ करनेका दोष नहीं आता। आंख अपना काम करती है कान अपना। सब अेकसाथ होता है।

अब समझमें आ सकता है कि मेरे दूसरे कामोंको रामनाम सरल करता है सफल भी। अुसका स्वरूप अवर्णनीय है अनुभवगम्य है।

ब्रह्मचर्य और अहिंसा शारीरिक तप है, अिस बारेमें मुझे भी शंका थी। अब नहीं है। दोनोंका सम्बन्ध शरीरके साथ है। मनोविकारका असर शरीर पर आता है। अैसे ही क्रोधादि हिंसक विकारोंका। अगर शरीर न हो तो अहिंसा और ब्रह्मचर्य अर्थविहीन हो जाते हैं। अर्थात् दोनों शरीरके धर्म हैं और दूसरे शरीरके साथ सम्बन्ध रखते हैं।

*

प्रेमकी परीक्षा तब ही हो सकती है जब प्रेम स्वतंत्रतासे काम कर सके।

*

अहिंसक संस्थामें कानून कानून मिट जाता है और अुसका बोझ हम कभी महसूस नहीं करते। अिसलिअे जब कोअी कानून भंग करता है तो हम अुसके प्रति अुदार रहते हैं।

*

ब्रह्मचर्य और अहिंसाका सम्बन्ध शरीरके साथ है, अिसलिअे अुनको शारीरिक तप कहा है। अिसका मतलब यह नहीं है कि मानसिक व्यभिचार क्षम्य है या कम है।

नाम-स्मरण यज्ञोंका राजा अेक ही दृष्टिसे है। कष्ट (शारीरिक) न्यूनतम् और परिणाम सबसे अधिक।

*

जो आवश्यक नहीं है वह करना आध्यात्मिक दृष्टिसे हानिकर है।

*

मेरा स्मरण २४ घंटे चलता है। अुसका मतलब यह नहीं है कि मैं जानता हूं लेकिन संभव है कि २४ घंटे तक चले और चलता है, जैसे श्वासोच्छ्वास।

*

हां शरीर-श्रम तो हमारे व्रतोंमें है ही। उसको जितना महत्व दिया जाय कम है।

*

पुरुष निर्विकार बननेसे स्त्रीरूप बन जाता है। यानी स्त्रीको अपनेमें समा लेता है। यही बात निर्विकार स्त्रीके बारेमें है। निर्विकारताकी कल्पना मनमें करनेसे मेरा अर्थ स्पष्ट हो जायगा। वैसे स्त्री-पुरुष देखनेमें नहीं आते हैं यह दूसरी बात है।

*

सन्तानोत्पत्तिकी इच्छा कब योग्य मानी जाय ऐसे प्रश्नका उत्तर नहीं हो सकता है कि जब दम्पतीको भोगेच्छा नहीं है तो भी सन्ततिकी इच्छा होती है। जैसा दशरथके लिये माना गया है। सारे कार्यको धर्मका रूप दिया गया है।

*

स्वादको नहीं जीता है तो ब्रह्मचर्यका शुद्ध पालन असम्भव-सा समझा जाय।

*

सच्ची प्रतिष्ठा वह जो सत्यादिका पालन करते हुये सेवासे आती है।

*

जो मनुष्य ईश्वर पर विश्वास करता है वह ज्योतिषीके पास कभी नहीं जायगा।

*

मेरी मृत्यु किसी निमित्तको लेकर हो इस कल्पनामात्रमें भी मैं अभिमान देखता हूं। यदि मुझसे पूछा जाये कि सेवा करते करते मरना पसन्द करोगे या खटिया पर रोगी होकर पड़े पड़े तो मैं यही कहूंगा कि जैसी प्रभुकी इच्छा हो वैसी तरहसे। मैं कैसे मरूं इसका विचार करना यह मेरा काम नहीं मेरे करतारका काम है। और मेरे लिये इस सम्बन्धमें कुछ भी कामना करना अभिमान है।

*

अहिंसक अधिकारी अपने अधिकारको ज्यादा सेवाके लिअे अिस्तेमाल करता है। अुसके द्वारा ज्यादा प्रेम बताता है। जब अधिकारका अुपयोग बाधा करनेमें होता है तब प्रेमकी न्यूनता समझना चाहिये।

*

नम्रता सीखी नहीं जाती परन्तु अहिंसाकी साधनामें से नम्रता फूलकी कलीकी तरह फूट निकलती है। सीखी हुअी नम्रता सभ्य लोगोंका विषय है। अुसका अहिंसाके साथ कोअी सम्बन्ध नहीं। लेकिन जहां शुद्ध अहिंसा है वहां नम्रता होनी ही चाहिये। अथवा अहिंसा नाममात्रकी है। अहिंसामें हमें मिट जाना है। हम हैं तब तक हिंसा तो है ही। हम गये तो हिंसा भी गअी। अिसलिअे अहिंसा सीखते सीखते नम्रताकी सुगंध किसी दिन अपने-आप फैल जायगी।

*

ध्रुवं जन्म मृतस्य च — जिसने अेक देह छोड़ा है अुसे दूसरा मिलने ही वाला है। यहां मोक्षकी बात नहीं कही। सामान्य नियमकी बात कही है। मुक्तको मृत्यु नहीं है अिसलिअे जन्म भी नहीं है।

*

दो या ज्यादा भी आदमी बात करते हैं और हम गुजरते हैं तब विनय मांगता है कि हम अुनकी बातें न सुनें न अुनमें बगैर निमंत्रण हिस्सा लें। अगर वे हमारी बात करते हैं अैसा आभास भी आवे तो हम वहांसे शीघ्रातिशीघ्र हट जायं।

*

भंगीकाम बढ़ानेमें यह भी समझो कि भंगी सबके नीचे रहते हुअे सबसे अच्छा काम (सफाअीका) करता है। और अुसी हकसे वह औरोंसे आगे सबसे अूंचा है।

*

रामनाम कितना बुलन्द है यह अनुभव लेनेके लिये विचारकी शुद्धि चाहिये। हृदयसे वह निकल नहीं सकता जब तक हृदय शुद्ध न हो। यह शुद्धि आ गअी तो रामनाम अुच्चार करनेकी भी जरूरत नहीं।

*

ईश्वरके पास ही पूरा सत्य रहता है। हमारे सापेक्ष सत्यके लिये हम मर जायें तो हम तो बच जाते हैं।

*

जब हम सचमुच कोधरहित होते हैं तब हमें सीधा रास्ता मिल जाता है।

*

विवाहित दम्पतीके लिये केवल श्रेष्ठ प्रकारकी संतति पैदा करना यही ब्रह्मचर्यका सच्चा सुपयोग है। जब दोनों जन संभोग नहीं परन्तु संयोगका फल — प्रजोत्पत्ति — चाहें तभी संभोग हो सकता है और होना चाहिये। अिसलिये प्रजोत्पत्तिकी अिच्छाके बिना संभोगकी अिच्छा अधर्म है और अिसलिये अुसे रोकना चाहिये।

३२

बापूके अन्तेवासी विविध सेवाक्षेत्रोंमें

आखिर बापूका सदाका वियोग भी सहना पड़ा और आश्रमके विषयमें गंभीरतासे कभी बातें सोची गयीं। आश्रमवासियोंने मिलकर यह निश्चय कर लिया था कि जबसे हम लोग आश्रमके लिये किसीसे चन्देकी याचना नहीं करेंगे। खेती करते हुअे स्वावलम्बी रहनेका यत्न करेंगे और जो भी कष्ट अुठाने पड़ें अुन्हें अुठाते हुअे अन्त तक आश्रमको निभायेंगे।

यह प्रश्न विनोबाजीके सामने गया क्योंकि बापूजीके बाद हमने विनोबाजीसे मार्गदर्शनकी याचना की थी और अुन्होंने कृपापूर्वक आश्रमका मार्गदर्शन करते रहना स्वीकार कर लिया था।

विनोबाजीने हमारे प्रश्नका अेक गंभीर और अुदात्त हल ढूंढ निकाला — सूतांजलिका। जिसके दो शुभ परिणाम हुअे। आश्रमको थोड़ी रकम मिलने लगी तथा सूत्रयज्ञकी भावनाने जनताका मानसिक स्तर अूंचा अुठाया।

हमारे लिये यह बड़े संतोषका विषय है कि तभीसे आश्रम अपनी खेतीके बल पर ही बिना बाहरी चन्देके चल रहा है। रेड्डीजीने खेतीमें अनेक प्रयोगों और अथक परिश्रमके द्वारा खूब प्रगति कर ली है जिससे सूतांजलि काफी बढ़ गयी है।

बापूजीके सामने ही आश्रमवासियोंको भुन्हें सतानेवाले अपंग तथा रोगियोंकी अेक जमात -समझा जाता था। पर वास्तवमें अैसा था नहीं। जहां अेक ओर रोगियोंकी सेवा करना बापूजीके आश्रम-जीवनका अेक विशेष कार्यक्रम था वहां दूसरी ओर अुनके आसपासके कार्यकर्ता बापूजीको अपना जीवन अर्पण करके वहां रहते थे और अुनकी आज्ञानुसार कार्य करनेमें अपनेको धन्य मानते थे। वे बापूजीके हृदयमें भुत्पन्न होनेवाले अनेक विचारोंको कार्यरूपमें परिणत करनेवाले थे जिसलिअे मानो अुनकी जीती-जागती प्रयोग-शाला थे। बापूजी स्वयं ही अुन्हें वात्सल्यमयी मांकी तरह अपनी छातीसे लगाये रहनेकी ममतासे मुक्त नहीं थे। परंतु यह स्पष्ट समझ लेना चाहिये कि अुनमें से प्रत्येक कार्यकर्ता बापूजीका आदेश मिलने पर कहीं भी जाकर चाहे जैसा कार्य अुठा लेनेकी क्षमता रखता था।

बापूजीने अेक बार अेक प्रतिज्ञा-पत्र निकालकर यह आदेश दिया था कि जो आश्रमवासी अुनके मरनेके बाद आश्रममें मरण-पर्यन्त सेवा करनेके निश्चयवाले हों वे अुस पर हस्ताक्षर कर दें।

प्रतिज्ञा-पत्र जिस प्रकार था

यह संस्था क्या चीज है, और जिसके क्या नियम हैं जिस बारेमें मेरे सामने प्रश्न काफी दफा आया है। मैंने अुसे टाला है। लेकिन मैं देखता हूं कि अब टालना नहीं चाहिये। संस्था कैसे बनी सो तो मैंने काफी दफा कहा है आज जानने योग्य बात तो यह संस्था क्या है अुसे हम सोचें। अुसका नाम तो सेवाग्राम आश्रम हो गया है। भले अैसा ही रहे।

स्थायी आश्रम-निवासी वे हैं जो अेकादश-व्रतोंकी आवश्यकता मानते हैं और अुनका अमल करनेका भरसक प्रयत्न करते हैं और आश्रममें मेरी मृत्युके बाद भी जो मरणान्त तक रहेंगे और सेवा करेंगे। जिस तरह रहनेवालोंके नाम लिख लेना चाहिये। वे निम्नलिखित पुर्जे पर दस्तखत करें।

> हम नीचे दस्तखत करनेवाले अेकादश-व्रतोंकी आवश्यकता मानते हैं और अुनके पालनका भरसक प्रयत्न करेंगे। हम जिस आश्रममें गांधीजीकी मृत्युके बाद भी मरने तक रहेंगे और जो सेवा हमें सुपुर्द की जायगी अुसे करते रहेंगे।

दस्त

"दूसरे रहनेवाले जो सेवार्थ आये हैं वे अस्थायी गिने जायेंगे। और तीसरे अतिथि जो थोड़े दिनोंके लिये ही आये हैं।

स्थायी आश्रमवासियोंमें से अेक व्यवस्थापक रहेगा जिसको गांधीजी पसंद करेंगे। अुनकी मृत्युके बाद और मतकर व्यवस्थापकके किसी कारणसे न रहने पर नयेकी पसंदगी स्थायी आश्रम-निवासी करेंगे। अुसका अधिकार आश्रमकी सब तरहकी व्यवस्था करनेका और सब निवासियोंके कार्य नियत करनेका होगा। व्यवस्थापक यथासंभव स्थायी निवासियोंकी स्वीकृति पानेकी कोशिश करेगा।

"आश्रमका हिसाब ठीक तौर पर रखा जायगा। अुस हिसाबका निरीक्षण प्रतिवर्ष करवाया जायगा। यह हिसाब आश्रम-भूमिके संरक्षकों और गांधी-सेवा-संघके अध्यक्षके पास भेजा जायगा।

बापू

कुछ भाअियोंने अुस पर हस्ताक्षर किये थे। मैंने सिर्फ अिसलिये नहीं किये कि बापूजीके बाद न मालूम परिस्थितियां क्या हों, यद्यपि निश्चय तो मेरा भी वैसा ही था। बापूजीको विश्वास हो गया था कि विजयलाल, मुन्नालाल, कृष्णचन्द्र, बलवन्तसिंह, पारनेरकर मैं सब लोग यहीं रहनेवाले हैं। हम लोग सेवाग्रामको अपना घर मानने लगे थे। बापूजीके बाद जब जवाहरलालजी सेवाग्राम पधारे तब अुन्होंने यह जानना चाहा कि यदि बाहर जाकर कार्य करनेकी आवश्यकता आ पड़े तो हम लोग जानेको तत्पर हैं या नहीं। तब मैंने सबकी तत्परता बतलाते हुअे यह स्पष्ट कर दिया था कि हम कहीं भी जाकर काम करें, लेकिन सेवाग्राम ही मरण-पर्यन्त हमारा घर बना रहेगा।

[illegible] निश्चयके अनुसार विनोबाजीने मुझे राजस्थानमें गोसेवाके कार्यके निमित्त भेजनेकी बात कही तो मुझे बहुत ही कष्टप्रद लगा। और आश्रम [illegible] ध्यान लगा। फिर [illegible] हाजिमारी अुकमीकायन [illegible] मन [illegible] प्रश्न भी मेरे सामने था। बापूजीके वे शब्द भी मेरे [illegible] मेरे मरनेके बाद जो मरते तक आश्रममें [illegible] (प्रतिज्ञा पत्र) पर दस्तखत करें। मैंने अपनी मनोभूमिका [illegible] आया। अुसीके अनुसार मैं-

माताजी की सेवा मुझसे हो सकती है वह करनेके प्रयत्नमें मैं लगा हुआ हूं। विनोबाजीका उत्तर अिस प्रकार था

परंधाम पवनार,
१–२–५

श्री बलवन्तसिंहजी

आपका पत्र मुझे बहुत अच्छा लगा। साफ दिलसे लिखा हुआ और जिम्मेदारीकी भावनासे भरा हुआ।

आश्रमके बाहर काम करनेका सोचते हैं तो हम लोगोंके मनमें थोड़ी झिझक मालूम होती है। यह मोह या आसक्ति नहीं है बल्कि आश्रम-निष्ठा है।

लेकिन आश्रम-निष्ठा छोड़नेका सवाल ही नहीं है। कल आपकी तनख्वाहकी बात निकली तो आपने दो सौ रुपये सुझाये। आपको दो सौ रुपये तो कोई भी दे सकता है। अुतनी आपकी योग्यता बाजारमें है और वह बहुत ज्यादा भी नहीं है। फिर भी मैंने हिसाब बारीकीसे करके अेक सौ पचहत्तर सुझाये वह अिसीलिये था कि आश्रमके लोगोंकी चिन्ता हमें रखनी थी। नहीं तो दो सौ और अेक सौ पचहत्तरमें जितना बड़ा अन्तर भी क्या था? आप आश्रमवासी हैं और मैं भी। अिसीलिये यह बारीकी हमने सोची। सारांश आश्रम निष्ठा हमें जरा भी ढीली करनी नहीं है।

अितना तो मैंने दोपहरको लिख दिया। बादमें समय नहीं रहा। दूसरे काममें रह गया। अब यह रातको लिखवा रहा हूं।

हम बरसोंसे अेकत्र काम किये हुये आश्रमवासी हैं। हमें हमारा सम्बन्ध तोड़ना नहीं है, बल्कि अधिक दृढ़ करना है। मैंने तो जिन्दगीभर जिसका सम्बन्ध जोड़ा अुसका मेरी ओरसे कभी तोड़ा नहीं है। आपको गोसेवा-संघका मैंने सुझाया क्योंकि अुसमें मेरा भी चलनेवाला है। राधाकिसन और आपके बीचमें कभी विचार-भेद हुआ तो निपटारेके लिये वह मेरे पास आनेवाला है।

गोसेवा-संघको आपका बहुत अुपयोग है। राधाकिसनसे कल मेरी बात हो गयी है। किसीके बगैर काम अड़ा है यह सवाल ही

नहीं है। बोलेवालेका काम जितने आदमी मिलें उतना बढ़ेगा। जितने प्रारम्भ से उतना ही शुरू किया था। यह पहलेसे नीति रही है।

तो हमने तो यह सोचा है कि आपको राजस्थानका काम सौंपा जाय और अगर हो सकता है तो १ अप्रैलसे आप उस काम पर नियुक्त हो जाय। जितनी मुद्दतमें आपको घर-बार जानेका भी हो सकता है अगर बहुत जरूरत रही तो।

आप स्वतन्त्र काम भी तो जरूर ले सकते हैं। लेकिन यह काम जो हमने सुझाया है वह ऐसा है कि उससे हमारा सम्बन्ध बना रहेगा।

शक्ति मनसे कामका आरंभ नहीं करना चाहिये। हम आपको खोना नहीं चाहते हैं लेकिन आपकी शक्तिका व्यापक उपयोग चाहते हैं। और आश्रमको क्षेत्र बिलकुल छोटा ही कम देना चाहते हैं।

यह सब चित्र भविष्यमें है। बापूके आश्रमको तोड़नेका तो मुझे नहीं सूझनेवाला है। जिसलिये उस विषयमें आप निश्चिन्त रहियेगा।

होशियारीको मैंने आश्रमवासी मान लिया है और जो मुझे आश्वासन देना चाहिये दे चुका हूं।

गजराजके बारेमें भी हमसे जो बन सकता है करनेको तैयार रहेंगे। माता-पिताकी आसक्तिसे वह बहुत नहीं सुधरेगा। अब वह बिलकुल छोटा तो नहीं है। उसको समझना चाहिये कि विद्या चाहिये तो सुख नहीं मिलेगा और सुख चाहते हैं तो विद्या नहीं मिलेगी। यह व्यास भगवानका अनुभव-वचन है। फिर भी विद्याप्राप्तिके लिये जो कष्ट उठाना पड़े उससे भिन्न दूसरा कष्ट उसे न उठाना पड़े यह हम जरूर देखेंगे।

बाकी अधिक हम बातचीत कर सकते हैं।

विनोबाके प्रणाम

कृष्णचन्द्रजीको उन्होंने गुरुकीकावन भेजा जहां वे आज प्राकृतिक चिकित्सालयकी भारी सेवा कर रहे हैं। कृष्णचन्द्रजीने मैट्रिक ले की परीक्षामें पहला डिविजन तो प्राप्त किया ही था परन्तु बापूजीकी कठिनसे कठिन परीक्षाओंमें भी वे पूरे डिविजनसे पास हुये थे। अकसर देखा जाता है कि महर्षियोंका असर बड़े बड़े साधकोंके जीवन पर छाया रहता है। परन्तु कृष्णचन्द्रजीने अंग घिस घिस कर धोनेका जो परिश्रम किया है, उसपरसे

और कॉलेजमें पड़े बुरे संस्कारोंके खिलाफ युद्ध करते करते अपने मन और शरीरको भी तपश्चर्याकी अग्निमें वैसे तपाया है, जुसे देखकर जुनके साथी भी परेशान हो जुठते थे। जुन्होंने मुझे हिन्दी पढ़ानेमें गुरुका पार्ट तो अदा किया ही है। लेकिन हमेशा मेरे छोटे भाजीकी तरह नम्रतासे मेरी डांट फटकार भी सरलतासे सही है। सेवाभाव तो जुनका गजबका है। जब कभी मैं बहुत थक जाता था या मुझे कोजी शारीरिक पीड़ा होती थी तब शरीर और पैर दबानेकी सेवा जुनसे लेनेमें मनको जरा भी संकोच नहीं होता था। आज भी नहीं होता है। जुनकी कार्य-तत्परता जुनकी सरस्वता अध्ययन-चिन्तनकी सतत लगन शारीरिक तप और स्वच्छताकी सूक्ष्म दृष्टि आदि सब वृत्तियोंमें बापूजीके प्रति जुनकी अपार श्रद्धा और जुनके बताये मार्ग पर अपने आपको खपा देनेकी सतत जागृतिसे जुनका जीवन कुन्दनकी तरह निखरता जा रहा है। बापूजीने जुनसे जो आशायें रखी थीं जुन्हें पूरा करनेमें वे अंतिम सांस तक जूझते रहेंगे यह जुनके आजके कार्यक्रम और जीवनसे स्पष्ट हो रहा है। हालांकि जुनके प्रति मेरी ममताके कारण शरीरके प्रति जुनकी कठोरतासे मुझे कष्ट होता है कभी कभी यह जुनका पागलपन भी लगता है। लेकिन माँहि पड्या ते महासुख माणे देखनारा दाझे जोने — जो तपकी भट्टीमें पड़ा है जुसे तो महासुख है देखनेवाला जलता है।

पारनेरकरजी ऋृषिकेशमें पशुओंका संचालन कर रहे हैं। विमल लालजाजी तथा मुन्नालालभाजी सेवाग्राममें ही हैं। ओश्वर-कृपासे यह सिद्ध हो गया है कि हममें से कोजी वैसा पंगु सिद्ध नहीं हुआ जैसा कि लोगोंका खयाल था। बापूजीके सामने आपसमें हमारे बीच स्वभाव-भिन्नताके कारण कभी कभी चकमक झड़ जाती थी। लेकिन आज ओक-दूसरेसे सैकड़ों मील दूर होते हुओ भी हमारे बीचका स्नेह सगे भाजी-बहनोंके स्नेहसे भी कहीं अधिक गहरा है।

आश्रमकी बहनोंका मैं स्वयं परिहास किया करता था कि बापूके बाद आप लोगोंके हाल कैसे होंगे? जब मैं जुनसे पूछता कि बापूजीके मरनेके बाद आप लोग क्या करेंगी तो वे बहुत चिढ़तीं और कहतीं कैसे अमंगल वचन क्यों मुंहसे निकालते हो। लीलावतीबहन और अमतुलबहन तो लड़ने पर आमादा हो जातीं। आज सभी यह देख सकते हैं कि जिन बहनोंके काम हम आश्रमियोंके कामोंसे भी ज्यादा चमक रहे हैं।

शीलावतीबहनने १२ वर्षकी अवस्थामें पढ़ना शुरू किया और डॉक्टरीकी सनद हासिल की। राजकुमारीबहन जो सचमुच बापूकी राजकुमारी थीं आजकल भारतकी केन्द्रीय स्वास्थ्य-मंत्रिणी हैं और अुनकी सेवा सर्वविदित है। सुशीलाबहन अेक कुशल डॉक्टर हैं। दिल्लीकी प्रादेशिक विधानसभाके अध्यक्ष-पद पर भारतमें ही नहीं बल्कि सारी दुनियामें पहुंचनेवाली वे सर्वप्रथम महिला हैं। आजकल वे विनोबाजीके भूदान-आन्दोलनमें प्रमुख भाग ले रही हैं।

बहन अमतुस्सलामकी तो बात ही क्या कहूं? मुल्कको जोड़ा देनेमें वे सिद्धहस्त हैं और यह देखकर आश्चर्य होता है कि न मालूम किस आन्तरिक शक्तिके आधार पर वे अितना काम कर लेती हैं। अपने साथी कार्यकर्ताओंके प्रति अुनका माता जैसा स्नेह होता है। वे सतत सेवाकार्यमें लगी रहती हैं। किसी काममें थकने या निराश होनेका तो अुनके जीवनमें स्थान ही नहीं है। अुनके प्रत्येक सेवाकार्यमें बापूजी और बाके प्रति अुनकी जीती-जागती श्रद्धाका प्रत्यक्ष दर्शन होता है। अुनके व्यक्तित्व और वाणीमें अितना प्रभाव है कि कोअी भी अुनकी बातको टालनेकी हिम्मत नहीं कर सकता। अुन्होंने हिन्दू-मुसलमानोंके बीचकी दरारको भरनेके लिअे सीमेन्टका काम किया है। पू. राजगोपालाचार्यजीके शब्दोंमें "अमतुस्सलामने भावलपुरसे हिन्दू लड़कियोंको मुसलमानोंके घरोंमें से जिस तरह निकाला है अुसका यह काम अितिहासमें सोनेके अक्षरोंमें लिखा जायगा।" नोआखालीमें अेक मशहूर मुस्लिम तलवार रखवानेके लिअे अुन्होंने अपने प्राणोंको दाव पर लगा कर सफलता प्राप्त की थी। बापू और बाके प्रति अुनकी श्रद्धाने तो हम सबकी चोटी पर हाथ फेर दिया है। राजपुरामें अुन्होंने सेवाग्रामके ही नमूनेकी बापू-कुटी, बा-कुटी और शान्ति-निवास बनवाया है। बापू-कुटीमें रामायण, गुरु-ग्रन्थसाहब और कुरानशरीफका नित्यपाठ चलता है। बा-कुटीमें बाल-मंदिर चलता है। शान्ति-निवासमें सेवाकार्य चलता है।

अुनका जीवन धर्म-समन्वयका अनोखा दृष्टान्त बन गया है। वे जितनी सच्ची मुसलमान हैं अुतनी ही सच्ची हिन्दू भी हैं। सिख, अीसाअी, पारसी आदि सब धर्मोंके प्रति अुनके मनमें आदर और श्रद्धा है। और सबकी सेवा समान रूपसे करनेके लिअे वे अपना जीवन समर्पण कर चुकी हैं। बापूजीको यदि मैं तुम्हारी अुपमा दूं तो अमतुस्सलामबहनने अपने आपको मिट्टी

बनाकर अुनको सौंप दिया था। अुस कुम्हारने अुस मिट्टीकी खूब अच्छी तरहसे पिटाअी की। अुस मिट्टीका वे अैसा पक्का घड़ा बनाकर रख गये हैं जो अुनके कामका बार अुठानेमें न रात देखता है न दिन जिसे न भूखकी चिन्ता है न प्यासकी न बीमारीकी न मरनेकी। और अुस पर किसी प्रकारके मैलमावकी तो बूंद ठहरती ही नहीं है। राजपुरामें हिन्दू शरणार्थी बहनों बच्चों बड़ोंकी अुन्होंने जो सेवा की है और आज भी कर रही हैं अुसकी मिसाल मिलना कठिन है। कितनी ही हिन्दू-मुसलमान बहनोंको अुन्होंने अच्छी तालीम देकर तेजस्वी कार्यकर्ता बना दिया है।

यहां पर अेक सुन्दर गोशाला बनानेके लिअे वे अधीर हैं। मुझे बार बार लिखती रहती हैं कि मेरे जीवनका यह काम अधूरा रह गया तो अिसका पाप आपको लगेगा। मैं भी हंसीमें लिख देता हूं कि जब हम दोनों बापूजीके पास चलेंगे तो झगड़ा अुनकी अदालतमें पेश होगा। तब मैं यह कहकर साफ बच जाअूंगा कि जिन्होंने दुनियाभरकी आफतें अपने सिर पर रख ली थीं और धाय अेकनिष्ठ सेवक चाहती हैं। अिसलिअे मैं अिनके बसमें पाव डालनेमें संकोच करता रहा। लेकिन वे मेरी अेक न चलने देंगी और गोशाला बनाकर ही रहेंगी। अुनकी अिस सेवामय सर्वधर्म समभावकी पवित्र भावना और सतत सेवा-परायणताको देखकर मुझसे छोटी बहन होने पर भी अुनके चरणोंमें मेरा सिर झुक जाता है। जिस प्रकार मीरा भगवानके पीछे पागल थी अुसी प्रकार वे बापूजीके कामके पीछे पागल हैं।

निकसत नाहिं बहुत पचि हारी रोम रोम अुरझानी।

सचमुच ही बापूजी और बाका प्रेम अुनके रोम रोममें अुलझ गया है। अिन्हींका नाम है

सो अनन्य गति जाके मति न टरे हनुमंत।
मैं सेवक सचराचर रूपराशि भगवंत।।

बापूजीने बहनोंकी अपार शक्तिको प्रगट करनेका जो महान प्रयत्न किया था अुसका जीवित दृष्टान्त अमतुस्सलामबहनका कार्य और जीवन है।

मीराबहन तो पांडवोंकी तरह हिमालय पर चढ़नेमें मशगूल हैं। पहले हरद्वारमें अुन्होंने किसान आश्रमकी और ऋषिकेशमें पशुलोककी स्थापना की क्योंकि गौओंके पीछे वे पागल हैं। ऋषिकेशसे आगे बढ़कर टेहरी गढ़वालमें

९४

अुपसंहार

काफी लिख जाने पर भी मेरा हृदय बापूजीके सत्संग और अपने २५ वर्षके आश्रम-जीवनके संस्मरणोंसे अभी और छलाछल भरा हुआ है, जिन्हें लेखनीबद्ध करना कठिन है। अिन संस्मरणोंके जरिये बापूजीके पावन चरित्रके महज अेक छोरसे आंगना ही स्पर्श हुआ है। अुनका चरित्र अितना महान और विशाल था कि मेरा यह प्रयास कुछ कुछ अुस हाथीकी बात जैसा सिद्ध होगा जिसे अनेक अंधोंने स्पर्श द्वारा पहचान कर अनेक आकृतियोंका बताया था। अपने अपने कथनमें वे सब सच्चे थे लेकिन पूर्ण सत्यसे बहुत दूर थे।

मैं नहीं जानता कि मेरा यह अल्प-सा प्रयास पाठकोंके लिये कितना अुपयोगी सिद्ध होगा। परन्तु स्वयं अपने लिये कहूं तो अिन पंक्तियोंको लिखते हुये मुझे भगवन्-नाम-स्मरणके पावन प्रभावका सच्चा महत्व समझमें आया है। कहा जा सकता है कि अिस प्रयासमें मानसिक जप और ध्यानकी महिमाकी झांकी भी मुझे हुअी है। व्यास भगवानको श्रीमद्भागवत लिखकर जैसी सात्विक अनुभव हुआ था वैसी ही सात्विक अनुभव मुझे बापूजीके अिन पवित्र और मधुर संस्मरणोंको लिखकर हुआ है। अिस प्रयत्नमें अपने आध्यात्मिक पिता बापूजीके बहुत बड़े ऋणसे यत्किंचित् अुऋण होनेका संतोष भी मेरी आत्माको हुआ है जिनका हृदय रामके निवासके योग्य था जो राममय थे। यह बात अुनके जीवन और मृत्युसे सिद्ध हो चुकी है। बापूजीके जीवनका सार हमें अिन पंक्तियोंमें मिलता है

> काम कोह मद मान न मोहा। लोभ न छोभ न राग न द्रोहा॥
> जिनके कपट दंभ नहीं माया। तिन्हके हृदय बसहु रघुराया॥
> सबके प्रिय सबके हितकारी। दुख सुख सरिस प्रसंसा गारी॥
> कहहिं सत्य प्रिय बचन बिचारी। जागत सोवत सरन तुम्हारी॥
> तुम्हहिं छाड़ि गति दूसरि नाहीं। राम बसहु तिन्हके मन माहीं॥
> जननी सम जानहिं परनारी। धनु पराव बिष तें बिष भारी॥

जे हरषहिं पर संपति देखी। दुखित होहिं पर बिपति बिसेषी॥
जिन्हहि राम तुम प्रानपिआरे। तिन्हके मन सुभ सदन तुम्हारे॥

जिन संस्मरणोंको लिखते समय जहां मुझे आध्यात्मिक आनंद और आध्यात्मिक खुराक मिली है, वहां मैं बापूजीके प्यार और ममताका स्मरण करके रोया भी खूब हूं। मुझे तो ऐसा ही प्रतीत होता है कि

सखेति मत्वा प्रसभं यदुक्तं हे कृष्ण हे यादव हे सखेति।
अजानता महिमानं तवेदं मया प्रमादात् प्रणयेन वापि॥
यच्चावहासार्थमसत्कृतोऽसि विहार शय्यासनभोजनेषु।
एकोऽथवाप्यच्युत तत्समक्षं तत्क्षामये त्वामहमप्रमेयम्॥

ये सब अपराध मैंने बापूजीके साथके अपने व्यवहारमें अज्ञानवश किये थे। जिसके लिये मेरा हृदय निरन्तर बापूसे क्षमा-याचना करता ही रहता है।

अधिक क्या कहूं? जड़ चेतन गुनदोषमय बिस्व कीन्ह करतार। संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार॥ इस नियमके अनुसार मेरे आत्मवत् पाठकवृन्द मेरे दोषोंकी तरफ ध्यान न देकर जिसमें से बापूजीके गुणरूपी दूधको ग्रहण करके संतोष मानेंगे। और मेरी त्रुटियोंके लिये मुझे उदारतापूर्वक क्षमा करेंगे।

जाकी रही भावना जैसी। प्रभु मूरति देखी तिन्ह तैसी।

मेरी अभिलाषा

बापूजीके जानेके बाद मैं असहाय-सा बन गया था। अन्दर ही अन्दर दुःखका कीड़ा घुनकी तरह दिलको खाता रहता था और कभी यह दुःख बाहर भी आता था तो साथी कहते थे कि अगर आप अिस प्रकारसे धीरज खोयेंगे तो हमसे क्या होगा। अिसलिअे भी मैं अपने मनको दबाकर रखता था। जब विनोबाजीने पाथेयाके निमित्तसे मुझे राजस्थान भेजनेकी बात निकाली तो मैंने अपनी अनिच्छा तो बताअी लेकिन जिस प्रकार मैं बापूजीके सामने अड़ जाता था अुस प्रकार अड़नेकी हिम्मत मैं अब खो बैठा था। बापूजीके बाद आश्रमका मार्गदर्शन विनोबाजीको सौंपा गया था अिसलिअे विनोबाजीकी बात टालना मुझे अुचित नहीं लगता था। अेक विचार और भी मेरे मनमें काम कर रहा था। जब बापूजीके सामने आश्रमवासियोंके बाहर जानेकी बात निकलती तब मैं जरूर विरोध करता तो लोगोंको लगता था कि हम लोग पंगु बन गये हैं और बापूजीके साथ चिपके रहना चाहते हैं। अिसलिअे भी अब बाहर जाकर अपने पैरोंको आजमा देखना मेरे लिअे जरूरी हो गया था। विनोबाजीके कहनेसे मैं राजस्थानमें जाकर लोकसेवाका काम तो करने लगा था लेकिन मेरा मन तो आश्रममें ही था। क्योंकि आश्रमको मैंने अपना घर बना लिया था और बापूजीकी अिच्छा तो स्पष्ट ही थी कि अुनके बाद हम लोग आश्रम न छोड़ें। अैसी मन-स्थितिमें ता० २१-४-५५ को अखबारमें पढ़ा कि सेवाग्राम आश्रम और बापूजीकी कुटी बंद करके आश्रमवासी भूदान-यज्ञमें भाग लेंगे अिसलिअे दोनों बन्द कर दिये गये हैं। अिस समाचारसे मुझे गहरी चोट लगी लेकिन मन मसोसकर मैं चुप बैठा रहा। अिसके बाद सेवाग्रामसे मुझे भाअी प्रभाकरजीका पत्र मिला। साथमें विनोबाजीके दो पत्रोंकी नकल भी मिली। अुस परसे मैं समझा कि यह सब विनोबाजीकी प्रेरणासे हुआ है।

वे पत्र यहां दिये जाते हैं

(१)

सेवाग्राम (वर्धा)
दिनांक १८-४-'५५

प्रिय भाई बलवन्तसिंहजी

नमस्कार।

साथ विनोबाजीके दो पत्रोंकी नकलें हैं। आज शामको ५-१ बजे सामूहिक कताई और प्रार्थनाके बाद आश्रम और बापू-कुटी बन्द रहेगी। श्री चिमनलालभाई अनन्तरामजी मुन्नालालजी दवाखानेमें रहेंगे। कंचनबहन फिलहाल सहारनपुर जा रही हैं।

विनोबाजी आजके प्रार्थना-प्रवचनमें आश्रम-आहुतिके बारेमें बोलेंगे। शायद अखबारोंमें यह आयेगा। १ मईसे दो टुकड़ी निकलेंगी। भूदान-कार्य समाप्त होने तक टोलियां घूमती रहेंगी। विनोबाजीका आदेश आनेके बाद फिर टोलियां आश्रममें आयेंगी। लेकिन वह दिन कब आयेगा प्रभु जाने।

आप तो अच्छे होंगे। मैं १ मईको दक्षिणके भागमें जा रहा हूं। फिर राम जाने।

आपका
प्रभाकर

(२)

पड़ाव तारवोली
कुलकर्ण पदयात्रा ११-४-'५५

श्री चिमनलालभाई

भूदान-यज्ञ कार्यमें आश्रम होमनेकी कल्पना आप लोगोंको रुची, यह जानकर खुशी हुई। दिनांक १८ को आश्रम खाली किया जाय। आप और अनन्तरामजी फिलहाल दवाखानेमें रहें। अनन्तरामजी आपकी कुछ सेवा भी करेंगे।

बापू-कुटी बन्द करके कुंजी छगनलालभाईके पास दी जाय। आगेकी व्यवस्था सर्व-सेवा-संघ सोचेगा। तब तक देखनेके लिये आने-वाले कुटीको बाहरसे देखेंगे और भूदानके कार्यमें अपनेको अर्पण

बुससे अुनको मिल जायगा। बाद सर्व-सेवा-संघसे परामर्श कर सोचा जायेगा।

हमारी तरफसे जमनालालभाजी थोड़े दिन कुंजी संभालनेकी जिम्मेवारी अुठा लेंगे असी मैं आशा करता हूं। बापूके सबसे पुराने साथी शायद आज वे ही हैं।

विनोबाके प्रणाम

(२)

पड़ाव तारावोली
११-४-५५

श्री जमनाभाजी

विमलभाजभाजीको लिखे पत्रकी नकल साथ है। जिस कदमका रहस्य आप तो समझ लेंगे। बापूने कभी बार असे प्रयोग किये हैं। आज यह आहुति अनिवार्य हुअी है। कुंजी संभालनेका कार्य थोड़े दिनके लिअे आप अुठा लेंगे। बाद सर्व-सेवा-संघ देख लेगा।

विनोबाके प्रणाम

मैंने प्रभाकरजीको जो पत्र लिखा वह भी यहां देता हूं

गोसेवा-आश्रम सीकर,
दिनांक २२-४-५५

प्रिय भाभी प्रभाकरजी

आपके पत्रके साथ विनोबाजीके पत्रकी नकल भी मिली। यह समाचार मैंने अखबारमें पढ़ लिया था। यह आघात मुझे तो बहुत-सा लगा है। मेरा मन आप लोगोंसे भिन्न है। मैं किसी भी कीमत पर आश्रमको बन्द करनेके पक्षमें नहीं हूं। आप लोगोंका मन्तव्य मुझ बिलकुल नहीं रखता है। मनमें आया कि वहां आकर आश्रमको सम्हालूं। लेकिन यहांके कामको छोड़कर जाऊं तो वही होगा जो आप लोग कर रहे हैं। यह कायम अधिक मेरी ममता आश्रममें है लेकिन मेरे साथ विनोबाजीने और आप लोगोंने जो बरताव किया है मुझसे मेरा मन खट्टा हो गया है।

श्री चिमनलालभाओ और अनन्तरामजी तो अपनी तबीयतके पीछे जैसे तैसे चला रहे थे। अुनके शरीरमें शक्ति तो है ही नहीं। आश्रमकी रक्षा करना ही अुनके जीवनका सर्वोत्तम अुपयोग था। लेकिन अुनको जैसा ही चला है तो क्या किया जाये? अिससे मुकाममें कितनी मदद मिलेगी यह तो अनुभव बतायेगा। हां आप आज जायें यह ठीक है। मुन्नालालजी भी बाहर निकल सकते थे। लेकिन आश्रम बन्द करना मेरी नम्र रायमें मैं भूल मानता हूं। आप लोगोंको आश्रम बन्द करनेका अधिकार है तो मुझे अपनी राय देनेका तो अधिकार है ही। भावनाके वेगको शान्त करके गंभीरतासे विचार करनेकी नम्र सूचना है।

आप लोगोंका पुराना साथी लेकिन आजका विरोधी,
बलवन्तसिंहके सबको प्रणाम

फिर अुनका कोओ जवाब नहीं मिला। मैं मन ही मन घुलने और सोचने लगा कि अब क्या करना चाहिये। मनमें आता कि सेवाग्राम जाकर बापूजीकी कुटीको पकड़कर वहीं बैठ जाअूं। लेकिन कुछ तो संकोचका भाव और कुछ यह विचार मुझे रोकता था कि विनोबाजी और दूसरे आश्रमवासियोंने जो किया है अुसके बीचमें मैं क्यों पड़ूं।

ता. २५-१-५५ को हैदराबादमें गोसेवकोंकी सभा थी। मुझे अुसमें जाना था। वर्धा बीचमें पड़ता था। मेरे मनमें द्वंद्व चला कि वर्धा अुतरूं या नहीं? क्योंकि बापूजीकी कुटी और आश्रमको बन्द देखनेकी मुझमें हिम्मत नहीं थी। मैंने आश्रमके व्यवस्थापक श्री चिमनलालभाओको पत्र लिखा कि मैं हैदराबाद जा रहा हूं। २४ तारीखको वर्धासे गुजरूंगा। अिस समय अुतरनेका विचार तो नहीं है। अगर अुतरा तो सीधा आश्रममें ही जाअुंगा। वहीं ठहरूंगा और वहीं खाअुंगा। मैं हैदराबादसे २८ जूनको लौट सका। श्री चिमनलालभाओने जिस डरसे कि मैं कहीं सीधा ही न चला जाअूं मुझे गाड़ीसे अुतारनेके लिये स्टेशन पर श्री कंचनबहनको भेजा। मैं अुतरा और सेवाग्राम गया। अुस समय चिमनलालभाओ और दूसरे आश्रमवासी कस्तूरबा दवाखानेमें रहते थे। मुझे वहीं पर अुतारनेकी सूचना थी लेकिन मेरा निश्चय सीधा आश्रम जानेका था। अिसलिये मैं

आश्रममें ही गया। आश्रमको खाली और बापूजीकी कुटीको बन्द देखकर मुझे तीव्र वेदना हुअी। मैंने हरिभाअूसे कुटीकी चाबी मांगी तो अुसने बताया कि चाबी चिमनलालभाअीके पास है। मैंने लानेको कहा और मैं बरामदेमें बैठकर प्रार्थना करने लगा। अितनेमें हरिभाअू चाबी ले आया और कुटी खोली। मैंने 'प्रभु मोरे अवगुण चित न धरो' भजन आरम्भ ही किया था कि मेरे धीरजका बांध टूट गया। मैं बापूजीके बैठनेकी जगह पर औंधा पछाड़ खाकर गिर पड़ा और जोरसे चिल्ला-चिल्लाकर रोने लगा। अितनेमें चिमनलालभाअी दूसरे आश्रमवासियोंके साथ वहां आ गये। मेरे दुःख देखकर सबकी आंखें भीगी हो गयीं। चिमनलालभाअी मुझे सान्त्वन और धीरज बंधानेका प्रयत्न करने लगे तो मैंने अुनको सुनाया कि क्या हमें बापूजीने अिसीलिअे रखा था कि हम अुनके बाद आश्रम और कुटीको बन्द करके चले जायं? रोना बन्द करना मेरे काबूसे बाहर हो गया था। मेरा गला घुट गया था। मुझे तो डर था ही दूसरे साथियोंको भी डर हो गया था कि कहीं मेरे हृदयकी गति न रुक जाय। लेकिन अितने पुण्य नहीं थे अिसलिअे सिर पर पानी और भीगा कपड़ा रखने पर मैं मुश्किलसे रोना रोक सका। बादमें सबने मिलकर प्रार्थना की।

मेरे जीवनमें अिस प्रकारका यह पहला आघात था। मैंने अनेक कुटुम्बीजनों और मित्रोंको खोया है। लेकिन मेरा धीरज कभी अितना टूटा हो और किसीके लिअे भी मैं अितना रोया होअूं ऐसा याद नहीं आता। मैंने निश्चय किया कि बापूकी कुटी खुली रहेगी। और आश्रममें दोनों समय प्रार्थना और सूतयज्ञ भी चलेगा। कोअी न आया तो मैं अकेला ही यह काम करूंगा। अितना निश्चय करनेके बाद मेरा दिल कुछ हलका हुआ। अिस निश्चयके अनुसार शामको आश्रमकी प्रार्थना भूमि पर प्रतिदिन प्रार्थना होने और बापूकी कुटी खुली रहनेकी मैंने घोषणा कर दी। प्रार्थनामें आजकल ५-६ व्यक्ति आते थे। मुझे अिससे बड़ी खुशी हुअी। लेकिन आश्रमके भी अमृतलालजी और मुन्नालालजी ही अुस दिन प्रार्थनामें शरीक हुअे। दूसरे दिन २९ तारीखको अहमदाबादमें सर्व-सेवा-संघकी कार्यकारिणीकी सभा थी और अुसमें कुटीके प्रश्न पर चर्चा होनेवाली थी। काका राधाकृष्णजी बजाजने आग्रहपूर्वक सूचना की कि मैं और चिमनलालभाअी सभामें जायें। मेरी अिच्छा तो नहीं थी लेकिन अुनके आग्रहसे मैं गया। जब सभामें

कुटीका प्रश्न निकला तो मैंने कहा कि पहले थोड़ी बात मेरी सुन लीजिये बादमें आगेका विचार करना ठीक होगा। लोगोंने मेरी बात सुनना कबूल किया। मैंने कहा कि कुटी तो मैंने कब खोल दी है। अुसकी तीन शर्तें भी रख दी हैं

१ कुटी हर समय खुली रहेगी।
२ आश्रममें दोनों समय प्रार्थना चलेगी।
३ सूतयज्ञ नियमित रूपसे होगा।

अिस पर सब लोग चौंके। क्योंकि मेरा नाम राय देनेवालों या कुटीका निर्णय करनेवालोंकी सूचीमें नहीं था। लेकिन संघके अध्यक्ष धीरेन्द्रभाअी मजूमदारने बड़ी खूबीसे काम लिया। वे बोले "बस कुटी तो खुल ही गयी है। खुली जाहिर कर दो।" भाअी राधाकृष्णजीने कहा कि "कल विधिवत् खोलना ठीक होगा।" धीरेन्द्रभाअीने कहा "कल क्यों? आज क्यों नहीं?" वे चुप रहे। शंकरराव देवने कहा कि अभी तो बलवन्तसिंहजीके दो प्रश्न हल करने बाकी हैं। प्रार्थना और सूतयज्ञ कौन करेगा? अितनेमें आशादेवी और आर्यनायकम्‌जी खड़े होकर बोले कि अिन दो बातोंकी जवाबदारी हम लेते हैं। सबके चेहरे खुशीसे खिल अुठे। मेरी खुशीका तो पार न रहा। आशाबहन और आर्यनायकम्‌जी अुसी समय सभासे अुठ कर सेवाग्राम चले गये। अुन्होंने बापूजीकी कुटीको सजाया और शामको बड़ी ही प्रसन्नताके साथ सबने प्रार्थना की। सेवाग्रामके लोग भी खुश हो गये क्योंकि कुटी बन्द होनेका अुनको भी बड़ा दुख था।

मेरी तीनों शर्तें स्वीकार हो जानेसे मेरी आत्माको काफी शांति मिली और सन्तोष हुआ। लेकिन मेरी हार्दिक अभिलाषा यही थी और है कि सारा आश्रम फिरसे चालू किया जाय और बापूजीके कुछ योग्य साथी वहाँ रहें, जो आश्रमकी मुलाकात लेनेवाले भाअी-बहनोंके सजीव सम्पर्कमें रहकर बापूजीके अुस पुण्य कार्यक्षेत्रकी रक्षा करते रहें। मेरी यह नम्र सूचना मैंने विनोबाजीके सामने आग्रहपूर्वक रखी है लेकिन अभी तक अुन्होंने अुस पर गौर नहीं किया है। आज भी मैं बार-बार विनयपूर्वक अुनसे और सर्व-सेवा-संघसे यह विनय करता हूँ कि वे मेरी सूचना पर गहरा विचार करें और सेवाग्राम आश्रमको खोल दें। बापूजीने जो प्रतिज्ञा-पत्र तैयार किया था अुसमें लिखा था "मेरे मरनेके बाद अपने मरने तक जो आश्रममें ही

रहें वे ही अिस पर सही करें। मेरी नम्र रायमें तो अुसका यही अर्थ होता है कि बापूजीके मरनेके बाद भी आश्रम अुनके सहयोगियोंके जीवन-काल तक तो कमसे कम चलता रहे और भावी पीढ़ीको सच्चे आश्रम-जीवनकी और अुदात्त जनसेवाकी प्रेरणा देता रहे।

आज आश्रम और बापू-कुटीकी देखरेख तथा रक्षाका काम सर्व-सेवा-संघके हाथमें है। श्री मुका बाबाजी कुटीकी सेवा बड़ी ही श्रद्धा और तत्परतासे कर रहे हैं। हरिभाअू और नामदेव आश्रमकी साफ-सफाईका काम खुशी श्रद्धासे कर रहे हैं। आश्रमकी खेती सहकारिताके आधार पर भाअी नामदेव राऊ बड़ी लगनसे चला रहे हैं। भाअी अनन्तरामजी अपनी कमजोर तबीयत रहते हुअे भी कस्तूरबा दवाखानेसे आकर अुनको कीमती सहायता देते रहते हैं। श्री चिमनलालभाअी अत्यन्त दुर्बल अवस्थामें भी आश्रमके मकान और खेती आदि सब चीजोंकी देखभाल बड़ी चिन्ताके साथ करते हैं और आश्रम-परिवारके जो लोग बाहर हैं अुनके साथ पत्रव्यवहार द्वारा सजीव सम्पर्क बनाये रखते हैं। आश्रमकी मुलाकात लेनेवालोंकी भाव भगतका भार भी अुन्हींके सिर पर है। वे सन् १९१७ से अन्त तक बापूजीके साथी रहे और अुनके अनन्य भक्त हैं।

भले अिसे कोअी ममत्व कहे लेकिन मेरी ममता और श्रद्धा बापूकी अिस तपोभूमिके प्रति अपनी माके जैसी ही है। सचमुच आज भी मुझे अुससे वात्सल्य मिलता रहता है। मैं मानता हूँ कि मेरे ही जैसी श्रद्धा और भक्ति देश-विदेशके अनेक श्रद्धालु जनोंकी भी अुस तपोभूमिके प्रति है और सदा बनी रहेगी।

१

बापूके समयकी आश्रमकी प्रार्थना

प्रातःकालकी प्रार्थना

बौद्धमंत्र

नं म्यो हो रें गे क्यो।
नं म्यो हो रें गे क्यो।
नं म्यो हो रें गे क्यो॥

नित्यपाठ

हरिः ॐ।
ईशावास्यम् इदम् सर्वम् यत् किं च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुंजीथा मा गृधः कस्यस्विद् धनम्॥

प्रातःस्मरणम्

प्रातः स्मरामि हृदि संस्फुरद् आत्मतत्त्वम्
सत्-चित्-सुखं परमहंस-गतिं तुरीयम्।
यत् स्वप्न-जागर-सुषुप्तम् अवैति नित्यम्
तद् ब्रह्म निष्कलम् अहं न च भूत-संघः॥१॥
प्रातर् भजामि मनसो वचसाम् अगम्यम्
वाचो विभान्ति निखिला यद् अनुग्रहेण।
यन् नेति नेति वचनैर् निगमा अवोचुस्
तं देव-देवम् अजम् अच्युतम् आहुर् अग्र्यम्॥२॥
प्रातर् नमामि तमसः परम् अर्कवर्णम्
पूर्णं सनातन-पदं पुरुषोत्तमाख्यम्।

बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम।
कुल हुवल्लाहु अहद्। अल्लाहुस्समद्।
लम् यलिद् वलम् यूलद्
व लम् यकुल्लहू कुफ़ुवन् अहद्॥

जरथोस्ती गाथा

(पारसी प्रार्थना)

मज़्दा अत मोइ वहिश्ता
श्रवाओस्चा श्योथनाचा वओचा।
ता-तू वहु मनंगहा
अषाचा इषुदेम स्तुतो
ख्शमाका मज़्दा अहुरा फेरषेम्
वस्ना हइथिम् स्यम् दाओ अहुम्॥

[नोट इसके बाद भजन धुन और साप्ताहिक गीता-पारायण होता था।]

सायंकालकी प्रार्थना

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैर्
वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर् गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः॥

स्थितप्रज्ञ-लक्षणानि

अर्जुन उवाच

स्थितप्रज्ञस्य का भाषा समाधिस्थस्य केशव।
स्थितधीः किं प्रभाषेत किम् आसीत व्रजेत किम्॥१॥

श्री भगवान् उवाच

प्रजहाति यदा कामान् सर्वान् पार्थ! मनोगतान्।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस् तदोच्यते॥२॥
दुःखेष्वनुद्विग्न-मनाः सुखेषु विगतस्पृहः।
वीत-राग-भय-क्रोधः स्थितधीर् मुनिर् उच्यते॥३॥

नमोऽद्वैत-तत्त्वाय मुक्तिप्रदाय
नमो ब्रह्मणे व्यापिने शाश्वताय ॥१२॥
त्वम् अेकं शरण्यं त्वम् अेकं वरेण्यम्
त्वम् अेकं जगत्पालकं स्वप्रकाशम्।
त्वम् अेकं जगत्-कर्तृ-पातृ-प्रहर्तृ
त्वम् अेकं परं निश्चलं निर्विकल्पम् ॥१३॥
भयानां भयं भीषणं भीषणानाम्
गति प्राणिनां पावनं पावनानाम्।
महोच्चैः पदानां नियन्तृ त्वम् अेकम्
परेषां परं, रक्षणं रक्षणानाम् ॥१४॥
वयं त्वां स्मरामो वयं त्वां भजामो
वयं त्वा जगत्-साक्षि-रूपं नमाम।
सद् अेकं निधानं निरालम्बम् ईशम्
भवाम्भोधि-पोतं शरण्यं व्रजाम ॥१५॥

अेकादश-व्रत

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह।
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन॥
सर्वधर्मी समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना।
ही अेकादश सेवावी नम्रत्वे व्रतनिश्चये॥

कुरानसे प्रार्थना

अअूजु बिल्लाहि मिनश् शैतानिर् रजीम्।
बिस्मिल्लाहिर् रहमानिर् रहीम।
अल् हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन।
अर् रहमानिर रहीम मालिकि यौमिद् दीन।
अीयाक नअबुदु व अीयाक नस्तअीन।
अिह्दिनस् सिरातल् मुस्तकीम।
सिरातल् लजीन अन् अम्त अलैहिम
ग़ैरिल् मग़जूबे अलैहिम व लज्जाल्लीन॥
आमीन

विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांस् चरति निःस्पृहः ।
निर्ममो निरहंकारः स शान्तिम् अधिगच्छति ॥ १८ ॥
अेषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति ।
स्थित्वाऽस्याम् अन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणम् ऋच्छति ॥१९॥
(श्रीमद्भगवद्गीता २ ५४-७२)

[रोज प्रार्थनाके अन्तमें भजन धुन और रामायणका पाठ होता था।]

२

वर्तमानकालीन प्रार्थना

प्रातःकालकी अुपासना

नं म्यो हो रें गे क्यो ।
नं म्यो हो रें गे क्यो ।
नं म्यो हो रें गे क्यो ॥

ईशावास्य अुपनिषद्

ॐ पूर्ण है वह पूर्ण है यह
पूर्णसे निष्पन्न होता पूर्ण है ।
पूर्णमें से पूर्णको यदि लें निकाल
शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा ।
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

१ हरिः ॐ ईशका आवास यह सारा जगत्
जीवन यहां जो कुछ अुसीसे व्याप्त है ।
अतअेव करके त्याग अुसके नामसे
तू भोगता जा वह तुझे जो प्राप्त है ।
धनकी किसीके भी न रख तू वासना ।
२ करते हुअे ही कर्म स्थिर संसारमें
शत वर्षका जीवन हमारा विश्व हो ।
तुझ देहधारीके लिअे पथ अेक यह
अतिरिक्त जिससे दूसरा पथ है नहीं ।
होता नहीं है लिप्त मानव कर्मसे
अुससे चिपटती मात्र फलकी वासना ।

यः सर्वत्रानभिस्नेहस् तत् तत् प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥४॥

यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस् तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥५॥

विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
रसवर्जं रसोऽप्यस्य परं दृष्ट्वा निवर्तते ॥६॥

यततो ह्यपि कौन्तेय ! पुरुषस्य विपश्चितः ।
इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ॥७॥

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः ।
वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥ ८ ॥

ध्यायतो विषयान् पुंसः संगस् तेषूपजायते ।
संगात् संजायते कामः कामात् क्रोधोऽभिजायते ॥ ९ ॥

क्रोधाद् भवति संमोहः संमोहात् स्मृति-विभ्रमः ।
स्मृतिभ्रंशाद् बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात् प्रणश्यति ॥ १ ॥

राग-द्वेष-वियुक्तैस् तु विषयान् इन्द्रियैश् चरन् ।
आत्मवश्यैर् विधेयात्मा प्रसादम् अधिगच्छति ॥ ११ ॥

प्रसादे सर्वदुःखानाम् हानिर् अस्योपजायते ।
प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥ १२ ॥

नास्ति बुद्धिर् अयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना ।
न चाभावयतः शान्तिर् अशान्तस्य कुतः सुखम् ॥ १३ ॥

इन्द्रियाणां हि चरताम् यन् मनोऽनुविधीयते ।
तद् अस्य हरति प्रज्ञाम् वायुर् नावम् इवाम्भसि ॥१४॥

तस्माद् यस्य महाबाहो ! निगृहीतानि सर्वशः ।
इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस् तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥१५॥

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी ।
यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥ १६ ॥

आपूर्यमाणम् अचल-प्रतिष्ठं
समुद्रम् आपः प्रविशन्ति यद्वत् ।
तद्वत् कामा यं प्रविशन्ति सर्वे
स शान्तिम् आप्नोति न कामकामी ॥ १७ ॥

स्थितप्रज्ञके लक्षण

अर्जुनने कहा

१ स्थितप्रज्ञ समाधिस्थ कहते कृष्ण हैं किसे
स्थितधी बोलता कैसे बैठता और डोलता।

श्री भगवानने कहा

२ मनोगत सभी काम तज दे जब पार्थ जो
आत्मामें आप ही तुष्ट सो स्थितप्रज्ञ है तभी।
३ दुःखमें जो अनुद्विग्न सुखमें नित्य निःस्पृह,
वीत-राग भय क्रोध मुनि है स्थितधी वही।
४ जो शुभाशुभको पाके न तो तुष्ट न रुष्ट है,
सर्वत्र अनभिस्नेही प्रज्ञा है उसकी स्थिर।
५ कर्म ज्यों निज अंगोंको इन्द्रियोंको समेट ले —
सर्वथा विषयोंसे जो प्रज्ञा है उसकी स्थिर।
६ भोग तो छूट जाते हैं निराहारी मनुष्यके
रस किन्तु नहीं जाता जाता है आत्म-लाभसे।
७ यत्नयुक्त सुधीकी भी इन्द्रियां ये प्रमत्त जो
मनको हर लेती हैं आप बलसे हठात्।
८ जिन्हें संयमसे रोके मुझमें रत युक्त हो
इन्द्रियां जिसने जीती प्रज्ञा है उसकी स्थिर।
९ भोग-चिन्तन होनेसे होता आसक्त संग है,
संगसे काम होता है कामसे क्रोध जागता।
१० क्रोधसे मोह होता है मोहसे स्मृति-विभ्रम
भ्रमसे बुद्धिका नाश बुद्धिनाश विनाश है।
११ राग-द्वेष-परित्यागी करे इन्द्रिय-कर्म जो
स्वाधीन वृत्तिसे पार्थ पाता आत्म प्रसाद वो।
१२ प्रसाद-युत होनेसे टरते सब दुख हैं
होती प्रसन्नचेताकी बुद्धि निश्चल शीघ्र ही।
१३ नहीं बुद्धि अयोगीके भावना उसमें कहां
अभावक कहां शान्ति कैसे सुख अशान्तको।

१६ तू विश्वपोषक है तथा तू ही निरीक्षक एक है
तू कर रहा नियमन तथा तू ही प्रवर्तन कर रहा
पालन सभीका हो रहा तुमसे प्रजाकी भांति है।
निज पोषणादिक रश्मिमा तू खोलकर मुझको दिखा
फिरसे दिखा केवल त्यों ही जोड़ करके तू उन्हें।
अब देखता हूं रूप तेरा तेजयुत कल्याणतम
वह जो परात्पर पुरुष है मैं हूं वही।

१७ यह प्राण मुझ चेतन अमृतमय तत्त्वमें
हो जाय लीन शरीर भस्मीभूत हो।
ॐ नाम ईश्वरका अरे संकल्पमय
तू स्मरण कर, मुझका किया तू स्मरण कर।
संन्यस्त करके सर्वथा संकल्प निज
हे जीव मेरे, स्मरण करता रह मुझे।

१८ हे मार्गदर्शक दीप्तिमन्त प्रभो तुम्हें
हैं ज्ञात सारे तत्त्व जो जगमें प्रथित।
ले जा परम आनन्दमयकी ओर तू
ऋजुमार्गसे हमको कुटिल अघसे बचा।
फिर-फिर विनय नत नम्र वचनोंसे तुम्हे।
फिर-फिर विनय नत नम्र वचनोंसे तुम्हे।

ॐ पूर्ण है वह, पूर्ण है यह
पूर्णसे निष्पन्न होता पूर्ण है।
पूर्णमें से पूर्णको यदि लें निकाल
शेष तब भी पूर्ण ही रहता सदा।
ॐ शान्ति शान्ति शान्ति

सायंकालकी उपासना

यं ब्रह्मावरुणेन्द्ररुद्रमरुतः स्तुन्वन्ति दिव्यैः स्तवैः
वेदैः साङ्गपदक्रमोपनिषदैर्गायन्ति यं सामगाः।
ध्यानावस्थिततद्गतेन मनसा पश्यन्ति यं योगिनो
यस्यान्तं न विदुः सुरासुरगणा देवाय तस्मै नमः।

१४ मन जो दौड़ता पीछे अिन्द्रियोंके विहारमें
खींचता अुसकी प्रज्ञा जलमें नाव वायु ज्यों।
१५ अतअेव महाबाहो अिन्द्रियोंको समेट के —
सर्वथा विषयोंसे जो प्रज्ञा है अुसकी स्थिरा।
१६ निशा जो सर्वभूतोंकी संयमी जागते वहाँ
जागते जिसमें अन्य वह तत्त्वज्ञकी निशा।
१७ नदी-नदोंसे भरता हुआ भी
समुद्र है ज्यों स्थिर सुप्रतिष्ठ
त्यों काम जिसमें सारे समावें
पाता वही शान्ति न कामकामी।
१८. सर्व-काम-परित्यागी विचरे नर निःस्पृह
अहंता-ममता-मुक्त पाता परम शान्ति सो।
१९ ब्राह्मी स्थिति यही पार्थ जिसे पाके न मोह है,
टिकती अन्तमें भी है, ब्रह्मनिर्वाण-दायिनी।

नाम-माला

ॐ तत्सत् श्री नारायण तू पुरुषोत्तम गुरु तू,
सिद्ध बुद्ध तू स्कन्द विनायक सविता पावक तू।
ब्रह्म मज्द तू, यह्व शक्ति तू अीशु-पिता प्रभु तू,
रुद्र विष्णु तू राम कृष्ण तू रहीम ताओ तू।
वासुदेव गो-विश्वरूप तू, चिदानन्द हरि तू
अद्वितीय तू, अकाल निर्भय आत्म-लिंग शिव तू।

अेकादश-व्रत

अहिंसा सत्य अस्तेय ब्रह्मचर्य असंग्रह।
शरीरश्रम अस्वाद सर्वत्र भयवर्जन।।
सर्वधर्म समानत्व स्वदेशी स्पर्शभावना।
विनम्र व्रतनिष्ठासे ये अेकादश सेव्य हैं।